सन् 1986 ई० में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत एवं वित्तीय सहायता प्रदत्त लघु-शोध परियोजना का विशिष्ट-खण्ड ।

आधुनिक कश्मीरी काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ

[सन् 1850-1970 ई०]

[प्रतिनिधि कवियों के कृतित्व पर आधृत]

A CRITICAL STUDY OF THE MAIN TRENDS IN MODERN KARHMIRI POETRY

(1850 - 1970 A. D.)

(BASED ON THE STUDY OF REPRESENTATIVE POETS)

(कश्मीर विश्वविद्यालय की डी० लिट् (हिन्दी) उपाधि हेतु सन् 1993 ई० में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध)

(Thesis submitted to the University of Kashmir in the year 1993 for the award of D. Litt. Degree)

प्रस्तुतकर्ता :—

डॉ० भूषण लाल कौल

प्रोफ़ेसर एवं भूतपूर्व अध्यक्ष

स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग

कश्मीर विश्वविद्यालय, नसीमबाग़

श्रीनगर - कश्मीर ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

With Ashirvads
From
Bhagavaan Gopinathji

2nd Copy

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सन् 1986 ई० में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत एवं वित्तीय सहायता प्रदत्त लघु-शोध परियोजना का विशिष्ट-खण्ड ।

आधुनिक कश्मीरी काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ

[सन् 1850-1970 ई०]

[प्रतिनिधि कवियों के कृतित्व पर आधृत]

A CRITICAL STUDY OF THE MAIN TRENDS IN MODERN KARHMIRI POETRY

(1850 - 1970 A. D.)

(BASED ON THE STUDY OF REPRESENTATIVE POETS)

(कश्मीर विश्वविद्यालय की डी० लिट् (हिन्दी) उपाधि हेतु सन् 1993 ई० में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध)

(Thesis submitted to the University of Kashmir in the year 1993 for the award of D. Litt. Degree)

प्रस्तुतकर्ता :—

डॉ० भूषण लाल कौल

प्रोफ़ेसर एवं भूतपूर्व अध्यक्ष

स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग

कश्मीर विश्वविद्यालय, नसीमबाग़

श्रीनगर - कश्मीर ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सन् 1980 ई० में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत
एवं वित्तीय सहायता प्रदत्त लघु-शोध परियोजना का
विशिष्ट खण्ड

आधुनिक कश्मीरी काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ

(सन् 1850 - 1970 ई०)

(प्रतिनिधि कवियों के कृतित्व पर आधृत)

A CRITICAL STUDY OF THE MAIN TRENDS IN MODERN KASHMIRI POETRY

(1850 - 1970 A.D)

BASED ON THE STUDY OF REPRESENTATIVE POETS

(कश्मीर विश्वविद्यालय की डी० लिट् (हिन्दी) उपाधि हेतु सन् 1993ई० में प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध)

Thesis submitted to the University of Kashmir in the Year 1993 for the award of D.Litt Degree

प्रस्तुतकर्ता :

डॉ० भूषणलाल कौल
प्रोफ़ेसर एवं भूतपूर्व अध्यक्ष
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
कश्मीर विश्वविद्यालय.
श्रीनगर - कश्मीर ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अनुक्रमणिका

पृष्ठ

:: अपनी बात :: यथार्थ अपने बीभत्स रूप में हादिसात ग़मनाक ज़िन्दगी के 1 – 20

:: खण्ड – एक ::

आधुनिक कश्मीरी काव्य में राम-कथा

(अ) कश्मीरी काव्य में राम-कथा – विकास यात्रा के विभिन्न पड़ाव 21 – 46

1– 'वनवुन' गीतों में राम-कथा का सांकेतिक उल्लेख

2– पण्डित प्रकाशराम कुरिगामी – 'रामवतारचरित' – (उन्नीसवीं शताब्दी का पांचवा दशक)

3– पण्डित शंकर कौल – 'शंकररामायण' – सन् 1870 ई0

4– पण्डित आनन्दराम राज़दान – 'आनन्दरामावतार-चरित' – सन् 1888 ई0

5– पण्डित विष्णु कौल 'व्यास' – विष्णुप्रताप रामायण' – सन् 1909 – 1914 ई0

6– पण्डित नीलकंठ शर्मा – 'रामायणि शर्मा' – सन् 1919 – 1926 ई0

7– पण्डित ताराचन्द – 'ताराचन्द रामायण' – सन् 1926 – 1927 ई0

8– पण्डित अमरनाथ 'अमर' – 'अमर रामायण' – सन् 1950 ई0

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

9- भक्ति परक मुक्तक रचनाओं में मर्यादा पुरुषोत्तम राम

10- महत्वपूर्ण निष्कर्ष

{आ} 'प्रकाश रामायण'/'रामावतार चरित' - एक खोज रिपोर्ट 47 - 120

1- समन्वयात्मक दृष्टिकोण - ऐतिहासिक विवशता

2- राम-कथा में मौलिक उद्भावनाएँ

3- लौकिक कथा के साथ आध्यात्मिक रूपक

4- दास्य-भाव को भक्ति का सर्वोत्कृष्ट रूप

5- स्थानीय रंग

6- राम : दशरथसुत अयोध्यावासी नागरिक तथा नर-रूप नारायण

7- सीता : आदर्श पत्नी एवं विद्रोही नारी

8- अग्निपरीक्षा : नारी अभिशाप का क्रूर प्रसंग

9- रावण : खलनायक की सफल भूमिका में

10- मन्दोदरी : पत्नी रूप तथा मातृ रूप

11- फ़ारसी भाषा की रज़्मिया मस्नवी शैली

12- ज़िन्दगी की तल्ख़ हक़ीक़तों की अभिव्यक्ति

13- भाषा सम्बन्धी मौलिक प्रयोग

14- प्रकृति चित्रण और सौन्दर्य बिम्ब

15- संवाद शैली - प्रश्नोत्तर-शैली

16- परिगणन-पद्धति

17- निष्कर्ष ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

॥इ॥ 'विष्णुप्रताप रामायण' - एक कलमी नुसख़ा 121 - 141

1- राममक्त कवि पण्डित विष्णु कौल

2- मुख्य-कथा : सात कांडों में विभाजित

3- प्रासंगिक कथाओं की सोद्देश्य योजना

4- कथा प्रसंगों में मौलिक उद्भावनाएँ

5- प्रकृति चित्रण में स्थानीय रंग

6- भाषा सम्बन्धी विविध प्रयोग

7- भक्त हृदय की निश्छल अभिव्यक्ति

8- पाण्डुलिपि से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण मुद्दे

:: खण्ड - दो ::

आधुनिक कश्मीरी काव्य में धर्म, दर्शन एवं भक्ति

(i) लीला एवं भक्ति-काव्य 142 - 176

॥अ॥ लांखमन ॥लक्ष्मण॥ ज़ू रैणा' बुलबुल' -
॥ सन् 1826 - 1896 ई० ॥

1- जीवन चरित : कुछ भ्रान्तियाँ

2- कृतित्व

3- सगुण भक्ति में माधुर्य रस : कृष्ण काव्य

4- रास लीला एवं गोपी-प्रेम

5- शिव लीला

6- विचार प्रधान कविताएँ

7- प्रबन्ध रचनाएँ

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

॥अ॥ कृष्ण जू राज़दान - ॥सन् 1850-1926 ई०॥ 177 — 213

1- 'शिव परिणय' : एक उत्कृष्ट सर्जना

2- शैव-दर्शन का गहन प्रभाव

3- स्थानीय रंग : प्रमुख आकर्षण

4- कृष्ण भक्ति : लीला काव्य

5- रासलीला : सगुण भक्ति में मधु-मिश्रण

6- खड़ी बोली में गीत और भजन

7- विचार-काव्य

8- लोक रस : भाषा और संगीत की दृष्टि से

(ii) आध्यात्मिक चिन्तन/विचार प्रधान काव्य एवं भक्ति में 'लोल' का महत्त्व

॥अ॥ मास्टर ज़िन्दा कौल -॥सन् 1884-1966 ई०॥ 214 - 255

1- जीवन : एक संघर्ष भूमि

2- मूल प्रेरणा स्रोत : भारतीय धर्म, दर्शन एवं प्राचीन इतिहास

3- विचार प्रधान कविता

4- भक्ति में चिन्तन का प्राधान्य : दर्शन का योग

5- शैव-दर्शन एवं तसव्वुफ़ का प्रभाव

6- 'लोल' की सार्थकता

7- वेदना की गहनानुभूति

8- कृष्ण भक्ति में कर्म-सन्देश

9- स्वस्थ भौतिक जीवन के प्रति आकर्षण

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

10- व्यंग्य - काव्य

11- आंचलिकता

(iii) सूफ़ी काव्य 256-297

(अ) समद मीर - (सन् 1892-94 - 1959 ई०)

1- जीवन चरित : आराक्षा समदमीर में अज्ञात के प्रति आकर्षण

2- मज़दूर समदमीर एवं सूफ़ी साधक समदमीर

3- 'अकनन्दुन' :वर्णनात्मक खण्ड-काव्य

4- प्रेमाभिव्यक्ति : दोहरे अर्थ में

5- इश्क़ हक़ीक़ी : माशूक़ के लिये अकुलाहट

6- विरह विवृत्ति

7- सूफ़ी साधना में 'सफ़र' का माहात्म्य

8- क़नाअत नफ़्स : नियंत्रण 'अहं' पर

9- लयावस्था: लाहूत की मंज़िल पर दिव्य आनन्दानुभूति

10- 'कुछ नहीं' : शून्य का महत्त्व

11- आत्मज्ञान/स्वानुभूति : परम सत्य का साक्षात्कार

12- शास्त्र ज्ञान : अद्वैतवाद / चिन्तन का प्रभाव

13- ओ३म् की पहचान : साधना का मूल लक्ष्य

14- नातिया कलाम

15- भाषा-प्रयोग : रेख़्ता भाषा

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

॥अ॥ अब्दुल अहद ज़रगर – ॥सन् 1909 – 1983 ई०॥ 298–336

1– साधनारत जीवन चरित

2– कृतित्व

3– तसव्वुफ़ : जीवन की गहनानुभूतियों से साक्षात्कार

4– इश्क़ : मजाज़ी से हक़ीक़ी

5– प्रिय-विरह : वज्दानी कैफ़ीयत

6– शून्य : निर्गुण–निराकार ब्रह्म का प्रतीक

7– क़नाअत–नफ़्स : क्षणिक आकर्षणों के प्रति उदासीनता

8– भारतीय चिन्तन का प्रभाव : समन्वयवादी दृष्टि

9– सोऽहम् : अन्तरात्मा की आवाज़

10– ओ३म् : सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् का सार–तत्त्व

11– इब्हाम : गुण अथवा दोष

12– त्रास की कविता

13– निष्कर्ष

(IV) नात एवं मुनाजात 337–36

॥अ॥ अब्दुल अहद नादिम – ॥सन् 1838–40 – 1911ई०॥

1– जान–पहचान

2– नात : काव्य–विधा

3– विश्वास और समर्पण : नातगोई का मुख्याकर्षण

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

4- क़नाअत नफ़्स : कुछ पाने के हेतु कुछ खोना
5- नातगोई : 'वनुवुन' शैली में
6- मुनाजात : इष्टदेव के प्रभुत्व का महिमागान
7- स्तुति वन्दना : कुकर्ममय जीवन पर घोर पश्चाताप
8- शहर आशोब : समकालीन जीवन की विकृतियों पर व्यंग्यात्मक प्रहार
9- युग-बोध : मूल्यहीन जीवन जीने की पीड़ा
10- फ़ारसी भाषा का प्रभुत्व : गुड़ में छर्रे का आभास

:: खण्ड - तीन ::

आधुनिक कश्मीरी काव्य में नवयुग की अनुगूँज

बन्दगी के जीवन में ज़िन्दगी का हुस्न

अ : प्रेम काव्य : मुहब्बत जाने जानाँ से
आ: राष्ट्रीयता एवं देश प्रेम : क्रान्ति का शंखनाद
इ : प्रगतिवादी चिन्तन एवं सामाजिक यथार्थवाद
ई : विद्रोहात्मक प्रयोग की : अन्वेषण नये आयामों का
उ : नई कविता : युग-बोध एवं तलाश अस्तित्व की
ऊ : हास्य एवं व्यंग्य : नश्तर की तेज़ धार
ए : इश्क़े इलाही : दिव्यानुभूति

/1/ अ: शृंगार-वर्णन, आ: देश-प्रेम, राष्ट्रीय भावना एवं क्रान्ति के अग्रदूत - 362 - 418

* पोरज़ादा गुलाम अहमद 'महजूर'
॥ सन् 1887 - 1952 ई० ॥
1- सोन्यो धरती को ख़ाबू
2- एक योद्धा का संघर्षमय जीवन
3- निर्द्वन्द्व व्यक्तित्व : सहज विनोद प्रिय स्वभाव

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

4- 'महजूर' - लेखपाल के रूप में
5- बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कलाकार
6- 'महजूर' की इश्क़िया शाइरी
7- प्रेम : विवश ज़िन्दगी का मूल्यवान उपहार
8- महबूब का तसव्वुर
9- प्रेम के प्रति महजूर का स्वस्थ भौतिक दृष्टिकोण
10- प्रेम में विरह की तड़प और जुदाई का ग़म
11- प्रेम काव्य में सखि-प्रसंग
12- प्रेम काव्य में स्थानीय रंग
13- सौन्दर्य की अद्भुत परिकल्पना : ग्रीसकूर ॥ कृषक बाला ॥
14- महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष
15- 'महजूर' के काव्य में देश-प्रेम एवं राष्ट्रीय भावना
16- अपनी संस्कृति से लगाव : स्वर्णिम अतीत का गौरव गान
17- दुर्दशा ग्रस्त वर्तमान : युग सत्य की मार्मिक अभिव्यक्ति
18- एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में 'महजूर' का राष्ट्रीय काव्य
19- 'गुल' और 'बुलबुल' की शाइरी
20- आशावादी सन्देश एवं जागरण-गीत
21- नया कश्मीर का सुनहला स्वप्न
22- क्रान्ति का आह्वान : विप्लव एवं विद्रोह का स्वागत
23- राष्ट्र कवि महजूर : कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष ।

/2/ अ: प्रेम काव्य, आ: राष्ट्रीय काव्य एवं क्रान्ति-कारी काव्य के रचयिता तथा इ: प्रगतिवादी चिन्तन एवं सामाजिक यथार्थवाद से अनुप्राणित

" अब्दुल अहद डार 'आज़ाद' "
॥ सन् 1903 - 1948 ई० ॥ 419 - 456

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

1- एक स्कूल मास्टर अब्दुल अहद डार
2- 'आज़ाद' की बहुमुखी प्रतिभा
3- एक कर्मवीर के रूप में 'आज़ाद'
4- आरम्भिक युग में विशुद्ध श्रृंगारिक रचनाएँ
5- परम्परा के प्रति आत्म समर्पण
6- मिलन की अतुराई, बतियाने की उत्कट इच्छा एवं मधुपान की चाहत
7- रिसते घावों की मर्मान्तिक पीड़ा
8- सखि - वर्णन
9- श्रृंगार काव्य : कुछ अन्य आकर्षण एं महत्व-पूर्ण उपलब्धियाँ
10- समाजवादी चिन्तन का प्रभाव : वैचारिक गरिमा
11- स्वस्थ मानव के जीवन व्यवहार में दृढ़ आस्था
12- मानवतावादी जीवन दृष्टि
13- आत्म सम्मान के साथ जीवन जीने की बलवती इच्छा
14- ज़मींदारी प्रथा तथा पूंजीपति व्यवस्था के प्रति आक्रोश
15- विश्व व्यापी जन आन्दोलन का गहरा प्रभाव
16- व्यवस्था में बदलाव की आवश्यकता
17- क्रान्ति का आह्वान : तपते शोलों को बाहों में समेटने का सामर्थ्य
18- इंक़िलाब में अटूट विश्वास
19- व्यवस्था में बदलाव की आवश्यकता
20- नाश और निर्माण का समान रूप से स्वागत
21- 'दरियाव' आज़ाद की एक बहुचर्चित प्रतीकात्मक नज़्म
22- 'नाल-ए-इबलीस' से प्रेरित 'शिकव-ए-इबलीस'
23- अपनी संस्कृति के प्रति आकर्षित : नास्तिक नहीं

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

24- विचार प्रधान लम्बी कविताएँ
25- कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष

/3/ अः श्रृंगार, आः देश-प्रेम, राष्ट्रीय भावना, विद्रोह एवं क्रान्ति, इः प्रगतिवादी चिन्तन, ऊः हास्य - व्यंग्य एवं तलाशे हक़ के कवि - 457- 488

" मिर्ज़ा गुलाम हसन बेग 'आरिफ़' "
॥ सन् 1910 ई० ——— ॥

1- मेधावी छात्र साइंस के : विशेषज्ञ जन्तु-विज्ञान के
2- कश्मीर कल्चरल कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता
3- आरिफ़ की बहुमुखी प्रतिभा
4- देश-प्रेम की उत्कट भावना
5- व्यवस्था को बदलने का दृढ़ संकल्प
6- प्रेरणा तरक़्क़ी पसन्द तहरीक से : स्वागत विद्रोह और क्रान्ति का
7- स्वातन्त्र्योत्तर युग में मोह-भंग की भीषण स्थिति
8- नवीन काव्य प्रयोग - रुबाई : 'मिनी' कविता
9- द्वन्द्वात्मक एवं तनाव पूर्ण स्थितियों का कटु अनुभव
10- यथार्थ बोध : मूल्यों का अवमूल्यन
11- समकालीन यथार्थ से जुड़ा मर्म भेदी व्यंग्य
12- जीवन के प्रति एक स्वस्थ स्वीकारात्मक दृष्टि
13- विरह प्रधान इश्क़िया शाइरी और ग़ज़ल
14- अध्यात्म चिन्तन : आरिफ़ का तलाशे हक़
15- भाषा-प्रयोग : कुछ अहम मुद्दे
16- आरिफ़ के 'वाख' ॥ वाक् ॥
17- निष्कर्ष ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

/4/ अ: राष्ट्रीयता एवं देश-प्रेम, :इ: प्रगतिवादी चिन्तन एवं सामाजिक यथार्थवाद, :ई: परीक्षण एवं अन्वेषण तथा :ऊ: नई कविता के कवि - 489-531

" पण्डित दीनानाथ कौल 'नादिम' "
(सन् 1916 - 1988 ई०)

1- संक्षिप्त परिचय
2- एक प्रतिभा सम्पन्न अध्यापक एवं कलाकार
3- अभाव ग्रस्त जीवन के दयनीय क्षणों की कटु अनुभूति
4- मातृ भूमि के प्रति अनन्य अनुराग : देश-प्रेम की कविता
5- देश भक्ति में समाजवादी चिन्तन का प्रवेश : अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर एक महत्त्वपूर्ण घटना
6- प्रगतिवादी काव्य : रूढ़ि जर्जरित परम्पराओं पर कठोराघात
7- क्रान्ति का आह्वान : विद्रोह एवं विप्लव
8- वर्ग संघर्ष की भावना : सम्मान मेहनतकश का
9- आने वाले कल के प्रति आस्थावान : जीवन जीने में अटूट विश्वास
10- स्वातन्त्र्योत्तर युग में स्वप्न भंग की स्थिति
11- प्रयोगवादी काव्य : नवीन सम्भावनाओं की तलाशने की प्रक्रिया
12- नई कविता : युग सन्दर्भ में मानव मन: स्थिति की पहचान
13- निजी संस्कृति के प्रति पूर्ण समर्पित
14- लोक रंग : महकता लोक संगीत
15- कुछ मौलिक प्रयोग : सानेट, गीति नाट्य, आज़ाद नज़्म, 'मिनी' कविताएँ
16- कश्मीरी भाषा पर असाधारण अधिकार
17- अर्थ गाम्भीर्य एवं नाद सौन्दर्य
18- निष्कर्ष ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

/5/ अ: सौन्दर्योपासना, :इ: यथार्थ बोध, :ऊ: हास्य एवं व्यंग्य, :ए: इश्क़े हक़ीक़ी और तलाशे हक़ तथा रुबाई के सफल कवि – 532-549

" मीर गुलाम रसूल 'नाज़की' "
॥ सन् 1912 ई0 ——— ॥

1- संघर्ष पूर्ण जीवन : साधना के पथ पर निरत अग्रसर
2- अध्यापक नाज़की : ज़िन्दगी के स्कूल में एक अनुसंधित्सु
3- आकाशवाणी के श्रीनगर केन्द्र से वाबस्तगी
4- इस्लाम धर्म एवं दर्शन का गहरा प्रभाव
5- सर्जनात्मक साहित्य
6- ग़ज़ल, रुबाई और क़त्आत : मुक्तक काव्य
7- रुबाइयों में इश्क़े हक़ीक़ी
8- जीवन की क्षण भंगुरता एवं मृत्यु भय का एहसास
9- व्यंग्यकार नाज़की : सहजता और ईमानदारी के साथ गहन निरीक्षण जीवन का
10- कृत्रिम हाव-भाव : बेमानी इंसानियत
11- धर्म गुरुओं की छीना-झपटी : व्यापार धर्म का
12- राजनीतिज्ञों के दाँव-पेंच : कुशल धोद्धा अखाड़े के
13- सौन्दर्योपासक 'नाज़की'
14- 'नाज़की' की कविता में प्रकृति
15- लोक-जीवन के खिलते-मुरझाते रंग
16- अभिव्यक्ति पर फ़ारसी और उर्दू की गहरी छाप
17- निष्कर्ष ।

//6/ अ: मांसल प्रेमानुभूति, :आ: सांस्कृतिक चेतना एवं देश-प्रेम, :इ: प्रगतिवादी चिन्तन एवं सामाजिक यथार्थवाद, :ई: प्रयोगवाद :उ: नई कविता, इबहाम, अतिशय बौद्धिकता एवं संक्षिप्त नज़्म के कवि – 550-569

" अब्दुल रहमान राही "
॥ सन् 1925 ई0 ——— ॥

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

1- जीवन चरित : कई संघर्षमय घुमावदार पड़ाव
2- अध्यापन कार्य : फ़ारसी भाषा और साहित्य से कश्मीरी भाषा और साहित्य तक
3- राही : स्वातंत्र्योत्तर युग के बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कलाकार
4- राही का तरक़्क़ी पसन्द काव्य : अंगूठी में नगीने के समान आकर्षक
5- राही के ग़ज़लों में प्रेमानुभूति : मांसल, स्वप्निल एंव परवश कर देने वाली
6- राही की कविता की प्रयोगात्मक प्रकृति : नये आयामों के अन्वेषण
7- आत्मबोध की कविता : तलाश अस्तित्व की
8- राही : नई कविता के शाइर
9- इब्राहम : बूढ़े भेल के कन्धों पर जुआ
10- बौद्धिकता का घटाटोप : तपते रेत के ज़र्रों में रस कणों की तलाश
11- संक्षिप्त नज़्म : मिनी कविता
12- राही की सांस्कृतिक चेतना : आकर्षण मातृभूमि के प्रति
13- राही मूलत: ग़ज़ल के शाइर
14- राही की काव्य - भाषा ।

/7/ अ: श्रृंगार वर्णन, विरह गीतों, प्रकृति चित्रण, :आ: देश-प्रेम, सांस्कृतिक चेतना, :उ: नई कविता, युग-बोध, 'मिनी' कविताओं, रुबाइयों, :ऊ: व्यंग्योक्तियों एवं :ए: आध्यात्मिक चिन्तन के कवि -

" मोतीलाल राज़दान 'साक़ी' "
§ सन् 1936 ई० —— §

570-598

1- संघर्षमय जीवन : ग्राम-सेवक से शोध-सहायक तक
2- प्रकृति के स्वच्छन्द वातावरण में जीवन यापन

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

3- साक्षात्कार कटु यथार्थ से
4- बहुमुखी व्यक्तित्व : गद्यलेखक, पाठालोचक, शोधकर्ता, सम्पादक एवं कवि
5-किसान कवि का साधना प्रधान जीवन : फक्कड़ व्यक्तित्व
6- मस्तमौला साक़ी के काव्य में श्रृंगार-वर्णन
7- विरह-गातों में कराहती वेदना
8- साक़ी के काव्य में प्रकृति के विविध रूप : निरीक्षण की असाधारण क्षमता
9- देश-प्रेम की कविता एवं सांस्कृतिक चेतना
10- नई कविता : मोह भंग की स्थिति
11- 'साक़ी' की कविता में युग-बोध
12- जीवन जीने में अटूट विश्वास
13- 'मिनी' कविताएँ और रुबाइयाँ
14- व्यंग्योक्तियाँ
15- परम्परा के प्रति ईमानदार लेकिन क्रीतदास नहीं ।
16- परवर्ती युग में आध्यात्मिक चिन्तन के प्रति प्रबल आकर्षण : रहस्यवाद
17- साक़ी : कश्मीरी काव्य के भविष्य की आशा
18- कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष ।

/8/ ऊ: हास्य एवं व्यंग्य, :ए: भगवत् भक्ति, लीला एवं स्तुति परक काव्य तथा भक्ति पर आधारित कथा-प्रधान वर्णनात्मक रचनाओं के प्रणेता -

" पण्डित लांखमन जू राज़दान / लालि लांखमन " 599 - 637

॥ सन् 1892 - 1962 ई० ॥

1- जीवन-यात्रा की कटु-मधुर स्मृतियाँ
2- माल-विभाग में नियुक्ति : मराज़ से कमराज़

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

3- लखमन जू राज़दान ते लालि लखमन : शाखदर ते चिट्ठो रसाँ
4- व्यक्तित्व के कुछ शोख़ रंग
5- हास्य व्यंग्य प्रधान काव्य
6- व्यवस्था के प्रति क्रुद्ध : घोर असन्तोष
7- कहीं हल्का प्रहार सांकेतिक रूप में : कहीं हथौड़े की चोट
8- व्यंग्य के आधारभूत तत्त्वों का निर्वाह
9- व्यंग्य का पूरक : हास्य
10- भौतिक जीवन को त्रासदी पर व्यंग्य : अपने परिवेश के प्रति सजग
11- उपहास : दिलखोल पर मज़ाक़ उड़ाना
12- रूढ़ सामाजिक परम्पराओं एवं रीति रिवाजों पर चोट
13- हास्य व्यंग्य प्रधान रचनाओं का अभिव्यक्ति पक्ष
14- लालिलखमन के काव्य में भगवद् भक्ति
15- लीलामय जगत : सृजनहार की महानतम विभूति
16- दास्य भाव की भक्ति : भगवद् कृपा एवं अनुग्रह को पाने की सतत अभिलाषा
17- लालि लखमन का लीला काव्य : शैव और वैष्णव का समन्वय
18- स्तुति परक रचनाएँ : ईश वन्दना
19- कथा प्रधान वर्णनात्मक भक्ति काव्य : भक्ति में लोक रंग
20- महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष ।

:: परिशिष्ट ::

638—65

1- उर्दू, कश्मीरी, संस्कृत और हिन्दी पुस्तकों की सूची
2- अंग्रेज़ी भाषा में लिखित पुस्तकों की सूची

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

3- सहायक शब्द कोशों की सूची

4- पाण्डुलिपि

5- अप्रकाशित स्वीकृत शोध-प्रबन्ध

6- उर्दू, कश्मीरी और हिन्दी में प्रकाशित सहायक पत्र-पत्रिकाओं की सूची

7- अंग्रेज़ी भाषा में प्रकाशित पत्र - पत्रिकाओं की सूची

8- कुछ अहम दस्तावेज़ों की फोटोस्टेट प्रतियाँ 659 — 682

=0=

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

= = = =

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अपनी बात

जुलाई सन् 1984 ई० में कश्मीर विश्वविद्यालय के डीन स्टूडेन्टस् वेलफ़ेअर (अधिष्ठाता, छात्र कल्याण) का चार वर्ष का कार्य काल पूरा करने के पश्चात् एक बार फिर मैं ने अपना सारा समय अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ लेखन एवं शोध-कार्य में लगा दिया।[1] मन में इच्छा थी कि कोई ऐसा विशेष शोध-कार्य हाथ में लिया जाये जो अपने आप में मौलिक होने के साथ साथ एक अहिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र के सांस्कृतिक परिवेश से जुड़ा हो और उस परिवेश की आधारभूत विशेषताओं को उजागर करने में सहायक सिद्ध हो। हिन्दी, अंग्रेज़ी, उर्दू और कश्मीरी भाषाओं की यत्-किंचित जानकारी के आधार पर ऐसा शोध कार्य हाथ में लिया जाये जिसके द्वारा सम्पूर्ण हिन्दी जगत एक विशिष्ट अहिन्दी क्षेत्र के क्षेत्रीय वैशिष्ट्य से अवगत हो। परस्पर की दूरियाँ कुछ कम हों और अभिव्यक्ति की गहराई में निहित चिन्तन-प्रधान मानव अनुभवों के रहस्य परत-दर-परत खुल कर सामने आ जायें।

यहाँ इस बात को स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि आधुनिक काल में

1- देखिये परिशिष्ट के अन्तर्गत फोटोचित्र संख्या 1-2.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर घटित होने वाली घटनाओं से कश्मीरी जन-मानस भी समान रूप से आन्दोलित हो उठा। यह सत्य है कि आन्दोलन अथवा विचारधारा को दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र तक पहुँचने में कुछ समय अवश्य लगा लेकिन शिक्षित जन-मानस अधिक समय तक इस प्रभाव से अपने आपको अलग नहीं रख पाया और ऐसा प्रकृति विरुद्ध अलगाव घातक भी सिद्ध होता। दो भाषाओं के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करने का तनिक अनुभव अवश्य था क्योंकि "गुलाम अहमद 'महजूर' (आधुनिक कश्मीरी कवि) तथा बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन' के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर 1000 से अधिक पृष्ठों का शोध प्रबन्ध लिख कर सन् 1968 ई० में तात्कालिक जम्मू-कश्मीर विश्वविधालय से पी०एच० डी० की उपाधि प्राप्त कर चुका हूँ।[1] आज ऐसा प्रतीत हो रहा है कि पी०एच० डी० के हेतु शोध-प्रबन्ध लिखने के बाद तथा डिग्री (उपाधि) लेने के पश्चात् ही मैं ने शोध की दिशा में स्वतन्त्र रूप से विचार करना आरम्भ किया। तब तक तो अर्ध-परिपक्व मन-मस्तिष्क सफल/असफल प्रयोग ही करता रहा। वास्तविक शोध-कार्य सन् 1968 ई० के बाद ही आरम्भ हुआ।

"कश्मीरी काव्य में राष्ट्रीय भावना" शोध-परियोजना पर कई वर्ष काम किया। इस शोध-कार्य की महत्ता को स्वीकारते हुए विश्वविधालय

1- देखिये परिशिष्ट के अन्तर्गत फोटोचित्र संख्या-3.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अनुदान आयोग ने वित्तीय सहायता भी प्रदान की ।[1] एक मेधावी शोध-छात्रा को अपने निर्देशन में लेकर उस के साथ एक पाण्डुलिपि "विष्णु प्रताप रामायण" पर शोधकार्य आरम्भ किया । इस कार्य के लिये काफ़ी परिश्रम करना पड़ा । निस्सन्देह यह एक चुनौती थी । पाण्डुलिपि फ़ारसी लिपि में हस्तलिखित है । शोध छात्रा को सन् 1976 ई० में "विष्णु प्रताप रामायण का आलोचनात्मक अध्ययन" विषय पर मेरे निर्देशन में शोध-प्रबन्ध लिखकर पीएच० डी० की उपाधि प्राप्त हुई ।[2] लेकिन मैं बराबर आगे बढ़ कर व्यापक स्तर पर कोई ठोस कार्य करने के लिये व्यग्र था । मन में इच्छा थी कि कश्मीरी रामायण पर काम शुरू किया जाये और मात्र डिग्री हेतु शोध-प्रबन्ध लिखने के उद्देश्य से नहीं अपितु हिन्दी पाठकों को सम्पूर्ण कश्मीरी राम-काव्य से अवगत कराने के उद्देश्य से प्रतिनिधि राम-काव्यों का पाठालोचन के सिद्धान्तों पर परीक्षण करते हुए आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर सकूँ क्योंकि मेरा विश्वास है कि जिस प्रकार सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने कश्मीरी भाषा के साथ अन्याय किया है वैसे ही फ़ादर डॉ० कामिल बुल्के ने कश्मीरी राम-काव्य का किंचित् उल्लेख करते हुए क़िस्सा मुख़्तसर कर दिया है ।

1- देखिये परिशिष्ट के अन्तर्गत फोटोचित्र संख्या-4(i,ii)
2- देखिये परिशिष्ट के अन्तर्गत फोटोचित्र संख्या-5.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

काफ़ी सोच विचार के बाद तथा अपने सहयोगियों से परामर्श लेकर मैं ने आधुनिक कश्मीरी और हिन्दी काव्य की मुख्य प्रवृत्तियों पर तुलनात्मक दृष्टि से शोध-कार्य आरम्भ करने का निश्चय किया। ढलती उम्र में मैंने यह भी तय किया कि दो वर्ष के लिए अध्ययन एवं शोध हेतु विश्वविद्यालय से तुरन्त विशेष अवकाश लेकर सामग्री-संकलन के महत्वपूर्ण काम में जुट जाऊँगा। अध्ययन के लिये विशेष छुट्टी लेने में काफ़ी प्रयास करना पड़ा और 10 मई सन् 1985 के दिन मैं छुट्टी पर चला गया।[1]

कश्मीरी भाषा को नस्तालीक़ लिपि में लिखने पढ़ने में दुश्वारी आ रही थी। फ़ारसी लिपि की मुझे सम्यक् जानकारी प्राप्त है लेकिन कश्मीरी साहित्य पर नस्तालीक़ लिपि में प्रकाशित पुस्तकों के अध्ययन के लिये यह जानकारी पर्याप्त नहीं है। अतः इस समस्या के समाधान हेतु छुट्टी लेते ही मैं ने कश्मीर विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर कश्मीरी विभाग के तात्कालिक अध्यक्ष श्री रहमान राही के साथ सम्पर्क स्थापित किया। राही साहब उन दिनों विभाग में स्वयं 'भाषा और लिपि' का पाठ्यक्रम पढ़ा रहे थे। छः मास तक लगातार मैं राही साहब की क्लास में उपस्थित रह कर कश्मीरी भाषा में व्यवहृत विशिष्ट स्वर और व्यंजन ध्वनियों से परिचित होता रहा। शंकाओं का समाधान

1- देखिये परिशिष्ट के अन्तर्गत फोटोचित्र संख्या-6.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

हुआ और कश्मीरी भाषा के लिए नस्तालीक़ लिपि के व्यवहार की जाँच मुझे आ गई । विद्यार्थी के रूप में एक कुन्दज़ेहन पर उत्साही अध्यापक को समझाने में कभी कभी राही साहब को विशेष प्रयास करना पड़ता था । मैं किन शब्दों में उनके प्रति अपना आभार व्यक्त करूँ ।

मैं कश्मीर विश्वविद्यालय के 'मध्य एशियाई अध्ययन केन्द्र' (सेन्टर आफ सेंट्रल एशियन स्टडीज़) में कुछ दिनों तक शारदा लिपि भी सीखता रहा पर उसका वर्तमान शोध-कार्य के साथ कोई सम्बन्ध नहीं ।

15 वर्षों तक स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग में भाषा-विज्ञान से सम्बन्धित पाठ्यक्रम को पढ़ाने का लाभ यह हुआ कि अनुवाद करते समय शब्दों के मूल तक पहुँचने की रुचि बनी रही और कहीं कहीं पाद-टिप्पणी देते समय मैं ने अपनी इस जिज्ञासा को शान्त करने का अवश्य प्रयास किया है ।

दो वर्षों तक कठिन परिश्रम करने के पश्चात् मैं ने योजना-बद्ध रूप से सामग्री संकलन का काम न केवल पूरा किया अपितु शोध निष्कर्षों का एक ख़ाका भी तैयार किया । शोध-परियोजना के व्यापक स्वरूप को देखते हुए सम्पूर्ण शोध-कार्य को एक ही समय प्रस्तुत करना मेरे लिए लगभग असम्भव हो गया । काफ़ी सोच विचार के बाद मैं ने निश्चय

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

किया कि प्रथम खण्ड के अन्तर्गत आधुनिक कश्मीरी काव्य की मुख्य प्रवृत्तियों से सम्बन्धित शोध-कार्य को एक शोध-प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत किया जाये । यह एक ऐसा विषय है जिस पर आज तक हिन्दी में कोई विशेष प्रयास नहीं किया गया । मुझे कश्मीरी और उर्दू में भी इस विषय पर कोई ठोस कार्य देखने को नहीं मिला । आधुनिक हिन्दी काव्य-प्रवृत्तियों पर स्वतन्त्र रूप से अथवा तुलनात्मक दृष्टि से विद्वज्जन निरन्तर लिखते चले आ रहे हैं ।

अध्ययन हेतु विशेष अवकाश की समाप्ति से 10 दिन पूर्व पहली मई 1987 को मैं ने हिन्दी विभाग में पुनः जाईन किया ।[1]

प्रोफ़ैसर की नियुक्ति के लिये साक्षात्कार में खरा उतरने के उद्देश्य से तैयारी करने के हेतु जहाँ कुछ समय के लिये काम बन्द किया था, नियुक्ति के बाद वहीं से काम फिर शुरू किया । आशा यह थी कि सन् 1989 के अन्त में शोध-कार्य उपाधि हेतु विश्वविद्यालय में पेश कर दूँगा । इसी उद्देश्य से सामग्री का एक भाग टंकण हेतु श्रीनगर में एकमात्र योग्य हिन्दी टंकक (टाइपिस्ट) को सौंप दिया । काम धीरे धीरे सन्तोषजनक रूप से चल रहा था लेकिन बहुधा हम जो

1- देखिये परिशिष्ट के अन्तर्गत फोटोचित्र संख्या-7.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सोचते हैं उसे पूरा कर नहीं पाते । कभी कभी सपने अधूरे रह जाते हैं और स्वप्न-भंग की स्थिति में हृदय एक कराह के साथ टीस उठता है । आधे से अधिक थीसिस टाइप हो चुकी थी । राजनीतिक आकाश पर घने घहराते बादल छा रहे थे । कल क्या होगा - कुछ समझ में नहीं आ रहा था । परिस्थितियाँ इतनी विषम हो गईं कि टाइपिस्ट एक दिन आतंकित होकर तथा सब कुछ पीछे छोड़ कर श्रीनगर से चला गया । अरमानों पर ओले पड़ गये । थीसिस का कुछ पता नहीं । कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ ।

परिस्थितियाँ बिगड़ती गईं और जुलाई सन् 1990 में मैं सब कुछ पीछे छोड़ कर एक विस्थापित के रूप में जम्मू के एक शरणार्थी कैम्प में पहुँच गया । घर के सामान के साथ सारी पुस्तकें, शोध सामग्री, नोट्स, पत्र-पत्रिकाएँ एवं लिखित थीसिस के वे अंश जो मैं ने टाइपिस्ट को अभी तक नहीं दिये थे, श्रीनगर में ही रह गये । स्थिति बड़ी दर्दनाक थी और भविष्य एकदम अन्धकारमय । एक-एक दिन शरणार्थी कैम्प में दूभर हो रहा था । ज़िन्दगी बोझ बन गई । मैं एक विचित्र रुग्ण मनःस्थिति का शिकार हो गया । बहुत तलाशने के बाद टंकण-कर्त्ता से पुनः सम्पर्क स्थापित हुआ ।

मैं कश्मीर विश्वविद्यालय के उपकुलपति एवं कुलसचिव के प्रति

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आभार व्यक्त करना अपना धर्म समझता हूँ जिन्होंने जुलाई 1992 ई० में श्रीनगर से यूनिवर्सिटी को बस में मेरी सारी पुस्तकें, शोध सामग्री एवं घर का कुछ सामान मेरे नाम पर जम्मू भेज दिया। मेरे जीवन में आशा की एक नई किरण फूट पड़ी। मैं ने पुनः दृढ़ संकल्प के साथ काम शुरू किया और विस्थापित कैम्प के एक सूने कक्ष में मैं अपने अरमानों का दिया जलाने लगा। विश्वविद्यालय में जब स्वर्गीय यशपाल कृत 'झूठा सच' उपन्यास के प्रथम खण्ड को पढ़ाता था तब तटस्थ भाव से मैं शरणार्थी जीवन पर घण्टों भाषण देता और उनकी क्षत-विक्षत अवस्था और घायल मानसिकता पर अपने विचार व्यक्त करता। कहाँ मालूम था कि एक दिन स्वयं मुझे इस स्थिति से गुज़रना होगा।

टंकण कार्य जनवरी 1993 ई० में पुनः नये सिरे से शुरू हुआ यद्यपि चाल धीमी रही तथापि एक नये आत्म विश्वास के साथ मैं एक एक क़दम आगे बढ़ाता गया और भाग्य ने इस बार मेरा साथ दिया।

सम्पूर्ण शोध-प्रबन्ध तीन खण्डों में विभक्त है और प्रत्येक खण्ड में कई उपशीर्षों के अन्तर्गत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार का विभाजन मेरा अपना मौलिक प्रयास है।

प्रथम खण्ड के अंतर्गत आधुनिक कश्मीरी काव्य की एक सशक्त प्रवृत्ति के रूप में राम-काव्य के उद्भव और विकास पर प्रकाश डाला

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

गया है । यह खण्ड पुनः निम्नलिखित तीन उप-शीर्षकों में विभाजित है :-

अ/ कश्मीरी काव्य में राम कथा : विकास यात्रा के विभिन्न पड़ाव

आ/ 'प्रकाश रामायण' - एक खोज रिपोर्ट

इ/ 'विष्णु प्रताप रामायण' - एक क़लमी-नुसख़ा

द्वितीय खण्ड के अंतर्गत धर्म, दर्शन एवं भक्ति के आधार पर आधुनिक कश्मीरी काव्य का अध्ययन किया गया है । अध्ययन की सुविधा के लिये प्रस्तुत खण्ड को निम्नलिखित चार उप-शीर्षकों में विभक्त किया गया है :-

अ/ लीला एवं भक्ति काव्य

आ/ आध्यात्मिक चिन्तन/विचार प्रधान काव्य एवं भक्ति में 'लोल' का महत्त्व

इ/ सूफ़ी काव्य

ई/ नात एवं मुनाजात

तृतीय खण्ड के अन्तर्गत आधुनिक कश्मीरी काव्य का अध्ययन 20वीं शताब्दी के प्रमुख काव्य आन्दोलनों के सन्दर्भ में तथा सर्जन की वैचारिक पृष्ठभूमि के आधार पर किया गया है । यह अध्ययन निम्न-लिखित सात उप-शीर्षकों को ध्यान में रख कर प्रतिनिधि कवियों की

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

रचनाओं के आधार पर किया गया है :-

अ/ प्रेम काव्य : मुहब्बत जाने जानाँ से

आ/ देश प्रेम एवं राष्ट्रीय भावना : क्रान्ति का शंख नाद

इ/ प्रगतिवादी चिन्तन एवं सामाजिक यथार्थवाद

ई/ प्रयोगवादी काव्य : नये आयामों का अन्वेषण

उ/ नई कविता : युग बोध एवं तलाश अस्तित्व की

ऊ/ हास्य एवं व्यंग्य : नश्तर की तेज़ धार

ए/ इश्क़े इलाही : दिव्यानुभूति

कश्मीरी भाषा के कवियों की रचनाओं से उद्धरण देते समय मैं ने उद्धृत खण्ड के हिन्दी पद्यानुवाद को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया है और उसके मूल कश्मीरी पाठ को पादटिप्पणी के अन्तर्गत पढ़ने वालों की जिज्ञासा-शान्ति एवं अनुवाद की उपयुक्तता को परखने के हेतु साथ दिया है। सम्पूर्ण शोध-प्रबन्ध में जिन कश्मीरी पद्यांशों का प्रयोग किया गया है उनका हिन्दी पद्यानुवाद मैं ने स्वयं किया है और इस अनुवाद-कार्य को पूरा करने में मुझे ढाई वर्ष का समय लगा। अनुवाद करने का पूर्व अनुभव अवश्य था। रेडियो कश्मीर के लिये कश्मीरी नाटकों एवं कविताओं के हिन्दी अनुवाद अन्य अनुवादकों के साथ वर्षों से करता चला आ रहा था। कई पत्रिकाओं के लिये भी कश्मीरी रचनाओं के

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी अनुवाद किये हैं लेकिन जब यह काम हाथ में लिया तो बड़ी दुश्वारियाँ सामने आईं । कभी कभी एक-एक शब्द के हिन्दी अनुवाद के लिये भटकना पड़ा । अनुवाद कार्य करते समय मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि इस काम के लिए न केवल अपार सहनशीलता की अपेक्षा है अपितु तलाशी यार की धुन भी दरकार है । मैं समझता हूँ कि प्रस्तुत विषय के साथ पूर्ण न्याय नहीं हो सकता था यदि बिना अनुवाद के अथवा गद्यानुवाद के आधार पर काम चलाया जाता । मैं काम चलाऊ थीसिस नहीं लिखना चाहता अतः पथरीले डगर पर आगे क़दम बढ़ाता गया, तलवे ज़रूर छलनी हुए लेकिन मंज़िल को पास देख कर सन्तोष की साँस भी ली । मैं यह कदापि नहीं समझता कि मैं ने जो पद्यानुवाद किये हैं केवल वही उत्तम हैं या हर्फ़े आख़िर हैं । मेरा यह दावा कदापि नहीं है । यह तो एक सामान्य प्रयास मात्र है क्योंकि हिन्दी पाठकों के सम्मुख जब तक कश्मीरी रचना का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत न किया जाता तब तक न तो विषय के साथ न्याय हो पाता और न ही सही मूल्यांकन सम्भव होता । मैं इस अनुवाद कार्य को प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग मानता हूँ ।

सन् 1985 ई० में जो काम मैं ने शुरू किया था आज उसे पूरा होते देख मुझे लग रहा है कि कुछ क्षणों के लिये जीवन फिर से महक उठा

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

है । नौ वर्ष तक मैं इस साधना में लीन रहा । इस लम्बी समयावधि के दौरान बहुत से फेर बदल हुए । सामग्री संकलन हेतु कई विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । विशेष कर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के पुस्तकालय में मैं ने 12 फरवरी 1987 से 20 मार्च 1987 तक काम किया ।[1] यहाँ मुझे हर प्रकार की सुविधा प्रदान की गई जिस के लिए मैं पुस्तकालय के उन अधिकारियों और कर्मचारियों का अनुग्रहीत हूँ जिन्होंने सामग्री संकलन में मुझे हर प्रकार की सहायता की और तकनीकी सहयोग भी प्रदान किया ।

जम्मू विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में मैं ने पहले 31 जनवरी 1987 से 10 फरवरी 1987 तक काम किया[2] और तत्पश्चात् विस्थापित होकर सन् 1990 ई० से बराबर काम करता चला आ रहा हूँ ।

जम्मू कश्मीर सरकार के शोध-पुस्तकालय में सन् 1990 तक लगभग रोज़ ही काम करता रहा । यह पुस्तकालय कश्मीर विश्वविद्यालय के परिसर में ही स्थित है और शोध की दृष्टि से एक अनमोल ख़ज़ाना है ।

कश्मीर विश्वविद्यालय की इक़बाल लाइब्रेरी के साथ पिछले 35 वर्षों

1- देखिये परिशिष्ट के अन्तर्गत फोटोचित्र संख्या 8.
2- देखिये परिशिष्ट के अन्तर्गत फोटोचित्र सुख्या 9.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

की यादें जुड़ी हैं । विश्वविद्यालय का एक वरिष्ठ अध्यापक होने के नाते मुझे इक़बाल लाइब्रेरी में हर प्रकार की सुविधा प्रदान की गई । इस पुस्तकालय में हिन्दी, उर्दू और कश्मीरी अनुभाग काफ़ी समृद्ध हैं लगभग 90 प्रतिशत से भी अधिक पुस्तकें जो आज तक कश्मीर और कश्मीरी साहित्य पर अंग्रेज़ी, उर्दू, हिन्दी और कश्मीरी भाषाओं में लिखी गई हैं वे सब इस लाइब्रेरी के कश्मीरी अनुभाग में उपलब्ध हैं । यहाँ प्रस्तुत शोध-कार्य के हेतु छः वर्ष (सन् 1985 से 1990 ई०) मैं ने लगातार काम किया । अपने सहयोगियों को आज याद करते मन बड़ा उदास हो रहा है । उनके प्रति आभार व्यक्त करना भी मेरा धर्म है ।

कश्मीर विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर कश्मीरी विभाग की सेमिनार लाइब्रेरी से भी काफ़ी सामग्री पढ़ने को मिली ।

जम्मू-कश्मीर अकादमी आफ़ॅ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज़, श्रीनगर से भी मुझे काफी सहायता एवं सहयोग प्राप्त हुआ । अकादमी के भूतपूर्व सचिव श्री मुहम्मद यूसुफ टेंग का मैं आभारी हूँ जिन्होंने मेरा काम देख कर 'शीराज़ा' (हिन्दी एवं कश्मीरी) में अधिकांश रचनाएँ प्रकाशित कराने के लिये मुझे प्रेरित किया ।[1] यहीं श्री मोतीलाल साक़ी एवं श्री चमनलाल 'चमन' ने बहुमूल्य परामर्श देकर मेरा दिशानिर्देशन किया । 'साक़ी' साहब की ज्ञान गरिमा के सम्मुख मैं नत-मस्तक हूँ ।

1- देखिये परिशिष्ट के अन्तर्गत फोटो चित्र संख्या 10-11.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जब जब मैं अपनी शंकाएँ लेकर उनके सम्मुख उपस्थित हुआ तो उन्होंने ठोस प्रमाणों के आधार पर समाधान प्रस्तुत किये और मुझे आगे बढ़ने के लिये प्रेरित किया ।

मैं प्रोफ़ेसर पृथ्वीनाथ 'पुष्प', स्वर्गीय दीनानाथ कौल 'नादिम' प्रोफ़ेसर हबीब उल्लाह 'हामिदी', प्रोफ़ेसर अब्दुल रहमान राही, प्रोफ़ेसर रतनलाल 'शान्त', प्रोफ़ेसर रशीद नाज़की, प्रोफ़ेसर मरगूब बानहाली एवं श्री फ़ारूक़ नाज़की (निदेशक रेडियो कश्मीर, श्रीनगर एवं दूरदर्शन केन्द्र श्रीनगर) का आभारी हूँ जिन्होंने मेरे काम को सराहा और मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा दी । प्रोफ़ेसर राही से मैं ने नस्तालीक़ लिपि सीख ली और प्रोफ़ेसर नाज़की ने सूफ़ी काव्य की बारीकियों से अवगत कराया ।

प्रो० पुष्प, प्रो० हामिदी और प्रो० शान्त तो मेरे गुरुदेव हैं उनके प्रति तो मेरा सर्वस्व समर्पित है । मैं प्रो० ओंकार कौल का भी आभारी हूँ जिन्होंने राम काव्य पर अपनी थीसिस की एक प्रकाशित प्रति मुझे पटियाला से भेज दी और अपने बहुमूल्य परामर्श भी दिये । भाई ओंकार कौल के साथ मेरे छात्र जीवन की स्मृतियाँ जुड़ी हैं । मैं स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व अध्यक्ष प्रोफ़ेसर रमेशकुमार शर्मा का भी अत्यन्त आभारी हूँ

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जिन्होंने सर्वप्रथम यह शोध-कार्य आरम्भ करने के लिये मुझे प्रेरित किया और दो वर्ष के लिये अध्ययन हेतु विशेष अवकाश दिलाने में मेरी पूरी सहायता की। शैक्षणिक मामलों (Academic matters) में उन्होंने हर समय मेरा दिशा निर्देशन किया और मूल्यवान सुझाव भी दिये। यही उनका बड़प्पन है।

भाई प्रोफ़ेसर गुलाम नबी सिद्दीक़ी (भूतपूर्व कुलसचिव, कश्मीर विश्वविद्यालय) के साथ जो मैं ने प्रतिज्ञा की थी आज उसे पूरा किया। 'देर आयद दुरुस्त आयद'। विस्थापित होने के कारण सिद्दीक़ी साहब आज मेरी आँखों के सामने नहीं हैं लेकिन मेरे दिल में ज़रूर हैं। जब उन्हें यह समाचार प्राप्त होगा तो निस्सन्देह उनकी प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं रहेगी। जब भी मैं कार्यलिय में उनसे मिलने जाता तो वे अवश्य मेरे शोध-कार्य की प्रगति के विषय में मुझ से सवाल पूछते और शीघ्रातिशीघ्र वचन निबाहने की याद दिलाते। अपने सहयोगी बन्धुओं प्रोफ़ेसर मुहम्मद अयूब खाँ, प्रोफ़ेसर रोशनलाल ऐमा, डॉ० राम दयाल कटारा एवं डॉ० सोमनाथ कौल के प्रति भी अपना आभार व्यक्त किये बिना नहीं रहा जाता जिन्होंने अत्यन्त मुश्किल समय में स्वयं विस्थापित की पीड़ा सहते हुए अपना सक्रिय सहयोग मुझे प्रदान किया। उनकी शुभ कामनाओं से ही आज मैं अपनी मंज़िल के क़रीब पहुँच गया।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

डा० सोमनाथ कौल ने प्रबन्ध के कुछ अंश पढ़ कर महत्त्वपूर्ण सुझाव भी दिये ।

प्रोफ़ेसर जनक गुप्ता (अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू) का मैं अत्यन्त अनुगृहीत हूँ । लगातार पिछले तीन वर्षों से वह हर प्रकार से अपना सहयोग मुझे प्रदान कर रही हैं । उन्होंने न केवल अपने विभाग में मुझे काम करने की सुविधाएँ प्रदान कीं अपितु नैतिक सहारा देकर मुझे परिस्थितियों से जूझने के लिये भी उत्साहित किया ।

मैं 'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग'[1] के अध्यक्ष महोदय का अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने सन् 1986 में शोध विषय से सम्बन्धित मेरी 'लघु शोध परियोजना' को स्वीकार करके - ग्यारह हज़ार रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान की । आयोग के विशेषज्ञों द्वारा इस प्रकार के शोध-कार्य को मान्यता प्राप्त हुई - मेरे लिए यह एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है । वित्तीय सहायता से कुछ राहत अवश्य मिली ।

सन् 1990 ई० में विस्थापित होने के बाद हमारा छोटा सा सुखी परिवार बिखर गया । तीनों बच्चे परिस्थिति वश हम से दूर देश के भिन्न भिन्न शहरों में रहने के लिये विवश हैं । मैं और मेरी पत्नी

1- देखिये परिशिष्ट के अन्तर्गत फोटो चित्र संख्या-12.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पिछले तीन वर्षों से यातनामय एकान्त जीवन का विष पीते हुए सिसक रहे हैं । यह जीवन अधिक समय के लिये नहीं जिया जायेगा । मुझे लग रहा है कि ज़िन्दगी का सूनापन हमें निगलने के हेतु द्वार पर बराबर दस्तक दे रहा है । वीरान ज़िन्दगी में मेरी पत्नी (श्रीमती मोहिनी प्यारी कौल) जिस प्रकार से मेरा साथ दे रही हैं और इस संघर्ष में मेरे कन्धे से कन्धा मिला कर जिस प्रकार वह जीवन की विकट स्थितियों से जूझ रही हैं वह सराहनीय है । इस शोध-कार्य को पूरा करने में उसका हिस्सा बराबर का रहा है । यदि वह साथ न देती तो यह काम कदापि पूरा न होता । अतः आभार व्यक्त किये बिना रहा नहीं जाता ।

श्री राजेन्द्र प्रसाद रैणा जो मेरे एक पुराने साथी, सहकर्मी एवं शुभ चिन्तक हैं । उन्होंने जिस दक्षता एवं लगन के साथ टाइप करने का काम पूरा किया वह निस्सन्देह प्रशंसनीय है । देवनागरी लिपि के द्वारा कश्मीरी भाषा के टंकण में राजेन्द्र जी को गत 25 वर्षों का अनुभव प्राप्त है । अतः प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध एक अनुभवी टंकक (टाइपिस्ट) की तकनीकी सूझ-बूझ से काफ़ी आकर्षक बन पड़ा है । श्री राजेन्द्र जी के इस श्रमदान के प्रति आभार व्यक्त करना मेरा धर्म है ।

आधुनिक कश्मीरी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर सम्यक् प्रकाश डालने के हेतु मैं ने प्रतिष्ठित एवं प्रतिनिधि कवियों की रचनाओं को ही

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अध्ययन के लिये चुना है । यदि मैं अन्य कवियों को भी लेता तो शायद यह प्रबन्ध एक वर्णनात्मक गद्य रचना का रूप धारण कर लेता और शोध के लिये जिस गहन अध्ययन, वैचारिक गरिमा एवं तथ्य निरीक्षण के हेतु अपनायी जाने वाली विश्लेषण - पद्धति की अपेक्षा रहती है वह इस प्रबन्ध में कहीं देखने को न मिलती ।

इस शोध-प्रबन्ध को प्रस्तुत करते समय आज मैं प्रसन्न तो हूँ लेकिन अपने विगत की स्मृति मुझे रुला भी देती है । काश ! यह थीसिस मैं स्वयं अपने हाथों कश्मीर विश्वविद्यालय के परिसर में कुलपति महोदय, जो कश्मीरी भाषा के प्रतिष्ठित लेखक और कश्मीरी साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान हैं, के सम्मुख पेश कर पाता । मालूम नहीं भविष्य के गर्भ में और क्या क्या छिपा है । बहरहाल, दहकते शोलों को बाँहों में समेटना ही तो ज़िन्दगी है ।

नौ वर्षों की कठिन साधना के बाद मैं अपने प्रयास में कहाँ तक सफल हुआ हूँ इसका निर्णय विद्वज्जन ही करेंगे जो अपनी असाधारण प्रतिभा, तथ्य ग्रहण शक्ति एवं सन्तुलित विवेक बुद्धि के बल पर शोध की नई सम्भावनाओं को रेखांकित करते हैं तथा जिन में काँच और कंचन

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

को पहचानने की अद्भुत क्षमता रहती है। उनका न्यायाधृत निर्णय इस प्रकार के शोध के लिये संगेमील की हैसियत रखता है।

भूषणलाल कौल 2/8/1993

सोमवार, 2 अगस्त सन् 1993 ई०, श्रावण शुक्ल पूर्णिमा सं० 2050 वि०, रक्षा बन्धन।

प्रो० डॉ० भूषणलाल कौल
आचार्य एवं भूतपूर्व अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

खण्ड – एक

आधुनिक कश्मीरी काव्य में राम-कथा

§अ§ कश्मीरी काव्य में राम कथा – विकास यात्रा के विभिन्न पड़ाव

§आ§ 'प्रकाश रामायण' 'रामावतार चरित' – एक खोज रिपोर्ट

§इ§ 'विष्णु प्रताप रामायण' – एक क़लमी-नुसख़ा

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अ§ आधुनिक कश्मीरी काव्य में राम-कथा : विकासयात्रा के विभिन्न पड़ाव

1/ 'वनुवुन' गीतों में राम-कथा का सांकेतिक उल्लेख
2/ पण्डित प्रकाशराम कुरिगामो - "रामावतार चरित" -सन् 1847 ई0
3/ पण्डित शंकर कौल - "शंकर रामायण" सन् 1870 ई0
4/ पण्डित आनन्दराम राज़दान - "आनन्द रामावतार चरित" - सन् 1888 ई0
5/ पण्डित विष्णु कौल 'व्योस' - "विष्णु प्रताप रामायण" - सन् 1909-14 ई0
6/ पण्डित नीलकंठ शर्मा - "रामायणि शर्मा" - सन् 1919-26 ई0
7/ पण्डित ताराचन्द - "ताराचन्द रामायण" -सन् 1926-27 ई0
8/ पण्डित अमरनाथ 'अमर' - "अमर रामायण" सन् 1950 ई0
9/ भक्ति-परक मुक्तक रचनाओं में मर्यादा पुरुषोत्तम राम
10/ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सगुण भक्ति के क्षेत्र में कश्मीर के भक्त जनों की अनन्य भक्ति का प्रमुख आधार जहाँ दशरथ सुत रामरहे हैं वहाँ विभिन्न युगों में राम-कथा ने यहाँ के प्रबुद्ध रचनाकार को भी सर्जना के लिये प्रेरित किया है और निस्सन्देह आज भी नया कवि नये सन्दर्भों के परिप्रेक्ष्य में राम कथा के विभिन्न प्रसंगों को नई सम्भावनाओं के साथ प्रस्तुत कर रहा है। यह सत्य है कि वैष्णव भक्ति पर आधारित साहित्य (काव्य) की कोई अति प्राचीन परम्परा हमें कश्मीरी भाषा में नहीं मिलती क्योंकि कश्मीर शताब्दियों से शैव-मत का प्रमुख प्रभाव-क्षेत्र रहा है लेकिन पिछले दो सौ वर्षों के साहित्य के इतिहास में सगुण भक्ति पर आधारित पर्याप्त साहित्य कश्मीरी भाषा में अवश्य देखने को मिलता है। जहाँ कश्मीरी कृष्ण भक्त कवियों ने माधुर्यमय कृष्ण तथा ऐश्वर्यमय कृष्ण का एक अद्भुत मिश्रित रूप अपनी रचनाओं के द्वारा प्रस्तुत किया है वहाँ राम भक्त कवियों ने क्षेत्रीय विश्वासों, परम्पराओं, मान्यताओं और लोक-विश्रुत जन-श्रुतियों अथवा जन-संस्कृति के आधार पर राम के मर्यादापुरुषोत्तम रूप के प्रति पूर्ण समर्पित होकर तथा स्वदेशी अथवा विदेशी काव्य शैलियों को अपना कर राम काव्य को विस्तार प्रदान किया है।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कश्मीरी लोक साहित्य में ‖ विशेष कर लोकगीतों में ‖ राम-कथा के कई प्रमुख पात्रों एवं घटना-प्रसंगों का उल्लेख मिलता है विशेष कर कश्मीरी पण्डितों के विवाह गीतों में लगभग हर धार्मिक कृत्य अथवा सामाजिक रस्म के साथ ये पौराणिक / ऐतिहासिक नाम जुड़ गये हैं । वर के पिता के लिये राजा दशरथ और वधू के पिता के लिये महाराजा जनक का सम्बोधन दोनों को गौरवान्वित कर देता है । घर लीपने के दिन जब घर की मालिकिन अपने मायके विवाह की सूचना देने जाती है तो :-

-- " माँ कौशाल्या चली न्योता देने
पहुँची मायके सर्वप्रथम,
निमक रोटियाँ आवाजाही लेकर
लौट आई दशरथ राजा के घर !
अंगूर बाग़ के बीचों बीच चली न्योता देने
अतिसुन्दर यजमान - त्रिया । "

इसी प्रकार मेहंदी लगाते समय :-

-- " दशरथ राजा के हृदय के टुकड़े
प्रतीक्षा में है मन्नदी फ़र्श
मेहंदी हेतु ।"

' दिवगोन'[1] के समय :-

-- " पुष्प वाटिका को लिपाई की कौशाल्या ने

1.- 'दिवगोन' - कश्मीरी पण्डितों में विवाह के समय लगन पूर्व एक दिन किया जाने वाला विशेष धार्मिक अनुष्ठान ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नहा कर आये दशरथ राजा,
ब्राह्मण संग स्वयं 'दिवगोन' पर बैठे
सोने के बरतन रखें तैयार ।"

और बारात के आगमन पर गाये जाने वाले 'वनवुन'[1] में पौराणिक पात्रों का सांकेतिक उल्लेख किया जाता है :-

—" प्रिय ! दूर से ही सुना मैं ने शंखनाद
जान लिया आ पहुँचे सूर्य वंशी ।
वितस्ता के उस पार सुना शंख नाद
पहचान लिया सिरमौर बिजबिहाड़ा (विजयेश्वर) में ।
अवतारी नल ने सेतु बान्धा सागर पर
यह दशरथ राजा की सवारी है । "

अ थ व ा
=======

" कमख़्वाब बिछाया मैं ने पथ पर
पधारे हैं श्याम वर्ण कामदेव ।
गोशे गोशे को सजाया कमख़्वाब से
बड़ी बेटी को वरण हेतु वे आये ।
धूम धाम से आये दशरथ राजा
कौशाल्या पथ सजा रही है ।
हृदयदुलारे ! आये हो जनकसुता को लेने
सर पर मौक्तिक छत्र किये धारण ।
पुष्प वाटिका में समधी मिलें इक दूजे से
मैना-बुँबुल के विवाह की तैयारी है ।

1- 'वनवुन' - विवाह के शुभावसर पर गाये जाने वाले कश्मीरी लोकगीत ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ऊँचो लंका पर सेज बिछाया मैं ने
रामचन्द्र आये हैं दुलहिन (सीता) को पाने ।"

पण्डित प्रकाशराम भट्ट कुरिगामो कश्मीरी राम काव्य के प्रथम जाने माने कवि हैं जिन्होंने रामकथा पर आधारित महाकाव्य 'रामावतार चरित्र' (प्रकाश रामायण) लिखा । प्रकाश राम से पूर्व कश्मीरी भाषा में हमें किसी कवि की रामकथा पर आधारित कोई स्वतन्त्र प्रबन्ध रचना आज तक उपलब्ध नहीं हुई है । इस विषय में कोई अनुमान लगाना व्यर्थ होगा क्योंकि कश्मीर में वैष्णव भक्ति की धारा पर्याप्त क्षीण रही है और कभी भी एक सशक्त सम्प्रदाय के रूप में इस का विकास नहीं हो सका । सम्भवत: देश की राजनीतिक परिस्थितियाँ प्रमुख रूप से इसके लिये उत्तरदायी रही हैं और त्रस्त कश्मीरी भक्त जनों का समन्वयात्मक दृष्टिकोण इसके विकास में बाधक सिद्ध हुआ है ।

पण्डित प्रकाशराम भट्ट के समय के विषय में ग्रियर्सन महोदय ने अनधिकार चेष्टा करके भ्रान्ति फैलाई । उन्होंने प्रकाशराम भट्ट का नाम दिवाकर प्रकाश भट्ट लिखा और साथ ही यह भी लिख दिया कि वे अठारहवीं शताब्दी के मध्य में उस समय विद्यमान थे जब राजा सुखजीवन मल (सन् 1754 - 1762 ई०) कश्मीर के गवर्नर/शासक थे । ग्रियर्सन ने कवि के इस इस काल-निर्णय का कोई प्रमाण नहीं दिया है । सम्भवत:

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

1948
35
1913
65
1848

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

यह जनश्रुति पर आधारित था ।[1] नहीं तो कुरिगाम (काज़ीगुण्ड) के निवासी प्रकाशराम को गोजवारा - श्रीनगर का निवासी नहीं लिखते । स्वर्गीय अब्दुल अहद आज़ाद ने 'कश्मीरी भाषा और शाइरी' के द्वितीय भाग में उनका नाम प्रकाश भट्ट लिखा है और साथ ही उनके पुत्र के विषय में यह जानकारी भी है - " उनका बेटा सहज़राम आज (सन् 1948 ई०) से तकरीबन 35 साल पहले 65 साल की आयु पाकर स्वर्गवाश हुआ है ।"[2] इससे यह स्पष्ट होता है कि सन् 1848 ई० के आसपास उनका जन्म हुआ था और प्रकाशराम 19वीं शताब्दी के मध्य में वर्तमान थे ।

श्री मोतीलाल साकी ने प्रकाशराम को महमूद गामी[3] का समकालीन माना है ।[4] डॉ० बलजिन्नाथ पण्डित ने 'रामावतार चरित' का सम्पादन कार्य जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी के तत्त्वावधान में सम्पन्न किया । यह

1- "जनश्रुति के आधार पर डॉ० ग्रियर्सन ने कवि के जीवन-काल को राजा सुखजीवन के शासन काल (18वीं शताब्दी उत्तरार्द्ध) तक मान लिया है, जो ठीक नहीं है ।"
-- "कश्मीरी और हिन्दी रामकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन" - डॉ० ओंकार कौल, बाहरी पब्लिकेशनज़ (प्राइवेट) लिमिटेड, दिल्ली- सन् 1974 ई० -- प्राक्कथन, पृ०- (vii) -

2- "कश्मीरी ज़बान और शाइरी" भाग-2, अब्दुल अहद आज़ाद, जम्मू--कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन, सन्-1962 ई० पृ०- 230

3- महमूद गामी का देहान्त सन् 1855 ई० में हुआ ।

4- " सोन अदब " - सन् 1976 ई०, जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - 'लोला और धार्मिक अदब' - मोतीलाल साक़ी, पृ०-180

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

रचना सन् 1965 ई० में प्रकाशित हुई । पुस्तक की भूमिका में डॉ० साहब ने यह बात स्पष्ट कर दी है कि प्रकाशराम ने अपना रामायण सं० 1904 तदानुसार सन् 1847 ई० में लिखा है ।[1] इसे यह बात स्पष्ट होती है कि प्रकाशराम का जन्म 19वीं शताब्दी के आरम्भ में हुआ था ।

डॉ० शशिशेखर तोषख़ानी तथा अन्य विद्वानों का विचार है कि प्रकाशराम का देहान्त 1885 ई० के आसपास हुआ होगा ।[2] कहने का तात्पर्य यह है कि इस विषय में भी निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता । कोई विश्वसनीय प्रमाण प्रस्तुत किये बिना अधिकांश विद्वान[3] इस तिथि का अनुमोदन करते हुए दिखाई देते हैं । सामान्य रूप से यह कहा जा सकता है कि कश्मीरी राम काव्य के इतिहास में प्रकाशराम एक प्रतिनिधि कवि हुए हैं और इनका समय 19वीं शताब्दी के पहले अथवा दूसरे दशक से आरम्भ होकर इसी शताब्दी के अन्त तक रहा है । डॉ० बलजिन्नाथ पण्डित द्वारा किया गया शोध-कार्य इस दृष्टि से महत्त्व-पूर्ण है और 'कोशुर रामायण' सम्पादित ग्रन्थ की भूमिका का अपना ऐतिहासिक महत्त्व अवश्य है ।

1- 'कोशुर रामायण'- सम्पादक डॉ० बलजिन्नाथ पण्डित, जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन, सन् 1965 ई० पृ०-30

2- "कश्मीरी साहित्य का इतिहास" - डॉ० शशिशेखर तोषख़ानी, जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन, सन् 1985 ई०, पृ०-136

3-(i) "कौशिर शाइरी' - मुहीउद्दीन हाजिनी - साहित्य अकादमी प्रकाशन - मार्च 1960 ई०, पृ०- 86.

(ii) "अहवालनामि" - चमनलाल चमन, कश्मीर विश्वविद्यालय, कश्मीरी--विभाग प्रकाशन, सन् 1979 ई०, पृ०-52.

(iii) "कश्मीरी भाषा और साहित्य" - डॉ० शिबनकृष्ण रैणा, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली - 1972 ई०, पृ०-141.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाशाराम की लोक प्रसिद्धि का मूल कारण है - 'रामावतार चरित' जो फ़ारसी भाषा की 'रज़्मिया - मस्नवी'[1] शैली में लिखा हुआ एक वर्णनात्मक कथा-काव्य है। 'लव कुश चरित' भी अब इसी रचना के साथ जोड़ दिया गया है। कहा जाता है कि प्रकाशाराम ने 'अकनन्दुन' 'शिवलगन' और 'कृष्णावतार' तीन अन्य रचनाएँ भी लिखी हैं लेकिन अभी तक इनमें से कोई भी रचना प्रकाशित नहीं हुई है। श्री गुलाम नबी ख़याल ने लिखा है कि 'प्रकाश भट्ट कुरिगामी'[2] कृत 'अकनन्दुन' की हस्तलिखित प्रति जम्मू कश्मीर शोध पुस्तकालय के भूतपूर्व पुस्तकालय अध्यक्ष पण्डित रामजू धर के पास सुरक्षित है जिसका सम्पादित प्रकाशन वे स्वयं करना चाहते हैं।[3] शेष दो रचनाएँ आज उपलब्ध नहीं हैं।

प्रकाशाराम कृत 'रामावतार चरित' आज तक कई बार प्रकाशित हुआ है। सबसे पहले सन् 1910 ई० में 'प्रताप स्टीम प्रेस' श्रीनगर से यह महाकाव्य फ़ारसी लिपि में प्रकाशित हुआ। श्री अली मुहम्मद [पुस्तक विक्रेता तथा प्रकाशक, हब्बाकदल, श्रीनगर] ने इस महाकाव्य को फ़ारसी

1- " मस्नवी " - एक काव्य रूप जिस में कोई कहानी या उपदेश एक ही वृत्त में होता है और उसका हर शेर दूसरे शेर से रदीफ़ क़ाफ़िए में नहीं मिलता और हर शेर के दोनों मिसरे सानुप्रास होते हैं।"
--'उर्दू हिन्दी शब्द कोश" - मुहम्मद मुस्तफा खाँ 'मद्दाह' उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, सन् 1977 ई० - पृ०- 484.
' रज़्मिय: / रज़्मिया' - अर्थात् युद्ध सम्बन्धी।

2- डॉ० ओंकार कौल ने लिखा है कि प्रकाशाराम का पूरा नाम प्रकाश राम पण्डित है।
"कश्मीरी और हिन्दी रामकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन" डॉ० ओंकार कौल - प्राक्कथन, पृ०- (VII)

3- "अकनन्दुन" सम्पादक - गुलाम नबी ख़याल, जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन, सन् 1974 ई० - 'ज़ान' पृ०-11.

CC-0. Bhushan Lal Koul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

लिपि में तीन बार प्रकाशित किया । सन् 1915 ई० में उन्होंने पहली बार इस रचना को प्रकाशित किया ।[1] सन् 1930 ई० में सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने 'रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल' की ओर से इस रामायण का एक संक्षिप्त रूप रोमन लिपि में प्रकाशित करवाया । रामायण के अनेक महत्त्वपूर्ण प्रसंगों में काट छांट कर ग्रियर्सन महोदय ने इस रचना के आकार को संक्षिप्त बनाने का व्यर्थ प्रयास किया है ।[2] इसे कवि के रचना कौशल को समझने में शोधकर्ता को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । ग्रियर्सन द्वारा सम्पादित रचना में अनेक महत्त्वपूर्ण प्रसंग छूट गए हैं । जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी के तत्त्वावधान में प्रकाशराम के 'रामावतार चरित' का सम्पादन कार्य घाटी के जाने माने संस्कृत विद्वान डा० बलजिन्नाथ पण्डित द्वारा सम्पन्न हुआ । यह रचना सन् 1965 ई० में अकादमी की ओर से प्रकाशित हुई ।[3] प्रोफ़ेसर जे० एल० कौल के विचारानुसार फ़ारसी रज़्मिया - मस्नवी-शैली में लिखी हुई -

---

1- काव्यकृति का शीर्षक है -- "रामावतार चरित" - 'लव कुश चरित सहित' अर्थात् रामायण कश्मीरी भाषा में ।

2-"प्रताप स्टीम प्रेस द्वारा प्रकाशित संस्करण में दो हज़ार पांच सौ बालीस पद्य हैं, जबकि ग्रियर्सन के संस्करण में केवल ग्यारह सौ तीन पद्य हैं ।" - 'कश्मीरी साहित्य का इतिहास'- डा० शशिशेखर तोषख़ानी, पृ०-137.

3- डा० शशिशेखर तोषख़ानी ने अपने इतिहास के पृष्ठ संख्या 137 पर लिखा है कि डा० ओंकार कौल और डा० शिबन कृष्ण रैणा ने अधिक प्रामाणिक संस्करण नागरी लिपि में प्रकाशित किये हैं । डा० तोषख़ानी का यह कथन सही नहीं है क्योंकि उक्त विद्वानों द्वारा आज तक इस रामायण के किसी भी संस्करण का सम्पादन नहीं हुआ है ।

-- लेखक --

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

- कश्मीरी साहित्य में यह पहली रचना है ।[1] सम्पूर्ण रामायण में कश्मीर का लोकजीवन प्रतिबिम्बित है । वाल्मीकि रामायण एवं अध्यात्म रामायण का स्पष्ट प्रभाव ग्रहण करने के साथ साथ कवि ने अपनी मौलिक उद्भावनाओं के द्वारा कथा प्रसंगों को नये आयाम प्रदान किये हैं ।

कश्मीरी राम काव्य के इतिहास में दूसरी महत्त्वपूर्ण रचना है -- 'शंकर रामायण' । मूलत: यह रचना शारदा लिपि में लिखी गयी थी लेकिन वह प्रति आज उपलब्ध नहीं है । देवनागरी लिपि में लिखित इस रामायण की एक पाण्डुलिपि श्रीनगर की रिसर्च लाइब्रेरी में उपलब्ध है ।[2]

कवि पण्डित शंकर कौल ने स्वयं रामायण के अन्त पर रचनाकाल का स्पष्ट उल्लेख किया है । यह रचना डोगरा शासक महाराजा रणवीर सिंह के शासनकाल में सन् 1870 ई० में लिखी गई है । इस रचना के 44 अध्याय हैं और कवि ने इसे गीति-शैली में लिखा है । शिव-पार्वती के पारस्परिक संवाद द्वारा कथा का विकास दिखाया गया है । सम्पूर्ण रामायण पाँच खण्डों में विभक्त है और अन्तिम तीन खण्डों के क्रमश: युद्ध खण्ड, उत्तर खण्ड, तथा लव-कुश खण्ड शीर्षक भी दिये गए हैं ।

1- "यह बात भी उल्लेखनीय है कि कश्मीरी भाषा में प्रथम 'रज़्मिया मस्नवी' 'रामावतारचरित' लिखने का श्रेय प्रकाशराम को है । ऐसा कहना तब उचित होगा जब कश्मीरी मस्नवियों को कथ्य (विषय वस्तु) के आधार पर इस प्रकार वर्गीकृत किया जाये -- प्रेम (शृंगार) मस्नवी, रज़्मिया मस्नवी तथा व्यंग्य प्रधान मस्नवी ।'
"स्टडीज़ इन कश्मीरी" - जे० एल० कौल, कपूर ब्रदर्स, प्रकाशक-श्रीनगर कश्मीर, सन् 1968, पृ०- 61

2-"कश्मीरी और हिन्दी रामकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन"- डा० ओंकार कौल, प्राक्कथन, पृ०- (vi)-

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

यहाँ इस बात को स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि कश्मीर के अधिकांश राम भक्त कवियों का मुख्य आधार वाल्मीकि रामायण रहा है । परवर्ती काल में तुलसी कृत 'रामचरितमानस' का प्रभाव भी देखने को मिलता है लेकिन रामभक्त कवियों को मूल प्रेरणा वाल्मीकि-रामायण अथवा अध्यात्म रामायण से ही प्राप्त हुई है । शताब्दियों से कश्मीर संस्कृत अध्ययन - अध्यापन का प्रमुख केन्द्र रहा है और यहाँ के परवर्ती भक्त कवियों पर संस्कृत भाषा और साहित्य का भारतीय दर्शन और चिन्तन का तथा प्राचीन परम्पराओं, विश्वासों तथा मान्यताओं का प्रभाव पड़ना अथवा इन समस्त सांस्कृतिक स्रोतों से प्रवाहित अमृत कणों से सिक्त होना स्वाभाविक है ।

समकालीन परिस्थितियों पर विचार करते समय हमें इस तथ्य से भी अवगत होना चाहिये कि मुस्लिम शासनकाल[1] में फ़ारसी और अरबी भाषाओं का यहाँ के जन-मानस पर ज़बरदस्त प्रभाव पड़ा, फलतः नवीन काव्य-प्रवृत्तियों के साथ-साथ अभिव्यक्ति की नवीन शैलियों का आगमन भी इस देश में हुआ । धीरे-धीरे मिश्रित संस्कृति के प्रभाव से भाव और अभिव्यक्ति के क्षेत्र में हमारे रचनाकारों ने समन्वय बुद्धि से काम लेकर राजकोप से बचने की युक्ति ढूँढ ली । यह उसी समन्वयात्मक दृष्टि का प्रभाव है कि मस्नवी शैली में प्रकाशराम ने अपने रामायण का प्रणयन किया । एक लम्बे समय तक पराधीन रहने के कारण आज कश्मीरी साहित्य में हमें राम-भक्ति की एक क्षीण धारा प्रवाहित दिखाई देती

1- लगभग 1339 ई० से 1819 ई० तक

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

है । राम-भक्ति का विकास एक सशक्त सम्प्रदाय के रूप में यहाँ नहीं हो पाया ।

'शंकर रामायण' के पश्चात् कश्मीरी भाषा में 'आनन्द रामावतारचरित' पण्डित आनन्दराम राज़दान ('त्रिसल' पुलवामा निवासी) ने लिखा । यह रामायण फ़ारसी लिपि में लिखा गया है और इसकी पाण्डुलिपि उसी गाँव में राज़दान साहब के परिवारजनों के पास सुरक्षित है । पण्डित आनन्दराम के विषय में प्रसिद्ध है कि वे स्वयं वैष्णव भक्त थे और श्रीराम के अनन्य उपासक । सम्पूर्ण रामायण को विभिन्न काँडों में न बाँट कर उन्होंने प्रमुख शीर्षकों के अन्तर्गत सम्पूर्ण रामकथा को पद्य बद्ध किया है । राज़दान साहब की लेखनी पर फ़ारसी भाषा का काफ़ी गहरा प्रभाव देखने को मिलता है । सर्व सामान्य जन-भाषा का व्यवहार न करके उन्होंने फ़ारसी-अरबी शब्द-बहुल एक मिश्रित भाषा का व्यवहार किया है यहाँ तक कि रामायण के अन्त तक पहुँचते पहुँचते वे शुद्ध फ़ारसी भाषा में राम-भजन लिख डालते हैं । 'आनन्दरामावतार चरित' की मूल हस्तलिखित प्रति को देखने के बाद यह स्पष्ट होता है कि राज़दान साहब ने जन-विश्वासों एवं लोक-मान्यताओं के आधार पर रामायण के कथानक का गठन किया है । युद्ध-वर्णन (राम - रावण युद्ध) पर्याप्त विशद् है । नौ दिनों तक निरन्तर युद्ध लड़ा जाता है और अन्त में सत्य की विजय और असत्य की पराजय के साथ धर्म एवं मर्यादा की पुनः प्रतिष्ठा होती है । इस दृष्टि से 'आनन्द रामावतार चरित' एक युद्ध-काव्य है । सीता जन्म

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

के सन्दर्भ में लोक विश्वास का पालन करते हुए उसे रावण को पुत्री के रूप में ग्रहण किया गया है । अधिकांश कश्मीरी रामायणों में सीता रावण की पुत्री के रूप में ही स्वीकृत हुई है ।

प्रस्तुत रामायण में फारसी रज़्मिया मस्नवी-शैली एवं गीति-शैली दोनों का समन्वय देखने को मिलता है । राम-कथा का इतिवृत्त कहने के साथ-साथ कवि ने उपयुक्त घटना स्थल पर भक्ति-परक गीतों की सृष्टि भी की है जिन के द्वारा वे अपने इष्ट के सम्मुख अपनी अनन्य श्रद्धा एवं अटूट विश्वास को व्यक्त करते हुए उनके अनुग्रह एवं कृपा का प्रसाद पाने के हेतु सतत अभिलाषी दिखाई देते हैं ।

प्रस्तुत रामायण का रचनाकाल सन् 1888 ई० माना जाता है । मूल हस्तलिखित प्रति में स्वयं कवि ने रचना-काल का संकेत किया है ।[1] परन्तु डॉ० ओंकार कौल को रामायण की जो प्रति प्राप्त हुई है उसमें उन्हें तिथि का कहीं उल्लेख नहीं मिला है ।[2] सम्भव है डॉ० कौल ने इस रामायण की कोई उपलब्ध हस्तलिखित प्रति देखी है, मूल प्रति नहीं ।

कश्मीरी भाषा के राम-काव्य के इतिहास में पण्डित विष्णु कौल (सन् 1875 - 1940 ई०) कृत 'विष्णु प्रताप रामायण' अपना ऐतिहासिक महत्त्व रखता है । पण्डित विष्णु कौल व्योस (अनन्तनाग - कश्मीर) गाँव के निवासी थे । इन का वास्तविक नाम पण्डित विश्वम्भरनाथ कौल था । पण्डित जी फ़ारसी भाषा में 'अनादिल' उपनाम से लिखते

1- "कश्मीरी साहित्य का इतिहास" - डा० शशिशेखर तोषखानी, पृ०-160.

2- "कश्मीरी और हिन्दी रामकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन" - डॉ० ओंकार कौल, पृ०-29.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

First Kashmiri Ramayana written in Kashmiri in 20th century.

थे । 'विष्णु प्रताप रामायण' का रचना काल सन् 1909-1914 ई० है ।[1] 941 पृष्ठों का हस्तलिखित यह रामायण लगभग 3000 (तीन हज़ार) चरणों में विभाजित है तथा इसके 347 अध्याय हैं । ये अध्याय मुख्य रूप से सात काण्डों में इस प्रकार विभाजित हैं -- बाल कांड, बनवास कांड, लंका कांड, अयोध्या कांड, अश्वमेध कांड, राजलीला कांड तथा बैकुण्ठ कांड । इसके अतिरिक्त बनवास कांड में ही किष्किंधा कांड का भी उल्लेख मिलता है । कवि ने आरम्भ में महागणेश, गुरु, निर्गुण ब्रह्म, शिव-पार्वती एवं राम-सीता की वन्दना संस्कृत में और तत्पश्चात् कश्मीरी भाषा में की है । पण्डित विष्णु कौल वाल्मीकि-रामायण से पर्याप्त प्रभावित रहे हैं लेकिन वे पहले कश्मीरी राम भक्त कवि हुए हैं जिन्होंने 'रामचरित-मानस' से भी पर्याप्त प्रेरणा ग्रहण की है । महाराजा जनक के उपवन में राम और सीता की परस्पर भेंट, सीता स्वयंवर, सीताहरण, अंगद रावण संवाद, राम-रावण युद्ध तथा रावण की पराजय एवं अन्य अनेक घटना प्रसंगों के चित्रण में कौल साहब तुलसीदास से पर्याप्त प्रभावित दिखाई देते हैं ।

1- 'विष्णु प्रताप रामायण की मूल प्रति दो भागों में फारसी लिपि में लिखी हुई है । रचनाकाल स्वयं कवि ने 1713 ई० दिया है ।'

"कश्मीरी साहित्य का इतिहास" - डॉ० शशिशेखर तोषखानी, पृ०-161

बहुत दुख के साथ कहना पड़ता है कि डॉ० शेखर ने 20वीं शताब्दी में लिखित प्रस्तुत रामायण को 18वीं शताब्दी की रचना माना है और यह कह कर कि 'रचना काल स्वयं कवि ने दिया है' - वास्तव में कवि के साथ बहुत अन्याय किया है । ऐसा प्रतीत होता है कि डॉ० शेखर ने इस रामायण की पाण्डुलिपि को कभी देखा ही नहीं है ।

-- लेखक --

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रस्तुत रामायण को मुख्य कथा के साथ असंख्य प्रासंगिक कथाओं को सफल योजना की गयी है जिन का सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से पर्याप्त महत्व है । पण्डित विष्णु कौल स्वयं एक सच्चे राम भक्त थे । प्रत्येक कांड में अनेक लीलाएँ, भजन एवं भक्ति-परक गीत लिख कर कवि ने राम को विष्णु के अवतार के रूप में ग्रहण किया है । उन्होंने दास्य भाव की भक्ति को प्रमुखता दी । राम-नाम महात्म्य, नाम-स्मरण, सत्संग, इष्ट कृपा एवं विनीत आत्म निवेदन उनकी राम भक्ति के प्रमुख आधार रहे हैं ।

इस रामायण की हस्तलिखित प्रति फ़ारसी लिपि में है और स्वयं कवि ने अपने हाथ से लिखी है । पण्डित जी ने इस महाकाव्य की हस्त-लिखित प्रति बनाते समय सबसे बढ़िया काग़ज़ और स्याही का प्रयोग किया है । काली चमकदार स्याही से कवि ने इस महाकाव्य को लिखा है । प्रत्येक चौपाई के मध्य उन्होंने लाल स्याही से 'ओ३म्' शब्द लिखा है ।

रामायण दो भागों में विभक्त है । अप्रकाशित अवस्था में यह महाकाव्य स्वर्गीय कवि के सुपुत्र श्री ओ३म्कार नाथ कौल (हरीसिंह हाई स्ट्रीट, श्रीनगर - कश्मीर) के पास बहुत समय तक सुरक्षित था । सन् 1984 ई० में श्री ओ३म्कार नाथ कौल अपने यशस्वी पुत्र श्री रमेश कौल के पास सपरिवार सिंगापुर चले गये जहाँ अक्तूबर सन् 1989 ई० में उनका देहान्त हुआ । हस्तलिखित रामायण की मूल प्रतियाँ इस समय

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

श्री रमेश कौल के पास सिंगापुर में हैं । कुछ समय पूर्व उनकी एक बहन डॉ० (श्रीमती) विजय मोहिनी टैंग उनसे मिलने सिंगापुर गई और वहाँ से रामायण की एक फोटोस्टेट प्रति साथ लाई है । डॉ० (श्रीमती) विजयमोहिनी टैंग, जिन्होंने इस काव्य कृति पर मेरे ही निर्देशन में शोध-कार्य करके कश्मीर विश्वविद्यालय से पी०एच० डी० की उपाधि प्राप्त की है, आजकल अपने परिवार के साथ ग्वालियर में रह रही हैं ।

कश्मीरी राम काव्य के इतिहास में पण्डित नीलकंठ शर्मा (जन्म सन् 1888 ई०) का योगदान भी पर्याप्त महत्त्वपूर्ण रहा है । शर्मा जी ने रामकथा पर आधारित कश्मीरी भाषा में दो रचनाएँ लिखी हैं — " रामायणि शर्मा " और " रामवर्यथ " । "रामायणि शर्मा " महाकाव्य कवि के सात वर्षों (सन् 1919 से 1926 ई०) की अथक साधना का परिणाम है ।[1] इस रचना के कुछ अंश प्रकाशित हो चुके हैं । स्वयं शर्मा जी एक अनन्य राम-भक्त थे और तुलसी कृत रामचरित मानस का उनकी सर्जना पर गहरा प्रभाव पड़ा है । शर्मा जी की भक्ति का प्रमुख आधार दास्य-भाव है । राम-नाम की महिमा का बखान कवि ने रामायण में बड़ी तन्मयता के साथ किया है । लोकगीतों की शैली पर शर्मा जी ने रामायण में कहीं-कहीं सुन्दर गीतों की सृष्टि की है । राम-कथा के द्वारा शर्मा जी अपने गहन चिन्तन के आधार पर

1- "हमारा साहित्य" - 1964 ई० - सम्पादक: नरेन्द्र खजूरिया - जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन, 'कश्मीरी काव्य में राम-भक्ति' - पृथ्वी नाथ 'मधुप' - पृ०- 186.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अरण्य - वन, जंगल
किष्किंधा/किष्किंधा - किष्किंधा देश की
बालि - सुग्रीव की राजधानी
किष्किंधा = मैसूर के आसपास की
दक्षि

ब्रह्म, जीव एवं जगत के पारस्परिक सम्बन्ध पर भी विचार करते हुए दिखाई देते हैं । 'रामचरित्य' एक संक्षिप्ताकार की रचना है जिस को शर्मा जी ने सन् 1913 ई0 में लिखा है । राम-काव्य के क्षेत्र में यह उनका एक प्रारम्भिक प्रयोग माना जा सकता है । वस्तुतः कवि को प्रसिद्धि 'रामायणि शर्मा' के द्वारा ही प्राप्त हुई है । यह महाकाव्य निम्न-लिखित आठ कांडों में विभक्त है - बाल कांड, अयोध्या कांड, अरण्य कांड किष्किंधा-कांड, सुन्दर कांड, लंका कांड, उत्तर कांड और लव-कुश कांड । 'रामायणि-शर्मा' में इस तथ्य का स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि रावण मूलतः असली सीता का हरण नहीं कर पाता क्योंकि राम ने उसे अग्निदेव को सुरक्षा में छोड़ दिया था । सीता का भ्रमात्मक छाया-रूप ही रावण के विनाश का कारण बन जाता है और इसी छाया-रूप-सीता का हरण रावण के द्वारा किया जाता है । इसी प्रकार प्रस्तुत रामायण में अहिरावण प्रसंग भी एक नवीन दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है । यह प्रसंग कमोबेश राम-काव्य में किसी न किसी रूप में अवश्य देखने को मिलता है । प्रस्तुत रामायण में पाताल के शासक के रूप में इस दैत्य को चर्चा सविस्तार की गई है ।

शर्मा जी के रामायण की एक विशेषता यह भी है कि यह महाकाव्य लोक-विश्रुत जन-कथा पर आधारित न होकर 'वाल्मीकि-रामायण' और 'रामचरित मानस' के साथ-साथ 'अध्यात्म रामायण' में वर्णित राम-कथा

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

के विभिन्न कथा-प्रसंगों पर आधारित है । इस रामायण में पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथा-तत्वों का समुचित उपयोग कवि ने एक निश्चित लक्ष्य को ध्यान में रख कर किया है । कथा-वर्णन को शैली के साथ गीति-शैली का समन्वय करके उन्होंने अन्य राम भक्त कवियों का पथानुसरण ही किया है ।[1]

वीर क्युम (कुकर नाग - कश्मीर) के निवासी पण्डित ताराचन्द ने 'ताराचन्द रामायण' (दो भागों में) सन् 1926-27 ई० में लिखा है । यह रामायण भी फ़ारसी लिपि में ही लिखा गया है और आज तक अप्रकाशित अवस्था में उनके परिवार-जनों के पास सुरक्षित है । प्रस्तुत रामायण आठ कांडों में विभक्त है और प्रत्येक कांड के कई अध्याय हैं जैसे अयोध्या कांड में सत्तरह अध्याय हैं । प्रस्तुत रामायण लोक-कथा एवं जन-श्रुति पर आधारित है और प्रकाशराम के 'रामावतारचरित' का इस रचना पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा है । सम्पूर्ण राम-कथा को कश्मीर के माहौल में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है अतः इस लोक रंग से पौराणिक-ऐतिहासिक राम-कथा भक्ति-युक्त पूज्य-भाव से ओत-प्रोत लोक-मानस के हेतु सतत प्रवाहित अमृत धारा का रूप धारण कर लेती है ।

भाषा की दृष्टि से प्रस्तुत रामायण बेजोड़ है । कवि महोदय ने

1- 'अन्य कश्मीरी रामायणों की भाँति 'रामायण-इ-शर्मा' में भी इतिवृत्त में भाव दशाओं के द्योतन के लिए गीत गुम्फित हैं । किन्तु अतिशय अलंकरण द्वारा चमत्कार-प्रदर्शन की प्रवृत्ति उबा देने वाली है ।'
- "कश्मीरी साहित्य का इतिहास" - डॉ० शशिशेखर तोषख़ानी, पृ०- 165.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

शुद्ध कश्मीरी भाषा का प्रयोग करके इसे संस्कृत और फ़ारसी की दासता से मुक्त करने का प्रयास किया है । लेकिन यह भी एक हक़ीक़त है कि कहीं कहीं वे अपने फ़ारसी ज्ञान के मोह में पड़ कर तथा पाण्डित्य प्रदर्शन के हेतु फ़ारसी गर्भित भाषा का व्यवहार भी करते हैं । राम-कथा में लोलाएँ एवं भक्ति-परक गीत जोड़ कर कवि वास्तव में निजी विश्वास के आधार पर अपने भक्त हृदय को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं । श्री अमरनाथ 'अमर' (अनन्तनाग निवासी) ने सन् 1950 ई० में 'अमर-रामायण' की रचना की । यह रामायण भी फ़ारसी लिपि में लिखा गया है और इसकी हस्तलिखित प्रति लेखक के घर में सुरक्षित है । प्रस्तुत राम काव्य में विभिन्न काण्डों अथवा अध्यायों का विभाजन देखने को नहीं मिलता अपितु राम-कथा धारा-प्रवाह रूप में अन्त तक प्रवाहित दिखाई देती है । श्री अमरनाथ ने राम-कथा को कई आधुनिक सन्दर्भों के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । गान्धी जी के हरिजन आन्दोलन से प्रभावित कवि अछूतोद्धार आन्दोलन को नवीन बल एवं शक्ति प्रदान करने के हेतु 'राम-शबरी' प्रसंग को एक नये दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हैं । प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि क्या वर्तमान काल में (आज के कम्प्यूटर युग में) राम-कथा की कोई प्रासंगिकता (relevance) है ? आज के बिखराव भरे जीवन में राम-कथा कहाँ तक नई दिशाओं की ओर बढ़ने के हेतु हमारे लिए सहायक सिद्ध होती है ? आज की उलझन भरी समस्याओं का समुचित हल ढूँढने के हेतु कवि अपने पौराणिक

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

-ऐतिहासिक - सांस्कृतिक विरसे का पुन: निरीक्षण करने बैठ जाता है । उसे आज भी यह दृढ़ विश्वास है कि वर्तमान रेगिस्तानी जीवन में हम अपने सांस्कृतिक विरसे के बल पर अमृत धारा प्रवाहित कर सकते है । कवि उसी अमृत धारा को राम कथा में तलाशने का प्रयास करता है ।

इस रामायण को एक और विशेषता यह है कि कवि ने रचना के आरम्भ में वाल्मीकि का जीवन चरित संक्षेप में प्रस्तुत किया है । ऐसा प्रयास किसी और राम-भक्त कवि ने कश्मीरी भाषा में आज तक नहीं किया है । स्पष्ट है कि वाल्मीकि को एक महान ऋषि के रूप में मान्यता देकर वस्तुत: कवि अपने प्रेरणा स्रोत के प्रति आभार व्यक्त कर रहे हैं । प्रस्तुत रामायण का मुख्य आधार वाल्मीकि रामायण ही है लेकिन युगीन जीवन के प्रति सचेत कवि उसे समसामयिक सन्दर्भों को पृष्ठभूमि में नये अर्थ-तत्वों से विभूषित कर देता है । प्रस्तुत रामायण में फ़ारसी मिश्रित कश्मीरी भाषा का व्यवहार किया गया है लेकिन कवि महोदय का किसी भी इतर भाषा के प्रति कोई विशेष आग्रह नहीं रहा है । यह कहना उचित नहीं कि प्रस्तुत रचना को 'भाषा-बोली में साहित्यिक उत्कर्ष का अभाव है'।[1] दुर्भाग्य यह है कि प्रस्तुत रचना का गहन अध्ययन किये बिना इस प्रकार के निराधार निष्कर्ष प्रस्तुत करके हम वस्तुत: कवि-विशेष की काव्य प्रतिभा के साथ अन्याय करते हैं ।

1- "कश्मीरी और हिन्दी राम-काव्य का तुलनात्मक अध्ययन" -डॉ० ओंकार कौल, पृ०-36.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रबन्ध रचनाओं के अतिरिक्त समय समय पर कश्मीरी भक्त कवियों ने राम के मर्यादा पुरुषोत्तम रूप से प्रेरित और प्रभावित होकर मुक्तक रचनाएँ भी लिखी हैं । ये रचनाएँ लीला, गीत, भजन और लोक-गीतों की शैली में मुख्य रूप से लिखी गई हैं । ऐसी भक्ति-परक मुक्तक रचनाएँ लिखने वालों में स्वामी परमानन्द[1] (सन् 1791-1879 ई०) पण्डित लक्ष्मण जू रैणा 'बुलबुल'[2] (सन् 1826-1898 ई०) तथा पण्डित कृष्ण जू राज़दान[3] (1850 ई - 1926 ई०) के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं । मेरा व्यक्तिगत विचार यह है कि राम-कथा के विकास में इन कवियों का कोई

(कश्मीरी से अनूदित)

1- अ/ 'कुछ सुख नहीं राम भजन बिन
समझो सज्जन सुन सच्ची बात ।' (लीला) - परमानन्द -
आ/ 'गोकुल में श्रीकृष्ण हुआ है, अजोध्या में राम ।' (लीला) वही -

2- "श्री राम गीता" - लक्ष्मण जू रैणा 'बुलबुल'

3- अ/ 'झोलनी का झूठा मेवा रामजी ने खाया
उत्तम पाया प्रेम से ।' -- कृष्ण जू राज़दान --
आ/ 'अजोध्या में चलो देखो अजब क्या तमाशा है ।'
-- कृष्ण जू राज़दान --
इ/ 'राम मेरे प्रिय राम !
रे मन ! राम भजन कर,
राम नाम ले पार उतर जा
भवसागर से ।' (कश्मीरी से अनूदित) --कृष्ण जू राज़दान -
ई/ "श्याम सुन्दर मेरे रामचन्द्र !
बलिहारी राम नाम पर !" (कश्मीरी से अनूदित)
-- कृष्ण जू राज़दान --

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

विशेष योगदान नहीं रहा है । मूलत: ये राम-भक्त कवि नहीं थे । यदा कदा एक-आध रचना लिख कर यद्यपि इन्होंने राम के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की है तथापि राम-काव्य के क्षेत्र में अथवा राम-भक्ति को लोकप्रिय बनाने की दृष्टि से इन कवियों की कोई भूमिका नहीं रही है । भले ही ज्ञान, चिन्तन, दर्शन अथवा विचार की गरिमा हमें इन रचनाओं में कहीं कहीं देखने को मिले लेकिन राम कथा-काव्य के इतिहास में अथवा सगुण राम-भक्ति के क्षेत्र में इन कवियों का महत्त्व नगण्य है ।

राम कथा पर आधारित महत्त्वपूर्ण महाकाव्यों का सर्जन पिछली दो शताब्दियों में कश्मीरी भाषा में अवश्य हुआ है लेकिन इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता है कि सगुण राम-भक्ति का समुचित विकास कश्मीर में नहीं हो सका । इस के कई कारण हैं जिनमें ऐतिहासिक घटनाओं और राजनीतिक परिस्थितियों की भूमिका सब से अधिक महत्त्व-पूर्ण रही है । भयाकुल जन समुदाय की समन्वय बुद्धि सदा क़दम क़दम पर समझौता करने के पक्ष में रही है, किसी विशिष्ट धार्मिक सम्प्रदाय का पोषण और पालन उनके द्वारा कभी सम्भव नहीं था । एक सशक्त आन्दोलन/लहरीक का रूप धारण न कर सकने के कारण राम-भक्ति का सोता कभी पूर्ण प्रवाह के साथ सवेग प्रवाहित न हो सका फलत: राम-काव्य की परम्परा भी अत्यन्त क्षीण और अशक्त रूप में कश्मीरी भाषा के साहित्य में हमें देखने को मिलती है जिस की कुल आयु दो सौ वर्ष से

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अधिक नहीं है ।

कश्मीरी राम-कथा के इतिहास का अध्ययन करने के पश्चात् निम्न-लिखित महत्त्वपूर्ण तथ्य प्रकाश में आते हैं :-

1/ अधिकांश कश्मीरी राम-काव्य आज तक अप्रकाशित रहे हैं । जिन लोगों के पास इनकी हस्तलिखित प्रतियाँ अथवा पाण्डुलिपियाँ मौजूद हैं वे भी अधिक समय तक इनको सुरक्षित नहीं रख पायेंगे । यदि इस दिशा में किसी व्यक्ति अथवा संस्था का ध्यान आकर्षित नहीं होता तो एक दिन केवल इन रचनाओं का नामोल्लेख मात्र किया जायेगा और कश्मीरी भाषा के साहित्य के लिये यह अत्यन्त दुःखद घटना होगी ।

2/ मौलिक उद्भावनाओं की दृष्टि से ये रचनाएँ पर्याप्त महत्त्वपूर्ण हैं । रामायण के विभिन्न प्रसंगों को लोक विश्वास के आधार पर नवीन रूप और आकार प्रदान करने में इन कवियों ने कहीं कथा तत्त्व में मौलिक अंश अथवा नवीन अंश जोड़ दिये हैं और कहीं-कहीं कथा-प्रसंग को बिल्कुल ही नवीन रूप प्रदान किया है । इसे यदि 'राम-कथा में कश्मीरियत' कहा जाय तो अनुचित नहीं होगा ।

3/ इन राम-काव्यों में कश्मीर का प्राकृतिक वातावरण, लोक विश्वास, जन-श्रुतियाँ एवं लोक मान्यताएँ प्रमुख रूप से चित्रित/वर्णित हैं ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जब तक इन रचनाओं का गहन अध्ययन नहीं किया जायेगा तब तक सम्पूर्ण भारत के राम-काव्य का इतिहास अपूर्ण होगा । फ़ादर कामिल बुल्के[1] ने मात्र इन में से एक या दो रचनाओं का सरसरी हवाला देकर कैसे सन्तोष प्राप्त किया यह समझ में नहीं आ रहा है ।

4/ कश्मीर में वैष्णव भक्ति (विशेष कर रामभक्ति) का क्या रूप रहा है और इसके विकास में यहाँ के सर्जनात्मक कलाकार का क्या योगदान रहा है - इसकी सम्यक् जानकारी इन रचनाओं के द्वारा प्राप्त हो सकती है ।

5/ कश्मीरी भक्त कवियों की समन्वयात्मक दृष्टि उनके चिन्तन, विचार एवं विश्वासों की सम्यक् जानकारी भी इन रचनाओं के द्वारा प्राप्त हो सकती है ।

6/ विकासोन्मुख कश्मीरी भाषा के विभिन्न रूप हमें इन रचनाओं में देखने को मिलते हैं । केवल शब्द-प्रयोग के आधार पर यदि इन रचनाओं का अध्ययन किया जाये तो भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से कश्मीरी भाषा के विकास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ सकता है । ये कवि जहाँ संस्कृत और फ़ारसी से उधार ली हुई शब्द सम्पदा का खुल कर

1- कामिल बुल्के (सन् 1909 ई० - 1984 ई०)
"रामकथा - उत्पत्ति और विकास" - सन् 1950 ई०, राँची के सेंट जेवियर्स कालिज में हिन्दी और संस्कृत विभाग के अध्यक्ष थे ।
" हिन्दी साहित्य कोश" भाग(2) - ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणासी - द्वितीय संस्करण - सन् 1986 ई० - पृ०- 83.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रयोग करते हुए दिखाई देते हैं वहाँ साथ ही कश्मीरी भाषा के तद्भव शब्दों अथवा लोक भाषा/बोली के शब्दों अथवा शब्द-खण्डों को भी इन कवियों ने अपनी रचनाओं में प्रयोग में लाया है और इस प्रकार काव्य को और अधिक मर्मस्पर्शी बनाने का प्रयास किया है । भाषा और शैली की दृष्टि से भी इन रचनाओं का अध्ययन पर्याप्त महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है ।

- 0 -

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

---

§आ§ 'प्रकाश रामायण' 'रामावतारचरित' - एक खोज रिपोर्ट

1- समन्वयात्मक दृष्टिकोण - ऐतिहासिक विवेचना
2- राम-कथा में मौलिक उद्भावनाएँ
3- लौकिक कथा के साथ आध्यात्मिक रूपक
4- दास्य भाव को भक्ति का सर्वोत्कृष्ट रूप
5- स्थानीय रंग
6- राम : दशरथसुत अयोध्यावासी नागरिक तथा नर-रूप नारायण
7- सीता : आदर्श पत्नी एवं विद्रोही नारी
8- अग्निपरीक्षा : नारी अभिशाप का क्रूर प्रसंग
9- रावण : खलनायक की सफल भूमिका में
10- मन्दोदरी : पत्नी रूप तथा मातृ रूप
11- फ़ारसी भाषा की रुमिया मस्नवी शैली
12- ज़िन्दगी की तल्ख़ हक़ीक़तों की अभिव्यक्ति
13- भाषा सम्बन्धी मौलिक प्रयोग
14- प्रकृति चित्रण और सौन्दर्य बिम्ब
15- संवाद शैली - प्रश्नोत्तर-शैली
16- परिगणन-पद्धति
17- निष्कर्ष ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

स्वर्गीय प्रकाशराम कुरिगामी द्वारा लिखित 'प्रकाश रामायण' कश्मीरी साहित्य के इतिहास में प्रथम उपलब्ध रामकाव्य है । पण्डित प्रकाशराम ने कई अन्य रचनाएँ भी लिखीं हैं[1] लेकिन यही एक रचना आज तक सुरक्षित रह सकी हैं ।

इस में कोई सन्देह नहीं कि 'प्रकाश रामायण' का रचनाकाल संवत् 1904 तदानुसार सन् 1847 ई० है[2] इसे 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की रचना कहना एक ऐतिहासिक भूल हैं जिसके लिए जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन और उसके अन्य भक्त उत्तरदायी हैं । प्रकाशराम कृत 'रामवतार चरित' आज तक कई बार प्रकाशित हुआ है । सब से पहले सन् 1910 ई० में

1- 'रामवतार चरित' के अतिरिक्त पण्डित प्रकाशराम ने 'कृष्णावतार' 'शिवलग्न' तथा 'अकनन्दुन' कथा-प्रधान काव्य रचनाएँ भी लिखी हैं जिन में प्रथम दो रचनाएँ अथवा उनका मूल हस्तलिखित पाठ आज तक उपलब्ध नहीं हो सका । -- लेखक --

2- 'प्रकाशराम ने 28 वर्ष की आयु में संवत् 1904 तदानुसार सन् 1847 ई० में अपनी प्रसिद्ध प्रबन्ध-कृति 'रामावतार चरित' की रचना की थी ।'
"कश्मीरी भाषा और साहित्य" - डॉ० शिबन कृष्ण रैणा - सन्मार्ग प्रकाशन - दिल्ली-7, सन् 1972 ई० - पृ०- 141.
मूल स्रोत:-
"काश्मीर रामायण" - सम्पादक - डॉ० बलजिन्नाथ पण्डित - जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - सन् 1965 ई० -भूमिका - पृ०-30

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रताप स्टीम प्रेस, श्रीनगर से यह महाकाव्य फ़ारसी लिपि में प्रकाशित हुआ। श्री अली मुहम्मद (पुस्तक विक्रेता तथा प्रकाशक, हब्बाकदल श्रीनगर) ने इस महा काव्य को फ़ारसी लिपि में तीन बार प्रकाशित किया। प्रथम संस्करण सन् 1915 ई० में प्रकाशित हुआ।[1] सन् 1930ई० में सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने 'रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल' की ओर से इस रामायण का एक संक्षिप्त रूप रोमन लिपि में प्रकाशित करवाया। रामायण के अनेक महत्त्वपूर्ण प्रसंगों में काट छाँट कर ग्रियर्सन महोदय ने इस रचना के आकार को संक्षिप्त बनाने की अनधिकार चेष्टा की है। ग्रियर्सन द्वारा सम्पादित रचना में अनेक महत्त्वपूर्ण प्रसंग छूट गए हैं।[2] जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी के तत्त्वावधान में प्रकाशराम के 'रामवतार चरित' का सम्पादन कार्य घाटी के जाने माने संस्कृत विद्वान डॉ० बलजिन्नाथ पण्डित द्वारा सम्पन्न हुआ। यह रचना सन् 1965 ई० में अकादमी की ओर से प्रकाशित हुई। कहीं कहीं 'प्रकाश रामायण' को वाल्मीकि रामायण का भाषानुवाद भी कहा गया है।[3] इस प्रकार

1- काव्यकृति का शीर्षक है :- "रामावतार चरित" (लवकुश चरित सहित अर्थात् रामायण कश्मीरी भाषा में)
प्रकाशक:- अली मुहम्मद एण्ड़ सन्ज़, पुस्तक विक्रेता, हब्बाकदल, श्रीनगर

2- 'प्रताप स्टीम प्रेस' द्वारा प्रकाशित संस्करण में दो हज़ार पांच सौ बालीस पद्य हैं, जबकि ग्रियर्सन के संस्करण में केवल ग्यारह सौ तीन पद्य।
"कश्मीरी साहित्य का इतिहास" - डॉ० शशिशेखर तोषखानी, जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन- सन् 1987 ई०, पृ०-137.

3- 'संस्कृत भाषा के महान कवि वाल्मीकि के प्रसिद्ध महाकाव्य का कश्मीरी भाषा में प्रकाशराम कुरिगामी ने पद्यानुवाद किया।'
"कीज़ु टु कश्मीर" - लालख प्रकाशन, श्रीनगर - सन् 1957 ई० पृ०-153

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

के दुर्भाग्य पूर्ण निष्कर्ष हमारी निजी कमज़ोरी के द्योतक हैं । इसमें सन्देह नहीं कि अध्यात्मक रामायण तथा वाल्मीकि रामायण ही पण्डित प्रकाश राम के मूल प्रेरणा स्रोत रहे हैं । लौकिक और अलौकिक तत्त्वों के आपसी समन्वय के हेतु, राम के सर्वशक्तिमान लीलामय अवतारी रूप के महात्म्य का बखान करने हेतु तथा सबसे बढ़ कर सत् और असत् के मध्य चल रहे संघर्ष को विश्वसनीय रूप प्रदान करने के हेतु प्रकाशराम ने समान रूप से अध्यात्मक रामायण तथा वाल्मीकि रामायण में वर्णित मुख्य कथा प्रसंग को आधार स्वरूप ग्रहण किया है । लेकिन जिस प्रकार कवि ने रामायण का कश्मीरीकरण किया है अथवा मौलिक उद्भावनाओं के द्वारा उसमें नये आयाम जोड़ दिये हैं और फ़ारसी रज़्मिया(रज़्मिय:) शैली को भक्ति काव्य के हेतु व्यवहार में लाया है उसे देखकर स्वत: निराधार भ्रान्तियों का निवारण हो जाता है । कश्मीर के अधिकांश रामभक्त कवियों का मुख्याधार वाल्मीकि रामायण रहा है । शताब्दियों से कश्मीर संस्कृत भाषा और साहित्य के अध्ययन-अध्यापन का प्रमुख केन्द्र रहा है । यहाँ के भक्त कवियों पर संस्कृत भाषा और साहित्य का, भारतीय दर्शन और चिन्तन का, प्राचीन परम्पराओं, विश्वासों और मान्यताओं का प्रभाव पड़ना अथवा इन समस्त सांस्कृतिक स्रोतों से प्रवाहित अमृत कणों से सिक्त होना स्वाभाविक है ।

इस तथ्य से भी अवगत होना ज़रूरी है कि कश्मीर में राम भक्ति

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

का विकास एक सशक्त सम्प्रदाय के रूप में नहीं हो पाया है । इस के कई कारण हैं । कश्मीर शताब्दियों तक शैव सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र रहा । त्रिक-सिद्धान्त के अनुयायी अपने ही सैद्धान्तिक मनन-चिन्तन और तार्किक विश्लेषण में लीन रहे । शैव सम्प्रदाय के समानान्तर सगुण भक्ति की क्षीण धारा प्रवाहित तो होती रही लेकिन एक सशक्त वेगवती स्रोतस्विनी का रूप ग्रहण करने में असमर्थ रही । जब शैव सम्प्रदाय के अनुयायी विदेशी सांस्कृतिक आक्रमण से भयभीत हो उठे तो निराशावस्था में विष्णु के अवतारी रूप की दुहाई देने लगे । कहने का तात्पर्य यह है कि तत्कालीन परिस्थितियों से त्रस्त जन-मानस ने आत्म सन्तोष के हेतु सगुण भक्ति का सहारा लिया और जिस राम-भक्ति आन्दोलन ने मध्य भारत के रचनाकार को 16वीं शताब्दी में प्रभावित और प्रेरित किया वही आन्दोलन 19वीं शताब्दी के मध्य में प्रकाशराम के 'रामवतारचरित' के रूप में अपने कमज़ोर अस्तित्व का एहसास दिलाने लगा । दूसरी विशेष बात यह है कि यहाँ के भक्त कवि ने अपनी समन्वयात्मक बुद्धि से काम लेकर निराकार-साकार, शैव-वैष्णव, भक्ति-ज्ञान तथा जीव-ब्रह्म सम्बन्धी विचारों, मान्यताओं और विश्वासों का मिश्रित रूप अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है । मेरा विचार यह है कि वास्तव में यहाँ का भक्त-कवि अभी भी पूरे साहस और विश्वास के साथ यह नहीं कह पाता है कि मैं राम का भक्त हूँ और केवल राम का अथवा मैं कृष्ण का भक्त हूँ और

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

केवल कृष्ण का । ऐतिहासिक विवशताओं से प्रेरित समन्वयात्मक दृष्टिकोण हमारी निजी कमज़ोरी का सूचक होते हुए भी रचनाकार की सर्जनात्मक प्रतिभा को बहुआयामी अर्थ प्रदान करता है । पण्डित प्रकाशराम इसके अपवाद नहीं ।

प्रकाशराम के 'रामवतारचरित' में सम्पूर्ण राम-कथा दो अक्षों पर एक साथ गतिमान है ।[1] राम के अवतारी रूप अथवा अतिमानवीय रूप से सम्बन्धित कथा तथा दशरथ-सुत के जीवन चरित से सम्बन्धित कथा । भक्त जन इसे देवी प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं तथा जीवन सिद्धि का आधार मान कर इस के द्वारा लोक में ही परलोक का सुख भोगते हैं लेकिन प्रश्न यह उपस्थित होता है कि कवि इस दोहरी कथा को चरम बिन्दु तक पहुँचाने में कहाँ तक सफल हुए हैं और क्या कहीं इस प्रकार की दोहरी भूमिका से पात्रों के विश्वसनीय रूप पर प्रश्नचिह्न तो नहीं लगते । आज के वैज्ञानिक युग में तो तर्क ही जीवन का सशक्त आधार है ।

'रामावतार चरित' की मूल-कथा परम्परागत रूप में कई काँडों में विभाजित है । कवि आरम्भ में ही ईश-वन्दना, गणेश स्तुति तथा

1- 'वस्तुत: कृति में राम-कथा दो अक्षों पर गतिमान है । उसका एक अक्ष अलौकिक और आध्यात्मिक है तो दूसरा मानवीय और लोक सामाजिक ।'
- " कश्मीरी साहित्य का इतिहास" - डॉ० शशिशेखर तोषखानी, पृ०- 141.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

गुरू पूजा[1] द्वारा शान्त मन से मंगलकामना करते हुए शिव-पार्वती संवाद[2] द्वारा रामकथा का श्रीगणेश करते हैं। मुख्य पात्रों के प्रतीकात्मक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए प्रकाशराम रामायण के मूल उद्देश्य को भी व्यक्त करते हैं।[3] दशरथ को कश्यप, कौशल्या को अदिति[4], राम को नारायण, लक्ष्मण को शेषनाग, शत्रुघ्न और भरत को शंख

1- 'सर्वप्रथम शीर्ष (शीश) नवा ले महागणेश के सम्मुख
रक्षक हैं जो मनुष्य लोक के। (मूल पाठ : कश्मीरी)
फिर नमस्कार कर ले अपने सत्गुरू को
इस भवसागर से जो पार उतारें गें।
सदाशिव! अन्धों को दे आँखों को ज्योति
व्यक्त स्पष्ट हो सूर्य सदृश, अन्धे को पहचान कहाँ!'
-"रामावतारचरित" - प्रकाशराम कुरिगामी - प्रकाशक-अली
मुहम्मद एण्ड सन्ज़, हब्बाकदल, श्रीनगर-कश्मीर, तृतीय संस्करण, पृ0-8

2- 'देवी ने कहा, हे शिव जी! दया करो!
अवतार कथा कह दीजिये, अभिलाषा मन को होगी पूर्ण।'
-"रामावतारचरित" पृ0-12

3- अ/ 'वन गमन तुम्हारा केवल एक बहाना था,
मूल लक्ष्य था असुर विनाश।'
--"रामावतारचरित" पृ0-168

आ/ 'रावण के हेतु हुए अवतारी, आये
भूमि का भार हरण करने
सीता है लक्ष्मी और लक्ष्मण है वाहन
अभिलाष है तेरे दर्शन को।' -- "वहीं" पृ0-51

4- 'कश्यप ने जन्म लिया दशरथ बनकर
अदिति माँ है कौशल्या।'
-- "वहीं" पृ0-52

अदिति - दक्ष की पुत्री जो कश्यप से ब्याही थी और जो आदित्यों (अदिति के बारह पुत्रों, इन्द्र आदि या देवताओं की माता मानी जाती है।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

और यज्ञ, सीता को भूमि[1], रावण को असत्, हनुमान को साहस तथा कैकेयी को मन की प्रकृति का प्रतीक मान कर कथा दोहरे अर्थ के बन्धन में बन्ध जाती है ।[2] प्रस्तुत रामायण में वर्णित रामकथा के उन्हीं प्रसंगों पर यहाँ विचार किया जायेगा जो या तो मौलिक उद्भावना की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं या जिनके द्वारा सम्पूर्ण रामकथा को एक नवीन वैचारिक धरातल प्राप्त होता है अथवा जिन प्रसंगों के द्वारा विश्वसनीय लोक जीवन साकार हो उठा है ।

1. प्रकाशरामायण में सीता मन्दोदरी के गर्भ से उत्पन्न रावण की पुत्री है जिसे ज्योतिष-पण्डितों की भविष्य-वाणी जन्म लेते ही कालसर्पिणी के समान डस लेती है । पुरुष प्रधान समाज द्वारा नारी अत्याचार का यह एक ज्वलन्त उदाहरण है ।[3] उसे अपने ही पिता रावण और लंका के लिए अनिष्टकारी बता कर नदी में प्रवाहित किया जाता है और सौभाग्य-वश राजा जनक नदी किनारे देवकृपा से उन्हें

1- 'पुत्र जन्म में आये हैं नारायण
शेषनाग पहुँचे लक्ष्मण बनकर,
शत्रुघ्न भरत हैं शंख - चक्र
भूमि स्वयं अवतरित हुई सीता बन कर'
— "रामावतारचरित" पृ0-37

2- 'इच्छा है सीता, सत् स्वरूप हैं राम - लखन
साहस है हनुमत और रावण का रूप असत्
कैकेयी है प्रकृति और जन्म प्रतीक सुमित्रा
दशरथ है धर्म स्वरूप कर्मलेखा कौशल्या ।'
—"रामावतारचरित" पृ 0-9-10

3- 'जन्म लेते ही ठगा मुझे ज्योतिषी और पण्डित ने
फिकवा दिया नदिया में पत्थर बँधवा के ।'
— वही - पृ0-219.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पाकर हर्षोल्लास से खिल उठते हैं । जहाँ मन्दोदरी और स्वयं सीता इस तथ्य से परिचित हैं वहाँ मदोन्मत्त रावण अन्तिम समय तक इस हक़ीक़त से अपरिचित ही रहा जो विश्वसनीय प्रतीत नहीं होता । रावण जब सीता को उठा कर लंका की ओर प्रस्थान करता है तो बराबर सीता उसे चेतावनी देती रहती है कि वह अपनी ही बेटी के साथ अन्याय कर रहा है ।[1] लंका पहुँचने पर देखते ही मन्दोदरी सीता को पहचान लेती है ।[2] वह मन मसोस कर रह जाती है और कामान्ध पति को पथभ्रष्ट होने से रोक नहीं पाती । उस युग में भी नारी विवश अवस्था में पति

1- ' कहा सीता ने - क्या नहीं देखा है रामचन्द्र का क्रुद्ध रूप ?
उत्तर में रावण बोला - हो जायेगी प्रसन्न देख के लौने को लंका
और कहा रावण ने - क्यों रहती हो शापित-पीड़ित अकुलाती
वन में ?
उत्तर में सीता बोली - कभी बेटी स्वयं मायके आती है ?
रावण ने पुनः कहा - चल, देख आकाश को छूती लंका
सीता बोली - क्या बेटी अपने बाप के साथ भागेगी ?
कहा रावण ने - आना चाहिये तुम्हें लंका में
सीता ने फटकारा - दामाद को चाहिये लेते आना स्वागत पूर्वक । '
-- " रामावतारचरित " पृ0- 64.

2- ' देखिये, माता ने पहचाना अपने खून को
बेटी को पाकर दग्ध प्रवाहित हुआ वक्षस्थल से
उस के मुख को एकटक ताका और पहचान लिया
गले लगा कर उसे बहुत दुलार किया
कहने लगी - वही तो है जो जन्मी मेरे कोख से
रावण - विनाश हेतु आई है इस जग में ।'
-- "रामावतारचरित" पृ0-66-67.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आश्रित रह कर तथा पुरुष का खिलौना बनकर ही अपने अस्तित्व को रक्षा कर पाती थी । जहाँ मर्द को मर्दानगी वासना के सम्मुख घुटने टेक चुकी थी वहाँ नारी भी साहस विहीन जीवन जीने के लिए विवश हो रही थी । मन्दोदरी आँसू तो बहाती है पर वासनादग्ध पति को सम्भाल नहीं पाती । सीता स्पष्ट शब्दों में हनुमान से कहती है कि रावण उसके पिता हैं :-

' उत्तर में वह बोली कि सरल हृदय हो कितने !
सच कहती हूँ रावण मेरे पूज्य पिता हैं
जब दूषित हो जाते संस्कार तो अंजाम यही होती है
बन जाता सोना पीतल, अहंकार हो जाता चूर ।'[1]

अहंकारी रावण अत्याचारी होते हुए भी अपने राजनीतिक विवेक तथा कुशाग्र बुद्धि बल के लिये विख्यात थे । वह अपने ही खून को पहचान नहीं पाया और बराबर अपनी ज़िद पर डटे रहा । उसके अहंकार के सम्मुख विवेक ने घुटने टेक दिये फलतः यथार्थ ओझल होकर काम के गहन अन्धकार में खो गया । यह वही रावण है जिस के सम्मुख देवता थर-थर काँपते थे और कई बार उससे पिट भी चुके थे । देखा जाये तो देवता अपने कुकर्मों के कारण पिटने के ही योग्य थे नहीं तो अहिल्या शिला बन कर बरसों हमें सुरेन्द्र के दानवी रूप को याद न दिलाती । प्रकाशराम हमें इस तथ्य से अवगत कराना चाहते थे कि हठी कामान्ध जीव अपने ही

1- " रामावतार चरित" पृ0- 99.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

हाथों अपने विनाश की सामग्री जुटाता है उस स्थिति में न्याय-अन्याय, कुकर्म-सत्कर्म अथवा धर्म-अधर्म का अन्तर समाप्त हो जाता है क्योंकि जीव अपने मानसिक विवेक को खो देता है ।

2. प्रस्तुत रामायण में मंथरा (कुब्जा) के बदले इन्द्र के आदेश पर सरस्वती कैकेयी के मन में वैमनस्य के बीज बो देती है ।[1] राम के राज्याभिषेक की तैयारियाँ हो रही हैं और देवता यह सोच कर चिन्तित हैं कि कहीं उनकी आशाओं पर पानी न फिर जाये फलतः देवता सरस्वती की सहायता लेकर राजा दशरथ के विनाश का कारण बन जाते हैं । इस आध्यात्मिक अथवा अतिमानवीय सूत्र पर यदि तनिक ध्यान दिया जाये तो दो तथ्य स्वतः स्पष्ट हो जाते हैं कि निजी स्वार्थ के हेतु देवता भी अपने देवतापन को भूल जाते हैं फलतः जीव उनके हाथों में कठपुतली बन कर रह जाता है तथा होनी को कोई टाल नहीं सकता । कैकेयी के भीतर विमाता का शंकालु हृदय तड़प उठता है । त्रिया हठ के सम्मुख दशरथी ठाठ-बाट (तड़क-भड़क) खण्ड-खण्ड होकर बिखर जाती है और महाराजा बहुपत्नी लोभ के दुःखद परिणाम का शिकार बन कर हृदय विदारक विलाप करके रह जाता है :-

' सुन कर राजा मुँह के बल गिर पड़े भूमि पर

1- ' यही बात जब सुनी इन्द्र ने इन्द्रपुरी में
सरस्वती को बुलवाया और भेजा उसी रात
कहा उसे मन फेर ले कैकेयी का जाकर
जो उस के हठ से होना पड़े रामचन्द्र को बनबासी ।'
-- "रामावतारचरित" पृ0-29.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जनता ने समझा दशरथ मरणासन्न हुए ।

'यह क्या किया है तू ने ? सजल नेत्रों से प्रश्न किया
दशरथ ने
चीर लिया है वक्ष मेरा, भर दिया धिक्कम अंगारों
से ।
किस ने कहा तुझे जीते जी अपने पति का वध करने को ?
मिटा कर वंशमूल पत्तों को अमृत पान कराना
किस ने कहा तुझे जीते जी उनको आँखों में बाण फेंकना ?
शाप ग्रस्त है जीवन मेरा, तेरा क्या अपराध ?
तो कुछ मेरे पास है अब तक वह सब भरत को दूँगा
मुझे चाहिये राम, केवल राम, वही है सम्पत्ति
मेरी ।'[1]

3. अहिल्या शाप-निवारण का प्रसंग प्रस्तुत रामायण में दो बार आया है सीता स्वयंवर से पूर्व और राम वनवास के बाद । देखा जाये तो अहिल्या शापित भारतीय नारी का प्रतीक है । देवराज की कामवासना गौतम के आश्रम को अपवित्र कर देती है । प्रस्तुत रामायण में देवराज महाराज अर्द्धरात्रि को ही मुर्ग़ा बन कर बाँग देते हैं ।[2] गौतम यह सोच कर कि प्रभात होने जा रहा है - नदी पर स्नान के लिए प्रस्थान करते हैं और राजाओं के राजा अपने मुँह पर कालिख पोत

1- " रामावतारचरित " पृ0-31.

2- ' पहुँचे बन में और स्वाँग रचा मक्कार ने ऐसा
मुर्ग़ा बनकर अर्द्धरात्रि को बाँग दी उसने ।'
-- "रामावतारचरित" पृ0- 51.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

देते हैं । नारी सदियों से पुरुष की वासना का शिकार होती चली आ रही है उसकी असहाय अवस्था से अनुचित लाभ उठा कर पुरुष अपने हवस की भूख मिटाने के लिये तत्पर रहता है । चाहे सुरेन्द्र हो अथवा रावण - दोनों हवस की भूख में दीवाने बन जाते हैं । शापित अहिल्या सदियों इस पीड़ा को सहन करने के लिये विवश हो जाती है और जाने आज भी कितनी अहिल्या इस शाप की पीड़ा को सहन करती चली आ रही हैं । वासना के साथ-साथ पुरुष के क्रोध का शिकार भी नारी को ही होना पड़ता है । पुरुष प्रधान समाज की यही सच्चाई है और यही इसकी सब से बड़ी कमज़ोरी भी है । नारी की अपार सहनशीलता और अविश्वसनीय आदर्शवादिता ही उसके जीवन का सब से बड़ा अभिशाप है । इन्द्र ने यह नहीं सोचा कि पतिपरायणा सधवा नारी के साथ बलात्कार स्वयं इन्द्राणी (शची) का अपमान है और गौतम ने यह नहीं सोचा कि मुर्गे की बांग सुन कर वह स्वयं मुर्गा बन गये । इसमें अहिल्या का क्या दोष ?

५. शूर्पनखा प्रसंग 'प्रकाश रामायण' में सीताहरण की भूमिका के रूप में प्रस्तुत हुआ है । दो अत्यन्त सुन्दर नवयुवक राजकुमार वन में निवास कर रहे हैं । वनचारी उनके अद्भुत रूप और शारीरिक गठन से प्रभावित हो उठे । नारी का पुरुष के पौरुष के प्रति आकर्षित हो उठना एक

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

स्वाभाविक बात है । शूर्पनखा उन पर मोहित हो उठी । ध्यान देने योग्य बात यह है कि वह उनमें से एक के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करना चाहती है । मुक्त भोग की अभिलाषा उसे नहीं है । उद्देश्य पूर्ति के हेतु वह हर सम्भव प्रयास करती है और जब उस के आत्म सम्मान को ठेस पहुँची तो क्रुद्ध होकर वह सीता-वध का निश्चय करती है । राम तब शस्त्र प्रहार द्वारा उसकी नाक काट लेते हैं । यहाँ लक्ष्मण द्वारा शूर्पनखा के अंगभंग की बात नहीं कही गई है :-

" मन में सोचा वध कर दूँ सीता का अब
मेरे पीछे तब ये भागे-भागे दौड़े आयेंगे,
रामचन्द्र ने भाँप लिया जब उसके मन को
नसा काट लो उसकी, रुदन-विलाप कर भाग उठी ।[1]

5. 'प्रकाश रामायण' में जटायु - प्रसंग भी मौलिक उद्भावना के साथ वर्णित है । जटायु के पंख-प्रहार रावण के लिये असहनीय हैं । उसने कभी सोचा तक न था कि जटायु इस प्रकार उसके मार्ग में बाधा बन कर खड़ा हो जायेगा । जटायु राम भक्त थे । रावण उसके पंख तक काट लेता है फिर भी जटायु से मुक्त होना उसके लिये सम्भव नहीं । आख़िर जटायु वध की युक्ति बता देने के लिये वह सीता को विवश करता है । सीता ही उसे कहती है कि रक्त सने पत्थर इसे खाने को दो, इस का शरीर भारी हो जायेगा और फिर पीछा करने की शक्ति इसमें

1- " रामावतार चरित" पृ0- 58.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नहीं रहेगी । साथ ही वह जटायु को यह वरदान भी देती है कि जब तक रामचन्द्र जी से वह सारा वृतान्त नहीं कहेंगे तब तक उसका देहान्त नहीं होगा ।[1] एक बार फिर अध्यात्म और यथार्थ का मिला जुला रूप इस कथा प्रसंग को लोक विश्वास की सीमाओं में बान्ध देता है । रावण की व्यवहार कुशलता इसी में है कि वह शत्रु-वध की युक्ति अथवा विधि सीता के मुँह से उगलवाता है और सीता भयभीत होकर अथवा एक महान लक्ष्य की प्राप्ति के उद्देश्य से विवश होकर जटायु-वध की विधि रावण से कह देती है । सोचने योग्य बात यह है कि जटायु-वध के लिये उत्तरदायी कौन है - रावण अथवा सीता । सीता को खोजते हुए जब रामचन्द्र जी को भेंट घायल और मरणासन्न जटायु से हो जाती है तो सीताहरण का सम्पूर्ण वृतान्त सुना कर, जटायु प्राणत्याग करते हैं और रामचन्द्र अपनी दो कलाइयों पर जटायु का दाह संस्कार करते हैं ।

6. बाली-सुग्रीव शत्रुता का प्रसंग तथा बाली-वध की कथा पर भी

1- "सम्भव है कैसे अन्त, इस पक्षी का
कहने को विवश हुई सीता
जब सख़्ती की उस पर रावण ने ।
'रक्त स्नात पत्थर फेंको उसके सम्मुख
निगलेगा उन्हें, दौड़ नहीं पाये गा तेरे पीछे
पर जब तक राम न देखें इनको,
सन्देशा नहीं कहेगा मेरा
तब तक प्राणान्त न होगा इनका ।'
यह वरदान दिया सीता ने । "

-- " रामावतारचरित " पृ0-66

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

विचार करना आवश्यक है । यहाँ मनासुर राक्षस[1] और बाली के आपसी युद्ध से उत्पन्न भ्रान्ति को ही दो भाईयो के बीच वैर और शत्रुता का कारण माना गया है । सुग्रीव यह समझता है कि गुफा के भीतर बाली मारा गया और बाली यह समझता है कि सुग्रीव ने राजलोभ में पड़ कर मेरे साथ धोखा किया । बाली बलवान है और एक शक्तिशाली वानर राजा के रूप में विख्यात थे, उसे अपने बाहुबल पर गर्व था । शत्रु-विनाश के बाद वे सुग्रीव को देश बाहर कर देते हैं और बालाक सुग्रीव राम की मैत्री से लाभ उठा कर अपने पथ की बाधा को सदा के लिये मिटा देते हैं । राम छिप कर छल से बाली का वध कर देते हैं । देखा जाये तो राम और बाली में परस्पर कोई वैर नहीं था लेकिन यह सोच कर कि सुग्रीव-हनुमान दल ही उस के लिये अधिक उपयोगी सिद्ध होगी, राम ने मर्यादा का उल्लंघन करते हुए अपने पुरुषोत्तम रूप के आगे कई प्रश्न चिह्न लगा दिये । यहाँ इस घटना से राम का दाशरथि (दशरथ के पुत्र) रूप अधिक निखर कर सामने आता है यद्यपि सम्पूर्ण प्रकाशित रामायण में राम के अति-मानवीय रूप अथवा विष्णु अवतार रूप की ही पूजा-वन्दना की गई है । मनुष्य की सब से बड़ी विशेषता यही है कि उसके व्यक्तित्व में गुण और दोष एक साथ देखने को मिलते

1- " मानासुर नामक अति क्रूर था राक्षस एक
मात्र नज़र से जिसको, पर्वत हो जातें थे चूर
टूट पड़ता वह धरती पर नभ से वज्र समान
सम्मुख जो उसके आता तुरन्त कालग्रस्त हो जाता । "

-- रामावतारचरित" पृ0-75

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

हैं और दशरथ-पुत्र राम ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के हेतु निर्दोष बाली के ख़ून से अपने हाथ रँग लिये। स्वार्थ प्रेरित राम का मानवीय रूप कितना स्वाभाविक दिखाई देता है और मरणासन्न बाली के इस कथन में कितनी वेदना निहित है :-

" रक्षा को नामर्द की और मार दिया दिलावर को
छिप कर मारा तीर हुए विमुख न्याय-पथ से
मेरा कोई पाप न था पर स्वयं हुए पापी।"[1]

बाली वध के पश्चात् सुग्रीव राजगद्दी पर बैठते हैं और उस समय भी शासन व्यवस्था को सुचारू रूप प्रदान करने में राम अपनी भूमिका निबाहते हैं। वे अपने मित्र-मण्डल को हर तरह से सुखी और सन्तुष्ट देखना चाहते हैं क्योंकि उन्हीं के सहयोग से आततायी रावण का विनाश सम्भव है। डॉ० शशिशेखर तोषख़ानी के शब्दों में -- " १७वीं शती के कश्मीर की सामंती राज-व्यवस्था उनके रामायण में यहाँ-वहाँ झलक उठती है।[2] उसी राज-व्यवस्था के आधार पर महाराजा सुग्रीव अपने साथियों को विभिन्न पदों पर प्रतिष्ठित करते हैं :-

" तत यही है भाई को इच्छा का सम्मान किया
अंगद को आमंत्रित करके वज़ारत सौंपी
हलमत [हनुमन्त] बने पेशकार, बलिहारी उन पर

1- " रामावतारचरित" पृ०- 78

2- " कश्मीरी साहित्य का इतिहास" -डॉ० शशिशेखर तोषख़ानी, पृ०-142.

पेशकार - पेश करने वाला, आगे रखने वाला। अदालत का वह कर्मचारी जो हाकिम के सामने मुक़दमे की मिसिल पेश करता है।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जामूवन के गले पड़ी मानो वज्रमाल
जो नियुक्त हुए थे देश के कोतवाल । "[1]

7. रावण बहुत सूझ-बूझ के साथ तथा कूट-नीति से काम लेकर सुग्रीव को पत्र लिखता है और मित्र कह उसे शत्रुवत् व्यवहार करने से रोकने का प्रयास करता है । बाली वध की याद दिला कर वे उसे पत्र में यह भी लिख देते हैं कि कब, कहाँ और किस समय राम उसका वध कर देंगे, कुछ मालूम नहीं अत: राम का साथ छोड़ कर रावण उसे अपने दल में सम्मिलित होने का निमन्त्रण देते हैं ।[2] सुग्रीव रावण का प्रस्ताव ठुकरा देते हैं । युद्ध के वातावरण में कुछ भी असम्भव नहीं, जब विभीषण रावण का साथ छोड़ देता है और विपक्ष के साथ जा मिलता है तो क्या रावण को हर सम्भव युक्ति से काम लेकर अपने प्रतिद्वन्द्वी को तोड़ने का अधिकार नहीं ? अंगद जब दूत बन कर रावण के पास पहुँचता है तो रावण एक बार फिर कूटनीति से काम लेकर अंगद को अपने मृत पिता की याद दिलाता है और पिता के हत्यारे का साथ देने के लिये दबे शब्दों में

1- " रामावतारचरित" पृ०- 78

2- " सुना किसी ने बहकाया है तुझ को
तभी शत्रु संग आ पहुँचे हो वध करने मेरा
क्या याद नहीं है ? यह पातक है तेरे भाई का
उस घटना से तड़प उठे थे शोकाकुल राक्षसदल ।
तुम यदि हो मित्र तो दरियादिल बन कर
दे साथ मेरा, शत्रु से बदला लेंगे
नहीं तो तुम भी उसके हाथों मारे जाओगे परवश होकर
उचित यही है उसे त्याग दे और मिल जा मेरे संग ।"
-- रामावतारचरित" पृ०-110

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

में धिक्कारता है :-

" गैरों के लिये लुटा दो धन सम्पत्ति उसको कैसे ?
यह कैसा सन्तान है जन्मा उस बलवीर के घर !
यदि है साहस तो चल मैं दूँगा साथ तेरा
मिल कर उससे बदला लेंगे जादू और छलबल से
भागीदार बनाऊँगा धन सम्पत्ति का, दूँगा प्यार
लोग कहेंगे पिता पुनः जीवित हो उठे इनके ।"[1]

अंगद क्रुद्ध मुद्रा में यह कहते हुए कि --

" उत्तर में उसने दुतकारा और कहा चुप कर कमज़ात
उड़ा लें गे गरदन तेरी जो आयें गे राम लखन ।"[2]

रावण का मुकुट उठा कर भाग जाते हैं और यही मुकुट रामचन्द्र विभीषण को उस समय पहनाते हैं जब वे राम की शरण में आते हैं और राम उसे लंका के राज का प्रलोभन देकर आश्वस्त करते हैं । जहाँ रावण अपनी कूटनीतिक चालों में असफल हो जाते हैं वहाँ रामचन्द्र की हर कुटनीतिक चाल लक्ष्य-सिद्धि में सहायक सिद्ध होती है । इसमें सन्देह नहीं कि विभीषण ने घर का भेदिया बन कर रावण-विनाश में महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाही है और रामचन्द्र ने अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिये अथवा बाज़ी जीतने के लिए शतरंज की मुहर के सम्मान विभीषण को इस्तेमाल में लाया है । राजनीति में न कोई अपना होता है और न पराया ।

1- " रामावतारचरित " पृ०-108.
2- -वही -

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सब कुछ परिस्थितियों पर निर्भर करता है । वायु को दिशा देख कर ही नैया को मंझधार में छोड़ दिया जाता है । जहाँ विभीषण को लंकाधीश बनने का लोभ है वहाँ रामचन्द्र को अपनी खोई हुई सम्पत्ति को पुनः प्राप्ति की चिन्ता है । लोभी विभीषण को रामचन्द्र इस प्रकार लुभाते हैं :-

" रामचन्द्र ने पहनाया उसको रावण का (चमकीला) ताज
और कहा दे दूँगा तुझ को (सोने की) लंका का राज ।"[1]

8. मारीच के स्वर्णमृग बन जाने पर सीता की इच्छा पूर्ति के हेतु राम आखेट पर निकल जाते हैं और काफ़ी समय के बाद भी जब वापस लौट नहीं आते तो सीता का मन किसी अज्ञात शंका से विह्वल होकर अकुलाने लगा। दूर से पुकारने की आवाज़ सुन कर उसे ऐसा प्रतीत होता है कि शायद रामचन्द्र किसी विपदा में फँस गये हैं । वह चाहती है कि तुरन्त लक्ष्मण जाकर रामचन्द्र की सहायता करें लेकिन लक्ष्मण सीता को कुटिया में अकेली छोड़ कर जाना नहीं चाहते और इस बात पर सीता अत्यन्त कटु उलाहने देकर लक्ष्मण के धैर्य को भंग कर देती हैं । लौकिक धरातल पर सीता के अश्रु-विलाप अत्यन्त स्वाभाविक प्रतीत होते हैं । भर्ता जाने किस संकट में घिरे हैं यह बात उसके लिये अत्यन्त चिन्ताजनक हो सकती है लेकिन सहन-शीलता की सीमायें तोड़ कर जब वह लक्ष्मण के चरित्र पर आक्षेप करने लगी तो उसे रहा नहीं जाता और वह कुटिया से प्रत्थान करने के लिये विवश

1- " रामावतारचरित" पृ- 110

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

हो जाता है । क्या शंकालु होना नारी चरित्र का लक्षण है ? बात-बात पर हठ करना और ज़िद पकड़ना क्या त्रिया-चरित्र की कमज़ोरी है ? पुत्र सदृश देवर पर सन्देह करना क्या उसके लिये शोभनीय था ? जाने कितने अनुत्तरित प्रश्न मन में घर कर जाते हैं । लेकिन साथ ही सीता का यह यथार्थ-परक भौतिक रूप अत्यन्त आकर्षक प्रतीत होता है । वह अधीर अवस्था में लक्ष्मण से कहती है :-

" पहली बात कि सौतेलों का यही है तौर-तरीक़ा
दूजी यह कि मुझे देख कर तड़प रहा है हृदय तेरा !
पर यह है तेरी भूल, कभी न होगी आशा पूर्ण
उसे छोड़ केवल मानभंग करते हो अपने अग्रज का ।

दुर्भाग्य मेरा ! अव्वल मैं जन्मी कहाँ, किधर और किस के घर ?
दोयम, किस के घर आ पहुँची मैं सधवा बन कर ?
सोयम, मेरे पतिदेव थे साक्षात् नारायण
मुझे छोड़ कर चले गये , दुर्भाग्य मेरा
चाहरूम, तुझे देख कर चुभ जाता है हृदय में नश्तर
शत्रु हो या मित्र ? जो साथ-साथ वन में आये ।"[1]

बस यह कहकर ही वह मौन नहीं रहती अपितु आत्म-हत्या करने का दृढ़ निश्चय भी व्यक्त करती है ।[2] लक्ष्मण यह सब सुनकर व्यग्र हो उठता है ।

1- " रामावतारचरित" पृ0-63.

2- "विषपान करूँगी मैं अपना अस्तित्व मिटाऊँगी
निष्फल होगा घात में रहना
यह सुन कर लक्ष्मण का कलेजा मुँह को आया ।"
— रामावतारचरित" पृ0-63

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मकर- मछली - मगर
[मकरी - मारा मगर
[मकरी (सं०) - समुद्र

१. प्रस्तुत रामायण में मक्केश्वर (मकरीश्वर ?) लिंग से सम्बन्धित प्रासंगिक कथा भी पर्याप्त महत्त्वपूर्ण है ।[1] रावण विजय प्राप्ति के हेतु शिवजी की शरण में जाते हैं । पर्याप्त अनुनय-विनय के बाद महादेव उन्हें मक्केश्वर लिंग देकर कहते हैं कि इसे लंका मे रखने पर लंका पर कोई विजय प्राप्त नहीं कर सकता । साथ ही सावधान करते हुए यह भी कहते हैं कि मार्ग में कहीं भी लिंग को यदि धरती पर रखा जायेगा तो पुनः इस को उठाना सम्भव नहीं होगा । रावण प्रसन्नचित मक्केश्वर (मकरीश्वर) लिंग के साथ लंका की ओर प्रास्थान करते हैं पर मार्ग में उसे लघुशंका निवारण की आवश्यकता पड़ी । नारद ब्राह्मण रूप मे उपस्थित हुए । रावण ने लिंग उनके हाथ में दे दिया । रावण का दुर्भाग्य कि लघुशंका से वे बहुत समय तक मुक्त ही नहीं हुए । ब्राह्मण थोड़ी देर रुके तो अवश्य पर अन्त में लिंग को वहीं भूमि पर रख कर चले गए । यह नारद की माया थी अथवा रावण का दुर्भाग्य कि लिंग लंका पहुँच न सका फलतः रावण लंका को बचा न सका :-

"अनुनय-विनय बहुत किया ठाकुर के सम्मुख रावण ने
उसे उठाना चाहते थे पर जुम्बिश तक न हुई उसमें
मक्केश्वर को संग लेने की इच्छा हो न सकी पूरी ।

1- " एक अत्यन्त अद्भुत प्रसंग मक्केश्वर लिंग से सम्बन्धित है जो सम्भवतः अन्य किसी रामकाव्य में नहीं मिलता ।"
- "कश्मीरी साहित्य का इतिहास" - डॉ० शशिशेखर तोषखानी, पृ०-140.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जब हुई तसल्ली लौट चला मुँह लटकाये लंका को ।"[1]

10. लंका-निर्माण से सम्बन्धित एक दिलचस्प कथा भी प्रस्तुत रामायण में मिलती है । नारद जी हनुमान को इस कथा से अवगत करते हैं । पार्वती ने एक दिन रहने के हेतु एक भवन-निर्माण की इच्छा शिवजी के सम्मुख व्यक्त की । विश्वकर्मा द्वारा शिवजी की आज्ञा पर यह भवन निर्मित हुआ उस स्थान पर जिसे लंका कहते हैं । प्रस्तुत रामायण में वर्णित कथा-प्रसंग के आधार पर गरूड़ एक दिन क्षुधा पीड़ित अपने पिता कश्यप के पास आये और कुछ खाने को माँगा । पिता ने उसे कहा जाओ एक मदमस्त हाथी और मगरमच्छ को अपना आहार बनाओ । गरूड़ दोनों को अपने पंजों में उठा कर एक वृक्ष पर बैठ कर अपनी भूख मिटाने लगा । भार से वृक्ष की एक शाख टूट कर जब गिरने लगी तो गरूड़ ने उसे अपनी चोंच में उठा कर बीच समुद्र में डाल दिया यह सोच कर कि यदि यह शाख़ पृथ्वी पर गिर जाये, तो पृथ्वी धंस कर पाताल में चली जायेगी । इस प्रकार जहाँ यह शाख (लंग[1]) समुद्र में जा गिरी वहीं समयान्तर में लंका कहलायी :-

" पेड़ की शाख(लंग) से नींव पड़ी और नाम पड़ा लंका ।"[2]

11. गृह प्रवेश के समय कई अतिथि उपस्थित हुए । अपने पितामह

1- "कश्मीरी भाषा में पेड़ की भारी शाख को 'लंग' कहते हैं ।"
— लेखक —

2- "रामावतारचरित" पृ0- 91.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पुलस्त्य[1] ऋषि के साथ रावण भी आये और देखते ही लंका पर उसकी लार टपक पड़ी । शिवजी ने गृह-प्रवेश की पूजा के उपरान्त दक्षिणा स्वरूप सबसे कुछ मांग लेने को कहा, रावण ने मौक़ा जानकर शिवजी से लंका ही दक्षिणा में मांग ली ।[2] यह प्रसंग मौलिक भी है और दिलचस्प भी :-

"मांग लीजिये दक्षिणा निज इच्छा से - शिवजी बोले सब जन से
'मैं ने मांगी है 'लंका' - द्रुत बोल उठा रावण
दान दीजिये मुझ को लंका, बड़े प्रसिद्ध हो दाता-दानी ।'
संकल्प किया शिवजी ने, दे दी लंका रावण को
पर्वत -मालाओं में तब से वे घूम रहे निर्बन्ध ।"[3]

11. महिरावण देव[4] की कथा तथा हनुमान-पुत्र मकरध्वज की कथा भी प्रस्तुत रामायण में विशेष रूप से वर्णित है । रावण को जब यह महसूस होने लगा कि पराजय और मौत दोनों उसके बहुत करीब आ रहे हैं तो वह अपने एक मित्र से सहायता मांगने पाताल लोक में पहुँच जाता है । पाताल

1- 'पुलस्त्य'- एक ऋषि जो ब्रह्मा के मानस-पुत्र दक्ष के जामातृ तथा शंकर के साढ़ू थे । कदम प्रजापति की पुत्री हर्विर्भुवा इनकी पत्नी थी जिससे इनको अगस्त्य और विश्रवा नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए । यही विश्रवा रावण के पिता थे ।
--"हिन्दी कथा-कोष"-हिन्दुस्तानी एकेडमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद सन् 1954 ई0, पृ0-111

2- "इस प्रकार लंका रावण को मिल जाती है । ऐसा कोई भी वृतान्त हिन्दी रामायणों में नहीं मिलता ।
--"कश्मीरी और हिन्दी राम-काव्य"-डा0 ओंकार कौल, पृ0-99

3- "रामावतारचरित" पृ0- 91.

4- 'अहिरावण -(महिरावण)- रावण के दो मित्र, पातालवासी । रावण के निर्देश पर ये सुवेल पर्वत पर राम को मारने के लिए गए । वहाँ शिलाखण्ड पर सोए राम-लक्ष्मण को ये पाताल की ओर उड़ा ले चले'
"चरित्र-कोश" -नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली-सन् 1983ई0
सम्पादक : श्री नारायण चतुर्वेदी - पृ0- 39.

सुवेल - लंका का त्रिकूट पर्वत जिस पर राम की सेना ने पड़ाव किया

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

के शातक है महिरावण देव । वह छल से राम लक्ष्मण को उठा कर पाताल लोक पहुँचा देते हैं । हनुमान टोह लगाते वहाँ पहुँच जाते हैं और द्वारपाल के रूप में एक बालक को खड़ा देख आश्चर्य में पड़ जाते हैं । बालक हनुमानका मार्ग रोक लेता है और दोनों द्वन्द्व-युद्ध में उलझ जाते हैं । कई दिनों के युद्ध के बाद[1] जब बालक हनुमान-पुत्र होने की बात कहता है[2] तो हनुमान सुन कर अवाक् रह जाते हैं । मकरी द्वारा हनुमान के स्वेद-बिन्दु के निगलने से उसका गर्भ ठहर जाता है और मकरध्वज हनुमान से कहते हैं । इतना ही नहीं महिरावण वध के बाद रामचन्द्र जी मकरध्वज को महिरावण की जगह राजा घोषित करते हैं और विधिवत् उनका राजतिलक भी किया जाता है ।[3]

प्रस्तुत रामायण में रामचन्द्र दो बार सीता से अग्नि-परीक्षा को मांग करते हैं । पवित्रता की साक्षी देने का वृतान्त वास्तव में नारी अपमान एवं अभिमानी पुरुष द्वारा नारी शोषण का ज्वलन्त प्रमाण है । रावण वध के उपरान्त सीता को माँ मन्दोदरी सीता को साथ लेकर रामचन्द्र के पास पहुँचती है । दिलासा देकर वह (रामचन्द्र) मन्दोदरी को वापस लंका

1- "सात दिन और सात रात युद्ध हुआ निरन्तर
धरती पर तब गिर पड़े पवनसुत घायल होकर ।"
--"रामवतारचरित" पृ०-137.

2- "बालक ने तब बात कही हनुमन्त-सुत होने को——
'सुन लें गे यदि वह यह बात, तो हर लेंगे तेरे प्राण'।" -- वहीं --

3- "हुए मुदित उन पर, महिरावण का मुकुट पहनाया
मुकुट पहनाया और सिर पर ताज सजाया
यह सुन रावण बावला होकर लगा तड़पने
बड़ा हुआ आश्चर्य उसे और खोजने लगा उपाय ।

(मकरध्वज का जन्म होता है । यह बात स्वयं

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

भेजते हैं पर सीता के प्रति अपना भीतरी आक्रोश व्यक्त करते हुए मन की भड़ास निकाल देते हैं । लौकिक धरातल पर एक अत्यन्त शंकालु व्यक्ति के रूप में रामचन्द्र स्वयं अपनी ही अर्द्धांगिनी का अपमान करते हुए कहते हैं:-

-- "अच्छा उस राक्षस ने तुझे हृदय से चाहा
मन मलिन हुआ तेरा, पर तुझे नहीं कुछ चिन्ता
दीखा निज सौन्दर्य का तुझे बहुत था अहंकार
कि 'मुझ पर है दीवाना अवतारी राम'।
सोचा इक त्रिया रहो हो लंका में
सब कहते हैं सीता रही अकेले पर-घर में
चाहा मन कुछ डाँवाँडोल हुआ लख मुखाकृति तेरी
हाँ, सच कहता हूँ, कान भर दिये लोगों ने मेरे ।"[1]

रामचन्द्र के पिता दशरथ स्वर्गलोक से सीता की पवित्रता की साक्षी देने आते हैं[2] पर हठी राम एक भी नहीं सुनते और सीता के लिए अपना अटल आदेश सुनाते हुए कहते हैं :-

-- "अग्नि प्रवेश करो तुम, पाप हरण होगा तेरा
अग्नि प्रवेश करो तुम, यदि है तुझ में नैतिक गुण
तब निश्चित हो होगा ज्ञात, सोना हो या हो पीतल ।[3]

और दूसरी बार जब वाल्मीकि आश्रम से सीता अयोध्या लौट आती है तो

× बहुत लाचार हुआ जब रावण
'यह सृष्टा की इच्छा है' उसे हुआ विश्वास
शोकाकुल हो उठा और लगा चबाने जीभ
तब मानस में महादेव की स्मृति जागी ।' -रामावतारचरित' पृ०-145.

1- "रामावतारचरित" पृ०-147.

2- "खून के आँसू जब वह रोई राजा दशरथ प्रकट हुए
'निर्मल है निर्दोष है सीता' कहने लगे वे निज सुत से ।"
--रामावतारचरित' पृ०-175

3-"रामावतारचरित" पृ०-175.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

महाराजा राम पुनः उससे अपनी पवित्रता की साक्षी देने को माँग करते हैं । पुनः पवित्रता की साक्षी देने के बदले वह पृथ्वी में समा जाना अधिक श्रेयस्कर समझती है ।[1] सम्पूर्ण लव-कुश चरित में सीता का स्वाभिमानी एवं क्रुद्ध नारी-रूप शताब्दियों से पीड़ित एवं शोषित भारतीय नारी के भीतरी आक्रोश एवं विद्रोह का व्यक्त रूप है । उसके आत्म सम्मान को जब बराबर ठेस पहुँचती है तो वह राम के अन्याय पूर्ण आदेश को अनुनी करने के लिये विवश हो जाती है । ज़िन्दगी का यही यथार्थ 'प्रकाश-रामायण' में सीता के चरित्र को महिमामय बना देता है । डा० शशि-शेखर तोषख़ानी ने लिखा है कि 'प्रकाशराम ने भारतीय राम-काव्य में उपलब्ध सीता के चरित्र में एक नये दिक् को जोड़ दिया है । सीता का यह विद्रोही रूप अन्यत्र नहीं मिलता है ।'[2]

12. सीता पृथ्वी में शरण लेती है । 'प्रकाश रामायण' के अनुसार वह पावन तीर्थ स्थल कश्मीर में है । कुरिगाम-काज़ीगुण्ड से लगभग पाँच किलोमीटर की दूरी पर स्थित शंकरपुर गाँव में सीता ने भूमि-समाधि ग्रहण की । यहाँ के 'राम कुंड' चश्मे के पास आज भी जब यह कहा जाता है कि 'सीता ! रामजी आये हैं । राम जी आये हैं ' तो चश्मे के पानी में बुलबुले उठते हैं । भले ही यह एक लोक विश्वास हो लेकिन प्रकाशराम ने इस लोक-विश्वास को राम-कथा के साथ जोड़ कर जननी जन्म-भूमि को

1- "कश्मीरी और हिन्दी राम-कथा काव्य का तुलनात्मक अध्ययन" - डा० ओंकार कौल - पृ०- 173.

2- "कश्मीरी साहित्य का इतिहास" - डा० शशिशेखर तोषख़ानी, पृ०- 147.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

देव-भूमि का सम्मान प्रदान किया है :-

-- "कहा उसने दूरू - शंकिरपोरा के मध्य
भूमि में समाई और प्रकट हुई बन कर जल-स्रोत ।"[1]

13. मृत्यु शय्या पर रावण के पास रामचन्द्र जी लक्ष्मण को यह जानने के लिये भेज देते हैं कि 'रावण की अन्तिम इच्छा क्या है'।-- (यह जानने के लिये रामचन्द्र जी लक्ष्मण को धराशायी रावण के पास भेज देते हैं ।) मौत से जूझता रावण लक्ष्मण की धृष्टता पर मौन रहता है और लक्ष्मण के साथ बात तक नहीं करता । राम के आदेश पर जब लक्ष्मण पुनः सविनय रावण के सम्मुख उपस्थित होते हैं तो रावण अपनी अन्तिम तीन इच्छाओं को अभिव्यक्त करता है । उसकी पहली इच्छा यह थी कि अग्नि से धुँआ मिट जाये, दूसरी इच्छा यह थी कि आकाश तक वह सीढ़ी का निर्माण कर सके और तीसरी इच्छा यह थी कि जैसे फूल में महक होती है उसी प्रकार सोना भी महकदार हो जाये ।[2] सामान्यतः रावण को आसुरी शक्तियों का प्रतीक माना जाता है । इसमें सन्देह नहीं कि दम्भी रावण किसी की बात नहीं मानता और अपने हठ पर अडिग रहता है । परिणामस्वरूप उस का विनाश हो जाता है । क्रोध और वासना से उत्तेजित रावण स्वयं अपने सर्वनाश के लिए उत्तरदायी है । लेकिन रावण का एक रूप

1- "रामावतारचरित" पृ0-233.

2- "उत्तर में रावण बोला - तीन इच्छाएँ थी मुझ की
पहली यह कि आग से खत्म करूँ मैं धुँआ
दूजी यह कि नभ तक सीढ़ी तान सकूँ मैं
और तीजी यह कि सोने मे सुगन्ध उपजाऊँ
जैसे पुष्पों में महक बसी है ।" — "रामावतारचरित" पृ0-164.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

भक्त का भी है । रामचन्द्र भी रावण के भक्ति-भाव से प्रभावित हैं । रावण एक महान शिव भक्त थे और बराबर शिव युद्ध में रावण की सहायता भी करते हैं । शिव भक्त रावण की प्रशंसा करते हुए राम लक्ष्मण से कहते हैं :-

— "सुन ले बात मेरी रावण था भक्त महान
नित पूजा वह करता था सुमेरु पर्वत पर
दस सीस काट के अर्पण करता था शिव जी पर ।"[1]

और दूसरी विचारणीय बात यह है कि देवराज इन्द्र यदि वासना-दग्ध होकर सौन्दर्य के सम्मुख घुटने टेक सकता है तो आसुरी शक्तियों के प्रतीक रावण पर ही आक्षेप क्यों ?

14. राम सीता को घर से निकाल देते हैं । गर्भवती नारी को लोकापवाद के कारण निरपराध यह सज़ा भुगतनी पड़ी । 'प्रकाश रामायण' में सीता परित्याग का एक और ही कारण बताया गया है । यहाँ धोबी उत्तर-दायी नहीं है अपितु सीता की छोटी ननद[2] राम के मन में शंका के बीज बो देती है । एक बार घर में वह भाभी से पूछती है कि रावण का आकार कैसा था, तनिक उस आकार को चित्रांकित कीजिये ।[3] सीता कागज़ पर एक रेखाचित्र बना देती है और ननद उसी चित्र को राम के सामने रख कर यह कहने से तनिक भी हिचकिचाती नहीं कि सीता बराबर रावण को याद

1- "रामावतारचरित" पृ0- 165.
2- " छोटी ननद थी इक सीता की
घोल दी सन्ध्या जिसने
भाभी के जीवन की दुपहरी में ।" - "रामावतारचरित" पृ0-186
3- " सच कहती हूँ रेखांकित करके दिखलाओ
दशरावण के रूपाकार को, यही इच्छा है ।"
— रामावतारचरित" पृ0-186.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

में खोई रहती है और इस बात का प्रमाण वह रेखाचित्र है जिसे सीता ने रावण को याद में बनाया है । बातें सुनकर और चित्र देख कर राम अपना सारा पुरुषोत्तमी विवेक खो देते हैं और लक्ष्मण को सीता को हत्या कर देने तक का आदेश (राम की ओर से) मिलता है :-

-- "भ्रातः ओ ! तनिक देख ले इसे, यह क्या कुछ है
नित देख इसे रोती है सीता बिलख बिलख कर
इसे बुराया मैं ने, शोकाकुल वह तड़प रही होगी
सुन कर रामचन्द्र खो बैठे धैर्य, बेचैन हुए
लक्ष्मण को बुलवा कर सब कुछ कह बैठे
और कहा निष्कासित कर दो सीता को जंगल में
नहीं तो वध कर दो वहाँ, जहाँ कानों कान खबर न होगी ।[1]

15. सीता के गर्भ से केवल लव का ही जन्म होता है और कुश को जीवन-दान देने में वाल्मीकि की अलौकिक शक्ति का हाथ है । एक दिन जब सीता आश्रम की कुटिया से अपने पुत्र लव को साथ लेकर कहीं चली जाती है तो वाल्मीकि उसकी अनुपस्थिति में आश्रम की उस कुटिया में प्रवेश करते हैं और यह सोच कर कि किसी जानवर ने बच्चे को उठा लिया है और सीता जब लौट आयेगी तो बच्चे को न पाकर तड़प तड़प कर प्राण-त्याग कर देगी, वह तुरन्त दर्भ का तिनका ज़मीन पर रख कर सदाशिव से सविनय वरदान माँगता है कि 'इस दर्भ के तिनके से लव के समान ही बालक प्रकट हो ।' ऋषि याचना स्वीकृत हुई और कुश बालक के रूप में प्रकट हुए ।

1- "रामावतारचरित" पृ0- 191.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

लव और कुश नामकरण ऋषि द्वारा ही हुआ है :-

-- " हुआ सन्देह उसे कि कोई पशु ले भागा
सीता लौटेगी तो सूख जायेंगे प्राण
स्तन उस का नहीं होगा सहन मुख से
दर्भ (कुश) काण्ड को हाथ मे लेकर रखा सम्भाल के
सदाशिव से लगे सविनय याचना करने --
इस दर्भ-कांड से जन्मे इक दीप्तिमान् बालक ।"[1]

प्रकाशराम ने प्रस्तुत रामायण में लौकिक कथा के साथ-साथ भक्ति से प्रेरित अद्भुत अलौकिक कथा का सृजन भी किया है । यही उनका समन्वयात्मक दृष्टिकोण है जिसे मध्यकालीन रामभक्त कवि प्रायः प्रभावित रहे हैं । यहाँ इस तथ्य को स्पष्ट करना आवश्यक है कि स्वयं प्रकाशराम एक सच्चे राम-भक्त थे । दास्यभाव की भक्ति में लीन रह कर वे अपने इष्ट के सम्मुख नत-मस्तक दिखाई देते हैं । राम न केवल राम कथा के नायक हैं अपितु विष्णु अवतार नर-रूप नारायण भी हैं और असुर-संहार हेतु मनुष्य रूप में प्रकट होकर तथा पृथ्वी को आततायियों से मुक्त करने के लिए एक से अनेक होने की लीला में मग्न दिखाई देते हैं । वे स्वयं निराकार भी हैं और साकार भी । उन्हीं की ज्योति कण-कण में व्याप्त है और उनमें लय होना ही जीवन का प्रमुख उद्देश्य है । एक सच्चे भक्त के रूप मे कवि अपने इष्टदेव का लीलागान करते हुए नर में ही नारायण के दर्शन पा कर तृप्त हो उठते हैं । सम्पूर्ण रामायण में भक्ति-परक लीलाओं एवं स्तुति गीतों का अध्ययन करने के पश्चात् यह बात स्पष्ट होती

1- "रामावतारचरित" पृ0- 191.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

है कि कवि अपने इष्ट द्वारा रचित इस लीलामय जगत के नाना रंग देख कर आश्चर्य चकित हो उठता है । उसे यह महसूस हो रहा है कि सुर-असुर का भारी द्वन्द्वात्मक संघर्ष मनुष्य के मन में छिड़ा है । भीतर के असुर का संहार परमावश्यक है । राम की शरण में जाकर ही इस असुर का विनाश सम्भव है । डॉ० शशिशेखर तोखखानी के शब्दों में - "आध्यात्मिक रामायण के प्रभाव के कारण कवि ने राम के माध्यम से भक्ति-भावना का विकास किया है और उनके व्यक्तित्व को उच्चतर मूल्यों से सम्बद्ध किया है । प्रकाशराम की दृष्टि भंगी कवि से अधिक एक भक्त की है और इस दृष्टि से वे तुलसी से कुछ समानता रखते हैं -- प्रकाशराम ने सम्पूर्ण राम-कथा को एक आध्यात्मिक रूपक के रूप में परिकल्पित किया है --- ।"[1] प्रकृति का कण-कण वस्तुतः सर्वशक्तिमान ब्रह्म का ही व्यक्त रूप है । देखिये प्रकाशराम इस सन्दर्भ में क्या कहते हैं :-

-- "स्वयं बुलबुल है स्वयं गुलज़ार
स्वयं सुम्बुल है स्वयं सब्ज़ाज़ार
स्वयं सूर्य-तेज है स्वयं (शीतल) जल
स्वयं है लक्ष-करोड़ स्वयं केवल
स्वयं है ईश, ब्रह्मा - विष्णु स्वयं है
स्वयं है श्री कृष्ण और स्वयं श्रीराम ।"[2]

आकार और निराकार अर्थात् सगुण और निर्गुण में कोई अन्तर नहीं ।

1- "कश्मीरी साहित्य का इतिहास" - डॉ० शशिशेखर तोषखानी पृ०- 138.

2- "रामावतारचरित" पृ०- 127.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जगत तो निराकार को आनन्दमय साकार लीला है । सत्, चित् और आनन्द का समन्वित रूप ही रामावतार है :-

-- " तुम्ही हो साकार तुम्ही निराकार
तुम्ही हो श्याम रूप रामावतार ।"[1]

देखा जाय तो जीव मात्र एक कठपुतली है और इस लीला क्षेत्र में नाच नचाने के हेतु डोरी किसी और ही के हाथ में है :-

-- " निरंजन है महत् नारायण निराकार
कर्त्ता है स्वयं और भार लाद रहे जनता पर ।"[2]

और यही निरंजन तो श्रीराम हैं जो न केवल लंकापति रावण के संहार की शक्ति रखता है अपितु मात्र अपनी दया दृष्टि से हमारे भीतर के रावण को भी कुचल सकता है । इसी रावणत्व से मुक्त होना ही आनन्दावस्था है :-

— " निरंजन है स्वयं नारायण श्रीराम
दशरावण के यौवन पर जो पुत देंगे कालिख ।"[3]

रावण इस तथ्य से परिचित थे कि स्वयं नारायण नर-रूप अवतार धारण करके उसे इहलोक से मुक्ति दिला रहे हैं । रावण मन्दोदरी से यह बात युद्ध पूर्व ही कह देता है और यही कारण है कि वह अपने हठ को नहीं छोड़ता :-

— " ज्ञात नहीं तुझे क्या ? स्वयं अवतारी हैं नारायण

1- " रामावतारचरित" पृ०- 144
2- - वही - पृ०- 111
3- - वही - पृ०- 114

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मोक्ष प्राप्ति है लक्ष्य मेरा, कर रहा हूँ ऐसे काम ।"[1]

लव-कुश चरित में वर्णित एक लीला-गीत के अन्तर्गत भी रावण के आत्म-ज्ञान की जानकारी इस प्रकार दी गई है :-

-- "भगवत् ! आये हो रावण का वध करने
और ज्ञात है उसको सब कुछ ।"[2]

इस प्रकार सम्पूर्ण प्रकृति को जीवन-दान देने तथा सृष्टि के कल्याण हेतु निराकार साकार रूप में प्रकट हुए हैं । वस्तुतः देखा जाय तो दोनों में कोई अन्तर नहीं :-

-- "रक्षक हैं जग जीवन के उपकार है उनका
काया मेरी पर उसमें प्रकाश है उनका
नारायण ! दो आँखों में है ज्योति तुम्हारी
नारायण ! बस आशा तेरी, प्रकाश तेरा ।"[3]

निराकार और साकार के साथ-साथ राम और शिव का समन्वय भी प्रस्तुत रामायण में देखने को मिलता है । कवि को पूर्ण विश्वास है कि राम-भक्त और शिव-भक्त में परस्पर कोई विरोध नहीं । प्रस्तुत रामायण में शिव-पार्वती संवाद के द्वारा ही कथा आरम्भ होती है ।[4] शोक ग्रस्त दशरथ असहनीय पुत्र बिछोह से पीड़ित शिव का नाम स्मरण

1- "रामावतारचरित" पृ0- 147
2- - वही - पृ0- 190
3- - वही - पृ0- 128
4- - "देवी बोली - 'दया कीजिये शिवजी !'
अवतार कथा कहिये इच्छा पूरी होगी मन की ।"
-- रामावतारचरित पृ0- 12

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

करते हुए ख़ून के आँसू बहाता है :-

-- "जो राजा सुख भोगते थे और शासक थे जनता के
शिव शंकर का स्मरण करते रक्त बहाते आँखों से ।"[1]

लंका का निर्माण पार्वती की इच्छा पर होता है और जब लोभी रावण शिवजी से दक्षिणा में लंका ही माँग लेते हैं तो अन्तर्यामी शिव सब को आश्चर्य में डाल कर संकल्प करके लंका उसे दान में दे देते हैं । रावण स्वयं एक महान शिव-भक्त के रूप में प्रस्तुत रामायण में चित्रित हैं । वे शिव के प्रिय भक्तों में एक हैं । गोकर्णेश्वर-लिंग-प्रसंग इस दृष्टि से उल्लेखनीय है । सम्पूर्ण रामायण में राम शिव को समुचित सम्मान देते हुए दिखाई देते हैं । भक्ति और ज्ञान के क्षेत्र में भी कवि ने समन्वय बुद्धि से काम लिया है । ज्ञान की महत्ता को वे बराबर स्वीकार करते चले आये हैं । आत्म ज्ञान हो तो स्वयं-प्रकाश है । भीतर के अन्धकार को मिटाना नितान्तावश्यक है । इस पथ पर तर्क और विचार का अपना विशेष महत्त्व है । यह सत्य है कि भव-सागर को भक्ति के सहारे पार किया जा सकता है लेकिन जब मनुष्य संसार के मायाजाल में उलझ जाता है और द्वत का शिकार होता है तो आत्मज्ञान की प्राप्ति हेतु तर्क और विचार के आधार पर ही जीव अपनी विवेक बुद्धि के सहारे तत् और सत् की पहचान प्राप्त कर

1- "रामावतारचरित" पृ0- 40

सत् (सं०) - ब्रह्म
सत् - सच, यथार्थ, ब्र

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सकता है ।[1] आदमी के लिये सबसे बड़ी उलझन है - आदमी को पहचान । और यही पहचान वस्तुतः आत्मज्ञान है । ज्ञान प्राप्ति के हेतु गुरु का अपना विशिष्ट महत्त्व है ।[2] कवि विचार और विवेक-पथ पर अग्रसर होने के लिये जीव को निरन्तर प्रेरणा देते रहते हैं :-

-- "विवेक पथ को अपना लो बिन हो जाये ना नजात ।"[3]

अपने अहंकार को कुचल डालना जीवन में कुछ पाने के लिये परमावश्यक है । आदमी कुछ खो कर ही कुछ पा लेता है । सब कुछ मनुष्य के पास ही तो है । यदि किसी चीज़ की कमी है तो वह केवल पहचानने की शक्ति है :-

-- "खो बैठे हो जो कुछ वह पास है तेरे, ढूँढ ले (नादान)
तब पाओ गे जब अहं भाव शेष न होगा ।"[4]
(गला घोंट दे अहंकार का, पालोगे तब कुछ ।)

अलौकिक कथा के साथ-साथ प्रस्तुत रामायण का ठोस भौतिक धरातल भी है । यहाँ यह कथा दशरथ सुत राम की जीवन घटनाओं से सम्बद्ध है ।

1- " संसार भँवर है (माया का) रहना इसमें दूर उचित
भक्ति से ही पार तरोगे भवसागर से, हे राम ! राम !
रूपाकार से नाम मनुष्य है नफ्स की रस्सी गले पड़ी
सहना इसको अति दुस्तर है सह पाऊँ कब तक ? हे राम ! राम !
विवेक-बुद्धि से लेना काम पहचानो मे आत्म-तथ्य को
रिंद अगर हो, जीते जी मर जाना जीना सार्थक हो जाता,
हे राम ! राम !"
-- "रामावतारचरित" पृ0-158.

2-"मन मेरे ! भ्रमित हुए क्यों ? सत में क्यों न हुए तुम लीन
गुरु के सम्मुख क्यों न झुके, हे राम ! निर् अभिमान राम मेरे ।"
-- रामावतारचरित" पृ0- 152

3- " रामावतारचरित" पृ0- 10.

4- - वही -

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

लौकिक और अलौकिक के इस समन्वय में कहीं कहीं मानव चरित्र अपनी स्वाभाविक गरिमा खो देता है, इसमें कोई सन्देह नहीं । दो दो भूमिकाओं को एक साथ निबाहना हर पात्र के बस की बात नहीं होती है और न प्रत्येक कवि इस प्रकार पात्रों के दोहरे व्यक्तित्व के साथ न्याय करने में समर्थ होता है । लौकिक कथा में अलौकिक अंश जब हावी हो जाते हैं तो ठोस जीवन सन्दर्भों में बिखराव आ जाता है और कथा अथवा पात्रों का विश्वसनीय आधार लड़खड़ाने लगता है । दशरथ सुत मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र में जो सान्दर्य कण द्युतिमान हैं अथवा जो आकर्षण उनके कर्मशील व्यक्तित्व में देखने को मिलता है वह अति-मानवीय रूप में कहाँ उपलब्ध हो सकता है । वहाँ कवि अपने कवि कर्म से हट कर सच्चे भक्त के रूप में अनुनय-विनय के साथ अनुग्रह-कृपा का आकांक्षी बन कर केवल अपने स्वार्थ की बात कहता है और इस प्रकार रचनात्मक प्रक्रिया पर भक्ति का अंकुश लग जाता है । आज के युगीन सन्दर्भों के परिप्रेक्ष्य में यथार्थ जीवन में घटित घटनाओं का जितना महत्त्व है उतना लोक विश्वास पर आधारित दैवी कथा तत्त्वों का तब नहीं रहता जब ज़िन्दगी के बोराने में हम या तो लोने को लंका का निर्माण करना चाहते हैं या राम राज्य का स्वप्न देखने लगते हैं । जीवन में आदर्श का अपना महत्त्व अवश्य है, इसे कोई इन्कार नहीं कर सकता पर वही आदर्श हमें अपनी ओर आकर्षित करता है जो यथार्थ की डोरी से बन्धा हो । क्योंकि आज हर प्राणी अपने वर्तमान में जीने का अभिलाषी है ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाशराम कृत 'रामावतारचरित' के कला-पक्ष का प्रमुख आकर्षण उसके स्थानीय रंग में है जो पूरी शोख़ी के साथ रचना में खिल उठा है[1] । कवि ने कश्मीरियों के लोक-विश्वास, रीति-रिवाज, विवाह-गीत और वेशभूषा के साथ-साथ यहाँ के दर्शनीय तीर्थ स्थल, नाना रंगी फूल तथा देवस्थलों को भी रामायण की कथा में समुचित स्थान दिया है ।[2] यह कहना अनुचित न होगा कि कवि ने राम कथा को लोक मिज़ाज के अनुकूल एक नये साँचे में ढालने का सफल प्रयास किया है । राम और सीता के विवाह में वे सारी रीतियाँ अपनाई जाती हैं जिन का पालन कश्मीरी पण्डितों के यहाँ विवाह के अवसर पर होता है । चाहे वह द्वार-पूजा हो या पुष्प-पूजा अथवा लग्न की कोई और रस्म हो । इस (विवाह) अवसर पर कश्मीर के विभिन्न तीर्थ स्थलों में प्रतिष्ठित देवियाँ यहाँ तक कि स्वभवानी[3] का सक्रिय रूप से

1- "शायरी का ख़ास रंग यह है कि इन्होंने रामायण के सम्पूर्ण माहौल का कश्मीरीकरण किया है जिस कारण यह कथा हमें बिल्कुल निजी प्रतीत होती है ।"
- "सोन अदब" सन् 1976 ई० 'जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - 'लोला तथा धार्मिक साहित्य' ले० मोतीलाल साक़ी, पृ० 180

2- " - - - सम्पूर्ण रचना को कश्मीर की पृष्ठभूमि पर प्रस्तुत किया गया है । सीता कश्मीरी 'फिरन' और तरंगा (शिरो वस्त्र) पहनती है । दंडक वन में देवदारु, चीड़ और सफ़ेदे के वृक्षों की बहुतात है । रावण के उद्यान में भाँति-भाँति के कश्मीरी फूल हैं और दशरथ तथा उसके दरबारियों का भोज्य चावल और कश्मीरी तरकारियाँ हैं । अनेक देवी-देवता जो विवाह में सम्मिलित होते हैं, कश्मीर के तीर्थ स्थलों में ही निवास करते हैं ।"
"हिस्ट्री आफ़ कश्मीर" पी० एन० के० बामज़ई - मेट्रोपोलिटन बुक कम्पनी (प्राइवेट) लि० दिल्ली-6, द्वितीय संस्करण, सन् 1973 पृ० - 835.

3- 'स्वभवानी' 17वीं शताब्दी (सन् 1625 ई०-सन् 1721 ई०) की ×

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सम्मिलित होना भी दिखाया गया है :-

-- "लक्ष्मी के संग रूपभवानी ने पहनाई स्वर्ण और मोती माल
साज सज्जा की माँ कालिका ने श्याम रूप{राम} चले
ब्याहने सीता ।"[1]

अथवा

"याल ढाल पर मोहित राजा वासुकुरा में वास किया
{रूप}भवानी ने
अग्नि को ओर फैला दे हाथ सती ! विवाह वेला है आज"[2]

अथवा

"अकिन गाँव में शिवा ने गाये विवाह गीत
उत्तरसू में उमादेवी का मन मुदित हुआ
तुम्हारे राग से रंजित जनक का घर यही है
सती ! विवाह वेला है आज ।"[3]

इतना ही नहीं हारी पर्वत से श्रारिका देवी, तुलामुला से क्षीरभवानी तथा उत्तरसू से उमादेवी भी इस शुभ विवाह में सम्मिलित हुई । लग्न-मण्डप पर पुष्प पूजा के समय नीलनाग में उपजे कँवल के फूल श्रीराम पर निछावर किये गये ।[4]

---

* प्रसिद्ध कश्मीरी रहस्यवादी कवयित्री है जो अपनी योग साधना के लिये पर्याप्त प्रसिद्ध रही है । इन्होंने अपने आध्यात्मिक अनुभवों को 'वाख' शैली में अभिव्यक्ति प्रदान की है । -- लेखक --

1-"रामावतारचरित" पृ0-22
2- - वही -
3- - वही -
4- "नीलनाग में खिले कँवल श्रद्धा से अर्पित किये श्रीराम पर ।"
— रामावतारचरित" पृ0-22

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कश्मीर में एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है - हर मुकुट गंगा जहाँ गंगाष्टमी (भाद्र शुक्ल पक्ष की अष्टमी) को हर वर्ष भक्तजन हरमुकुट से प्रवाहित गंगा जी के दर्शनार्थ पहुँचते हैं । अस्थि प्रवाह के साथ-साथ पितृ-श्राद्ध भी यहाँ होता है । यहाँ तक पहुँचने के लिये कई दिनों की पर्वतीय यात्रा तय करनी पड़ती है । इस यात्रा में पड़ने वाले समस्त पड़ाव दशरथ उस समय पुत्र-विछोह में तय करता हुआ दिखाई देता है जब मृत्यु शय्या पर विलाप करते हुए वह अन्तिम यात्रा पर जाने की तैयारी कर रहा था :-

- "विचारनाग के पथ पर पीछे दौड़ूँ नुनर में रहूँ प्रतीक्षारत
ब्रह्मसर के निकट कान धर लूँ, तुझे ढूँढूँ रामरादन में
महलिंगा से आऊँगी हरमुख में ढूँढूँ तुझे
हंसद्वार के बाद रैंटवन में, तुझे ढूँढूँ रामरादन में ।
नारानाग पर रहूँ प्रतीक्षारत और वांगत में टोह लगाऊँ
राह देख लूँ ततरादन में, तुझे ढूँढूँ रामरादन में ।"[1]

सीता को जब हनुमान द्वारा पहचान चिह्न के रूप में अँगूठी प्राप्त होती है तो भीतरी हर्षोल्लास को व्यक्त करते हुए वह अपने बुलबुल को हारी-पर्वत तथा तुलमुला पहुँचने का निमन्त्रण देती है :-

- "कुसुमाकर के आगमन पर प्रेम-बुलबुल !
निमन्त्रण है मेरा, मैं शादियाने मनाऊँ
आ जाना हारी पर्बत पर या पहुँचना तुलामुला
निमन्त्रण है मेरा, मैं शादियाने मनाऊँ ।"[2]

1- " रामावतारचरित" पृ0- 38.

2- - वही - पृ0- 96.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पाँपुर की केसर वाटिकाओं के अद्भुत सौन्दर्य का बखान भी विवाह गीतों में हुआ है । ये विवाह-गीत सीता के विवाह के समय गाये जाते हैं । स्वर्ण लंका के उपवन में वे सारे फूल खिले हुए मिलेंगे[1] जो कश्मीर घाटी में विभिन्न ऋतुओं में खिलते हैं । घाटी के पर्वतीय प्रदेशों की यात्रा करने पर कई प्रकार के वन्य पुष्प देखने को मिलते हैं जो केवल कश्मीर में ही पाये जाते हैं । प्रकाशराम ने रावण के उपवन का शृंगार इन्हीं नानारंगी फूलों से किया है । इतना ही नहीं सीता की भूमि समाधि भी कश्मीर में ही है ऐसा कवि का विश्वास है और इस दृष्टि से शंकरपुरा (डूरू) का राम-कुण्ड उल्लेखनीय है । डॉ० शशिशेखर के शब्दों में 'अपने युग के सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश का कृति पर इतना गहरा प्रभाव है कि उसका स्थानीय तत्त्वों के समावेश से पूरा कश्मीरीकरण हो गया है ।'[2] इस प्रकार यह बात स्पष्ट होती है कि प्रकाशराम ने रामायण की कथा को लोक जीवन में व्याप्त विश्वासों और मान्यताओं के आधार पर एक नये माहौल में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । अयोध्या, जनकपुरी और लंका के बदले कभी कभी ऐसा प्रतीत होता है कि घटना कश्मीर घाटी में ही घट रही है ।

राम कथा के समस्त पात्र प्रस्तुत रामायण में सुचारू रूप से अपनी

1- "प्रस्तुत रचना में यत्र-तत्र अत्यन्त सुन्दर दृश्य देखने को मिलते हैं जैसे रावण के उद्यान में सीता-तलाश का दृश्य । उस उद्यान में जहाँ वे सारे फूल खिलते हैं जिनसे उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यकाल में कश्मीरी कवि परिचित हैं और जिनके द्वारा प्रस्तुत रचना का स्थानीय रंग निखर उठता है ।" - "स्टडीज़ इन कश्मीरी" - जे० एल० कौल, पृ०- 61.

2- "कश्मीरी साहित्य का इतिहास" डॉ० शशिशेखर तोखख़ानी, पृ०-141

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अपनी भूमिका निबाहते हैं । राम के व्यक्तित्व में आदर्श और यथार्थ, अलौकिक और लौकिक, दैवी तथा सामान्य मानवीय गुणों से सुशोभित सुन्दर छवि-चित्र एक साथ देखने को मिलते हैं । वे विष्णु अवतार भी हैं और दशरथ सुत अयोध्यावासी नागरिक भी हैं । वे प्रकाशराम के इष्टदेव नर रूप नारायण भी हैं और मर्यादा पुरुषोत्तम भी हैं । एक साथ उनके व्यक्तित्व में हमें लीलामय रूप भी देखने को मिलता है और अत्यन्त सामान्य मानव के व्यक्तित्व में पाई जाने वाली कमज़ोरियों से युक्त मानवीय रूप भी नज़र आता है । वे सगुण साकार ब्रह्म भी हैं, छिप कर बाली-वध करने वाले क्षत्रिय राजकुमार भी हैं और गर्भवती पत्नी को घर बाहर करने वाले महाराज भी हैं । वे एक महान योद्धा भी हैं और कूटनीतिज्ञ भी । वे युद्ध जीतने के लिये हर सम्भव उपाय से काम लेते हैं । यहाँ तक कि घर के भेदिये को भी अपने स्वार्थ के लिए अपना सखा बना लेते हैं और आश्वस्त करते हैं कि :-

- "रामचन्द्र ने पहनाया उसको रावण का ताज
और कहा दे दूँगा तुझ को (सोने की) लंका का राज ।"[1]

इसमें सन्देह नहीं कि राम का अलौकिक रूप अद्भुत है पर इसके साथ-साथ उनका लौकिक रूप भी पर्याप्त आकर्षक है जो उन्हें सामान्य जन जीवन के साथ जोड़ देता है । यहाँ राम एक साधारण व्यक्ति के सदृश

1- "रामावतारचरित" पृ0- 110

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

लौकिक आशाओं और आकांक्षाओं से प्रेरित है । वह सुख में सुखी है और दुःख में दुखी । पिता के देहान्त का समाचार सुन कर वे फूट-फूट कर रोते हैं ।[1] वे सोचते हैं कि यदि पिताश्री से स्वप्न में भेंट होती तो मैं उनसे कुछ सवाल पूछता और वे उन प्रश्नों के उत्तर शायद इस प्रकार देते :-

- " कहने लगे कि स्वप्न में यदि मिल पाता पूज्य पिता से
मन तुष्टि पाता, तड़पन होती शान्त हिया की
मैं पूछता जो पितृ-प्रेम से वंचित होता उसका क्या है उपाय
वे कहते उस के हेतु स्वयं ईश्वर रहते प्रत्येक स्थल पर
मैं पूछता जिसे बन्धु-बान्धव कुछ भी नहीं दे पाते
वे कहते ईश्वर उसे वर देते सुखानन्द का ।
मैं पूछता जिस के लिये नहीं होता निवास कहीं कोई
वे कहते ईश्वर उसके संग रहते हैं, नहीं उसे कुछ परवाह ।"[2]

प्रश्नोत्तर का यह क्रम उसके शोकाकुल मन में लगातार चलता रहता है । डॉ० शशिशेखर तोखख़ानी ने इसे आत्मालाप अथवा कल्पित संवाद की तकनीक कहा है।[3]

सीताहरण के पश्चात् राम-लक्ष्मण वन-वन उसकी खोज में भटकते हैं और -' हे खग मृग हे मधुकर श्रेणी । तुम्ह देखी सीता मृगनैनी ।।' की स्थिति में ख़ून के आँसू बहाते हुए वन्य पक्षियों से सीता के विषय

1- " लगे बिलखने पूज्य पिता जी को याद में
मानो थे सात मास के शिशु अनजान ।"
— रामावतारचरित" पृ०- 43.

2- " रामावतारचरित" पृ०- 46.

3- "कश्मीरी साहित्य का इतिहास" - डॉ० शशिशेखर तोखख़ानी, पृ०- 152.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

में पूछ-ताछ करते हैं :-

- "चलते रहे अविरत कोहसारों में टेर लगाते
और पूछते रहते थे वन के पशु-पाँखो से
आँखों से रक्त प्रवाहित था और वे मातम करते थे
दोनों गुलेलालों पर दाग़ छोड़(जाने कहाँ) गई है वह ?"[1]

लक्ष्मण के घायल हो जाने पर राम शोकाकुल होकर ज़ार-ज़ार रोते हैं :-

- "जब मिली सूचना राम को लक्ष्मण के (घायल होने)
- देहान्त की
तड़प उठा तत्क्षण और फाड़ दिये अंगवस्त्र
आँखों में आँसू मचल उठे, लगा करने करुण विलाप ।"[2]

रावण वध के पश्चात् मन्दोदरी जब सीता को राम के पास पहुँचाती है तो राम अपने मन की भड़ास निकालते हुए सीता का अपमान करते हैं । इन अपमान सूचक उक्तियों में एक अत्यन्त शंकालु प्रकृति के सामान्य मानव का स्वार्थ की सीमाओं में बन्धा हुआ निर्दयी रूप दिखाई देता है :-

- "कहा रामचन्द्र ने सीता से उस क्षण
तुझे देख मन मेरा कितना हो जाता उदास !
अव्वल उस राक्षस ने तुझे हृदय से चाहा
मन मलिन हुआ तेरा, पर तुझे नहीं कुछ चिन्ता
दोयम निज सौन्दर्य का तुझे बहुत था अहंकार
कि 'मुझ पर है दीवाना अवतारी राम' ।

1- "रामावतारचरित" पृ0- 71.
2- - वही - पृ0- 116

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सोयम एक त्रिया रही हो लंका में
सब कहते हैं सीता रही अकेली पर घर में
यहाल्म तेरी मुखाकृति को लख कर मन कुछ डाँवा डोल हुआ
सच कहता हूँ हाँ, कान भर दिये लोगों ने मेरे ।"[1]

अत: उसे अग्नि परीक्षा देने का आदेश देकर रामचन्द्र रघुकूल की मर्यादा के साथ साथ नारी मर्यादा का सम्मान करते हैं अथवा अपमान यह विचारणीय है । वह निर्णय नहीं कर पाता कि सीता सोना है या पीतल ।

अन्तिम समय पर राम अपने दोनों पुत्रों में अपना राज बाँट कर तथा विधिवत् उनका राजतिलक करके परम्परा से चले आ रहे शाक्तो राज्य को जड़े मज़बूत करते हुए दिखाई देते हैं :-

- "मुकुट सजाये सीस पर आशिष दी भर पूर
कुश को काशी दे बैठे और लव को दिया लाहौर ।"[2]

मेरा विचार है कि राम के अतिमानवीय व्यक्तित्व की तुलना में उसका सहज मानवीय रूप अधिक आकर्षक है और लोक जीवन के बहुत क़रीब होने के कारण हमारी आशाओं-आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता हुआ दिखाई देता है । असुर संहार तो उन्होंने अवश्य किया क्योंकि उनके चरित्र में शील और शौर्य का संगम दिखाई देता है । अवतारी रूप में तो यही उनका लक्ष्य था पर लोक-मर्यादा के रक्षक के रूप में उनकी भूमिका इससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण रही है ।

1- " रामावतारचरित" पृ0-174.
2- -वही- पृ0-234.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रस्तुत रामायण में सीता का व्यक्तित्व सब से अधिक सशक्त एवं आकर्षक दिखाई देता है । वह भूमि का अवतार है सम्भवत: इसी लिये हर तरह का अत्याचार सहने के लिये विवश । उसे मालूम है कि रावण उसके पिता हैं और उसका सर्वनाश नर रूप नारायण के हाथों होने जा रहा है । लौकिक धरातल पर वह एक पतिव्रता भारतीय नारी है और हर स्थिति में अर्थात् सुख दु:ख में अपने पति के संग रह कर तथा पातिव्रत धर्म का पालन करते हुए जीवन-निर्वाह करना चाहती है । राम वन गमन के समय लाख समझाने पर भी वह राम की एक नहीं सुनती और वन गमन के लिए अपना दृढ़ निश्चय व्यक्त करते हुए तथा राम के प्रत्येक तर्क का समुचित उत्तर देते हुए नारी धर्म (पातिव्रत धर्म) निबाहने के लिये दत्तचित्त दिखाई देती है । उसके दृढ़ संकल्प के सम्मुख स्वयं रामचन्द्र भी अवाक् हो जाते हैं ।[1]

अपने सान्दर्य पर गर्वित होना तो नारी का स्वभाव है । नारी-स्वभाव का यह गुण/दुर्गुण सीता में भी है जिस को जानकारी हमें राम के इस कथन से होती है :-

---

1- " कहा रामचन्द्र ने सीता से - 'तू ठहर यहीं, (अयोध्या में)'
उत्तर में वह बोली - 'कलेजा मुँह को आता है ।'
कहा उसने कैसे आओगी ? वरण तुम्हारे पद्म-सदृश
वह बोली सुन - ' सुन्दरी के कर्ण में ही है सोने का मोल'
कहा उसने तू ठहर यहीं तू नरगिस हो उपवन की
वह बोल उठी - 'किसी भँवरे ने मुझ को मोह लिया है ।'
कहा उसने तू ठहर यहीं - 'तेरे हाथ हैं पुष्प पंखुरियों जैसे'
वह बोल उठी - 'यह अखियाँ हैं दीवानी तुझ पर ।'
कहा उसने तू ठहर यहीं - 'तुम हो चन्द्रिका उज्जवल'
वह बोल उठी - 'निछावर कर दूँ प्राण तेरे चरणों पर ।'
'रामावतारचरित' -- पृ० - ३२-३३

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

- "दोयम, निज सौन्दर्य का तुझे बहुत था अहंकार
कि मुझ पर है दीवाना अवतारी राम' ।[1]

उसका आत्माभिमान कहीं आकाश को ऊँचाइयाँ छूने लगा था, आज एक ही झटके में वह स्वप्न टूट जाता है और वीभत्स यथार्थ उसके सम्मुख मुँह फैलाए खड़ा निगलने के लिये तत्पर दिखाई देता है :-

- "जाने कब किस घड़ी अहं में इतराई सीता
मैं चतुर्दशी को चन्द्रिका हूँ, रात्रि का श्रृंगार
न आऊँ मैं तो तारे शोक से विह्वल बिलखते हैं
सूर्य निकलता टोह लगाने स्वर्ण गिरि के शिखरों पर
बहुत उसे अभिमान था तेज युक्त सौन्दर्य का
'मुझ पर है दीवाना वह अवतारी राम' ।[2]

मारीच के स्वर्ण मृग बन जाने पर वह अपने पति से हठ पूर्वक मृग-चर्म लाने का आग्रह करती है और जब दूर से ही पुकारने की आवाज़ उसे सुनाई देती है तो लक्ष्मण को कुटिया छोड़ कर उसी दिशा में जाने के लिए विवश करती है जिस दिशा में राम स्वर्ण मृग का पीछा करते हुए निकले थे । शंकालु प्रकृति की नारी किस हद तक शालीनता का उल्लंघन कर सकती है इसका अनुमान लक्ष्मण के प्रति सीता के इस कथन से लगाया जा सकता है :-

- "पहली बात कि सौतेलों का यही है तौर-तरीका
दूजी यह कि मुझे देख कर तड़प रहा है हृदय तेरा

1- "रामावतारचरित" पृ0- 174.
2- -वही- पृ0- 165-166

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

चाहत्म तुझे देख देख कर हृदय में चुभ जाता अन्तर
शत्रु हो या मित्र ? जो साथ-साथ वन में आये ।"[1]

और जब रावण केश पकड़ कर घसीटता हुआ उसे ले जाता है[2] तो सीता अपने किये पर पछताते हुए विलाप करने लगती है लेकिन किसी भी स्थिति में वह रावण के सम्मुख समर्पण नहीं करती । उसकी असाधारण चारित्रिक दृढ़ता और निर्भीकता का परिचय हमें निम्नलिखित रावण-सीता संवाद से मिलता है :-

-"सीता बोली रावण से 'धिक्कार तुझे ।'
कर दूँगी मैं प्राणान्त, स्वामी लेंगे प्राण तेरे
चीख़ उठा रावण -'चुप, राम का भय बेमानी है अब'
उत्तर में सीता बोली 'यही लक्षण हैं मिटने के'
फुसलाया रावण ने -'छोड़ रहो यहाँ, राम तो है बनवासी
उत्तर में सीता बोली 'आये हैं अब लंका का अस्तित्व मिटाने ।"[3]

अग्नि परीक्षा का प्रसंग तो नारी अभिशाप का एक क्रूर प्रसंग है । राम सीता से दो-दो बार अग्नि परीक्षा माँगते हैं और अपनी बहन के बहकावे में आकर वस्तुस्थिति की सही जानकारी प्राप्त किये बिना, गर्भवती पत्नी को घर से निकाल देते हैं और लक्ष्मण को यहाँ तक आदेश देते हैं कि सीता का कहीं वध कर दे । इस घटना से सीता का

1- "रामावतारचरित" पृ०- 63.
2- 'विवेकहीन बन ज्योतिहीन जब हुआ शिकार कुवृत्ति का
केश पकड़ कर ले भागा आकाश पथ से सीता को ।'
-- रामावतारचरित" पृ०-65
3- "रामावतारचरित" पृ०- 95.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पाषण आत्म सम्मान आहत शेरनी के समान तड़प उठता है । लक्ष्मण आज्ञाकारी भ्राता: के रूप में वस्तुत: कापुरुष के समान इस कुकृत्य में राम का साथ देते हैं । जाने उस समय शेषनाग का फन फैलाए क्रुद्ध रूप वे किस बिल में कहाँ छोड़ आये थे । गर्भवती महिला वन में अकेली असहाय अवस्था में निर्दयी भाग्य के थपेड़े सहने के लिए विवश हो जाती है:-

-"उनींदी आँखें उसकी -
मुँह के बल पृथ्वी पर गिरकर तड़प रही थी
नीचे गिर कर पुष्प पँखुरी कान्ति-हीन मुरझाई थी ।"[1]

वह अत्यन्त दीन-हीन अवस्था में पार्वती से अपनी व्यथा-कथा सुनाते हुए दया की भीख माँगती है ।[2] वाल्मीकि के आश्रम में जब उसे शरण मिल जाती है तो एकान्त में ज़िन्दगी के विभिन्न पहलुओं पर विचार करके वह क्रुद्ध हो उठती है और पुरुष के अन्याय के विरुद्ध विद्रोह की भावना उसके मानस को अथोर बना देती है । यही क्रुद्ध रूप 'प्रकाशरामायण' में सीता के चरित्र को एक नया आयाम प्रदान करता है । अन्यायी पुरुष के तथाकथित जन्म सिद्ध अधिकार को

1- "रामावतारचरित" पृ०- 192

2- 'मान रखा तब सच्चेपन का
अस्सी कोस जब अग्नि जलाई
नियामत किस के लिये प्रलय ऐसा
पार्वती ! कुछ उपाय करो ।
घर से निकालित करके
कलेजे में खंजर भोंका
यही मरण था भाग्य बदा
पार्वती ! कुछ उपाय करो ।"
-- "रामावतारचरित" पृ०- 220-222

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ठोकर मारते हुए सीता कहती है कि :-

-'तुम मौज मनाओ सुखपूर्वक मसनदों फ़र्श पर
और मैं काँटों पर यहाँ रहूँ आकुल-व्याकुल !
क्या तुम ने नहीं कहा था, 'मैं नाज़ुक हूँ पुष्पांगी ।'
अब नहीं देखते क्या ? संकट आन पड़ा मुझ पर ।'[1]

अथवा

'क्या नहीं विचारा तुमने कितनी होगी बदनामी मेरी ?
क्या नहीं कहेंगे लोग 'विपत् टूट पड़ी है इक अबला पर ।'[2]

लव-कुश द्वारा दिखाये गए रघुकुल कुमारों के मुकुट देख कर वह फूट फूट कर रोती है[3] पर जब ऋषि आश्रम में राम उसे मिलना चाहते हैं तो वह ऋषि आश्रम में अपनी कुटिया में घुस कर द्वार बन्द कर देती है और मिलने से स्पष्ट इनकार भी कर देती है ।[4] सीता का यह निश्चय कितना

1- "रामावतारचरित" पृ0- 195
2- -वही- पृ0- 197
3- 'सीता ने जब देखा उन को और पहचाना
दीवानी हो उठी और छोड़ दिया सब कुछ ।'
-- रामावतारचरित" पृ0- 211
4- 'लौट आई ऋषि-कुटिया में सीता जो तत्काल
जाने क्या सोचा ! और तुरन्त भेड़ दिया द्वार
जब तक नभ-थल एक न होंगे
तब तक मुँह न दिखाऊँगी मैं रामचन्द्र को ।'
-- "रामावतारचरित" पृ0- 216

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

स्वाभाविक और विश्वसनीय लगता है । वस्तुत: रामचन्द्र अपना नैतिक अधिकार उसी समय खो देते हैं जब वह विवेकहीन बन कर सीता को घर से निकाल देते हैं । 'जब तक पृथ्वी और आकाश में परस्पर मिलन नहीं होगा तब तक मेरा रामचन्द्र से मिलन नहीं होगा ।' इस कथन में सीता के मानस की समस्त पीड़ा निहित है । पुरुष नारी के प्रति किसी भी तरह का व्यवहार करने के लिये अपना अधिकार सुरक्षित समझता है । पुरुष के इस अभिमानी विश्वास पर सीता हथौड़े की चोट मार कर प्रहार करती है । रामचन्द्र जो द्वार खटखटाते रहे, बराबर विनति करते रहे[1] यही तो पुरुष की विशेषता है अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिये भोली सूरत बनाकर वह नारी को ठगने का सफल/असफल अभिनय करता है । सीता के लिये यह निर्णय बड़ा कठोर और पीड़ा दायक है । उसे डर है कि कहीं पुन: राम के आज्ञाकारी भ्रात: श्री उसे किसी और वन में छोड़ न दे :-

-'छलक रहा था प्यार आँसू बन कर
नहीं खोला कुटिया का द्वार
कहा राम ने उचित यही है घर चलना
'यह सुन कर मैं काँप रही हूँ !' बोली सीता
'कहीं वह लक्ष्मण गहन बन में छोड़ न आये ।'
नहीं खोला कुटिया का द्वार ।'[2]

1- 'कहा राम ने खोल द्वार री !
सुख पूर्वक रह घर अपने ।'
-- रामावतारचरित" पृ0- 217

2- -"रामावतारचरित" पृ0- 223

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

वह सोचती है कि अयोध्या में राजसिंहासन पर बैठ कर वे पुनः परीक्षा देने को मांग करेंगे । बाद में ऐसा ही होता है । उसे राम के आश्वासन पर विश्वास नहीं । वस्तुतः राम के प्रति अविश्वास की अभिव्यक्ति सम्पूर्ण पुरुष प्रधान समाज के प्रति अविश्वास की अभिव्यक्ति है । उसे आज भी अपने आप पर गर्व है, गर्व है इस बात पर कि वह सीता है - सधवा पति परायणा परन्तु साथ ही पति परित्यक्ता नारी :-

- " तुम्हारे प्यार की भोली तमन्ना बुझ रही है,
नहीं मैं कोई ऐसी वैसी, मैं तो सीता हूँ
परख कर चाहते हो फिर परखना !
नहीं खोला कुटिया का द्वार ।"[1]

डा० ओंकार कौल के शब्दों में " कश्मीरी 'प्रकाशरामायण' में सीता की साधारण नारी-सुलभ हठधर्मिता का परिचय विभिन्न स्थलों पर मिलता है । - - - - - - अमृत वर्षा से पुनः सबके जीवित होने पर तत्क्षण सीता का हठी नारी - हृदय भी जागता है और अयोध्या लौटने के लिए की हुई राम की विनती एवं क्षमा-याचना को वे हठपूर्ण कठोर शब्दों में ठुकराती है । किसी भी अन्य रामायण में सीता की हठ-धर्मिता का ऐसा परिचय नहीं मिलता है ।"[2] वस्तुतः यह स्वाभिमान प्रेरित सधवा नारी की भर्त्सना पूर्ण अस्वीकृति है, हठ-धर्मिता नहीं । जब राम दूसरी बार सीता से पवित्रता की साक्षी देने की बात कहते हैं तो वह इस अन्याय के सम्मुख सर झुकाने से पृथ्वी

1- " रामावतारचरित" पृ०- 224
2- " कश्मीरी और हिन्दी राम-काव्य का तुलनात्मक अध्ययन" - डा० ओंकार कौल - पृ०- 172-173.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

में समा जाना कहीं अधिक श्रेयस्कर समझती है । डॉ० ओंकार कौल जिसे हठधर्मिता समझते हैं वह वास्तव में अन्याय के विरुद्ध नारी-आक्रोश का प्रकट रूप है जिसे डॉ० शशिशेखर तोषखानी नारी का विद्रोही रूप मानते हैं ।[1] अशोक वाटिका में जब हनुमान उसे तुरन्त राम जी के पास पहुँचा देने की बात कहता है और ऐसा करने के लिए उसकी अनुमति चाहता है तो सीता इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए कहती है :-

-"पवन पुत्र ने जनक सुता से अनुमति चाही
'आज्ञा यदि हो तो पहुँचा दूँ रामचन्द्र के पास तुरन्त ।'
उत्तर में वह बोली - 'सरल हृदय हो कितने !'
सच कहती हूँ रावण मेरे पूज्य पिता हैं ।
रामचन्द्र के लिये बनेगा यह उलहाना -
चुरा कर ले आये सीता को रावण से ।'[2]

इस प्रकार प्रस्तुत रामायण में सीता आदर्श पत्नी के साथ-साथ एक विद्रोही नारी के रूप में पुरुष के अन्यायपूर्ण व्यवहार पर चोट करती हुई दिखाई देती है । वह चुपचाप सब कुछ सहन करने की विवशता से कहीं अधिक प्रहार करने की शक्ति का प्रदर्शन करती है और यही उसके चरित्र का वह आकर्षक पहलू है जो अधिकांश राम काव्यों में उपलब्ध नहीं होता । शेष वे समस्त गुण - कर्तव्य-परायणता, पातिव्रत धर्म पालन का दृढ़ संकल्प, चरित्र की पवित्रता, आत्म संयम

1- "प्रकाशराम ने भारतीय रामकाव्य में उपलब्ध सीता के चरित्र में एक नये दिक् को जोड़ दिया है । सीता का यह विद्रोही रूप अन्यत्र नहीं मिलता ।"
- "कश्मीरी साहित्य का इतिहास" -डॉ० शशिशेखर तोषखानी पृ०- 147.

2- "रामावतारचरित" पृ०- 99.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आदि - हमें प्रस्तुत रामायण की नायिका सीता में मिलते हैं जिनके कारण उसका जगदम्बा का रूप पूजनीय और प्रातःस्मरणीय हो जाता है । प्रकाशराम के रामायण में सीता का चरित्र सबसे अधिक प्रभावशाली है और सामान्य जन की हार्दिक सहानुभूति उसके साहसी व्यक्तित्व के साथ स्वतः जुड़ जाती है ।

शेष पात्रों में रावण का चरित्र सर्वाधिक आकर्षक है । खलनायक के रूप में अपनी आसुरी शक्ति के बल पर उसने सबको दबोच लिया है । वह कामुक, मदान्ध और क्रूर है पर साथ ही एक महान शिव भक्त भी है । उसे अन्त तक यह ज्ञात नहीं होता कि मूलतः सीता उसकी पुत्री है । सुन कर भी वह इस बात की अनसुनी करता है क्योंकि उसे विश्वास नहीं होता । वह एक अच्छा योद्धा और चतुर कूटनीतिज्ञ भी है । अलौकिक आधार पर यदि विचार करें तो उसे मालूम है कि राम नर रूप नारायण हैं और साथ ही असुर-विनाशक । वह हर सम्भव युक्ति से काम लेकर भाग्य-लेखा ही बदलना चाहता है । यहाँ तक कि शिवजी से भी अपनी विजय का वरदान माँगता है । असुर-मित्र महिरावण के पास वह सहायता लेने हेतु पाताल लोक पहुँचता है और अपनी योगमाया से कभी सीता के सम्मुख मायावी सीता का वध कर लेता है । इस प्रकार हर उचित अनुचित साधन को व्यवहार में लाकर असम्भव को सम्भव बनाने के प्रयास में दत्तचित दिखाई देता है । राक्षसी प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करने

राम का कटा हुआ शीर्ष लाता है तो कभी राम के सम्मुख

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

वाला रावण अपने सर्वनाश के समस्त साधन स्वयं जुटा लेता है । एक महाराजा होते हुए भी पर-स्त्री-हरण जैसा कुकर्म उसे पद-च्युत कर देता है । लाख समझाने पर भी वह अपनी ज़िद नहीं छोड़ता । विनाश काल में बुद्धि विपरीत दिशा में ही चलती है । देखा जाये तो प्रत्येक जीव के भीतर एक रावण छिपा है जो मन की लंका पर हर समय अपना अधिकार जताता है । रावण का रावणत्व ही सम्पूर्ण प्रकृति को शापित कर देता है । डॉ० ओंकार कौल के शब्दों में " क्रोध, अभिमान और कामुकता जैसे अनुदात्त तत्त्व ही उसके रावणत्व के मुख्य परिचायक हैं ।"[1] यह सब कुछ होते हुए भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि रावण शिव-भक्त होने के साथ-साथ अपनी विद्वत्ता के लिये भी प्रसिद्ध है । मृत्यु-शय्या पर अपनी तीन इच्छाओं को अभिव्यक्त करते हुए रावण वास्तव में अपने परिपक्व सोच का ही परिचय देता है । वे एक महान शिव भक्त थे और शिवजी की कृपा उन पर बराबर रही है । रामेश्वर लिंग - प्रतंग इस बात का प्रमाण है । सीता को लंका पहुँचा कर वह उसे अशोक वाटिका में रखता है । उसके साथ दुर् व्यवहार तो करता है लेकिन सीमाओं को अतिक्रमण करने का दुःसाहस उसमें नहीं है । वह सुग्रीव और अंगद को अपने साथ मिल जाने का निमन्त्रण भी देता है । देखा जाये तो विभीषण उसके विनाश

1- "कश्मीरी और हिन्दी राम-कथा-काव्य का तुलनात्मक अध्ययन" - डॉ० ओंकार कौल, पृ०- 161

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

में महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाहता है । उसे भी तो लोभ है लंकाधीश बनने का ।

शेष पात्रों में कौशल्या का पुत्र-स्नेह, कैकेयी की आत्मग्लानि, हनुमान का दास्य भाव, लक्ष्मण का भ्रातृ प्रेम परम्परागत रूप में कथा-निर्वाह में सहायक सिद्ध हुए हैं । प्रकाशरामा ने मन्दोदरी के उदात्त-चरित्र को भी महिमा मंडित किया है । यहाँ वह रावण की पत्नी ही नहीं अपितु सीता की माँ भी है और रावण वध के पश्चात् मन्दोदरी ही राम के सम्मुख अपनी बेटी सीता को लेकर उपस्थित होती है और उसे पुनः स्वीकार करने की प्रार्थना रामचन्द्र से करती है । रावण जब सीता को साथ लेकर लंका पहुँचता है तो मन्दोदरी देखते ही सीता को पहचान लेती है और हृदय मसोस कर रह जाती है । उसके बाद अन्त तक उसे मानसिक संघर्ष का शिकार होकर जीना पड़ता है । यह पराधीन जीवन जीने को विवश ता है,न वह अपने पति को वस्तुस्थिति से अवगत करा सकी और न ही अपने सुहाग की रक्षा कर सकी । मन्दोदरी का पत्नी रूप और मातृ रूप दोनों पराश्रित और विवश दिखाई देते हैं । इस प्रकार प्रकाशरामायण की चरित्र-योजना अपनी मौलिक उद्भावनाओं की दृष्टि से पर्याप्त महत्त्वपूर्ण है । कवि का यह भरसक प्रयास रहा है कि प्रत्येक पात्र को विश्वसनीय लौकिक आधार प्रदान किया जाये । लेकिन ऐसा करने में उन्हें एक विशेष सीमा तक ही सफलता प्राप्त हुई है ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाशराम ने प्रस्तुत रामायण फ़ारसी भाषा की 'रज़्मिया मस्नवी'[1] शैली में लिखा है। वस्तुत: यह एक वर्णनात्मक कथा काव्य है। 'रामावतारचरित' के साथ 'लवकुशचरित' भी जुड़ा है जो विभिन्न कांडों में नहीं अपितु उपशीर्षकों में विभक्त है। सम्पूर्ण कथा-काव्य में दो प्रकार की काव्य-शैलियों का प्रयोग हुआ है - इतिवृत्तात्मक शैली और गीतिशैली।[2] मस्नवी शैली में मुख्य रूप से रामकथा वर्णित है तथा भक्ति-स्तुति परक गीतों और लीलाओं के लिये गीति शैली का प्रयोग किया गया है। प्रोफ़ेसर जे० एल० कौल के विचारानुसार फ़ारसी रज़्मिया-मस्नवी शैली में लिखी हुई कश्मीरी

1- 'मस्नवी' - 'एक काव्य रूप जिस में कोई कहानी या उपदेश एक ही वृत्त में होता है और उसका हर शेर दूसरे शेर से रदीफ़ क़ाफ़िए में नहीं मिलता और हर शेर के दोनों मिसरे सानुप्रास होते हैं।'
- उर्दू-हिन्दी शब्दकोश" - मुहम्मद मुस्तफ़ा खाँ 'मद्दाह' उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ - सन् 1977 ई० पृ०- 848.
' रज़्मिय: / रज़्मिया अर्थात् युद्ध सम्बन्धी।

2- 'रामावतारचरित' तथा 'लवकुशचरित' में मुख्यत: दो प्रकार की काव्य शैलियों का प्रयोग हुआ है - इतिवृत्तात्मक शैली और गीति-शैली। इतिवृत्तात्मक शैली में मुख्य घटना प्रसंग वर्णित हुए हैं तथा गीति-शैली में वन्दना-स्तुति सम्बन्धी तथा अन्य भक्ति-गीत कहे गए हैं।'
- "कश्मीरी भाषा और साहित्य" - डॉ० शिबनकृष्ण रैणा, पृ०- 143.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

साहित्य में यह पहली रचना है ।[1] अतः न केवल कश्मीरी रामकाव्य के इतिहास में अपितु कश्मीरी मस्नवी काव्य के इतिहास में भी इस रचना का अपना ऐतिहासिक महत्त्व है ।

कवि होने के साथ-साथ पण्डित प्रकाशराम एक सच्चे रामभक्त भी थे । दास्य भाव की भक्ति से प्रेरित उन की बहु वर्णित लीलायें एवं स्तुतिपरक गीत प्रस्तुत रामायण के कथा प्रवाह में अद्भुत आकर्षण उत्पन्न करते हैं । भक्त अपना सर्वस्व अपने इष्ट के चरणों पर निछावर करके राम-नाम का महिमागान करते हुए जीवन की उलझनों को सुलझाने का जतन करता है । वह अपने इष्ट के लीलामय रूप पर आकृष्ट है । चाहे वह दशरथ नन्दन राम है अथवा जानकी के प्राणप्रिय राम, चाहे वह मर्यादा पुरुषोत्तम राम हैं या कर्मवीर राम - उसे हर स्थिति में बस केवल राम का नाम प्रिय है । मस्नवी शैली एवं गीति-शैली का सुन्दर समन्वय हमें प्रस्तुत रचना में देखने को मिलता है । कवि ने कथा-वर्णन की ऊब को मिटाने के लिये एवं भक्त-जनों के हृदयोद्गारों को अभिव्यक्ति प्रदान करने के हेतु बीच बीच में वर्णन-शैली में लीलाओं एवं स्तुति गीतों का सर्जन किया है । वस्तुतः उनका निजी भक्त-हृदय प्रस्तुत लीलाओं के द्वारा मुखर हो उठा है । कहीं इन लीलाओं में शुद्ध रूप से आत्म-निवेदन है, कहीं राम नाम की महिमा का श्रद्धा पूर्वक बखान, कहीं

1- "कश्मीरी साहित्य में प्रथम रज़मिया मस्नवी 'रामवतारचरित' लिखने का श्रेय प्रकाशराम को जाता है । ऐसा कहना तब उचित होगा जब कश्मीरी मस्नवी को कथ्य/विषय के आधार पर निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जाये -- बज़्मिया - {प्यार}, रज़्मिया {युद्ध} और हज़्लिया {व्यंग्य} मस्नवियाँ ।"
"स्टडीज़ इन कश्मीरी" -- जे० एल० कौल, प्रकाशक-कपूर ब्रदर्स, श्रीनगर सन् 1968 ई० पृ०- 61.

CC-0. Bhuvan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

शिव एवं पार्वती के प्रति भक्त हृदय के निश्छल उद्गार व्यक्त हुए हैं तो कहीं ईश-कृपा को पाने के हेतु विनम्र निवेदन मिलता है कहीं दार्शनिक विचारों की अभिव्यक्ति हुई है और कहीं जीव, माया और जगत के साथ-साथ निराकार एवं साकार ब्रह्म से सम्बन्धित विचार व्यक्त हुए हैं, कहीं आत्म-चिन्तन को अभिव्यक्त किया गया है तो कहीं जीव-ब्रह्म के पारस्परिक सम्बन्धों पर गहन विचार प्रकट हुए हैं। कुल मिला कर ये लीलायें प्रमुख रूप से भक्त हृदय के निश्छल उद्गारों को अभिव्यक्त करते हुए - अर्थात् साधनारत भक्त के भक्तिभाव को व्यक्त करते हुए प्रस्तुत रामायण को विचार की गरिमा भी प्रदान करते हैं। लोक-जीवन के कई आकर्षक बिम्ब हमें इन गीतों में देखने को मिलते हैं। सहज सरल भावाभिव्यक्ति के साथ-साथ लोक संगीत का मधु-मिश्रित रस इन्हें जन-मानस के साथ जोड़ देता है। कश्मीर के प्राकृतिक सौन्दर्य से जुड़े अनेक छवि-चित्र भी इन गीतों में देखने को मिलते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि बहुआयामी लोक जीवन इन गीतों में प्रतिबिम्बित है। चाहे वह लोकगीत हों या लोक-भाषा, लोक संगीत हो या लोक-विश्वास—कवि हर स्थिति में लोक से ही प्रेरित और प्रभावित दिखाई देते है।

चन्द उदाहरण द्रष्टव्य हैं :-

1. दर्शनाभिलाषा के साथ-साथ मिलन की बलवती इच्छा :-

-- " निष्प्राण हो गई काया, तनिक सुन ले फ़रियाद
निछावर तुझ पर, दर्शन तो देते जाना।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मचल रहा है हृदय तुम्हारे प्यार में
छोड़ दे रंजिश आ तोड़ के सब बन्धन ।
देशनि दे दे, मैं दुखयारी तड़प रही हूँ
निछावर तुझ पर, दर्शन तो देते जाना ।
जाने कितने गल जाते हैं तेरी आस लगाए
दर्दे-दवा तब बन जाते हो जब इच्छा पूरी होती है
भोले - भाले जन संग आना
निछावर तुझ पर, दर्शन तो देते जाना ।"[1]

2. विनीत निमन्त्रण :-

—" आ जाते हमारे घर पर, दर्शन देते
जो भर कर मैं फूलों का वर्षण करती ।"[2]

3. निर्गुण निराकार से अनुग्रह की याचना :-

—"निराकार हो नारायण
चरणों पर सीस निछावर
अनुग्रह करके पार लगा दे बेबस और विवश हैं हम सब
बस दर्शन की आस लगी है
चरणों पर सीस निछावर ।"[3]

4. राम नाम का महिमा गान सत् असत् को पहचानने तथा मन को वश में करने की ज़रूरत :-

—"निष्कल और निष्काम हो राम नाम का भजन करो
विष्णु रूप में दर्शन देकर अमृत वर्षण कर दे ।

1- "रामावतारचरित" - पृ0- 177.
2- - वही- पृ0- 166.
3- - वही- पृ0- 167.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

निछावर करता कुसुम मनोहर हर क्षण राम तुम्हीं पर
मन मूर्ख को वश में करना सत् असत् को होगी पहचान
सत् के संग बल देना मन को धीमी गति से राम राम ।
मन मेरे ! क्यों भ्रमित हुए, सत् में लीन हुए क्यों नाही
गुरु के सम्मुख क्यों न झुके निर् अभिमान हो, राम राम ।[1]

5. एक सच्चे भक्त की मनोकामना :-

---"निज प्रकाश से तमस मिटा दे मानस का
प्रेम भाव से पथ दिखला दे अन्धकार में
जिसे मिले वर ज्ञान ज्योति का क्या है चिन्ता उसको ?
वैकुंठ में वह वास करेगा ।"[2]

6. राम वनागमन पर अयोध्या वासियों का हर्षोल्लास :

---अ-"मैना ! सुन पोशनूल {स्वर्णपक्षी} के बोल
आस लगाये बैठे थे, सुप्रभात की बेला आई है ।"[3]
आ-"मृत भूमि में फिर से मुसकाया जीवन
कुसुमाकर तो आया, स्वागत हो गीतों से ।"[4]
इ-"हरि नारायण रामचन्द्र !
तुझ पर ही - {श्वेत} पुष्प चढाऊँ ।"[5]

7. भक्त का अटूट विश्वास :-

---"श्रद्धा से जो राम नाम का भजन करेगा
वही होगा वैकुंठ वासी
स्वयं ईश है बन अवतारी
हम पापी वे पाप विमोचक

1- "रामावतारचरित" - पृ0- 152
2- -वही- पृ0- 148
3- -वही- पृ0- 180
4- -वही- पृ0- 181
5- -वही- पृ0- 183

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

बड़े प्यार से करा रहे हैं अमृतपान
वही होगा वैकुंठ वासी ।"[1]

ज़िन्दगी की कई तलख़ हक़ीक़तों को भी प्रस्तुत रामायण के द्वारा अभिव्यक्ति प्रदान हुई है । मुख्यत: इनका सम्बन्ध सामाजिक जीवन से है । रामायण काल में भी नारी अभिशप्त जीवन जीने के लिए विवश थी । देखा जाये तो सीता उसी शोषित और पीड़ित नारी का प्रतिनिधित्व कर रही है । माँ-बाप के लिये इस विषाक्त सामाजिक वातावरण में बेटी का जन्म एक अभिशाप से कम नहीं है । सीता को इस बात का एहसास है तभी तो पार्वती की स्तुति वन्दना करते हुए वह कहती है :-

--"बेटी ना जन्मे किसी के घर - यह कहते वह रोई
यदि जन्मे तो अलमास चाट ले
बेटी बनकर मैं जन्मी यहीं पोर - पोर भस्म हुई
व्यर्थ हुआ जीवन मेरा, पार्वती ! कुछ उपाय करो ।"[2]

एक अन्य लीला में विवश माँ मन्दोदरी इसी तथ्य को इन शब्दों में अभिव्यक्त करती हैं :-

--"उस व्यक्ति के वास्ते उचित है हीरा चाटना
जिस के घर बेटी जन्मी हो
और, जिस बेटी के भर्ता हो तुम अवतारी !
प्राण निछावर तव चरणों पर ।"[3]

सौतेली माँ के सौतिया डाह का भीषण परिणाम है -- रामवनगमन एवं दशरथ प्राण त्याग । राम के वनगमन पर कौशल्या विलाप करते हुए

1- "रामावतारचरित" पृ0- 147.
2- -वही- पृ0- 220.
3- -वही- पृ0- 170.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

बहु पत्नी प्रथा के दुष्परिणाम पर आँसू बहाते हुए कहती है :-

--" राम राज्य बाटा था मैं ने, पर सहन न हुआ विधाता को
बचपन से ही साथ मेरे, हमराज़ मेरे भूला भुलाऊँ तेरे हेतु ।"[1]

माँ बाप ज़िन्दगी की सबसे बड़ी नियामत (नेमत) है और जो अपने माँ-बाप को खो देते हैं वह वास्तव में बड़े दुर्भाग्यशाली होते हैं । पुरुषोत्तम राम भी अपने पिता के दाहान्त का समाचार सुन कर व्याकुल हो उठते हैं । अल्पायु में ही जो इस सम्पति से वंचित होते हैं उन्हें ज़िन्दगी में बहुधा एक सभ्य रहनुमा की कमी का एहसास सताने लगता है :-

--"दुष्कर्मों का फल पाकर जो खो देते माँ-बाप को
रहनुमा न मिलता उनको कोई फिर जीवन में
ऐसा लगता है मानो वह टूट पड़ा आकाश से
यदि वह है एक मौक्तिक कण पर मोल न उसका कुछ भी
पुन पिता के संग है रहन तमस में मणि अनमोल
योगी है वह, मात-पिता का संग जिसे रहता चिरकाल ।"[2]

मनुष्य का सब से बड़ा शत्रु है उसका अहंकार । अहंकारहीन जीवन जीना तो सब के बस की बात नहीं है । अपने भीतर के रावण को राम करना किसी योग साधना से कम नहीं । अपने आप को पहचानना और सच्चाई से परिचित होना जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है :-

--" जो बैठे हो जो कुछ भी वह पास है तेरे, ढूँढ उसे(नादान)

1- "रामवतारचरित" पृ०- 35.
2- -वही- पृ०- 44-45.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

गला घोंट दे अहंकार का, पा लो गे सब कुछ ।"[1]

माया के जाल से मुक्त होकर भेद भाव रहित जीवन जीना हो तो जीव का लक्ष्य है :-

—"माया के बन्धन को तोड़ना हो तो दुई छोड़ना है
अहम् भाव पर काबू पाना अरि को मीत समझना है
मात-पिता को ईश्वर समझना बात है दूजी
सुन गुरु-शब्द सीस नवाना बात है तीजी
खोजते रहना सत पथ को, बात है चौथी
और पाँचवी बात है प्रभु के शरण में आना ।"[2]

इस प्रकार राम कथा को अपने समकालीन सामाजिक जीवन से जोड़ कर प्रकाशराम निजी जीवनानुभव के आधार पर कई महत्त्वपूर्ण सच्चाइयों को रेखांकित करने में सफल हुए हैं ।

रामावतार चरित का अभिव्यक्ति पक्ष पर्याप्त सशक्त एवं कलात्मक है । कश्मीरी भाषा का सहज सरल स्वरूप ही प्रस्तुत रामायण में देखने को मिलता है । इसे यदि लोक भाषा अथवा जन-भाषा कहा जाये तो अनुचित नहीं होगा । एक बात ध्यान देने योग्य है - शताब्दियों तक कश्मीर में फ़ारसी भाषा का प्रभुत्व रहा है । फ़ारसी से ही प्रकाशराम ने मस्नवी शैली को अपनाया है । स्वयं उन्हें फ़ारसी भाषा की सम्यक् जानकारी थी अतः स्वाभाविक है कि शताब्दियों तक मुसलमानों के प्रभुत्व में रहने वाले कश्मीरी जन-मानस के अनुकूल ही प्रकाशराम ने

1- "रामावतारचरित" पृ0- 10.
2- -वही- पृ0- 32.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

फ़ारसीदाँ होने का प्रमाण देते हुए 'रामावतारचरित' में फ़ारसी शब्दों अथवा शब्द-खण्डों का प्रयोग किया है। कहीं ये प्रयोग स्वाभाविक प्रतीत होते हैं और कहीं कृत्रिम तथा अस्वाभाविक। इतना ही नहीं, प्रकाशराम की भाषा पर संस्कृत ज़बान का भी गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। भारतीय संस्कृति के ठीक अनुकूल पारिभाषिक शब्दावली उन्हें संस्कृत शब्द-भण्डार से ही उपलब्ध हुई है। चाहे वे अश्वमेध यज्ञ से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्द हों अथवा ऋषि वन्दना से सम्बन्धित, चाहे वे राजतिलक समारोह से सम्बन्धित शब्द हों अथवा ऋषि आश्रम में व्यवहृत भाषा के शब्द, चाहे वे किसी धार्मिक अनुष्ठान से सम्बन्धित नागवासी शब्द हों अथवा सभासदों द्वारा प्रयुक्त मार्जित/ मानक भाषा के शब्द हों - हर स्थिति में विशिष्ट सांस्कृतिक परिदृश्य को गरिमा प्रदान करने के हेतु उन्हें संस्कृत भाषा की शब्दावली का व्यवहार करना पड़ा है। इन शब्दों का प्रयोग तत्सम रूप के साथ साथ तद्भव रूप में भी हुआ है। बल्कि तद्भव रूप में सब से अधिक हुआ है। प्रकाशराम शब्द को आत्मा पर अधिक बल देते हैं उसके मूल रूप से कहीं अधिक उसका ठेठ बोली गत रूप उन्हें सुन्दर दिखाई देता है। आवश्यकता पड़ने पर ही उन्होंने संस्कृत और फ़ारसी से शब्दों अथवा शब्द-खण्डों को ग्रहण किया है, बहुभाषा ज्ञान प्रदर्शन के मोह में पड़कर उन्होंने अन्य भाषाओं के शब्दों का व्यवहार

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नहीं किया है । देखा जाये तो 'रामावतारचरित' की भाषा शुद्ध कश्मीरी लोक भाषा है जिसके द्वारा जन-मानस के अनेक छवि चित्र साकार हो उठे हैं ।[1] स्वर्गीय अब्दुल अहद आज़ाद के शब्दों में - "पण्डित साहब की शायरी बहुत सीमा तक कश्मीर खण्ड की अपनी शायरी है और इससे कश्मीरी भाषा की तंग दामनी की शिकायत का बहुत हद तक निवारण हो सकता है"।[2] उन्होंने समान रूप से हिन्दी और संस्कृत के साथ-साथ फ़ारसी और अरबी भाषा के शब्दों का व्यवहार किया है और खुल कर किया है, ऐसा करना उनके लिये आवश्यक था क्योंकि वे एक विदेशी काव्य-शैली में भारतीय कथा को उन तमाम मान्यताओं और विश्वासों, परम्पराओं और रीति-रिवाजों धार्मिक आस्थाओं और सामाजिक बन्धनों के साथ प्रस्तुत करना चाहते थे जो रामायण काल में भारतीय जन-जीवन में प्रचलित थे । उनके सामने एक समस्या और थी कि रामकथा का कश्मीरी भाषा में प्रस्तुतीकरण कश्मीरी लोक-मानस के अनुकूल हो । अपने कवि-कर्म के प्रति वे सचेत थे । संस्कृत और हिन्दी से कहीं अधिक उन्हें फ़ारसी की जानकारी थी ।

1- 'इन की भाषा तो मधुर कश्मीरी भाषा है और आवश्कता पड़ने पर इन्होंने सरल संस्कृत शब्दों के साथ-साथ सरल अरबी और फ़ारसी शब्दों का व्यवहार भी अपने काव्य में किया है ।'
"कश्मिर अदबुक तवारीख़"- नाज़ी मुन्नवर, शफ़ी शौक़, - कश्मीरी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय प्रकाशन, सन् 1978 ई०, पृ०-12

2- "कश्मीरी ज़बान और शायरी" -भाग-2, अब्दुल अहद 'आज़ाद' जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन-सन्-1962 ई० पृ०-236.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

स्वाभाविक है कि जब कवि मुख्य रूप से फ़ारसी छन्द का व्यवहार कर रहा हो तो फ़ारसी भाषा के शब्द भण्डार से जाने अनजाने में असंख्य शब्द यहाँ तक कि शब्द-खण्ड रचना को महाकाव्योचित गरिमा प्रदान करने के हेतु व्यवहार में आ जायें। यह कोई अनहोनी बात नहीं। इस तरह के प्रयोगों से कश्मीरी भाषा का शब्द-भण्डार सम्पन्न हुआ है। यह उस के दारिद्र्य का प्रतीक नहीं अपितु उसकी ग्रहण-शक्ति का द्योतक है, जीवन्त होने का प्रमाण है।

प्रकाश राम ने कश्मीरी जन-समाज में व्यवहृत कहावतों और मुहावरों का प्रयोग कर के वर्णनात्मक कथा काव्य में अद्भुत आकर्षण उत्पन्न किया है। इन कहावतों और मुहावरों के प्रयोग से रचना में स्थानीय रंग खिल उठा है।[1] अलंकारों के प्रयोग में भी कवि अपनी कलात्मक परिपक्वता और रचनात्मक सजगता का प्रमाण देते हैं। 'रामावतारचरित' में उपमायें बेजोड़ हैं।[2] ये फ़ारसी या संस्कृत की जूठन नहीं अपितु कवि की निजी सर्जनात्मक प्रतिभा का परिणाम है। कलात्मक अभिव्यक्ति से सम्बन्धित चन्द उदाहरण द्रष्टव्य है :-

---

1- 'पण्डित के काव्य विशेष कर 'रामावतारचरित' की यह एक बड़ी विशेषता है कि इसमें कहावतों, लोकोक्तियों, कथा-सूत्रों और मुहावरों के चयन में परम्परा का अनुकरण नहीं अपितु ये स्थानीय हैं।'
"कश्मीरी ज़बान और शायरी" -अब्दुल अहद 'आज़ाद' भाग-2, पृ0-236

2- 'कश्मीरी ज़बान की मस्नवियों में कवि किसी घटना के लिखने में प्राय: फ़ारसी उपमाओं और शब्दों का सहारा लेते हैं। लेकिन पण्डित साहब जीती जागती कश्मीरी भाषा में उन घटनाओं को काव्यात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं।'
"कश्मीरी ज़बान और शायरी" -अब्दुल अहद 'आज़ाद' भाग-2 पृ0-234.

कहावत- लोकोक्ति

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

भाषा प्रयोग के नमूने (कहावतें और महावरे) :-

अ/ 'परी हूँ मैं नहीं भुतनी, डायन या बँदरिया
गुनीमत जान जो घर बैठे मिला आखेट मनमोहक
(हंस ने किया प्रदेश झरोखे से)
मुँह ढक लेती, दिखती आकुल नाज़बरदारी हेतु
तूर्य चन्द्र सदृश राजकुमारों को ।'[1]

आ/ 'चेहरे पर हवाइयाँ उड़ गई रावण को
पर-कूप खना था उसने सो तेहि कूप गिरा वह ।'[2]

इ/ 'मक्कोश्वर साथ ले कर, जब वह आया
घुसा नारद प्रकृति मे, देखिये कैसे -'[3]

ई/ 'अथाह व्यथा से तड़प उठी मैं, भाग्य बदा था
ऐसा लगता है कि यह उपदेश नंनदा का है ।'[4]

अतिशयोक्ति पूर्ण अभिव्यक्ति का एक उदाहरण देखिये :-

'सोस दस और दस दूना बोस हैं बाहें उसको
बहुत मोटाई और लम्बाई कोस सहस्रों ।'[5]

निम्नलिखित काव्य-पंक्ति में सम्पूर्ण अर्थ सौन्दर्य वस्तुत: दो शब्दों - मुनोश्वर और मक्कोश्वर के सांकेतिक प्रयोग में निहित है :-

'देखिये कैसे उस कपटी रावण को भरमाया
मुनीश्वर चले गये छोड़ वहो मक्कोश्वर को ।'[6]

1- "रामावतारचरित" पृ0- 58.
2- -वही- पृ0- 59.
3- -वही- पृ0- 145.
4- -वही- पृ0- 192.
5- -वही- पृ0- 92.
6- -वही- पृ0- 146.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कश्मीर के 'मराज़'[1] इलाके में व्यवहृत कश्मीरी भाषा के बोली-गत रूप से प्रकाशराम पर्याप्त प्रभावित रहे हैं । इसका कारण यह है कि प्रकाशराम इसी मराज़ इलाके के ही निवासी थे और यह बोली स्वयं उन की निजी बोली है । यही कारण है कि 'वनान' का 'वनन' 'गछ्नान' का 'गछ्न', 'खयवान' का खयवन 'यवान' का 'यवन प्रयोग हमें प्रस्तुत रचना में मिलते हैं । यहाँ शब्द के मध्य में प्रयुक्त दीर्घ-स्वर ह्रस्व हो जाता है ।

प्रकृति चित्रण की दृष्टि से कुछ लोलायें बेजोड़ हैं विशेष कर 'कुसुमाकर के आगमन पर प्रेम-कुलबुल ! निमन्त्रण है मेरा, मैं शादि-याने मनाऊँ ।' 'मृत भूमि में मुसकाया जीवन ; कुसुमाकर तो आया, स्वागत हो गीतों से ।' तथा 'घूम लूँ मैं चरण तेरे, टोह लगाऊँ रामरादन में ।' ऐसा प्रतीत होता है कि कवि कश्मीर के अतुलनीय प्राकृतिक सौन्दर्य से बेहद प्रभावित हुए हैं । वे यहाँ के कण-कण से परिचित हैं । यहाँ के महकते उपवन, पर्वतीय नद, सुरम्य घाटियों का गुलाबी यौवन, झरते झरने और सबसे बढ़ कर मुसकुराते फूलों का सौन्दर्य उसे बरबस अपनी ओर आकर्षित करता है । उन्होंने प्रकृति-चित्रण को

---

1. 'मराज़' - कश्मीर घाटी का दक्षिणी राज्य खण्ड जिसका प्राचीन नाम मडव - राज्य था ।
   'कमराज़'- कश्मीर घाटी का उत्तरीय राज्य खण्ड जिसका प्राचीन नाम क्रमराज्य था ।
   अ: 'कश्मीर डिक्शनरी'- जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन खण्ड-5 ‖ पृ0-108‖, खण्ड-6 ‖पृ0-114‖
   अ: 'कल्हण की 'राजतरंगिणी' ‖सन् 1148-49 ई0‖ और परवर्ती इतिहास ग्रन्थों में इन शब्दों का प्रयोग बार-बार हुआ है । "ए हिस्ट्री आफ कश्मीर" -पी0 एन0 के0 बामज़ई पृ0-185.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

किसी शास्त्रीय प्रणाली का अनुसरण नहीं किया है अपितु वे एक सहज प्राणी के रूप में प्रकृति के वैभव से प्रभावित होकर सौन्दर्य के छवि-चित्र अंकित करने में लीन रहे ।[1]

प्रस्तुत रामायण में संवाद-शैली का सफल प्रयोग भी हुआ है । इस दृष्टि से सीता-लक्ष्मण संवाद, सीता-मन्दोदरी संवाद, सीता-हनुमान संवाद, सीता-रावण संवाद, अंगद-रावण संवाद आदि उल्लेखनीय हैं । देखा जाय तो कथा का श्रीगणेश ही शिव-पार्वती संवाद से होता है । यहाँ प्रश्नोत्तर शैली का प्रयोग भी हुआ है । वन-गमन के समय राम बराबर सीता को समझाते हुए साथ न आने के लिये तर्क देते हैं और सीता हर तर्क का उत्तर नाटकीय अन्दाज़ में देकर अपने पति के साथ वन जाने का दृढ़ निश्चय व्यक्त करती है । डा० ओंकार कौल के शब्दों में - 'संवादों की भाषा सर्वथा लोक रंजक, पात्रानुकूल एवं बोधगम्य है । संवादों की वाक्य-रचना में शब्द-संक्षेप, अर्थ-गाम्भीर्य और स्वाभाविकता का सुन्दर सामन्जस्य मिलता है । उक्त रामायण में संवाद पात्रों के अंतस् का चारित्रिक मनोविश्लेषण प्रस्तुत करके चरित्र-विकास में अत्यधिक सहायक होते हैं ।'[2]

प्रकाशरामायण में क्रम-परिगणन-पद्धति अथवा शैली को भी

1- 'प्रकाश भट्ट की लोलायें और वचन-गीत उच्च कोटि के हैं । उन्होंने वचन-गीतों के अन्तर्गत प्रकृति-चित्रण श्रेष्ठ काव्य-बन्धों में किया है ।' -"कश्मिर अदबुक तवारीख़" -नाजोमुन्नवर, शफ़ी शौक़, पृ०-92.

2- "कश्मीरी और हिन्दी रामकथा काव्य का तुलनात्मक अध्ययन" - डा० ओंकार कौल - पृ०- 310.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

बार बार अपनाया/है । एक, दो, तीन, चार, पाँच यहाँ तक कि दस गथा तक भी यह गिनती पहुँचती है ।

एक उदाहरण देखने योग्य है :-

—"माया के बन्धन को तोड़ना हो तो दुई छोड़ना है
अहम् भाव पर काबू पाना अरि को मीत समझना है
मात-पिता को ईश्वर समझना, बात है दूजी
सुन गुरु शब्द सीस नवाना, बात है तीजी
खोजते रहना सत पथ को, बात है चौथी
और पाँचवीं बात है प्रभु के शरण में आना ।"[1]

एक और विशेष प्रकार के संवाद हमें इस काव्य रचना में देखने को मिलते हैं जहाँ एक ही पात्र स्वयं प्रश्न करता है और जिस के प्रति प्रश्न किया जाता है उस के उत्तर की कल्पना भी वह स्वयं ही कर लेता है । डॉ० शशि शेखर तोषखानी ने इसे आत्मालाप कहा है जहाँ 'एक पात्र दूसरे पात्र से उसकी अनुपस्थिति में संवाद की स्थिति को कल्पित करते हुए आत्मालाप द्वारा अपने मन के भाव प्रकट करता है ।'[2] पिता के देहान्त का समाचार सुन कर शोकाकुल राम अपने दिवंगत पिता से वार्तालाप की कल्पना करते हैं । वे जो जो सवाल अपने पिता से पूछना चाहते हैं उनके सम्भावित उत्तरों की कल्पना भी वे स्वयं ही कर लेते हैं ।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि कश्मीरी रामकाव्य के इतिहास में प्रकाशराम का 'रामावतारचरित' एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि

1- "रामावतारचरित" पृ०-32.
2- "कश्मीरी साहित्य का इतिहास" -डॉ० शशिशेखर तोषखानी, पृ०-153

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

है । मौलिक उद्भावनाओं की दृष्टि से, पात्र-योजना एवं कथा-विस्तार की दृष्टि से, भाषा-प्रयोग एवं संवाद-योजना की दृष्टि से/प्रस्तुत रचना का अपना विशिष्ट ऐतिहासिक महत्त्व है । प्रकाशराम कवि होने के साथ-साथ एक महान भक्त थे बल्कि वे भक्त पहले थे तत्पश्चात् कवि । प्रस्तुत रचना में दास्यभाव को भक्ति का परिपुष्ट रूप देखने को मिलता है । प्रत्येक लीला और भजन वस्तुतः भक्त जन के निर्मल हृदयोद्गारों का व्यक्त रूप है । सम्पूर्ण काव्य कृति का एक अलौकिक आधार है जो लौकिक व्यवहार क्षेत्र अथवा लीला भूमि में व्यक्त हो कर मानव-जन्म की सार्थकता को सिद्ध करता हुआ तथा कर्म-क्षेत्र के सौन्दर्य को द्विगुणित करता हुआ लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता है । दिव्य अवतारी रूप राम सामान्य मनुष्य की तरह जीवन के व्यवहार क्षेत्र में एक आज्ञाकारी पुत्र, स्नेहिल भ्रातः, अनुरक्त पति, प्रिय बन्धु, विश्वसनीय सखा और न्यायपालक प्रजा रक्षक राजा का आदर्श प्रस्तुत करते हैं । कहीं कहीं उनका सहज मानवीय रूप उनके अलौकिक रूप से कहीं अधिक सुन्दर, विश्वसनीय और आकर्षक दिखाई देता है । प्रस्तुत रचना में स्थानीय रंग अपनी समस्त विशेषताओं के साथ खिल उठा है । यहाँ अयोध्या और जनकपुरी का उतना महत्त्व नहीं जितना कश्मीर का है । यह सत्य है कि महाकाव्योचित सभी तत्त्व अथवा गुण प्रस्तुत रचना में नहीं हैं क्योंकि इसकी मूल प्रकृति लोक काव्य की है ।[1]

1- जहाँ तक प्रकाशराम के रामायण का सम्बन्ध है प्रबन्ध काव्य की संरचनात्मक विशेषताओं से युक्त होते हुए भी वह अपनी मूल प्रकृति में लोक-काव्य है । लोक जीवन से गृहीत प्रेरणाओं के कारण ही कश्मीरी जन-मानस में इसे इतने व्यापक स्तर पर स्वीकृति मिली ।' -'कश्मीरी साहित्य का इतिहास' - डा० शशिशेखर तोषखानी, पृ०-136.

/ तथा भक्तिरसप्रधान लीलाओं के सृजन की दृष्टि से

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन सगुण राम भक्ति के क्षेत्र में कश्मीरी भाषा में यह प्रथम उपलब्ध रचना है जिस ने न केवल भारतीय अपितु कई विदेशी विद्वानों का ध्यान भी अपनी ओर आकृष्ट किया। यह एक हकीकत है कि आज तक स्वतन्त्र रूप से विस्तार के साथ इस काव्य कृति पर शोध-कार्य नहीं हुआ है। ग्रिएर्सन महोदय इसके मूल पाठ को संक्षिप्त करने में व्यस्त रहे और डॉ० कामिल बुल्के ने रचना का सरसरी हवाला देकर चुप्पी साध ली। आवश्यकता इस बात की है कि प्रकाशराम के रामायण के मूल पाठ पर भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया जाय और मूल पाठ निश्चित हो जाने के उपरान्त इसके कथ्य पर सविस्तार आलोचनात्मक दृष्टि से प्रकाश डाला जाय।

सम्पूर्ण राम काव्य का इतिहास तब तक अपूर्ण है जब तक प्रकाशराम कृत 'रामावतारचरित' को उसमें यथोचित स्थान नहीं दिया जाता। सम्भव है प्रस्तुत रचना के गहन अध्ययन के बाद भारतीय राम-कथा काव्य के क्षेत्र में कुछ नयी ऐतिहासिक सम्भावनाओं की तलाश शुरु हो। आवश्यक नहीं कि जो कुछ वाल्मीकि एवं तुलसी ने कहा है वही अन्तिम है। इतिहास हर समय शोध के आधार पर पुनर् निरीक्षण की अपेक्षा रखता है। इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता।

हे गुरु! केवल ध्यान तुम्हारा मैंने समझा आबेहयात
निछावर है सम्पूर्ण कुटुम्ब चरणों पर तेरे, राम राम।
सत् विचार को अपना कर मोक्ष द्वार पर पहुँचोगे

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

वहीं होगा मिलन बाल सखा से प्रिय मेरे, राम राम ।
बेमानी है उससे कहना जिस ने स्व को नहीं पहचाना
(वह क्या समझे राज़ की बातें)
आग लगने पर कूप खनन कुन्द ज़ेहन बस, राम राम ।।

- 0 -

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

---

(इ) 'विष्णुप्रताप रामायण' - एक क़लमी-नुसख़ा

1- राम-भक्त कवि पण्डित विष्णु कौल
2- मुख्य-कथा : सात काँडों में विभाजित
3- प्रासंगिक कथाओं की सोद्देश्य योजना
4- कथा प्रसंगों में मौलिक उद्भावनाएँ
5- प्रकृति चित्रण में स्थानीय रंग
6- भाषा सम्बन्धी विविध प्रयोग
7- भक्त हृदय की निश्छल अभिव्यक्ति
8- पाण्डुलिपि से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण मुद्दे

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कुरिगाम (काज़ी गुंड - कश्मीर) के निवासी प्रकाशराम कृत 'प्रकाशरामायण' (रचनाकाल सन् 1847 ई०) से पूर्व हमें कश्मीरी भाषा में किसी और रामायण का उल्लेख नहीं मिलता है। 'प्रकाशरामायण' के पश्चात् महाराजा रणवीर सिंह के राज्यकाल में 'शंकर रामायण' (रचना काल सन् 1870 ई०) लिखा गया और सन् 1888 ई० पण्डित आनन्दराम राज़दान ने 'आनन्द रामावतारचरित' लिखा। इस के पश्चात् कश्मीरी भाषा के 'राम-काव्य' के इतिहास में पण्डित विष्णु कौल (सन् 1875 - 1940 ई०) कृत 'विष्णुप्रताप रामायण' अपना ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। पण्डित विष्णु कौल व्योस (अनन्तनाग, कश्मीर) गाँव के निवासी थे। इन का वास्तविक नाम पण्डित विश्वम्भरनाथ कौल था। विधिवत शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे सरकारी स्कूल में अध्यापक नियुक्त हुए। इनके आध्यात्मिक गुरु थे - महात्मा नारायण जू दर जिनसे उन्होंने शास्त्र, पुराण एवं उपनिषदों का ज्ञान प्राप्त किया। पण्डित विष्णु कौल को संस्कृत, प्राकृत, उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी भाषाओं के अतिरिक्त फ़ारसी भाषा पर भी विशेष अधिकार प्राप्त था जिसका प्रमाण हमें 'विष्णुप्रताप रामायण' की पाण्डुलिपि का अध्ययन करने से मिलता है। फ़ारसी भाषा में लिखी हुई उनकी चार रचनाओं की पाण्डुलिपियाँ उनके सुपुत्र पण्डित

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ओम्कार नाथ कौल ('विष्णुभवन'-हरिसिंह हाई स्ट्रीट, अमीराकदल, श्रीनगर - कश्मीर) के पास सुरक्षित थीं । ये रचनाएँ हैं :-

1/ दीवाने अनादिल

2/ बहरतवील अनादिल

3/ तरजी-बन्द

4/ इन्शाये अनादिल

फ़ारसी भाषा में पण्डित जी 'अनादिल' (अंदलीब का बहुवचन, - 'अंदलीब -बुलबुल) उपनाम से लिखते थे । इनके सुपुत्र स्वर्गीय पण्डित ओम्कार नाथ कौल से मुझे ज्ञात हुआ कि इन्होंने महाभारत का अनुवाद भी फारसी भाषा में किया था जो आज दुर्भाग्यवश अप्राप्य है ।

कश्मीरी भाषा में पण्डित विष्णु कौल ने 'विष्णु प्रताप रामायण' लिखा है । इस रामायण का रचनाकाल सन् 1909-1914 ई० है । 941 पृष्ठों का हस्तलिखित यह रामायण लगभग 3,000 चरणों में विभाजित है तथा इस के 347 अध्याय हैं । ये अध्याय मुख्य रूप से सात काण्डों में इस प्रकार विभाजित हैं :-

बाल कांड, बनवास कांड, लंका कांड, अयोध्या कांड, अश्वमेघ कांड, राजलोला कांड तथा वैकुंठ कांड, इसके अतिरिक्त बनवास कांड में ही किष्किंधा काण्ड का भी उल्लेख किया गया है । मंगलाचरणार्थ कवि ने रचना के आरम्भ में महागणेश, गुरु, निर्गुण ब्रह्म, शिव-पार्वती एवं राम-सीता की वन्दना पहले संस्कृत भाषा में और तत्पश्चात् कश्मीरी भाषा में की है । सर्वव्यापक परम ब्रह्म के सम्मुख नतमस्तक होते हुए कवि गुरुजनों के आशीर्वाद की जीवन

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

को महानतम उपलब्धि समझ कर इस प्रकार याचनारत दिखाई देते हैं :-

'नमामि श्री गणेशं च: नमामि त्वम् विनायकम्
नमामि सत्गुरुं ब्रह्म: नमामि सर्व व्यापकम्
नमस्ते पार्वती पुत्रं, पिता त्वाम् च महेश्वरम्
प्रिया हे श्री परमब्रह्म: नमस्ते तत विश्वम्भरम ।
नमामि सत्गुरुम परम पुरुषोतमम् ।
परिपूर्णम्, परमात्मकम, परमेश्वरम् ।
नारायणं श्री सत्गुरुम ।'[1]

प्रस्तुत रामायण में कवि ने बालकांड के अन्तर्गत राम के जन्म, बाल्य-काल तथा स्वयंवर की कथा को व्यापक रूप से लोक विश्वासों के साथ चित्रित किया है । जनकपुरी के लिए 'नरहित पुरी' शब्द का प्रयोग किया गया है तथा इस नगरी के अपार सौन्दर्य का वर्णन कवि ने विस्तार के साथ किया है । पुत्रियों के विवाह के अवसर पर विदाई-दृश्य को अंकित करते हुए कवि राजसी ठाट के साथ दाय-दहेज के विषय में इस प्रकार जानकारी देते हैं :-

--"जो कुछ उसके वश में था
जो कुछ था जग में उपलब्ध
जो कुछ संचित पूंजी थी
सोना, मोती, धन - दौलत
दिया दहेज में बेटी को

1- "विष्णु प्रताप रामायण" (पाण्डुलिपि), पृ0-2.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

निज राज पाट के साथ ।"[1]

वृद्धावस्था के कारण राजा दशरथ ने रामचन्द्र जी को अपना राज्य देने का निर्णय किया और सारे देश में राज्याभिषेक समारोह की तैयारियाँ होने लगी । समस्त अयोध्या नगरी में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी । अयोध्या वासियों के हर्षोल्लास का कोई तोड़ा नहीं । राम का राज्याभिषेक उनके जीवन की अविस्मरणीय घटना होगी फलतः अयोध्या वासी बड़े चाव से इस मंगलोत्सव को मनाने के हेतु प्रतीक्षारत दिखाई देते हैं । समारोह के हेतु चारों ओर साज सज्जा ‖सजावट‖ हो रही है :-

--"राजतिलक हो रामचन्द्र का
परम इच्छा थी सब की,
तीन लोक के देवता भी
तैयारी में व्यस्त मगन थे
भाँति भाँति की साज-सज्जा में
लीन थे सब जन,
राज महलों में हो रहा मुनक़्क़श ।"[2]
‖ मुनक़्क़श - नक़्क़ा निगारी ‖

1- ' यि केंह़ा ओस तस इमकान पानस
यि केंह़ा ओस तस हाज़िर जहानस
यि केंह़ा ओस तस राजस अन्दर सार
यि केंह़ा ओस तस सोन मोक्ति तय दयार
पनुन हयेथ राज सोरूई दाज दितुंस ।'
" विष्णु प्रताप रामायण" - ‖पाण्डुलिपि‖ पृ -55

2- ' यछान श्री रामचन्दरून राज सारी
त्रिकूटी देवताहन हिंज़ तैयारी
सजावट वारि वाराह कारखानन
मुनक्श यूथ करान शाहो मकानन ।'
- "विष्णु प्रताप रामायण " ‖पाण्डुलिपि‖ पृ0- 58.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

बनवास कांड में कवि ने उस हृदय विदारक घटना का विस्तार के साथ उल्लेख किया है जिसके परिणाम स्वरूप राम अपनी पत्नी सीता एवं अनुज लक्ष्मण के साथ वन चले जाते हैं । चौदह साल का वनवास पूरा करने तथा पितृ आज्ञा का पालन करने के हेतु राम नरवाद ‖निषाद‖ की नाव में बैठ कर नदी पार उतरे और दण्डक वन पहुँचे । इस वन्य प्रदेश के अद्भुत सौन्दर्य चित्र निर्वासित राज परिवार के सदस्यों को न केवल अपनी ओर आकर्षित करते हैं अपितु उनके श्रांत-क्लान्त मानस में भी रस घोल देते हैं :-

--'दण्डक वन में उपवन हैं कितने रस छलकाते
लजाता है इन्द्रपुरी का सौन्दर्य जहाँ
मुसकाते हैं फूल चतुरदिक्
खिल उठा है उपवन का जोबन,
चारो ओर बिछी हरियाली ।'[1]

कुछ समय के पश्चात् रामचन्द्र जी सीता और लक्ष्मण के साथ चित्रकूट पहुँच जाते हैं । कवि ने चित्रकूट के लिए 'चन्द्रकूट' नाम का प्रयोग किया है । यहाँ उन की भेंट गौतम, अगस्त्य, सुतीक्ष्ण तथा अत्र मुनि से होती है । यहीं श्रीराम के चरण स्पर्श से अहिल्या का उद्धार होता है । इसके पश्चात् मारीच की कथा का उल्लेख है और रावण द्वारा सीता हरण का करुणा-जनक प्रसंग कवि ने अत्यन्त कलात्मकता के साथ चित्रित किया है । रावण

1- ' दण्डक वनसई अन्दर कम बाग तय राग
इन्द्र लूकस थवान तिम बर जिगर दाग
गुलन गुलज़ार नई अन्दर बहारा
हरा हर ज़ोर तरफ़े सब्ज़ ज़ारा ।'
- "विष्णुप्रताप रामायण" ‖पाण्डुलिपि‖ पृ0- 62.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

के रावणत्व का शिकार होकर सीता लंका में पहुँचती है और देखते ही मन्दोदरी उसे पहचान लेती है । प्रस्तुत रामायण में सीता को मन्दोदरी के गर्भ से उत्पन्न उसकी पुत्री माना गया है । यही कारण है कि मन्दोदरी सीता को बेटी कह कर पुकारती है । राम और लक्ष्मण सीता की तलाश में किष्किंधापुरी पहुँचते हैं जहाँ उनकी भेंट अनुमान और सुग्रीव से होती है । राम निजी उद्देश्य की पूर्ति के हेतु छल द्वारा बाली का वध करते हैं । तीर लगने के पश्चात् बाली वास्तविकता को समझ लेते हैं और रामचन्द्र के प्रति अपना सर्वस्व समर्पित करते हुए प्राण त्याग करते हैं । प्राण त्याग से पूर्व वह अपनी पत्नी तारा और पुत्र अंगद को राम की शरण में सेवारत रहने का दृढ़ आदेश देते हैं । मरणासन्न बाली रामचन्द्र से यही विनती करते हैं कि :-

--'भक्त जनों पर दया है तेरी
शरणागत है अंगद, तारावती के संग
जगत्-रक्षक ! अंगद है दास तुम्हारा
क्षमा दान दे उसको प्रभु जो
हर हाल में वह दया-अभिलाषी ।'[1]

लंका कांड में रामचन्द्र और रावण (सत् और असत्) के मध्य हो रहे ज़बरदस्त युद्ध का वर्णन किया गया है । युद्ध में सत्य की विजय और असत्य की पराजय होती है । रावण अपने अहंकार में चूर था, उसे इस

1- ' दिवान छुक सारनी भक्तयन च़ मंगल
अंगुद तारावती रछिज़्येन खोरन तल
अंगुद छुई दास चोनुई श्रीजगतपाल
क्षमा तस प्यठ प्रभु जो कर बहरहाल ।'
- "विष्णुप्रताप रामायण" (पाण्डुलिपि) पृ०- 185.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

बात का अभिमान था कि वह अपराजेय है अतः उसका विनाश आवश्यक था और इस आवश्यकता की पूर्ति रामचन्द्र के द्वारा होती है । आज के युग में भी हमें ऐसे रावण दीख पड़ते हैं जो अपने अहंकार में चूर अन्याय और अत्याचार करना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं । प्रायः देखने में आता है कि आज मनुष्य निजी स्वार्थ से पीड़ित अपनी ही संकीर्णताओं में उलझा हुआ कराह रहा है । आज व्यक्ति के लिये सबसे बड़ी पहेली स्वयं उसका अन्तरतम है जहाँ जाने कितने रावण एक साथ युद्धरत हैं । जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आज वही सफल माना जाता है जो दूसरे की बुझी हुई चिता पर अपना महल बनाने में सक्षम हो । इसमें कोई सन्देह नहीं कि आज शत-प्रतिशत 'रावण का युग' है । इस युग में प्रभुत्व रावण का है जिसे गर्व था कि :-

--' मैं हूँ लंकापति रावण बलवान
मेरे सम्मुख तुच्छ है
सृष्टि के शेष प्रजापत
सारा जहान काँप रहा है मेरे भय से
बन्दी बनाया है मैं ने यमराज को ।'[1]

चौदह वर्ष की अवधि समाप्त होने के बाद रामचन्द्र अयोध्या लौट आते हैं जिसका वर्णन अयोध्या-कांड के अन्तर्गत किया गया है । धोबी और धोबिन का परस्पर झगड़ा और धोबी के व्यंग्य-कटाक्ष तथा रामचन्द्र को

1- ' ब् छुस लंकापती रावण ज़बरदस्त
प्रजापत राज़ि सारी मेयि निश पस्त
छु लरज़ह म्योन प्रथ तरफा जहानस
म्य छुम यमराज़ थोवमुत क़ैद खानस ।'
- " विष्णुप्रताप रामायण" -{पाण्डुलिपि} पृ0-278.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

इसको सूचना - सीता को घर से बाहर निकाल देने का कारण बन जाते हैं । गर्भावस्था में सीता को अकेले वन में छोड़ दिया जाता है । वाल्मीकि के आश्रम में वह जुड़वा बालकों (लव और कुश) को जन्म देती है । इस के पश्चात् अश्वमेध काण्ड के अन्तर्गत राजा रामचन्द्र के अश्वमेध - यज्ञ का वर्णन है । धार्मिक अनुष्ठान की पूर्ति के हेतु सोने की सीता बनाई जाती है और अश्वमेध का घोड़ा देश भ्रमण के लिये सेना सहित छोड़ा जाता है । अश्वमेध के घोड़े की साज-सज्जा का वर्णन कवि फ़ारसी मिश्रित उर्दू भाषा में इस प्रकार करते हैं :-

—'तिलाई साज़ से घोड़ा सजा कर
नकारो झंझ और बाजे बजा कर
जगत में घूमना घोड़े को यकसाल
बरस के बाद फिर आयेगा ख़ुशहाल
मुबारक काम है अश्वमेध का काम
कृपा ईश्वर करे पावेगा अंजाम
हुई चारों तरफ फूलों की बरखा
मुबारक देने आई कर्म-लेखा ।'[1]

(फ़ा०) - तिलाई - जिस पर सोने का काम हो

(फ़ा०) साज़ - घोड़े का सामान जैसे ज़ीन, लगाम, काठी आदि

(फ़ा०) यकसाल - एक वर्ष

(अ०) नक़्क़ारः- नगाड़ा

कर्म-लेखा- भाग्य, तक़दीर (मूल→(संस्कृत) - कर्म-लेखा

1- "विष्णुप्रताप रामायण" (पाण्डुलिपि) पृ०- 696.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

घोड़े को लव और कुश पकड़ लेते हैं और राम के कई सेना नायक और युद्ध वीर उनके साथ युद्ध करते हुए परास्त हो जाते हैं । स्वयं श्री रामचन्द्र युद्ध का संचालन करते हुए घायल हो जाते हैं और मूर्छित होकर गिर पड़ते हैं । दोनों बालक उनके मुकुट और शस्त्र लेकर आश्रम में लौट आते हैं । सीता यह सब देख कर तथा राम के मुकुट को पहचान कर घायल हिरनी के समान तड़प उठती है :-

---'जब देखा श्रीराम-मुकुट तड़प उठी सीता
गश खा कर गिर पड़ी भूमि पर अशान्तिक पीड़ा से
बाल नोचते फाड़ लिये वस्त्र
और लगी करने करुण विलाप
कलेजे पर चल रही थीं छुरियाँ
उसकी पीड़ा से तड़प तड़प कर मानो
मेघ बहा रहे हैं अश्रु, और
आकाश में तड़प उठी है बिजली
वेदना - विह्वल होकर ।'[1]

भगवान शिव की अमृत वर्षा से श्रीराम अपनी खोई हुई चेतना पुनः प्राप्त करते हैं और वाल्मीकि के आदेशानुसार सीता और बच्चों के साथ अयोध्या लौट आते हैं । एक सच्चे भक्त के रूप में पण्डित जी ने जन-श्रुति और लोक विश्वास के आधार पर राम-कथा को आगे बढ़ाया है ।

1.- ' वुछुन यति ताज श्रीरामुन वसिथ पेयि
गश्त अन्दर सतो सीता मरिथ गयि
चका चाकस करान सोय चाक चौकई
कलेजस आयि तस भरपूर श्राकई
तसुन्द विरलाप वुठि वुठि मेघ गिरियाँ
ब-आहो नालो वुज़मल द्रायि उरियाँ ।'

- ' विष्णुप्रताप रामायण' (पाण्डुलिपि) पृ0-78।-82.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

इसके पश्चात् राजलीला कांड में रामचन्द्र के शासन और अयोध्या की राज्य-व्यवस्था का वर्णन किया गया है। रामचन्द्र अपने पुत्रों (लव और कुश) और अपने भाइयों के पुत्रों (सुबाहु, जापकेतु, सुशील, पुष्कर, सुचेतना, चित्रांगद आदि) का विवाह रचाते हैं। इधर कौशल्या का देहान्त हो जाता है और उधर रामचन्द्र जी अपना राज्य अपने और अपने भाइयों को संतानों में बांट देते हैं। इसके पश्चात् रामचन्द्र अपनी पत्नी के साथ कश्मीर मंडल की यात्रा पर आते हैं तथा यहाँ के प्रसिद्ध तीर्थ-स्थानों की यात्रा करते हैं। वैकुण्ठ काण्ड में कवि ने राम की विभूतियों एवं सनातन धर्म की महिमा का गुणगान किया है। दुर्वासा मुनि का राम से मिलने आना तथा लक्ष्मण का सरयू में जल-समाधि लेना, राम और सीता का सरयू के तट पर प्राण त्याग करना तथा अन्य कई घटनाओं का उल्लेख इस काण्ड में किया गया है। अन्त में कवि ने पुनः अनेक लीलाओं तथा भक्तिपूर्ण गीतों से अपनी श्रद्धा के सुमन अपने आराध्य-देव के प्रति अर्पित किये हैं।

प्रस्तुत रामायण पर वाल्मीकि-रामायण का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है परन्तु गहन अध्ययन के आधार पर यह तथ्य स्पष्ट होता है कि कवि ने अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय नवीन प्रसंगों के चित्रण द्वारा दिया है एवं अनेक नवीन उद्भावनाएँ भी की हैं। पण्डित विष्णु कौल प्रथम कश्मीरी राम-भक्त कवि हुए हैं जिन पर तुलसी के 'रामचरितमानस' का प्रभाव भी देखने को मिलता है। महाराजा जनक के उपवन में राम और

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सीता को परस्पर भेंट, सीता स्वयंवर, सीता हरण, राम-रावण युद्ध तथा रावण की पराजय, अंगद-रावण संवाद तथा अन्य अनेक प्रसंगों के चित्रण में पण्डित जी ने महाकवि तुलसी के रचनात्मक कौशल से प्रेरणा ग्रहण की है।

प्रस्तुत रामायण में मुख्य कथा के साथ असंख्य प्रासंगिक कथाओं को सफल योजना की गयी है जिनका सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, पौराणिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से पर्याप्त महत्त्व है। राम के जन्म और विवाह से सम्बन्धित कथा, अन्धमुनि शाप, मंथरा द्वारा कैकेयी को बहकाना, राम वनगमन तथा दशरथ-मरण, शूर्पनखा विरूपन, अहिल्या-उद्धार, मारीच और बटायु की कथा, बाली वध एवं नल-नील तथा अंगद से सम्बन्धित कथा, त्रिजटा स्वप्न, विभीषण का राम से मिलना, सेतु बन्ध, शिवलिंग प्रतिष्ठा, अंगद का दूत बनना, लक्ष्मण मूर्च्छा, मेघनाद युद्ध, अग्निपरीक्षा, सीता त्याग, अश्वमेध यज्ञ तथा कश्मीर मंडल की तीर्थ यात्रा से सम्बन्धित कथा इस काव्य कृति को महाकाव्योचित आकार प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुई हैं। ये समस्त प्रासंगिक कथाएँ कहीं प्रत्यक्ष रूप में और कहीं अप्रत्यक्ष रूप में मुख्य कथा के साथ जुड़ी हुई हैं। इन कथाओं का कहीं न कहीं पौराणिक अथवा ऐतिहासिक आधार प्राप्त होता है। कई प्रासंगिक कथाओं को विश्वसनीय आधार प्रदान करने में कवि ने मौलिक उद्भावनाएँ भी की हैं। लक्ष्मण क्रोध [illegible] भरत के ससैन्य चित्रकूट आगमन पर], सीता हरण के अवसर पर अपार क्षोभ से पीड़ित लक्ष्मण - मूर्च्छा का प्रसंग, सेना-

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रशिक्षण, सुमित्रा का स्वप्न, राम के आदेश से लक्ष्मण का मृतप्राय रावण के सम्मुख जाकर ज्ञानोपदेश सुनना तथा रासलीला वर्णन इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। प्रस्तुत रामायण का प्रणयन कश्मीर के प्राकृतिक सौन्दर्य की पृष्ठभूमि पर हुआ है। रामायण का अध्ययन करने के बाद यह बात स्पष्ट होती है कि कवि ने कश्मीर के प्राकृतिक वैभव का भरपूर प्रयोग इस कलाकृति को सजाने-संवारने के हेतु किया है। प्रकृति के विभिन्न दृश्यों का अंकन करते समय कवि अपनी सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति के आधार पर दृश्य-चित्र अथवा काव्य बिम्ब को अत्यन्त कलात्मकता के साथ प्रस्तुत करते हैं :-

—'नरगिस गुले अन्नार के सम्मुख
मधु कलश लिये खड़ी है
झुला रहे हैं पंखा
चिनार के पत्ते, हर्षित हैं
सरो और इलमशाद के वृक्ष
बाँदियाँ हैं नादिया नहरें
मुसकाते हैं 'हिय'× और 'अच्छपोश'×
सुगन्धित हैं 'आखल'× और सुवासित 'मसवल'×
महक उठा है प्रकृति का कण-कण
लहराता जोबन उपवन का
बुलबुल के मीठे बोल, मानो छूट रहा है फ़व्वारा
सुगन्धित नाना रंगी फूल

× 'हिय'/हो - सफ़ेद या पीले रंग का एक फूल
× 'अच्छपोश' - सफ़ेद रंग का एक फूल - अच्छ - सं० स्वच्छ, निर्मल, स्फटिक
× 'आखल' - हल्के पीले रंग का एक वन्य पुष्प
× 'मसवल' - एक फूल का नाम, सं०- मधु + वल्लि

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कर रहे शृंगार चमन का ।'[1]

प्रकृति का दग्ध रूप भी देखने योग्य है । जब रावण छल से सीता को ज़बरदस्ती उठा कर आकाश पथ से लंका की ओर जाने लगा तो सीता के आर्तनाद के साथ साथ पक्षियों की विलाप-ध्वनि से समस्त वातावरण शोकाकुल हो उठा । कलियाँ मुरझा गईं और हरियाली जल उठी । चेतन प्रकृति के साथ साथ जड़ प्रकृति भी रावण के इस अन्याय पूर्ण कुकृत्य पर आँसू बहाने लगी :-

—'अश्रु बहाते जीव सभी व्याकुल परिलक्षित
शोकाकुल है कोकिल, जाने किस स्थिति में !
आकाश और पाताल में हाहाकार मचा है
लड़खड़ा रही है जिह्वा, वे मातम करते हैं
और जग सारा उस मातम में शोकाविष्ट है ।
नहीं दिखी मधुभाषी 'कस्तूर'* और 'पोशिनूल'*
दग्ध हो उठे हैं वृक्ष, फल-फूल और पत्ते
रो रही है पृथ्वी और उसके संग
हरियाली, वृक्ष, पत्थर और आकाश

1.- 'यम्बरज़ल प्यालि हथ ज़न गुलि अनारस
हवादारो छि गटि बर्गे चिनारस
खुशी सरवन ति शम्शादन छि बालान
रुठाह नदियन ति नहरन हिंज़ नज़ाकत
हिये पोशान ति अछि पोशान तरावत
मुअत्तर आरवल मलवल मुश्किदार
स्थावर जंगमत प्रथ तरफि गुलज़ार
ग़ज़ान फैव्वार ज़न आवाज़े बुलबुल
चमन अन्दर चमन ख़ुश रंगो बू गुल ।'
- 'विष्णुप्रताप रामायण' (पाण्डुलिपि) पृ -68

× 'कस्तूर' — कोयल के आकार का एक मधुर भाषी पक्षी ।
× 'पोशिनूल' - स्वर्ण-वर्ण का एक पक्षी ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

चल - अचल प्रकृति का मानो नाश हुआ है ।'[1]

पण्डित विष्णु कौल ने अपने रामायण में लोक-भाषा का प्रयोग मुख्य रूप से किया है । वे संस्कृत और फ़ारसी दोनों भाषाओं से पूर्ण परिचित थे अत: स्वाभाविक है कि दोनों भाषाओं का प्रभाव हमें रामायण की भाषा में देखने को मिलता है । लोकमानस में सगुण राम भक्ति की प्रतिष्ठा के हेतु उन्होंने समन्वयात्मक भाषा का प्रयोग भी किया है । शुद्ध लोक भाषा का व्यवहार उन्होंने बड़ी कुशलता और कलात्मकता के साथ किया है । यहाँ तत्सम से कहीं अधिक तद्भव शब्दों का सौन्दर्य काव्य पंक्तियों में खिल उठा है । सर्व सुलभ जन-भाषा-प्रयोग का एक उदाहरण देखने योग्य है :-

--भव मोहक वेशभूषा में अतिहर्षित हैं भरत जो
विष्णु रूप में जब देखा श्रीराम को
नत-मस्तक हुए सती सीता के पद कमलों पर
सच्चे मन से शरण हुए माता के सम्मुख
कृपा हो श्रीराम की जिस पर, क्या कुछ दूर है उससे ।'[2]

1- 'अछिव किनि जोव सारी ओसर छि हारान
दिवान तिम नालि कमितास हालि गू गू
नतथ आकाश तय पाताल हू हू
कलान ज़्यव छक, मलान तिम सूर मानस
वलान वेरागस अन्दर जहानस ।
न कुनि कस्तूर, न कुनि पोशिनूल
दज़िथ च्येसुति बहरसू फल त फूलि
वदान बुतरात कुलि कांट, कनि त आकाश
स्थावर जंगमस गोमुत हु ज़न नाश ।'
- "विष्णुप्रताप रामायण" -(पाण्डुलिपि) पृ०-180.

2- 'तेवान छुनि भरत जो क्या भंज़ जामन
बराबर होव तस वेशिख्य रामन

(शेष पृ०- 112 पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

संस्कृत गर्भित कश्मीरी भाषा का प्रयोग महाकाव्य में वहाँ देखने को मिलता है जहाँ कवि जीव, ब्रह्म, माया, जगत, भक्ति, ज्ञान एवं मोक्ष पर विचार करते हैं। अपने दार्शनिक विचारों की अभिव्यक्ति के हेतु एवं सगुण - निर्गुण भक्ति का निरूपण करते समय प्रायः उनकी भाषा संस्कृत गर्भित हो गई है। दर्शन एवं भक्ति से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दों का व्यवहार करते समय उन्होंने तत्सम शब्दों के लोक प्रचलित तद्भव रूपों को भी समान रूप से ग्रहण किया है। संस्कृत गर्भित कश्मीरी भाषा का एक उदाहरण द्रष्टव्य है :-

—' सत् को देखो, सनातन सत् को पहचानो
सदाचार से ही बुद्धि तथ्य तक जा पाती है
ज्ञान ज्योति जिसे सुलभ हो पूर्ण रूप से
कण-कण में परम ब्रह्म की दिव्य ज्योति पहचानेगा
ओ३म् की महिमा जानो, तत्-सत रूप पाओ गे
असत् जीव की होगी अधोगति, यह निश्चित है।'[1]

{पृ० 111 का शेष}
सती सीतायि पादन प्यठ परन प्यव
सत्तिच मातायि सत्तकिनि सूय शरण गव
कृपा करि राम यस तस निश छु क्या दूर।
- "विष्णुप्रताप रामायण" {पाण्डुलिपि} पृ०-509.

1-' वुछुन गछि सत्त, विचारून× सत सनातन
सत्तकि आचार× धर्मस बुअध× छि वातान
ज्ञानुक× गाश यस आसे बराबर
परमात्मन तमिस बासे चराचर
विचारून× ओ३म् तत्सत रूप हावे
असत् जीवन× अधूगांच× वातिनावे।'

× → तद्भव — तत्सम
- "विष्णुप्रताप रामायण" {पाण्डुलिपि} पृ०- 8.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पण्डित जी फ़ारसी भाषा के विद्वान थे । इसका प्रमाण हमें 'अनादिल' की फ़ारसी काव्य कृत्यों के गहन अध्ययन से मिलता है । प्रस्तुत रामायण में भी उन्होंने फ़ारसी शब्दों का प्रयोग खुल कर किया है । यह वास्तव में पण्डित जी पर फ़ारसी रज़्मिया-मस्नवी शैली का प्रभाव है । प्रस्तुत काव्य-बन्द में फ़ारसी-मिश्रित कश्मीरी भाषा का प्रयोग देखने योग्य है :-

— 'गुलो गुलज़ार गुलशन शोलिमारान
सदाए राम राम आबशारन
हंस सरखाब कम आवाज़ त्रावान
अजायब रक्स क्या ताऊस हावान ।'[1]

'गुल' - {फ़ा०} - पुष्प
'गुलज़ार' {फ़ा०} - वाटिका
'गुलशन' {फ़ा०} - उद्यान
'आबशार' {फ़ा०} - झरना
'सुखाब' {फ़ा०} - चक्रवाक, चकवा - चकवी
'अजायब' {अ०} - अद्भुत { अजीब का बहुवचन }
'रक़्स' {अ०} - नाच
'ताऊस' {अ०} - मयूर, मोर

कहीं कहीं पण्डित जी ने उर्दू-हिन्दी मिश्रित कश्मीरी भाषा का भी प्रयोग किया है । दंडक वन चित्रण, भरत द्वारा राम की वन्दना, सीता मन्दोदरी मिलन, अहिल्या-गौतम प्रसंग, रावण-मृत्यु तथा अन्य कई प्रसंगों का वर्णन कवि ने उर्दू-हिन्दी मिश्रित {खड़ी बोली} भाषा

1- "विष्णुप्रताप रामायण" {पाण्डुलिपि} पृ०- 554

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

में किया है । दंडक-वन का यह चित्रण इस दृष्टि से न केवल महत्त्वपूर्ण है अपितु आकर्षक भी :-

--'दण्डक वन खास कर बैकुण्ठ का धाम
परम आनन्दमय लक्ष्मण सियाराम
कभी गुलज़ार गुलिस्ताँ में उछलते
कभी बागो नयिस्ताँ में टहलते
कभी फूलों को सीता तोड़ लेती
कभी ×नसरीं को आदम जोड़ लेती ।'[1]

× 'नयस्ताँ' - (फ़ा०) - वन, जंगल
× 'निस्रीं' - (अ०) - एक फूल, तेवती

इस तथ्य को स्पष्ट करना आवश्यक है कि पण्डित जी पहले एक सच्चे भक्त थे और फिर एक सफल कवि । उनके भक्त हृदय की निश्छल अभिव्यक्ति प्रस्तुत रामायण के द्वारा हुई है । प्रत्येक काण्ड में मुख्य कथा के साथ-साथ अनेक लोकगीत, भजन एवं भक्तिपरक गीत जोड़ कर कवि ने अपने भीतरी विश्वास को साकार रूप प्रदान किया है । राम विष्णु के अवतार हैं और प्रकृति को आततायों के भार से मुक्त करने के हेतु नर-रूप में व्यक्त हुए हैं जीव और ब्रह्म के पारस्परिक सम्बन्ध को सही पहचान पाने के हेतु वे निरन्तर अपनी दीन-हीन दशा और अकिंचनता का उल्लेख करते हुए आत्म ज्ञान का प्रसाद पाने के हेतु लालायित दिखाई देते हैं । राम सगुण हैं, दशरथ सुत हैं और भक्त जनों के परित्राण हेतु लीला क्षेत्र में सक्रिय दिखाई देते हैं । उन्होंने दास्यभाव

1- "विष्णुप्रताप रामायण" (पाण्डुलिपि) पृ०- 20.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

को भक्ति को प्रमुखता दी है । राम-नाम महात्म्य, नाम स्मरण, सत्संग, इष्ट कृपा और अनुग्रह हो उनकी भक्ति के मूलाधार हैं । उन्हें दृढ़ विश्वास है कि :-

--' कलियुग में पार उतारें गे राम
मद, मोह और क्रोध के नाशक राम ।'[1]

इस प्रकार यह बात स्पष्ट होती है कि कश्मीरी भाषा के राम-काव्य के इतिहास में इस रचना का अपना ऐतिहासिक महत्त्व है ।

रामायण की पाण्डुलिपि फ़ारसी लिपि में लिखी हुई है और स्वयं कवि ने अपने हाथ से लिखी है । पण्डित जी ने इस महाकाव्य को लिपिबद्ध करने के लिए सब से बढ़िया कागज़ और स्याही का प्रयोग किया है । काली चमकदार स्याही से कवि ने इस महाकाव्य को लिखा है । प्रत्येक चौपाई के मध्य उन्होंने 'ओ३म्' शब्द लिखा है । इस शब्द को लाल रंग की स्याही से लिखा गया है । इस प्रकार रामायण का प्रत्येक पृष्ठ अत्यन्त आकर्षक एवं प्रभावोत्पादक बन पड़ा है । उस समय के प्रसिद्ध डोगरा शासक महाराजा प्रताप सिंह के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए कवि ने प्रस्तुत महाकाव्य का नाम 'विष्णुप्रताप रामायण' रखा है । महाराजा प्रताप सिंह अत्यन्त साधु प्रकृति के सच्चे राम भक्त थे । कवि ने उनके नामवाची शब्द प्रताप' के साथ

1- ' कल जुगस अन्दर छु तारुन राम
मदस मोहस त क्रूधस मारुन राम ।'
- " विष्णुप्रताप रामायण" (पाण्डुलिपि) पृ०-20.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अपने नाम का प्रथम शब्द अर्थात् 'विष्णु' जोड़ कर एक नये संयुक्त-शब्द की रचना करके रामायण का नाम 'विष्णु प्रताप' रखा है। पण्डित ओ३म्कार नाथ कौल (पण्डित विष्णु कौल के सुपुत्र) अपने जीवन काल में इस रचना को प्रकाशित नहीं करा सके। कई संस्थाओं ने इस विषय में उनके साथ कई बार सम्पर्क स्थापित किया परन्तु बात बन न सकी। स्वयं उन्हें पैसों की कोई कमी नहीं थी। वे चाहते तो इसके प्रकाशन की व्यवस्था बड़ी सुविधा के साथ करा सकते थे। यदि कोई कमी थी तो केवल दृढ़ निश्चय की। व्यक्तिगत रूप से मेरी बात-चीत स्वर्गीय श्री ओ३म्कार नाथ कौल के साथ कई बार हुई है। मेरा अनुरोध था कि वे इस पाण्डुलिपि को जम्मू-कश्मीर कल्चरल अकादमी के भूतपूर्व सचिव श्री मुहम्मद यूसुफ टैंग के हवाले कर दें क्योंकि आज भी मेरा दृढ़ विश्वास है कि वे इसके प्रकाशन की समुचित व्यवस्था अकादमी की ओर से करवा देंगे। लेकिन कौल साहब इस बात के लिये तैयार नहीं हुए। उन्हें रामायण की पाण्डुलिपि के साथ मोह सा हो गया था। अपने पूर्वजों की अनमोल थाती समझ कर वे किसी भी हालत में इसे किसी दूसरे व्यक्ति अथवा संस्था के हवाले (सुपुर्द) नहीं करना चाहते थे। परिणाम यह हुआ कि आज इस महाकाव्य की पाण्डुलिपि सिंगापुर पहुँच गई। मैंने उन्हें यह भी सलाह दी थी कि वे इस महाकाव्य की पाण्डुलिपि को कश्मीर विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, जहाँ इस पर शोध-कार्य हुआ था, अथवा कश्मीरी-विभाग के हवाले कर दें लेकिन

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

यह सुझाव मानने में भी उन्होंने अपनी असमर्थता व्यक्त की । आवश्यकता इस बात की है कि इस महाकाव्य के प्रकाशन की अविलम्ब व्यवस्था की जाए । रचना का मूल पाठ पाठकों एवं शोधकर्ताओं को उपलब्ध होगा । अध्ययन सम्बन्धी नवीन सम्भावनाओं की तलाश शुरू होगी, तुलनात्मक दृष्टि से कश्मीरी राम-काव्य पर विचार किया जायेगा । सम्भव है कि कुछ नवीन तथ्य प्रकाश में आ जायें और कश्मीरी राम-भक्ति-काव्य के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ जाये ।

- 0 -

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

:: खण्ड - दो ::

आधुनिक कश्मीरी काव्य में धर्म, दर्शन एवं भक्ति

(I) लीला एवं भक्ति-काव्य

(अ) लक्खन (लक्ष्मण) ज़ू रैणा 'बुलबुल' (सन् 1826-1898 ई०)
(आ) कृष्ण ज़ू राज़दान - (सन् 1850 - 1926 ई०)

(II) आध्यात्मिक चिन्तन / विचार प्रधान काव्य एवं भक्ति में 'लोल' का महत्त्व

(अ) मास्टर ज़िन्दा कौल (सन् 1884 - 1966 ई०)

(III) सूफ़ी काव्य

(अ) समद मीर - (सन् 1892-94 - 1959 ई०)
(आ) अब्दुल अहद ज़रगर - (सन् 1909 - 1983 ई०)

(IV) नात एवं मुनाजात

(अ) अब्दुल अहद नादिम - (सन् 1838-40 - 1911 ई०)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

---

(I) लीला एवं भक्ति - काव्य

(अ) लांखमन (लक्ष्मण) जू रैणा 'बुलबुल' (सन् 1826-1898 ई०)

1- जीवन चरित : कुछ भ्रान्तियाँ
2- कृतित्व
3- सगुण भक्ति में माधुर्य रस : कृष्ण काव्य
4- रास लीला एवं गोपी प्रेम
5- शिव - लीला
6- विचार प्रधान कविताएँ
7- प्रबन्ध रचनाएँ

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आधुनिक कश्मीरी साहित्य के इतिहास में 19वीं शताब्दी के कृष्ण भक्त कवियों में पण्डित लक्ष्मण जू रैणा 'बुलबुल' अपनी बहुमुखी सर्जनात्मक प्रतिभा के आधार पर पर्याप्त ख्याति रहे हैं। लक्ष्मण जू के पूर्वज मलपोरा (बानमुहल्ला) श्रीनगर के रहने वाले थे और यहाँ उनका जन्म सन् 1812 ई० (?) में हुआ था।[1] इनके पिता का नाम था -

---

1- (अ) 'बुलबुल' की जन्मतिथि के विषय में मतैक्य नहीं है। प्रो० मुही-उ-द्दीन हाजिनी ने 'कॉशिर शाइरी' नामक काव्य-संग्रह में उनका जन्म सन् 1812 ई० माना है।
(देखिये - "कॉशिर शाइरी" -सम्पादक प्रो० मुही-उ-द्दीन हाजिनी - साहित्य अकादमी दिल्ली प्रकाशन - सन् 1960 ई० पृ०-83)

(आ) स्वर्गीय अब्दुल अहद 'आज़ाद' ने 'कश्मीरी ज़बान और शाइरी' नामक पुस्तक के द्वितीय भाग में लिखा है कि '72 साल की आयु पाकर दो दिन मामूली बीमार होकर संवत् 1942 वि० को स्वर्गवास हुए।' इस आधार पर भी उनका जन्म सन् 1812 ई० के आस पास माना जायेगा।
(देखिये - "कश्मीरी ज़बान और शाइरी" -भाग-2 - अब्दुल अहद आज़ाद - जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन, सन् 1962 ई० पृ०- 326.

(इ) इधर श्री मोतीलाल साक़ी को खोज के आधार पर उनका देहान्त संवत् 1955 वि० में हुआ था। साकी जी को गणना को ध्यान में रख कर उनका जन्म संवत् 1883 (सन् 1826 ई०) के आस पास माना जायेगा।
(देखिये - "आँकवन" - मोतीलाल साक़ी - प्रकाशक हल्का अदब सोनवारी हाजिन, सन् 1975 ई० - पृ०- 39.)

(ई) डा० शशिशेखर तोषखानी ने भी स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि 'बुलबुल' का देहान्त संवत् 1955 वि० (सन् 1898 ई०) में हुआ है।
(देखिये - "कश्मीरी साहित्य का इतिहास" -डा० शशिशेखर तोषखानी- जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन वर्ष 1985 ई० पृ०- 118 तथा 187.)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सुन्दर जू राज़दान जो स्वयं एक जाने माने विद्वान थे। पण्डित लक्ष्मण जू रैणा 'बुलबुल' का 'कौल' वंश अथवा दत्तत्रेय गोत्र से कोई सम्बन्ध नहीं है। इनका कुलनाम ‖Surname‖ है -'राज़दान'। इस संदर्भ में सर्वश्री प्रो० जे० एल० कौल, मोतीलाल साक़ी, नाजो मुन्नवर, शफ़ी शौक़, डॉ० शिबन कृष्ण रैणा एवं कृष्ण लाल माहनूरी एक मत हैं। इस तरह की भ्रान्ति 'आज़ाद' के इतिहास से शुरु हुई और चन्द परवर्ती लेखकों ने 'आज़ाद' का अन्धानुकरण करना अपना धर्म समझा। कौल वंशी कश्मीरी ब्राह्मणों का गोत्र दत्तात्रेय है जबकि राज़दान वंशी कश्मीरी ब्राह्मणों के गोत्र का सम्बन्ध कई ऋषियों से है जिन में गौतम, कश्यप, धौम्य एवं मुद्गल - उल्लेखनीय हैं। परवर्ती काल में 'राज़दान' कुलनाम धीरे धीरे 'रैणा' में परिवर्तित/विकसित हुआ।[1]

लक्ष्मण जू की आरम्भिक शिक्षा मदरसे से शुरु हुई जहाँ उन्हें फारसी भाषा और साहित्य की प्रारम्भिक जानकारी प्राप्त हुई। अपने

1- 'कश्मीरी ब्राह्मण 199 गोत्रों में विभक्त हैं और इनका मानना है कि जिन ऋषियों और पहुँचे हुए सिद्ध-जनों से कश्मीरी ब्राह्मणों का विकास हुआ उन्हीं के नाम पर विशिष्ट गोत्र अथवा वंश का नाम भी चल पड़ा है। ये गोत्र तीन मुख्य वर्गों में विभाजित है -- भट्ट, पण्डित और राज़दान और इन्हीं से विशिष्ट वंशों के नाम क्रमशः कौल, लोपोरी पण्डित एवं रैणा विकसित हुए हैं।'

" दि कश्मीरी पण्डित " - पण्डित आनन्द कौल, प्रकाशक - थैकर, स्पिंक एण्ड कम्पनी, कलकत्ता सन् 1924 ई० पृ०- 19-20.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

बेटे को संस्कृत पढ़ाने के हेतु सुन्दर भू ने समुचित व्यवस्था की और धीरे-धीरे उन्हें वेद, शिक्षा-शास्त्र, ज्योतिष एवं आयुर्वेद की भी सम्यक् जानकारी प्राप्त हुई ।[1] शिक्षा-प्राप्ति के बाद कुछ समय तक मलमोरा में दुकान चलाते रहे । पिता के देहान्त के बाद उनके जीवन में विरक्ति की काल-घटा छा गई । घर से बेघर हुए । दो वर्षों तक भारत के कई शहरों में भटकते रहे - विशेष कर मथुरा में जहाँ उन्होंने ब्रज भाषा की जानकारी प्राप्त की । कश्मीर वापस लौटने पर नागाम (तहसील वाडूरा, ज़िला बड़गाम - कश्मीर) में उनकी नियुक्ति कूटयाल[2] के पद पर हुई । वे स्थायी रूप से नागाम में रहने लगे और यहीं पर उनकी पहली शादी हुई । एक हृदय विदारक दुर्घटना में पत्नी की अकाल मृत्यु ने 'बुलबुल' को जीवन के प्रति निराशा कर दिया । घर उजड़ने के बाद वे विरक्त होकर साधु-सन्यासों के संग रहने लगे और भटकते भटकते पहले गौतमनाग और फिर मटन पहुँच कर स्वामी नन्दराम उर्फ़ परमानन्द के आश्रम में पहुँचे । स्वामी जी ने उन्हें फिर गृहस्थ बन कर जीवन जीने के लिए प्रेरित किया । नागाम में ही उनका दूसरा विवाह हुआ ।

1- " सोन अदब" - जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - 'बुलबुल' नागामि - मोतीलाल साक़ी - पृ0- 12.

2- 'कूटयाल' कश्मीरी भाषा का शुद्ध शब्द है । इसका प्रयोग कोठारी (भण्डारी) के लिये किया जाता है । कई कश्मीरी पण्डितों में यह शब्द कुलनाम (surname) के साथ जुड़ गया गया है । कोठारी के लिए 'कुठियाल' शब्द का प्रयोग सही नहीं है । 'कुठिया' शब्द का अर्थ छोटा कुठला (मिट्टी का गहरा छोटा बरतन) है ।

— लेखक —

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

'बुलबुल' पुनः गृहस्थ आश्रम में लौट कर सुखद जीवन जीने लगे । कुछ समय के पश्चात् इनके पुत्र शिव जी का जन्म हुआ और तत्पश्चात् उनकी पुत्री जिस का मायके (नैहर) का नाम था - ज़ूपिर और ससुराल का नाम था - रिखमाल, का जन्म हुआ । स्वर्गीय अब्दुल अहद 'आज़ाद' ने अपने इतिहास में उस दुखद घटना का विस्तार से उल्लेख किया है जिसके परिणामस्वरूप 'बुलबुल' को अपने युवा पुत्र से हाथ धोना पड़ा और वे आजीवन पश्चाताप की अग्नि में पोर-पोर और अंगुल अंगुल गलते-जलते रहे ।[1] पुत्र-शोक ने उन्हें गार्हस्थिकजीवन के प्रति विरक्त कर दिया और वे पुनः साधु-सन्तों की संगत में रहने लगे । गटन जा कर परमानन्द की शरण में आये और उनकी ज्ञान गरिमा से प्रभावित होकर उनका शिष्यत्व ग्रहण किया । कृष्ण के प्रति उनके अनन्य अनुराग को परिपुष्ट करने में परमानन्द का पर्याप्त योगदान रहा है । आगे चल कर यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि 'बुलबुल' की दिव्य दृष्टि एवं आध्यात्मिक शक्ति से प्रभावित होकर कई भक्त जन उनकी शरण में आये और इस प्रकार यह शिष्य परम्परा आगे बढ़ती और पनपती रही । मृत्यु से पूर्व उन्होंने एक लीला लिखी जिस की अन्तिम काव्य-पंक्ति से उनकी मरण-तिथि का बोध होता है । काव्य पंक्ति इस प्रकार है :-

' कि ज़ेरि पाये अफू - ए राम जो आमद शरण 'लांखमन'

1- "कश्मीरी ज़बान और शाइरी" -भाग-2, -अब्दुल अहद 'आज़ाद' - जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - सन् 1962 ई० पृ०- 327.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

इस काव्य-पंक्ति में से 'कि' शब्द काट कर, जिसका निर्देश स्वयं कवि ने दिया था, उनकी मरण-तिथि की गणना की जाती है। नवीनतम अनुसन्धान के आधार पर इस विषय में श्री मोतीलाल साक़ी का निष्कर्ष अधिक संगत दिखाई पड़ता है।[1]

1- (अ) स्वर्गीय अब्दुल अहद आज़ाद ने इस काव्य पंक्ति से 'कि' काट कर गणना करके 'बुलबुल' का मरण-काल संवत् 1942 वि० (1885 ई० माना।

(आ) श्री ग़ुलाम नबी ख़याल, जिन्होंने 'बुलबुल' की रज़्मिया मसनवी 'सामनाम्भि' का सम्पादन किया है, 'बुलबुल' का मरण काल संवत् 1942 वि० मानते हैं।

(इ) श्री मुही-उ-द्दीन 'हाजिनी' ने 'कोशिर शाइरी' में सन् 1884 ई० को 'बुलबुल' का देहान्त वर्ष माना है जो 'आज़ाद' और ख़याल की गणना के बहुत क़रीब है।

(ई) इधर श्री मोतीलाल साक़ी 'बुलबुल' द्वारा कही गई काव्य पंक्ति (कि ज़ेरि पाये अफ़ू - ए - - - -) की गणना करके इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि 'बुलबुल' का देहान्त संवत् 1942 वि० के बदले संवत् 1955 (1898 ई०) में हुआ है। उनका कहना है कि 'आज़ाद' और 'ख़याल' की गणना सही नहीं है। वे अपनी गणना के प्रामाणिक होने के पक्ष में एक सशक्त प्रमाण यह देते हैं कि 'नल-दमयन्ती' खण्ड-काव्य के अन्त में 'बुलबुल' उस के रचना-काल का संकेत निम्न लिखित काव्य पंक्तियों के द्वारा करते हैं :-

—' पये तारीख़-ई सरताज़ि गुलज़ार
गुले संवत् ज़ि बाग़ि ख़ादिली ज़ार।

'बाग़ि ख़ादिली ज़ार' की गणना करने पर 'नलदमयन्ती' का रचना काल संवत् 1953 वि० आता है। अतः संवत् 1942 वि० में उनका देहान्त कैसे हुआ ? 'साक़ी' ने अपने पक्ष में कई अन्य तर्क भी प्रस्तुत किये हैं।

('सोन अदब' - जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन सन् 1965 ई० 'बुलबुल नामामि - मोतीलाल साक़ी पृ०-14)

(उ) इस गणना के आधार पर 'बुलबुल' की जन्म तिथि में भी लगभग 14 वर्षों का अन्तर आ जायेगा। 'आज़ाद' ने लिखा है कि

(शेष पृ०-1 पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

'बुलबुल' की प्रतिभा बहुमुखी थी। उनके समस्त कृतित्व को प्रबन्ध और मुक्तक के आधार पर मुख्यत: दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। कृष्ण भक्त कवि के रूप में 'बुलबुल' ने कई भक्ति परक गीत, लोलाएँ एवं भजन-स्तुतियाँ लिखी हैं जिन में सर्वत्र उनका भक्त-हृदय रस छलकाता मुखर हो उठा है। श्री कृष्ण 'बुलबुल' के मुख्य आराध्य हैं लेकिन साथ ही उन्होंने निर्गुण निराकार ब्रह्म के प्रति भी अपना आकर्षण व्यक्त किया है और अन्य देवी देवताओं के प्रति भी नत-मस्तक होकर श्रद्धा - सुमन अर्पित किये हैं। इस दृष्टि से वे एक समन्वयकारी भक्त-कवि हैं।

जहाँ एक ओर 'बुलबुल' ने अध्यात्म ज्ञान, दिव्यानुभूति, आत्मानन्द एवं परमब्रह्म के दिव्य स्वरूप के प्रति अपना आकर्षण व्यक्त किया है वहाँ दूसरी ओर उन्होंने संसार की असारता, जीवन की क्षण भंगुरता मृत्यु-भय तथा सांसारिक माया मोह के छलमय बन्धनों के प्रति भी अपने हृदय की अकुलाहट व्यक्त की। इस प्रकार जीव, जगत और ब्रह्म से सम्बन्धित नाना विषयों पर चिन्तन-प्रधान भक्त-कवि 'बुलबुल' ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किये हैं।

'बुलबुल के काव्य गुरु परमानन्द थे। परमानन्द द्वारा लिखित

{ पृ० । का शेष }

'बुलबुल' 72 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हुए। यदि 72 वर्ष की आयु में 'बुलबुल' संवत् 1955 वि० में स्वर्ग सिधारे तो उनका जन्म संवत् 1883 वि० {सन् 1826 ई०} में हुआ होगा। —लेखक—

{ऊ{श्री जे० एल कौल ने 'बुलबुल' का देहान्त वर्ष 1897 ई० माना है जो 'साक़ी' की गणना के बहुत क़रीब है।
{ 'स्टडीज़ इन कश्मीरी' - जे० एल० कौल - प्रकाशक कपूर ब्रदर्स, श्रीनगर - सन् 1968 ई० - पृ०- 174. }

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

'राधास्वयंवर' प्रबन्ध रचना का कुछ भाग 'बुलबुल' ने भी लिखा है।[1] इस कथा-काव्य में 'मोहिनी रूप खण्ड' से 'बुलबुल' का मधुर कंठ मुखर हो उठा है। इस बात का स्पष्ट उल्लेख स्वर्गीय प्रो० श्री कंठ तोशखानी एवं श्री मोतीलाल साक़ी ने 'राधास्वयंवर' का सम्पादित रूप प्रस्तुत करते हुए 'परमानन्द' भाग-2 में किया है।[2]

1- 'इस विषय में दो मत हैं। अधिकांश विद्वानों को यह मान्यता है कि परमानन्द के जीवन काल में ही 'बुलबुल' ने 'राधास्वयंवर' के कुछ अंश लिखे जिन्हें देख कर परमानन्द बेहद प्रभावित हुए थे। दूसरी मान्यता यह है कि परमानन्द 'राधास्वयंवर' को अपने जीवन काल में पूरा न कर सके अतः उनके देहान्त के बाद उनके प्रिय शिष्य 'बुलबुल' ने इस रचना को पूरा किया। परमानन्द का देहान्त संवत् 1936 वि० में हुआ और 'बुलबुल' उनके देहान्त के बाद 19 वर्षों तक जीवित रहे। सम्भव है परमानन्द की अपूर्ण रचना को पूरा करके 'बुलबुल' ने अपने गुरु के प्रति ऋण होने का प्रयास किया हो लेकिन इस बात का आज हमारे पास कोई ठोस प्रमाण नहीं है। वस्तुतः प्रचलित रिवायत ‖ दूसरे के शब्द दोहराना ‖ के आधार पर ऐसा कहा जाता है लेकिन शोध में रिवायत अपना महत्त्व खो देती है।'

— लेखक —

2- 'परमानन्द' भाग-2 - सम्पादक - प्रो० श्रीकंठ तोशखानी तथा मोतीलाल साक़ी - जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन, सन् 1974 ई०, पृ०- 24 तथा पृ०- 168.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

'बुलबुल' के कृष्ण काव्य में माधुर्य रस प्रधान रचनाओं के साथ-साथ वात्सल्य रस प्रधान रचनाएँ भी देखने को मिलती हैं । लेकिन बाल कृष्ण की अपेक्षा गोपियों के साथ केलि क्रीड़ा में रत चितचोर कृष्ण ने उन्हें अधिक मोह लिया है । इन लीलाओं में 'वथिवी सखियव सखरिवि वन कृष्ण दर्शुन कांरवी लोलो' पर्याप्त चर्चित लीला रही है । मिलन हेतु अधीर और आतुर गोपियाँ हर उस क्षण के तलाश में रहती हैं जिस क्षण मनमोहन की मोहक छवि को निहार कर वे अपनी प्यास बुझा सकें । बाँसुरी की मधुरतान मानो गोपियों को कृष्ण के वन-गमन की सूचना देती है । वे परस्पर एक दूसरे को वन जाने के लिये तैयार कर रही हैं क्योंकि निर्विघ्न रूप से प्रियतम की रूप छवि का अमृत-पान करने की सम्भावना वन में ही तो है । गोवर्धन धारी नन्दलाल दर्शन सुख से गोकुलवासियों को प्रसन्न करेंगे । गोपियाँ इस अवसर को किसी भी तरह खोना नहीं चाहती :-

--'उठो सखियो ! तैयारी कर लो वन जाने की
कृष्ण - दर्शन होंगे
मुरली नाद पर ध्यान धरो
कृष्ण-दर्शन होंगे
नन्दलाल धारण करें गे गोवर्धन
प्रसन्न होंगे गोकुल वासी
लक्ष्मण (कवि) पायें गे परमानन्द

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कृष्ण दर्शन होंगे ।'[1]

आज इन्द्र लोक भी वृन्दावन की बराबरी में ठहर नहीं सकता क्योंकि सैलानी प्रिय वृन्दावन में क्रीड़ा मग्न हैं । उस की छवि देखते ही बनती है । मोहित गोपियाँ स्वेद कणों से अलंकृत उसी मुखाकृति पर तो निछावर हैं । वह मस्तानी चाल तो गोपियों को अधीर बना देती हैं । 'सैलि मोत म्योन' (सैलानी प्रिय, मेरे) शब्द का प्रयोग मनमोहक कृष्ण के सन्दर्भ में अत्यन्त सार्थक एवं प्रभावशाली बन पड़ा है । ऐसा देखने में आता है कि लोलाओं में किसी विशेष शब्द, शब्द-खण्ड अथवा मुहावरे के प्रयोग से एक समाँ बन्ध जाता है जिस में भक्त-जन/प्रेमी लीन होकर रस छलकाते हृदय के साथ पूर्ण तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं । अग्र वर्णित लीला में 'बुलबुल' भाषा प्रयोग की असाधारण क्षमता से तड़पा देने वाली स्थितियों के चित्रांकन में पर्याप्त सफल हुए हैं :-

--'श्याम चले प्रातः कलेजा मुँह को आता है
चरण चूम लूँ प्रेमावेश में, कृष्ण दर्शन होंगे
भाग्यशाली क्या वृन्दावन लज्जित है इन्द्रलोक भी
क्रीड़ा मग्न वहाँ हैं प्रिय सैलानी, कृष्ण दर्शन होंगे ।'[2]

1- 'वथिवो सखियव सखरिवि वन कृष्ण दर्शुन कारवो लो लो
स्वर मोरली थारिव कन कृष्ण दर्शुन कारवो लो लो ।
नन्दि लालि धरि गोवर्धन गोकुलि क्यन करो परसन
परमानन्द प्रावि लांखमन कृष्ण दर्शुन कारवो लो लो ।।'
- "परमानन्द" भाग-2, 'राधास्वयंवर' पृ0- 93-97.

2- 'श्याम नोरिथ गोम सुबहन दुबि वांलिंज छम फेरन
दुबि वन्दसे मोनि पादन, कृष्ण दरशुन कारवो लो लो ।
भाग्य बोड क्या छु बिन्दराबन यन्द्रलूकस युस छु गेलन
मांलि मोत म्योन ततो सैलन, कृष्ण दरशुन कारवो लो लो ।'
- "परमानन्द" भाग-2, 'राधास्वयंवर' पृ0- 94 तथा 97.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्राण प्रिय की मुखाकृति तो गोपियों के लिए जान लेवा है, वे उसके अंग-अंग की छवि से न केवल उत्तेजित हो उठती हैं अपितु अधीर भी । पद्म-पुष्प सदृश मुख मुद्रा और कुंज बिहारी की मस्तानी चाल तो उन्हें बरबस अपनी ओर आकर्षित करती हैं । यह वस्तुत: भक्त का आकर्षण अपने इष्ट के प्रति है, यह आकर्षण माधुर्य रस से सराबोर है और कवि इसी माधुर्य रस का पान करता हुआ अपने इष्ट को मनमोहक रूप में ही देखने के लिए लालायित दिखाई देते हैं । सखि-भाव की भक्ति का उत्कृष्ट रूप यह है जहाँ भक्त अपने इष्ट के साथ समभाव से मैत्री सम्बन्ध जोड़ कर निस्संकोच अपने भीतर की इच्छाओं को अभिव्यक्ति प्रदान करता है । भक्त के लिए कृष्ण का आनन्दमय रूप ही सब कुछ है । उसे यशोनन्दन की मुखाकृति में ही सहस्रों सूर्यों के तेज का आभास होता है । तन्मय होकर सखियाँ वन जाने की तैयारी में हैं क्योंकि कुंजबिहारी के दर्शन-सुख का आनन्द और कहीं उपलब्ध नहीं हो सकता । भक्त एकाग्र मन से अपना सम्पूर्ण ध्यान अपने इष्ट में ही केन्द्रित करता है । प्रकृति की शेष विभूतियाँ उसके लिए तुच्छ हैं । यहाँ मोक्ष-प्राप्ति का उतना महत्त्व नहीं जितना दर्शन सुख का । कृष्ण की मुख छवि को देखने और निहारने में जो सुख है तथा उसका सामीप्य पाने में जो आनन्द है वह और कहीं नहीं उपलब्ध हो सकता । यही कारण है कि गोपियाँ आकुल-व्याकुल एक दूसरे को बुलाती-पुकारती वन जाने के लिए उतावली दिखाई देती हैं :-

--' उठो सखियो ! तैयारी कर लो वन जाने की

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कृष्ण दर्शनि होंगे ।
कँवल सदृश है मुखाकृति
सुध छीन ली भँवरे ने, ‖ है मस्तानी चाल ‖
गले में हैं पुष्प मालाएँ वे कुंजबिहारी
कृष्ण दर्शनि होंगे ।
क्या शोभा देता सीस मुकुट !
ज्ञानेन्द्रियों में प्रज्वलित, अन्धकार में प्रकाश सदृश
सहस्र भास्कर तेज है उन में
कृष्ण दर्शनि होंगे ।"[1]

आज ग्वाल बालाओं को अपने आप पर वश नहीं । सब कुछ त्याग कर वे कृष्णानुराग में अपना सर्वस्व भेंट कर चुकी हैं । उन्हें अटूट विश्वास है कि वे न केवल पालन हार हैं अपितु तारन हार भी हैं । वे कृष्णानुराग में मतवाली हैं । कृष्ण ही उनके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि होगी जिसे पाने के लिये वे अपना सर्वस्व दाँव पर लगाने के लिए दृढ़-संकल्प दिखाई देती हैं । वस्तुतः भक्त में जब तक इस प्रकार विश्वास की दृढ़ता नहीं होगी, सब कुछ खो कर भी कुछ पाना सम्भव नहीं होगा । उन्हें लोक लाज का कोई डर नहीं वे इस भौतिक जगत के मायावी मोह-जाल में न फंस कर कृष्ण प्रेम के आकर्षण में बन्ध जाती हैं । उस आनन्दावस्था को पाने के हेतु भक्त तन्मय होकर अपने इष्ट की मधुर

1- 'वथिवी सखियव सखरिवि वन कृष्ण दर्शुन कांरवी लो लो
मोखि ड्यूंठुम पम्पोश ज़न रोशि न्यूनम होश बोम्बरन
नांल पोशिमालि वांलि गोशन कृष्ण दर्शुन कांरवी लो लो
शोरि मुकट क्या छु शूभन गटिमंज़ गाश यन्दि तारन
सास बास्कर तीज़ बासन कृष्ण दर्शुन कांरवी लो लो ।'
- "परमानन्द" भाग-2, 'राधास्वयंवर' पृ0- 94.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

छवि में सदा के लिए लीन हो जाता है । यह लयावस्था न केवल अद्भुत है अपितु सम्पूर्ण जगत को आनन्दमय रूप में देखने की एक दिव्यानुभूति है जिस पर साधक जिन्दगी की तमाम खुशियाँ निछावर करने के लिए तैयार रहता है । ग्वाल-बालाएँ कृष्ण-प्रेम में उन्मत्त हो उठी हैं । सत्यवादी साधु सन्तों के समान वे लक्ष्य-प्राप्ति के हेतु पगला उठी हैं । उन्हें और कुछ नहीं चाहिए । ज्ञान के शुष्क रेगिस्तान से उनका कोई सम्बन्ध नहीं । उन्होंने तो प्यार किया है और उसी प्यार में वह सब कुछ खो कर कुछ पाने की बलवती इच्छा के सहारे जीवित रहने का उपक्रम कर रही हैं । प्रिय की अद्भुत छवि को निकट से देखने के हेतु मोहित गोपियाँ बेचैन हैं । इस छवि के सम्पर्क में आकर भक्त को परमानन्द की दिव्यानुभूति का एहसास होने लगता है । तिस पर यदि कास्तुभ मणि धारण किये कोई कुंज बिहारी प्रकृति के सौन्दर्य को द्विगुणित कर रहा हो तो क्या कहने । बड़े बड़े ज्ञानी महापण्डित भी अपनी ज्ञान गरिमा और तर्क बुद्धि के आधार पर उस अलौकिक दृश्य की तार्किक व्याख्या करने में असमर्थ रह जाते हैं । वस्तुतः यह एक दिव्यानुभूति है जिसे अनुभव किये बिना कोई व्यक्ति बयान नहीं कर सकता । पण्डित की पंडिताई यहाँ माधुर्य की मीठी आंच में पिघल कर और अपने ठोस आकार को खो कर तथा रस में घुल मिल कर प्रवाहित हो उठती हैं :-

—' उन्मत्त होकर पीछा करती सत्यवादी साधु-सन्त हो मानो

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

विश्वासानुकूल हो पाती उपलब्धि उनको, कृष्ण दर्शन होंगे
धारण किये हैं कौस्तुभ मणि निज वक्ष पर, प्रज्वलित है सूर्य सदृश
वही प्रकाश है नभ में ज्योतित कृष्ण दर्शन होंगे ।'[1]

पण्डित लक्ष्मण जू के कवि हृदय को जसोदा नन्दन की रूप छवि ने भी मोह लिया है । वात्सल्य रस प्रधान लीलाओं में बाल गोपाल की बाल सुलभ चपलता, नटखटपन, रूठना - मनाना, लुका-छिपी और माँ से पिटने की स्थिति तथा अन्य अनेक बाल क्रीड़ाओं का सूक्ष्म चित्रण किया जाता है । यशोदा के लिये तो वह एक बेहद ज़िद्दी अबोध बालक है और कुछ नहीं । सुबह से शाम तक अपने हृदय के टुकड़े की अद्भुत लीलाओं को देखते हुए भी उसे अबोध समझ कर वह उसके कुशल मंगल के लिये चिन्तित दिखाई देती हैं । 'लालो लालो बाल गोपालो ———' शीर्षक लीला इस दृष्टि से उल्लेखनीय है जिसमें कवि बाल कृष्ण की रूप छवि पर अपना सर्वस्व निछावर करने के हेतु तत्पर दिखाई देते हैं :-

—'लाल मेरे बाल गोपाल तेरे हेतु फूलों के हार पिरो लूँ
जसोदा के नन्दन श्री गोविन्द देवकी के परमानन्द

1.- 'मांति मांति छस पति लारान सति वादो साद सन्त ज़न
पछि पनिने सु प्रावनावान कृष्ण दर्शनि कांरिवो लो लो
प्रेय हृदयस कौस्तब मन नब कुई सिरियि ज़न चमकन
गाश तमि कुई आकाशान कृष्ण दर्शनि कांरिवो लो लो ।'
- "परमानन्द" भाग-2. 'राधास्वयंवर' पृ0- 95-96.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

निछावर शीष दो पादों पर तेरे हेतु फूलों के हार पिरो लूँ ।'[1]

भक्त जन में जब अपने प्रिय के लीलामय स्वरूप को निहारने की क्षमता आ जाती है तो उस स्थिति में पहुँच कर उसे राम और कृष्ण में कोई अन्तर प्रतीत नहीं होता । यही साधना की वह सम-भूमि है जहाँ पूर्णतः अपने और पराये के भेद को बुला कर साधक को सम्पूर्ण जगत लीलामय दिखाई देता है । कवि 'बुलबुल' रघुनन्दन राम और ब्रजवासी कृष्ण दोनों के सम्मुख एक साथ नतमस्तक दिखाई देते हैं । कश्मीरी भक्ति काव्य का विकास वस्तुतः समन्वय की आधार भूमि पर ही हुआ है । यहाँ के सगुण भक्त कवियों ने अपनी रचनाओं में एक साथ राम और कृष्ण की आराधना की है, इतना ही नहीं शिव और शक्ति की भी स्तुति-वन्दना की गई है । चिन्तन अथवा भक्ति के विकास में इस प्रकार का असन्तुलित समन्वय बाधक ही सिद्ध होता है । यह वास्तव में शताब्दियों की मानसिक गुलामी का ही परिणाम है कि हम किसी एक दिशा में एक स्वस्थ परम्परा को पुष्ट और सुदृढ़ नहीं कर सकें हैं । कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि एक रामभक्त को कृष्ण-भक्त नहीं होना चाहिए अथवा एक शिव-भक्त वैष्णव-भक्त नहीं हो सकता । महाकवि तुलसी शिव के

1- 'लालो लालो बाल गोपालो क्रियो च़ेय किच़ पोशन मालो
जसोदा नन्दनि श्री गोव्यन्दो देवकी ह्रिन्दे परमानन्दो
वन्दयो दोन पादन कपालो क्रियो च़ेय किच़ पोशन मालो ।'
- "परमानन्द" भाग-2 'राधास्वयंवर' पृ0- 171.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रति सदा नतमस्तक दिखाई देते हैं लेकिन उनके आराध्य हैं राम और वह भी दशरथ सुत राम । समन्वय का अत्यन्त सन्तुलित रूप हमें 'रामचरितमानस' में देखने को मिलता है । विचार और चिन्तन को वह गरिमा तथा भक्ति और ज्ञान का वह सन्तुलन हमें कश्मीरी साहित्य के भक्त कवियों में देखने को नहीं मिलता । इसके लिये कवि उत्तरदायी नहीं है अपितु यह समकालीन परिस्थितियों की विवशता का परिणाम है । मेरा नम्र निवेदन केवल इतना ही है कि कई कश्मीरी कवि समन्वय के नाम पर एक ही रचना के कलेवर में भक्ति के कई रूप प्रस्तुत करके वास्तव में अपनी ही अस्थिरता का परिचय देते हैं । लक्ष्मण जू की लीलाओं में भी कृष्ण के माधुर्यमय जीवन में रघुनन्दन का प्रवेश कुछ कुछ अस्वाभाविक और आकस्मिक प्रतीता है :-

— 'श्याम सुन्दर आते सायम् काल - रघुनन्दन राम ! बलिहारी
तुझ पर,
×सखियों के रक्षण कर्त्ता - तेरे हेतु पिरो लूँ फूलों के हार
दासी उदास है तेरे हेतु - भर भर के माखन कलश रखे हैं
ब्रजवासी बन न्योता है मेरा - तेरे हेतु पिरो लूँ फूलों के हार
बाल सखा सुन आर्तनाद - आ, दे दर्शन होगा अनुग्रह
सोये भागों के कृपाल - तेरे हेतु पिरो लूँ फूलों के हार ।'[1]

× राम के सन्दर्भ में 'सखी' शब्द भक्त के अर्थ में ही ग्राह्य होगा ।

1- 'श्यामि लटि यिखना सोन्दर-श्यामो रगिवन्दयो रघुनन्दन रामो
सखियस हिन्दि रक्षिपालो - करयो ये किव पोशान मालो
दासो कयो कारथस वोदासो - बारि बारि ये कित होरिक खासो
बन ब्रजबासो छुई म्योन सालो - करयो ये किव पोशान मालो
आदन बाजो कन थव ति नादन - यिति दिति दर्शन छुम चोन लादन
स्यदयन सादन हिन्दि कर पालो - करयो ये किव पोशान मालो ।'
'परमानन्द' भाग-2 'राधास्वयंवर' पृ0-171-172.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

लोला गीतों में कवि कभी कभी जीवन की गहन जटिलताओं की ओर संकेत करता हुआ भगवत् कृपा के हेतु लालायित दिखाई देता है । माया के मोह बन्धन में बन्ध कर जीव स्वयं अपनी पहचान खो देता है । अपनी पहचान खो कर मनुष्य विषय-वासना के दल-दल में फंस जाता है तथा भौतिक जीवन का क्रीतदास बन कर तमस अन्धकार में खो जाता है ।यह स्थिति अत्यन्त भयावह है । मोहिनी माया के कर पाश में बन्ध कर वह तथ्य से कोसों दूर चला जाता है । यह पतन की वह अवस्था है जहाँ जीव मज़ाकी दुनिया की चमक दमक को ही ज़िन्दगी का यथार्थ समझ कर जटिलताओं में उलझता चला जाता है । माया मधुर मस[1] है जिस का चसका आदमी को विवेकहीन बना देता है । वह अपनी आदमियत खो देता है और क्षण-भंगुर जीवन के हसीन लमहात में आबेहयात को पाने का व्यर्थ प्रयास करता है । जीवन की विस्मताओं पर सोने का मुलम्मा चढ़ा कर स्वयं अपने आप को ठग लेता है । कांच को कंचन समझ कर वह अपनी ही असमर्थता को व्यक्त करता है । कवि माया के इस मोह पाश से मुक्त होने के लिये छटपटा रहा है । वह मायातीत के सम्मुख अपनी विनय-पत्रिका प्रस्तुत करते हुए विषय वासना के बन्धनों से मुक्त होकर सच्चे मन से कृष्णामय होने की अभिलाषा निरन्तर व्यक्त करते हैं । यही तो उस का लक्ष्य है । माया-मद्य और विषय-वासनाओं के कु-प्रभाव से क्षुब्ध होकर वह अपने इष्ट के सम्मुख विनीत भाव से नतमस्त दिखाई देते हैं :-

---

1- 'मस' - कश्मीरी भाषा का शब्द है ।
संस्कृत → मद्य, कश्मीरी → मस

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

— 'सुध खो दी अपनी माया-मस्त से विषय-रस से हो रसहीन
धीरे-धीरे
मोह जंजाल का भारी बोझा है कन्धों पर - तेरे हेतु पिरो
लूँ - फूलों के हार ।
मायातीत ! मत रह मुझ से छिपकर - चराचर हो सुन फ़रियाद
दीनदयाल ! भेज किसी विवेकी को - तेरे हेतु पिरो लूँ फूलों -
के हार ।।' ।

भक्ति काव्य में दर्शन सुख का भी अपना विशेष महत्त्व रहा है । भक्त अपने आराध्य का नैकट्य पाने के हेतु सदा व्याकुल - अधीर दिखाई देता है । कृष्ण काव्य में इस दर्शन सुख का महात्म्य कुछ अधिक ही है क्योंकि यहाँ रिश्ता प्यार का है दास्यभाव का नहीं, दुलार का है, दीनता का नहीं, मनुहार का है, अपने आप को तुच्छ और क्षुद्र कहने का नहीं । कुंज-गली में, यमुना तीरे, अथवा वृन्दावन के आस पास पिया से मिलन हेतु गोपियाँ आतुर दिखाई देती है । यही नहीं कृष्ण स्वयं उनके संग बतियाने के लिए आकुल दिखाई देते हैं । नहीं तो मुरली बजा कर बार-बार गोपियों को टेरने का क्या प्रयोजन । कृष्ण-काव्य में कृष्ण-दर्शन के लिये गोपियों के नादो-फ़रियाद, व्यंग्य उलाहनों एवं हार कर विनती-निवेदन का अपना विशेष महत्त्व रहा है । आध्यात्मिक-स्तर पर यह भक्त के हृदय में इष्ट से मिलन की आतुरता का परिणाम है । मिलन -सुख का भी भक्ति में अपना विशेष महत्त्व है । भक्त हर समय यही चाहता है कि साधना के विभिन्न पड़ाव पार करता हुआ वह

1- 'हयसि व्यसिरावुस मायायि मसनई-रसि रसि रसि वस व्यशि रसनई
छुम मटि ऋसनई मुहजंजालो - करयो ये किव पोशान मालो
मायातीतो छायि मति रोज़तम - ग़राग़र छुक यि आंरछर बोज़तम
कूँढ़ा सोज़तम दीनदयालो - करयो ये किव पोशान मालो ।'
- 'परमानन्द' भाग- 2, 'राधास्वयंवर' पृ0-172.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अपने इष्ट में लीन हो जाये । जसोदा उसे नटखट बालक के रूप में देखती है, नन्द 'बाबा' कहने वाले पुत्र रूप में, गोकुलवासी माखन चोर के रूप में, गोप बालाएँ कुंज बिहारी के रूप में, राधा रसिया बालम के रूप में और गोप सखा के रूप में उस का सान्निध्य पाकर धन्य हो उठते हैं । प्रहलाद और हिरण्यकशिपु के पौराणिक सन्दर्भ को जोड़ कर कवि वसुदेव और कंस के कथा प्रसंग को अप्रत्यक्ष रूप से याद दिलाते हैं तथा पुण्य और पाप के मध्य अथवा सत् और असत् के मध्य हो रहे निरन्तर संघर्ष पर विचार करते हैं । यही संघर्ष तो भौतिक जीवन को गतिशील बना देता है । हिरण्यकशिपु का घमण्ड और कंस की शंकालु प्रकृति में छिपा चोर वास्तव में राक्षसत्व के ही दो रूप हैं । भक्त यह सब जान कर और अपनी अयोग्यता और असमर्थता को समझ कर परमानन्द रूप आराध्य के सम्मुख नतमस्तक हो कर लोलागान के द्वारा अपनी बलवती इच्छा को अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए कहते हैं :-

— ' जसोदा नन्दन के श्री गोविन्द
नन्द ग्वाल ने की आराधना
कृष्ण दर्शन पा हुए मुदित
प्रबल इच्छा है चूम लूँ चरण तुम्हारे ।
तेरी चरित कथा का कौन करेगा वाचन बारम्बार
जब भक्ति को प्रहलाद ने
हिरण्य कशिपु का नाश हुआ
प्रबल इच्छा है चूम लूँ चरण तुम्हारे।
निर्मल-निष्कल परमानन्द
मलहीन बना दे कामना हीन
लक्ष्मण (कवि) का मन स्थिर बना दे

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रबल इच्छा है घूम लूँ चरण तुम्हारे ।'[1]

कृष्ण काव्य में रास लीला का अपना विशिष्ट महत्त्व है । कृष्ण लीला का अभिनय-युक्त नाटक वस्तुत: रास है । नृत्य, गायन एवं अभिनय का एक अद्भुत संगम जिस में निर्बाध गति से प्रवाहित होता है - श्रृंगार रस । गोपियाँ कृष्ण के साथ रास मंडल में बन्ध कर रास-विलास में लीन हो जाती हैं । रास बिहारी ही इस रास मंडल की शोभा है और इस नृत्य प्रधान गायन का प्रमुख संचालक । रास लीला में कृष्ण के अतिरिक्त राधा की भूमिका भी पर्याप्त महत्त्वपूर्ण और वातावरण को आनन्दमय/रसमय बनाने में शेष गोप-गोपियाँ अपनी अपनी भूमिका निबाहती हैं । प्रत्यक्ष रूप में अथवा लौकिक धरातल पर इस में नृत्य और गायन के साथ श्रृंगार से सम्बन्धित भाव-भंगिमाओं का प्रदर्शन होता है लेकिन अलौकिक दृष्टि से यह परमानन्द की वह अवस्था है जहाँ जीव अपने वजूद के संकीर्ण बन्धनों से ऊपर उठ कर उस स्थिति में पहुँच जाता है जहाँ प्रकृति के कण-कण में कृष्ण की छवि व्याप्त दिखाई देती है अथवा सारा वातावरण कृष्णमय प्रतीत होता है । कृष्णानुराग की हाला पीकर इस मंडलाकार नृत्य-प्रधान गायन में गोप-गोपियाँ परमानन्द का अनुभव करती हुई लीन हो जाती हैं । परवर्ती-काल में

1- 'जसोदा नन्दिने श्री गोविन्दो नन्द गूरि कर चांन आरादन
कृष्ण दरशान कोरथन परसन्दो सावन्दि वन्दयो मोनि पादन ।
पुरितन चानुयन करि कुस सन्दो भक्ति चांन्य यति कार प्रहलादन
हिरण्यकश्यपस फुट रांविथ बन्दो सोवन्दि वन्दयो मोनि पादन
न्यर्मल न्याकल परमानन्दो मल कल कास्तम छम लादन
लक्ष्मन थावतम मन न्यस्पन्दो सोवन्दि वन्दयो मोनि पादन ।'
- 'परमानन्द' भाग (2) 'राधास्वयंवर' पृ0- 186.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

रासलीला[1] का विकास लोकनाट्य के रूप में हुआ और भक्ति काल में कृष्ण भक्त कवियों ने अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा के आधार पर इस लीला काव्य के अन्तर्गत नवीन उद्भावनाएँ की । कश्मीर के कृष्ण भक्त कवियों ने भी रास लीलाएँ लिखी हैं । निस्सन्देह इन लीलाओं में रस छलकाते हृदय की उष्णता के साथ-साथ विचार की गरिमा और चिन्तन की परिपक्वता भी देखने को मिलती है ।

यह सत्य है कि रास लीलाओं में श्रृंगार रस का प्राधान्य रहता है लेकिन उस आनन्दावस्था में भी कश्मीरी कवि-मानस चिन्तन के स्तर पर किसी न किसी रहस्यमय तथ्य को रेखांकित करता हुआ रास क्रीड़ा के आनन्द में लय हो जाता है । गोपियाँ रास खेलने की तैयारी में हैं । सखियाँ एक दूसरे को परामर्श देते हुए नज़र आती हैं । नृत्य से पूर्व श्रृंगार का अपना महत्त्व है । गोपियाँ इस विषय में बहुत सावधान हैं और अपने रूप श्रृंगार से भी सजन प्रिय को प्रभावित करना चाहती हैं लेकिन इस मन मोहक की रूप सज्जा को देख कर वे आश्चर्य चकित हो उठती हैं :-

— 'गंग जल से धो ले तन को मल ले केसर और चन्दन
बहुत करेंगे प्यार उसे बाहों में लेकर क्रीड़ा रत हैं रास मंडल में।

1- 'रास लीला लोक-नाट्य का एक प्रमुख अंग है । भक्तिकाल में इसमें राधाकृष्ण की प्रेम की क्रीड़ाओं का प्रदर्शन होता था, जिनमें आध्यात्मिकता की प्रधानता रहती थी । इनका मूलाधार सूरदास तथा अष्टछाप के कवियों के पद और भजन होते थे । उनमें संगीत और काव्य का रस तथा आनन्द, दोनों रहता था । — इनके पात्रों - कृष्ण, राधा, गोपियों - के संवादों में गम्भीरता का अभाव और प्रेमालाप का आधिक्य रहता था, कार्य की न्यूनता और संवादों का बाहुल्य होता था ।'
- 'हिन्दी साहित्य कोश' भाग-1। प्रकाशक- ज्ञान मंडल लि० वाराणसी, तृतीय संस्करण - सन् 1985 ई० पृ०- 713.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मोर मुकुट धारी अति सुन्दर शोभित हैं फूलों के अन्दर
कुंज बिहारी ने पहने हैं ज़ंगाली वस्त्र× क्रीड़ारत हैं रास मंडल में
केसर-चन्दन का टीका माथे पर धारण बाँसुरी और पद्म -
पुष्प है हाथों में
केशव के केश हैं घुँघराले क्रीड़ारत हैं रास मंडल में ।'[1]

रास बिहारी की लावण्य मयी मुखाकृति को देखने के हेतु गोपियाँ दौड़ी भागी चली आ रही हैं और इस अद्भुत सौन्दर्य मूर्ति को देख कर उनका निजी गर्व चूर हो जाता है । उन्हें गर्व था अपने आप पर, अपनी अंग चेष्टाओं पर, अपने सौन्दर्य पर और अपने नाज़ो अदा पर । लेकिन यहाँ पहुँचते न पहुँचते उन्हें अपने तुच्छ अस्तित्व का बोध हो जाता है और वे अपनी सुध-बुध खो कर श्रीकृष्ण के विराट् सौन्दर्य में लय हो जाती हैं । रास-लीला के अन्तर्गत यही आत्मबोध की अवस्था है । इस अवस्था में साधक अपनी पृथक सत्ता के एहसास को भूल कर अपने ही मानस के भीतर मन मोहन को रास-रत देख लेता है । इस अवस्था में हृदय आन्दोलित हो उठता है और साधक नाचता गाता, रास-लीला में मग्न अंग चेष्टाएँ करता हुआ भीतरी तूफ़ान को बाह्य अभिव्यक्ति प्रदान करता है । कवि के शब्दों में यही रास-रस-पान की आनन्दावस्था है, दूसरे

× 'ज़ंगाली वस्त्र' - एक तरह का रेशमी वस्त्र ।

1- 'गंग ज़लय छलिवो तनय कोंग मलिवो बेयि चन्दनय
लोलि करोस लोलि मंज़ोलुई खेलि बना रास मंडोलुई
मोर मुकुट दोरिथ सोन्दर अज़ छु तोशान पोशान अन्दर
वोलि गोशान नोल ज़ंगोलुई खेलि बना रास मंडोलुई
कोंग चन्दन ट्योक तस मत्थय बाँसुरो बेयि पम्पोश अथय
कोशावस कोशा रम्बोलुई खेलि बना रास मंडोलुई ।'
- 'परमानन्द' भाग-2, 'राधास्वयंवर पृ0- 123-124.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

शब्दों में बड़े बड़े ज्ञानी महापुरुषों का ज्ञान-आसन भी डोलने लगता है - गोपियों को तो बात ही क्या :-

— 'एक राधा और गोपियाँ अनेक
वृताकार मंडल में निर्वसन हैं नृत्यमय
मान अभिमान का गला घोंट कर
क्रीड़ा रत हैं रास मंडल में ।
रास रस पी कर हैं उन्मत्त
तड़प उठी हैं प्यासी प्यासी
अप्सराओं का मन डोल रहा है
क्रीड़ा रत हैं रास मंडल में ।
गोप के संग गोपी नृत्य मग्न हैं साथ-साथ
सब में वास उसी का जो इतराता है
अंगूठी का नग अनमोल
क्रीड़ा रत है रास मंडल में ।'[1]

कवि ने रास लीला के अन्तर्गत रास भूमि के उल्लासमय वातावरण को पृष्ठभूमि में प्रस्तुत करते हुए आलंकारिक भाषा के द्वारा उसे आध्यात्मिक सन्दर्भों के साथ जोड़ने का प्रयास भी किया है । यहाँ कलाकार की सर्जनात्मक प्रतिभा नवीन उद्भावनाओं के चित्रांकन में पर्याप्त सहायक सिद्ध हुई हैं । उन्हें विश्वास है कि ये साधु सन्त ही तो भ्रमर हैं जो

1- 'राधा अक् बेयि गूरि कने आरव मंज़ि न्यथयनने
मान अभिमान यिमव ज़िगोलुई खेलि बना रास मंडोलुई,
रास रस च्यथ मतेमये क्रेशि वुने त्रो हये
अछि रछन तति मन डोलुये खेलि बना रास मंडोलुई,
ज़ूनि पति ज़ोन सोत्थि सोत्थि नयन सारिनुई मंज़ कुनि छुनि च्यवन
वाजि हिन्दे क्रेंख मलोलुई खेलि बना रास मंडोलुई ।'
- 'परमानन्द' भाग-2, 'राधा स्वयंवर' पृ0- 124-125.

[1] वज्दानी कैफ़ीयत है और इस अवस्था में

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

चरण कमलों के मधु-पान की तृषा को शान्त करने के हेतु फूलों के अम्बार पर गुन्जार भरते हैं ।

ये ओस कण तो चन्द्र-मण्डल के निवासी हैं जो शबनम होते हुए भी मोती के दाने बन गये । ऐसा प्रतीत होता है कि मानो कृष्ण ने धरती पर मौक्तिक कणों के बीज बोये हैं :-

— 'सज्जन मानो बने हैं भौंरे आकर्षित हैं फूलों के अम्बार पर
चरण-कमलों से प्यार है उनको क्रीड़ारत हैं रास मंडल में ।
चन्द्र मंडल के वासी धरती पर उतरे शबनम थे मानो हुए - शिला कण
धरती पर बोये कृष्ण ने मौक्तिक बीज क्रीड़ा रत हैं रास-मंडल में ।
लक्ष्मण को परम इच्छा थी गीत कहें जनारदन से
परमानन्द के हेतु उमड़ता अति अनुराग क्रीड़ा रत है रास - मंडल में
श्यामसुन्दर मुरली मनोहर
क्रीड़ा रत हैं रास मंडल में ।'[1]

'बुलबुल' ने कहीं कहीं मिश्रित ब्रजभाषा में भी कृष्ण लीलाएँ लिखी हैं । स्वयं जीवन के उषा काल में वे कुछ समय तक ब्रजमंडल में भ्रमण करते रहे । ब्रज भाषा के लालित्य एवं माधुर्य ने उन्हें विशेष रूप से प्रभावित किया

1- 'साद सत ज़न बोम्बुर बनिथ पोशि अम्बारन तल रूदि सनिथ
ज़रण कमलन हुन्द छुक लोलुई खोलि बना रास मंडोलुई ।
ज़न्दरि मंडलिक लुख पेथि पथर शबनम आंसिथ ज़न गयो पत्थर
कृष्णान ज़न वोव मोक्ति ब्योलुई खेलि बना रास मंडोलुई ।
लक्षमनस यो ओस मनस गीत वनस ज़नारदनस
परमानन्दु नुई आवये लोलुई खेलि बना रास मंडोलुई ।'
- 'परमानन्द' भाग-2, 'राधास्वयंवर' पृ0-126.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

था । 'बुलबुल' नागामी ने शिव लोलायें भी लिखीं हैं । अपने गुरू स्वामी परमानन्द की शिव भक्ति से प्रभावित होकर तथा उनकी शिव लीलाओं से प्रेरणा ग्रहण करके बुलबुल ने भी शिव स्तुति की है । वस्तुत: यह उसी समन्वयात्मक दृष्टिकोण का परिणाम है कि आराध्य का रूप लीलाओ में बदलता रहा । 'हर' (शिव) और 'हरि' (विष्णु) के प्रति उन्होंने समान रूप से अपनी श्रद्धा के सुमन अर्पित किये हैं । इन की शिवलीलाओं पर अद्वैतवादी चिन्तन का प्रभाव मुख्य रूप से देखने को मिलता है । प्रकृति के कण कण में शिव का वास है । यह तो मूलत: रमण की इच्छा का ही परिणाम है कि नानारंगी जगत उत्तरोत्तर विकास पाता दिखाई दे रहा है । शताब्दियों तक कश्मीर शैव धर्म का प्रचार-प्रसार क्षेत्र रहा है और शैव-दर्शन के विकास में कश्मीर के त्रिक-आचार्यों का योगदान सर्वोपरि रहा है । बुलबुल अपनी परम्परा से भी प्रभावित दिखाई देते हैं । इन शिव-लीलाओं में चिन्तन की गहनता और परिपक्व सोच की प्रधानता है । यहाँ कृष्ण लीलाओं के सदृश माधुर्य अथवा सख्य भाव की प्रधानता नहीं है । इनमें तर्क की कसावट अधिक है प्रेम की उष्णता कम । सोच की गरिमा अधिक है माधुर्य का रस कम । शिव लीला वस्तुत: सम्पूर्ण जगत के शिवमय होने का रहस्य गहराती हैं । शब्द-प्रयोग की दृष्टि से ये लीलाएँ अनुपम हैं । फ़ारसी, अरबी और संस्कृत शब्दों का प्रयोग इनमें समान रूप से देखने को मिलता है । उन्हें दृढ़ विश्वास है कि सम्पूर्ण जड़ और चेतन

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रकृति अर्थात् कण कण में शिव का वास है और केवल उन्हीं के इच्छा से प्रकृति सोद्देश्य विकास की ओर अग्रसर हो रही है :-

—'वही हर है सार तत्व बसन्त और पतझड़ का
और व्याप्त हैं पूर्ण रूप से हर शाखा उपशाखा में
वही हर है सार तत्व
अन्तर बाहर हर हर ओ३म् ।
हर चमन और सब्ज़ाज़ार में वास है हर का
वही शबनम बन, आता रमण हेतु
चमन में है गुले-दोपहर और नरगिस के फूल
अन्तर बाहर हर हर ओ३म् ।'[1]

कृष्ण लीलाओं के अतिरिक्त 'बुलबुल' ने भक्ति और ज्ञान से सम्बन्धित अनेक स्तुति-परक रचनाएँ भी लिखी हैं जिनमें कवि कहीं सर्व-व्यापक परम ब्रह्म की दिव्य ज्योति में लय होने के लिये आकुल-व्याकुल दिखाई देते हैं और कहीं भौतिक संसार की क्षण-भंगुरता पर मानसिक क्षोभ और अकुलाहट को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं । ईश आराधना के समय कवि अपना सर्वस्व अपने इष्ट के चरण-कमलों पर निछावर कर देता है । उन्हें ब्रह्म की अद्भुत लीला पर अटूट विश्वास है और विश्व-नियंता के अनुग्रह को पाने के हेतु वे सतत अभिलाषी दिखाई देते हैं । दर्शन सुख की प्रबल

1- 'सुई हर छु हरदुक त सोन्तुक जौहर मूलि मौंजि लंग लंगजि हर हर सम
सुई हर छु जौहर दर हर पत्थर अन्तर बाहर हर हर ओ३म् ।
हर चमनस त द्रमनस छु हर-हर रमनस अस्व सुई कुनुई शबनम
चमनस छि गुलि दोपहर अब हरि अन्तर बाहर हर हर ओ३म् ।'
- "कश्मीरी ज़बान और शाइरी" भाग-2, 'आज़ाद' पृ०-330-331।

अबहर शब्द - वह नर्गिस का फूल जिस के भीतर पीलापन हो

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

इच्छा उन्हें अधोर बना देती है । भक्ति में ईश कृपा का अपना विशेष महत्त्व रहता है । भक्त तब तक अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता जब तक वह मन, वचन और कर्म से अपने इष्ट के सम्मुख नत-मस्तक न हो जाये । इस आत्म समर्पण अथवा आत्म-निवेदन का भक्ति में विशेष महत्त्व है । सब कुछ खो देने का सामर्थ्य ही जीव को कुछ पाने के योग्य बना देता है । देखने में भक्ति-मार्ग अत्यन्त सरल एवं व्यवहार्य प्रतीत होता है लेकिन जो सच्चे मन से इस पथ पर आगे बढ़ता है उसे सर्व प्रथम स्वयं अपने अहं को कुचलना पड़ता है, एकाग्र चित्त से अपने आप को पहचानने के प्रयास में जुट जाना पड़ता है । अपने इष्ट के महिमा मंडित स्वरूप को पहचानने के हेतु स्वयं अपने आप को योग्य बनाना होगा । साधना के पथ पर अनेक कठिनाइयों को सहन करता हुआ साधना रत जीव कई रहस्यात्मक स्थितियों से गुज़रता है । कुछ अत्यन्त जटिल और कुछ दुर्बोध । ईश-इच्छा के बिना कुछ भी सम्भव नहीं - यह उस का दृढ़ विश्वास है । यही कारण है कि वह अपने इष्ट की शरण में जाकर दया, अनुग्रह एवं कृपा का वरदान पाने के हेतु आराध्य-देव की स्तुति वन्दना में लीन दिखाई देता है :-

— परम ब्रह्म ! दर्शन सुख दे मुझ को
सदा सन्तोष-व्रत हो मेरे साथ
आँखों में दे ज्योति
चिद् आकाश-सत्य प्रकाश को पहचानने हेतु
यही आशा है मुझ की ।
उसी रूप में दर्शन दे दे

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जो उपलब्ध है भक्त जनों को
जिन के जीवन का घना अन्धेरा
ज्योति पुंज में बदल गया है ।'[1]

इस क्षण-भंगुर जीव को निस्सारता का एहसास जब हृदय में गहराने लगता है तो जीवन अपनी पर-वशता से पीड़ित होकर ज़िन्दगी के उलझे हुए रहस्यों को जानने और पहचानने के लिए अधीर हो उठता है । जीवन के प्रति स्वीकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले जीव इसे परिवर्तन और विकास की प्रक्रिया का अन्तिम पड़ाव मानते हैं और निश्चिन्त होकर अनमोल क्षणों में जीने का उपक्रम करते हैं । लेकिन जीवन के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले इस सच्चाई से पीड़ित होकर जीवित अवस्था में ही मृत्यु-पीड़ा के शिकार हो जाते हैं । लक्ष्मण रैणा 'बुलबुल' भी जीवन की इस क्षणभंगुरता से पीड़ित होकर अपनी पर-वशता पर आँसू बहाते दिखाई देते हैं । लेकिन इस अश्रुपात के साथ साथ कवि सामान्य जन को सृष्टि-विकास की प्रक्रिया से भी अवगत कराते हैं । जगत की निस्सारता पर मानसिक क्षोभ व्यक्त करते हुए कवि अपनी अन्तर्व्यथा को सर्जना के सहारे मूर्त रूप प्रदान करता है । ऐसे स्थलों पर 'बुलबुल' कवि कम और धर्म उपदेशक अथवा समाज उपदेशक अधिक बन जाते हैं । दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि पद-च्युत होकर उनको

1- 'परम ब्रह्मा पनुन दरशुन म्य हावुम
सदा सन्तोष व्रत म्य पोशिनावुम ।
अछन दिम गाश्र चिद् आकाश वुछनस
सु सत्-प्रकाश तथ छम आश्र वुछनस
म्य तुई मोख हाव युस भगतन ये होवुथ
गटे अन्दरी तिमन प्रागाश त्रोवुत ।'

- 'कश्मीरी ज़बान और शाइरी' भाग-2 'आज़ाद' पृ0-329.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

लेखनी शक्तिहीन हो जाती है और कला निर्जीव । यहाँ वे कवि-कर्म और भक्ति-धर्म के मध्य सन्तुलन स्थापित नहीं कर सके । निराशा ने उनकी लेखनी को पंगु बना दिया और जीवन की क्षणभंगुरता के एहसास ने आँसू बहाने के लिये विवश कर दिया है :-

-- 'लेना किस को क्या कुछ है
इस जग से ?
चले गये सब हार के बाज़ी
कहाँ गये ?
मात-पिता भाई, बन्धु सब जन कहाँ गये ?
इक दूजे का नहीं किया इन्तिज़ार
झटपट हुआ तैयार बिना देरी के
जिस को बारी आई,
चले गये सब हार के बाज़ी ।
हाथी, घोड़े, रथ सवारी, है उपलब्ध
कुछ लोगों को और कुछ हैं व्याकुल
नंग - धड़ंग
चुन चुन के डस लिया है इन को
काल सर्प ने
चले गये सब हार के बाज़ी ।'[1]

1- 'कस क्या छु ज़ेनुन यमि सम्सारो
सारो गयो हारि हारिये ।
कोतू गई बब मांजि बायि बन्द सारी
अख् अकिस न तिम कांसि प्यारिये
तार लांज न तस यस यलि वांच वारो
सारो गयो हारि हारिये ।
केंह्न हांसि गूरि रथ सवारो
केंह न्यथि नांनि ननिवारिये
वुछि वुछि कुछ यिम कालि शाहमारो

(शेष पृ0-172 पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जगत तो सर्वव्यापक ब्रह्म का व्यक्त रूप है । अद्वैत के अनुसार जीव और ब्रह्म परस्पर भेद रहित हैं अतः अविभक्त हैं । संसार का मूल तत्व वस्तुतः एक ही हैं :-

—'आत्म दुई हो गति है
जगत विस्तार का कारण
दुई हुई समाप्त में व्याप्त हुआ सर्वत्र
राम, राम, राम का कर ले स्मरण ।
जब मिट जाये अज्ञान
स्वतः सुलझ जाती है उलझन
कब होगा वह ज्ञान मुयस्सर !
राम, राम, राम का कर ले स्मरण
प्रकट होगी जब प्रबल वेग से
स्वयं ज्ञान की विद्युत-माला, वह
सूर्य-तेज से कहीं अधिक निर्मल
राम, राम, राम का कर ले स्मरण ।'[1]

अहंकार वस्तुतः अपनी विशिष्ट सत्ता का भ्रमात्मक बोध है, असत् का व्यक्त रूप । माया जीव को इसी असत् के मोह जाल में उलझा देती है ।

[पृष्ठ 14 का शेष]
सारी गयी हारि हारिये ।
- "कश्मीरी ज़बान और शाइरी" भाग-2, 'आज़ाद' पृ०-33।

1- 'आत्मुय दुई छ यि गत बासनस आव ज़गत
दुई च़ंज ति छुस ब्व सर्वत रामि, रामि, रामि कारऱे
च़लि यलि दूर अग्यन्यान अदि छुनि वलनि थिवान
अदि कर आसि ज़ानान रामि, रामि, रामि कारऱे
पानि अदि ग्यानि वुज़मल नेरि नान्य गछि परबल
सिरयि सुन्दि खोति न्यरमल रामि, रामि, रामि कारऱे
- "काशिर शाइरी" - मुही-उ-दीन हाजिनी, पृ०-83.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

माया एक आकर्षक स्वर्ण-पाश है जिस में बन्ध कर जीव स्वयं अपनी पहचान खो देता है । भौतिक जगत के आकर्षण मायावी रूप में जीव पर गहरा प्रभाव डाल देते हैं । वह परिवार-कुटुम्ब के मोह-पाश में बन्ध जाता है । सौभाग्यवश किसी सत्पुरुष का सान्निध्य पाकर जब उसका मोह भंग हो जाता है तो भीषण यथार्थ नग्न-नृत्य करता हुआ उसे निगलने के हेतु तत्पर दिखाई देता है । वह स्वयं अपने आप पर लज्जित हो उठता है । ज्ञान दीप के प्रज्वलित हो उठने पर मानस के घटाटोप में आशा की किरण फूट पड़ती है । सुनहरे प्रभात में रुपहली आशाओं का योग एक अद्भुत दिव्यानुभूति को आकार प्रदान करता है । अखण्ड ब्रह्म सर्वव्यापक है, सर्वशक्तिमान, अजर और अमर है । सम्पूर्ण जगत तो ब्रह्म की इच्छा का ही व्यक्त रूप है । इस नाना रूपी जगत में अद्वैत की सही पहचान ही दिव्यानुभूति है, यही तो आनन्दावस्था है और यह माना जाता है कि काव्यानन्द का इस के साथ गहरा सम्बन्ध है :-

—'जब पहचान न पाया उनको
असत् और माया को दृढ़ हुई पकड़
त्याग दे असत् और अहंकार को
राम, राम, राम का कर ले स्मरण ।
अनुभव से देख रहा होगा
अपने भीतर अपना आप
चिरस्थायी जोत बसी है
राम, राम, राम का कर ले स्मरण ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जब अखण्ड है अपना आप
यह सोच के हो जाता विश्वस्त
शुद्ध भाव से पाता नाम
. राम, राम, राम का कर ले स्मरण ।'

भौतिक जगत के प्रति लोभ, मोह और आकर्षण वस्तुत: अज्ञान का तमसान्धकार है जिस को भेद कर ही सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान ब्रह्म के साथ एकाकार हो सकता है । मन मार कर अपने आप पर नियन्त्रण पाना जीव के लिए बड़ा कष्टप्रद होता है । अधिकांश लोभ-मोह के इस माया जाल में उलझ जाते हैं लेकिन जो विरले जन इसे भेद कर साधना-पथ पर निरन्तर आगे बढ़ते हैं उनका मानसक दिव्य प्रकाश से अवश्य प्रज्वलित हो उठता है । अत:जीव के लिये आवश्यक है कि :-

--'असार है समस्त संसार
भाई - बन्धु कुटुम्ब-परिवार
यह समझो और यह जानो ।
अन्त समय पर नहीं मिलता है उसे पुराना कंडोल,
खिले पुष्प मुरझा गये
सती ! जग के मोह-बन्धन को छोड़ो ।'[2]

1- 'सु यलि न ज़ानस आव असत मायायि लोब भाव
असत् अहंकार ब्योन त्राव राम्मि, राम्मि, राम्मि कारज़े
अनुभवि आसि वुछास पानस मंज़ पनुन पान
निरपाय ज़ि रोज़ान राम्मि, राम्मि, राम्मि कारज़े
अखण्ड यलि पनिनुई पान ज़ानिथ आसि रोज़ान
शोदि भाव्वि नाव प्रावान राम्मि, राम्मि, राम्मि कारज़े ।'
- "काश्मिर शाइरी" - मुही-उ-दीन हाजिनी, पृ०-83-84.

2- 'असार ज़ान सोर सम्सार बायि कोटम्ब क्रोनुये
अन्त समयस वनति मातस मेलवुन फोत प्रोनुये
बरि गयो गुल फालिमुतिये
त्राव सम्सार दतिये ।'
- "अंकुर" - मोतीलाल साकी, पृ०- 42.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मसनवी शैली में लिखी हुई 'बुलबुल' की दो प्रबन्ध रचनाएँ पर्याप्त चर्चित रही हैं। रज़्मिया मस्नवी के रूप में 'बुलबुल' ने कश्मीरी में "सामनाम्मि" लिखा जिस का मूल-स्रोत फ़ारसी मस्नवी काव्य में निहित है। श्री जे० एल० कौल ने अपनी पुस्तक "स्टडीज़ इन कश्मीरी" में इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया है कि लक्ष्मण रैणा 'बुलबुल' ने "सामनाम्मि" सन् 1874 ई० तदानुसार संवत् 1931 वि० में लिखा है।[1] स्वातन्त्र्योत्तर युग में जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी के तत्त्वावधान में यह प्रबन्ध रचना सन् 1962 ई० में प्रकाशित हुई और इसके सम्पादक हैं - श्री गुलाम नबी 'ख़याल'। 'बुलबुल' की दूसरी प्रबन्ध-रचना (खण्ड काव्य) है - "नल दमयन्ती"। यह रचना (अप्रकाशित) भी यद्यपि मस्नवी शैली में लिखी गई है तथापि इस का मूल स्रोत स्वदेशी है जो हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं एवं विश्वासों के साथ जुड़ा हुआ है। यह खण्ड काव्य 'बुलबुल' ने संवत् 1953 वि० में लिख कर पूरा किया था और मृत्यु से पूर्व यही उनकी अन्तिम सर्जनात्मक उपलब्धि थी। 'सामनाम्मि' के अतिरिक्त 'बुलबुल' की शेष रचनाएँ अभी अप्रकाशित हैं। यदि 'बुलबुल' की समस्त रचनाएँ प्रकाशित होती तो उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा पर विस्तार से विचार किया जा सकता था। इसमें सन्देह नहीं कि लीला और भक्ति-परक रचनाओं में वैष्णव भक्त कवि 'बुलबुल' पूरी तन्मयता के साथ कृष्णानुराग में लीन दिखाई देते हैं। यहाँ ब्रज का माधुर्य कश्मीर के सौन्दर्य के साथ घुल-मिल गया है। उन्होंने जगत की क्षणभंगुरता पर

1- "स्टडीज़ इन कश्मीरी" - जे० एल० कौल, पृ०- 171.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

शोक व्यक्त करते हुए जीव को अपने अल्प-कालीन जीवन में उस विराट सत्य से परिचित होने के लिये अथवा उस में लय होने के लिये निरन्तर प्रेरित किया है। साधना-पथ की समस्त कठिनाइयों को पार करता हुआ वह भक्ति के सहारे आनन्द की उस समभूमि पर पहुँचना चाहता है जहाँ प्रकृति के कण कण में प्रियतम (कृष्ण) की छवि प्रतिबिम्बित दिखाई देती है। बुलबुल में अद्भुत सर्जनात्मक प्रतिभा थी। यद्यपि ज़िन्दगी भर वे ज़हर के घूँट पीते रहे तथापि एक कृष्ण-भक्त कवि के रूप में वे अपने प्रियतम की इस लीला भूमि से कम प्यार नहीं करते। ऐसा प्रतीत होता है कि उनमें जीवन जीने की उत्कट इच्छा थी। 'बुलबुल' उन्नीसवीं शताब्दी के कश्मीरी काव्य-जगत के चहकते बुलबुल हैं :-

--'प्रिय हेतु मैं इतनी रोयी तड़पी
सखि ! फूटे मेरे भाग्य, दिक़ हुआ मुझ को
आषाढ़ मास में लार × पथ पर
कहाँ पहुँची शाल्युन × सखी !
भवसागर के मेवाज़ार में
'बुलबुल' ने कभी नहीं भोगा आनन्द
सखि ! भ्रम और छल से पड़ गया फीका
आलूचों का रंग।'[1]

- 0 -

× 'लार' - तहसील गान्दरबल, ज़िला श्रीनगर का एक गाँव।
× 'शाल्युन' - ज़िला पुलवामा, कश्मीर में एक खुली जगह।
1- 'यारि दादे यच़ वोदुम तापै दोदुम ताल्युन व्यसी
हार मासै लार पासै कोत लाजिस शाल्युन व्यसी
भविसरकिस म्यविज़ारस बुलबुलन ज़ाँह चूह न फल
लोलिचव कोर आलिचन तस रंग गोरदाल्युन व्यसी।'
- "सोन अदब" - जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - सन् 1965 ई0 पृ0- 17.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

---

(I) लोला एवं भक्ति-काव्य

(अ) कृष्ण जू राज़दान - (सन् 1850 - 1926 ई०)

1- 'शिव परिणय' : एक उत्कृष्ट सर्जना
2- शैव दर्शन का गहन प्रभाव
3- स्थानीय रंग : प्रमुख आकर्षण
4- कृष्ण भक्ति : लोला काव्य
5- रास लोला : सगुण भक्ति में मधु-मिश्रण
6- खड़ी बोली में गीत और भजन
7- विचार - काव्य
8- लोक रस : भाषा और संगीत की दृष्टि से

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कश्मीर में लीला और भक्ति काव्य के क्षेत्र में परमानन्द (1791 ई0 - 1879 ई0) के पश्चात् पण्डित कृष्ण जू राज़दान का योगदान अभूतपूर्व रहा है। उन्नीसवीं शताब्दी के आठवें दशक से लेकर बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक तक पण्डित जी कश्मीरी जन-मानस को अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा से निरन्तर प्रभावित और प्रेरित करते रहे। पण्डित कृष्ण राज़दान अनन्तनाग (कश्मीर) के निकट वनपोह (तहसील कुलगाम) गाँव में एक सम्पन्न पण्डित परिवार में सन् 1850 ई0 में उत्पन्न हुए थे। उनकी निश्चित जन्म तिथि के विषय में तनिक मत भेद अवश्य है जिसे अब दूर करने का प्रयास 'कुलयात कृष्ण राज़दान' के सम्पादक श्री सोमनाथ वोर ने किया है। बिजबिहारा (कश्मीर) के प्रसिद्ध ज्योतिषी पंडित मधुसूदन शास्त्री की गणित-गणना की सहायता से वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि कृष्ण राज़दान का जन्म 19 अगस्त 1850 ई0 में तथा देहान्त 13 दिसम्बर 1926 ई0 में हुआ है।[1] उनके पिता पण्डित गणेश राज़दान इलाके के प्रतिष्ठित ज़मींदार थे और तत्कालीन महाराजा के कृपापात्र। कृष्ण जू का विवाह व्योस गाँव में एक ज़मींदार परिवार में हुआ था। पत्नी का नाम था अरणिमाल। अरणिमाल से ही उन्हें दो पुत्र-रत्न प्राप्त हुए - आनन्दराम और शंकर रैणा। यह बात ध्यान देने योग्य है कि इस महान सन्त कवि ने वैवाहिक जीवन

1- "कुलयात कृष्ण राज़दान" - सम्पादक : सोमनाथ वोर, जम्मू एण्ड कश्मीर एकेडमी आफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज़, श्रीनगर द्वारा सन् 1984 ई0 में प्रकाशित, पृ0- 12.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

के समस्त उत्तरदायित्व को आजीवन निबाहाया और गृहस्थ आश्रम में हो उस अखण्ड चेतन सत्ता को पहचानने और उसके लीलामय जगत के सौन्दर्य कणों को बटोरने का प्रयास किया है ।

पण्डित जो ने कई भाषाओं का गहन अध्ययन किया था । उन्हें संस्कृत और फारसी पर समान अधिकार था । कश्मीर के शैव-दर्शन का गहरा प्रभाव उनके व्यक्तित्व एवं चिन्तन पर पड़ा । इस बात को स्पष्ट कर देना उचित होगा कि मूलत: वे शिव भक्त थे, शिव और शक्ति के अनन्य उपासक ।[1] यह सत्य है कि साधना के पथ पर वे सगुण-भक्ति के प्रति भी आकर्षित हो उठे और धीरे धीरे एक महान समन्वयकारी साधक के रूप में भक्त-जनों के आकर्षण का केन्द्र बन गये लेकिन शिव साधना को उन्होंने अपनी भक्ति का मूल केन्द्र माना है ।[2] कृष्ण के सगुण रूप पर भी वे मोहित हैं अत: अपनी सुध-बुध खो कर कृष्ण लीलाओं में जीवन की सार्थकता को ढूँढने का निरन्तर प्रयास भी उन्होंने किया है । समन्वयात्मक दृष्टि से प्रेरित वे कभी शिव की उपासना करते हैं और

1- 'राज़दान साहब कश्मीर में शिव भक्ति के एकमात्र (?) प्रतिनिधि कवि हैं । ---- राज़दान साहब उस शिव के आशिक़ एवं भक्त हैं जो संसार-स्रष्टा, रक्षक एवं क्षमाशील हैं । कृष्ण उस शिव से भिन्न नहीं अपितु वह शिव का ही विशिष्ट रूप है जिसे विष्णु कहते हैं ।'
-"शीराज़ा"(कश्मीरी) भाग-13, खण्ड-1 सन् 1976 ई0
-"शिव परिणय" - मोतीलाल साक़ी" पृ0- 36.

2- 'शिव ही हैं केशव और केशव शिव हैं
माखन था पहले फिर नाम पड़ा है घृत ।'
(शिवुई छु केशव केशव छु शिवुई
थनि आस अदि च्योस ग्यवुई नाव ।)
'कुलयात राज़दान' सम्पादक : सोमनाथ धर - जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन, सन् 1984 ई0 पृ0- 363.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कभी विष्णु स्वरूप राम और कृष्ण की लीलाओं का गुणगान ।[1] भक्ति और लीला काव्य के क्षेत्र में यह मणि-कांचन का योग अपने आप में अद्भुत था । इसी प्रकार का समन्वयात्मक दृष्टिकोण कश्मीर के सूफ़ी कवियों में भी देखने को मिलता है जहाँ इस्लामी तसव्वुफ़ में भारतीय वेदान्त एवं शैव-दर्शन के तत्त्व घुल मिल गये हैं । वस्तुत: यह स्थिति एक ऐतिहासिक तथ्य की ओर भी संकेत करती है । शताब्दियों से कश्मीर शैव-मत एवं शैव-दर्शन का प्रमुख केन्द्र रहा है । उसकी जड़ें उस समय भी काफ़ी मज़बूत और गहरी थीं जब इस्लाम कश्मीर पहुँचा अथवा जब सगुण भक्ति के प्रति लोग आकर्षित होने लगे । वैष्णव सम्प्रदाय की कमज़ोर लहर का कोई क्रान्तिकारी प्रभाव यहाँ के जन-मानस पर नहीं पड़ा है । हाँ, इतना अवश्य हुआ कि कुछ प्रतिभा सम्पन्न भक्त जन इस आन्दोलन के प्रति आकर्षित हुए लेकिन उनमें स्पष्ट रूप से निर्गुण की अवहेलना करने का साहस नहीं था, फलत: एक ही परमतत्त्व की विद्यमानता सर्वत्र स्वीकार करते हुए निर्गुण और सगुण की स्तुति-वन्दना एक साथ होने लगी । युग की विवशताओं ने ही इस समन्वयात्मक दृष्टिकोण को पनपने का सुअवसर प्रदान किया । पण्डित कृष्ण जू राज़दान कश्मीर के इन्हीं समन्वयवादी भक्त कवियों में से एक हैं ।

कृष्ण जू राज़दान की रचनाओं का विभाजन मुख्यत: दो प्रकार

1- ' हर ॥ शिव ॥ ही बने हैं हरि ॥ कृष्ण, राम ॥
और शिव भये केशव
अद्वैत रूप नारायण प्रकट हुए सर्वत्र । '
॥ ' हरस' सांपुन 'हरी' केशव बन्यीव शिव
अद्वैत रूपि नारायण प्रकट गव । ॥
" कुलयात राज़दान " पृ0- 268.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रकार से किया जा सकता है :-

1- वर्णनात्मक कथा-काव्य

2- स्फुट भक्ति-परक लीला काव्य

वर्णनात्मक कथा-काव्य के क्षेत्र में उनकी उल्लेखनीय रचना है - 'शिव-परिणय'। यह रचना रायल ऐशियाटिक सोसाइटी (बंगाल) ने सन् 1913 से सन् 1924 तक धारावाहिक रूप से छः भागों में देवनागरी लिपि में प्रकाशित की। इस के सम्पादक थे सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन। इस की मूल कथा का केन्द्र बिन्दु है - शिव और शक्ति का विवाह और अभिव्यक्ति की मुख्य शैली है - लीला। इस सम्पादित ग्रन्थ की एक अन्य विशेषता यह है कि उस समय के कश्मीर के महान संस्कृत-विद् स्वर्गीय पण्डित मुकुन्दराम शास्त्री ने इन लीलाओं का भाषानुवाद संस्कृत में किया जो मूल पाठ के साथ प्रकाशित हुआ है। मुख्य कथा-तत्त्व से अलग हट कर इसमें अनेक लीलाएँ सगुण भक्ति से प्रेरित होकर लिखी गई हैं जहाँ मूल आकर्षण तत्त्व शिव नहीं है अपितु बाल सखा कृष्ण।

लगभग इसी समय फ़ारसी लिपि में पण्डित कृष्ण राज़दान की रचनाओं का एक संकलन 'हरि हर कल्याण' शीर्षक से श्री अली मुहम्मद पुस्तक विक्रेता के द्वारा श्रीनगर से प्रकाशित हुआ जिसमें शिव-शक्ति के विवाह की वर्णनात्मक कथा के अतिरिक्त स्वतन्त्र रूप से कई लीलाएँ और भजन भी संगृहीत हैं। इसके सम्पादक हैं - श्री हरिहर कौल (स्वामी हरि हर) इसी रचना का दूसरा नाम है 'शिव लग्न'।

सन् 1984 ई० में जम्मू कश्मीर कल्चरल एकेडमी की ओर से पण्डित

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कृष्ण राज़दान की समस्त रचनाओं का एक संकलन प्रकाशित हुआ जिसके सम्पादक श्री सोमनाथ धोर हैं । पण्डित जी ने कई लोलाएँ एवं भजन हिन्दी बोली में तथा कुछ ग़ज़ल शुद्ध फ़ारसी भाषा में भी लिखे हैं । कश्मीरी भाषा में लिखी हुई इनकी लीलाओं और भक्ति-परक रचनाओं की संख्या 400 से भी अधिक हैं । आज भी वनपोह गाँव में उनके परिवार जनों के पास पण्डित जी के कई क़लमी नुसखे मौजूद हैं जिन्हें वे पैतृक सम्पत्ति समझ कर अपने ही पास सुरक्षित रखने का प्रयास कर रहे हैं । उनका यह प्रयास तर्क पर आधारित नहीं है अपितु अन्ध-श्रद्धा से प्रेरित है ।

पण्डित कृष्ण राज़दान के सम्पूर्ण भक्ति-काव्य की एक विशेषता यह है कि उन्होंने दर्शन और चिन्तन के घुमावदार और उलझनमयी स्थितियों से दूर रह कर विशुद्ध भक्ति-भाव से अपने इष्ट के प्रति श्रद्धा के सुमन अर्पित किये हैं ।[1] लेकिन इसका अभिप्राय कदापि यह नहीं लिया जाना चाहिए कि कृष्ण राज़दान के भक्ति-काव्य में विचारों की गहराई नहीं है । उनका सब से बड़ा आकर्षण वस्तुतः उनकी सचाई और सादगी में निहित है । वे एक जन्म-जात कवि थे । उनकी रचनाओं का गहन अध्ययन करने के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि पण्डित कृष्ण राज़दान का कवि व्यक्तित्व उनके साधना-रत साधक के व्यक्तित्व से कहीं अधिक सशक्त एवं आकर्षक है । वे पहले कवि हैं फिर भक्त । उनमें सर्जन की असाधारण क्षमता है ।[2] शिव-शक्ति

1- "कश्मीरी ज़बान और शाइरी" भाग-2, अब्दुल अहद 'आज़ाद' अकादमी प्रकाशन, सन् 1962 ई० , पृ०- 428.

2- "शीराज़ा" (कश्मीरी) खण्ड-13, भाग-1, सन् 1976 ई० 'शिव परिणय' - मोतीलाल साक़ी, पृ०- 37.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

को प्रणय-कथा ने पण्डित जी को विशेष रूप से मोह लिया था। विभिन्न उप-शीर्षकों के अन्तर्गत उन्होंने इस सूक्ष्म कथा-सूत्र को मूर्त रूप प्रदान करने का प्रयास किया है। यहाँ अनेकों पौराणिक सन्दर्भ, मिथकीय पात्र, जन-श्रुति एवं लोक-विश्वासों पर आधारित घटनाएँ, परम्परागत मान्यताएँ एवं विश्वास भक्त-कवि को सर्जन के लिए प्रेरित करते हैं। दक्ष प्रजापति का यज्ञ, उमा का अग्नि समर्पण, हिमालय की कथा और पार्वती का जन्म, सती के द्वारा शिव की तलाश, शिव का रूप बदल कर उपस्थित होना और गौरी के प्रेम की परीक्षा लेना, जोगी और पार्वती के बीच बहस, शिव-पार्वती के विवाद की बात, दूल्हा का विरक्त जोगी रूप, मीनावती का विलाप और शिव की स्तुति, शिव का प्रसन्न होकर आनन्दमय रूप धारण कर पार्वती को वरण करना, लग्न और पुष्प-पूजा, विदाई से पूर्व स्वर्ण हिम पात आदि प्रमुख घटनाओं के आधार पर 'शिव-परिणय' की सृष्टि कवि ने अपनी मौलिक प्रतिभा के आधार पर की है। शैवमतानुयायी कश्मीरी पण्डितों के लोक-विश्वासों की अत्यन्त मनमोहक अभिव्यक्ति इस वर्णनात्मक कथा-काव्य के माध्यम से हुई है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण बात यह है कि 'शिव परिणय' की कथा में स्थानीय रंग निखर कर सामने आया है। यहाँ तक कि शिवरात्रि का महात्म्य भी कवि के आकर्षण का केन्द्र बन कर उसकी सर्जनात्मक प्रतिभा की महिमा मंडित बना देता है। कवि ने कश्मीरी पण्डितों के

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

घरों में सम्पन्न होने वाले विवाह-उत्सव के लगभग समस्त सामाजिक एवं धार्मिक अनुष्ठानों का विशेष ध्यान रखा है । बारात का उचित स्वागत सत्कार, लग्न से पूर्व द्वार पूजा, लग्न पर कन्या-दान, पुष्प-पूजा, अग्नि के फेरे, विभिन्न देवी देवताओं का साक्षी मान कर वर द्वारा वधू को वरण करने की प्रतिज्ञा, अग्निहोत्र, दूल्हा को 'मननमाल'[1] बान्धना, विदाई की तैयारी और इन समस्त सामाजिक - धार्मिक अनुष्ठानों पर स्त्रियों द्वारा लगातार 'वनवुन'[2] गीत गाना इस कथा-काव्य को न केवल महिमा-मंडित कर देता है अपितु शिव-शक्ति की प्रणय-कथा को पारिवारिक सन्दर्भों के साथ भी जोड़ देता है ।

"शिव-परिणय" वर्णनात्मक कथा-काव्य का आरम्भ मंगलाचरण से होता है । गणाधिपति महागणेश की स्तुति के बाद कवि सद्-गुरु के सम्मुख नत-मस्तक होकर विनीत भाव से प्रार्थना करता है कि :-

— 'दृष्टिहीन हूँ, ज्ञान ज्योति से मार्ग प्रशस्त हो मेरा
सद्गुरु ! अन्धकार में जोत जला दे ।
उलझ गया हूँ जग - माया में
उपाय सुझा दे मुक्ति का
वर दे अपनी दया दृष्टि का
सद्गुरु ! अन्धकार में जोत जला दे ।

1- 'मननमाल' - कश्मीरी पण्डितों में विवाह के अवसर पर लग्न-मंडप पर दूल्हा के शीर्ष-पट पर एक विशेष माला बान्धी जाती है जिसे 'मननमाल' कहते हैं । इस अनुष्ठान का सम्बन्ध शिव के महान कर्मों की स्मृति अथवा मनन से है ।'

— लेखक —

2- कश्मीरी विवाह-गीत को 'वनवुन' कहते हैं ।

CC-0 Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

वास्तव में था मैं निर्मल जल
व्यवहार से प्रकृति हो गयी यह
निर्णय-ताप से उसे गला दे
सद्गुरु ! अन्धकार में जोत जला दे ।'[1]

कश्मीर में शैव-दर्शन को 'त्रिक-दर्शन' या 'त्रिक-शासन' भी कहा जाता है । यह प्रधानत: तीन तत्त्वों पर आधारित है - शिव तत्त्व, शक्ति तत्त्व तथा नर तत्त्व । तीनों तत्व परस्पर एक दूसरे से भिन्न नहीं हैं अपितु एक ही शिव तीनों में विद्यमान हैं । इस लिये शैव दर्शन को अद्वैतवादी माना गया है । शिव अपनी शक्ति से संसार की रचना करते हुए भी अपनी पूर्णता नहीं खो देते ।[2] उमा के विवाह पर दक्षप्रजापति अपने हर्षोल्लास को व्यक्त करते हुए तथा शिव महिमा का बखान कर सम्पूर्ण सृष्टि के शिवमय होने का आभास इस प्रकार देते हैं :-

—' नहीं है आरम्भ और न अन्त
शिवनाथ हुए मेरे बान्धव

1- 'ओन छुस ज़ान हिंज़ वथ वुछनावतम
सतगोरि हावतम गटि मंज़ गाश ।
वोलनस सम् सारिच मायाये
मोकलय चानि वोपाये सूत्थि
दयाथि हिंज़ नज़रा त्रावतम
सतगोरि हावतम गटि मंज़ गाश ।
मूलि तूलि ओसुस न्यर्मल पोनो
व्यवहार प्रकुय कोरनम यख
न्यर्णय गरमो सूत्थि व्यगलावतम
सतगोरि हावतम गटि मंज़ गाश ।'
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ0- 94-95.

2- "एक ही शिव अपनी स्वातन्त्र्य शक्ति से तीनों रूपों में प्रकट होता है । इसी लिये इस शैव दर्शन को अद्वैतवादी कहा गया है । शिव

॥ शेष अगले पृष्ठ पर ॥

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

वही ब्रह्मा और वही हैं विष्णु
वही जगत के हैं ईश्वर
वही परमात्मा और वही स्वच्छन्द
शिवनाथ हुए मेरे बान्धव
वही शास्त्र है वेद सागर
वही हंसमुख हैं विद्याधर
वही सार - बिन्दु ओ३मकार के
शिवनाथ हुए मेरे बान्धव ।'[1]

शिव और शक्ति के पारस्परिक सम्बन्ध की ओर संकेत करते हुए कवि लिखते हैं कि दोनों एक दूसरे के पूरक हैं । वस्तुत: शक्ति के बिना शिव शव है । यदि शिव ज्ञान रूप है तो शक्ति क्रिया रूप है । शिव

(पृष्ठ । का शेष)

अपनी शक्ति से संसार की रचना करते हुए भी अपनी पूर्णता नहीं खो देते । यह ब्रह्माण्ड उसी पूर्ण शिव का पूर्ण आभास है । इसी लिये कश्मीर के शैव-दर्शन-तत्ववेत्ताओं ने सारे संसार को शिवमय (सर्व शिवमय जगत्) माना है ।'
-"योजना" (सांस्कृति विशेषांक, जनवरी 1960 ई०) प्रकाशक- सूचना-विभाग, जम्मू कश्मीर सरकार, जम्मू, "कश्मीर का शैव-दर्शन" - डॉ० बी० डी० शास्त्री, पृ०- 87.

1- 'नय छुस गोड तय नय छुस अन्द
शिवनाथ सांपनुम बान्दव त बन्द
ज़गतुक ईशर सुई ज़ानुन
सुई परमात्मा सुई स्वच्छन्द
शिवनाथ सांपनुम बान्दव त बन्द ।
सुई छु शास्त्र त वेद सागर
सुई छु अ्रसिवुन विद्याधर
सुई छु सार ओमकारूक ब्यन्द
शिवनाथ सांपनुम बान्दव त बन्द ।'
- "कलियात कृष्ण ज राजदान" पृ०- 98.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अपनी इच्छा को शक्ति के द्वारा ही सफल कर देते हैं ।[1] कवि के कथनानुसार रात और दिन, पृथ्वी और आकाश, अनार के दाने और अनार, अमृत कुंड और अमृत, लक्ष्मी और नारायण तथा सावित्री और ब्रह्मा का जो सम्बन्ध परस्पर है वही पार्वती और शिव अर्थात् शक्ति और शिव का परस्पर एक दूसरे के साथ है :-

---'तुम दिन हो और मैं रात, आकाश हो तुम मैं धरती
तुम अनार हो मैं दाना अनार का, दयालु ! शरण में आई तेरे
तुम मुखमंडल की शोभा हो (माथे का टीका), और मैं मुख -
- का तेज
टीका है शोभा माथे पर, दयालु ! शरण में आई तेरे ।[2]

उमा द्वारा अग्नि समाधि के पश्चात् हिमालय के घर[3] पार्वती का जन्म 'शिव-परिणय' के कथानक का अग्रिम सोपान है । हिमालय

1- 'शैव-दर्शन का परमतत्व शिव है । उसे इस शास्त्र में सफल तथा निष्फल कहा है । ये दोनों शब्द क्रमशः सगुण तथा निर्गुण या साकार और निराकार के वाचक हैं । शैव-दर्शन का शिव तत्व यद्यपि निर्गुण है पर उसको निर्गुणता में सगुणता अन्तर्निहित है । वेदान्त का परम तत्व ब्रह्म केवल निर्गुण ही है उसमें सगुणता माया के सम्पर्क से आई है ।'

- "योजना" (सांस्कृति विशेषांक) सन् 1960 ई० " कश्मीर का शैव दर्शन" - डॉ० बी० डी० शास्त्री, पृ०- 88.

2- 'चि छुक दोह त ब्व छस रात चि आकाश त ब्व बुतरात
चि छुक दानि ब्व छस दानि ब्व छुस पानि दयालु
चि छुक इयकि प्यठुक टिकि ब्व छस बुथि प्यठुक तोज़
इयकस टिकि छु शूबानि ब्व छस पानि दयालु ।'

- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ०- 155.

3+ 'शिव परिणय' में पार्वती के पिता का नाम होमाल तथा माता का नाम मोना कहा गया है । वास्तव में ये नाम क्रमशः हिमालय/हिमवान और मैना/मेनका के तद्भव रूप हैं । पार्वती का मायके का नाम गौरी था ।'

-- लेखक --

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

के घर में बड़े लाड़ प्यार के साथ उसका भरण-पोषण होता है । पूर्व जन्म की प्रत्येक घटना उसके मानस-पटल पर अंकित है । वह अपने होने वाले भर्ता की तलाश में वन-वन भटकती है । हर गोशे और चमन में उसे शिव की तलाश है । उसे लगता है कि प्रकृति का कण-कण शिवमय है । शिव का अद्भुत सौन्दर्य ही सर्वत्र व्याप्त है पर साकार रूप में उसे वरण करने की उत्कट इच्छा से प्रेरित पार्वती शिव का गुण-गान करती हुई वस्तुत: प्राणप्रिय में लय होने के हेतु व्याकुल दिखाई देती है । प्रिय की मधुर-स्मृति उसे वन-वन भटकने के लिए विवश कर देती है । उसे विश्वास है कि शिव ही इस सृष्टि का मूल कारण है और प्रकृति के कण-कण में उसी का रूप लावण्य प्रतिबिम्बित है :-

--'तुम ही हो जप-यज्ञ का जप और हो तपोवन का तप
तुम ही हो योगेश्वर महान सुध आई तेरी कैसे !
तुम ही हो योगियों का योग और हो प्राणियों के प्राण
तुम ही सत् का संवाद सुध आई तेरी कैसे !
तुम ही हो सहाय तुम ही संग पास हो तुम और हो दूर
तुम ही सब जन के हो आदि सुध आई तेरी कैसे !
तुम ही हो दुख और तुम ही सुख और हो परमानन्द मुख
तुम ही कम हो और हो ज़्यादा सुध आई तेरी कैसे !'[1]

1-' चुई छुक ज़प यग्युक ज़प चुई छुक तप वनुक तप
चुई छुक सादन हुन्दुई साद क्यथो यादम्य प्योहम
चुई छुक यूग्यन हुन्दुई यूग चुई छुक प्राणायन हुन्दुई प्राण
चुई छुक सतकुई संवाद क्यथो याद म्य प्योहम
चुई छुक ड्खि चुई छुक न्खि चुई छुख दूर चुई नज़दीक
चुई छुक सारनुई हुन्द आद क्यथो याद म्य प्योहम
चुई छुक दोख चुई छुक सोख चुई छुक परमानन्द मोख
चुई छुक कम चुई छुक ज़्यादि क्यथो याद म्य प्योहम ।'
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ0- 151-152.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

बहुत भटकाने के बाद और उसके प्रेम की कठिन-परीक्षा लेने के पश्चात् आशुतोष गौरी पर प्रसन्न होते हैं और उसके साथ विवाह-सूत्र में बन्ध जाने का वचन देकर, वापस कैलास पर्वत पर लौट आते हैं और सप्त ऋषियों के साथ अरुंधती तथा नारद मुनीश्वर को हीमाल के घर गौरी का हाथ मांगने के लिए भेज देते हैं । मानीवती और हीमाल सहर्ष रिश्ते को स्वीकार करते हैं और तत्पश्चात् निश्चित तिथि पर विवाह हेतु शिव जो विचित्र रूप मुद्रा में सर्प माला धारण किये, वृषभ पर सवार, भस्म-स्नात, सिंह चर्म धारण किये, मस्तानी चाल में हीमाल के घर बारात के साथ पहुँचते हैं । देखते ही मीनावती नारद मुनीश्वर के सम्मुख रोते हुए विलाप करती है । वह शिव जी की लीला को समझ नहीं पाती । क्रुद्ध होकर वह अपने आपको कोसती है और बेटी के निर्णय पर क्षोभ व्यक्त करती है । जोगी बाबा को बेटी के दूल्हा के रूप में देख कर वह तड़प उठती है और भीतर की पीड़ा को अश्रुओं से भिगो कर नारद-मुनीश्वर के सम्मुख इस प्रकार व्यक्त करती है :-

—'कहा मीना ने नारद से 'फूटे भाग मेरे'
यह भस्माधारी सन्यासी कैसे दूल्हा बन आया ?
किस ने कांछा मेरी बेटी के हेतु ऐसा दूल्हा ?
किस ने चाड़ा राजकुमारी को जोगी वरले ?
चीख़ उठी वह व्याकुल हो लोक लाज के भय से
खाक़ मल ली निज तन पर और फाड़ दिये सब वस्त्र
देखो, क्षणमात्र में क्या से क्या हो जाता

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

राजमहल बन गया आज मातम-खाना ।'[1]

पर्याप्त अनुनय विनय के पश्चात् शिवजी प्रसन्न हो कर अद्भुत सौन्दर्य युक्त और तेजवान दूल्हा का रूप धारण कर लेते हैं और तत्पश्चात् गौरी का विवाह सम्पन्न हो जाता है । विवाह के अवसर पर वे समस्त धार्मिक अनुष्ठान और सामाजिक रीति-रस्म पूरे किये जाते हैं जो कश्मीरी पण्डित परिवारों में ऐसे शुभ अवसरों पर सम्पन्न होते हैं । लगन-मंडप पर पुष्प-पूजा का कवि ने विशेष रूप से वर्णन किया है । नाना-रंगी पुष्प अर्पित करते हुए दूल्हा-दूलहिन की बड़ी श्रद्धा के साथ पूजा की जाती है और परिवार के सभी निकटस्थ सम्बन्धी इस पूजा में सम्मिलित हो कर भविष्य की मंगल कामना करते हुए नव-दम्पति को सुखद पारिवारिक जीवन जीने के हेतु आशीर्वाद देते हैं । मन्त्रोच्चारण के साथ लग्न का यह विशिष्ट अनुष्ठान सम्पन्न होता है । शिव और शक्ति की पुष्प पूजा हो रही है । यह दृश्य निस्सन्देह स्वर्गिक है और

1-' दपयोनस बेयि नारद जी यि क्या गोम
गोसान्या ह्योह यि क्युत महाराज़ा यिथ प्योम
यि कॉम योछ़नम युथुई महाराज़ योनय
गोसोन्या ह्यूह राज़ि कुमारे च़े नीनय
द्विचन अदि बाख लजिस वदनि लूक पामन
मलिन लंज ख़ाक वॉलिन चाक जामन
दमन मंज़ वुछ बनान क्या व्यवहारस
सपिन मातम सराया राजदारस ।'

- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ0- 187.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कवि इस का एक फोटोचित्र शब्दों के माध्यम से अत्यन्त कलात्मकता के साथ प्रस्तुत करते हैं :-

--'ढूँढ ढूँढ कर चारों ओर से लाये फूल
चुन चुन कर पुष्प पूजा में लीन हुए
नाना-रंगी फूलों के अम्बार बने
मंडलाकार में घेर लिया शिव शक्ति को
वेद मंत्रों का पाठ कर रहे थे ब्रह्मा जी
उमा संग है शिव जी के, दया करो हम पर
'अन्तर बाहर शिव ही शिव है' यह महसूस हुआ उनको
और प्रेमावेग में लगे लेने केवल शिव का नाम ।'[1]

स्त्रियों की ओर से यह शिकायत करने पर कि पिया के घर से गोरी के गहने नहीं आये हैं शंकर की इच्छा से स्वर्ण हिमपात होता है और सारा वातावरण हर्षोल्लास में निमग्न शिव के जय जयकार से गूँज उठता है । इसके पश्चात् शिवरात्रि के महात्म्य पर प्रकाश डाला गया है । इसे शिव और पार्वती के प्रथम मिलन की रात्रि मान कर कवि मुक्त कंठ से मधुर मिलन के महिमा-गान में लीन हो जाता है । अब शिवजी पार्वती के साथ कैलास पर्वत की ओर प्रस्थान करने के हेतु तैयारी कर रहे हैं और विदाई के समय मीनावती के साथ-साथ अन्य उपस्थित

1- 'अनिख वानि दिथ च़ोपारी पोश सारी
करनि लाग पोशि-पूज़ा च़ार च़ारी
करिथ प्रथ रंगि रंगे पोशनी ढेर
कोरख शिव शक्ति रूपस अन्दि अन्दि गेर
परान ओस वोद मंगल श्रुकि ब्रह्मा
उमा छय सूत्यि सूत्यी कर च़ि क्षमा
तिमन बास्योव न्यबर अन्दर शिवुई शिव
च़लिख नोरिथ शिव सिन्द लोलि आलव ।'
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ0- 239.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सगे सम्बन्धी पुनः शिव-वन्दना करते हुए गद्-गद् हो उठते हैं । इसी प्रकार शिवजी के रुख़्सत होने पर भी होमाल के समस्त शुभ-चिन्तक एकत्र हो कर मुदित मन से शिवनाथ की स्तुति वन्दना करते हैं और इस शुभ विवाह अनुष्ठान के सम्पन्न होने पर एक दूसरे को बधाई देते हैं । कवि तत्पश्चात् 'ओ३म्' शब्द की दार्शनिक व्याख्या लीलाओं के द्वारा करते हैं और संसार के मिथ्या/नश्वर/असार होने का एहसास उसे संसार व्यवहार में मग्न लोभी जनों को सावधान करने के लिये प्रेरित करता है :-

--'संसार में रहो निर्मल
देखो पद्म का पत्ता रहता जल के ऊपर
पानी में रह कर भी त्याग तरावट
होश नहीं खोना, बुद्धि विवेक के पद्म-पुष्प का आनन्द भोग।
निष्कल रूप का खा ले पुलाव
निर् - माया को पी ले चाय
मोह-पथ पर थकन रहेगी न शेष
होश नहीं खोना, बुद्धि विवेक के पद्म-पुष्प का आनन्द भोग।
विवेक के वय-सर × में कर ले स्नान
मन प्राण से अद्वैत का कर ले पालन
तुरीय उपवन में योग-निद्रा का सुख भोग
होश नहीं खोना, बुद्धि विवेक के पद्म-पुष्प का आनन्द भोग ।'

× 'वय-सर' -- एक सरोवर का नाम ।

1- 'संसारस मंज़ रोज़ न्यरमल
वुछति खयल वथरस लारिमा ज़ल

§ शेष अगले पृष्ठ पर §

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अन्त में कवि ने गौरी के प्रति अस्तुति गान को उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया है ।

स्पष्ट है कि 'शिव परिणय' में शिव-पार्वती के विवाह की कथा मुख्य रूप से वर्णित है और इसके लिये कवि ने कथा-वाचक के समान वर्णनात्मक शैली को अपनाया है । लेकिन रचना का सम्पूर्ण सौन्दर्य केवल कथा-वर्णन में ही नहीं है अपितु कई अन्य तत्त्वों के समुचित संयोग से 'शिव परिणय' एक विशिष्ट रचना बन पड़ी है । विवाह-कथा के साथ साथ इस रचना के कुछ अन्य विचारणीय प्रमुख आकर्षण इस प्रकार हैं :-

।/ 'शिव परिणय' में वर्णनात्मक कथा-शैली और गीति-शैली का समुचित संयोग हुआ है । कथा की मुख्य धारा में असंख्य शिव लीलाएँ भी प्रवाहित हैं । इतना ही नहीं, कृष्ण लीलाएँ और देवी देवताओं के स्तुति-गीत एवं भजन भी हमें इसमें देखने को मिलते हैं । वही समन्वयात्मक दृष्टिकोण इस रचना में भी अपनाया गया है और विष्णु

---

§ पृष्ठ । का शेष भाग §

पा'निस मंज़ आ'सिथ तराव त्राव
डल मे होशि च्यत को पम्पोश छाव ।
निष्कल रूप कुई पोलाव खेय
निरमायापि हिंज़ याया चेय
मुह वति थकनुक रोज़ो न ताव
डल मे होशि च्यत को पम्पोश छाव ।
विवेक वयसर मंज़ कर आण
अद्वैत पानि नाव मन तय प्राण
तुरोय बागि यूगि न्यन्द्रा त्राव
डल मे होशि च्यत को पम्पोश छाव ।'

- 'कुलयात कृष्ण जू राज़दान' - पृ०- 338-340.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

के अवतार रूप की वन्दना मुक्त कंठ से की गई है । कृष्ण राज़दान सगुण भक्त थे अथवा निर्गुण - यह कहना तनिक मुश्किल है, लेकिन इसमें सन्देह नहीं कि वे शिव के अनन्य उपासक थे और समन्वय की खिचड़ी पकाने में सिद्ध हस्त । भक्ति के किसी सम्प्रदाय अथवा वर्ग के साथ उन्हें जोड़ा नहीं जा सकता । आरम्भ में ही यह बात स्पष्ट की दी गई है कि वे एक मंझे हुए कलाकार (कवि) थे । पहले कवि थे और फिर भक्त अत: प्रत्येक रचना में, चाहे वह शिव से सम्बन्धित है या राम से अथवा कृष्ण से, एक सच्चे कवि का कवि हृदय प्रतिबिम्बित दिखाई देता है । यहाँ शिव-स्तुति में कृष्ण-लीला का माधुर्य घुल-मिल गया है । राम भक्ति में अन्य देवी-देवता भी भागीदार बन गए हैं । यह तो अजब संगम है जो एक सच्चे भक्त को जहाँ आनन्द विभोर कर देता है वहाँ कभी कभी शंका में भी डाल देता है ।

2/ सम्पूर्ण कथा लोक मानस से जुड़ी है । एक विशिष्ट परिवेश (environment) को ध्यान में रख कर राज़दान साहब शिव-पार्वती की विवाह कथा सुनाते हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि यह शुभ-विवाह कश्मीर में किसी प्रतिष्ठित पण्डित परिवार में हो रहा है । अत: विशिष्ट लोक-जीवन और समाज से सम्बन्धित प्रत्येक रीति-रिवाज का पालन बड़े चाव के साथ हो रहा है । 'शिव परिणय' में निस्सन्देह कश्मीरी पण्डितों का पारिवारिक जीवन समस्त विश्वासों, परम्पराओं, रीति-रिवाजों और मान्यताओं के साथ प्रतिबिम्बित हो उठा है ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

3/ शैव-दर्शन तथा अद्वैतवादी विचारधारा का प्रभाव सम्पूर्ण रचना में सामूहिक रूप से देखने को मिलता है । यहाँ शिव त्रिक-सिद्धान्त के आधार पर तीनों रूपों में (शिव-रूप, शक्ति-रूप, तथा नर-रूप) लीला करते हुए मन्त्र-मुग्ध कर देते हैं । कहने का अभिप्राय यह है कि 'शिव-परिणय' शिव-भक्त कृष्ण राज़दान के निजी विश्वासों के अनुरूप सर्व-शक्तिमान ब्रह्म की व्यक्त लीला है । वही शिव जो जगत का मूल कारण है, सौन्दर्य का सार और आनन्द का स्रोत है तथा शैवमत-अनुयायी भक्त-जनों को भक्ति का ठोस आधार है, इस लीला जगत में व्यक्त होकर शक्ति के संग प्रकृति के कण-कण में अपने सौन्दर्य का विस्तार पाता है । 'शिव-परिणय' में शिव-भक्त अपने विश्वासों के अनुरूप ही अपने इष्ट के प्रति समर्पित रहता है । न केवल भक्त-जन अपितु असंख्य देवी देवता 'शिव-स्तुति' में लीन दिखाई देते हैं । इनमें उल्लेखनीय है विष्णु, ब्रह्मा, धर्मराज-यमराज, सुरपति, सप्त-ऋषि, वरुण देव, चित्रगुप्त, सूर्य देव, चन्द्रमा, लक्ष्मी, सरस्वती, भौम, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनिश्चर तथा नारदमुनीश्वर ।

4/ 'शिव-परिणय' की कई लीलाओं और स्तुति-परक गीतों में विशिष्ट दार्शनिक पृष्ठभूमि पर गहन विचारों की अभिव्यक्ति अत्यन्त कलात्मकता के साथ हुई है । अद्वैतवादी विचारधारा से प्रभावित कवि अन्तिम क्षणों में जगत-मिथ्या के बोध से पीड़ित होकर जीव को सांसारिक बन्धनों से मुक्त होने के लिए तथा पंच इन्द्रियों को अपने वश में करने

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

के हेतु सावधान करते हैं । अपने आप को पहचान कर अपने लक्ष्य को प्राप्ति हेतु साधना रत रहना जीव के लिये परमावश्यक है । मानस के तमसान्धकार को तो ज्ञान ज्योति से ही प्रज्वलित किया जाता है । विवेक बुद्धि का अपना महत्व है अवश्य क्योंकि हंस बुद्धि से ही कांच और कंचन को पहचान सम्भव है ।

5/ कई पौराणिक कथा सन्दर्भों के आधार पर कृष्ण जू ने 'शिव-परिणय' की कथा को सम्यक् विस्तार प्रदान किया है । इन पौराणिक सन्दर्भों अथवा मिथकीय पात्रों के द्वारा कवि लोक मिज़ाज के अनुकूल शिव-पार्वती की कथा को एक नवीन आकार प्रदान करने में सफल हुए है । मेरा दृढ़ विश्वास है कि जीवन के किसी भी मोड़ पर अपनी परम्परा से अलग होना घातक सिद्ध होता है । यहाँ इस बात को स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि परम्परा और अन्ध विश्वास एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न और अलग हैं । जहाँ हम अपनी परम्परा से अलग हो जाते हैं वहीं हम अपनी पहचान खो देते हैं । पौराणिक कथाएँ, सन्दर्भ और पात्र आज भी हमें अपने अतीत के साथ जुड़ने और वर्तमान के साथ जूझने में आत्मिक शक्ति प्रदान करते हैं । प्रस्तुत रचना में उमा के नामकरण से सम्बन्धित कथा, प्रहलाद की कथा, विष्णु की शिव-भक्ति, यमराज धर्मराज की शिव स्तुति, हर्षेश्वर की कथा तथा भस्मासुर की कथा इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं । इतना ही नहीं सम्पूर्ण कथा में नारदमुनीश्वर की भूमिका भी पर्याप्त महत्त्वपूर्ण है ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

6/ कश्मीर के महान शैवमताचार्य, दार्शनिक, आलोचक तथा काव्य-शास्त्र के आचार्य अभिनवगुप्त के प्रकाण्ड पाण्डित्य से प्रभावित होकर राज़दान साहब ने एक स्तुति-गीत (सारो हयथ निम सर्व वोपकारो, अभिनवगुप्त आचारो ज़न)[1] लिखा है और इस प्रकार 'तन्त्रालोक' तथा 'अभिनवभारती' के रचयिता[2] की असाधारण प्रतिभा के प्रति अपनी श्रद्धा के सुमन अर्पित किये है । कहने का अभिप्राय यह है कि केवल पौराणिक सन्दर्भ ही नहीं अपितु शुद्ध ऐतिहासिक सन्दर्भ एवं पात्र भी 'शिव-परिणय' के कथा-विस्तार में सहायक सिद्ध हुए हैं ।

7/ राज़दान साहब ने 'शिव-परिणय' की कुछ लोलाएँ खड़ी बोली में लिखी हैं और कुछ लोलायें खिचड़ी भाषा में । खड़ी बोली और कश्मीरी का मिश्रित रूप इन लोलाओं की अभिव्यक्ति कला की दृष्टि से आकर्षक बना देता है । प्रयोगात्मक स्तर पर इन रचनाओं का ऐतिहासिक महत्त्व है ।

पण्डित कृष्ण जू राज़दान ने सैंकड़ों लोलाएँ सगुण कृष्ण के मन मोहक छवि-चित्रों को साकार रूप प्रदान करने के लिए लिखी हैं । प्रो० जे० एल० कौल के विचारानुसार इन लोलाओं में रहस्य तत्त्व एवं

1- 'सर्वोपकारी ! सबके संग ले चल मुझ को
अभिनवगुप्त आचार्य सदृश ।'
- कुलियात कृष्ण जू राज़दान' - पृ०- 348

2- अभिनवगुप्त (जन्म सन् 950 ई० और 960 ई० के मध्य) - कश्मीर शैव-दर्शन के प्रसिद्ध आचार्य, संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड पण्डित एवं महान शिव-भक्त । इनकी प्रसिद्ध रचना है - "तन्त्रालोक" । 'अभिनवभारती' में इन्होंने रस का शास्त्रीय विवेचन प्रस्तुत किया है । विश्वास किया जाता है कि कश्मीर में गुलमर्ग मार्ग पर तहसील मागाम के पास एक गुफा में अपने 1200 शिष्यों के साथ समाधिस्थ हुए ।
"हिस्ट्री आफ़ कश्मीर" - प्रो० एन० कौल बामज़ई, पृ०-250

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

दार्शनिकता अपेक्षाकृत कम है । ये लीलायें माधुर्य गुण से ओत-प्रोत है ।[1] इन लीलाओं में कृष्ण की बाल्यावस्था से लेकर राज्य-प्राप्ति तक के सुन्दर चित्र देखने को मिलते हैं । जसोदा और नन्द बाबा के प्राण प्रिय माखन चोर के नटखट जीवन से सम्बन्धित अनेक छवि-चित्र उन्होंने बड़ी तन्मयता के साथ प्रस्तुत किये हैं ।[2] इन लीलाओं में लोक जीवन के अनेक सौन्दर्य-बिम्ब साकार हो उठे हैं । नाद सौन्दर्य की दृष्टि से भी इन लीलाओं का अपना विशेष महत्व है । संगीत के साथ पण्डित जी को विशेष लगाव था । वे स्वयं एक अच्छे गायक थे और प्राय: अपनी रचनाएँ स्वयं गा कर सुनाते थे । मस्त होकर गाने के साथ नृत्य भी करते थे । किसी भी कश्मीरी भक्त कवि में लोक संगीत के साथ इतना आकर्षण नहीं रहा है जितना पण्डित कृष्ण राज़दान को था । बहते झरनों के झर-झर में, वेगवान पवन के साँय-साँय में, पक्षियों के कलरव में, पत्तों की सरसराहट में और नदियों की कल-कल ध्वनि में उन्हें कृष्ण बाँसुरी का नाद सुनाई देता है । वस्तुत: सम्पूर्ण प्रकृति को कृष्णमय देखकर वे रस छलकाते आत्म-विभोर हो उठते हैं । उनकी उल्लेखनीय कृष्ण लीलाएँ हैं :-

ॐ --' बालकृष्ण की है प्रतीक्षा
उछल कूद कर आ जाते !
बाँसुरी नाद पर ध्यान धरती हूँ

1- "कश्मीर" - अक्टूबर 1950 ई० - 'मार्डन पोरियड आफ कश्मीरी लिटरेचर' - जे० एल० कौल, पृ०- 230.
2- "कश्मीर" - दिसम्बर 1958 ई० - 'कृष्ण जू राज़दान' - बी० एल० कौल - पृ०- 299.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

क्यों न बोराऊँ नाद सुनते हो
पीछे दौड़ती है जसोदा
उछल कूद कर आ जाते ।'[1]

ग्रा --' बालक अवस्था पर मैं बलिहारी
मन - हिंडोले में दुलराऊँ
वासुदेव निकल पड़े तुझ को लेकर, मैं बलिहारी
गोकुल जा पहुँचे तुझ को लेकर, मैं बलिहारी
जसोदा माँ का दूध पिया, मैं बलिहारी
उछल कूद कर मन हिंडोले में दुलराऊँ ।'[2]

इ --' कानों में गूँज उठा है मुरली नाद
कहते हैं राधाकृष्ण पधारे हैं ।
नन्द ग्वाल से जसोदा बोली -
जन्मा है जगत जिसे वही जन्मा हमारे घर
मुख खोला जब उसका आश्चर्य जात हुआ
कहते हैं राधाकृष्ण पधारे हैं ।'[3]

1- 'बालि कृष्णस छस ब्व प्रारान छालि मारान यो ना
बंसरी छस कन ब्व दारान शब्द बूज़िथ मत ना
जसुदा छस पति लारान छालि मारान योना ।'
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ0- 358.

2- 'बालक अवस्थायि लग्यो लोलो मन मंज़लिस मंज़ करय हो हो
वसुदेव निस निनसुई लग्यो गोकुल ह्यथ यिनसुई लग्यो
जसोदायि दोद चनसुई लग्यो मन मंज़लिस मंज़ करय हो हो ।'
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ0-266-267

3- 'मोरली शब्द असि ग्व कनन
वनन छि राधा कृष्ण हय आव
जसोदा छय नन्द गूरिस वनन
ज़गत यस ज़ाव सुई असि ज़ाव
आस मुज़रोवमस त आश्चर छु ननन
वनन छि राधा कृष्ण हय आव ।'
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ0-208.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ई -- {सखि ! } नन्द लाल आये हैं वृन्दावन
रास खेलने गोपियों के संग ।
तड़प रही थी प्रिय राधा
उसे देखने आये हैं
छोड़ मथुरा और रुक्मिण
रास खेलने गोपियों के संग ।
पूतना ने सोचा दूध पिलाऊँ
विष धारण किया स्तनों में
एक चूस* से निकले उस के प्राण
रास खेलने गोपियों के संग
नन्द लाल आये हैं वृन्दावन ।'[1]

उ --' जाने किस हाल में ! सायम्
ग्वाल बालों के संग
आते देखा श्याम लाल को
कामधेनुओं को साथ लिये ।'[2]

---

x मूल शब्द चूसना {क्रिया वाचक} है । स्तन पान के लिये मैंने 'चूस' शब्द का प्रयोग किया है ।

1-' आव हय नन्दलालि बिन्दाबन
सूत्यि गूपियन गिन्दने
टाठि राधा छस क्रेशन
तस छु आमुत वुछने
मथरायि त्रांविथ रुक्मण
सूत्यि गूपियन गिन्दने
पूतनायि दोप दोद ब्व चावन
ज़हर बबि लाज बरि ने
अकि दामि गई अथि हावन
सूत्यि गूपियन गिन्दने ।'
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ0-211

2- 'शामि कांल गूरि बालकन सूत्यि कमि हालि
वुछ यिवान शामि लाल कामधीनि हयथ ।'
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ0-393.

CC-0. Kashmir Research Institute, Srinagar. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ऊ --'प्रिय ! निमन्त्रण है मेरा
मैं भरपूर आतिथ्य सत्कार करूँगी
मालाएँ तैयार रखूँगी
हाथों हाथ लूँगी ।'[1]

ए --'मैं राधा कृष्ण पर बलिहारी
काश ! आ जाते
चितचोर पिया
नन्द ग्वाल के अकनन्दुन आ जाते !
जसोदानन्द, आनन्द कन्द गोविन्द ने मन मोह लिया
निर्द्वन्द्व ने, निस्पन्द ने, नाद बिंद ने मन मोह लिया
प्रेम जाल में जो उलझाता समेगा फन्द उस के कौन ?
चित चोर पिया
नन्दग्वाल के अकनन्दुन आजाते !'[2]

कृष्ण जू राज़दान ने अत्यन्त सुन्दर रास-लीलाएँ लिखी हैं । इन लीलाओं में रास-नृत्य का नाटकीय चित्रण वस्तुत: कृष्णमय होने की

1-' लालि यिति तालि प्याल हो बरयो
मालि करै मालि हो करयो ।'
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ0- 398.

2-' छस ब्व राधा कृष्ण नावस कलवन्दनुई यियोना
च्यथ म्य न्यूनम नन्द गोरिन अकनन्दनुई यियोना
जसोदानन्द आनन्द कन्द गोविन्द नुई मन न्यूनम
निर्द्वन्द्व नुई, न्यस्पन्द नुई, नादब्यन्द नुई मन न्यूनम
प्रेम ज़ालस मंज़ लागन वाति कुस तस फंद नुई
च्यथ म्य न्यूनम नन्द गोरिन अकनन्द नुई यियोना ।'
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ0- 515.

रास -(सं0) शब्द, ध्वनि, कोलाहल, नृत्यक्रीड़ा
कृष्ण-लीला के अभिनय युक्त नाटक
रास मंडल - रास क्रीड़ा करने वालों का वृत्ताकार समूह
रास धारी - कृष्ण-चरित्र का अभिनय करने वाला अभिनेता/नट

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अवस्था का यथार्थ बोध है । रास भूमि पर रास-मण्डल की परिधि में रास-विलास में निमग्न रास-बिहारी की मनमोहक छवि कवि को अधीर बना देती है । यहाँ अत्यन्त सहजता एवं शुद्ध भक्ति-भाव के साथ भक्त स्थिर चित्त हो कर अपने प्रिय में लीन होने का प्रयास करता है । जहाँ परमानन्द की लीलाओं में गहन-चिन्तन एवं गूढ़ विचारों की प्रधानता है वहाँ कृष्ण राज़दान की रास लीलाओं में एक निश्छल भक्त-हृदय की विशुद्ध प्रेमाभिव्यक्ति साकार हो उठी है । संगीत, नृत्य एवं काव्य का अद्भुत संगम रास का मुख्याकर्षण है । इसमें प्रेम की उष्णता और लय होने की उत्तेजना एक साथ देखने को मिलती है । रास में लीन होकर अथवा खोकर बिन्दु अपने क्षुद्र अस्तित्व को सिन्धु में विलीन कर देता है । यह अलौकिक आनन्द की स्थिति है ।[1]

पण्डित कृष्ण जू राज़दान की उल्लेखनीय रास लीलाएँ हैं :-

—' यकजा हो जाओ, मिला के हाथ परस्पर
चलो, रास खेलने चलें ।
इक रात हुई छः मास
जब गोपी नाथ नृत्यमग्न हुए
दिन भयो साल और पहर हुआ मास
चलो, रास खेलने चलें ।'[2]

1-' रास कृष्ण राज़दान के गीतों में एक उदात्त अतीन्द्रिय उल्लास के रूप में बिम्बित है —'
-"कश्मीरी साहित्य का इतिहास" - डॉ० तोषख़ानी, पृ०-194.

2-' समिव, करव अथवास
पकिव रास गिन्दाने ।
शो रय्थ सांपिन कुनी रात
गोपीनाथ नच़नि लोग
वहर दोह ग्व पहर मास
पकिव रास गिन्दाने ।'
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" - पृ०-280.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आ --' रात हो गई दिन और बस्ती भयी वृन्दावन
मन मोहन नाथ चुरा कर मन, चले गये ।'[1]

इ --' पगला गई टोह लगाते कृष्ण को
हम, अर्द्धरात्रि में उनींदी आँखों से ।'
नाच नाच के गाती गीत
स्वयं नाचती घेरे पर और मध्य में
रंग पड़ गया फीका श्याम को ढूँढते ढूँढते
हम, अर्द्ध रात्रि में उनींदी आँखों से
पगला गई टोह लगाते कृष्ण को ।'[2]

ई --' मन मेरा है वृन्दावन लो लो[3]
आत्म रूप है नारायण लो लो
कृष्ण नाम है आनन्द गण लो लो
कृष्ण नाम है मोक्ष भक्तों को लो लो
कृष्ण नाम है प्राण प्राणियों में लो लो
कृष्ण नाम है शक्ति प्राणों में लो लो ।'[4]

1-' रातस दय्न ग्व बस्ती वन गव
मन गव ह्यथ मनमोहन नाथ ।'
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ०- 286. - 287

2- 'कृष्णस छ़ारान आंस गयि मच़ै
न्यसफ शबन न्यन्दरे हच़ै
नच़न नच़न वनान छि वच़न
अन्दस तं मंज़स पानय छि नच़न
श्यामस छ़ारान अ्सि गयि छच़ै
न्यसफ शबन न्यन्दरे हच़ै ।'
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ०- 314

3- "लो लो" - कश्मीरी लोकगीतों की एक विधा - 'लो लो गीत' ।
श्रृंगार परक गीतों में अथवा लोकगीतों में प्रेम-सम्बोधन ।

4-' मन म्योन बिन्दराबन ति लो लो, आत्म रूप नारायण ति लो लो
(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

इन लीलाओं का गहन अध्ययन करने के पश्चात् यह बात स्पष्ट होती है कि राज़दान साहब विष्णु के सगुण रूप पर भी आसक्त थे। यह सत्य है कि साधना पथ पर प्रकृति के अणु अणु में उन्हें शिव की ज्योति प्रतिबिम्बित दिखाई देती है लेकिन शिव केशव से भिन्न नहीं। उन्हें निर्गुण को सगुण रूप में देखने की उत्कट इच्छा है। यहाँ वैष्णव - भक्ति का माधुर्य उनके इष्टदेव शिव को समझने और तत्पश्चात् शिवमय होने में सहायक सिद्ध हुआ है, बाधक नहीं। समन्वय उनकी काव्य साधना का मूल ध्येय दिखाई देता है। इसमें वे सफल हुए हैं अथवा असफल, सन्तुष्ट दिखाई देते हैं या विवश - यह विचारणीय है। राज़दान साहब ने हिन्दी बोली में भी कुछ गीत और भजन लिखे हैं। यह सत्य है कि इन रचनाओं में पण्डिताऊ अथवा साहित्यिक हिन्दी का उलझा-सुलझा रूप देखने को नहीं मिलता लेकिन एक निर्मल कवि-हृदय की मार्मिक अनुभूतियों को मुखर कर देने वाली सरस अभिव्यक्ति अवश्य मिलती है। कहीं इन रचनाओं में शिव तो कहीं कृष्ण लीला-मग्न दिखाई देते है। इन में उल्लेखनीय हैं -

'फंस गए मोह जाल में, हम तुझे आए शरण,',

'जागो जागो श्याम सुन्दर योग निद्रा से',

---

§ पृष्ठ। का शेष भाग §

कृष्ण नाव छु आनन्द गण ति लो लो कृष्ण नाव छु मूखि - भक्तियन ति लो लो

कृष्ण नाव छु प्राण-प्राणियन ति लो लो कृष्ण नाव छु अन्न - प्राणन ति लो लो।'

- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ0- 218-219.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

' धारणा में तुम्हारा ध्यान धारूँ प्यारा',

' तबों को ले गया तन मन जो मोहन हो तो ऐसा हो',

' काशी से कश्मीर मंडल में आये',

' कृष्ण तेरे ध्यान में बन गया बस्ती को वन',

' मथुरा से बिन्द्राबन आया', आदि ।

डॉ० शशिशेखर तोषखानी का विचार है कि कृष्ण राज़दान की हिन्दी में रचित पंक्तियाँ 'कश्मीरी में लिखी हुई पंक्तियों का अक्षरशः अनुवाद है ।'[1] वस्तुतः यह बात सही नहीं है । हिन्दी रचनाओं के प्रणयन में भी उनकी मौलिक सर्जनात्मक प्रतिभा का भरपूर योगदान रहा है । एक नहीं, अपितु अनेकों उदाहरणों के द्वारा इस तथ्य को पुष्टि की जा सकती है । 'मथुरा से बिन्द्राबन में आया' रचना में उनका समन्वयात्मक दृष्टिकोण देखने योग्य है :-

'— ' तुम हो सूरज हम हैं छाया, राधा ने पाया मनमोहन
तीनों लोकों में चर्चा थी घर घर, शंकर बन गया गोपीश्वर
रास में कैसे उल्लास बनाया, राधा ने पाया मनमोहन
कृष्ण ने राम भक्तों को समझाया, राम हैं कृष्ण कृष्ण है शंकर
राग में त्याग-गुल दिखलाया, राधा ने पाया मन मोहन ।'[2]

मोहन के मन-मोहक गुणों का उल्लेख करते हुए कवि वास्तव में अपने मानस के हर्षोल्लास को अभिव्यक्त करते हैं । लघावस्था में लीलागान

1- "कश्मीरी साहित्य का इतिहास" - डॉ० तोषखानी - पृ०-200.
2- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" - पृ०- 470-471.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

करते हुए अभिव्यक्ति जब पौराणिक सन्दर्भों के साथ जुड़ जाती है तो कलात्मक और आकर्षक होने के साथ-साथ वैचारिक स्तर पर भी महिमा मंडित हो जाती है । बिन्द्राबन का वैकुंठ हो जाना तो इसी स्थिति का परिणाम है, इसे 'कश्मीरी में लोकी हुई पंक्तियों का अक्षरशः हिन्दी अनुवाद' तो नहीं कहा जा सकता :-

--' सबों को ले गया तन मन जो मोहन हो तो ऐसा हो
हुआ वैकुंठ बिन्द्राबन जो नन्दन हो तो ऐसा हो ।
वही निर्मल वहीं निर्गुण निरंजन हो तो ऐसा हो
ब्रह्मानन्द गुण पूर्ण सुदर्शन हो तो ऐसा हो
कराना शत्रु क्षय अर्जुन सहारा हो तो ऐसा हो
कृष्ण चन्द्र उज्जवल रोशन सितारा हो तो ऐसा हो ।
जसोदानन्द का प्यारा कुँआरा हो तो ऐसा हो
लड़कपन में फिरा बन बन नज़ारा हो तो ऐसा हो
हुआ वैकुंठ बिन्द्राबन जो नन्दन हो तो ऐसा हो ।'[1]

पण्डित कृष्ण राज़दान ने विस्तृत आकार की वर्णनात्मक रचनाएँ भी लिखी हैं जिनमें किसी दार्शनिक तथ्य की अभिव्यक्ति, किसी विचार-खण्ड की विस्तृत विवेचना अथवा किसी अनुष्ठान से सम्बन्धित धार्मिक या सामाजिक पृष्ठभूमि की विचारणा भी हुई है । कहीं कहीं इन रचनाओं में प्रतीकात्मक प्रयोग भी हुए हैं और कहीं प्रकृति की पृष्ठभूमि पर जीवन की विशद् व्याख्या करने का प्रयास भी किया गया है ।

1- " कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ0- 471-472.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

इन रचनाओं में उल्लेखनीय हैं :-

' धर्म राज को शिव स्तुति',

' ओ३म् शब्द का गुण कीर्तन'

' संसार के मिथ्या होने का उपदेश'

' समय को भाँड़-जश्न समझ'

' सन्तों को महिमा'

' कर्पूर गौरं करुणावतारं'

' इन्तिज़ार और विलाप', आदि

पण्डित कृष्ण राज़दान के भक्ति-काव्य में कहीं कहीं गूढ गम्भीर दार्शनिक तथ्यों एवं साधना की विभिन्न अवस्थाओं का सांकेतिक अथवा प्रतीकात्मक चित्रण हुआ है । यहाँ उनकी चिन्तना में कवि-हृदय का माधुर्य घुल मिल गया है । इस प्रकार की विचार प्रधान कविताओं में 'आरि छु वुज़ान वोगिन दरय'[1] राज़दान साहब की एक बहुचर्चित रचना है जिस में जीव अपने तुच्छ अस्तित्व के प्रति सचेत होकर सागर के समान विराट् परमसत्ता में विलीन होने के लिये लालायित दिखाई देता है । साधक के लिये साधना की विभिन्न स्थितियों/सोपानों को पार करना परमावश्यक है । कवि कहता है :-

— ' ऊँचे दर्रे से प्रवाहित है कुल्या
स्पष्ट मचाती शोर

1- 'यह गीत कृष्ण राज़दान के श्रेष्ठतम गीतों में से है जिसमें स्वयं उसके सागर गम्भीर व्यक्तित्व का बिम्ब उभरता है ।'
- "कश्मीरी साहित्यक का इतिहास" - डा० शशिशेखर तोषखानी-पृ०- 197.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सागर चुप्पी साधे है
मेरे आग्रह का क्या महत्त्व !
भीतर ज्ञान गृह में प्रवेश करा दे
पहुँचा दे चौथे मंज़िल[1] पर
वही रहूँ मैं आनन्द-मग्न
मेरे आग्रह का क्या महत्त्व !
बड़े चाव से मनमोहन के हेतु
खोल हृदय-तोरण बस इक झटके से
जहाँ वास हो अम्बर[2] के संग मेरा[3]
मेरे आग्रह का क्या महत्त्व !"[4]

शैव-मत को आधार भूमि पर कृष्णा राज़दान ने असंख्य रचनाएँ लिखी हैं। जिनसे उनके शैवमत अनुयायी तथा शिव-भक्त होने का प्रमाण मिलता है। देखा जाये तो उनकी विचार परिधि तथा चिन्तन क्षेत्र का केन्द्र-बिन्दु शिव है। वह शिव जो शक्ति के संग मिल कर लीलामय जगत में अपने सौन्दर्य कण बिखेर देता है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि कहीं भी उनका काव्य-व्यक्तित्व चिन्तन के भार से दब कर बोझिल नहीं हुआ है। यहाँ भक्ति को हृदय का सरस सहयोग प्राप्त हुआ है, श्रद्धा

1- तुरीयावस्था
2- असीम
3- ससीम
4- 'आरि छु वुज़ान वोगिन दरय वारि छु करान शोर
ग़ोपि छु करान समन्दरै ब्व क्या करै ज़ोर
अन्दिर ग़ानिथ ग्यान गरै हावुम चूरिम पोर
तथ मंज़ रूज़िथ आनन्द बरै ब्व क्या करै ज़ोर
कृष्णानस मुविराव भाविक बरै कुनी वरै तोर
यथ तरि च्य हयथ बसि अम्बरै ब्व क्या करै ज़ोर।'
-"कश्मीरी ज़बान और शाइरी" भाग-2 -अब्दुल अहद आज़ाद
पृ०- 428.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

में माधुर्य के कण घुल मिल गये हैं और ज्ञान के शुष्क रेगिस्तान में प्यार की स्रोतस्विनी प्रवाहित हो उठी है । इन शिव-लीलाओं में उल्लेखनीय हैं :-

अ --' बेल, माधवी और वन्य सुगन्धित तृण-पत्ते
गुलाब और पद्म पुष्प के गुच्छे
परमशिव की पूजा हेतु
समर्पित है शिव नाथ पर । '[1]

आ --' भावनाओं के पद्म पुष्प खिले हैं प्रेम सरोवर में
शिव शंकर की है पुष्प पूजा । '[2]

इ --' हरमुकुट पर्वत पर खोज लूँ तुझ को शम्भु !
भर ले चौकड़ी हरिणी की मधु-मुद्रा में शम्भु ![3]

ई --' जटाधारी हैं बुलबुल मन - मौजी
मैना कर ले जान पहचान
गेरूए वस्त्रधारी
व्यक्त हुए ब्रह्मचारी
त्याग में हैं व्यवहारी
मैना कर ले जान पहचान। '[4]

1-' ब्यल तय मादल व्यनि गुलाब पम्पोश दस्तय
पूज़ाय लागस परमशिवस शिवनाथस तय । '
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ0- 118.

2-' भाव पम्पोश फोलि प्रेम-ए-सरसुई
शिव शंकर सुई छि पोशि पूज़ा । '
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ0-236.

3-' बालि छाडथ हरमोख बालि शम्भू
दिति हरणिनि छालि लोलि डालि शम्भू । '
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ0-316

4-' रंगि बुलबुल छुई जटाधारी
हारी कर छि पारीज़ान

§ शेष अगले पृष्ठ पर §

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

--' कर्पूर वर्ण श्वेताँग !
गंग स्रोत जटाओं पर मैं बलिहारो ।'[1]

--' पहनो हैं कपाल मालाएँ, शम्भु !
त्रिभुवनपाल ! निमन्त्रण स्वीकारो ।'[2]

--' तुम्हारी इच्छा से
परस्पर कण कण जुड़ कर
स्वर्ण हिमानी हुए प्रवाहित
हे जोगी ! हमारे पोतल को सोने में बदल दे ।'[3]

स्वर्गीय मुहम्मद अब्दुल्लाह तिब्बतबक़ाल ने राज़दान साहब को शिव लीला 'ब्यल त मादल ब्यनि गोलाब पम्पोश दस्ते' सूफ़ियाना तर्ज़ पर गायो है । सम्पूर्ण घाटी में यह शिव लीला पर्याप्त लोकप्रिय हुई । इसमें सन्देह नहीं कि तिब्बतबकाल साहब की अद्भुत माधुर्य सिक्त वाणी ने बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कृष्ण राज़दान को पुनः जीवनदान प्रदान किया ।[4]

सहजता और सरलता कृष्ण राज़दान की भाषा का मुख्याकर्षण

---

§ पृष्ठ । का शेष भाग §
गोरि रंगि छिस वस्त्र सारो
नोन होवुन ब्रह्मचारो पान
त्यागि मंज़े छुई व्यवहारो
हांरो कर चि पांरो ज़ान ।'
- 'कुलियात कृष्ण जू राज़दान'-पृ०-317

1-' कोफूर रंगि सफेद अंगि
लगय गंगि जटानुई ।' - - वही - पृ०-141
2-' नाल छय कपालिमालि शम्भू
सालि वलि त्रिज़गतपालि शम्भू ।' - वही - पृ०-129
3-' यछि यानि दानि दानि वचि सोनि शोनि मानि
हा गोसानि सानि सरतलि करू सोन ।'
- 'कुलियात कृष्ण जू राज़दान' पृ०-254.

§ शेष अगले पृष्ठ पर §

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

है । उन्हें न पाण्डित्य प्रदर्शन का मोह था और न अलंकृत भाषा के प्रति आग्रह । अभिव्यक्ति को सशक्त एवं ग्राहय बनाने के हेतु कवि ने लोक में व्यवहृत मुहावरों, कहावतों तथा शब्द-प्रयोगों के साथ साथ नाना प्रकृति दृश्यों का भी चित्रांकन किया है । लोक-भाषा को कृष्ण राज़दान ने व्यापक स्तर पर ग्रहण किया है । लोक भाषा के साथ साथ लोक-संगीत के प्रति भी उन्हें विशेष रुचि थी । कश्मीर में प्रचलित लोक-गीतों को विविध शैलियों से वे भली भाँति परिचित थे । इनमें विशेष रूप से 'वनवुन' के गीत 'शिव परिणय' में शिव-पार्वती के विवाह के अवसर पर गाये गये हैं ।[1] राज़दान साहब अपने लोक जीवन के प्रति सचेत थे । लोक जीवन की पृष्ठभूमि पर ही तो 'शिव परिणय' का प्रणयन हुआ है ।

कृष्ण राज़दान द्वारा रचित उल्लेखनीय 'वनवुन' गीत हैं :-

अ --' बलायें ले लो रथसवारों की
पधारे हैं दूल्हा राजकुमारों के ।'[2]

(पृष्ठ का शेष भाग)

4- 'जिन्होंने तिब्बतबक़ाल के मधुर कंठ से ये शब्द और भाव सुने, वे भाव-विभोर हो उठे और कृष्ण राज़दान को ढूँढने लगे ।'
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" प्राक्कथन - श्री मुहम्मद यूसुफ टेंग, पृ0-4

1- 'इनकी अनेक लोलायें लोक साहित्य का अभिन्न अंग बन गई हैं और कश्मीरी पण्डितों के विवाह गीतों में सम्मिलित हुई हैं ।'
- "शीराज़ा" 1976 ई0 'शिव परिणय' मोतीलाल साक़ी. पृ0-40

2- 'पारि पारि लगितोस रथ सवारे
महाराज़ि राज़ कुमारे आव ।' -"कुलियात कृष्ण जू राज़दान"पृ0-210

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आ --' "वनवुन" गाने पहुँचो अप्सराएँ
स्वर्गधाम से ।'[1]

इ --' ओ३म् श्रीगणेशाय {नमः} श्लोक पढ़
पुष्प पूजा को बेला आ पहुँचो ।'[2]

ई --' बसन्तागमन पर फूटे कोंपल
सूयो टहनी पर
बाल मुकुन्द पधारे बारादरी पर ।'[3]

तुम्बकनारी[4] का कश्मीरी लोक संगीत में विशेष महत्व रहा है । आज भी विवाह के शुभावसर पर कई दिनों तक स्त्रियाँ घरों में तुम्बकनारी बजा बजा कर गीत गाती हैं । कश्मीर के लोक संगीतज्ञों ने इसे घड़े[5] का पूरक मान कर पर्याप्त महत्त्व प्रदान किया है । राज़दान साहब ने 'शिव परिणय' में तुम्बकनारी के गीत भी गाये

1- ' वनवुनि अछि रछि वछि स्वर्ग दारे
वारय कारवो दारय पूज़ ।'
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ०- 224

2- ' ओ३म् कर शुक पर श्री गणेशाय
पोशि पूज़ाय वेलि हय वोत ।'- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ०-232.

3- ' सोन्त आव बामन दराव होछि मचि हरे
बालादरि ब्यूठ बालमुकुन्द ।'
- "कृष्ण जू राज़दान" पृ०- 263.

4- एक प्रसिद्ध कश्मीरी लोक-वाद्य ।

5- मिट्टी का कलसा जिसे लोक-वाद्य के रूप में तुम्बकनारी के साथ बजाया जाता है ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

हैं जिनमें उल्लेखनीय हैं :-

--' हे अघोर नीलकंठ ! व्याप्त हो कण कण में
व्याप्त हो कण कण में ।'[1]

--' येत कर स्वर्ण पक्षी कह वन्य-मैना से
गा ले देवगुण 'तुम्बकनारो' पर ।'[2]

स्पष्ट है कि लोक-रंग पण्डित कृष्ण राज़दान की लेखनी का मुख्याकर्षण रहा है । यहाँ लोक ही काव्य का पर्याय बना गया है । कश्मीरी गीत-काव्य के इतिहास में राज़दान साहब का अपना विशिष्ट स्थान है ।[3] भले ही फारसी के अन्ध भक्त आलोचक उनका मूल्य आंकने में अपनी असंतुलित दृष्टि का परिचय दें लेकिन कश्मीरी भाषा और साहित्य का मर्मज्ञ कृष्ण जू राज़दान की सर्जनात्मक प्रतिभा की उपेक्षा नहीं कर सकता । आख़िर कंचन को कहाँ तक कांच समझ कर ठुकराया जायेगा ?

- 0 -

1-' हे अघोर नीलकंठ छुख हन हन तय
छुख हन हन तय ।'
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ0- 204.

2-' होशि पोशिनूलि वन वन हारे
दयि गोन ग्यव ग्यठ तुम्बकनारे ।'
- "कुलियात कृष्ण जू राज़दान" पृ0- 227.

3-' उनकी एक अपनी शैली, अपना लहजा, अपनी अलग पहचान है जो उन्हें कश्मीरी भक्त कवियों में सब से बड़े गीतकार के रूप में स्थापित करती है । विद्यापति की भाँति शिव और कृष्ण दोनों उनकी आस्था अत: उनकी सृजनात्मकता के केन्द्र में रहे हैं ।'
- "कश्मीरी साहित्य का इतिहास" - डा0 शाशि शेखर तोषखानी, पृ0- 189.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(II) आध्यात्मिक चिन्तन / विचार प्रधान काव्य एवं भक्ति में 'लोल' का महत्त्व

(अ) मास्टर ज़िन्दा कौल - (सन् 1884 - 1966 ई०)

1- जीवन : एक संघर्ष भूमि
2- मूल प्रेरणा स्रोत : भारतीय धर्म, दर्शन एवं प्राचीन इतिहास
3- विचार प्रधान कविता
4- भक्ति में चिन्तन का प्राधान्य : दर्शन का योग
5- शैव-दर्शन एवं तसव्वुफ़ का प्रभाव
6- 'लोल' की सार्थकता
7- वेदना की गहनानुभूति
8- कृष्ण भक्ति में कर्म-सन्देश
9- स्वस्थ भौतिक जीवन के प्रति आकर्षण
10- व्यंग्य - काव्य
11- आंचलिकता

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कश्मीरी भाषा में लिखित भक्ति काव्य के इतिहास में मास्टर ज़िन्द कौल का योगदान अभूतपूर्व है । 20वीं शताब्दी के पाँचवे दशक में जब कश्मीरी भाषा में लौकिक श्रृंगार, राष्ट्र प्रेम एवं देश भक्ति से सम्बन्धित रचनाएँ प्रमुख रूप से लिखी जाती थीं, मास्टर जी ने युगीन काव्य-धारा के प्रवाह में न बह कर श्रद्धा एवं प्रेम के समन्वित रूप अर्थात् भक्ति से ओत प्रोत रचनाएँ लिखीं । भक्ति काव्य की एक स्वस्थ परम्परा हमें कश्मीरी भाषा के साहित्य में देखने को मिलती है । लल्लेश्वरी के समय अर्थात् 14वीं शताब्दी से वर्तमान समय तक अनेक प्रतिभा सम्पन्न भक्त-कवियों ने इस काव्य प्रवृत्ति के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है । मास्टर जी इसी परम्परा के अन्तिम उल्लेखनीय हस्ताक्षर हैं जिन के द्वारा वर्तमान शताब्दी के वैचारिक घटाटोप में आध्यात्मिक-चिन्तन मानसिक शान्ति की उपलब्धि के हेतु एक सशक्त साधन के रूप में व्यवहृत हुआ है ।

एक निम्न मध्य वर्गीय कश्मीरी पण्डित परिवार में ज़िन्द-कौल का जन्म 17 जुलाई सन् 1884 ई० को हुआ । इनके पिता स्वर्गीय लक्ष्मण जू कौल कस्बा शिहिलटेंग-श्रीनगर में रहते थे । माँ

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

का नाम था – पद्मावती जिनका देहान्त युवावस्था में हो हुआ था। बाल्यकाल में ही उन्होंने उर्दू, फ़ारसी और अंग्रेज़ी भाषाओं का अध्ययन आरम्भ किया। सन् 1902 ई० में मैट्रिक की परीक्षा पास की और श्रीनगर में पुराने फ़तेह-कदल के निकट 'हिन्दू स्कूल' नामक एक प्राइवेट (ग़ैर सरकारी) शिक्षण संस्था में अध्यापक नियुक्त हुए। कालान्तर में राज्य के शिक्षा विभाग में उनकी नियुक्ति अध्यापक के रूप में हुई। सन् 1915 में उन्होंने बी० ए० की परीक्षा पास की। सन् 1924 में राज्य के 'पुरातत्त्व एवं अनुसन्धान विभाग' में शोध-सहायक (Research Assistant) के रूप में उनकी नियुक्ति हुई और फिर कुछ समय तक सचिवालय में प्रचार-विभाग में अनुवादक के रूप में काम करते रहे। सन् 1940 में वे सरकारी नौकरी से सेवा निवृत्त हुए। पुनः कुछ समय तक उन्होंने हब्बाकदल-श्रीनगर में स्थित 'वसन्ता गर्ल्ज़ हाई स्कूल' में अध्यापन कार्य किया। पंडित ज़िन्द कौल कस्बा घाटी के नामवर शिक्षक थे। उन्हें कई भाषाओं की सम्यक् जानकारी थी। फ़ारसी, उर्दू और हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेज़ी भाषा पर भी असाधारण अधिकार प्राप्त था। 'सुमरन' (स्मरण) में संगृहीत कविताओं के अंग्रेज़ी अनुवाद पढ़ कर मास्टर जी के अंग्रेज़ी भाषा ज्ञान का बोध हो जाता है। 'इतिहास' उनका प्रिय विषय रहा है। भारतीय इतिहास विशेष कर कश्मीर के प्राचीन इतिहास पर उनकी नज़र बहुत गहरी थी। यही कारण

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

है कि अपने शिष्यों में वे पर्याप्त लोकप्रिय रहे और समकालीन बुद्धिजीवी यहाँ तक कि शासनाधिकारी भी उनका सम्मान करते थे। लोग उन्हें अदब से 'मास्टर जी' कहते थे और इसी नाम से पण्डित ज़िन्द कौल कस्बा साहित्य जगत में अमर हुए।

मास्टर जी गृहस्थ थे। उनकी पत्नी का नाम था -रूपदलखिम। उनके दो पुत्र थे - जानकी नाथ एवं जगन्नाथ। ज्येष्ठ पुत्र जानकी नाथ जवाँमर्ग हुए। यह मास्टर जी के जीवन की सबसे बड़ी दुर्घटना है। कहते हैं कि मास्टर जी अपने बेटे के मृत शरीर के निकट आकर यह कहते हुए कि 'क्या बबुआ! और कोई उपाय नहीं था?' मौन हो गये और मृत्यु संस्कार की समाप्ति तक मौन रहे। मास्टर जी के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता है - आत्म सन्तोष। वे शाकाहारी थे। कभी क्रोध नहीं करते। अपने आप पर ज़बरदस्त नियन्त्रण था और कभी बेकार नहीं बैठते। अपने शिष्यों तथा साथियों को नवीन रचनाएँ पढ़ने के लिए निरन्तर प्रोत्साहित करते और स्वयं उनके लिये नवीन प्रकाशित पुस्तकें ढूँढ कर लाते और यह कह कर कि 'दिस विल सूट यू' अध्ययन के लिये प्रेरित करते थे।[1]

---

[1]- 'श्री मोहन कृष्ण तिक्कू कश्मीर घाटी के एक प्रसिद्ध केसर-व्यापारी हैं। उनकी दुकान हब्बाकदल के पास है और उनके परिवार के साथ मास्टर जी के गहरे सम्बन्ध रहे हैं। मैंने 15 अप्रेल 1986 को उनसे मिल कर मास्टर जी के विषय में पर्याप्त जानकारी प्राप्त की। इतना ही नहीं बल्कि 'दीवान साबित' एवं 'पत्र पुष्प' नामक अलभ्य पुस्तकें भी उनसे प्राप्त हुई जिनकी फोटोस्टेट प्रतियाँ आज भी मेरे पास सुरक्षित हैं। मैं श्री मोहनकृष्ण तिक्कू का विशेष रूप से आभारी हूँ।' — लेखक —

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मास्टर जो आरम्भ में फ़ारसी, उर्दू और हिन्दी में कविताएँ लिखते रहे। घाटी के एक सम्मानित चिकित्सक डा० श्यामसुन्दर फ़ोतेदार को समर्पित इनकी हिन्दी कविताओं का प्रथम संग्रह 'पत्र-पुष्प' शीर्षक से सन् 1941 ई० में कश्मीर मरकंटाईल प्रेस से प्रकाशित हुआ। उर्दू, फ़ारसी में वे 'साबित' कवि नाम से रचनाएँ लिखते थे। जनवरी सन् 1966 ई० में मास्टर जी के एक शिष्य श्री अर्जुन नाथ रैणा द्वारा सम्पादित 'दीवान साबित' शीर्षक से इन की फ़ारसी और उर्दू रचनाओं का एक संग्रह प्रकाशित हुआ। मई सन् 1951 ई० में मास्टर जी ने 'सुमरन' शीर्षक से अपनी कश्मीरी कविताओं का संग्रह देवनागरी लिपि में दो भागों मे प्रकाशित कराया। 52 पृष्ठों का प्रथम भाग मई सन् 1951 ई० में 'कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस, श्रीनगर' से प्रकाशित हुआ और 64 पृष्ठों का द्वितीय भाग अगस्त सन् 1951 में 'कश्मीर स्टैंडर्ड प्रेस, श्रीनगर' से प्रकाशित हुआ। बाद में जुलाई सन् 1955 ई० में दोनों भागों को मिला कर फ़ारसी लिपि में अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ 'लालारूख' प्रकाशन संस्था (श्रीनगर) के द्वारा 'नार्मल प्रेस' श्रीनगर से 'सुमरन का प्रकाशन हुआ और सन् 1956 ई० में इन्हें साहित्य अकादमी के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मास्टर जी कश्मीरी भाषा के पहले कवि हैं जो अकादमी से पुरस्कृत हुए।

कश्मीरी भाषा में मास्टर जी का काव्य-लेखन सन् 1942 ई०

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

से शुरू होता है और सन् 1954-55 तक वे बराबर लिखते रहे। इसके बाद इन्होंने कुछ नहीं लिखा है। इन तेरह-चौदह वर्षों में ही मास्टर जी ने कश्मीरी भाषा में रचनाएँ लिखीं और उसके बाद चुप्पी साध ली।

मास्टर जी के एक शिष्य आलोकदल-श्रीनगर के निवासी श्री जानकीनाथ बखारी ने 'माई टू मास्टर्स' (मास्टर ज़िन्द कौल - मास्टर शंकर पण्डित) शीर्षक से एक पुस्तक अंग्रेज़ी भाषा में लिखी है जिसमें उन्होंने घाटी के इन नामवर गुरुजनों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला है। कश्मीर के एक बहु-चर्चित लेखक श्री पी० एन० बज़ाज़ के साथ भी मास्टर जी के अच्छे सम्बन्ध थे। श्री मोहनकृष्ण तिक्कू से मुझे ज्ञात हुआ कि प्रायः श्री पी० एन० बज़ाज़ मास्टर जी के पास आते और अपनी रचनाओं के विषय में उनसे परामर्श लेते।[1] इतना ही नहीं, मास्टर जी उनकी रचनाओं की पाण्डुलिपियाँ पढ़ कर उनमें आवश्यकतानुसार फेर-बदल भी कर देते थे।

जीवन के अन्तिम दिनों में मास्टर जी काफ़ी रोग ग्रस्त रहे। अपने संघर्षशील जीवन में वे निरन्तर विपरीत परिस्थितियों से जूझते रहे लेकिन जब अमर का बुलावा/न्योता पहुँचा तो काया सुन्न पड़ गई और कारागार में बन्धी प्रिया ने अपने पिया के साथ पुनः

1- 15 अप्रेल 1986 को लेखक श्री तिक्कू से मिले थे।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सम्बन्ध जोड़ लिया । मास्टर जी का स्वर्गवास 4 अप्रैल सन् 1966 ई० को जम्मू में हुआ ।

मास्टर जी को भक्ति के किसी विशिष्ट सम्प्रदाय अथवा वर्ग के साथ बान्धना उचित नहीं होगा । उन्होने सतत चिन्तन के आधार पर परम-सत्ता को पहचानने अथवा अनुभव करने का प्रयास किया है । इस दृष्टि से वे एक समन्वयकारी लेखक/विचारक थे जिन्होंने निर्गुण एवं सगुण, ज्ञान एवं भक्ति तथा लौकिक एवं अलौकिक का परस्पर समन्वय करके उस अज्ञात सत्ता के रहस्य को समझने और तत्पश्चात् व्यक्त करने का प्रयास किया है ।

मास्टर जी भारतीय धर्म, दर्शन एवं प्राचीन इतिहास से भली भाँति परिचित थे । वे कई भाषाओं के ज्ञाता थे । विभिन्न भक्ति आन्दोलनों को उन्हें सम्यक् जानकारी थी, यही कारण है कि वर्षों का चिन्तन-मनन एवं गहन अध्ययन उनके भक्ति गीतों को वैचारिक गरिमा प्रदान करता है । यहाँ अन्ध श्रद्धा नहीं अपितु विचार एवं तर्क भक्ति को ज्ञान की महिमा से मंडित करते हैं । वे सगुण से अधिक निर्गुण के प्रति आकृष्ट हैं यही कारण है कि सूफ़ियों का प्रेम मार्ग उन्हें अपनी ओर आकर्षित करता है ।

मास्टर जी का विचार है कि यह समस्त जगत ब्रह्म की लीला है । एक से अनेक होने की इच्छा का प्रतिफलन । वस्तुतः

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

वही अलौकिक सौन्दर्य-पुंज सीमित बन्धनों में बन्ध कर सत्य और तथ्य को धूमिल छाया में जीव को सच्चे प्रेम की खोज में भटकाता है । मूल सूत्रधार तो कोई और ही है, जीव नट-नटी के समान इस विश्व के रंगमंच पर कुछ क्षणों के लिये उपस्थित होकर अपने अस्तित्व का आभास दिलाते हैं :-

राजा[1] अपने देश से निकल कर
खेलने हेतु यहाँ आये हैं ।
मानो मन-मुदित मयूर है
नृत्य लीला में मग्न,
खेलने हेतु यहाँ आये हैं ।
अपने घर के सुख भोग त्याग कर
यात्रा की ज़िम्मेदारी ले ली
परमधाम पर तोर[2] चढ़ा कर
खेलने हेतु यहाँ आये हैं ।'[3]

भक्त अपने लक्ष्य की प्राप्ति के हेतु सदा छटपटाता है । वह अपने

1- परमात्मा

2- 'तोर' कश्मीरी शब्द है जो लकड़ी की चटखनी के अर्थ में व्यवहार में लाया जाता है । द्वार के दो कपाट बन्द करने के लिय बीच में 'तोर' लगाया जाता है ।

3- ' राज़ि पनिने देशि द्रामुत योर आमुत गिन्दने
नचनस ज़न मोर आमुत योर आमुत गिन्दने
मटि हयोतमुत छुस सफ़र त्रोविथ गस्क आराम प्रंग
तथ बरस दित तोर आमुत योर आमुत गिन्दने
-'सुमरन' - मास्टर ज़िन्द कौल - लालारुख प्रकाशन, श्रीनगर जुलाई सन् 1955 ई०, पृ०- 8 कविता शीर्षक- 'राज़ि'

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अस्तित्व को प्रिय के अस्तित्व में विलीन करके बूँद और सागर के अन्तर को मिटा देना चाहता है । इस नश्वर शरीर में प्रकाश की एक किरण मानो क़ैद कर दी गई है जो सदा उस प्रकाश पुंज में लय होने के लिये व्याकुल और अधीर दिखाई देती है । वस्तुतः भवसागर को पार करने के लिये अपने आप को पहचानना नितान्त आवश्यक है । मांझी तो पार उतारने के लिये नाव ले कर खड़ा चिल्ला रहा है लेकिन उस नाव में बैठने की योग्यता और क्षमता हर एक में नहीं है । तभी तो माझी कहता है :-

--' घर गृहस्थी के सुख साधन जुटाते
तबाह हो गये, नष्ट हुए
थक कर टूट चुके हो ।
घर तो यही रहेगा
व्यर्थ है इस को भरना
खाली पार उतरते जाओ ।
चाहता कोइ पार उतरना ?'[1]

प्रकृति के नाना सौन्दर्य चित्र मास्टर जी को निरन्तर अपनी ओर आकर्षित करते हैं । उनका भावुक हृदय इन दृश्य-चित्रों पर मोहित

- -

1-' गरवेट सोम्बरान छिव मारि गामित
छ्यनिथ त थकित प्यमुति
घरि रोज़ि यती त कथ क्युत भरिव
छ्री तरिव अपोर, कांह मा स तरिव अपोर ।'
-'सुमरन' - कविता - "कांह मा स तरिव ?' पृ०-48.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

है पर साथ ही साथ चिन्तनशील मस्तिष्क प्रकृति वैभव में विराट् सत्ता को अद्भुत छवि से सक्रिय हो उठता है । कश्मीर में भारी हिमपात का दृश्य पर्याप्त आकर्षक होता है । श्वेत चादर ओढ़े प्रकृति को देख कर कवि वस्तुतः द्वैत में अद्वैत का व्यापक प्रसार पाता है । अपनी मौलिक चिन्तना के आधार पर अद्भुत दृश्य के सहारे गूढ़ तथ्य को अभिव्यक्त करते हुए वह इसे दिव्य-दर्शन के रूप में ग्रहण करता है । प्रकृति के एक विशेष रमणीय दृश्य अर्थात हिमपात के द्वारा रहस्यानुभूति को अभिव्यक्ति मास्टर जी की मौलिक उद्भावना है । 'समता का सन्देश' देने के हेतु प्रकृति का यह लावण्यमय रूप उन्हें निरन्तर प्रेरित करता है । हृदय के व्यापार में बुद्धि (विचार) का अद्भुत संगम होने पर सामान्य दृश्य चित्र भी महिमा मंडित हो जाता है :-

--' हिमपात --

मानो प्रकृति ने श्वेत चादर ओढ़ी
चान्दनी ने फ़र्श बिछाया ।
रूई के गालों के तले
धरती के ऊबड़ खाबड़ भाग
हो गये सम
एहसास दिलाया
सुन्दर और स्वच्छ होने का
कुरूप और मैले का ।
प्रकृति का पर्वतीय और समतल भाग
एक ही वस्त्र का मानो है

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

गरीबान और दामन

हिमपात --

ऐसी वर्षा अनुग्रह की

एक ही दिव्य रूप का हो प्रत्यक्ष बोध

द्वैत को मिटा कर अद्वैत की स्थापना

सोना-जागना, जन्म-मरण और आना-जाना

अन्दर-बाहर, अपना-पराया प्रेम रस में

सब हो जाते एक, परस्पर सम ।

हिमपात ---

मानो प्रकृति ने श्वेत चादर ओढ़ी

चान्दनी ने फ़र्श बिछाया ।'[1]

मास्टर जी का विचार है कि सृष्टि में सर्वत्र परस्पर दो विरोधी तत्त्वों अथवा शक्तियों के योग से विकास का पथ प्रशस्त हो जाता है । पुरुष के साथ स्त्री, प्रकाश के साथ अन्धकार, जन्म के साथ मृत्यु, फूल के साथ काँटे और हास-विलास के साथ अश्रु-कण मिल कर जीवन की सार्थकता सिद्ध करते हैं । एक के बिना दूसरे का

1- 'शीना वालुन तॆ जून गाशू फरशा त्रावुन
सन्यर तॆ वोग्न्यर फंबि तूदन तल व्यपरावुन
खरवुन तॆ मलकूत कूत सोन्दर तॆ प्रोन बासिनावुन
अकी जामुक नाल दोलु बाल पाथुल हावुन ।
अनुग्रह वरशुन हावि यिथ दिव्य दरशुन कुनुई
द्वैत गालिथ एकरस थावि पथकुन कुनुई
वुजुन तॆ शोंगुन, ज्योन मरन युन तॆ गछुन कुनुई
अन्दर तॆ न्यबर प्रेममय पर तॆ पनुन कुनुई ।'
- 'सुमरन' - कविता - 'शीना वालुन' पृ0- 26.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अस्तित्व निरर्थक हो जाता है । विकास को इस प्रक्रिया में दोनों अपनो अपनो भूमिका निबाहते हैं, यही नहीं अपितु निबाहने के लिये विवश हो जाते हैं । प्रकृति का कण कण द्वन्द्वकोय आकर्षण से युक्त है । जहाँ वैज्ञानिक अथवा तर्कशास्त्री सिद्धान्त अथवा तर्क के आधार पर इसको व्याख्या करते हैं वहाँ रहस्यवादो चिन्तक विराट को इच्छा का स्वाभाविक परिणाम समझ कर इसे दैव-लीला का व्यावहारिक रूप मानता है । देखना यह है कि इस सृष्टि पर दो विरोधो तत्वों के परस्पर आकर्षण ने विकास को सम्भावना किस प्रकार सार्थक हो जातो है । यदि तनिक शान्त मन से विचार किया जाये तो यह बात स्पष्ट होतो है कि झूठ के बिना सत्य का, श्याम के बिना श्वेत का, जड़ के बिना चेतन का, विनाश के बिना सृष्टि का, दुःख के बिना सुख का, वैर के बिना सद्भाव का यहाँ तक कि शैतान के बिना फ़िरिश्ते/फ़रिश्ते का कोई महत्व नहीं । एक को पहचान दूसरे के बिना सम्भव नहीं । सृष्टि-व्यापार के इस रहस्य को मास्टर जो बड़ो सादगो और सहजता के साथ बरतन और ढक्कन के पारस्परिक सम्बन्ध द्वारा व्यक्त करते हैं :-

— ' व्यर्थ है बरतन बिना ढक्कन के
बेमानो है ढक्कन बिना बरतन के
वही परमतत्व परमात्मा

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

विरोधी युग्मों में व्यक्त हुए हैं
आये हैं खेल खेलने इस जग में ।'[1]

'खेल खेलने आये हैं' यहाँ ।' -- यह कोई विवशता नहीं थी उनके लिए । यह तो आनन्द का प्रसार है । प्रकृति के कणाकण का सजग हो कर आनन्द विभोर हो उठना हो तो जीवन की सार्थकता है । एक से अनेक बनकर कहीं वह विभूतियों के रूप में प्रात: स्मरणीय बन जाता है तो कहीं सामान्य जन का रूप धारण कर महान विभूतियों के महत्त्व को रेखांकित करते हुए उनके जीवन की सार्थकता को सिद्ध करता है । मास्टर जी को भारतीय संस्कृति के प्रति अनन्य अनुराग है । वस्तुत: उनकी चिन्तन पद्धति का विकास भारतीय संस्कृति की दृढ़ भित्ति पर ही हुआ है । वे अपने आप को इस विरासत से जुदा नहीं रख सके । भारत का महिमामय अतीत ही उनका प्रेरणा स्रोत रहा है । गौतम बुद्ध का अहिंसात्मक दृष्टिकोण, शंकराचार्य का अद्वैत सिद्धान्त एवं टैगोर का बहु-आयामी व्यक्तित्व प्रकाश-स्तम्भ बन कर उनके विचार-पथ को आलोकित करता है । लेकिन यह सत्य है कि हर रूप में उसे विश्व-नियंता ही क्रीड़ा-रत दिखाई देते हैं :-

-- ' कहीं प्रकट हुए बन कर टैगोर

1- 'ठानि रोस्तुई बानि पलज़्या बानि रोस्तुई ठानि क्या
कुन बनित यिमजोर आमुत योर आमुत गिन्दने ।'
- 'सुमरन' - कविता - " राज़ " पृ0- 10.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

तो कहीं शंकराचार्य और बुद्ध
कहीं प्रकटे हम जैसे नादानों में
आये हैं खेल खेलने इस जग में ।'[1]

भक्त जन अपने इष्ट को पाने के लिये लालायित है । वह सगुण रूप में अपने प्रिय का साक्षात्कार पाना चाहता है । इस उद्देश्य को प्राप्ति के हेतु वह नवधा भक्ति के प्रत्येक रूप को अपनाने के लिए कटिबद्ध है । वियोग उसे सह्य नहीं । भक्त अपने भीतर के मैल को धो कर अर्थात् दुई के भाव को मिटा कर तथा सत्-संग का सहारा लेकर अपने प्रिय को पाने हेतु प्रतीक्षारत है । यही प्रतीक्षा की घडियाँ कहर बनकर सौ-सौ परीक्षाओं की स्थिति में से गुज़रने के लिये भक्त को विवश करती है :-

-- 'नित इष्टदेव के चरण कमलों पर
मोहित भँवरा बन कर
मदिरा पान करता जा,
मेरे योगीराज !
भक्त जनों में वितरित करते
ईश प्रसाद को सत्-जन
पीते और पिलाते हैं
प्रेम मदिरा परस्पर

।-' कुनि सुई टैगोर आमुत शंकराचार्य त बोद्ध
कुनि असि हयू चोर आमुत योर आमुत गिन्दने ।'
-'सुमरन' - कविता - 'राज़ि' पृ०- 10

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मेरे योगीराज ।'[1]

मास्टर जो कश्मीर के शैव-दर्शन एवं ऋषि सम्प्रदाय से पर्याप्त प्रभावित थे । इसके साथ ही साथ वेदान्त, वैष्णव सम्प्रदाय, विभिन्न भक्ति आन्दोलनों एवं सूफ़ी सन्तों के तसव्वुफ़ ने उनकी चिन्तन पद्धति को एक सुनिश्चित दिशा प्रदान की । शिव और वैष्णव दोनों समान रूप से उन्हें प्रिय हैं । उनके भक्ति-काव्य में प्रेम की महिमा सर्वोपरि रही है । प्रेम ही ईश्वर का रूप है और समस्त मानसिक शक्तियों का मूल उद्देश्य है - प्रेम के प्रभाव को गहराने में समुचित योगदान प्रदान करना । आध्यात्मिक प्रेम की उष्णता से प्रेरित होकर वे विरक्त अवस्था में गुफ़ाओं और कन्दराओं की शरण जाने की बात नहीं कहते अपितु लौकिक प्रेम की स्नेहल ज्योति से आध्यात्मिक प्रेम का दीप प्रज्वलित करना चाहते हैं । विरह-दग्ध प्रियतमा अपने मन-मन्दिर में निवास हेतु प्रिय को प्रेम भरा आग्रह पूर्ण निमन्त्रण इस प्रकार देती है :-

--' प्रतिक्षण करते प्रिय का ध्यान
क्या है ज़रूरत ?
ग़ार - गुफ़ाओं में जाने की
मेरा मन - मन्दिर तो उपयुक्त होगा
एकान्त वास के हेतु ।

1.-' नित इष्टदेव नन्दयन पम्पोश पादनो तल
बोम्बुर बनिय चवान गछ मस म्यानि ज़ूगरायो
दयिसुन्द प्रसाद सत् जन बख्तयन छि बोगरावान
लोलुक चवन तं चावन मस म्यानि ज़ूगरायो ।'
- 'सुमरन' - कविता -' म्युल' पृ०- 40.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रिय मेरे !
तुझे रखूँ गो छिपा कर उसमें ।'[1]

मास्टर जो के भक्ति काव्य में संसार त्याग का कोई महत्व नहीं । शैव-दर्शन से प्रभावित कवि व्यक्त संसार को शिव को लीला समझ कर इसके प्रति प्रेमातिरेक से अधीर हो उठता है । जीवन और जगत के प्रति उनका दृष्टिकोण स्वस्थ स्वीकारात्मक है, रुग्ण नकारात्मक नहीं । परस्पर सद्भाव और बन्धुत्व को स्थापित करने में ही वे 'लोल' (प्रेम) को सार्थकता सिद्ध करते हैं । कहने का तात्पर्य यह है कि दिव्यानुभूति को प्राप्ति हेतु लौकिक जीवन बाधक नहीं, साधक है । लौकिक-जीवन अलौकिक प्रकाश से ही जगमगा उठता है । इस लौकिक जीवन का अपना महत्व है, यह क्षणिक होते हुए भी अनमोल है । यही तो शिव की लीला है, इसे ठुकराया तो नहीं जा सकता । वस्तुतः अणु-अणु में तो उसी का वास है । यह भौतिक जगत तो उसका व्यक्त रूप है । इसको सुन्दर, हृदय ग्राहक और जीने के योग्य बनाने में 'लोल' (प्रेम) का अपना विशेष महत्व है । यही 'लोल' तो शिव और शक्ति को आकर्षण के बन्धन में बान्ध देता है तथा विकास का कारण बन जाता है । यही 'लोल' लौकिक धरातल पर जीव को जीने के लिये विवश करता

1.- ' गरि गरि करहक च़ं टाँठि सुन्द ध्यानै
तोति क्याज़ि रटहक गोफ़ि तय ग़ार
मन म्योन करिज़िहे खलवत खानै
च़ूरि हो थवथ म्यानि जानानै ।'
- 'सुमरन' - कविता ' सन्यास ' पृ0-36.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

है । इसका मूल सूत्र तो स्वयं वह शक्ति पुंज है, उसी से यह चतुरदिक् प्रवाहित होता है और प्रकृति के कण कण को सींच कर पुनः उसी स्रोत-सागर में समा जाता है :-

--' जिस पेड़ को सींचो मे
नमी ज़मीन के भीतर जा पहुँचे गी
जिस ने प्यार किया किसी से
वही तो है ईश्वर के प्रति प्रेमाभिव्यक्ति ।
प्यार प्रवाहित है उसी से
पहुँचता चतुरदिक् उसी के पास
बुद्धिमान जब समझ गये इस बात को
मूल्य तथ्य विदित हुआ उन को ।'[1]

मास्टर जी के भक्ति-काव्य पर तसव्वुफ़ का प्रभाव भी स्पष्ट रूप से पड़ा है । कश्मीर ने महान सूफ़ी कवियों को जन्म दिया है जिनमें स्वच्छ्क्राल (1774-1854 ई०), रहमान डार (? -1875 ई०), शमस फ़क़ीर (1843-1901 ई०), वहाब खार (1842-1912 ई०), वाज़ि महमूद (1834-1918 ई०), अहद ज़रगर (1906-1983 ई०) एवं समद मीर (1894-1959 ई०) उल्लेखनीय हैं । अपने समकालीन सूफ़ी कवियों के लौकिक - अलौकिक प्रेम को परस्पर लुका-छिपी के खेल से वे आनन्द विभोर हो उठे हैं । उनका विरह-संतप्त

1- ' यस कुलिस सग दिख ज़मीनस वाति ज़ेह
लोल येम यस कांसि बोर तांम बोर दयस
लोल तस निश द्राव तस वातान ज़ोपोरि
गाटल्यो यो ज़ोन यिम वांतिथ पयस ।'
-"सुमरन" - कविता - 'नातेयांरो' पृ०- 18.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

हृदय प्रिय मिलन के हेतु व्याकुल है और उनके हृदय को यह व्याकुलता स्वाभाविक है जो लौकिक दृष्टि से हीमाल की तड़प, हब्बाखातून की विरह-वेदना और अरणिमाल के अश्रु-कणों की याद दिलाती है तथा अलौकिक दृष्टि से माशूक के प्रति आशिक़ के जुदाई के गम को ताज़ा करती है । मचलती - तड़पती विरह-दग्ध विह्वल नायिका (आशिक़) हिमपात को देख कर कराह उठती है । इस कराहती पुकार में जायसी के आशिक़ की व्यथा, सूर की गोपियों की करुणा और मीरा के हृदय की पीड़ा साकार हो उठी है :-

(उनको —)

'यह अस्त प्राय चाँद
मेरी याद दिलाता —
अथवा अन्तिम साँसों में
प्रात: कालीन शायअ
मेरे दर्द-जिग़र की दास्ताँ सुनाता
ठंड में जो जम गई है कली
मेरी तस्वीर दिखाती उनको,
कोई किसी तरह से
मेरी याद दिलाता उनको, जो
हो जाते आकर्षित मेरे प्रति ।'[1]

1.- ' वसवुन पिं ज़न्दरम म्योन ग़यतस पावयस नाय
या शामअ सुबहुक सोज़िदिल म्योन बावयस नाय
यख बस्ति थार नृत म्योन तस्वीर हावयस नाय
कुनि पाँठि काँछाह माय-म्रेह वुज़िनावयस नाय ।'
- "सुमरन" - कविता - 'शीना वालुन' पृ0- 28

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

वेदना को कवि ने प्रेम के लिये नितान्तावश्यक माना है । इस अग्नि में तप कर ही कांच से कंचन होने की क्षमता का विकास होता है । अन्धकार को देखने के बाद ही प्रकाश का महत्व समझा जा सकता है और कड़वे फल को चखने के बाद ही माधुर्य का आनन्द लिया जा सकता है । प्रिय-विरह में तड़प तड़प कर एक एक क्षण गुज़ारने में जो आनन्द है उसकी उपलब्धि किसी अन्य स्थिति में सम्भव नहीं । 'लोल' (प्रेम) में अश्रु-कणों का हास-विलास और माधुर्य-मुसकान से कहीं अधिक मोल है । जिसने विरह की तड़प का सहन न किया हो, भला मिलन की अकुलाहट को वह क्या समझे ? सूफ़ी काव्य में अलौकिक प्रिय के प्रति इस अकुलाहट को लौकिक धरातल पर प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है । मिलन की तड़प यहाँ भी आशिक़[1] के मानस को वेदना विह्वल कर देता है । कवि के इस सामान्य प्रश्न में भी भीतर की पीड़ा ही तो मुखर हो उठी है :-

-- 'जिस के हेतु नहीं लाज़िम हो
व्यथा-वेदना, अश्रु - उच्छवास
क्या उपलब्ध कहीं है इस जग में
ऐसा लोल (प्रेम) ?'

1.- 'यथ न लाज़िम दोद तथ दग ओश त वोश
छा सना त्युथ लोल सन्सारस अन्दर ?'
- "सुमरन" कविता - 'वनन मंज़ लाल' पृ0- 44.

[1] आशिक़ को अधीर बनादेती है। प्रतीक्षा का हर क्षण

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आशिक़ हर स्थिति में अपने भीतर प्रेम की तपन को महसूस करना चाहता है यही तपन तो उसे जीने के लिये विवश कर रही है। साधना पथ पर तो केवल प्रिय स्मृति के सहारे ही विभिन्न अवस्थाओं को पार किया जा सकता है। प्रेम ही ईश्वर है और जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि। प्रिय के बिना तो जीवन व्यर्थ है, बेमानी। आशिक़ के लिये जब बिछोह असहनीय हो जाता है तो वह हल्का-मीठा रोष भरा उलाहना देते हुए परस्पर की दूरी को पाटने की दृढ़ इच्छा दोहराता है :-

--' दूर रह कर आसमाँ में
तुम हंस रहे हो देख देख कर मुझ को
गुप्त हो दास्तानों में
नहीं सहन यह दूरी
लोल (प्रेम) मेरे ! क्षण मात्र भी।'[1]

मास्टर जी के भक्ति-काव्य में प्रेम की महत्ता सर्वोपरि है। यहाँ आशिक़ अपने जाने जानाँ की एक एक अदा पर सौ-सौ बार निछावर होने के लिये तत्पर है। उसे केवल प्रियदर्शन की लालसा है। साधना के पथ पर अवश्य एक स्थिति ऐसी भी आ पहुँचती है जहाँ साधक अपने मनमीत को अपनी आँखों के सामने साकार रूप में देख कर आश्चर्य चकित

1.-' म्य कुन वुछ वुछ असान छुक दूरि रूज़िथ आसमानन मंज़
गुप्त छुक दास्तानन मंज़ यि दूरयर नो ज़ैर लो लो।'
-"सुमरन". -कविता -'लोलस कुन' पृ0- 6.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

होने के साथ-साथ अवाक् रह जाता है । प्रिय के रूप चित्रण से सम्बन्धित मास्टर जी की एक छायावादी काव्य अभिव्यक्ति विचारणीय है :-

--' नाजुक लाल होंठ जब कभी
हंसने के अन्दाज़ में कुम्हला उठते हैं
तो मात खा कर भी शरमा जाती
अनार की पुष्प पंखुरियाँ,
प्राय प्रिय ! कुम्हला अपने होंठ तनिक ।'[1]

सगुण भक्ति के क्षेत्र में मास्टर जी ने कृष्ण के प्रति तन्मय होकर अपने हृदयोद्गार व्यक्त किये हैं । कश्मीर में कृष्ण काव्य की एक स्वस्थ परम्परा देखने को मिलती है और मास्टर जी इसी परम्परा की एक महत्वपूर्ण कड़ी है । कृष्ण को कर्म क्षेत्र का मूल प्रेरणा स्रोत मान कर कवि उनके अनुग्रह का प्रसाद पाने के लिये व्याकुल हैं । भक्त अपने इष्ट के प्रति नत-मस्तक होकर तथा युगीन सन्दर्भ को ध्यान में रख कर वैर, लोभ, घृणा और अन्याय रूपी दानव का संहार करने के लिये कृष्ण के उस रूप में प्रकट होने की आशा रखता है जिस रूप में वे महाभारत-युद्ध-पर्व अर्जुन की किंकर्तव्य विमूढ़ता को भंग करने के लिये प्रकट हुए थे :-

--' तोड़ देगा कमर

1- ' ज़ांविल वोज़िल वुठ कुनि कुनि आने
असनिय त्राय यलि कुमलान छो
दांन पोशा बांरगन छि मन्दछावाने
वुठ कुमलाव म्यानि जानाने ।'
- "सुमरन" - कविता - 'सन्यास' पृ0-38.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कृष्ण अपने चक्र प्रहार से
वैर, लोभ, घृणा तथा अन्याय रूपी दानव को ।
दया करें ये प्रभुवर
अशक्त, निर्धन एवं असहाय जनों पर ।
दग्ध-हृदय होंगे शीतल
श्री कृष्ण की कृपा दृष्टि से ।
अर्जुन को आज्ञा दी
'शैथिल्य त्याग रणवीर बनो
उठो और युद्ध करो ।'
काश ! हमें भी मुक्त करते
दीनता और हीनता की भावना से ।'[1]

वे कृष्ण के उस रूप पर मोहित हैं जो अर्जुन के हृदय में नव-स्फूर्ति का संचार करता है । जसोदा तथा नन्द के बाल कृष्ण अथवा गोपियों के रसिया बालम से उन्हें विशेष मोह नहीं । उन्हें गीता के कृष्ण ने मोहित किया है । स्वयं मास्टर जो कर्म-सिद्धान्त पर अटल विश्वास रखते हैं और जीवन को सुन्दर बनाने के लिये कर्म की महत्ता को स्वीकारते हैं । वर्तमान कालीन दुर्दशा पर नियन्त्रण पाने के

1.- 'वैर, लूभ ते दिशा तय अन्याय रूपो दानवन
चक्र सूत्रिय अभिमानये फुटरावि थर श्रीकृष्ण देव ।
ज़ोर ज़ुल्म रसत्यन ग़रीबन बेकसन करि यावरो
दादमुत्यन शाहनावि दिथ शीतल नज़र श्रीकृष्ण देव ।
अरज़नस दिथ आज्ञा "बद दिल मे बन" थोद वथ ते लड़
कासि ना असि दीनता, पस्ती हज़र श्रीकृष्ण देव ।'
- "सुमरन" - कविता 'आरिज़ू' पृ०- 110.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

लिये, भीतरी और बाहरी शत्रु को परास्त करने के लिये तथा पृथ्वी पर ही स्वर्ग की स्थापना के लिये आवश्यक है कि मनुष्य निष्क्रियता का चोला उतार कर प्रतिकूल स्थितियों का डट कर सामना करे तभी गीता का उपदेश सार्थक होगा तथा कथनी और करनी का अन्तर समाप्त हो जायेगा :-

-- ' महान कर्म-योग का पालन करना
ध्येय है कृष्ण पूजा का
और मानना रहबर अपना
धर्म पथ पर श्रीकृष्ण देव को ।
व्यवहारिक जीवन में जो नहीं अपनाये
गीता के एक आध श्लोक को
महिमागान करे यदि कृष्ण देव का
तो क्या लाभ है उसका ?
यदि चक्रधर श्री कृष्ण देव
आ जाये हमारे मध्य इस अवसर पर
तो क्यों न रोयें गे हम ?
अपने हाथों में छिपा कर मुँह
सीस झुका कर लज्जावश । '[1]

1- 'कृष्ण पूज़ा क्या छ, पालुन तमतुन्दुई थोद कर्म योग
धर्मिये वति हुन्द बनावुन राहबर श्रीकृष्ण देव
यिम न वरतावस अनन गीतायि हुन्द अख ओड़ श्लोक
लाभ क्या ध्यकनावने लूकन अगर श्रीकृष्ण देव
कार नोमरिथ दिथ बुधिस अर्थ असि वदव ना शरमि सूत्यि
वुन किनस असि मंज़ अगर यियो चक्रधर श्री कृष्ण देव ।'
- "सुमरन" - कविता - 'आरिज़' पृ0-110

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

1- ...

2- ...

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

स्पष्ट है कि कवि कृष्ण के युग-स्रष्टा रूप के प्रति आसक्त हैं । उनकी दृष्टि में कर्म-सौन्दर्य का महत्त्व सर्वोपरि है जिस का स्पष्ट उल्लेख श्रीमद्भगवद्गीता में हुआ है ।[1] कृष्ण के इस कर्मशील रूप के प्रति मोहित होकर बहुत कम कश्मीरी कवियों ने रचनाएँ लिखी हैं । उन्हें या तो बाल गोपाल ने मोह लिया है या राधा के चितचोर पिया ने । कृष्ण ने जिस महान सामाजिक उत्तरदायित्व को निबाहया और आततायी जनों के विनाश हेतु अर्जुन का जिस प्रकार पथ-प्रदर्शन किया, मास्टर जी उससे बेहद प्रभावित हुए थे । बाल सखा का महत्त्व अपनी जगह पर है, निस्सन्देह गोप बालाओं का रास भी सुन्दर है लेकिन जब सामाजिक विशृंखलता पर रोक लगाने की आवश्यकता महसूस की जाती है, जब अन्याय एवं अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष छेड़ने की नौबत आ जाती है तब गीता के सदुपदेश को व्यावहारिक रूप देने के हेतु तथा कर्तव्य कर्म को निबाहने के लिये वीर योद्धा के समान अपनी कमज़ोरियों पर नियंत्रण पाकर कर्मक्षेत्र में सक्रिय होना आवश्यक हो जाता है । युगीन सन्दर्भ में तो इस कथन की सार्थकता स्वयं सिद्ध है । अज्ञान के अन्धकार को चीर कर और अकर्मण्यता की बेड़ियों को

1- "नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्धेदकर्मणः ।।
- "श्रीमद्भगवद्गीता" अध्याय-3, श्लोक-8
"तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर ।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः ।।
- "श्रीमद्भगवद्गीता" अध्याय-3, श्लोक-19.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

तोड़ कर वस्तुत: अर्जुन कर्म-पथ पर अपने अस्तित्व को सफल/सार्थक कर देते हैं । इसी सफलता की कामना करते हुए कवि कहता है :-

—' कब इस अन्ध कोठरी को द्युतिमान करेगा
"स्वयंप्रकाश ज्ञान" ज्योति से ?
क़ैद खाने की बेड़ियाँ तोड़ कर
खोलेंगे द्वार श्रीकृष्ण देव ।'[1]

मास्टर जी धार्मिक आडम्बर एवं रूढ़िवादी विचारधारा के कट्टर विरोधी थे । उनका दृढ़ विश्वास है कि परम शक्ति प्रकृति के अणु-अणु में व्याप्त है । उसको पहचानने या अनुभव करने के लिए किसी प्रकार के कृत्रिम हाव-भाव की आवश्यकता नहीं । मन के लोभ को मारना आवश्यक है, वही सब से बड़ा शत्रु है जो निरन्तर हमें भौतिक जीवन के दलदल में गहरा धकेलता है । वस्तुत: कुछ पाने के लिए सब कुछ खो देना आवश्यक है । उसी खो देने में ही जीवन की सफलता निहित है । पहचान हर एक के पास नहीं है । आँखों में ज्योति होते हुए भी हम ज्योतिहीन हैं । परम ज्योति को पाने अथवा ग्रहण करने के हेतु आत्म-शुद्धि के पथ का अनुसरण करना होगा । इस पथ पर आडम्बर अथवा रूढ़ि पालन व्यर्थ है और इसी पथ का अनुसरण करते हुए जीव धर्माभास की स्थिति से

1- ' करसना गटि कूठरे अनिगाश वुज़मुत स्वप्रकाश
बांन्द वांनचि बेड़ि फुटरिथ खोलि बर श्रीकृष्ण देव ।'
- "सुमरन" - कविता 'आरिज़' - पृ0- 108.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

बहुत ऊपर उठ जाता है :-

--' कण कण में ईश बसा है
नाना-रंगी वस्त्र पहने
पर पा न सका मैं उनको
मन मसोस कर तड़प रहा हूँ ।
कमल सदृश थी बाहरी चाल
झूठे धर्माडम्बर की,
पर मूल में था
लोभ के कीचड़ का दल-दल
यह देख के मैं भयभीत हुआ ।'[1]

इस भौतिक जगत में मनुष्य क्षुद्र वासनाओं का शिकार बन कर मशीनी जीवन के एक घिसे हुए पुर्जे के समान अपनी भूमिका निबाहने के लिये विवश दिखाई देता है । उसका कर्म-क्षेत्र केवल उसके निजी स्वार्थ तक ही सीमित रह गया है । परिणाम स्वरूप आज मनुष्य सब से अधिक भयभीत हो उठा है - मनुष्य के कारण । समस्त वातावरण दूषित है। इसे विशुद्ध एवं कीटाणु रहित बनाने के हेतु हमें सर्वप्रथम अपने आप को ही बदलना होगा, संकुचित स्वार्थ की बेड़ियों को तोड़ना होगा । कवि को विश्वास है कि प्रेम-पथ ही मनुष्य के लिये सबसे उपयुक्त पथ है जिस पथ पर चल कर वह अपने परम प्रिय के दिव्य सौन्दर्य से

1-' शायि शायि दय रंगि रंगि जाम पोरिथ
पय लोबमस न कुनी अदि बर ना फेह
किटि धर्मस आसि प्यठि पम्पोश चाल
मूलि तलि लूब ल्योम्ब डोशिथ गोम हेय्ह ।'
- "सुमरन" - कविता- 'बेयि साथा बेह'- पृ0-82.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कान्त स्नात होगा :-

—' रम्य वातावरण को त्याग कर
मैंने स्वार्थ के गड्ढे खोदे हैं
जगह जगह, भरना है उनको,
गिरानी हैं बहुत दीवारें,
पर लोल (प्रेम) ! बिना तुम्हारे
नहीं है सम्भव कुछ भी ।'[1]

इस प्रेम पथ पर धार्मिक असहिष्णुता एवं वर्गगत संकीर्णता के विष-कीटाणु प्रभावहीन होकर विलुप्त हो जाते हैं । प्रेम तो वास्तव में नूरे इलाही है और इसके प्रखर तेज़ से क्षुद्र कीटाणु शक्तिहीन होकर नष्ट हो जाते हैं । लेकिन प्रत्यक्ष रूप में मनुष्य इन्हीं संकुचित बन्धनों में बन्धा हुआ दिखाई देता है । यही आधुनिक जीवन की सच्चाई है । बहुधा हम आदर्श और आदर्शवाद पर खुले मन से चर्चा करते हैं लेकिन जब आदर्श को व्यावहारिक जीवन में क्रियान्वित करने का अवसर आ जाता है तो हमारे पैर लड़खड़ाने लगते हैं । कवि खुले मन से अपने प्राण-प्रिय को प्रेम-पथ पर खोजने और पाने के लिये निकलता है । उसे धर्म के बन्धन अथवा वर्ग की सांकलें किसी भी तरह से जकड़ नहीं सकती । वह ढोंगी-पाखण्डी और मूर्ख जनों पर चोट करते हुए कहता है :-

—' ईश को पहचाना हमने' दम भरते हैं कुछ मूर्ख

1- ' फिज़ा त्रांविथ म्य खनिमुत ज़िस ज़मीनस तल ते पूरिन छिम स्यठाह देवार लूरून छिम च्य़ रोस्तुई क्या करै लोलो ।'
- "सुमरन" कविता - 'लोलसकुन' पृ0-6.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

वक्ष पर गाड़े अलग अलग धर्म और वर्ग का झण्डा
टहनियों की ओर निकलते हो जाते दूर परस्पर
मूल की ओर आते हो पट जाती है दूरी ।'[1]

"हाय सम्सार" मास्टर जी की एक लम्बी कविता है जिसमें उन्होंने मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विचार करते हुए उसके अन्तिम परिणाम पर अपने गहन चिन्तन के आधार पर प्रकाश डाला है । 14वीं शताब्दी में प्रसिद्ध रहस्यवादी कवयित्री लल्लेश्वरी ने कहा था :-

-- नाच रहे हो उस भूमि पर ! कैसे करते हो विश्वास ?
जिस के नीचे मुँह ढका गड्ढा है गहरा,
एकत्रित धन सम्पत्ति रह जाती शेष यहाँ
कैसे रुचि कर लगता है अन्न ?'[2]

मनुष्य के अविवेक पर लल्लेश्वरी ने ज़बरदस्त चोट की है । ऐसी स्थिति में सात्विक भावों का ह्रास हो जाना स्वाभाविक है । अज्ञान के तमसान्धकार में जब भोग की आन्धी तूफ़ानी चाल धारण कर लेती

1- ' दय ज़ोन असि दिवान क्यँह अहमक दम
सोनस च्यठ ह्यथ अलग अलग दोनुक थम
लंजन कुन नेरिवुनि छि हन हन दूरान
मूलस कुन यिथ गछ़ान दूरयर कम कम ।'
- "तुमरन" -' स्बाईयात ' पृ0-112.

2- ' तलि छुई ज़ियुस तय च्यठि छुक नच़ान
वनति मालि मन क्यथि पच़ान छुई
सोर्स्ड सोम्बरिथ यतो छु मोच़ान
वनति मालि अन्न क्यथि रोच़ान छुई ।'
- "ललयद" सम्पादक - प्रोफ़सर जे0 एल कौल -तृतीय संस्करण
जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन सन् 1984ई0, पृ0-64.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

है तो विवेक उन तूफानी लहरों के भँवर में अपना अस्तित्व खो देता है और जीव भौतिक सुख को ही परमानन्द समझ कर पथ भ्रष्ट हो जाता है :-

—' अलग हुए हम से हमारे सात्विक भाव
सत् - सन्तोष शान्ति के लक्षण, ईश स्मृति की प्रवृति
मानो बुद्धिमान कौए टूटती टहनियों से
अपने घोंसले हटा कर चले गये ।'[1]

बहुत समय गँवा देने के बाद जीव अपनी असहाय अवस्था पर क्षुब्ध हो उठता है और चतुरदिक् विपत्ति के बादल मंडराते देख आठ आठ आँसू रोने लगता है । उसे अब यह विश्वास होता है कि जीवन खो कर उसने कुछ भी नहीं पाया है । सच तो यह है कि समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता । भँवर में फंसी जीवन नौका को पार उतारने के लिये अब उसे माँझी (तारने वाले) की याद आती है लेकिन घड़ी की सूइयों को उल्टी दिशा में घुमाना तो स्वयं अपने आपको ठगना होगा । उसे अपनी करनी का फल भुगतना ही होगा । यह ज़हर तो पीना ही पड़ेगा :-

—' दुख भँवर से कैसे निकालूँ नौका ?
ज्ञात नहीं है मार्ग, चप्पू टूटा
बह रही हवा विपरीत दिशा में

1.- ' हृदयस मंज़ पिम आंस रुति रुति भाव
सत्, सन्तोष, शान्तो त दयि सुन्द नाव
फुट्टुनि लंजि प्यठ ज़न गाटिल काव
आंलि तुलि तुलि वारि वारि च़लिये
हाय - हाय - सम्सार ।'
- 'सुमरन' - कविता - 'हाय सम्सार' पृ0-88.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पानी भर आया नौका में
तारणहार को भुला दिया
अनियंत्रित नौका तेज़ बहाव में
बह रही दिशाहीन, और
भीग चुके हैं वस्त्र सारे ।'[1]

मास्टर जी ने अपने भक्ति काव्य में कहीं कहीं नाजुक स्थितियों की ओर भी संकेत किया है । यहाँ भक्ति में दार्शनिक चिन्तन का मेल हुआ है । मनुष्य बाह्य जीवन के भौतिक बन्धनों की उपेक्षा करके जब अपने भीतर के बन्धन तोड़ देता है, ज्ञान के स्व-प्रकाश से जब भक्त का मानस प्रज्वलित हो उठता है तो उसके लिये समस्त वातावरण कृष्णमय हो जाता है । यहाँ मास्टर जी की रचनाओं में भक्ति, काव्य एवं दर्शन की त्रिवेणी प्रवाहित हो उठी है । चिन्तन की गहराइयों में उतर कर जब भक्त-कवि ज़िन्द कौल जीव, जगत, माया और ब्रह्म के पारस्परिक सम्बन्धों पर विचार करता है तो उसे अपने क्षणिक अस्तित्व का बोध विह्वल कर देता है । वह जीवन के रहस्य को तलाशने का भरसक प्रयास करता है । ज्ञान-ज्योति की एक हल्की किरण जब उसके अन्धकारमय हृदय में फूट पड़ती है तो उसे ऐसा प्रतीत होता है कि प्रसन्न चित या होश में आई हुई कोई गोपी

1- 'दोखि आवल्यनि मंज़ वन्य किथि कडनाव
पव रोवमुत तं खूर फुटमुत तं बुथि वाव
कोथ् दरामुत तं मोठमुत सु तारवुन नाव
ईयरवुनि नावि चोरिविन दलिये हाय ।'
- "सुमरन" - कविता-'हाय सम्सार' पृ0- 88.

पव = नावि वथ
नावि मेज़े वथ
कोथ = बंगि रूनि
नावि हेज़ि

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

चुपके से रास मण्डल के भीतर प्रविष्ठ हुई और भीतर ही भीतर कृष्ण-मय हो उठी :-

—' कोई प्रसन्न चित या होश में आई गोपी
चुपके से प्रविष्ठ हुई रासमंडल के भीतर
कृष्णमय होने को —
इस भीतर के बन्धन में
पाई उस ने अद्भुत आज़ादी ।
बाहर थी स्वतन्त्र पर भीतर बन्धी हुई थी
स्वार्थ की असंख्य साँकलों में
गँवा कर जीवन पाया उसने नव-जीवन ऐसा
अनुमान न कर सकती थी बाल्यकाल में उसका ।'[1]

जीवन की क्षण भंगुरता से मास्टर जी भली भाँति परिचित थे लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि प्रकृति के इस नाशवान गुण और धर्म को जानते हुए भी जीव इस के प्रति मोहित है यही मोह जब सीमाओं का उल्लंघन करता है तो जड़ता का लक्षण बन जाता है । वास्तविक तथ्य की उपेक्षा करके और ठोस हक़ीकत को झुठला कर वह आकाश-कुसुम चुनने बैठता है । आज के विषय में जाने बिना वह कल की बात सोचने लगता है । प्रकृति के इस क्षणिक अस्तित्व पर विचार करते हुए मास्ट जी वस्तुत: जीव को अस्तित्व-बोध अथवा आत्म-बोध के

1-' तोशिवुन या होशि आम्‌िच़ गूपिया
रोशि च़ाम्‌िच़ रास किस आरस अन्दर
अन्‌िदर गंडस मंज़ वुछिन आज़ादिया
न्यबरि गंडिथ आस मोक्‌िजारस अन्दर
वांस राविथ तिच़ लबिन नांव ज़िन्दगी
यिच़ न सरिहे ज़ाँह ति लोकचारस अन्दर ।'

- "सुमरन" -कविता - 'वनन मन्ज़ लाल' पृ0- 42.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

द्वारा जगत की अनित्यता के भीतर स्रष्टा के रचना-उद्देश्य को जानने और पहचानने के लिये प्रेरित करते हैं :-

--' बारीक छिद्र से धूप ने किया प्रवेश
जिस में ज़र्रे थे बेशुमार
पीछा करते इक दूजे का आखेटक बन कर
कुछ क्षणोपरान्त --
मरे हुए और मारने वाले कहीं नहीं थे ये ज़र्रे
मिल गए थे मिट्टी में वापस, हो कर मिट्टी
यदि दाना हो रहस्य समझ ले ।'[1]

भक्ति के क्षेत्र में मास्टर जी ने अध्यात्म-चिन्तन को पर्याप्त महत्त्व दिया है । अपने परमप्रिय की खोज में विरहदग्ध प्रियतमा के समान उन्होंने भीतरी व्यथा-वेदना को वाणी प्रदान की है। कहीं अलौकिक सत्ता, कहीं शिव, कहीं कृष्ण और कहीं अज्ञात शक्ति के रूप में परमप्रिय कवि हृदय को उद्वेलित करता रहा । मूल सत्ता को पहचानना ही तो कवि का उद्देश्य है । मास्टर जी ने चाहे जिस रूप में भी (सगुण अथवा निर्गुण) हृदय स्थित भक्ति भावना को वाणी प्रदान की हो, सर्वत्र प्रेम-तत्त्व ही सर्वोपरि रहा है । उनके विचारानुसार प्रेम तो ईश्वर-रूप का पर्याय है, प्रेम ही सर्वस्व है, जीवन का सार तत्व । अतः अपने भक्ति-भाव को प्रेमरस से सींच कर मास्टर जी ने अत्यन्त आकर्षक रूप प्रदान किया है । प्रेम की

1-' ताप लिथि किन चाव तथ मंज़ ज़र डीठिम बेशुमार
अख अकिस पति लारवुन्य ज़न अख अकिस करवुन्य शिकार
आंड गराह गई मारमुत त मारवुन्य कुनि कांह न नोन
मोलि मुत्य म्यचि सूत्य वापस, त्रुक अगर छुख मान्य प्रार ।'
- "सुमरन" -'रुबाइयात' पृ0-114.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Sahi Jammu Collection. Digitized by eGangotri

असहनीय तड़प उसे अपने प्रिय में लय होने के लिये आतुर कर देती है। इन भक्ति गीतों के द्वारा विरह दग्ध हृदय में व्याप्त वेदना शब्दों के द्वारा मुखर हो उठी है। यहाँ पीड़ा का ही साम्राज्य सर्वत्र व्याप्त है। द्वैत की भावना तभी मिट सकती है जब मन पूर्णतः प्रिय में लय हो जायेगा। कभी-कभी उसे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि प्रिय ही उसे सान्त्वना देकर शान्त कर रहा है :-

--' कहा उसने कि नियत काल तक
राह देखते रहो मेरी
इस देश में, इस मकान के भीतर
खिल उठें गे प्रेम पुष्प
विरह वियोग में दूर दूर से।
बाँट लेना उन्हें अपने पड़ौसियों के मध्य।
नमी पहुँचे गी धरती तक
इस पेड़ को सींचने से,
जिस ने कहीं किसी से प्रेम निबाहया
वह ईश के प्रति है प्रेमाभिव्यक्ति।
प्रेम - स्रोत है वह, उसी की ओर
प्रवाहित प्रेम चतुरदिक्,
बुद्धिमान जो परिचित हुए इस रहस्य से
मूल तथ्य तक पहुँच गये।'[1]

1-' तांम दोपुम कैंह काल यथ दीशस अन्दर
यथ मकानस रोज़ म्यांनी वथ वुछान
दूरिरस मंज़ वारि फोलनय लोलि पोश
आंज़ि हमसायन हकन तिम बांगरान
यथ कुलिस सग दिख ज़मीनस वाति स्रेह
लोल यमि यस कांसि बोर तांम बोर दयस

(शेष अगल पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

स्वस्थ भौतिक दृष्टिकोण से प्रेरित कवि ईश्वर को इस अद्भुत लीला से आनन्दित होने के लिये जीव को आमंत्रित करते हैं। परम ब्रह्म की यह लीला सोद्देश्य है, निरुद्देश्य नहीं। यहाँ विरक्त होने की अथवा सन्यास लेने की आवश्यकता नहीं। भोग रोग नहीं, सृष्टि विकास के हेतु जीवन की आवश्यकता है। सृष्टि की इस आश्चर्यपूर्ण लीला को देखना और पहचानना ही दैव-पूजा है। कन्दराओं की शरण लेना तो अपनी पराजय की मूक स्वीकृति है। कहने का अभिप्राय यह है कि मास्टर जी इसी धरती पर स्वर्ग की सृष्टि करने के इच्छुक हैं। वे ऐसे सौन्दर्य की तलाश में हैं जो सत्यम् और शिवम् से समन्वित है तथा प्रकृति के कण-कण में व्याप्त है। आवश्यकता है केवल उसे देखने और पहचानने की :-

--' गुलशन और पर्वतों के सौन्दर्य को
देखने हेतु निकल ज़रा
दैव-लीला देखना ही दैव-पूजा है
वही पूजा नित करता है बीनादार×
मनमीत ! तनिक निकल निहारने

{- पृष्ठ । का शेष भाग }

लोल तस निश द्राव तस वातान च़ोपा॑रि
गाटल्यो यो ज़ोन यिम वा॑तित पैयस ।'
- "सुमरन" - कविता - 'नातै या॑रो' पृ०-16

× जिस की आँखों में ज्योति है ।
मूल शब्द - बीना / बीनाई { फा० }

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

छटा मधुमास की ।'[1]

गज़ल और गीत के साथ-साथ मास्टरजी ने रुबाइयाँ भी लिखी हैं जिनमें जीव, जगत, ब्रह्म, इष्ट, संसार की क्षणभंगुरता, आवागमन आदि कई विचारणीय तत्त्वों पर प्रकाश डाला है । चार पंक्तियों की इस फ़ारसी काव्य-विधा में स्वतन्त्र रूप से बिना किसी पूर्वापर सम्बन्ध के एक दृश्य-चित्र अथवा बिम्ब अथवा विचार-तत्त्व कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है । यह तो गागर में सागर भर देने का प्रयास है । सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के प्रति आकर्षित होना तो जीव का स्वभाव है । इन तीन गुणों/तत्त्वों का समन्वय हम केवल अपने प्राणप्रिय में ही देख सकते हैं । अत: इन गुणों के प्रति आकर्षण तो वस्तुत: नारायण के दृढ़ बन्धन में बन्ध जाने का आकर्षण है । इस विषय में मास्टर जी की एक रुबाई देखने योग्य है :-

--' सत्यम् शिवं सुन्दरम् की खोज में रहता हर प्राणी
इस शाश्वत के प्रति आकर्षित होना जैसे दीपक की लौ -
- पर पतंगा
जो जितना निकट पहुँचता उसे उतना ही दूर दिखता है

।-' नेर फेर छाव गुलशान तं कोहसारो
दय गत वुछिन छं दयसिंज़ पूज़
सोई पूज़ न्यथ करान बोनादारो
सोन्त छावान बालियारो नेर ।'
- "सुमरन"-कविता - 'सोन्त' पृ0- 34.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

इस शामअ रूपी आदर्श का नाम है नारायण ।'[1]

व्यंग्य काव्य के क्षेत्र में भी मास्टर जी को देन उल्लेखनीय है । इस दृष्टि से 'अज़्युक गाटिजार' (आज की बुद्धिमानी) शीर्षक कविता महत्त्वपूर्ण है । आज के इस भौतिकवादी युग में आध्यात्मिक चिन्तन एवं अलौकिक आनन्द के प्रति जन मानस में विशेष उत्साह देखने को नहीं मिलता । बुद्धि-वैभव अथवा तर्क के आधार पर मानव आज प्रकृति के हर रहस्य से परिचित होना चाहता है यहाँ तक कि ईश्वर के अस्तित्व पर भी प्रश्न चिह्न लग गये हैं । अलौकिक तत्त्व की उपेक्षा हो रही है और प्रत्येक अणु की व्याख्या तार्किक विश्लेषण के द्वारा हो रही है । स्वर्गीय रामधारी सिंह दिनकर ने 'कुरुक्षेत्र' काव्य-कृति की रचना करते समय इस विषम स्थिति पर संकेतिक रूप से प्रकाश डाला है । आज के विकासोन्मुख भौतिक जगत में बुद्धि बहुत आगे निकल चुकी है और हृदय पिछड कर पीछे रह गया है । यही कारण है कि उन्नत देशों में आज युवा-पीढ़ी पहचान के संकट (Crisis of Identity) का शिकार बन चुकी है । आज ईश-भय या दैवगति जैसे शब्द महत्त्वहीन हो गए हैं । मास्टर जी इसे मानवता के लिए घातक समझ कर हमारी सोच पर प्रहार करते हुए

1- 'पोज़, स्त, सोन्दर छि ज़ोव सारो छ़ारान
अंथ शामअस कुन ज़न तं पोम्पुर लारान
यथ कुन युस यूत पोक तमिस त्यूत छु दूर
तथ आदरशास छु नाव प्योमुत नारान ।'
-"सुमरन" -'स्त्राइयात' पृ0- 112.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

हमें सचेत करने का प्रयास भी कर रहे हैं :-

—' धन और शक्ति है उपलब्ध मनुष्य को आज
बुद्धि - वैभव के बल पर, पन्न रहीं
पाने को लालसा अद्भुत साहस के साथ
ईश्वर-भय को भगा दिया है अक्लमन्दी ने ।'[1]

आज जिस के पास शक्ति है वही सुरक्षित है । राष्ट्रीय अथवा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर यह कथन आज के सन्दर्भ में कितना सार्थक है । दो विश्व-युद्धों के द्वारा हुए मानव संहार ने आज मनुष्य की चिन्तन प्रणाली को बिल्कुल ही बदल दिया है । आज छल एवं बल के आधार पर अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए हर प्रयास जाइज़ (उचित) समझा जाता है । यहाँ तक कि आज धर्म और कर्तव्य की परिभाषाएँ तक बदल गयी हैं :-

—' जो छल-कपट के द्वारा मार नहीं सकते, स्वयं मर जायेंगे
यही नियम है प्रकृति का —
कि छोटी मछली बन जाती आहार बड़ी मछली का
करे वह कितना ही चीं - चाँ[x], नहीं सुनते हैं देव भी उसकी
सुरक्षित है अधिकार शक्तिशाली का
और यही कर्तव्य है उसका —
कि जो जन्मे हैं अपंग अथवा हैं शक्तिहीन

1- ' ज़ोर, ज़र अलिमन दितुक द्यमत तं शौक़
गाटिजारन कोसनक खोफ - ए - खोदाई ।'
- "सुमरन" कविता -' अज़ुक गाटिजार' पृ0-72.

x चीं - चाँ - (मूल कश्मीरी प्रयोग) - भयभीत जीव जन्तु की -
- आवाज़ ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

वध कर दे उनका, अस्तित्व मिटा दे ।'[1]

मनुष्य की हिंसा वृति पर क्रुद्ध होकर कवि स्वयं ममन्तिक पीड़ा का अनुभव करते हुए व्यंग्य के तेज़ नश्तर से मनुष्य के मानस पर छाई हुई स्वार्थ की मोटी तह का चीर डालता है :-

--'हम तो तुले हुए हैं, शेर बने हैं
परस्पर इक दूजे का वध करने के हेतु
भेडियों को भी मात किया है आज मनुष्य ने ।'[2]

मास्टर जी की रचनाओं में आंचलिक अथवा स्थानीय रंग पूरी शोख़ी के साथ खिल उठा है । यह गुण बहुत कम कवियों की रचनाओं में देखने को मिलता है । न केवल उन्हें अपने देशकाल की सम्यक् जानकारी है अपितु यहाँ के हर रीति-रिवाज, पर्व-त्यौहार, आचार-विचार, लोक-विश्वास, सांस्कृतिक और सामाजिक मान्यताओं - गरज़ जन-मानस से जुड़े रहने की बलवती इच्छा भी है । प्रकृति के प्रफुल्लित रूप को देख कर अपने भीतर के हृदयोल्लास की अभिव्यक्ति के हेतु वे 'साक़ी' और 'मय' के स्थान पर 'समावार' और 'कहवा-ए-लतीफ़' का ज़िक्र छेड़ देते हैं क्योंकि दोनों लोक जीवन के

1- 'यिम न बा़लि या छ़ालि ह्यकन मारित मरन
फितरतुक कोनून छोट यिम हरफ डाय
फितरतन थोवमुत गुरून गाडन ग़िज़ा
चीं-त-चां कारतन सु कुस बोज़यक खोदाई
ज़ोरिवाल्यन हक़ छु मारुन बल्कि फ़र्ज़
नातवान यिम ज़ाय या कमज़ोर द्राय ।'
- "सुमरन" - कविता - 'अज़्युक गाटिजार' पृ0- 74.

2- 'गालनस प्यठ अख अकिस गामुति छि शेर
राम होन्यन हिंज़ मनोशाव थाव न जाय ।'
- "सुमरन" कविता - 'अज़्युक गाटिजार' पृ0- 74.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अभिन्न अंग होने के कारण गहराई के साथ लोक-जीवन से जुड़े हुए हैं :-

—' प्रसन्न चित साक़ी समावार लेकर
क़हवे की महफ़िल गरमाये गा
इलायची और दारचीनी की सुगन्ध से
महक उठेगी महफ़िल
मनमीत ! तनिक निकल निहारने
छटा मधुमास की ।'[1]

लोल-गीत (प्रेम-गीत) को ला-ला शैली[2] को भी मास्टर जी ने अपनाया है । अपनी एक प्रसिद्ध रचना 'लोलस कुन' (प्रेम के प्रति) में इसी शैली को अपनाकर कवि ने लौकिक अथवा अलौकिक प्रेम के अत्यन्त मार्मिक चित्र प्रस्तुत किये हैं । एक ओर तो इन ला-ला गीतों में प्रेम रस छलक रहा है तो दूसरी ओर आध्यात्मिक चिन्तन ने इन्हें वैशिष्ट्य प्रदान किया है । इन लोल-गीतों की आंचलिक छटा देखते ही बनती है :-

—' तेरे हेतु
एकत्र करूँगी
नाना रंग और रूप[x]

1- 'साक़ी फ़ोलान आसि हयथ समावारो
गरमावि महफ़िल क़हवुक मय
आ'लि दालचीन त्रावि मुश्किन दारो
सोन्त छावान बालियारो नेर ।'
- "सुमरन" - कविता - 'सोन्त' पृ०-32.

2- कश्मीरी लोक-गीतों की एक शैली । बहुधा शृंगार परक गीतों में इसका प्रयोग किया जाता है ।

x Essence of Form and Colour.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अपनी आँखों द्वारा ।
और कानों द्वारा
नाद और संगीत मदिरा से
प्याले (खोस×) भर दूँगी ।'।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि मास्टर ज़िन्द कौल ने 20वीं शताब्दी के पाँचवें दशक में भक्ति से सम्बान्धत एक समन्वयात्मक दृष्टिकोण अपनी रचनाओं के द्वारा प्रस्तुत किया है । उन्होंने भक्ति को एक श्रेष्ठ वैचारिक धरातल प्रदान किया । जीवन की सात्विकता पर उन्हें अटूट विश्वास है । वे आस्तिक होने के साथ-साथ आशावादी भी थे । अपने मन की गहराइयों में उतर कर उन्होंने जीव, ब्रह्म और प्रकृति के पारस्परिक सम्बन्ध पर विचार व्यक्त किये हैं । किसी भी वाद अथवा सम्प्रदाय के मोह में न पड़ कर उन्होंने अपने अध्यात्मक चिन्तन के आधार पर इष्ट के प्रति अपनी दृढ़ आस्था भक्ति के द्वारा व्यक्त की है । जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण स्वस्थ एवं स्वीकारात्मक अवश्य है लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि जीव इस दल-दल में कमल के अस्तित्व को पहचाने

× "खोस" - शुद्ध कश्मीरी शब्द है । कश्मीरी पण्डितों के घरों में काँसे के प्याले चाय पीने के लिये प्रयोग में लाये जाते हैं जिन्हें 'खोस' कहते हैं । बाहर से इस प्याले के तल पर चक्राकार काँसे का ही आधार होता है । अथवा लम्बी पकड़ वाले 'खोस' भी होते हैं जिन्हें 'क्यंज़ि खोस' कहते हैं ।
-- लेखक --

।- ' छव याने वेरि सोम्बरावै अछुव किन रंग स्युक रस
कनव किनि शब्द-साज़ुक मस अनिथ खास्यन बरे लो-लो ।
-'तमहन' - कविता - 'लोलस कुन' पृ0-6.

CC-0. Mumukshu Bhawan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

और उसके सौन्दर्य को महत्ता को समझे। उन्हें दृढ़ विश्वास है कि जोवन को सफल बनाने के लिये त्याग को नीरसता नहीं बल्कि अनुराग को सरसता अपेक्षित है। मास्टर जो ने 20वीं शताब्दी के इस तकनोकी युग में भक्ति को स्रोतस्विनी को प्रवाहित करके दग्ध मानव-हृदय को रस-सिक्त करने का भरसक प्रयास किया है।

मास्टर जो को रचनाओं में अर्थ के विषय में पर्याप्त मनभेद खड़ा होता यदि वे स्वयं उनका अंग्रेज़ी भाषानुवाद प्रस्तुत न करते। आवश्यक नहीं है कि जो अनुवाद मास्टर जो अंग्रेज़ी भाषा में देते हैं, हम उससे सहमत हों अथवा उक्त कविता में अर्थ को केवल वही एक सम्भावना हो। लेकिन मूल अभिप्राय को समझने में भाषा-अनुवाद से पर्याप्त सहायता मिली है। यह मानना पड़ेगा कि मास्टर जो को रचनाओं के अर्थ का अनर्थ हो जाता यदि वे स्वयं अपने अभिप्राय को अनुवाद के द्वारा स्पष्ट न करते। मास्टर जो ने कश्मोरी भाषा में अधिक नहीं लिखा है लेकिन जो कुछ लिखा है उसमें दिव्यानुभूति के साथ प्राचोन परम्परा एवं नवोन सोच का अद्भुत संगम हुआ है। लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम को सांकेतिक अभिव्यक्ति ने उनको रचनाओं को दोहरा अर्थ प्रदान किया है। कश्मोरी जन-मानस उनको रचनाओं में प्रतिबिम्बित हो उठा है। उसमें यहाँ को धरतो को महक है, ताज़गो है, सौंधो बास है, और मिठास के साथ-साथ जोवन की कड़वाहट

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

भी घुल मिल गई है । कवि अपने युग के साथ जो रहा है । उसमें जहाँ जीवन के मूल तत्व को पहचानने की बलवती इच्छा है वहाँ सौन्दर्य कणों को समेट कर आकर्षक रूपाकार प्रदान करने की कला भी है । कवि-कर्म उनके लिये कठोर साधना है और इस साधना पथ पर अग्रसर होकर वे नित नये अनुभवों की राह से गुज़रते हुए अपने धर्म का निर्वाह करते हैं ।

मास्टर जी आधुनिक कश्मीरी कविता के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं ।

—' यार मेरा कान धरे या न धरे मैं टेर रहा हूँ
नित उसे बुलाने से मन को मिलती है कुछ शान्ति,
कोई ग्राहक मिले जो मेरे साग में मिला दे केसर
यही आशा रख कर दुकान खोल दो निकट पापुर –
– वासियों के ।'[1]

– 0 –

1– ' यार थावि न या म थावि न कन ब्व छुस आलव दिवान
आलवव सूत्थि मनस कम कारि छम शान्तो थिवान
ग्राक काँह मा मेलि पुस म्यानिस ति हाकस लागि कोंग
पापुर्यन नज़दीक यो आशा थवित यूलुम यि वान ।'
– "सुमरन" 'पतकथ' पृ0– 118.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

---

(III) सूफ़ी काव्य

(अ) समद मीर - (सन् 1892-94 - 1959 ई0)

1- जीवन चरित : आराकश समदमीर में अज्ञात के प्रति आकर्षण
2- मज़दूर समदमीर एवं सूफ़ी साधक समदमीर
3- 'अकनन्दुन' : वर्णनात्मक खण्ड-काव्य
4- प्रेमाभिव्यक्ति : दोहरे अर्थ में
5- इश्क़ हक़ीक़ी : माशूक के लिये अकुलाहट
6- विरह विवृत्ति
7- सूफ़ी साधना में 'सफ़र' का माहात्म्य
8- क़नाआत नफ़्स : नियन्त्रण 'अर्ह' पर
9- लयावस्था : लाहूत की मंज़िल पर दिव्य आनन्दानुभूति
10- 'कुछ नहीं' : शून्य का महत्त्व
11- आत्मज्ञान / स्वानुभूति : परम सत्य का साक्षात्कार
12- शास्त्र ज्ञान : अद्वैतवाद/ चिन्तन का प्रभाव
13- ओ३म् की पहचान : साधना का मूल लक्ष्य
14- नातिया कलाम
15- भाषा-प्रयोग : रेख़्ता भाषा

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

20वीं शताब्दी के कश्मीरी सूफ़ी काव्य के इतिहास में अब्दुल अहद ज़रगर के साथ-साथ समद मीर का योगदान भी अभूतपूर्व रहा है। समद मीर न केवल एक सूफ़ी कवि थे अपितु वेदान्त एवं अद्वैत दर्शन से प्रभावित शास्त्र ज्ञाता सूफ़ी साधक भी थे जिन्होंने साधना के पथ पर समन्वय बुद्धि से काम ले कर इस्लामी तसव्वुफ़ एवं भारतीय वेदान्त से एक साथ मौक्तिक कण समेट लिये तथा सर्जना के स्तर पर 'एकेश्वर-वाद' के सिद्धान्त को काव्य वाणी प्रदान की। हक़ीक़त की अन्तिम मंज़िल अथवा लाहूत की अवस्था तक पहुँचने के हेतु उनका यह समन्वयात्मक दृष्टिकोण युगानुकूल होने के साथ-साथ सूफ़ी साधकों के मिज़ाज के अनुकूल भी था।

समद मीर की जन्म तिथि के विषय में तनिक मतभेद है। प्रोफ़ेसर मुही-उ-द्दीन हाजिनी समद मीर का जन्म सन् 1901 ई० मानते हैं[1] जब कि श्री मोती लाल साक़ी नवीनतम शोध के आधार पर मीर साहब का जन्म सन् 1892 और 1894 ई० के मध्य मानते हैं।[2] इस विषय में कोई मतभेद नहीं है कि उनका जन्म-स्थान नरवरा-श्रीनगर

1- "कश्मिर शाइरी" - सम्पादक प्रो० मुहीउद्दीन हाजिनी, साहित्य अकादमी, दिल्ली प्रकाशन - मार्च 1960, पृ०-199.

2- "काश्मिर" - श्री मोतीलाल साकी, पृ०- 140, 'समद मीर के जन्म के विषय में अपनी नवीनतम खोज का विस्तृत ब्यौरा साक़ी ने किसी भी पुस्तक में नहीं दिया है। अतः मात्र वक्तव्य पर विश्वास करना सम्भव नहीं'। — लेखक —

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

है यद्यपि उनके पिता स्वर्गीय ख़ालिक़ मोर नम्बलहार - क्रेमशोर, (तहसील वाडूरा, ज़िला बडगाम) के रहने वाले थे। जोविका निर्वाह के हेतु ख़ालिक़ मोर नम्बलहार छोड़ कर श्रीनगर आये थे और यहाँ एक आराकश श्रमजोवी मज़दूर के रूप में रहने लगे। ख़ालिक़ मोर भी सूफ़ी संगत में उठते बैठते थे और यदा कदा शोर भी कहते थे। शहर में रहकर उन्होंने द्वितीय विवाह किया और इसी पत्नी से उनके तीन पुत्र उत्पन्न हुए जिन में एक समद मोर थे। कुछ समय के पश्चात् ख़ालिक़ मोर पुनः नम्बलहार वापस चले गए और अगहर में स्थायी रूप से रहने लगे।

समद मोर का विवाह अल्पायु में ही हुआ था। अतः पारिवारिक उत्तरदायित्व को निबाहने के हेतु अपने पिता के समान ही उन्होंने श्रमजोवी के रूप में आराकशी का पेशा ग्रहण किया और वर्षों ख़ून-पसीना बहा कर भौतिक जीवन की कठिनाइयों से जूझते रहे। वे निरक्षर थे। मदरसे की तालीम उनके भाग्य में नहीं थी - यह सत्य है परन्तु इससे भी बड़ा सत्य यह है कि जीवन के स्कूल में समद मोर ने अनमोल अनुभव प्राप्त किये थे। श्रमजीवी के रूप में वे कश्मीर के कई इलाकों में आते जाते रहे, फलतः नित नई स्थितियों से गुज़रते हुए उन्हें जीवन के नाना रंगों को देखने परखने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ। मज़दूर समद मोर का श्रमजीवी काव्य व्यक्तित्व वर्तमान कालीन

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

उच्चवर्गीय शिक्षित कवि समुदाय को निरन्तर चुनौती देता चला आ रहा है । आधुनिक कश्मीरी साहित्य के इतिहास में ऐसे उदाहरण बहुत कम मिलते हैं ।

यौवन काल में ही समद मोर शहर छोड़ कर अपने पैतृक निवास नम्बलहार - क्रेमशोर में स्थायी रूप से रहने के लिए गाँव चले आये । जीविका निर्वाह के हेतु वे बराबर मज़दूरी करते रहे और गाँव में रह कर धीरे धीरे उनकी आर्थिक स्थिति में काफ़ी सुधार आया ।

मोर साहब ने अपने पारिवारिक उत्तरदायित्व को बखूबी निबाहाया । यहाँ इस तथ्य को स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि मोर के चिन्तन में विरक्त होने का विशेष महत्व नहीं है । सांसारिक (लौकिक) उत्तरदायित्व से मोर ने कभी मुँह नहीं मोड़ा । यद्यपि उन्हें इस बात की पूरी जानकारी थी कि भौतिक जीवन के क्षणिक आकर्षण अध्यात्म के पथ पर अत्यन्त तुच्छ है लेकिन इस 'तुच्छ' के अस्तित्व को उन्होंने कभी नकारा नहीं । वे गृहस्थ जीवन की ज़िम्मेदारियों को भी पूरा करते रहे और अध्यात्म के पथ पर निर्गुण निराकार को भी तलाशते रहे ।

समद मोर का देहान्त सन् 1959 ई० में हुआ और नम्बलहार के निकट अगहर में उन्हें दफ़नाया गया । आज उनकी आरामगाह सूफ़ी साधकों के लिये तीर्थ स्थान से कम नहीं । इस प्रकार यदि

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सन् 1894 ई० के आस-पास समद मोर का जन्म हुआ था तो लगभग 65 वर्ष की आयु में चिरनिद्रा में सोकर वे सदा सर्वदा के लिये मौन हो गये।

समद मोर के व्यक्तित्व के कई पहलू हैं। जीविका निर्वाह के हेतु आरा चलाने वाला मज़दूर समद मोर जो आजीवन दारिद्र्य से लड़ता रहा और रक्त बिन्दुओं को श्रम-कणों के रूप में बहा कर उन्होंने निर्लज्ज पराजय को निरन्तर ललकारा। पत्नी के अतिरिक्त घर में दो बेटियाँ और दो बेटे (गुलाम रसूल मोर और गुल मोर) भी थे। गुलमोर 'आसो' इब्न (पुत्र, बेटा) समद मोर कवि नाम से प्रसिद्ध हुए और अपने पिता के समान ही काव्य-साधना में लीन रहे।[1] स्पष्ट है कि समद मोर ने गृहस्थ धर्म को बखूबी निबाहा और सूफ़ी साधक के लिये विरक्त होकर कन्दराओं में समाधिस्थ होने को आवश्यक नहीं समझा। जीवन के प्रति मोर का दृष्टिकोण स्वस्थ एवं स्वीकारात्मक रहा है। मोर के काव्य का अध्ययन करते समय इस तथ्य को उपेक्षा नहीं की जा सकती।

सूफ़ी साधक के रूप में समद मोर के व्यक्तित्व का दूसरा पहलू उजागर होता है। अत्यन्त अल्पायु में ही वे सूफ़ी बुज़ुर्गों एवं सन्तों के सम्पर्क में आ गये और अद्भुत- अलौकिक प्रिय के आकर्षण में निरन्तर

1- "कुलयात समद मोर" - सम्पादक : मोती लाल साक़ी, जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - परिवर्द्धित संस्करण सन् 1982 (समदमोर - परिचय) पृ० - 29.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

बन्धते चले गये । ग़रीबी उन्हें पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त हुई थी, विधिवत शिक्षा ग्रहण करना उन के भाग्य में न था । सन्तों के सम्पर्क में आकर सब से पहले उन्हें पीर (गुरू) की आवश्यकता शिद्दत से महसूस हुई । आराक्षा मज़दूर होते हुए भी समद मीर अलौकिक सत्ता को जानने और पहचानने के लिये आकुल-व्याकुल रहने लगे । सब से पहले उन्होंने वागर गाँव के श्री हबीब-उल्लाह जो पेशे से तरखान[1] थे, से गुरू दीक्षा ली ।[2] उस्ताद हबीब-उल्लाह अधिक समय तक जीवित नहीं रहे, उनके देहान्त के बाद समद मीर बटमालू श्रीनगर के ख़ालिक़ छान[3] के शिष्य बन गये । मीर अभी भी बीच मंझधार में ही थे कि ख़ालिक़ छान का भी देहान्त हो गया । साधना पथ पर बराबर उन्हें सिद्ध साधक की तलाश रही और ख़ालिक़ छान के बाद वे रमज़ान डार, जो ज़िला अनन्तनाग के रहने वाले थे, के शिष्य हो गये और आजीवन उन्हीं के सम्पर्क में रहे । सूफ़ी साधना में पीरोमुर्शिद का अपना विशेष महत्व रहा है । वही पथ-प्रदर्शक है जो प्रिय-मिलन के पथ पर सही दिशा निर्देश दे सकता है । भीतर के तमसान्धार को मिटाने के हेतु अपने अहं

1- " तरखान " - बढ़ई ।
संस्कृत - तक्षण (लकड़ी काटने/छीलने वाला)
कश्मीरी - छान (तरखान) ।
2- "गाशिर" - मोतीलाल साक़ी - 'समदमीर' पृ0- 140
3- कश्मीरी - छान (तरखान) शब्द का विकास संस्कृत शब्द 'तक्षण' से हुआ है ।
"कोशिर डिक्शनरी" भाग-3, पृ0-125, कल्चरल अकादमी प्रकाशन -1974 ई0 ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

को मार कर सूफ़ी साधक मुर्शिद की शरण में जा कर साधना के विभिन्न मुक़ामों (शरीअत, तरीक़त, मारिफ़त, हक़ीक़त) को तय करता हुआ तदनुकूल विभिन्न अवस्थाओं (नासूत, मलकूत, जबरूत, लाहूत) से गुज़र कर अपने यारेजानाँ में लय हो जाता है । तिस पर यदि साधक पूर्ण रूपेण निरक्षर हो तो गुरु की महिमा दूनी हो जाती है और उसके बिना ऐसे साधक की कोई गति नहीं । समदमीर अपने प्रिय को जानने पहचानने के लिये व्यग्र हैं लेकिन सूफ़ी साधना में इतना ही पर्याप्त नहीं । 'सफ़र'[1] पर जाने के हेतु राहनुमा चाहिये वहीं पीर/गुरु/मुर्शिद कहलाता है । समदमीर के सूफ़ी काव्य में गुरु का अपना विशेष महत्त्व रहा है । साधना पथ पर निरक्षर मीर निरन्तर सच्चे गुरु की तलाश में रहे । 'गुरु बिन गत नहीं' - समदमीर इस तथ्य से भली भाँति परिचित थे :-

--'एक को पहचानो बेशक एक की सत्ता है केवल
ढूँढने पर भी स्वयं नहीं पहुँचो गे वहाँ तक
पहले गुरु की शरण में जाओ
व्यक्त हुआ मानवाकार में ।
समदमीर ने व्यक्त किया अपना विश्वास
सविश्वास हो गुरु ने अवगत किया था उसको
अविश्वासी है बेहूदा वीरान

1- 'सूफ़ी साधकों का विश्वास है कि जीवन वस्तुत: एक साधनामय यात्रा है जिसे वे 'सफ़र' कहते हैं और जिसके कई मुक़ाम/पड़ाव हैं । इस सफ़र पर अग्रसर होने का अभिप्राय है - सूफ़ी मार्ग पर चल कर प्रिय को तलाशना ।' -- लेखक --

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

व्यक्त हुआ मानवाकार में ।'[1]

बचपन से ही मीर यह महसूस करने लगा था कि कोई अज्ञात सत्ता प्रकृति का नियन्त्रण कर रही है - वह अज्ञात सत्ता क्या है, कहाँ है और उस का रहस्य क्या है - समदमीर अज्ञात के रहस्य को तलाशने में जुट गया और साधना की एक एक मंज़िल को तय करता हुआ वह अपने प्रिय के सम्पर्क का आनन्द महसूस करने लगा । अन्तिम यात्रा से कई वर्ष पूर्व समदमीर एक पहुँचे हुए सूफ़ी बुज़ुर्ग के रूप में क्रेमशीर के आस-पास के इलाक़े में काफ़ी प्रसिद्ध हुए थे । उनके चाहने वाले मुरीदों (शिष्यों) की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती गयी और इस प्रकार सारे इलाक़े में उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व का रंग द्रुत गति से गहराने लगा । सूफ़ी साधक के रूप में उनका जीवन-संकल्प था - महान सत्य की खोज और प्रियतम की सही पहचान जिस के लिये दृढ़ निश्चय के साथ कठिन साधना पथ को ग्रहण करना अपेक्षित है ।

जीवन के कटु यथार्थ का ज़हर पीते पीते तथा साधना-पथ की अनेक उलझनों को सुलझाते सुलझाते समदमीर अपने मानस में सँजोयी हुई नाना कटु-मधुर अनुभूतियों को अभिव्यक्ति प्रदान करने के हेतु मचल उठा और इस प्रकार आराक्षा मज़दूर-समदमीर कवि समदमीर के रूप में अपने

1.- ' कुन ज़ानुन कुन छु बेशाक
वोन दियो तोर कोत वातख
गोड़ि रठ पोरस दामान
नोन द्राव दर जिल्द इंसान
पठ वानिन समदमीरन
पछि सूत्थ बावुस पीरन
बे पछु छु बेहूदि - वारान
नोन द्राव दर जिल्द इंसान ।'
-'कलयात समद मीर' पृ0- 120, 122

CC-0. Bhushan Lal Koul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अस्तित्व का एहसास दिलाने लगा । समद-मोर भौतिक जीवन की नाना विसंगतियों से निरन्तर जूझता रहा । उसे क़दम-क़दम पर अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये जी-तोड़ परिश्रम करना पड़ा है । ग़रीबी और लाचारी ने उन्हें जीवन से लड़ने के लिये विवश किया था । समदमोर के काव्य व्यक्तित्व पर विचार करते समय ठोस यथार्थ पर आधारित इस वस्तु स्थिति की उपेक्षा नहीं की जा सकती । स्वयं उन्होंने भौतिक जीवन के यथार्थ को कभी नकारा नहीं है । इस ज़हर को पीकर तथा सब कुछ दाँव पर लगा कर समदमोर मन ही मन रचना-संसार की भूल भुलैयों में भटकता रहा और जब भावावेग पर नियन्त्रण न रहा तो अपनी अमूर्त भावनाओं को शब्दों का परिधान पहना कर दूसरों के सम्मुख व्यक्त करने लगा और उन्हीं के द्वारा उन्हें लिखवाता भी रहा । स्वयं उन्हें अक्षर ज्ञान तक न था । मेरा दृढ़ विश्वास है कि आराक्षर समदमोर ने सूफ़ी कवि समदमोर को जन्म दिया । अव्यक्त के व्यक्त रहस्य को पहचानने के हेतु उन्होंने सूफ़ी साधक के रूप में अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया और साधना की विभिन्न मंज़िलों को पार करके अर्थात् 'सफ़र' के विभिन्न पड़ाव तय करके वह लक्ष्य-प्राप्ति में सफल हुआ है। सूफ़ी साधना ही उनके रचना संसार का मूल प्रेरणा स्रोत रहा है । वेदना विह्वल कर देने वाले भौतिक जीवन के विविध अनुभव तथा साधनात्मक जीवन की गहन अनुभूतियों ने मिल कर उनकी काव्य-वाणी को मुखर होने के हेतु प्रेरित किया है । इस प्रकार अनुभव और अनुभूति

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

की सरल निश्छल अभिव्यक्ति उनकी कविताओं के माध्यम से होने लगी । समदमीर की प्रथम रचना के विषय में कहा जाता है कि जब तत्कालीन महाराजा हरीसिंह ने गुपकार-श्रीनगर के राजभवन में निर्माण कार्य आरम्भ किया तो समदमीर भी वहाँ आराकश मज़दूर के रूप में काम करने लगा । कठिन शारीरिक परिश्रम करते करते उन्होंने 'व्यतिरावुन व्योम' (सहना पड़ा) शीर्षक से अपनी पहली रचना कही है । यह रचना समदमीर का प्रथम प्रयास होते हुए भी भाव और अभिव्यक्ति की दृष्टि से सन्तुलित रचना कौशल का प्रामाणिक दस्तावेज़ है जिसमें जीवन की विकट स्थितियों को रंगीन शब्दों के आवरण में प्रस्तुत किया गया है । अद्भुत के प्रति आकर्षण की जिस डोर में वे खिंचते चले जा रहे थे उसका संकेत भी इस रचना में मिलता है :-

—' सखि ! काम कठिन और बोझा भारी
सहना पड़ता है
गुलेलाला जैसी काया का फीका हो गया रंग
सहना पड़ता है
क्या करने आया था इस जग में ?
कभी न छोड़ा ग़म ने साथ
किस को दे दूँ ? यह तो भाग्य बदा है
सहना पड़ता है ।
गल रही हूँ तब से, किसे कहूं, क्या हुआ है मेरे साथ
दुई का विवाद खड़ा हुआ

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अश्रु, रक्त और स्वेद कण चुपचाप पिये
सहना पड़ता है ।'[1]

मोर की समस्त रचनाओं को मुख्यत: दो भागों में विभक्त किया जा सकता है - मुक्तक रचनाएँ एवं वर्णनात्मक कथा-काव्य अथवा खण्ड-काव्य । मुक्तक रचनाओं के अन्तर्गत मोर ने 'वुन-गीत, ग़ज़ल, पद, रोफ़-गीत एवं नातिया कलाम अथवा भक्ति-परक रचनाओं की सृष्टि की है । वर्णनात्मक कथा-काव्य के रूप में मोर ने प्रसिद्ध लोक-कथा 'अकनन्दुन' को काव्य रूप प्रदान किया । मोर के अतिरिक्त सर्वश्री बहादुर ग़नाई, रमज़ान भट, तारायन्द बिस्मिल एवं अहद ज़रगर ने भी अकनन्दुन लोक-कथा को काव्य रूप प्रदान किया है । मोर ने इस वर्णनात्मक कथा-काव्य के रूप में 14 उपशीर्षकों के अन्तर्गत प्रस्तुत किया है । इस लोक-कथा को काव्य रूप प्रदान करने में भी उनका एक महत् उद्देश्य रहा है । स्वार्थमय बन्धनों के मोह पाश से मुक्त होकर तथा लोभ, मोह, ममता और अहंकार की लोह श्रृंखलाओं को तोड़ कर जब तक साधक अपने साधना पथ पर दृढ़ निश्चय के साथ अग्रसर नहीं होगा तब तक कुछ यों कर कुछ पाने की उम्मीद नहीं बन्धती ।

1- ' व्यसि कार मुश्किल भार गोब गोम व्यतिरावुन प्योम
गुलालि पानस कालि रंग गोम व्यतिरावुन प्योम
क्या करनि आयोस समसारस गमि रोस ना छयोम
दिमि कस अज़लस यो ल्यखित गोम व्यतिरावुन प्योम
तनि छस गलान वनि कस यि क्या गोम - दोन हुन्दुई न्याय प्योम
ओश्र गुम तय खून दम करिथ वोम व्यतिरावुन प्योम ।'

- "कुलयात समदमोर" पृ०- 53-55.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अकनन्दुन वही मोहपाश अथवा लौह-शृंखला है जिस ने राजा हरनाम एवं उनकी पत्नी सोनमाल को जकड़ लिया है । बक़ौले शाइर :-

--' जा देर भयी, चूल्हा जला, कुछ तय तो होना है
चन्दन की लकड़ी जला चूल्हे में
स्वयं गल जायें गा अकनन्दुन
खाने पर आयें गे मेज़बान ।
जो स्वयं अपना मास पकाये गा
मर कर भी पाये गा वह नया जीवन
समदमीर के सम्मुख है सब कुछ
खाने पर आयें गे मेज़बान ।'[1]

इस खण्ड काव्य को उचित स्वाकार प्रदान करने के हेतु मीर साहब ने कई मौलिक उद्भावनाएँ की हैं । कथा को सम्यक् विस्तार देने के हेतु यह आवश्यक था । यही कारण है कि जहाँ अन्य कवियों द्वारा लिखित अकनन्दुन की कथा सात उपशीर्षकों के अन्तर्गत वर्णित है वहाँ समदमीर ने इसे चौदह उपशीर्षकों के अन्तर्गत विस्तार के साथ काव्य-रूप प्रदान किया है । हरनाम का परिचय, पुत्र प्राप्ति की बलवती इच्छा, जोगी का वरदान, सात बहनों के साथ अकनन्दुन की बाल क्रीडाएँ, निश्चित अवधि बीत जाने पर जोगी का पुनः आगमन

1- ' नेर च्यव चेर रूव कैंह गछि अन्दुन चन्दुन ज़ालतस ज़िने
यि अकनन्दुन पानै स्यने खपने यियो मेज़मान
पनुन माज़ युस पानय रुन्ये मरिय ज़िन्दगी अन्ये
समदमीरस छु ब्रोंठ कन्ये खपने यियो मेज़मान ।'
- 'कुलयात समदमीर' पृ0- 421, 423.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

और वचन पालन का आग्रह, माँ-बाप का ज़ार-ज़ार रोना, विवश होकर अपने ही सन्तान का वध करना और चूल्हे पर मास पकाना तथा अन्त में जोगी की करामात का विशद वर्णन इस खण्ड-काव्य को रचनात्मक कौशल की दृष्टि से महिमा मंडित कर देता है। सात बेटियों के होते हुए भी हरनाम और उसकी पत्नी सोनमाल अपने आप को ला-औलाद (निस्सन्तान) समझते हैं। हमारी रूग्ण सोच एवं खंडित सामाजिक परम्पराओं और मान्यताओं पर इससे बढ़ कर और कौन सी व्यंग्यात्मक चोट हो सकती है। समदमोर शतर की धार से हमारे मानस को परत-दर-परत चीर कर कुछ सोचने के लिये विवश करता है। हरनाम पुत्र प्राप्ति के लिये अधीर होकर विलाप करता है :-

--' निष्पुत्र जब बुढ़ापा ग्रस लेगा
कौन ढूँढने निकले गा तब मुझ को ?
कौन करे गा सहायता मुझ अशक्त और निर्बल की ?
मन तड़प रहा है, मर जाऊँ गा निस्सन्तान।
चिन्ताएँ बहुत लगी हैं इस काया के भीतर
जन्मे हैं सात फिर भी मर जाऊँ गा बेकस
नारायण ! कौन करेगा श्राद्ध मेरा ?

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मन तड़प रहा है, मर जाऊँ गा निस्सन्तान ।'[1]

समद मोर का मुक्तक काव्य उनके जीवन-काल में 'कलाम-ए-समदमोर' शीर्षक के अन्तर्गत छः पुस्तिकाओं में प्रकाशित हुआ है । इसके अतिरिक्त 'लाल माल', 'आखल' एवं 'अछदार' शीर्षक के अन्तर्गत उनकी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं । जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी के तत्त्वावधान में कुलयात के रूप में समदमोर का सम्पूर्ण कलाम सन् 1973 ई० में प्रकाशित हुआ । 'कुलयात समदमोर' के सम्पादक श्री मोतीलाल साक़ी हैं जिन्होंने मोर के रचना-संसार पर विस्तार के साथ अपने विचार व्यक्त किये हैं । इस पुस्तक का परिवर्द्धित संस्करण सन् 1982 ई० में पुनः अकादमी की ओर से प्रकाशित हुआ है । सन् 1965 ई० में श्रीमुहम्मद अमीन कामिल द्वारा सम्पादित एवं जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी द्वारा प्रकाशित 'सूफ़ी शाइर' भाग-3 में भी समदमोर की पर्याप्त मुक्तक-रचनाएँ संगृहीत हैं । इसके अतिरिक्त श्री गुलाम नबी ख़याल द्वारा सम्पादित 'अकनन्दुन' शीर्षक पुस्तक में समदमोर का 'अकनन्दुन' भी संगृहीत है । सूफ़ी साधना में इश्क़ (प्रेम) का अपना विशेष महत्त्व है । इश्क़ (प्रेम) वस्तुतः दो दिलों का वह चुम्बकीय आकर्षण है जो परस्पर की दूरी मिटा कर दो चाहने वालों को

1- 'बे अवलाद कोठ यलि सोरे तस कुस तना छांडनि नेरे
नोतुवानस कुस करि इमदाद ज़ूरि ज़ूरि छुम मरि बे औलाद
वारा ग़म छिम यथ बदनस तत ज़्यथ मा तोति मरि बेकस
नारायण कुस हाव्यम श्राद्ध ! ज़ूरि ज़ूरि छुम मरि बे औलाद ।'
- "कुलयात समदमोर" पृ०- 376-377.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

एक दूसरे में लय होने के लिये प्रेरित करता है । यह बुद्धि व्यापार नहीं अपितु हृदय का अत्यन्त सूक्ष्म रसोल सम्बन्ध है जो दो रस छलकाते हृदयों को परस्पर एक सूत्र में बान्ध देता है । मूलत: प्रेम निश्छल हृदय व्यापार है जहाँ तर्क का कोई महत्त्व नहीं । बहुधा इस के कारणों की व्याख्या करना अर्थात् 'क्यों' और 'कैसे' की शंकाओं का समाधान प्रस्तुत करना सम्भव नहीं होता । प्रेम की स्थिति अत्यन्त नाज़ुक होती है । यहाँ सब कुछ प्रेमी जनों के आत्म-निर्णय पर निर्भर करता है । इस पथ पर काँटे ही काँटे बिछे हुए हैं और उन काँटों के साथ आशिक़ अपनी पलकें बिछा कर मशूक़ की प्रतीक्षा में ज़िन्दगी के एक एक क्षण को गुज़ार देता है । इस सम्बन्ध सूत्र में बन्ध कर फिर एक दूसरे से जुदा होना अथवा एक दूसरे को भुला देना बहुत कठिन और जानलेवा होता है । नि:सन्देह प्रेमानुभूति जीवन की महान उपलब्धियों में से एक है और विरले जन ही इस आँच में तप कर कुन्दन बनने की क्षमता रखते हैं ।

सामान्यत: इश्क़ दो आधार भूमियों पर फलता फूलता दिखाई देता है । भौतिक अथवा लौकिक आधार भूमि तथा अलौकिक अथवा आध्यात्मिक आधार भूमि । इश्क़े मजाज़ी (लौकिक प्रेम) तथा इश्क़े-हक़ीक़ी (अलौकिक प्रेम, इश्क़ इलाही) का स्थूल विभाजन इसी आधार पर किया जाता है । सूफ़ी साधक इश्क़े हक़ीक़ी (साध्य)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

तक पहुँचने के लिये इश्क़े मज़ाज़ो (साधन) को उपेक्षा नहीं करता अपितु लौकिक जीवन में अलौकिक सौन्दर्य-कण बिखेर देता है । इश्के-मजाज़ो उसके लिये उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना इश्के हक़ीक़ी । लक्ष्य तक पहुँचने के लिये भौतिक प्रेम भी उसके लिये मूल्यवान है। सामान्यत: कहा जाता है कि सूफ़ी साधक प्रेम को दुहरे अर्थ में ग्रहण करता है । अपने प्रिय के आतिथ्य-सत्कार के लिये मदिरा-कलश लेकर वह प्रेम-पथ पर प्रतीक्षारत दिखाई देता है । यहाँ प्रेम एक दिव्यानुभूति है जो सूफ़ी साधक को अपने यारे जानाँ से जोड़ देती है । कहने का अभिप्राय यह है कि सूफ़ी साधना में साधक आशिक़ के रूप में अपने इष्ट अर्थात् माशूक़ के लिये आकुल-व्याकुल दिखाई देता है, और रसिया बालम के साथ याराना जोड़ कर अपने हृदय के मदिरालय में नित आमंत्रित करता है ।

सूफ़ी कवि लौकिक प्रेम कथाओं अथवा उन कथाओं के पात्रों का सहारा लेकर सांकेतिक रूप से अद्भुत और अलौकिक के साथ जुड़ जाने की कोशिश में लगा रहता है और यही उसकी साधना है । उसके विचारानुसार इस दृश्यमान जगत में सर्वत्र उसके प्रिय की सौन्दर्य-छटा ही परिव्याप्त है । इश्के हक़ीक़ी की अन्तिम मंज़िल तक पहुँचने के हेतु इश्क़ मजाज़ी की भूमिका कम महत्त्वपूर्ण नहीं है । सामान्यत: ऐसा प्रतीत होता है कि कवि भौतिक जीवन के आकर्षण में बन्ध कर

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

किसी अप्सरा के बाहुपाश में सिमट कर खो जाने की इच्छा व्यक्त कर रहा है । वस्तुत: बात कुछ और ही होती है क्योंकि यह 'खो जाने की स्थिति' नहीं है अपितु 'लय होने का सतत प्रयास' है । लौकिक और अलौकिक की इस आँख मिचौनी के खेल में जो बहक जाते हैं वह अपना सब कुछ दाँव पर लगा कर भी बदले में कुछ नहीं पाते परन्तु जो सम्भल कर साधना के विभिन्न मुक़ाम तय करते हुए अन्तिम मंज़िल की ओर आगे बढ़ते हैं उनके रेगिस्तानी हृदय में अमृत की स्रोतस्विनी अक्षय प्रवाहित होती है ।

समद मीर के सूफ़ी काव्य में इश्क़ का अपना विशेष स्थान रहा है । कहीं कहीं यह शुद्ध इश्क़े मजाज़ी अर्थात् भौतिक श्रृंगार वर्णन सा प्रतीत होता है । प्रकट रूप में कोई ऐसा संकेत नहीं मिलता जिस से किसी रहस्यमय अनुभूति का आभास हो लेकिन सागर में डुबकी लगाने पर हर ग़ोताख़ोर को मोती नसीब नहीं होते । आवश्यकता इस बात की है कि समद मीर की इन रचनाओं को उनके सही परिप्रेक्ष्य में देखा जाये । प्रेमावेश में मधु बोल कह कर वह हमें अवश्य ललचाता है लेकिन साथ ही मानस के भीतर नित सुलगने वाली चिनगारी भी सुलगा देता है । ज़िन्दगी को बहुत क़रीब से देखने के परिणामस्वरूप लौकिक आकर्षण के तार उन के हृदय में अवश्य झनझना उठे हैं । सम्भव है कि यह उस श्रृंगार-प्रवृत्ति का परिणाम हो जो उसे विरासत में मिली थी अथवा उनके रससिक्त हृदय का स्वत: प्रस्फोटन हो । विरहिणी नायिका

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(साधक) इन श्रृंगार गीतों में (प्रिय मिलन हेतु) वेदना विह्वल होकर पाषाण हृदयी प्रियतम की निष्ठुरता पर कहीं व्यंग्य कसती है, कहीं विलाप करती है और कहीं साजन के उपेक्षामय व्यवहार से पीड़ित होकर वेदना के पारावार में हिचकोले खाते हुए दिखाई देती है। सूफ़ी काव्य में साधक (आशिक़) प्राय: विरहिणी नायिका के रूप में अपने माशूक़ की संगदिली पर खून के आँसू बहाते विरह पीड़ा में संतप्त दिखाई देता है।

सूफ़ी कवि समद मीर के प्रेम-काव्य में संयोग श्रृंगार की अपेक्षा वियोग-श्रृंगार के करूण चित्र प्रमुख रूप से देखने को मिलते हैं। प्रिय-प्रवास से उत्पन्न करूणा तड़पा-तड़पा कर जीवन-जीने के लिये विवश करती है। सामान्यत: श्रृंगार काव्य में पूर्वराग, प्रणय मान, सखि-वर्णन, व्यंग्योपालम्भ, मान-मनुहार, पत्र-लेखन, करूणा-विलाप, प्रकृति के उद्दीपन चित्र अथवा दाहक बिम्ब, पूर्व-स्मृति, मिलन की उत्कट इच्छा आदि स्थितियों (situations) का रससिक्त चित्रण देखने को मिलता है। सूफ़ी कवि समद मीर भी विरहताप से व्याकुल होकर प्रणय की नाजुक स्थितियों से गुज़रता हुआ लौकिक श्रृंगार-वर्णन की भिन्न भिन्न पद्धतियों को अपनाता है। लेकिन मूलत: वह साधक है, श्रृंगारी नहीं। विरह असहनीय है अत: आशिक़ (साधक) भीतरी इच्छा को व्यक्त करते हुए कहता है :-

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

--' ईद है मेरे हेतु, आ जाते मैं आतिथ्य सत्कार करूँगी
कोसम[1] पुष्पों की मालाएँ गूँथू गी ।
नज़रों से ओझल होना सहन नहीं होता तनिक भी
'कोसम' पुष्पों की मालाएँ बनाऊँगी ।
हर तरफ मचा है शोरो-शर
निस्सन्देह ईद है प्रेमी जनों को
ईद तभी है जब आओ गे मेरे घर में
कोसम पुष्पों की मालाएँ बनाऊँ गी ।'[2]

विरहिणी का सखि के सम्मुख करुण विलाप :-

--' इश्क़ ने मुझ को गला दिया सखि ! टुकड़े हुए हृदय के
पोड़ा भर दो मेरे भीतर सखि ! कैसा कर्ज़ है मुझ पर ?
पगला उठी मैं सुन्दरी मृगनयनी
दग्ध हो उठी भीतर सखि ! बाहर हूँ अच्छी भली
दिल रो रहा है कामदेव ! ठहर वहीं
सखि ! किन आँखों से बहाऊँ ग़म के आँसू ।'[3]

प्रिय से तनिक ठहर जाने के लिये विनति और आग्रह :-

--' आखल को काया दग्ध हो उठी, प्रिय, तनिक तो कर -
ठहराव

1- "कोसम" - { बैंगनी रंग का एक फूल }
मूल संस्कृत → कुसुम , कश्मीरी → कोसम

2- 'ईद छम यिति प्यालि भरयो मालि करयो कोसमन
दोद दूरयर ज़ूरि न ज़रयो मालि करयो कोसमन
तरफि तरफन शोरो-शरयो ईद छय बेशक आशकन
ईद छय त्यलि यलि यिख म्य गरयो मालि करयो कोसमन ।'
- "कुलयात समद मोर" पृ - 149, 151.

3- ' छव आशकन मार कारनस म्य ग्व दिल पारि व्यतिये
छव पुर आज़ार बारनस तमिस क्या दारि व्यतिये
सोन्दर देवानि कारनस हरन चमो अन्दिर दोज़मुख न्यबरि-
छस पारि व्यतिये

{ शेष अगले पृष्ठ पर }

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

آرُوَل — اَکہ قسمک شُس لیٚوُدُر گولاب (لیٚس پانہ کھسان جھُ)

(آرُوَ بہ پوٚرِن گژھُن — لیٚدرُن — لیٚدریر پھیرُن)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

दर्शनिया कर हो जाऊँगो रोग मुक्त, प्रिय, तनिक तो -
कर ठहराव
यौवन ! तुझे दुलार करूँगो पुनः आते, दर्शन देते
मेरो अखियाँ तुझे निरखतो प्रतिदिन और प्रति पल -
- प्रिय तनिक तो कर ठहराव ।'[1]

सांकेतिक शब्दों में व्यंग्योपालम्भ :-

--'झुको निगाहों से देखा सुन्दरो ने
शुक ! मैना ने गिला किया, उलाहना भेजा
या जीवित रखे या मार दे
शुक ! मैना ने गिला किया, उलाहना भेजा ।
शालिमार की पुष्प वाटिका में
आधिक अटपट आ पहुंचे
तोड़ लिये कँवल चुन चुन कर
शुक ! मैना ने गिला किया, उलाहना भेजा ।
दरगाह[2] में सम्भव है दर्शन
ढूँढने वाले ढूँढ रहे हैं
कभी किसी को हो जाता कुछ कुछ उपलब्ध
शुक ! मैना ने गिला किय, उलाहना भेजा ।'[3]

{ पृष्ठ 274 का शेष भाग }

वदन दिल छुम मदन वारो अतो रोज़, कमव वमो गुमुक -
- ओश हारि व्यसिये ।'

- "कुलयात समदमोर" पृ0-167.

1- ' तन नार दाज़ आरवलि किहो कलि कर ठाहराव
दोदार मृत्यि वारि बलि किहो कलि कर ठाहराव
यावन लूलिवय लोलि बाँयि यिखना रोय हाव,
वुछमय दोहे थलि थलि किहो कलि कर ठाहराव ।'
- "कुलयात समदमोर" पृ0-212-213.

2- "दरगाह" - हज़रतबल, श्रीनगर, जहाँ पैगम्बर-इस्लाम का मोय-
- शरीफ़ सुरक्षित है ।

3- 'अछि दारि वुछ म्य ताँलि टारि तोति हारि सूज़िय ग्राव

{ शेष अगले पृष्ठ पर }

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

विरहिणी प्रियतमा के हृदय में सन्देह का काँटा चुभ गया है, वह बराबर प्रिय से लौट आने का आग्रह करती है :-

--' रोग मुक्त होंगे तुम्हारे मस-प्याले से
आ जाओ प्रिय आजाओ
मतवाले प्रिय ! किस पर हुए फ़िदा तुम ?
है कोई मुझ से अति सुन्दर !
किस की रूपाकृति को पसन्द किया ?
आजाओ प्रिय आजाओ ।'[1]

समदमीर ने साधना के विभिन्न मुक़ामों की आनन्द-दायक स्थितियों एवं अन्तिम लयावस्था का हृदयाकर्षक चित्रण अपनी रचनाओं में किया है । यहाँ ज्ञान की प्रखर ज्योति का तेज उतना प्रचण्ड नहीं है जितना कि अनुभूति के माधुर्य का प्रसार । श्री मोतीलाल साक़ी के शब्दों में -- "इनकी शाइरी केवल शाइरी नहीं है अपितु एक सन्देश है । यह उस लोक से सम्बन्धित है जहाँ ईश्वर भक्त और भक्त ईश्वर हो जाता है । इस {आवाज़} की जिह्वा और कान हैं, आँखें और नाक है । एक होकर केवल एक शब्द सुनती है । यह एकत्व में भिन्नत्व और भिन्नत्व में एकत्व है । यह वह 'मुक़ाम' है जहाँ जीव मानव बन जाता है और मानवता पुष्ट होकर फलती फूलती है ।"[2]

{पृष्ठ 2 का शेष भाग}

या ज़िन्दि थावि या मारि तोति हारि सूज़िय ग्राव
शालमारिच पोशिवारि आशिक़ तूरि लारान
पम्पोश च़टिच वारि वारि तोति हारि सूज़िय ग्राव
दरगाह दरशुन दारि छ़ारवुनि वान छि दिवान
कांसि कांसि केंछ़ा यारि तोति हारि सूज़िय ग्राव ।'
- "कुलयात समदमीर" पृ0-273-274.

1-' बलव अमि चानि मस प्यालो वलो लालो वलो लालो

{ शेष अगले पृष्ठ पर }

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

साधना पथ पर उन्होंने एक साथ दो-दो भूमिकायें निबाही है - एक सूफ़ी साधक की सरल, शुद्ध एवं स्वार्थहीन जीवन-निर्वाह की भूमिका तथा दैवीगुण सम्पन्न सूफ़ी कवि की भूमिका। यह निर्णय करना कठिन है कि उनकी कौन सी भूमिका अधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यदि वे कवि न होते तो आध्यात्मिक आनन्दोपलब्धि के मूल्यवान क्षणों को शाश्वत रूप प्रदान नहीं कर सकते और यदि वे सूफ़ी सन्त न होते तो सम्भवत: उनका काव्य इतना सारगर्भित और अर्थवान न होता। साधना प्रधान जीवन की गहन अनुभूतियों को समदमीर ने शब्दों का परिधान पहना कर मूर्त रूप प्रदान किया है लेकिन कहीं कहीं उनकी अभिव्यक्ति इतनी जटिल और दुरूह बन गई है कि अर्थ ढूँढना तो क्या, खींच-खींच कर अर्थ निकालना अथवा शब्दों के साथ अर्थ जोड़ना भी दुश्वार हो जाता है। सम्भवत: गहनानुभूति की जटिल स्थितियों से दोचार कवि कुछ कहने की चाह रखते हुए भी स्पष्ट कुछ कह नहीं पाता। सूफ़ी साधना में लीन समदमीर इश्क़ हक़ीक़ी के रंग में बहुत गहरा रंग जाता है और लयावस्था का आनन्द लेने से पूर्व साधना पथ की जानलेवा स्थितियों

---

§ पृष्ठ 2 का शेष भाग §

छलय ज़ोलहम ब्व क्या ज़ालो वलो लालो वलो लालो
कसू गोहम मत्यो मुश्ताक़ हुसन बन्द छा त्व म्यानि खोति ब्याख
तसुन्द कोरथम पसन्द खालो वलो लालो वलो लालो।'
- "कुलयात समदकोर" पृ0- 72.

2- "गोशिर" - मोतीलाल साक़ी - 'समदमीर' पृ0- 136.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

को आशिक़ाना अन्दाज़ में दर्द भरे लहजे के साथ काव्यमय अभिव्यक्ति प्रदान करता है । यही उनका अनुभूत सत्य है और यही उनकी जीवन पूंजी । सूफ़ी साधना में 'कनाअत - नफ़्स' का विशेष महत्त्व है । इसे ही हम इन्द्रिय निग्रह के अर्थ में अथवा आत्म-निग्रह के सन्दर्भ में ले सकते हैं । सिद्ध पुरुष तो वही है जो इन्द्रियों पर कठोर निग्रह करके उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार व्यवहार क्षेत्र में बरतता है । इन्द्रियों को नियंत्रित कर पाना कोई आसान काम नहीं है, इस पथ पर भौतिक तृष्णा प्रलोभनों रूप में साधक को विचलित कर देती है जो इसे मृग-तृष्णा समझ कर ठुकरा देता है वहीं 'लाहूत' की अवस्था पाने का अधिकारी है :-

—' मेरी बातों का अर्थ है कुछ और
सप्त-रन्ध्रों[1] का वनवुन {गायन} पहचान
गिनने में सैंकड़ों पिछड गये
शेष रह गया केवल एक
सप्त-रंध्रों का 'वनवुन' पहचान ।
यह दुनिया आना जाना है
{अजब} मेहमान नवाज़ी है

1- "सप्त-रन्ध्र - अ/ शरीर के सात रंध्र - दो आँखें, दो कान, दो नथने एवं मुँह ।
सतनुई छन्द → आ/ सप्त-ऋषियों के अर्थ में भी इसको लिया जा सकता है।
इ/ कश्मीर की ऋषि-परम्परा में सात ऋषियों के अर्थ में भी इसको लिया जा सकता है ।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार - गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र जमदग्नि, वशिष्ठ, कश्यप और अत्रि

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

भरद्वाज - भरद्वाज के गोत्र या वंश में उत्पन्न

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

हावो हुअर यह राश्ी नफ़्स-शैतान
पगला जाता हूँ, नहीं मार सका मैं उसको
सप्त रंध्रों का 'वनवुन' पहचान ।'[1]

अपने 'अहं' को मारना साधक के लिये नितान्त आवश्यक है । यदि वह अपनी ज्ञान गरिमा पर इतराता/ऐंठता है तो यह उसकी सबसे बड़ी भूल है । यह ज्ञान तो कन्धों पर ढोने वाला बोझा है । वास्तविक इल्म तो इल्मे-लुदनी[2] (स्वयं प्रकाश ज्ञान) है । कठोर साधना के पश्चात् यह ज्योत जिस के हृदय में प्रज्वलित होती है वहीं अपने यार को पहचान लेता है शेष व्यर्थ ही जानकार होने का ढिंढोरा पीटते हैं :-

-- 'मगर अे साहिबे होश[3]! तुम साथ ले चुप्पी
यदि आजाये शक्ति आँखों में श्रवणेन्द्रिय को
तो हर रात होगी मुक्ति की रात
यदि ताक में रहना है उपवन के भीतर
तो कथनी और करनी को सम कर दे
वही होगा बुद्धिमानी का काम
यदि साहस नहीं तो साथ ले चुप्पी ।

1- ' कथनुई म्यान्यन माने ब्योनुये सतनुई हुन्द वनवुनये ज़ान
हतनुई ग्रेयन्द रांव पथ रूद कुनुये सतनुई हुन्द वनवुनये ज़ान
पांछ लांज़ दुनिया युन त गछुनये कांछ खोर ज़ोर गोम नफ़्स-शैतान
मतनुई छुस म्य तोग न मारूनये सतनुई हुन्द वनवुनये ज़ान ।'
- कुलयात समदमीर ' पृ0-103-104

2- "इल्मे लुदनी" - वह ज्ञान जिसके द्वारा परम सत्य को पहचाना जा सकता है । ईश्वर को पहचानने की जानकारी ।
- "काश्मिर डिक्शानरी" भाग-4, पृ0-370.

3- होशमन्द व्यक्ति । इल्मे लुदनी = अल्मी (पुं0) - ईश्वरज्ञान

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

गर्व न करना ज्ञान बुद्धि पर
सच कहता हूँ सोधो बात, याद रख इसको
यह ढोने वाला बोझा है कन्धों पर
इस बोझे से निस्सहाय न मर जाना
'स्वयं प्रकाश ज्ञान' हो सच्चो विद्या है
मिटा देतो मन को शंका को
नहीं पढ़ा किसी से इस विद्या को
स्वयं मोत ने भीतर जोत जगा दो
मन मुदित हुआ ।"

साधना पथ पर सचेत {बेदार} रहने को आवश्यकता है । जो ख़्वाबे ग़फ़लत {अज्ञान को स्वप्नमाया} के मोह-पाश में बन्ध कर भौतिक एषणाओं के प्रति आकर्षित होते हैं वह समयान्तर में अपनी पहचान भी खो देते हैं । साधना वस्तुतः सतत प्रयास है उपलब्धि के हेतु और साधक जब पूरी तन्मयता के साथ अपनी क्षुद्रताओं को कुचल कर इस पथ पर आगे बढ़ता है तो किसी न किसी दिन ज़िन्दगी के वीराने में अवश्य बसन्त खिल उठता है । राह खोजते हुए {साधना रत रहते हुए} मय-खाने तक पहुँचना तभी सम्भव होगा जब जीव भौतिक आकर्षणों से मुक्त होकर खुले दिल और दिमाग़ से तलाशी यार में लगा रहे ।

।- मगर अे साहिबे होश चि कर लब बस्तदारी
अगर यश्मन बनो गोश नि हर शाबरस्तगारी ।
अगर ह्यक ज़ाग दर बाग़ ज़बान तय दिल कुनुई लाग
दरखनय कर त खामोश स्व छय बांड वोस्तकारी
अल्म ग्व अल्मि लुदनी ग़ल्यम शाक आम बदनी
पोस्म नो कांसि निशा तोश कोस्स आरसिन यारी ।"
- "कुलयात समद मीर" पृ०- 255-256.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

उसके लिये दीदारे - सनम (प्रिय-दर्शन) हो तो साधना का फल है और जीवन की सब से बड़ी उपलब्धि :-

— ' आँखों से सुन रहस्य भरी दिल की बातें
यदि हो बेदार यदि हो बेदार
कानों से देख, दर्शन होंगे
यदि हो बेदार यदि हो बेदार ।
सुख निद्रा को मत कर स्वीकार
प्रतिक्षण रह आकुल-व्याकुल
भर जायेगा हृदय घाव और खिल उठेगी वाटिका
यदि हो बेदार यदि हो बेदार ।
मदिरालय में है भर भर के कलश
बट रहा है मय जानकारों में
यदि है चाहत राह खोजते पहुँच वहाँ
यदि हो बेदार यदि हो बेदार ।'[1]

इस प्रकार दिल के आईने से जब ज़ंग उतर जाता है तो अपना ही प्रतिबिम्ब सर्वत्र व्याप्त दिखाई देता है । यह वह स्थिति है जब साधक अपने साध्य में लय होकर परमानन्द का अनुभव प्राप्त करता है । उसे अपने ही सौन्दर्य का विस्तार सर्वत्र दिखाई देता है । आज उसका कण-कण द्युतिमान है, आज तो वह विशुद्ध अनुभूति मात्र

1.- ' अछिव सूत्यि बोज़ दिलिक असरार छुवे बेदार छुवे बेदार
कनव सूत्यि वुछ बनो दीदार छुवे बेदार छुवे बेदार
मं कर मंज़ूर यि आरामि ख़्वाब यि हरदम रोज़ दर इज़्तिराब
बलि दयूवि दिल फोलो गुलज़ार छुवे बेदार छुवे बेदार
छु मोय बारि बारि मोय खानन करान तक़्सीम दिवान ज़ानन
छुयये लय पय ह्यवान तूरि नेर छुवे बेदार छुवे बेदार ।'

— "कलयात समदमीर" पृ0-70-71.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

शेष रह गया है । सिद्ध-हस्त मोत को अलौकिक और अद्भुत सौन्दर्य छटा से वह रोमांचित हो उठता है :-

--'कहाँ से आये कहाँ जाना है किसने पता बताया ?
देख यहाँ से वापस अपना हो प्रतिबिम्ब झलकता है
जब दिल के आईने से ज़ंग उतर जायेगा
देख यहाँ से वापस अपना हो प्रतिबिम्ब झलकता है
सिद्धहस्त मोत ! है मोतियों का डालर
बड़भागो भलो तरह से देख अपने बड़प्पन को
मणि मालाएँ पहनो हैं किस अन्दाज़ में
देख यहाँ से वापस अपना हो प्रतिबिम्ब झलकता है ।'[1]

सूफ़ी दर्शन में 'शून्य' का अपना विशेष महत्त्व है । देखा जाय तो 'शून्य' निर्गुण निराकार सर्वव्यापक ब्रह्म का हो प्रतीक-बोध है । वह सर्वत्र व्याप्त है, पर साथ हो अदृश्य और अबोध्य भी है । अजर और अमर होने के साथ साथ सम्पूर्ण सृष्टि का नियंत्रक है । प्रकृति के कण कण में विद्यमान होते हुए भी वह सर्व ग्राह्य और सर्व सुलभ नहीं । निर्गुण भक्ति के अन्तर्गत प्रेम मार्गी शाखा में उस निर्विकार शाश्वत सत्य को प्रेम के सहारे हो पहचानने का

1.- 'कति आख कोत गछुक कारि दितुई पय
योरि वुछ ओरि छुई पनुनुई रोय
दिलि आईनस यलि ज़लि खय
योरि वुछ ओरि छुई पनुनुई रोय
पोख्ति कारि यारि वुछ मोख्ति जालर
भक्ति बड़ि वारि वुछ पनुन कर-व-फर
लालि मालि कमि हालि नाल वुछनय
योरि वुछ ओरि छुई पनुनुई रोय ।'
- 'कलयात समद मोर' पृ0- 347, 349.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रयास किया जाता है । यही शून्य समदमीर की कविता में 'कुछ नहीं' के रूप में 'सब कुछ' के अर्थ में व्यवहृत हुआ है ।[1] उन्हें दृढ़ विश्वास है कि सत्-पथ पर चल कर ही शून्य से एकाकार होगा :-

--'वहम को छोड़ो
छोड़ दे छल-कपट और झूठ का व्यवहार
सत्-पथ पर चल कर ही शून्य से होगा एकाकार
रहना सचेत, कहीं शैतान न ठग ले तुझ को
जब साँस उखड़ जाएगी, क्या कुछ कह पाओगे ?'[2]

इसी लिये समदमीर निरन्तर 'कुछ नहीं' का चमन सजाने का प्रयास करता हुआ दिखाई देता है :-

--'सजा रहा है 'कुछ नहीं' का चमन समदमीर
जिस का नाम नहीं कोई वह उसे ही बांट रहा है
'कुछ नहीं' से खिले हैं पहले ही यमन-पुष्प[3]

1- "कुछ नहीं" कवि के लिये एक ऐसा बिन्दु है जिस से व्यक्त विश्व में व्याप्त परम सत्ता तक पहुँचने के लिये प्रस्थान किया जा सकता है । यह 'कुछ नहीं' ही वह है जो 'सब कुछ' को अर्थ देता है और अस्तित्व के गहन रहस्यों का उद्घाटन करता है । शायद इसी कारण कवि 'कुछ नहीं' के बारे में इतना कुछ कह गया है ।'
-"कश्मीरी साहित्य का इतिहास" डॉ0 शशिशेखर तोषखानी- पृ0- 226-227.

2- 'वसवसि त्राव बेयि फन्द अपज़्यारो
पज़िये रज़ि लम बनख शिनिव
ह्यस कर पुथ न यति इबलीस पोरो
दम यलि तोरो फोरो क्या ।' - "कुलयात समदमीर" पृ0-238

3- "यमन" - एक सुगन्धित हल्के श्याम वर्ण के फूल का नाम ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

होश से रह, कहाँ खोया है ध्यान तेरा ?'[1]

आत्मज्ञान अथवा स्वानुभूति को सूफ़ी दर्शन में पर्याप्त महत्व दिया गया है । गहनान्धकार में ज्ञान ज्योति के प्रज्वलित होते न होते अज्ञान का तमसावरण छिन्न-भिन्न हो जाता है । सूफ़ी साधक वस्तुतः अपनी ही तलाश में भटकता दिखाई देता है । यही तलाशे हक़ है, सत्य को जानने और पहचानने का प्रयास - एक दिव्यानुभूति । कवि को पूर्ण विश्वास है कि सच्चाई के मार्ग पर निरन्तर साधना रत रह कर ही भीतर की दुई का परिहार हो सकता है । इस दुई को मिटाना ही वास्तव में अपने और प्रिय के मध्य की खाई को पाटना है । सूफ़ी साधकों का लक्ष्य है - परमसत्य से साक्षात्कार और समद-मोर इसी तलाशे-हक़ में सफ़र के विभिन्न पड़ाव तय करने के हेतु किसी के आश्रय से निश्चित दिशा में आगे बढ़ता हुआ दिखाई देता है । 'नाखून' से आकाश खुरचना' तो उसके लिए बेमानी है :-

--'या तो पहले स्वयं गहन रूप से
प्रभावित होना चाहिये
नहीं तो व्यर्थ बनना होगा झूठा
नाखून से आकाश खुरचना

1- ' कैंहनस समदमोर शोरान छु यमन
यथ न कैंह नाव तु छु तो बंज़रान
कैंहनस छो फोलिमुत तुलि गुलि यमन
होश थाव कमन तूत्थि छुई ध्यान ।'
- "कुल्लियात समदमोर" पृ०- 162.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

इच्छा कभी न होती पूर्ण,
मीर की रहस्यमयी बातें
प्रभावित करें बेगानों को
मारा जिस ने देव अबराह को,
जिस पढ़ने से साहब मिले वह पढ़ना है और ।'[1]

अतः सूफ़ी साधक परमसत्य को प्रतिष्ठ करते हुए प्रकृति के कण-कण में सत्य के आभास को प्रतिबिम्बित पाता है । यही तलाशे-हक़ की अन्तिम परिणति है और यही नूरे इलाही के ज़ुहूर का व्यक्त रूप है । इसकी पहचान ही तो सत्य की पहचान है । सूफ़ी साधना में भी सत्य का महत्त्व सर्वोपरि है :-

--'सत्य ही है हक़ और नाहक़
मैं कहता हूँ यदि सुन लोगे ।
सत्य स्वरूप है सूर्य आकाश पर
न थकता कभी और न होता अस्त
प्रतिक्षण है गर्दिश में
मैं कहता हूँ यदि सुन लोगे ।
सत्य स्वरूप है सितारे और चन्द्रमा

1- ' या गछ़ि गोडि कैंह पानस सनुन नति बाल बनुन अपज़्योर
नाखून सूत्यि असमानस खनुन तोति मा वोतल्यस टोर
मीर सुन्दर सीर गछ़ि गारन सनुन यमि देव अबराह मोर
जिस पढ़ने से साहब मिले वह पढ़ना है और ।'
- "कुल्लियात समदमोर" पृ0-245.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रज्वलित हैं हर कोण में
कभी नहीं वे रुकते हैं
मैं कहता हूँ यदि सुन लोगे ।
समदमीर है नम्बल हार
सच है शा'र कहा अच्छा उसने
ख़ुदा आशिक़ है सच्चाई पर
मैं कहता हूँ यदि सुन लोगे ।'[1]

सूफ़ी साधना में जाम-ए-इश्क़ अर्थात् इश्क़ की मदिरा से भरपूर जाम का अपना ही विशेष आनन्द है और साधक तलाशे यार में भर-भर के जाम लिये कहीं प्रतीक्षारत दिखाई देता है, कहीं स्वागत की तैयारियों में व्यस्त और कहीं भावी मिलन की सुखद कल्पनाओं में मस्त रहता है । उसे लग रहा है कि यारे जानाँ ने प्रेम मदिरा पिला कर भीतर ही भीतर पीड़ा की चिनगारी सुलगा दी है । यह हाला जब हलक़ के नीचे उतर जाती है तो स्वप्नों की दुनिया में स्वयं बसन्त खिल उठता है । प्रेम पतंगे की गुन्जार, दीपक की लौ पर मर मिटने की उत्कट इच्छा और प्राणाहुति अथवा पूर्ण समर्पण का वह साहसी अभियान करुणा के प्रभाव को गहराता है और अन्ततः लौ का मद्धिम पड़ जाना जीवन की क्षणभंगुरता का ही एहसास है । अतः आवश्यकता केवल इस बात की है कि आशिक़ अपने माशूक़ में

1- पोज़ गव हक़ त नाइक़ बावै योद चि बोज़ख
पज़ि कुई सिरयो असमान नायज़ाँह थकान न लोसान
चरकस अन्दर छु हर वक़ बावै योद चि बोज़ख
पज़िको सितारि तय जून चमकान कून ता कून
ज़ाँह मा गछान तिमन थख बावै योद चि बोज़ख

{ शेष अगले पृष्ठ पर }

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

लय होने के हेतु प्रेम मदिरा के कलश भर भर कर हल्क के नीचे उतार ले अर्थात् अपने यार के रंग में रंग कर यकरंग हो जाये :-

--' पिलाये प्याले भर भर के मदिरा के जब से
काया दहक रही है तब से, मैं सहती आई
दूर अकेले छोड़ चले, मैं सुध बुध खो बैठी
काया दहक रही है तब से, मैं सहती आई ।
चसका लगा है कैसा तुझ को इश्क़ पतंगे
आत्मदाह के अवसर पर दया न आई तुझे रत्ती बर
जिस पर हुए निछावर उस की शक्ति (ज्योति) भी -
धुँध लाये गी
काया दहक रही है तब से, मैं सहती आई ।'[1]

समदमीर की इश्क़-हक़ीक़ी से सम्बन्धित रचनाओं का बाह्य आधार लौकिक है लेकिन इनकी आत्मा अलौकिक है और अद्भुत के साथ परत-दर-परत जुड़ी हुई है । इस इश्क़िया काव्य की अभिव्यक्ति सर्व ग्राह्य तो दिखाई देती है लेकिन मर्म तक विरले ही जन पहुँच पाते है । इस दृष्टि से समदमीर की उल्लेखनीय रचनाएँ हैं

--'पिलाया उसने, मैं होश खो बैठी '[2]

(पृष्ठ 2 का शेष)
समदमीर छु नम्बलहार तमी वोन पोज़ ज़बर शार
पज़िसुई खोदा छु आशिक़ बावे योद चि बोजख ।'

- "कुल्लियात समदमीर" पृ0- 217-218.

1-' यनि मस चांवनस टूरे टूरे तनि छस ललिवान मूरे नार
ह्यस व्यसरांवस त्रांनस दूरे तनि छस ललिवान मूरे नार
चश्कि कमि कुई छुई अश्कि पोंपूरे पान ज़ांलिथ चे मा दानि ओय आर
फान यस पथ गोख तसति त्रान सोरे तनि छस ललिवान मूरे नार ।'

" कुल्लियात समदमीर" पृ0-125.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

2- 'चांवनसत तय स्दुम न होश' (128).

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

'सात रन्ध्रों का वनवुन (गायन) पहचान'[1]

'क्या मतलब है इसका'[2]

'आँखों से सुन नहीं रहेगा सन्देह'[3]

'हे पार्वती !'[4]

'परख ले अपने आपको,

मर कर मारें गे क्या ?'[5] तथा

'किस ने देखा ईश को अपनी आँखों से ।'[6]

समदमीर के काव्य में वेदान्त एवं अद्वैतवादी चिन्तन पद्धतियों का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है । आश्चर्य इस बात का है कि स्वयं वे पढ़े लिखे नहीं थे और न ही संस्कृत भाषा की उन्हें जानकारी थी फिर भी भारतीय चिन्तन की छाप उनके काव्य में स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है । मेरा विचार है कि समदमीर अवश्य किसी पण्डित-शास्त्री के सम्पर्क में रहे हैं अथवा सूफ़ी साधकों के संग रह कर किसी वेद पण्डित से उनकी लगातार भेंट होती रही है । कश्मीरी हिन्दू और मुसलमानों के मध्य शताब्दियों से चले आ रहे सद्भाव पूर्ण वातावरण में यह कोई अनहोनी या असम्भव बात

1- 'सतनुई हुन्द वनवुनये ज़ान' (103).
2- ''अथ वन तं माने क्या' (239).
3- 'चश्मव बोज़ रूज़ीनु शक' (153).
4- 'पार्वती लो' (144).
5- 'पान सरि कर मरिथ मारन क्या' (188).
6- 'दय कॉम वुछ दीदव' (262)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नहीं थी । उनके काव्य मे कहीं कहीं शुद्ध संस्कृत शब्दावली ही नहीं मिलती अपितु हिन्दू धर्म-शास्त्रों से सम्बन्धित पौराणिक पात्र भी सार्थक रूप में अपनी विशिष्ट भूमिकाएँ निबाहते हैं । ऐसा वही साधक कवि कर सकता है जिस को अन्य धर्मावलम्बियों की विचार-पद्धतियों की सम्यक् जानकारी प्राप्त हो । शास्त्रों के मंथन से सार-तत्त्व में प्राप्त मूल तत्त (तत्त्व) विभिन्न धर्मावलम्बियों को एक समान अपनी ओर आकर्षित करता है । दीवारें क्षुद्र जीव ने खड़ी कर दी और महान साधक हद बन्दियों (सीमाओं) से बाहर निकल कर बीच की खाई को पाटने के लिये समन्वय बुद्धि से काम लेता हुआ साधना पथ पर अग्रसर दिखाई देता है । वेदान्त दर्शन का वाक्य है - सोऽहम् (मैं वही हूँ ।) जिस में यह माना जाता है कि इस ब्रह्माण्ड में ब्रह्म व्याप्त है और जो कुछ है सब ब्रह्म ही है, जीव भी ब्रह्म ही है, पर माया के आवरण के कारण अपने (ब्रह्म) रूप को पहचान नहीं पाता, जब उक्त आवरण हट जाता है तब वह ब्रह्म ही हो जाता है ।[1] इसी प्रकार 'ओ३म्' शब्द के माहात्म्य से भी वे अनभिज्ञ नहीं थे । तीनों लोकों में व्याप्त मूल शक्ति 'ओ३म्' है जिसे वेदों में तत् को 'संज्ञा' से अभिहित किया गया है । यह शक्ति तो तेज रूप है । श्रीमद्भगवद्गीता में तो ओ३म् शब्द को

1- "बृहत् हिन्दी कोश" - प्रकाशक : ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी, सम्पादक : कालिका प्रसाद तथा अन्य-संस्करण-19 पृ०-1561

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

'एक अक्षर रूप ब्रह्म'[1] माना गया है । समदमोर अपनी एक रचना में 'ओ३म्' तथा 'सोऽहम्' के प्रति अपना विश्वास व्यक्त करते हुए कहता है :-

--' कु-विचार से कर ले तौबः
पाप-पुण्य की बात छोड़ कर जानो यकसाँ
समद मोर कह गये मानो शास्त्र
ओ३म् सो पढ़, पढ़ ओ३म् सो ।'[2]

कवि को दृढ़ विश्वास है कि 'ओ३म्' पवित्रता, शुद्धता एवं निर्मलता का सार रूप है । 'ओ३म्' को पहचान ही तो साधना का मूल उद्देश्य है । 'ओ३म्' में सृष्टि की समस्त शक्तियाँ समाहित हैं । सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् से समन्वित शक्ति पुंज तो 'ओ३म्' है । अतः 'ओ३म्' की सम्यक् पहचान ही वस्तुतः अपनी पहचान है :-

--' ओ३म् ही है इखलास[3]
जाने किस दिशा में चला गया
खूने जिगर पीकर यही रहा अरमान
रहना पड़ा प्रतीक्षा में कई दिवस और मास
साती[4] का वनवुन (गायन) पहचान।

1- 'ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं, स याति परमा गतिम् ।।
- "श्रीमद्भगवद्गीता" अध्याय-8, श्लोक-13.

2-' राधि बद निशा कर त्राहि भगवान
पोण्य त पाप त्राविथ बोज़ यकसान
वोन समदमोरन शास्त्र इयूह
पर ओम् सू पर ओम् सू ।'
- "कुल्लियात समदमोर" पृ0-182.

3- पवित्रता, निश्छलता, खुलूस, निष्कपट प्रेम ।

4- दो आँखें, दो कान, दो नथुने तथा मुँह ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अर्थ भिन्न है मेरी बातों का
सातों का वनवुन पहचान ।'[1]

सप्त ऋषियों (सप्तर्षि) ने कठोर तपस्या के द्वारा भगवान को जानने और पहचानने का प्रयास किया । उन्होंने क्या खोया और क्या पाया - यह विचारणीय है लेकिन इसी नाना रूपात्मक जगत में राम पधारे और अपने कर्तव्य कर्म को निबाह कर प्रकृति को आततायी के भार से मुक्ति दिला दी । समद मीर की प्रेम साधना में तर्क-दुनिया का कोई महत्त्व नहीं । यदि जीव में आत्मिक शक्ति है तो राम और कृष्ण की पहचान इसी धरती पर सम्भव है :-

-- 'सप्त ऋषियों ने कोह बयाबान अपनाये
ईश ढूँढने हेतु
दीन-हीन है बेगानों में
हे पार्वती !
सात कोष्ठ शोभित हैं इसी जगह पर
और सात हैं सुलतान (राजा)
सीता के हेतु रामावतार हुआ
हे पार्वती !'[2]

जिस का मन पवित्र हो उसके लिए राम और रहीम एक समान हैं ।

सांसारिक मोह-पाश से मुक्त हो कर मन जब सिद्धावस्था की ओर

1- 'ओ३म् ओस इख़लास गोम कोर कुनये चीम ख़ूनि जिगर ख्योन अरमान
रयतनुई त दोहन प्योम प्रारूण्ये सतनुई हुन्द वनवुनये ज़ान ।'
- "कुल्लियात समदमीर" पृ0-103.

2- ' सतऋषव रा'टि कोह बिथाबान
छ़ारहोन भगवान
तिम गा'रनुई मंज़ आ्रिकतिये
पारवतिये लो !

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आगे बढ़ता है तो दुई का भेद धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है और परस्पर वैर अथवा सन्देह के लिये कोई गुञ्जाइश नहीं रहती। साधक के जीवन की महान उपलब्धि है - दिव्यानुभूति। इस विशिष्ट अवस्था पर पहुँच कर अपने और पराये का भेद भाव कहाँ रहता है? वह तो समता की भूमि है जहाँ पहुँच कर राम और रहीम दिव्य ज्योति के प्रतीक बन जाते हैं। [redacted] धार्मिक संकीर्णताओं में जकड़े हुए आधुनिक युगीन राक्षस-नुमा मनुष्य के लिये यह सब से बड़ी चुनौती है। समद मीर सूफ़ी साधक के लिये मन की पवित्रता को नितान्ताक्षयक मानते हैं। मन मार कर अथवा मन को अपने वश में करके उसे मल-रहित विशुद्ध अनुभूति का रूप प्रदान करना 'सोऽहम्' के रहस्य को पहचानने के लिय आवश्यक है :-

--' आशंका, घृणा, क्रोध और भ्रम
होगा मुक्त जो इन सब से
उसके लिये यकसाँ होगा राम-रहीम,
नफ़रत का भाव होगा दूर जिसके मन से
वह है साधु --
ओ३म् सो पढ़, पढ़ ओ३म् सो
काम का कर ले वध, कहीं न रहे कोई मोह
ओ३म् सो पढ़, पढ़ ओ३म् सो।'[1]

---

§ पृष्ठ 291 का शेष भाग §

सो = सोऽहम् (मैं वही हूँ)

सत कुठि यथ म्यानि जायि शूबान
सत छिमो सुलतान
सोतायि रामावतार ततिये
पारवतिये लो।'
- -कुल्लियात समदमीर' पृ0- 144-145.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

1.-' चलि यस शाक, दुई, चक त शुब्दू §शेष अगले पृष्ठ पर§

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

समदमोर के नातिया कलाम का विशेष महत्त्व है । इस प्रकार की स्तुति प्रधान भक्ति परक रचनाओं में पैग़म्बर इस्लाम हज़रत मुहम्मद साहब की शान में भक्त-हृदय नत मस्तक होकर श्रद्धा-सुमन निछावर करता है । नात वस्तुत: भक्ति काव्य की ही एक विधा है जिस में कवि ईश-दूत की अलौकिक शक्ति का महिमा गान निश्छल हृदय से पूरी तन्मयता के साथ करता है । इसे हम स्तुति-गीत भी कह सकते हैं और समदमोर ने हज़रत नबी की शान में अत्यन्त सुन्दर भक्ति-गीतों की रचना की है । प्रकृति के कण-कण में उसका सौन्दर्य व्याप्त है । उस ज्योति पुंज के सम्मुख जीव का अस्तित्व बिल्कुल नगण्य एवं तुच्छ है । वह तो सम्पूर्ण प्रकृति का नियंता है । नबी की दया और दिव्य दृष्टि से ही हमारी डूबती नैया बीच मझधार से पार उतर सकती है । नातिया कलाम में मुहम्मद साहब के प्रति समर्पण का भाव निहित रहता है । भक्त अपना सर्वस्व ईश दूत के चरणों में निछावर करके केवल उनकी कृपा दृष्टि का प्रसाद पाने के हेतु प्रतीक्षा-रत दिखाई देता है :-

--- 'सर्वोपरि है तुम्हारा स्तबा
या मुहम्मद मुस्तफ़ा

---

§ पृष्ठ 292 का शेष भाग §

राम रहीम तस यकसान छू
गलि यस मनि दुई बनि साधू
पर ओम् तू, पर ओम् तू
काम गाल, खामयिनि रोज़ी मूह
पर ओम् तू, पर ओम् तू ।'

- "कुल्लियात समदमोर" पृ0- 180-182.

नबी = ईशदूत, अवतार, पैग़म्बर
मुस्तफ़ा = हज़रत मुहम्मद साहब का खिताब
पवित्र, पुनीत, निर्मल, शुद्ध

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

हदोलाहद अर्श ऐला[1]
या मुहम्मद मुस्तफ़ा
दुश्वार है नाम स्मरण तेरा
सुगन्धित हो उठता इस से,
सद हज़ार बार धो लेता जिह्वा
या मुहम्मद मुस्तफ़ा ।'[2]

क़नाअत-नफ़्स पर बल देते हुए भक्त नफ़्से-अम्मार {वह मानसिक शक्ति जो बुरे कामों की ओर प्रवृत्त करती है} की तबाहकारी से व्याकुल हो उठा है । अपने इष्ट की शरण में नत-मस्तक हो कर वह ईश कृपा के हेतु इस प्रकार निवेदन करता हुआ दिखाई देता है :-

--' पस्त हुआ मैं थाम ले मुझ को
अे शाहे रसूले अरबो !
आप ही हैं गमख़्वार मेरे
अे शाहे रसूल अरबो !
क्यों न बहाऊँ अश्रु
गम का सैलाब उमड़ आया है
और डूब गया मैं विलोन हुआ

1-' सोमा के भीतर हो असीम आसमान के राजाधिराज ।'

2-' क़द चोन वुछ म्य बाला या मुहम्मद मुस्तफ़ा
हदोलाहद अर्श ऐला या मुहम्मद मुस्तफ़ा
नामि पाक चोन ह्यून छु दुश्वार निश ब्व अत्तार गछि हा
सद हज़ार बार ज़्यव ब्व छलिहा या मुहम्मद मुस्तफ़ा ।'

- "कुल्लियात समदमोर" पृ०-156.

बाला - ऊँचा, बुलंद
क़नाअत (अ०) = थोड़ी सी चीज़ पर संतोष करना
नफ़्स (अ०) सांसारिक इच्छाएँ
अरब = अरबदेश, अरब का निवासी
अरबी = अरब का निवासी, अरबी भाषा
रसूल = ईशदूत, नबी

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

काम वासना ने तबाह किया हमको
चिन्ता कभी न की पाप और पुण्य की
संकट ग्रस्त हुआ जीवन उलझ गया
अे शाहे रसूले अरबी !
हम हैं लाचार कीजिये उपाय कोई
अे शाहे रसूले अरबी ।'[1]

समद मीर ने अपनी रचनाओं में अत्यन्त सरल एवं व्यावहारिक कश्मीरी भाषा (बोली) का प्रयोग किया है । यह वस्तुत: लोक में प्रचलित कश्मीरी भाषा का बोलीगत रूप है जिस पर कहीं कहीं फ़ारसी भाषा का बेलगाम प्रभाव भी देखने को मिलता है । समझ में यह नहीं आ रहा है कि भाषा के सन्दर्भ में मीर ने इस क़दर गुलामी के फन्दे को क्यों स्वीकारा है । आख़िर यह कौन सी विवशता है जिस ने मीर जैसे सरल प्रकृति के जीव को भी अभिव्यक्ति का यह कृत्रिम चोला पहनने के लिए विवश किया । लेकिन मीर की समस्त रचनाओं पर यह कथन लागू नहीं होता । उनकी पर्याप्त रचनाएँ कश्मीरी भाषा के मिज़ाज के अनुकूल भी हैं । यहाँ मीर जन-मानस को छूता हुआ भाषा सौन्दर्य की अद्भुत रंग छटा बिखेरने में पूर्ण सफल हुए हैं । मीर ने रेख़ता भाषा (कश्मीरी मिश्रित खड़ी बोली) का प्रयोग भी किया है । भावनाओं

1- ' पस गोस दस रटतम म्य चुई अे शाहे रसूले अरबी
बस छिवि ग़मन ग़मख्वार तुही अे शाहे रसूले अरबी
नफ़्से अमारन कारि ख़राब नाय वुछ गोनाह नाय सवाब
गोर गई असीख तुल यि हुई अे शाहे रसूले अरबी
वदना ग़मुक सालाब खोतुम अज़ गरकि आब गोस वारि गुम
कैँह चारि कर लाचार छी अे शाहे रसूल अरबी ।'
- "कुल्लियात समदमीर" पृ0-169-171.

अशीरब = मुश्किल कठिन
आसीर (अ0) कठिन, क्लिष्ट, मुश्किल

नफ़्से अम्मारः - [illegible] शक्ति जो बुरे कामों की ओर प्रवृत्त करती है ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

के आवेश में अथवा साधना की लयावस्था का आनन्दानुभव करते हुए मीर मस्ती के आलम में रेख़ता भाषा को अभिव्यक्ति का साधना बना कर झूम उठते हैं :-

— 'फ़ना संसार आज या कल
तो समझो सोच करके गल
वह पहले वादा कालो अबल
तो समझो सोच करके गल
यह दिल अपना हलब-शोशगा
बनाओ मार सच्चो निगाह
हुई रोशन तो रोग़न मल
तो समझो सोच करके गल ।'[1]

— 'पढ़ पढ़ के गया पत्थर लिख लिख के गया चोर
जिस पढ़ने से साहब मिले वह पढ़ना है और ।
रिन्दे छुख तय ज़िन्दे मरून नोख़नन करून ग़ोर
जिस पढ़ने से साहब मिले वह पढ़ना है और ।'[2]

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में समद-मीर कश्मीरी सूफ़ी काव्य के इतिहास में एक प्रतिष्ठित समन्वयवादी सूफ़ी साधक और कवि के नाते साहित्य प्रेमियों में पर्याप्त चर्चित रहे हैं । आराकश समदमीर एक कर्मठ जीव थे जिन्होंने अपने अस्तित्व को रक्षा के हेतु जो तोड़ परिश्रम किया और श्रमकणों में पारेजानी को

1- "कुल्लियात समद मीर" पृ0-130-131.
2- -वही- पृ0-242.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मन-मोहक आकृति प्रतिबिम्बित पाई । दिव्यानुभूति को पाने के हेतु वे निरन्तर साधनारत रहे लेकिन पारिवारिक उत्तरदायित्व से कभी मुँह नहीं मोड़ा । शा'र कहने की प्रतिभा उनमें मौलिक थी, देवी थी और अद्भुत थी । समदमोर की सर्जनात्मक प्रतिभा को आज भी किसी अनुभवी समालोचक की तलाश है जो धूल भरे हीरे को पोंछ कर इस क़दर चमका दे कि हमारे दिली-दिमाग का गहन अन्धकार कवि के अनुभूत सत्य की प्रकाश किरणों से जगमगा उठे ।

--' लोभ जनित उपासना बेमानी है
वह तो व्यर्थ का बोझा कन्धों पर है,
लोभ का अन्तत्वादी है कुछ नहीं रहता शेष
दो को गिनते हो चार
उस स्थल पर त्यागना होगा छः को
और एक पर रहना होगा एक निष्ठ ।
जिस पढ़ने से साहब मिले वह पढ़ना है और ।'[1]

- 0 -

1-' तमहिच अबादत छ न तति जमह, ति छु बालि नखस बोर
तमाह समाह क्या कुई जमह, दोन छुक गंज़रान ग़ोर
शान गछि तथा जायि वातिथ लथ दिनि अकसुई रोज़ुन लोर
जिसे पढ़ने से साहब मिले वह पढ़ना है और ।
- "कुल्लियात समदमोर" पृ0-245.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(LII) सूफ़ी काव्य

(आ) अब्दुल अहद ज़रगर - (सन् 1909 - 1983 ई०)

1- साधनारत जीवन चरित
2- कृतित्व
3- तसव्वुफ़ : जीवन की गहनानुभूतियों से साक्षात्कार
4- इश्क़ : मजाज़ी से हक़ीक़ी
5- प्रिय - विरह : वज्दानी कैफ़ीयत
6- शून्य : निर्गुण - निराकार ब्रह्म का प्रतीक
7- क़नाअत - नफ़्स : क्षणिक आकर्षणों के प्रति उदासीनता
8- भारतीय चिन्तन का प्रभाव : समन्वयवादी दृष्टि
9- सोऽहम् : अन्तरात्मा की आवाज़
10- ओ३म् : सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् का सार-तत्व
11- इब्हाम : गुण अथवा दोष
12- त्रास की कविता
13- निष्कर्ष ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आधुनिक युगीन कश्मीरी जन-मानस में इर्फ़ानि अर्थात् मारिफ़त को अमृत धारा प्रवाहित करने में सूफ़ी कवि अब्दुल अहद ज़रगर का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । अहद ज़रगर केवल एक सूफ़ी बुज़ुर्ग ही नहीं थे अपितु भारतीय दर्शन, वेदान्त, शैवमत एवं सगुण वैष्णव भक्ति से प्रेरित और प्रभावित सर्जनात्मक कलाकार भी थे । उन्हें केवल एक सूफ़ी कवि कहना ही पर्याप्त नहीं होगा । ऐसा कह कर हम उनकी रचनात्मक प्रतिभा के साथ न्याय नहीं कर सकें गे । वास्तव में वे एक समन्वयवादी चिन्तक एवं कलाकार थे जिन्होंने तसव्वुफ़ (सूफ़ीइज़्म) एवं वेदान्त, भक्ति और चिन्तन तथा लौकिक और अलौकिक का अद्भुत समन्वय अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है । उन के समकालीन भक्त कवि मास्टर ज़िन्द कौल ने शुद्ध भारतीय चिन्तन पर आधारित भक्ति रस (ईश्वर के प्रति उत्कट अनुराग) प्रधान रचनाएँ लिखीं लेकिन अहद ज़रगर ने एक ओर 19वीं शताब्दी के प्रसिद्ध कश्मीरी सूफ़ी कवियों की परम्परा को 20वीं शताब्दी में अपने रचनात्मक कौशल से गौरवान्वित किया तो दूसरी ओर भारतीय चिन्तन-शास्त्र की विभिन्न धाराओं से अमृत कण एकत्र करके जन-मानस के तमसान्धकार

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

को मिटाने का प्रयास भी किया है । महान् समन्वय कारी साधक एवं कवि के रूप में उन्होंने सच्चिदानन्द घन के प्रति अपनी दृढ़ आस्था व्यक्त की । तसव्वुफ़ में भारतीय रंग अथवा भारतीय संस्कृति की यह मनोहर छटा अपने आप में अद्भुत एवं अलौकिक है ।

आधुनिक कश्मीरी काव्य में परम्परा से हट कर बहुत कुछ लिखा गया है और आज भी लिखा जा रहा है । कई देशी एवं विदेशी काव्य आन्दोलनों, चिन्तन पद्धतियों एवं विचार सरणियों ने इसके अन्तर-बाह्य स्वरूप में पर्याप्त परिवर्तन उपस्थित किये । राष्ट्रीय काव्य, क्रान्तिकारी काव्य, प्रगतिवादी काव्य, प्रयोगवादी काव्य, नई कविता, विचार काव्य केवल कवि की समझ तक सीमित रहने वाला काव्य और न जाने कितनी अन्य धाराओं में कश्मीरी काव्य बीसवीं शताब्दी में प्रवाहित हुआ लेकिन देखने योग्य विशेष बात यह है कि परम्परागत मूल्यों की पूर्ण अवहेलना न हो सकी । ये मूल्य आज भी कलाकार को सर्जन की प्रेरणा प्रदान करते हैं । परम्परागत मूल्यों की क्षीण धाराओं का अस्तित्व कई बार आधुनिकता के बहाव में अवश्य ख़तरे में पड़ा लेकिन आधुनिकता की भीषण आन्धी उन्हें समूल उखाड़ फेंकने में सफल न हो सकी । श्री अब्दुल अहद ज़रगर वर्तमान युग में उसी भव्य सांस्कृतिक परम्परा के प्रकाश स्तम्भ हैं । अहद ज़रगर ने युगीन काव्य आन्दोलनों से अप्रभावित रह कर अपने साधनामय जीवन की गहनानुभूतियों को

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

काव्य वाणी प्रदान की ।

अहद ज़रगर का जन्म 20वीं शताब्दी के पहले दशक में नरवरा-श्रीनगर के डांगर पोरा[1] मुहल्ले में हुआ । निश्चित जन्म तिथि के विषय में पर्याप्त मतभेद है ।[2] स्वयं ज़रगर साहब भी अपनी निश्चित जन्म तिथि के बारे में अन्त तक अनुमान ही लगाते रहे । जुलाई सन् 1981 में एक भेंट वार्ता में उन्होंने अपनी आयु 70 वर्ष बताई जिस के आधार पर उनका जन्म सन् 1910 अथवा 1911 ई० माना जा सकता है ।[3]

1- श्री मोतीलाल साक़ी ने इस मुहल्ले का नाम मकार मुहल्ला लिखा है ।
*-देखिये - "गाशिर" - मोतीलाल साक़ी - पृ०-100.

2- अ/ श्री अमीन कामिल ने यह तिथि अनुमानत: सन् 1916 या 1917 मानी है जो सही नहीं है । उन्हीं के तर्क को ध्यान में रख कर सही गणना के आधार पर यह तिथि सन् 1907 होनी चाहिए थी ।
-देखिए "सूफ़ी शाइरि" भाग-3, अमीन कामिल, जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - सन् 1965 ई०- पृ०- 73.

आ/ प्रोफ़ेसर मुही-उद्दीन हाजिनी ने यह तिथि सन् 1908 मानी है जिस का अनुमोदन श्री गुलाम नबी फिराक़ ने अपनी रचना "नॉवि शाइरि सोम्बरन" में किया है ।
-"काश्मिर शाइरी" सम्पादक - श्री मुही-उद्दीन हाजिनी, साहित्य अकादमी प्रकाशन - सन् 1960 ई०, पृ०-207

इ/ श्री मोतीलाल साक़ी के अनुसार वे सन् 1905-06 में जन्मे हैं ।
- "गाशिर" - साक़ी - पृ०- 100

3- अ/ "शीराज़ा" (कश्मीरी) - अहद ज़रगर नम्बर - जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी के मुख्य पत्रिका - सन् 1984 ई०
'अहद ज़रगर' - भेंट वार्ता - मेहराज-उद्दीन, पृ०- 130

आ/ इसी पत्रिका के एक और निबन्ध में श्री मोतीलाल साक़ी ने लिखा है कि ज़रगर साहब ने भेंट वार्ता में अपनी आयु 72 वर्ष बताई ।
(शेष अगले पृष्ठ पर)

* (वास्तव में मकार मुहल्ला डांगर पोरा के बहुत निकट है और दोनों नरवरा श्रीनगर में स्थित है।) —लेखक—

CC-0. Bhagwan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

उनके पिता स्वर्गीय गुलाम मुहो-उद्दीन पश्मीना बुन कर और एक माहिर रफ़ूगर भी थे ।

नाम के साथ 'ज़रगर' शब्द जुड़ा है स्पष्ट है इनके पूर्वज सुनार का काम करते होंगे । 25 वर्ष की अवस्था में इनका प्रथम विवाह हुआ लेकिन पत्नी अधिक समय तक जीवित न रह सकी । तत्पश्चात् उनका द्वितीय विवाह हुआ और अपनी दूसरी पत्नी के साथ अन्त समय तक उन्होंने सुखद गार्हस्थिक जीवन व्यतीत किया । इस पत्नी से उनके पाँच बच्चे उत्पन्न हुए जिन में तीन लड़कियाँ और दो लड़के - सुमार्दि अहमद ज़रगर तथा शाहनवाज़ ज़रगर - हैं ।

ज़रगर साहब ने विधिवत किसी मदरसे से शिक्षा ग्रहण नहीं की बल्कि कोदो कदल श्रीनगर में श्री हसन शाह नामी अखुन (फ़ारसी → अखुंद - शिक्षक, उस्ताद) साहब के पास फ़ारसी भाषा पढ़ने जाते थे यौवन काल में ही वे सूफ़ी बुज़ुर्गों की सोहबत में उठने बैठने लगे और इश्क़-हक़ीक़ी की रुमकोय आकर्षण में बन्ध गये । यहाँ गुरु अथवा पीर के बिना गत (पहुँच) नहीं । इस पथ पर ज़रगर साहब का दिशा-निर्देशन कई पहुँचे हुए बुज़ुर्गों और सन्तों ने किया जिन में उल्लेखनीय हैं - सर्वश्री अब्दुल कबीर लोन, मीर वाइज़ मौलवी अहमद उल्लाह

(पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

अत: उनका जन्म सन् 1909 ई० में हुआ होगा - ऐसा मानना पड़ेगा ।
- "शीराज़ा" - अहद ज़रगर नम्बर - पृ - 43.

इ/ "अहवालनामा" - भाग-I में उनका जन्म सन् 1905 ई० में माना गया है । लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता ।
"अहवालनामा" - भाग-I, सम्पादक चमनलाल चमन, कश्मीर अख़्तर - कश्मीर विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय प्रकाशन - सन् 1979 ई०-पृ०- 161.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

साहब (अमा साब), वाज़पोरा श्रीनगर के रसूल भट तथा नरवरा श्रीनगर के माम साब गनाई । यौवनावस्था में ही ज़रगर साहब ने काव्य-लेखन आरम्भ किया और लगभग 50 वर्ष तक बराबर इस साधना में लीन रहे । उनकी रचनाएँ समय समय पर छोटी छोटी पुस्तिकाओं में प्रकाशित होती रही जिनकी संख्या 12 है । तत्पश्चात् उन के दो बेटों ने मिल कर अपने पिता की समस्त रचनाओं को 'कुल्लियात' के रूप में प्रकाशित किया जिसमें ज़रगर साहब की दो सौ से अधिक मुक्तक रचनाएँ संगृहीत हैं । इस के अतिरिक्त ज़रगर साहब ने कश्मीर की प्रसिद्ध लोक-कथा पर आधारित खण्ड काव्य 'अकनन्दुन' भी लिखा जिसमें 12 शाखाओं के अन्तर्गत इस करुण-रस प्रधान लोक-कथा को सोद्देश्य पद्य-बद्ध किया गया है । जब तक साधक सांसारिक आकर्षण के मोह-पाश से मुक्त नहीं होता अथवा जब तक भौतिक जीवन के क्षणिक सुख-वैभव के प्रति वह अनासक्त न हो तब तक अध्यात्म की ऊँचाइयों को छूना उसके लिये पूर्णत: असम्भव है । 'अकनन्दुन' प्रसिद्ध लोककथा को अहद ज़रगर ने अपने गहन आध्यात्मिक अनुभवों की अभिव्यक्ति के हेतु पद्य-बद्ध किया है । इस कथा के द्वारा कवि लोक-मानस को परत-दर परत स्पर्श करता हुआ हक़ीक़त को जानने, पहचानने और उसमें लय होने के लिये विवश करता है । इस कथा प्रधान वर्णनात्मक खण्ड-काव्य के मूल में भी लौकिक आकर्षण के साथ

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

साथ अलौकिक प्रेम और जीव ब्रह्म के पारस्परिक सम्बन्ध पर विचार किया गया है । सूफ़ी साधना में लौकिक प्रेम का विशेष महत्त्व है क्योंकि अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति के हेतु साधन रूप उसका व्यवहार किया जाता है । अहद ज़रगर लोक की मांसल अनुभूति को ही इस प्रकार सौन्दर्य कणों से अद्भुत रूप और आकार प्रदान करते हैं कि उसके भीतर अलौकिक सौन्दर्य पुंज स्वतः दीप्तिमान हो उठता है ।

अहद ज़रगर ने 'गुल व सनोबर' शीर्षक से एक मस्नवी भी लिखी है जिस को उनके सुपुत्र श्री खुर्शीद अहमद ज़रगर ने कुछ वर्ष पूर्व प्रकाशित कराया है । इस मस्नवी का कथा तत्त्व फ़ारसी का जूठन है जिसे ज़रगर साहब ने किसी उर्दू किस्से से अपनाया है ।[1] कथा तत्त्व भय-उत्पादक तथा आश्चर्य जनक है जब कि राजरानी गुल अपने पति से छल-कपट करके कई पराये पुरुष रूपी दरिन्दों के साथ सह-भोग के हेतु उतावली रहती है । रात के अन्धेरे में अपनी काम-पिपासा को शान्त करने के हेतु वह महल से दूर किसी एकान्त स्थल पर एक साथ कई बदसूरत ज़ंगियों (ज़ंगी (फ़ारसी) बहुत ही काले रंग का व्यक्ति)

1- ' यि उर्दू पाठ वनिनी आंस आमिच़
अकिस दोन दोस्तन आंस कल म्य द्रामिच़
तिमव दोपहम यि कांशिर पाठ वनतन
दिलन सान्यन मवाफिक वारि अनतन ।'

- "शारीज़ि" 'अहद ज़रगर नम्बर' सन् 1984 ई0, पृ0-77

अनुवाद -- 'उर्दू में इसे कहा गया था,
दो एक मित्र जनों की प्रबल इच्छा थी
कि लिख दूँ मैं इसको कश्मीरी में
ताकि मन के मुआफ़िक़ (अनुकूल) बन जाये ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

के साथ भोग में लिप्त रहती है और तत्पश्चात् पुनः अपने निद्रामग्न पति के शयन-कक्ष में लौट आती है । नारी को भौतिक तृष्णा का यह पहलू न जाने किस असभ्य युग को याद दिलाता है । सांकेतिक रूप में ज़रगर वस्तुतः आधुनिक विसंगतियों एवं भौतिक आकर्षणों में जकड़े हुए मानव जीवन को सडाँध पूर्ण विकृतियों का ही पर्दा फाश कर रहे हैं । श्री मुहम्मद यूसुफ़ टेंग इसे द्वितीय कोटि की मसनवी मानते हैं ।[1]

कश्मीर के प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित लेखकों के सम्मान हेतु जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी के तत्त्वावधान में सन् 1962 ई० में एक विशेष सम्मान-गोष्ठी का आयोजन हुआ । इन लेखकों में अहद ज़रगर का नाम भी था । यद्यपि वे स्वयं इस में सम्मिलित नहीं हुए तथापि बाद में उन्होंने ख़िल्अत (सम्मानार्थ दिये जाने वाले वस्त्र आदि) को घर पर विधिवत स्वीकार किया ।[2] जुलाई सन् 1981 ई० में पुनः कल्चरल अकादमी की ओर से ज़रगर साहब के घर पर एक विशेष साहित्यिक गोष्ठी (महफ़िल) का आयोजन किया गया जिस में घाटी के नामवर साहित्यकार सम्मिलित हुए, इनमें उल्लेखनीय हैं -

---

1- "शीराज़ा" अहद ज़रगर नम्बर) सन् 1984 ई० - लेख- 'गुल व सनोबर'- एक परम्परा का अन्त' - मुहम्मद यूसुफ़ टेंग, पृ०-74.

2- 'अकादमी ने पहली बार सन् 1962 ई० में ख़िल्अत दिये और ख़िल्अत पाने वालों में अहद ज़रगर भी शामिल थे । इस तिथि से में जिस समारोह का आयोजन हुआ उसमें यद्यपि अहद ज़रगर उपस्थित नहीं थे तथापि उन्होंने बाद में विधिवत ख़िल्अत को घर पर स्वीकार किया ।'
'शीराज़ा' (अहद ज़रगर नम्बर) सन् 1984 ई० सम्पादकीय पाद-टिप्पणी - पृ०- 22.

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मोर गुलाम रसूल नाज़की, दीनाथ नादिम, रहमान राही, मुहम्मद यूसुफ़ टेंग, अली मुहम्मद लोन, मोतीलाल साक़ी आदि । इस भेंट वार्ता में ज़रगर साहब ने इन साहित्यकारों के साथ अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विषय में खुल कर बात-चीत की, कई शंकाओं का समाधान किया तथा साधना-प्रधान काव्य से सम्बन्धित कई साहित्यिक समस्याओं पर बुज़ुर्ग कवि ने अपने विचार व्यक्त किये । यह भेंट-वार्ता 'शीराज़ा' (कश्मीरी) के 'अहद ज़रगर - अंक' (सन् 1984 ई०) में प्रकाशित हुई और आज एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में सुरक्षित है । साहित्य के शोधार्थी के लिये इस का अपना विशेष महत्त्व है ।

21 नवम्बर सन् 1983 को प्रात: काल अहद ज़रगर का देहान्त हुआ और इस तरह कश्मीरी नई कविता के युग में भक्ति और सूफ़ी काव्य की अमृतधारा प्रवाहित करने वाला माँ सरस्वती का वरद पुत्र सदा के लिए मौन हो गया ।

अहद ज़रगर के काव्य की अपनी निजी विशेषताएँ हैं जिनके आधार पर हम निस्संकोच उन्हें 20वीं शताब्दी का सर्वश्रेष्ठ सूफ़ी कवि कह सकते हैं । शेख साहब (सन् 1805-1880 ई०), रहमान डार (मृत्यु 1875 ई०), शाहकलन्दर (मृत्यु 1880 ई०), वहाब खार (सन् 1842-1912 ई०), शाह गफ़्फ़ूर, शमस फ़क़ीर (सन् 1843-1901 ई०), एवं वाज़ महमूद (मृत्यु 1918 ई०) का सच्चा उत्तराधिकारी । एक महान सूफ़ी सन्त के रूप में इन्होंने भौतिक जीवन के क्षणिक

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आकर्षणों से अलग हट कर आध्यात्मिक आनन्द को प्राप्ति हेतु साधना को ही अपने जीवन का साध्य स्वीकारा है । आजीवन वे इस साधना में लीन रहे । उनकी साहित्य सर्जना भी वस्तुतः उसी साधना का प्रतिफलन है । इसी साधना पथ पर उन्हें जिन रहस्यमयी स्थितियों से गुज़रना पड़ा और जो नवीन दिव्य अनुभव प्राप्त हुए - शब्दों का परिधान पहना कर अहद ज़रगर ने अपनी कविताओं के माध्यम से उन्हीं रहस्यमयी अनुभूतियों को मूर्तरूप प्रदान किया । अहद ज़रगर काग़द लेखी बात नहीं कहते अपितु उनका निजी अनुभूत सत्य उनकी रचनाओं में मुखर हो उठा है । सूक्ष्म तत्त्व की पहचान हो तो उनके लिये जीवन को मूल्यवान उपलब्धि है । इस पथ पर रिन्द हो तो गूढ़ रहस्य से परिचित हो जाते हैं । ग़ाफ़िल दिशाहीन होकर पिछड़ जाते हैं :-

--' जब से सूक्ष्म तत्त्व लगा दोखने मुझ को
तब से पोषित काया टूट गई, बिखर गई ।
ख़ाम (कच्चा) हुआ पुख़्ता (पक्का) जाम पीने से
तब से पोषित काया टूट गई, बिखर गई ।
अहद ज़रगर गूढ़ रहस्य को पहचानो, देखो
रिन्द हुए महरम और पिछड़ गये ग़ाफ़िल कच्चे
ज़िन्दा दिलों में वही है रोशन
तब से पोषित काया टूट गई, बिखर गई ।'

1- ' याम ज़ाविजार आम ज़ेरान लो लो
ताम पोछर गोम पनि पनि लोलो
खाम स्यदुम पोख़्त जाम पनि लो लो

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अहद ज़रगर के काव्य का प्रमुखाकर्षण है - इश्क़ । उनकी कई रचनाओं में इश्क़ का लौकिक पक्ष अत्यन्ताकर्षक रूप में मुखर हो उठा है । सम्भव है अहद ज़रगर भौतिक जीवन में भी प्रेम की महत्ता को सर्वोपरि मानते हैं । साथ ही हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अहद ज़रगर एक विरक्त सन्त नहीं अपितु एक व्यावहारिक गृहस्थ थे और पारिवारिक आकर्षण में उसी तरह बन्धे हुए थे जैसे एक सामान्य गृहस्थ होता है । सालिक के रूप में वे अद्भुत को पहचानने के हेतु साधनारत रहे और उसी अद्भुत के साथ इश्क़ का सम्बन्ध जोड़ कर उन्होंने सूफ़ी परम्परा का अनुसरण किया अत: उनका श्रृंगार काव्य लौकिक होते हुए भी मूलत: अलौकिक है । यह तो इश्क़-हक़ीक़ी की क्रीड़ा भूमि है । यहाँ संयोग की अपेक्षा वियोग को दग्ध कर देने वाली स्थितियों का मार्मिक चित्रण हुआ है । यह वियोग किसी सामान्य विरहिणी का करुण क्रन्दन नहीं अपितु साधनारत सूफ़ी आशिक़ की अपने माशूक़ के प्रति हृदय विदारक अभिव्यक्ति है । यहाँ तड़पे है, गहन वेदना की टीस है और सब से बढ़ कर है - दग्ध हृदय की अकुलाहट । ऐसे श्रृंगार-वर्णन में - जो लौकिक होते हुए भी अलौकिक है, मांसल होते हुए भी सूक्ष्म तथा भौतिक होते हुए भी आध्यात्मिक है - कवि ने अपनी कल्पना शक्ति के आधार पर असंख्य सौन्दर्य बिम्ब प्रस्तुत किये हैं । अहद ज़रगर की इन

(- पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

ताम पोछर गोम पनि पनि लो लो ।
अहद ज़रगरि सीर वुछ दर पिन्हाँ
रिन्द महरम अन्द रुदि गाफिल त ख़ाम
ज़िन्द दिल तो छु रोज़नि लो लो
ताम पोछर गोम पनि पनि लो लो ।'

- 'सूफ़ी शायिर' भाग-3, सम्पादक- मुहम्मद अमीन कामिल,
पृ०-216-218.

CC-0. Brijmohan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

श्रृंगारिक रचनाओं में रहस्यमयी स्थितियों के प्रति उत्कट आकर्षण दिखाई देता है। डॉ० हबीब-उल्लाह हामिदी के विचारानुसार - "यह कहना सही नहीं है कि श्रृंगार-वर्णन केवल सौन्दर्य की बाह्यानुभूतियों की जानकारी प्रदान करता है। इस के कई रंग हैं और असरार परस्ती (रहस्याकर्षण) में इसका शोख़ रंग चमक उठता है। अहद ज़रगर एक सरल हृदयी कवि हैं जो अंगुली के एक इशारे से, एक नज़र से अथवा हल्के कटाक्ष से अव्यक्त सत्ता में भी रहस्यमयी छाया चित्रों को सृष्टि करते हैं। छाया चित्रों का यह रहस्यमय संसार अहद ज़रगर के लाशुऊर (उपचेतना, अन्तः संज्ञा) को जानकारी प्रदान करता है।"[1]

इश्क़-हक़ीक़ी में साधक जब अपनी सुध बुध खो कर तथा प्रेमानुराग में पग कर माशूक़ के अस्तित्व में लय हो जाता है तो दुई का भेद-भाव स्वतः समाप्त हो जाता है। ज्ञान की दिव्य ज्योति से अज्ञान के तमसान्धकार का वजूद हो मिट जाता है। वस्तुतः सूफ़ी साधक प्रति-क्षण अपने आप को पहचानने के लिये साधनारत दिखाई देता है। अपने आप को पहचानने का अभिप्राय है - सृष्टि के मूल रहस्य से अवगत होना। यही मारिफ़त का अमृतपान है। तसव्वुफ़ का अनुयायी (सूफ़ी) अध्यात्म-वादी है, उसे मोह-बन्धन में बान्धा नहीं जा सकता। यह सत्य है, लेकिन इसके साथ साथ सूफ़ी एक प्रेमी भी है और अपने प्रिय को स्थायी

1- "जदीद कश्मीर शायिरी" - डॉ० हामिदी कश्मीरी, सन् 1982 ई० पृ०-79.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

रूप से प्यार के बन्धन में बान्धने की अद्भुत क्षमता उसमें पाई जाती है । पते की बात तो यह है कि प्रिय-मिलन वास्तव में अपने ही आपके साथ होने वाला वह साक्षात्कार है जो दुई का भेद मिट जाने पर साधक को नसीब होता है :-

--' अहद ज़रगर नफ़रत करना छोड़ दे
फिर पूरा देख पाओगे अपना रूप
कभी तुम्ही हो और कभी है वह
पते की बात से हो जा बेदार[1]। ' [2]

प्रिय विरह में सूफी साधक वेदना विह्वल होकर तथा जीवन जीने को विवशता पर आँसू बहाते हुए निरन्तर मिलन हेतु आतुर दिखाई देता है । उसे अपने प्राण-प्रिय पर पूर्ण विश्वास है । विरह ताप में तप कर ही उस का मानस कुन्दन हो जायेगा । उसके भीतर तो इश्क़ की अग्नि दहक रही है । वज्द {आनन्दाधिक्य से आत्म विस्मृति} की कैफ़ीयत {दशा, हालत} अर्थात् वज्दानी-कैफ़ीयत के लिये यह आवश्यक है कि मन निर्मल एवं स्वच्छ हो और दाहक अग्नि के शोलों में यही मन का मैल गल कर नष्ट हो जाता है :-

--'हर रात प्रतीक्षा रत रहती मैं ढूँढ रही हूँ साजन को
मन मचल रहा प्रिय दर्शन को, नरगिस हो जाती पीड़ा मुक्त

1- "बेदार" - जाग्रत, सचेत ।
2- ' हा अहद ज़रगरि दूर कर दीयं
पूरि अदि डेश्यख पनुन दीदार
गाह छुख ग्योय तय गाह छुख तुई
अकि नीक्ति गछ बेदार ।'
-"संगलाब" -सम्पादक : रहमान राही, शाफ़ी शारीफ़, पृ0-205

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

भिक्षावृत्ति अपनाई उसके हेतु, नाम सुमरते माटी हो गया -
- जोबन

दहक रहो है इश्क़ को अग्नि, शोले पहुँचे इन्द्रियातीत ।
तलाशो यार में मैं निकलो मन में दहक रहो ज्वाला
कहाँ मैं पहुँचू भूलो भटको भारो बोझा ढोते
अहद ज़रगर किसे कहे जो का दुखड़ा प्रिय के बदले
विरह कथा पर धरते ध्यान, हृदय व्यथा से हो जाता मुक्त ।[1]

प्रिय बिछोह में साधक तरह तरह से अपने प्रिय को मनाने का जतन करता हुआ दिखाई देता है । जब मान-मनुहार से काम नहीं चलता तो विनीत शब्दों में नम्र-निवेदन के द्वारा प्रिय को रिझाने का प्रयास किया जाता है । यहाँ साधक के पास तर्क अथवा ज्ञान को प्रखर ज्योति नहीं है, वह तो अपना दिल खो बैठा है । यही कारण है कि वह अपने यार को मनाने की हर कोशिश में अपना सर्वस्व दाँव पर लगा देता है । निमंत्रण देने के साथ-साथ वह आतिथ्य-सत्कार का पूरा विश्वास दिलाता है । उसे इस बात की चिन्ता नहीं कि कहीं भेंट न होने पर यौवन अकारण मुरझा जायेगा । उस स्थिति में फिर माशूक़ को भी पछताना पड़ेगा । विरह अग्नि से तप्त आशिक विरहिणी के रूप में प्रिय तक संदेशा भेजने का सिलसिला जारी रखती है । उसे नित प्रयास में ही सन्तोष प्राप्त

1.- हर शबे छस इन्तिज़ारस बालयारस वंनि दिवान
शार स्यठाह छुम कर ब्व डेरान ज़र ग़ल्यम यम्बरज़ले
योच़ गदाई ह्यच़ म्य तस पत स्यच़ गयम तुई तुई करान
तांच़ छय अश्किन क्राय कांच़ाह वांच़ म्य सोई रेह शाशाकले
गारने ब्व यार द्रायस नारह मंकल छम दज़ान
लारि कोत आवारि कांरनस बार युथ गोम कुस तेले
अहद ज़रगर सोज़ि जिगर हावि कस सुनि तस सिवा
थावि योदवे कन फिराकन दरदे दिल सोख़ई बले ।'

- 'काश्मिर शायिरी' सम्पादक: प्रो० हाजिनी, पृ०-207-208.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्राप्त होता है । उसके विनोत शब्दों में अश्रुओं को आर्द्रता है, हृदय को कोमलता है और प्यारे जानाँ से मिलन को विवशता :-

"--"मेरे हमदर्द ! आदि से लेकर अंत तक अहवाल सुनाऊँ गो
आना प्रिय, मैं मिट जाऊँगो, पछतावा होगा तुम को
शोय्या बिछाऊँ गो ।
पहले हो गिलिटूर[1] में मदिरा भर दूँगो
और धोरे धोरे तुझे पिलाऊँगो भरपूर कलश
कलेजा अपना तुझे खिलाने हेतु रखूँगो प्रस्तुत
आना प्रिय, मैं मिट जाऊँ गो, पछतावा होगा तुम को
शोय्या बिछाऊँ गो ।
पाने को इच्छा ले कर जो/मैं निकलो
दाँव पर लगा दिया मेरा जो जान
वायु-दूत से सन्देश भेजूँ
आना प्रिय, मैं मिट जाऊँ गो, पछतावा होगा तुमको
शोय्या बिछाऊँ गो ।"[2]

प्रिय मिलन के हेतु व्याकुल अहद ज़रगर वस्तुतः सब कुछ खो कर भी कुछ पाने के हेतु चेष्टारत दिखाई देते हैं । संसार और जोवन को असारता पर खेद व्यक्त करते हुए वह अपनी व्यथा-कथा का अंकन व्यापक चित्र-फलक पर

1- "गिलिटूर" - एक पुष्प का नाम, सांकेतिक अर्थ में अति सुन्दर ।
2-' दरदिलि सरपाय अहवाल बावय वलि कॉल रावय छयक अरमान
सरवल बर बिस्तर वथरावय वलि कॉन रावय छयक अरमान
सुलि गिलिटूरयन मय बरनावय विलि विलि यावथ पूर पयमान
दिलि जिगरुक माज़ आयुत थावय वलि कॉल रावय छयक अरमान
हावसि द्रायस अमि चानि नावै दावस लोगुथ म्योन जू जान
यावस अथि ब्व नामि सोज़िनावय वलि कॉल रावय छयक अरमान ।'
- "संगलाब" सम्पादक : रहमान राही, शफ़ो शोक़ - पृ0-206.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

करता है । क्षणभंगुर जीवन के हसीन लमहात साधक अपने प्रिय के संग व्यतीत करना चाहता है । प्रिय को मनाने के हेतु वह हर सम्भव प्रयास करने के लिये दत्तचित्त दिखाई देते हैं । रूठ होकर वह तीक्ष्ण व्यंग्य का सहारा भी लेता है और प्रिय की निष्ठुरता पर खून के आँसू भी बहाता है । उसकी एकमात्र इच्छा - प्रिय मिलन - में ही जीवन की सार्थकता निहित है । असहायवस्था में प्रिय के निष्ठुर व्यवहार पर क्षुब्ध होते हुए भी आशिक़ बार-बार वस्तु स्थिति के साथ समझौता करके अपनी अपार सहनशीलता का परिचय देता है । वस्तुत: उसकी स्थिति करुणा-जनक है क्योंकि साधनारत रह कर धीरे धीरे उसे अपनी पराश्रित अवस्था का बोध विह्वल कर देता है और यही विह्वलता उसकी रचनाओं को रहस्यमय तथा आकर्षक बना देती है । प्रिय के हर निर्णय को स्वीकार करते हुए वह उसे बाहु में झुलाने तथा दुलार करने के लिये आतुर दिखाई देते हैं :-

--'बाज़ीगर है आखिर यह संसार
नहीं टिकाऊँ रूप और न बालपन
अप्सराओं का यौवन भी ढह जाता है
बाहु में झुलाऊँ, दुलार करूँ ।
आते समीप, मैं व्यथा-कथा सुनाती
हाय हाय ! असहनीय है वियोग-व्यथा
दस्तूर नहीं अपमानित करना

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

बाहु में झुलाऊँ, दुलार करूँ ।
अहद ज़रगर की आँखों से प्रवाहित है रक्त
प्रेम-कटार के आगे नित सीस नवाता
क़तले दिलबर है मंजूर उसे
बाहु में झुलाऊँ, दुलारे करूँ ।'[1]

सूफ़ी काव्य में 'शून्य' अर्थात् 'कुछ नहीं' का अपना विशेष महत्त्व है । यह 'कुछ नहीं' वास्तव में अमूर्त अथवा निर्गुण निराकार ब्रह्म का प्रतीक है जो सर्वत्र व्याप्त होते हुए भी सर्वसाधारण की समझ के बाहर है । इस 'कुछ नहीं' को सही पहचान हो तो सूफ़ी-साधना का लक्ष्य है । इस 'कुछ नहीं' को पहचान से तो इबलीस से मुक्ति प्राप्त होती है और 'इस्बाते वजूद' (ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण) का एहसास मन में गहराने लगता है । सूफ़ी कवियों ने इस 'कुछ नहीं' अर्थात् अज्ञात शून्य की व्याख्या अपनी कई रचनाओं में की है और अहद ज़रगर भी अपनी कविताओं में इस बेरंग के अनेक रंगों की रूप छटा को शब्दों का परिधान पहना कर प्रस्तुत करता है :-

--'कुछ नहीं' तो 'कुछ' के साथ हुआ है घुलमिल
मैं ने 'कुछ नहीं' को देखा अपनी आँखों के सम्मुख

1- ' यि छु सम्सार आखिर बाज़ीगार न छि रोज़ान सूरथ नय लोकियार
अछिदारयन स्पदान सूरो लो खोनि ललवथ करै गूरि गूरो लो
नखि यिखना सारी हाल बावै हयकि कोताह दूरयर चोन हय हय
दकि लायुन छुनि दोस्तूरो लो खोनि ललवथ करै गूरि गूरो लो
अहद ज़रगर चमो ख़ून हारान हुसनि तलवारि दम दम सर दारान
क़तल दिलबर तमिस मंजूरो लो खोनि ललवथ करै गूरि गूरो लो ।'
- "संगलाब" - सम्पादक : रहमान राही, शफ़ी शौक़, पृ०-196-97.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

'कुछ नहीं' ने हो तो मुझे भरमाया
मैं ने 'कुछ नहीं' को देखा अपनो आँखो के सम्मुख ।
यदि 'कुछ नहीं' का अस्तित्व नहो, तो आवाज़ कहाँ से आई
'कुछ नहीं'को वहाँ देखा सुसज्जित मैं ने
कुछ स्पष्ट है मख़मल ओढ़े
मैं ने 'कुछ नहीं' को देखा अपनो आँखों के सम्मुख ।
'कुछ नहीं' तो हर चेहरे में छिपा रहता है ।
'कुछ' बाहर-भोतर तो है अवश्य
'कुछ' आदि - अन्त है अवश्य
मैं ने 'कुछ नहीं' को देखा अपनो आँखों के सम्मुख ।'[1]

क़नाअत-नफ़्स का सूफ़ो साधना में अपना विशोष महत्त्व है । इस बात में कोई सन्देह नहीं कि मधु-मक्खी को प्रकृति और मकड़ो/मकड़ा के स्वभाव में पर्याप्त अन्तर होता है । लोभो व्यक्ति तो सांसारिक सुख भोग में उलझ कर इहलोक के साथ-साथ परलोक भो गँवा देता है । लेकिन सूफ़ो साधक मधु-मक्खो के समान पुष्प रज एकत्रित करके छत्ते के भोतर तो रहता है पर छत्ते के बाहर निकल कर मुक्त आकाश में विचरण को क्षमता से कभो वंचित नहीं होता । विरह ताप से बाला दग्ध हो उठो है अत: कभो कभो साजन को निष्ठुरता पर आक्रोश भो व्यक्त करतो है । उसे आश्चर्य है इस बात का कि उसके अनुभवों को सहो पहचान सामान्य जन में नहीं है । अनजान के नख़रों पर

1.- 'छु कैंह नय करिथ कैंहनस रल वुछुम कैंह नय म्य दोदन तल
छु कैंह नय क्या म्य कोरनम छल वुछुम कैंहनय म्य दोदन तल
छु कैंह नय नूति सदा कति आव छु कैंहनय तति करिथ पांराव
छु कैंह नोन नूति वलिथ मख़मल वुछुम कैंह नय म्य दोदन तल
छु कैंह नय हर रोख़ुक आंयोन छु कैंह नय ज़ाहिरो बांतिन
छु कैंह नय आंखरो अव्वल वुछुम कैंह नय म्य दोदन तल ।'
- -"संगलाब" -सम्पादक: रहमान राही, शफ़ो शोढ़, पृ0-200.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

साधक का खीझ उठना तो स्वाभाविक है :-

—'बाला के यौवन का रंग उतरा, ताज़ा फूल पड़ गया फ़ीका
वही हृदय में चुभ गया शूल
मिलन की बेला पर हुए विमुख श्मशान निवासी
वही हृदय में चुभ गया शूल ।
पुष्प-रज के साथ मधु-मक्खी ने चिल्ला खींचा
भीतर ही भीतर सुलझा रही अपनी उलझन
मकड़ा जाला बुन कर स्वतः नफ़्स के फंदे में उलझ गया
वही हृदय में चुभ गया शूल ।
प्राणों का मूल्य चुका कर जो सस्ते दामों बेचना चाहा
अनजान लगा करने नख़रे
वही हृदय में चुभ गया शूल ।'[1]

सूफ़ियों के विचारानुसार जानकार और अनजान में बड़ा अन्तर है । सूफ़ी साधना में जानकार तो पहुँचा हुआ साधक है जिस के भीतर ज्ञान-ज्योति प्रज्वलित हो उठती है और मानस का सम्पूर्ण अन्धकार अलौकिक प्रकाश से जगमगा उठता है । साधना के विभिन्न मुक़ाम तय करने के पश्चात् तथा प्रत्येक मुक़ाम पर एक नवीन अवस्था का अनुभव होने पर आशिक़ दिव्य-

---

1-' रंग बालि डोलुम ताज़ि गुलस सुई म्य दिलस कान
संग कॉल च़ोलुम राज़ बलस सुई म्य दिलस कान ।
तुलरि व्यूर ह्यथ च़ायि चिलस अन्दिर आंज़ंरावान
ज़लिर ग्यूर कोर नफ़्स छ़लस सुई म्य दिलस कान ।
यी पान्नि हेच़ाम जानि मोलस तो थोवुम अरज़ान
बेगान्नि दपान तोति लोलस सुई म्य दिलस कान ।'

- "नॉव्वि शार्रि सोम्बरन" -सम्पादकः गुलाम नबी फिराक़, पृ0-92-93

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाश अथवा स्वयं प्रकाश ज्ञान से दीप्त हो उठता है । ज्ञानी जन ही इस अवस्था का महत्व एवं मूल्य समझ सकता है अज्ञानी के लिये तो यह सब बातें निष्प्रयोजन एवं बेमानी हैं :-

' सचेत होने पर --
चार दरबारों में मिलन होता है
ज्ञानी जन परिचित हैं उस से ।
अज्ञानी अन्धों की क्या समता हो सकती
ज्ञानी जन से ?
ज्ञानी जन परिचित हैं उससे ।
रहस्यों की ओट में छिपा था
गुप्त निधि बन कर
ज्ञान चेतना से प्रकट हुआ नृत्य मुद्रा में
छः दिशाओं में जगमगा उठा प्रकाश
ज्ञानी जन परिचित हैं उस से । '[1]

मोह, लोभ, वासना एवं अहंकार अर्थात् भौतिक जीवन के छल-छन्द भरे आकर्षण साधक को पथ-विमुख कर देते हैं । इसका अभिप्राय कदापि यह नहीं है कि साधक विरक्त होकर उत्तरदायित्व पूर्ण जीवन के प्रति उदासीन हो जाये । अहद ज़रगर ने स्वयं गृहस्थ जीवन का निर्वाह

1- ' ज़ोनि सूत्यि मिलवन चोन दरबारन वॉकिफ़ कारन तमिची ज़ान
ज़ोनि रोस ओन लग्या सूत्यि गाशदारन वॉकिफ़ कारन तमिची ज़ान
गंज = निधि (फा) खज़ाना कोष
गजं मख़्फ़ी (गुप्त) छायि ओस असरारन ज़ोनि सूत्यि नोन द्राव गथ मारान,
श्यन तरफन इहाति कोर अनवारन वॉकिफ़ कारन तमिची ज़ान । '
- "सूफ़ी शायिर" भाग-3, स० मुहम्मद अमीन कामिल, पृ०-234

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

करते हुए वहदतुलवजूद[1] (ब्रह्मवाद) के प्रति अपना दृढ़ विश्वास व्यक्त किया है। वह तो वास्तव में सालिक[2] थे और वाजिबलवुजूद[3] के लोकोत्तर दिव्य रूप के प्रति पूर्ण समर्पित। आत्म निग्रह के साथ विकार रहित जीवन जीने में ही सालिक को परमानन्द का अनुभव प्राप्त होता है :-

—' मोह, लोभ, काम वासना पर पा ले नियंत्रण
गला घोंट दे अहंकार का
अपने आप को मार कर सोऽहम् को खोज।'[4]

असार संसार के चमकते रंग अहद ज़रगर को कभी आकर्षित नहीं करते। उन्होंने अपनी कई रचनाओं में भौतिक जीवन की क्षण भंगुरता पर क्षोभ व्यक्त किया है। लेकिन इसके साथ ही साथ भौतिक जीवन से उदासीन होकर सन्यास लेने की बात कभी नहीं कही है और न स्वयं उसके प्रति किसी प्रकार का आकर्षण व्यक्त किया है। कीचड़ में कमल के समान जीवन जीने का अदम्य साहस लेकर वे कर्मक्षेत्र में क्रिया-रत रहे। वस्तुतः सूफ़ी साधक को ये क्षणिक चमकीले मोह-बन्धन बान्ध नहीं सकते। वह हक़ीक़त को पहचान कर लाहूत की स्थिति में पहुँचना चाहता है। अतः

1- यह सिद्धान्त कि संसार में केवल एक ईश्वर के सिवा और कुछ नहीं है, ब्रह्मवाद।
2- वह व्यक्ति जो गृहस्थाश्रम में रहते हुए बहुत बड़ा साधक हो।
3- जिस का अस्तित्व दूसरे के सहारे न हो, अर्थात् ईश्वर - स्वयंभू।
4- ' मोह, लूभ, काम रठ वुठ अहंकार
रूह नाश स्पदिथ सोऽहम् गार।'
- "कुल्लियात अहद ज़रगर" - स० ख़ुर्शीद अहमद ज़रगर तथा शाहनवाज़ ज़रगर - पृ०-90.
'पम्पोशिर मंज़ ग्व पंदि कायनात' शीर्षक कविता से उद्धृत।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नासूत, मलकूत और जबरूत को मंज़िलें तय करता हुआ वह सतत अपने चरम लक्ष्य को ओर आगे बढ़ता है । भौतिक जगत के स्वर्णपाश उसे बान्ध नहीं सकते यही कारण है कि अहद ज़रगर बार बार कहता है :-

--' होशियार जनों के सम्मुख मैं ने दाना दाना मोती फेंका
बेशक नादारों{कंगालों} के हेतु कहीं नहीं कुछ भी
हाशियार जनों से कहता अहद ज़रगर
यहाँ आये हो, वहाँ चलने को तैयारी कर ।'[1]

--' असार है संसार क्षणभंगुर, बेवफा, साथ न देता हरदम
यौवन का बाँकपन ढहने पर
दाँव पर लगा मसवल[2] का जीवन ।'[3]

--' छूट जाये गा साथ आत्मीय जनों का
किसी समय भी
रिन्द बन कर ज़िन्दगी पहचान
असार है संसार छल कपटमय व्यवहार
रिन्द बन कर ज़िन्दगी पहचान ।'[4]

"सोऽहम्" की अवस्था में सूफ़ी सन्त अपने ज़मीर {अन्तरात्मा} की आवाज़ पहचान कर वज्द {आनन्दाधिक्य से आत्म विस्मृति} की हालत में वहदतुल-वुजूद की अवस्था अर्थात् अद्वैत की अवस्था को प्राप्त होता है । इस स्थिति

1- ' मोखित छुक म्य दानि दानि होशयारन
तावन छु बेशाक नादारन
पोखित कारन वनान अहद ज़रगर
यति आख तोरिच सखरा कर ।'
- "सूफ़ी शायिर" भाग-3, सं०- मुहम्मद अमीन कामिल -
' तोरिच सखर कर' - पृ०- 212.

2- मसवल → एक पुष्प का नाम, सांकेतिक अर्थ - सुन्दरी, अप्सरा

3- 'तावनुन बाज़ार दुनिया पोशिकत छुई बेवफ़ा
यावनुन चिकिचाव सूरिथ दाविज़ू लोग मसवले ।'
- "काशिर शायिरो" सं० प्रो० हाजिनी, पृ०- 207-208.

{ शेष अगले पृष्ठ पर }

CC-0. Shushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मैं हो शम्अ और मैं हो परवाना
मैं हो प्रकाश का मूल कारण
मैं हो सूर्य चन्द्र प्रज्वलित हूँ
इक नुक़्ते से जागृत हो जा ।
मैं हो हूँ संवाद रत और मैं हो हूँ मूल रहस्य
मैं हो हूँ विश्वास भरा जीवन
मैं हो मौत को मधु हाला पी के बैठा हूँ
इक नुक़्ते से जागृत हो जा ।'[1]

तसव्वुफ के साथ-साथ अद्दुद ज़रगर ने भारतीय धर्म, दर्शन एवं विभिन्न भक्ति आन्दोलनों से भी काव्य-लेखन की प्रेरणा ग्रहण की । वेदान्त और शैव-मत से ज़रगर साहब विशेष रूप से प्रभावित हुए थे । कश्मीर शैव-मत का प्रमुख केन्द्र रहा है । सम्पूर्ण सृष्टि शिव की लीला है और शिव स्वयं शक्ति के बिना शव है । शिव का व्यक्त रूप ही लीलामय जगत है और इसे सौन्दर्य-युक्त बनाने में शिव की पूरक शक्ति है । अद्वैतवादी दर्शन से प्रभावित होकर ज़रगर ब्रह्म और जीव की दुई (द्वैत) को मिथ्या मानते हैं । इतना ही नहीं ज़रगर सगुण भक्ति आन्दोलन से भी पर्याप्त प्रभावित रहे हैं । कहीं राम भक्ति ने उन के हृदय में आनन्द की रस धारा को प्रवाहित किया और

1.- दयि सांयि ब्रोंह स्पुद ओसुस बांयि अकि नोक़्त गढ़ बेदार
पयि सुई मंज़ सन योद छय लय अकि नोक़्त गढ़ बेदार
बांयि छुस मयखान्नि पेमाने बांयि छुस साकी हयथ सरशार
बांयि छुस बागरान मारफ़त मय अकि नोक़्त गढ़ बेदार
बांयि छुस शमअ त परवानय बांयि छुस गाशुक बांनीकर
बांयि शामसीकमर पुज़लानय अकि नोक़्त गढ़ बेदार

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कहीं कृष्ण भक्ति के प्रभाव में उन्होंने प्रेम लक्षणा भक्ति अथवा पुष्टि मार्गीय भक्ति-पथ का अनुसरण किया। अहद ज़रगर की रचनाओं को पढ़ कर यह बात स्पष्ट होती है कि हिन्दू शास्त्रों और देव मालायी पात्रों ने भी उन्हें अपनी ओर आकर्षित किया था। उन्हें इस बात का विश्वास हो गया था कि सभी धर्म-सम्प्रदायों एवं आस्तिक दर्शनों का मूल तथ्य एवं कथ्य एक ही है। यहाँ इस बात को स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि अहद ज़रगर को किसी एक सम्प्रदाय अथवा सिद्धान्त की खूँटी से नहीं बान्धा जा सकता। कश्मीर के सूफ़ी कवियों की यह विशेषता रही है कि उन्होंने समन्वय की भावना से प्रेरित होकर हिन्दुओं के शास्त्रों एवं देवमालायी पात्रों के प्रति अपना आकर्षण व्यक्त किया है बल्कि कहीं कहीं उन्हीं देवमालीय पात्रों के द्वारा अपने कथ्य को मूर्त रूप प्रदान किया है। 20वीं शताब्दी के कश्मीरी सूफ़ी कवियों में अहद ज़रगर ने शास्त्रों का प्रभाव सर्वाधिक ग्रहण किया है जिस के कारण कभी कभी उनके विशुद्ध सूफ़ी कवि होने पर भी प्रश्न चिह्न लग जाता है। उनके काव्य व्यक्तित्व का सामूहिक जाइज़ा लेते समय इस तथ्य को समझना और पहचानना नितान्त आवश्यक है कि अहद ज़रगर हिन्दू शास्त्रों एवं विभिन्न दार्शनिक चिन्तन पद्धतियों से बेहद प्रभावित थे। श्री अर्जुन देव मजबूर के विचारानुसार - "अहद ज़रगर की

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

बांयि दर गुफ़्तार छुस बांयि पय बांयि ज़िन्दगी ह्यथ छुस दमदार
बांयि प्यालि मोतुन चय म्यूठुई अकि नोक़्ति गठ़ बेदार।'
- "संगलाब" -सम्पादक : रहमान राही, शाफ़ी शारुक़, पृ0-204-205.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

यह देन इस्लामी तसव्वुफ़ और वेदान्त में अन्य शास्त्रों से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दावली का मेल कराके उस ज्ञान स्रोतस्विनी को निरन्तर प्रवाहित करती रहेगी जिसे कश्मीर के सूफ़ी कवियों ने प्रवाहित किया। यह प्रेम-गंगा कश्मीरियों को प्रेम, ज्ञान एवं अध्यात्म का अमृत रस पिलाती रही और उन विभिन्न ज्ञान सरणियों का परस्पर मेल कराती रही।"[1] वैष्णव भक्ति के प्रति अपना अटूट विश्वास व्यक्त करते हुए वे स्वयं इस तथ्य को स्वीकार करते है कि शास्त्राकर्षण उन्हें अपनी ओर निरन्तर खींच रहा है :-

— 'शात्रुघ्न, राम, लक्ष्मण और भरत
दशरथ के यहाँ चार हुए उत्पन्न
प्रिय मिलन हुआ राम सीता का
लौट आते दिन ढलने पर !
अहद ज़रगर निकल पड़े हृदय सम्भाल के
सुसज्जित शास्त्राभरण से
बन्धन लगे शास्त्राकर्षण में
लौट आते दिन ढलने पर।'[2]

1- "शीराज़ा" - अहद ज़रगर नम्बर- सन् 1984 ई० 'अहद ज़रगर तांबुन शास्त्रीय कलाम' - अर्जुन देव मजबूर, पृ०- 95.

2- 'शात्रुघ्न, राम, लांखमन, भरत
दशरतस निशा ग्योर गई ज़्यथ
म्यथरिम्युल ग्व राम सीतांये
शामि छ़ाये फेरयम ना।
अहद ज़रगर द्राव दिल शीरिथ
शास्त्र जाम ह्यरि बोनि पीरिथ
आव वलनि शास्त्रमाये
शामि छ़ाये फरेयम ना।'
- "कुल्लियात अहद ज़रगर" पृ०- 126-127.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण वास्तव में प्रकृति के तीन गुण हैं जिन में विशुद्धता का प्रतीक सत्त्व गुण है, राजसी प्रवृत्ति तो एक तरह से मध्य मार्ग है और तामसी-वृत्तियों का सूचक तमोगुण है। प्रकृति के ये तीन गुण मानव प्रकृति के साथ जुड़ कर देवता और राक्षस के अन्तर को पहचानने में सहायक सिद्ध होते हैं। सूफ़ी साधक अहद ज़रगर ने अपने साधनात्मक जीवन में इन तीन गुणों को पर्याप्त महत्ता प्रदान की। बद्ध हृदय और मुक्त-हृदय की पहचान उनकी साधना का एक लक्ष्य है। यह तो पहला पड़ाव है जहाँ से आगे बढ़ कर आत्म साक्षात्कार के द्वारा सत् को आत्मसात किया जा सकता है :-

—' तीन कारणों में ध्यान धर ले, बन इनसान
सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण को पहचान
मन तलाशना तो है उसी का परिणाम
कमल से सृष्टि का विकास हुआ।'[1]

अहद ज़रगर 'ओ३म्' शब्द का महिमागान[2] करते हुए राम-रहीम में परस्पर कोई अन्तर नहीं मानते। ओ३म् ही प्रकृति का मूल रहस्य है। सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् का सारतत्त्व है तथा सृष्टि के कण-

---

1- 'त्रन कारनन सन बन इंसान
सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण ज़ान
मन छारून छय तमिचो समात
पम्पोश मंज़ गव पांदि कायनात ।'
- "कुल्लियात अहद ज़रगर" पृ0- 90-91.

2- "अहद ज़रगर ने अपने काव्य में 'शास्त्र' को उस परम्परा का पालन भी किया जिससे शम्सफकोर और समदमोर इतने अभिभूत हैं। 'तपस्वी शिव से मैं ने पूछा' इस प्रकार की हिन्दू दार्शनिक - धार्मिक शब्दावली और अवधारणाओं का प्रयोग करने वाली उनकी एक महत्त्वपूर्ण कविता मानी जाती है, जिस में कवि को 'हर स्थान से ओम् की पुकार' सुनायी दी है।"
-कश्मीरी साहित्य का इतिहास" -डॉ0 शशिशेखर तोषखानी, पृ0229

CC-0. Jawaharlal Nehru Memorial Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कण में व्याप्त परम ब्रह्म की दिव्य ज्योति का प्रतीक । अहद ज़रगर को ओ३म् नाद हर दिशा से सुनाई देता है, अतः उसकी महिमा का बखान करते हुए कहते हैं :-

—' नैतिक बन्धनों का पालन करते तरबतर हुआ पसीने से
रोम रोम को पहचान कर हुए ज्ञात रहस्य कितने
'ओ३म्' नाद लगाया (ओ३म् घोष किया) हर स्थल पर मैं ने
'मीम'[1] की अदाओं से हो उठा प्रज्वलित
राम रुबाइयों से राम हुआ मैं
बेशक राम का मिलन होगा रहीम के साथ
प्रेम-सुराही से जाम पिये आरिफ़ों[2] ने
'मीम' की अदाओं से हो उठा प्रज्वलित ।'[3]

आधुनिक शब्दावली में यदि ज़रगर के काव्य को विचार काव्य कहा जाये तो कोई अतिरंजना नहीं होगी । यहाँ सहृदय होने के साथ साथ तार्किक बुद्धि एवं तथ्य-ग्रहण करने की शक्ति का होना अपेक्षित है । यह काव्य (विचार-काव्य) साधारण जन अथवा आम जन-मानस के लिये नहीं अपितु समर्पित साधकों के हेतु संजीवनी है । यहाँ जब तक सूफ़ी मत एवं विभिन्न दार्शनिक सम्प्रदायों की सम्यक् जानकारी नहीं होगी तब तक रचना का पूरा पूरा रसास्वादन सम्भव नहीं है । यहाँ गागर में सागर समाया है और एक एक शब्द एक से अधिक अर्थ तत्त्वों

1- "मीम" - नाज़नीन, धार्मिक सन्दर्भ में 'मीम' ईश-दूत का वाचक है ।
2- "आरिफ़" - पहचान वाले, ब्रह्म ज्ञानी ।
3- "सुमि सोथि पकान गुम छ़ुटि द्रायो रूमि रूमि सर गाम रूम कोति - कोति
ओम् के आलव दितम्य हर शायो गाह प्योम मीमिच ग्रायो सूत्यि
(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

का बोध करा रहा है । यहाँ ज्ञान की गहराई है, गूढ़ चिन्तना पर आधारित शब्द-प्रयोग एवं बिम्ब चित्र प्रस्तुत किये गये हैं । सर्वत्र व्यंजना का प्राधान्य है और लौकिक धरातल पर आलौकिक और अद्भुत को पहचानने का सतत प्रयास किया गया है । अत: इस प्रकार की काव्य रचना को समझने के हेतु परिपक्व मस्तिष्क की आवश्यकता है - केवल कल्पनाशील और भावुक हृदय ही पर्याप्त नहीं होगा । यह वस्तुत: चिन्तन प्रधान काव्य है यहाँ साधक अपनी कठोर साधना में व्यतीत किये हुए प्रत्येक पल की गहन अनुभूति को शब्द-चित्रों के माध्यम से मूर्त रूप प्रदान करने का प्रयास करता है । आवश्यक नहीं कि कवि का हर प्रयास अपने आप में एक सफल काव्याभिव्यक्ति हो । अहद ज़रगर के काव्य का यह आकर्षण हार - स्वरूप होने के साथ-साथ भार - स्वरूप भी हो सकता है । पहुँचे हुए साधकों के लिये जो अमृत तुल्य ग्राह्य है वही जन सामान्य के लिये अव्यावहारिक होने के कारण अग्राह्य भी हो सकता है ।

--'विरक्त बैठा एकान्त में छिपके
वायु को मुट्ठी में लेने हेतु
साथ ली चुप्पी और तथ्य की गहराई में उतरा
रूठा मिट्ठी से और सोने के प्रति हुआ आकर्षित

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

राम ब्व कोरहस रामि रूबायो राम मेलि बेशाक रहोमस सूत्थि
जाम चेयि आरिफो लोलि सुरायो गाह व्योम मोमचव ग्रायो -
सूत्थि ।'

- 'सूफ़ी काव्य' भाग-3, अमीन कामिल, पृ0-207-208.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

किसे कहूँ ये राज़ की बातें, सखि ! तनिक बता दे ।
पनाह माँग ली मृत्यु ने रिन्द के सम्मुख
मर मर के भी अमर हुए, सप्रभ जीवन जी कर
शुक ने सन्देशा पहुँचाया बुलबुल तक
किसेक कहूँ ये राज़ की बातें, सखि ! तनिक बता दे ।'[1]

अहद ज़रगर अपने प्रिय के इश्क़ में दीवाना है और यही दीवानगी कहीं कहीं वज्दानी कैफ़ीयत (आत्म विस्मृति की दशा) में ऐसी रचनाओं को जन्म देती है जिन के अर्थ अथवा अभिप्राय को समझना अत्यन्त दुस्तर हो जाता है । ऐसी स्थितियों में अहद ज़रगर की रचनाएँ इब्हाम (निगूढ-कथन Obscurity) के गुण अथवा दोष का शिकार हो जाती है । इब्हाम वस्तुत: काव्याभिव्यक्ति का मुख्याकर्षण है । इस में सन्देह नहीं कि सामान्य सत्य कथन अथवा सरल भाषण से काव्योक्ति बहुत भिन्न होती है । कवि अपने सम्पूर्ण सर्जनात्मक कौशल के साथ अपनी गहन अनुभूति को व्यक्त करता है । बाह्य स्वरूप में नवीनता लाने के हेतु उसे विभिन्न अलंकारों का प्रयोग भी करना पड़ता है । ग़रज़ उसकी मौलिक प्रतिभा सर्जना के दाँव पर लग जाती है । वक्रोक्ति का भी अपना आकर्षण अवश्य है, इसमें सन्देह

मुबहम = Obscurity गूढ़

1- 'छ़्यपि ब्यूठ गोसा'नि थ'पि रट्नि वाव
छ़ोपि म्यूठ का'रिथ कसबस सन्याव
स्यपि रूठ मा'यिल ग्व सोनस
ह्य व्यसि ति वनतम बा्वि कस ।
मोतन रिन्दन निश लोब अमान
ज़ीतन ज़िन्दै मा'रि मा'रि लसान
तोतन ख़बर वा'न्य बुलबुलस
ह्य व्यसि ति वनतम बावि कस ।'
- 'शीराज़ि' - 'अहद ज़रगर नम्बर' - 1984ई0, पृ0-158

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नहीं लेकिन जब वक्रोक्ति वक्ता के अनेक रहस्यमय आवरण ओढ़ कर व्यक्त होती है तो वह काव्योक्ति कम और सर दर्द अधिक बन जाती है । इसे इब्हाम कहना उचित नहीं होगा । इब्हाम काव्य गुण है, दोष नहीं । इस के लिए सतर्क बुद्धि को पकड़ अथवा गहन अनुभूतिशील (परम्परागत शब्दावली में सहृदय) होना अपेक्षित है क्योंकि हर एक मे रत्न परखने की क्षमता नहीं होती । लेकिन इब्हाम यदि बुद्धिजीवियों या सहृदय प्राणियों के सीमित वर्ग को ही संकट में डाल दे - अर्थ ग्रहण या प्रभाव ग्रहण की समस्या सुलझ न पाये बल्कि उलझती ही चली जाये - तो ऐसे इब्हाम के दुर्भेद्य आवरण को उतार फेंकने की आवश्यकता है चाहे वह महानतम रचनाकार की रचना से ही सम्बन्धित क्यों न हो । अहद ज़रगर की कुछ रचनाएँ इब्हाम के इस दुर्भेद्य क्रूर आवरण में अपना महत्व खो देती हैं । डॉ० हामिदी कश्मीरी अहद ज़रगर के इब्हाम को चाहे कई रक्षा-कवच पहनाये लेकिन श्री अमीन कामिल के इस कथन की सत्यता पर आँच नहीं आ सकती :-

"इब्हाम का अभिप्राय यह नहीं है कि कोई रचना या नज़्म गहन या गम्भीर है अथवा इसमें नये प्रतीक हैं जिनको समझने के लिए चिन्तन और विचार की आवश्यकता है, अपितु इब्हाम जिसे हम हानिकारक या खतरनाक कहते हैं - का अर्थ है या तो निरर्थक शोर कहना अथवा एक विचार को इस प्रकार व्यक्त करना कि भाव प्रेषणीयता की दृष्टि

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

से वह पूर्ण असफल हो और जिस में पर्याप्त प्रयास करने पर भी अर्थ को दृष्टि से मनुष्य कुछ प्राप्त न कर सके । अहद ज़रगर की कई रचनाएँ इस मुब्हम गोई (अस्पष्टवादिता obscurity) का शिकार हुई हैं ।"[1] अहद ज़रगर की कविता में मुब्हम गोई के दो उदाहरण द्रष्टव्य हैं :-

:1: - "सियाह सात सरोवर अजब सुन्दर सातों में स्याह पानी मुअल्लक़[2]
स्याह ज्योत स्याह शहर का भौंरा गया स्याह काम पर
स्याह टोले पर चढ़ा मजनूँ स्याह आँखों से प्रवाहित रक्त
स्याह परवाना ले कर यार को भौंरा गया स्याह काम पर ।[3]

:2: - " ज़िन्दा कर ले सोहबत मुर्दे के संग
रिन्द बन कर बाँट ले प्यारो मुहब्बत
नर और मादा खेलें गे वस्ल का जुआ
काफ़र बन कर स्वीकारा मैं ने ।"[4]

1- "सूफ़ी शाइरि" भाग-3, सम्पादक - मुहम्मद अमीन कामिल, कल्चरल अकादमी श्रीनगर प्रकाशन सन् 1965 ई० (सम्पादकीय)
2- " मुअल्लक़ " - (ठहरा हुआ)
3- 'सियाह सत नाग अजब लायक स्याह आब सतवुनो मुअल्लक
स्याह आगुर स्याह शाहरस बोम्बुर गोमुत स्याह कारस
स्याह नजदस खोतुई मजनून स्याह चमो सु हारान यून
स्याह परवान्नि हयथ यारस बोम्बुर गोमुत स्याह कारस ।"
- "शाराज़ि" (अहद ज़रगर नम्बर) 'अहद ज़रगर - शाइरी हिन्दस आंनस मन्ज़' - मोतीलाल साकी, पृ०-50
4- ' ज़िन्दि कर मारदस सूत्थि सोहबत
रिन्दि चालि बागस्स लोल मुहब्बत
गिन्द नय मादि नर वसलुक ज़ार
काफ़र स्यदिथ कोस्म इक़रार ।'
- "सूफ़ी शाइरी" भाग-3, अमीन कामिल, पृ०-188.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कहीं कहीं अहद ज़रगर के काव्य में अत्यन्त आश्चर्य चकित तथा भयभीत कर देने वाली स्थितियों को अभिव्यक्ति भी हुई है । इस प्रकार की रचनाओं को पढ़ कर पाठक तिलमिला उठता है और एक साथ उसके हृदय में घृणा, आश्चर्य एवं भय उत्पन्न होता है ।[1] श्री अमीन कामिल ने अहद ज़रगर की इन रचनाओं को त्रास की कविता (Horror-Poetry) के अन्तर्गत माना है । लेकिन डॉ० शशिशेखर तोषखानी इस कथन से सहमत नहीं । उनका विचार है कि "यह कवि द्वारा 'त्रास की कविता' अथवा 'हॉरर पोएट्री' लिखने का कोई प्रयास नहीं था । यह तो उलट बाँसी की शैली में रहस्यवादी गुह्य साधना के रहस्यों की ओर संकेत करने का एक ढंग था । पर था यह कश्मीरी काव्य के पाठकों के लिये अत्यन्त दुर्बोध क्योंकि इस प्रकार के भयावह प्रतीकों से वे परिचित नहीं थे ।"[2]

इसमें सन्देह नहीं कि कहीं कहीं इन रचनाओं के द्वारा उस अलौकिक प्रिय से सम्बन्धित कोइ रहस्य अनुभूति व्यक्त हुई है अथवा कवि विचित्र और गहन शब्द-प्रयोगों के द्वारा मूल तथ्य से परिचित कराने का प्रयास करते हुए दिखाई देते हैं जैसा कि डॉ० हामिदी

1- "अहद ज़रगर की सर्वाधिक चर्चित प्रवृत्ति को प्रायः 'त्रास की कविता' (हॉरर पोएट्री) की संज्ञा दी गई है । भयानक और वीभत्स बिम्बों के प्रयोग द्वारा सूफ़ी साधना के गुह्य रहस्यों की ओर संकेत इस प्रवृत्ति को पहचान है । कवि जब अपने ही पिता का वध, अपनी ही माँ से व्यभिचार, अपने ही बच्चों के टुकड़े टुकड़े करके दरिया में डालने की बात करता है तो पढ़ने वाले के मन में एक सिहरन-सी पैदा होना स्वाभाविक है — ।"
—"कश्मीरी साहित्य का इतिहास" -डॉ० शशिशेखर तोषखानी, पृ०-227.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

2- — वही — पृ०-228.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कश्मीरी ने दो एक उदाहरण देकर स्पष्ट भी किया है ।[1] लेकिन प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि इन रचनाओं का सामूहिक प्रभाव (Total effect) क्या है ? उस सामूहिक प्रभाव को ध्यान में रख कर यह कहना उचित होगा कि सम्भवत: किसी भीषण रहस्यानुभूति से प्रेरित होकर कवि को स्वयं भी यह ज्ञात नहीं है कि वे क्या कह रहे हैं । उस की तह में छिपे कई अर्थ तत्त्वों के होते हुए भी ऐसी काव्य उक्ति बड़े से बड़े सूफ़ी सन्त को शान्ति भंग कर देती है - सामान्य जन की तो बात ही नहीं । ऐसा प्रतीत होता है कि कवि आत्म-नियन्त्रण से वंचित होकर दीवानगी के आलम में केवल वीभत्स को गले लगा कर रहस्य की गहराइयों में खो जाता है । साधनारत सूफ़ी साधक के लिए यह एक भयंकर स्थिति है । परस्पर असम्बद्ध अनुभूतियाँ न केवल कवि के मानस को अपितु सामान्य सहृदय पाठक के मन को भी अशान्त कर देती हैं । इन उक्तियों में से अर्थ ढूँढना बालू में से तेल निकालने के लिए समान है । अहद ज़रगर की एक त्रासद कविता (Terrifying Poetry) के कुछ अंश यहाँ प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किये जाते हैं :-

--'जिस के साथ निकाह हुआ है बातदबोर (प्रवीण, दोशिजह, सुदखिर, हरकाम को ढंग से करने वाली)
उसी के स्तन से पी ले घूँट घूँट शीर (दूध)
कहीं कोई प्रतिबन्धी विघ्न न डाले
काफ़र[2] बन कर स्वीकारा मैं ने ।

1- 'जदीद काश्मिर शायिरी' - डा० हामिदी कश्मीरी, पृ०-83.

2- 'काफ़र' - काफ़िर / काफ़र - सत्य को छिपाने वाला, प्रेम पात्र, माशूक़ । (अ०) पृ० ईश्वर के अस्तित्व को न मानने वाला मुसलमान धर्म को न मानने वाला

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ध्यान से सुन, काट ले गरदन अपने पिता की
जिस ने जन्म दिया है उसी के वासिल[1] बन जा
सहन कर भार हम ने किया है देश निष्कासित
काफ़र बन कर स्वीकारा मैं ने ।
बोटी बोटी काट ले अपने औलाद को
फेंक दे धीरे धीरे दरिया मे मांस
यदि दृढ़ता है मन में तो यही नित करता जा
काफ़र बन कर स्वीकारा मैं ने ।'[2]

अहद ज़रगर के काव्य का अभिव्यक्ति पक्ष भी पर्याप्त चर्चा का विषय रहा है । यद्यपि वे पढ़े लिखे नहीं थे तथापि सर्जना के क्षेत्र में उन्होंने मौलिक प्रयोग किये हैं । नवीन उपमाओं, रूपकों एवं प्रतीकों के द्वारा सूफ़ी साधना के प्रभाव को गहराने में उन्होंने प्रशंसनीय योगदान दिया है । उनकी रचनाओं में कहीं शब्द-चित्रों का सौन्दर्य मोहित कर देता है तो कहीं लोक रस की धारा शुष्क हृदय प्रदेशों को सिक्त कर देती है । कहीं उपमाओं एवं रूपकों की सान्दर्य छटा है तो कहीं तसव्वुफ़ के किसी मुकाम पर पहुँचने का रहस्यानुभूति का सांकेतिक आभास ।

1- 'वासिल' — मिलने वाला, प्रेमी ।
2- 'यस सूत्यि निक़ाह छुई बातद्बीर
तेहिंज़े बबि चो दाम्मि दाम्मि शीर
युथ न गांगल करी कांह अग़्यार ग़ैर लोग, प्रतिद्वन्द्वीजन, रक़ीब co-lovers
काफ़र स्पदिथ कोरुम यकरार ।
ह्यसि बोज़ मालिस दियू गरदन
यस ज़ाख तस सूत्यि वासिल बन
गछ़ बरदार करुख पीरोपार फा० प्रत्यय - उठानेवाला
काफ़र स्पदिथ करुम यकरार जैसे नाज़बरदार (नाज़ उठानेवाला)
गनि कर पननिस औलादस
हनि हनि माज़ त्राव दरियावस

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ज़रगर साहब पूर्ण अधिकार के साथ भाषा का प्रयोग करते हैं। इसे कवि की दैवी प्रतिभा कहना उपयुक्त होगा। धारा प्रवाह भाषा प्रयोग के दो उदाहरण देखने योग्य हैं :-

:1: —'छोड़ दुई को यकसाँ में ध्यान लगा दे
ज्ञान पर हो जा आसक्त
वही कण कण में है व्याप्त
ज्ञान पर हो जा आसक्त।'[1]

:2: —'उस आलम की समझ उधर की है
उन संवादों के हेतु श्रवण शक्ति वहीं की है
वहाँ पहुँच कर टूट गया यहाँ का बन्धन
रिन्द बन कर ज़िन्दगी को पहचान।'[2]

यहाँ इस तथ्य को स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि कहीं कहीं ज़रगर साहब के शब्द प्रयोगों में वक्रता, अस्वाभाविकता एवं दुरूहता देखने को मिलती है। ऐसे शब्द प्रयोगों के कारण ही कवि का रिश्ता आम जन-समूह से कट जाता है और वे चन्द सूफ़ी साधकों तक ही सीमित रह जाते हैं। कहीं कहीं ऐसे शब्द प्रयोगों से भयंकर स्थितियाँ

- -

{ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग }

पचि़ हे मन पनुन करिज़ि नहार अ० पुँ० (रोज़)
काफ़र स्पदिथ कोस्म यकरार।'
-"संगलाब" - सं० रहमान राही, शफ़ी शौक़, पृ०- 202.

1-' दुई त्राविथ सन यकसानस ग्यानस लाग परवान
सुई छुई मोलिथ दानस दानस ग्यानस लाग परवान।'
- "कुलियात अहद ज़रगर" पृ०- 10.

2- 'तोर किस आलमस तोर कुई होश

{ शेष अगले पृष्ठ पर }

CC-0. Khushwant Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

उपस्थित हो जाती हैं और सूफ़ी साधक मात्र अपने आत्म सन्तोष के लिए उनमें से अर्थ ढूँढते हैं अथवा यों कहना चाहिये कि शब्द खण्डों पर अर्थ थोप देते हैं । अहद ज़रगर की मुक्तक काव्य रचनाओं में निम्न लिखित विशेष रूप से बहुचर्चित एवं उल्लेखनीय हैं :-

:1: काफ़र स्पदिथ कोरुम यकरार ﴿काफ़र बन कर मैंने स्वीकार किया﴾

:2: सुई म्य दिलस कान ﴿ वही हृदय में शूल चुभा है ﴾

:3: रिन्द बन ज़िन्दगी सर करतन ﴿ रिन्द बन कर ज़िन्दगी पहचान﴾

:4: मदवस बदनस मंज़ दि फियुर ﴿अहं त्याग कर अपने भीतर टटोल﴾

:5: वाँक़िफ़ कारन तमिची ज़ान ﴿जानकार लोगों को है पहचान उसकी﴾

:6: सन, वन फकीरस क्या अथि आव ﴿लीन हो जा और कह कि फ़क़ीर ने क्या पाना﴾

:7: वुछुम क्यँह नय म्य दीदन तल ﴿ मैंने 'कुछ नहीं' को देखा अपनी आँखों के सम्मुख ﴾

:8: यति आख तोरिच सखरा कर ﴿जहाँ से आये हो, वहाँ जाने की तैयारी कर ﴾

:9: क़वालि चि दियू तारि सदा सुई छु मुदा म्योन ﴿क़व्वाल तू छेड़ साज़ को, वहीं मक़सद है मेरा ﴾

:10: निश जाँहिलन छुनि गुफ़तार सोखन अंज़रून स्यठाह दुशवार ﴿जाहिलों से बहस करना व्यर्थ है, बात का बन जाना है दुशवार﴾

:11: बलि काँल रावय ख्यक अरमान ﴿ आना प्रिय ! मैं मिट जाऊँगी पछतावा होगा तुम को ﴾

- -

﴿ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग ﴾

तोरि क्यन सोखनन तोरकुई गोश
तोर वाँतिथ ग्व योर किस छ़यन
रिन्दि बन ज़िन्दगी सर करतन ।'

– "सूफी शाँयिरी" भाग-3, सं० : अमीन कामिल, पृ0- 204-205

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

इस प्रकार यह बात स्पष्ट होती है कि अहद ज़रगर ने अपने वैयक्तिक चिन्तन के आधार पर जीव और ब्रह्म के पारस्परिक सम्बन्ध को जानने और पहचानने की कोशिश की तथा इश्क़ की विभिन्न मंज़िलों को तय करते हुए आख़िरी मुक़ाम तक पहुँचने के हेतु साधना रत रहे । उनका सम्पूर्ण काव्य वस्तुत: उनकी कठोर जीवन-साधना का ही व्यक्त रूप है । अध्यात्म के पथ पर प्राप्त नाना कटु-मधुर अनुभव उन्होंने कहीं स्पष्ट शब्द-चित्रों के द्वारा मूर्त रूप में प्रस्तुत किये हैं और कहीं अस्पष्ट और क्षीण रेखाचित्रों के माध्यम से सांकेतिक रूप में अंकित किये हैं । 20वीं शताब्दी के कश्मीरी सूफ़ी काव्य के इतिहास में अहद ज़रगर अन्तिम प्रतिष्ठित सूफ़ी कवि हैं । सम्भव है, इस काव्य प्रवृत्ति का अलौकिक संगीत 21वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में पुन: किसी साधक कवि हृदय में झंकृत हो उठे - यह भविष्य के गर्भ में है । बक़ौले श्री अमीन कामिल - "सूफ़ी शायिरी इस समय अहद ज़रगर पर ही समाप्त होती है । वे इस यात्री-दल के अन्तिम दीप (यात्री) हैं ।"[1] उनके काव्य को समझने और जानने के लिये सन्तुलित विवेक बुद्धि के साथ-साथ साधनात्मक जीवन के प्रति लगाव अथवा रुचि का होना आवश्यक है । उनकी कई रचनाओं पर प्रश्न चिह्न लगाये जा सकते हैं क्योंकि आलोचक और भाट का कर्तव्य-कर्म समान नहीं है ।

1- "सूफ़ी काव्य" भाग-3, अमीन कामिल, पृ0-76

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अहद ज़रगर अपनी कई रचनाओं के साथ न्याय नहीं कर सके हैं लेकिन अधिकांश रचनाएँ अत्यन्त कलात्मक, विचार गर्भित और बेजोड़ हैं । वे एक विशिष्ट परम्परा से बन्धे और जुड़े हुए समर्पित कवि हैं । काव्य - कर्म उनके लिये साधना है, सत्य की पहचान है और सब से बढ़ कर है - रस सिक्त मानस को अमृत धारा को प्रवाहित करने का सशक्त साधन :-

-- 'इश्क़-वज्र के सम्मुख समर्पण करवाया
पोसा चक्की में, छानी में छनवाया
अन्धकार पर पड़ जायें गी गुमशुदा प्रकाश की किरणें
तब से पोषित काया टूट गई, बिखर गई ।'[1]

- 0 -

1- ' त्रुटि अश्रुकिनि बरसर पान ध्योवनस
गृटि कोडनस परिनिस छानि नोवनस
गटि गुमशुद अनवार प्यनि लोलो
ताम पोछर गोम्र पनि पनि लोलो ।'

- "सूफी शायिरी" भाग-3, पृ0- 217.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(IV) नात एवं मुनाजात

(अ) अब्दुल अहद नादिम - (सन् 1838-40 - 1911 ई०)

1- जान - पहचान
2- नात : काव्य-विधा
3- विश्वास और समर्पण : नातगोई का मुख्याकर्षण
4- क़नाअत नफ़्स : कुछ पाने के हेतु सब कुछ खोना
5- नातगोई : 'वनवुन' शैली में
6- मुनाजात : इष्टदेव के प्रभुत्व का महिमागान
7- स्तुतिवन्दना : कुकर्ममय जीवन पर घोर पश्चाताप
8- शह्र आशोब : समकालीन जीवन की विकृतियों पर व्यंग्यात्मक प्रहार
9- युग - बोध : मूल्यहीन जीवन जीने की पीड़ा
10- फ़ारसी भाषा का प्रभुत्व : गुड़ में छर्रों का आभास

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कश्मीरी काव्य के इतिहास में नातगो कवियों की एक स्वस्थ परम्परा देखने को मिलती है । भक्ति काव्य के अन्तर्गत हज़रत मुहम्मद साहब की छन्दोबद्ध स्तुति के हेतु अपनायी गई एक विशिष्ट काव्य-विधा को 'नात' कहते हैं । मुहम्मद साहब के इश्क़ में दीवाने कवि अपने अटूट विश्वास के आधार पर भिन्न भिन्न प्रकार से श्रद्धा के सुमन उन पर निछावर करते हैं । इश्क़ मुहम्मदी 'नात' का मूल प्रतिपाद्य विषय रहता है और भक्त कवि अपनी अनन्य निष्ठा के आधार पर परम प्रिय के प्रति नतमस्तक होकर तथा सब कुछ खो कर कुछ पाने के लिये लालायित रहता है ।

नात वस्तुतः एक भक्तिपरक रचना है जिसमें भक्त अत्यन्त दास्य भाव से ख़ुदा एवं ख़ुदा के रसूल (ईशदूत) की स्तुति-वन्दना करता है । उनका अनुग्रह प्राप्त करने के हेतु साधना रत रह कर जीवन के महत् उद्देश्य के प्रति वह सचेत रहता है । इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों का सम्मान करता हुआ तथा एकेश्वरवाद पर दृढ़ विश्वास व्यक्त करने के साथ साथ भक्त कवि सात्विक कर्म पथ पर चल कर अपने जन्म को सफल बनाने का प्रयास करता है । कश्मीरी काव्य में इस काव्य-विधा का अपना भव्य-इतिहास है । कश्मीरी भाषा

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

के प्रसिद्ध नात गो कवियों में सर्वश्री ख़्वाजा हबीब उल्लाह नौशहरी (सन् 1555 - सन् 1617-18), वली उल्लाह मत्तू (सन् ——— सन् 1858 ई०), कुतुब-उ-दीन वाइज़ (——— - सन् 1863 ई०), मीर सना उल्लाह क्रीरी (सन् 1813 - सन् 1875 ई०), मकबूल शाह क्रालवारी (सन् 1820-सन्1876 ई०), आशिक़ त्राली (सन् 1841 - सन् 1907 ई०), मौलवी सिद्दीक उल्लाह हाजिनी (?)/सायिल (सन् 1832-सन् 1900 ई०), अब्दुल अहद नादिम, अब्दुल वहब परे (सन् 1845 - सन् 1914 ई०), पीर मुही-उ-द्दीन मिसकीन (——— -सन् 1912-1917 ई०), अज़ीज़ उल्लाह हक़ानी (सन् 1854- सन् 1928), दरवेश अब्दुल कादिर (सन् 1873-सन् 1946), ग़ुलाम रसूल नाज़की (सन् 1910- ———), फाज़िल कश्मीरी (सन् 1914 - ———), रशीद नाज़की (सन् 1931 ——— तन्हा अन्सारी (सन् 1914-सन् 1969) आदि उल्लेखनीय हैं। यहाँ इस तथ्य को स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि सूफ़ी काव्य से नातिया कलाम भिन्न है और इन दो काव्य विधाओं को समान मानना अथवा एक दूसरे पर आश्रित समझना उचित नहीं।

स्वर्गीय अब्दुल अहद नादिम के पूर्वज मोशरा साहब रैणावारी के रहने वाले थे। यहीं उनका जन्म स्वर्गीय ग़ुलाम मुही-उ-द्दीन के घर में सन् 1838 ई० से सन् 1840 ई० के आस पास हुआ है। अत्यन्त

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अल्पायु में इनके पिता का देहान्त हुआ, विवश माँ अपने दो बेटों अब्दुल अहद और अब्दुल कादिर के साथ अपने मायिके 'गामर' बाँडीपोरा लौट आई और अपने पिता शैख़ ग़ुलाम रसूल 'शैदा' के आश्रय में रहने लगी। यहीं अब्दुल अहद का बाल्यकाल व्यतीत हुआ। नाना उस इलाक़े के जाने माने कवि थे और फ़ारसी भाषा के ज्ञाता, फलत: घर के माहौल का अब्दुल अहद पर गहरा प्रभाव पड़ने लगा। अपने जीवन के प्रौढ़ काल में वे बड़गाम ज़िला में स्थित ओमपोरा के निकट बटहार गाँव में रहने लगे। इनके एक मामा गुलाम अहमद जाहद फ़ारसी भाषा एवं साहित्य के मर्मज्ञ थे। हिकमत भी जानते थे। अब्दुल अहद के व्यक्तित्व पर अपने मामा का ज़बरदस्त प्रभाव पड़ा है। युवावस्था में ही वे इश्क़े मुहम्मदी के आनन्द-सागर में डूब गए और जीवन-पर्यन्त उसी परमानन्द का रसास्वादन करते रहे। नादिम गृहस्थ थे। उनका विधिवत विवाह हुआ था। एक बेटे के अतिरिक्त चार बेटियों ने उनके घर में जन्म लिया। बेटे का नाम था - नजम-उ-द्दीन। "कुल्लियात नादिम" में डा० रशीद नाज़की ने इस बात को और स्पष्ट संकेत किया है कि अपने पुत्र नजम-उ-द्दीन के साथ अब्दुल अहद के अच्छे सम्बन्ध नहीं थे।[1]

1- "कुल्लियात नादिम" सम्पादक : रशीद नाज़की - जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन, द्वितीय संस्करण - सन् 1985 ई० पृ०-84.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नादिम का देहावसान 1329 हिज़्री तदानुसार सन् 1911 ई० में हुआ है । उस समय उनकी आयु 73 वर्ष की मानी गई है । यदि यह सही है तो नादिम का जन्म सन् 1838 ई० के आसपास माना जायेगा । जन्म तिथि के विषय में मत-भेद हैं लेकिन देहावसान का वर्ष 1329 हिज़्री है और इस विषय में कोई मतभेद नहीं । नादिम की समस्त रचनाएँ मुक्तक काव्य के अन्तर्गत ली जा सकती हैं । सर्व प्रथम जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी की ओर से श्री गुलाम रसूल नाज़की के सम्पादकत्व में उनकी रचनाओं का एक छोटा सा प्रतिनिधि संकलन सन् 1959 ई० में प्रकाशित हुआ । इसके कुछ वर्ष पश्चात् सन् 1972 ई० में "कुल्लियात नादिम" अकादमी की ओर से प्रकाशित हुआ जिसका सम्पादन नादिम के निकटस्थ सम्बन्धी और घाटी के जाने माने लेखक श्री रशीद नाज़की ने किया । इस पुस्तक के प्रथम खण्ड में 117 पृष्ठों पर कश्मीरी भाषा में नातिया कलाम का इतिहास, नादिम : व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा नादिम की काव्य प्रतिभा पर डॉ० नाज़की ने विस्तार के साथ लिखा है । सन् 1985 ई० में अकादमी की ओर से ही इस पुस्तक का दूसरा संस्करण भी प्रकाशित हुआ । नादिम की समस्त उपलब्ध रचनाओं का संग्रह कुल्लियात में किया गया है । नादिम के काव्य का पहला आकर्षण है - 'नात' । इसरोपत अर्थात् इसरए मुहम्मदी के सिद्धान्तों का दृढ़ता के साथ पालन करते हुए जीवन के स्वर्णिम प्रभात को अद्भुत छवि

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

को पाने हेतु कवि ईशादूत के प्रति अपने अटूट विश्वास को अभिव्यक्त करता है । एक भक्त हृदय का निश्छल प्रेम इन रचनाओं में सर्वत्र मुखर हो उठा है । यहाँ इष्ट के प्रति समर्पण की भावना प्रमुख है और भक्त याचक बन कर भगवत्-कृपा एवं ईशादूत के अनुग्रह के हेतु याचनारत दिखाई देता है । नातिया-कलाम में अब्दुल अहद नादिम ने अपने महबूब इलाही पैग़म्बर साहब के असाधारण व्यक्तित्व एवं अद्भुत लीलाओं का श्रद्धा सहित चित्रांकन किया है । एक भक्त के रूप में उन्होंने अपने मन मन्दिर में देवता स्वरूप ईशादूत की प्रतिष्ठा की और उन्हें अपनी श्रद्धा एवं विश्वास का प्रमुख आधार मान कर निरन्तर भावनाओं के सुमन उनके प्रति अर्पित करते रहे । हज़रत नबी पर सर्वस्व निछावर करते हुए भक्त-जन वायु-दूत के द्वारा अपनी व्यथा-कथा कहलवाने का प्रयास करते हैं । उन्हें पूर्ण विश्वास है कि भँवर में उलझी हुई जीवन-नैया ख़ुदा के रसूल की अनुकम्पा से ही अपने अन्तिम लक्ष्य तक पहुँच सकती है । दास्य भाव की भक्ति का यह सर्वोत्तम रूप है जहाँ साधनारत पूर्ण समर्पित भक्त-जन अपनी मुराद पाने का सतत प्रयास करते हैं :-

-- 'हज़रत नबी पर निछावर हो जाऊँ, वायुदूत से कहलवाऊँ आहोज़ार
भक्त जनों का अहवाल पहुँचा दूँ, साहस के स्रोत हैं हमारे सरदार
भक्त-वत्सलता में आज़मा लूँ, वायुदूत से कहलवाऊँ आहोज़ार
उष्ण-अश्रु-जल से इष्ट-चरण धो लेता, द्रुयनेत्र निछावर करता -
यदि शक्ति का वर देते

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ख़ुश्क होंठों से पोंछ लेता चरण, वायुदूत से कहलवाऊँ आहो ज़ार
पेश कश रख दूँ दिलोजान अपना, होंगे प्रसन्न मालिक हैं -
दोनों के
मिल जाता अनुग्रह-प्रसाद, मनको साध हो जातो पूर्ण वायुदूत-
से कहलवाऊँ आहो ज़ार।'

भक्त बड़ो तन्मयता के साथ महबूब - इलाहो के सम्मुख नत-मस्तक होकर उसको ज्योति-प्रभा से जोवन के गहनान्धकार को मिटाने के हेतु दत्त-चित्त दिखाई देता है। अपने तुच्छ अस्तित्व का सहो बोध होने के साथ हो वह शरणागत के रूप में अनुग्रह प्रसाद पाने के हेतु लालायित रहता है। भौतिक जोवन के क्षणिक आकर्षण आज उसे तनिक भो मोहित नहीं करते। वह तलाश-हक़ में लीन हो जाता है और भौतिक इच्छाओं के गहरे गड्ढे से बाहर आने के हेतु मदोने के माहताब से विनोत शब्दों में प्रार्थना करता है :-

--'शाहे अरब, मदोने के माहताब !
तेरो ज्योति-प्रभा से नहला उठे अन्धकार हमारा
दर्शन को चाह घनो है शुभ चिन्तक मनमोहक
तेरो ज्योति-प्रभा से नहला उठे अन्धकार हमारा।

1- 'हज़रत नबोयस्स लगवय नावस वावस अथि वननावस ज़ार
उमतुक अहवाल ब्व ति गुज़रावस ह्यमतुक लोदमुत सोन सरदार
उमतिच शफ़क़त ब्व ति अज़मावस वावस अथि वननावस ज़ार
अशि के गरम आबि खोर ज़ि नावस चश्म ज़ि वन्दहस थविम्य सार
खोशिक लबि सूत्यि अदि पाद वथरावस वावस अथ वननावस ज़ार
जान-ओ-दिल दोनवय आपित थावस खोश गछ़ि दोनवुनि छुम मोख़्तार
फेरिना योर कुन नेरिहम हावस वावस अथि वननावस ज़ार।'
-"संगलाब" सं0- रहमान राहो, शफ़ी शौक़, प्रकाशक: कश्मोरो विभाग, कश्मोर विश्वविद्यालय, श्रीनगर-सन् 1983 ई0 पृ0-138-39.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

शैतान ने खोदा हमरे भीतर गहरा गड्ढा
डाल दिया उस में यह है दुर्भाग्य हमारा
तुरन्त दिखा दे मार्ग हमें बाहर आने का
तेरी ज्योति-प्रभा से नहला उठे अन्धकार हमारा ।'[1]

नबी के प्रति अपने अटूट विश्वास को व्यक्त करते हुए वह अपना सब कुछ उनके चरणों पर निछावर करने के लिये तत्पर रहता है । भक्ति में इस समर्पण-भाव का अपना विशेष महत्त्व है । जब तक भक्त में त्याग की भावना नहीं होगी तब तक वह अपने अभीष्ट को पा नहीं सकता । विश्वास और समर्पण का केन्द्रीय भाव नातगो कवियों की रचनाओं को अद्भुत सौन्दर्य प्रदान करता है । यह वह शक्ति-स्रोत है जहाँ से अमृत सिक्त आनन्द की धारा प्रवाहित हो कर भक्त जनों को आनन्द-विभोर कर देती है । दास्य भाव पर आधारित भक्ति-काव्य एवं नातगो कवियों में परस्पर पर्याप्त समानता देखने को मिलती है । दोनों अपने इष्ट के प्रति पूर्ण समर्पित एवं अभीष्ट सिद्धि के हेतु साधनारत दिखाई देते हैं :-

--'तुम्हीं हो आदि और अन्त तुम्हीं हो या नबी ! सोस -
निछावर तव चरणों पर

1- 'अरबी शाहा, मदनी माहा असि गोढ़ गटि मंज़ गाहा वोन
बुथि असि वुछ होत रिति दिल वाहा, असि गोढ़ गटि मंज़ गाहा वोन
आय असि मुफ़लिस बरतल शाहा, जाय सान्य यति कर पाया सोन
राय छनि बेयि बनि यिछ़ दरगाहा, असि गोढ़ गटि मंज गाहा वोन
असि खोन शातांनि सनिसोन चाहा, तांय मंज़ त्रावि क्या ओस लोन!
रसि वलि असि हाव खसनिय राहा, असि गोढ़ गटि मंज़ गाहा वोन ।
-"कुल्लियात नादिम" सं0:-रशीद नाज़की, पृ0- 176-177.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

गढ़ी = गढ़ी (कश्मीरी)
माही ⇒ माह (फा०) - चन्द्र, चन्द्रमा, शशि

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

निराश्रा जनों को सतत सनातन आस तुम्हो हो
या नबो ! सोस निछावर तव चरणों पर
किसो तरह आ जाते आस बन्धो है दर्शन सुख मिल पाता -
मार्ग दर्शक हो सब के
हम आकर एकत्रित हो जाते सोस नवाते
या नबो ! सोस निछावर तव चरणों पर
हम दुखित जनों के अभिभावक बन जाते पद-मर्दित हैं दोन दुखो
तनिक कोजिये उपकार वोरान जनों का यानबो ! सोस -
निछावर तव चरणों पर ।'[1]

दर्शनाभिलाषा भक्त को कभो-कभो अत्यन्त अधोर बना देतो है । निरन्तर प्रतोक्षारत रहने के कारण उत्कट अभिलाषा जानलेवा रूप धारण करतो है । भक्त के लिए ये क्षण अनमोल होने के साथ साथ असहनोय भो होते हैं । यह वह स्थिति है जहाँ संयम के बान्ध टूट जाते हैं और ईश्वर प्रेम में भक्त मनो-कामना को सिद्धि के हेतु अपना सर्वस्व दाँव पर लगा देता है ।

हज़रत मुहम्मद साहब के प्रति श्रद्धा के सुमन अर्पित करते हुए तथा उन्हें रहमत और बरकत (सौभाग्य) का प्रवाहित स्रोत मानते हुए भक्त-जन उनके

1- 'चुई छुक अवल ति चुई छुक आदन, या नबो ! पादन वन्दि होय सर
चुई छुक पतवथ सथ नाशादन, या नबो ! पादन वन्दि होय सर
कुनि किन थिखना चुनि ओस आदन, दिखना दर्शुन छुक रहबर
थिमि होय तमिहोय थ्यमिहोय पादन, या नबो ! पादन वन्दि होय-
-सर
अथरोट कारतव असि उफ्तादन, लतमोंजि गोमित यच अबतर
खारा कारतो गार आबादन, या नबो ! पादन वन्दि होय सर ।'
- 'कुल्लियात नादिम' सम्पादक : रशोद नाज़को, पृ०-183-184.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

विशिष्ट आसार के दर्शन हेतु आस लगाये बैठे हैं :-

-- 'हज़रत साहब के विशिष्ट आसार के दर्शन हेतु चलूँ, दरगाह-
- में करूँ प्रतीक्षा
सन्तोष मिले, अभिलाषा होगी पूर्ण, दर्शन हेतु चलूँ, -
-दरगाह में करूँ प्रतीक्षा
उस सर्वशक्तिमान से कहिये कृपा करे, दीन हीन हैं दर्शन -
- दे हमको
तव चरणों के नीचे निज कन्धे धर लूँ, दर्शन हेतु चलूँ, दरगाह
- में करूँ प्रतीक्षा
ईश्वर कृपा से पहुँचो नगरो में, रहमत और बरकत (सौभाग्य)-
- मक्क: से
ऐसी सम्पदा कहाँ मिलेगी जग को ? दर्शन हेतु चलूँ, दरगाह-
- में करूँ प्रतीक्षा ।'[1]

अब्दुल अहद नादिम के नातिया कलाम में 'क़नाअत नफ़्स' अर्थात् इन्द्रिय निग्रह को विशेष महत्त्व दिया गया है । क्षणिक भौतिक आकर्षणों के माया-जाल से मुक्त होकर ही जीव दिव्य-ज्योति का साक्षात्कार करने में सफल होता है । कुछ पाने के हेतु सब कुछ खोना अर्थात् अपने आपको पहचानना नितान्त आवश्यक है । नुन्द ऋषि[2] के श्लोकों[3] में भी आत्म-

---

1- ' हज़रत सॉबनिस खासि आसारस लारि दीदारस प्रारि दरगाह
तसकीन बनिना शोकि किस नारस लारि दीदारस प्रारि दरगाह ।
थावि असि लादन दफ मोड़तारस हावि नादारन दीदाराह
पादन दीन तल शारनि अदि दारस लारि दीदारस प्रारि दरगाह
हकि सन्दि फ़ज़लि वाच़ यथ शहारस मकि प्यठि रहमत त बरकत क्याह
दौलथ यिच़ ति मा मेलि संसारस लारि दीदारस प्रारि दरगाह ।'
- "कुल्लियात नादिम" सं० रशीद नाज़की, पृ०- 191-192.

2- कश्मीर के प्रतिनिधि सन्त कवि । (समय- सन् 1376-77 - सन् 1438)

3- संस्कृत 'श्लोक' शब्द का विकृत रूप । नुन्द ऋषि के साधनात्मक जीवन पर आधारित अनुभवजन्य पदों/श्लोकों को वाक/वुख कहते हैं ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आधार - सिंह, निशात, गुप्त

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

निग्रह पर विशेष बल दिया गया है और परवर्ती युग में नांतगो कवियों ने सांसारिक माया-मोह से मुक्त होकर मूल तत्त्व को जानने पहचानने के हेतु आत्म-संयम एवं इन्द्रिय-निग्रह को इश्क़े मुहम्मदी के प्रेम पथ पर नितान्त आवश्यक माना है । गृहस्थ जीवन के उत्तरदायित्व को निबाहते हुए भी नादिम कीचड़ में कमल के समान थे । लोभ, मोह माया एवं अहंकार साधना-पथ के विघ्न हैं जिन्हें पार करके ही साधक समभूमि के निकट पहुँचने में सफल हो जाता है और इस प्रकार ज़िन्दगी के वीराने मे बसन्त का सौन्दर्य खिल उठता है ।

'नादिम' ने अपनी कई रचनाओं में 'क़नाअत नफ़्स' को जीवन की महान उपलब्धि के रूप में स्वीकारा है । उन्हें विश्वास है कि प्रबल भौतिक एषणा मूलत: शैतान प्रेरित वासना जन्य कुसंस्कारों की स्वाभाविक परिणति है । अत: प्राणप्रिय नबी के प्रति आत्म समर्पण करते हुए वे सांकेतिक रूप में भक्त-जनों को भौतिक एषणा की घातक शक्ति के प्रति भी सावधान करते हैं :-

—' या नबी ! सुन लीजिये हमारे आर्तनाद को
ठग लिया हमें हमारे नफ़्स-काफ़िर ने
पथ-भ्रष्ट किया शैतान ने, अत्याचार से हुए पीड़ित
या नबी ! सीस निछावर है चरणों पर ।'[1]

1- ' या नबी वात असि दादि फरियादन
असि फोर पनिनुई नफ़्स-काफिर
डांलि इबलीसन गांल बे दादन
या नबी पादन वन्दि होय सर ।'
- "कुल्लियात नादिम" - रशीद नाज़की - पृ0- 184.

बेदाद (फा०) - अत्याचार
अनीति, ज़ुल्म

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नांतगोई में तर्के दुनिया को बात का कोई महत्त्व नहीं है लेकिन भौतिक जीवन के साथ लगे बिच्छू के डंक से सावधान रहने को आवश्यकता अक्षय है । जीवन जीना तो एक बात है लेकिन भोगेच्छाओं का क्रीतदास बन कर जीवन गँवाना दूसरी बात है । इस में सन्देह नहीं कि जीवन अनमोल है और यह सृष्टि सर्जनहार की सर्जना का सर्वोत्कृष्ट रूप है लेकिन जीव अज्ञान के आवरण में उलझ कर इन्द्रिय सुख के हेतु काँच को ही कंचन समझ कर स्वयं अपने विनाश के साधन जुटाने में लीन हो जाता है । जब कभी ज्ञान की प्रखर ज्योति से उसका मानस नहला उठता है तो 'स्थायी' और 'अस्थायी' को पहचान पा कर वह अपने दानवी कुकृत्य पूर्ण जीवन पर आठ आठ आँसू रो उठता है और अपने इष्ट का दामन थाम कर यों फ़र्यादि करता है :-

—'नफ़्स के फन्दे में फंस गया है नादिम
कृपा दृष्टि हो उस पर नहीं तो हो जायेगा बबादि
बहुत सताया उस को भोगेच्छाओं ने
दामन थाम लिया है तेरा, सुनियेगा फ़र्यादि ।'[1]

'नफ़्स' ही तो हमारा शत्रु है जो मीठी छुरी से मार करता है । सम्पूर्ण भक्ति काव्य में इन्द्रिय-निग्रह पर विशेष बल दिया गया है । प्रेम और

1.- ' नांदिम छु वोलमुत नफ़्सक दामन
अथरोट करतस नूति गछि खार
सख ओन आंजिज़ नफ़्स बदकामन
रोट चोन दामन बोज़ सांन्य ज़ार ।'
— "कुल्लियात नांदिम" रशीद नाज़की, पृ०- 181.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

वासना में वहीं अन्तर है जो उपवन में खिले हुए फूल और बाज़ार में बिकने वाले रंगीन काग़ज़ी फूल में है । उपवन के फूल में जीवन है और जीवन की गरिमा जो प्रेम का श्रृंगार है और काग़ज़ी फूल में शोख़ रंग होते हुए भी थिरकते सौन्दर्य का अभाव है । प्रेम स्वीकार्य है पर वासना त्याज्य । इन्द्रिय-निग्रह की बात कहते हुए नांतगो शायर ज्ञान के शुभ्र प्रकाश से जीवन के अन्धकार को मिटाने की प्रेरणा भी देता है । लेकिन उसे दृढ़ विश्वास है कि ईश-दूत के अनुग्रह के बिना यह सम्भव नहीं है । अनुग्रह प्राप्ति के हेतु वह अपने इष्ट के सम्मुख याचना-रत दिखाई देता है । उसे अपने विगत जीवन पर पश्चाताप है और सम्भव है कि इसी पश्चाताप की अग्नि में कलुषित वासना के कंटीले झाड़ जल कर क्षार हो जायें :-

--'नफ़्स ने हम को बहुत बहकाया
घर के शत्रु को कब पहचाना हमने
तृण समान कुचला पर्वत के नीचे
{नगण्य है अस्तित्व हमारा उसके सम्मुख}
हमें चाहिये अन्धकार में शुभ्र प्रकाश तुम्हारा ।'[1]

नादिम के नातिया कलाम की एक और विशेषता यह है कि इन्होंने अधिकांश रचनाओं को लोकगीतों की शैली में प्रस्तुत किया है ।

1-' नफ़्सन करि नांव सख़्त इगवाहा
गर कुलि दुश्मन असि कर ज़ोन
कोहस तल ज़न लांगिन काहा
असि गोछ़ गटि मंज़ गाहा चोन ।'

इग़वा (अ०) - बहकाना पथभ्रष्ट करना

-"कुल्लियात नादिम" - रशीद नाज़की, पृ०- 177.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कश्मीरी लोकगीतों में 'वनवुन' का अपना विशेष महत्त्व है । इसी 'वनवुन' शैली को अपना कर नादिम अपनी रचनाओं को जन-मानस के बहुत क़रीब लाने में पूर्ण सफल हुए हैं । 'वनवुन' स्त्रियों के गीत हैं और नादिम ने अपने नातिया कलाम से इन गीतों को गौरवान्वित किया है । इश्क़े मुहम्मदी के जोश से ये लोकगीत न केवल महिमा मंडित हुए अपितु जन-मानस के कंठहार बन गए । श्री गुलाम रसूल नाज़की का यह कथन सही है कि नादिम ने कश्मीरी वनवुन को इबादत अर्थात् उपासना या आराधना का रूप प्रदान किया है ।[1] नादिम ने अपने नातिया कलाम में ईश-दूत के प्रति अनन्य प्रेम एवं भक्ति के साथ लोक-संगीत को मिला कर अमृत (आनन्द) रस की त्रिवेणी प्रवाहित की है । ऐसा अद्भुत संयोग बहुत कम कवियों की रचनाओं में देखने को मिलता है । 'वनवुन' की नात के साथ मिला कर उन्होंने भक्ति-परक गीतों की सृष्टि की है ।[2] हृदय के तमसान्धकार में दीपित होने के लिये चन्द्रवदन प्रिय से आग्रह पूर्ण निवेदन 'वनवुन' शैली में इस प्रकार किया गया है :-

— 'मक्क: के मनमोहक साजन को - स्वागतार्थ भेजूँ निज प्राण
काश देते दर्शन ! न्योता करते स्वीकार, स्वागतार्थ भेजूँ -
- निज प्राण ।
जाने क्यों रूठ गए वे चन्द्रवदन ! अन्धकार में दीपित हो जाते

1- "अब्दुल अहद नादिम - (चुनी हुई कश्मीरी कविताएँ) सम्पादक - एवं अनुवादक (उर्दू) - मीर गुलाम रसूल नाज़की - जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन, सन् 1959 ई० - भूमिका ।

2- "इन के काव्य का प्रमुख क्षेत्र है - 'वनवुन' शैली में नात लिखना । इसी कारण ये कश्मीर के घर घर में पर्याप्त लोकप्रिय हुए हैं ।'
- "काश्मिर अद्बुक तवारीख़" - नाजी मुनवर, शाफ़ी शारीक़, पृ०-107

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ज्योति पुंज से यह दूरी कितनी सह लूँ ! स्वागतार्थ भेजूँ निज-
- प्राण

दूषित प्यार जब पहुँचेगा चरम बिन्दु पर - तब प्रियतम होंगे -
- आकर्षित

नादिम मोहित हैं उस रूप छटा पर, स्वागतार्थ भेजूँ निज प्राण ।'[1]

भक्ति परक 'वनवुन' गीतों में नादिम ने उन लोक-प्रचलित शब्दों, शब्द-खण्डों और मुहावरों का प्रयोग किया है जिन का उद्गम स्रोत जन मानस है और जो कश्मीरी लोक भाषा के प्रमुख आकर्षण हैं । वनवुन-गीतों के केन्द्र में प्रायः प्रेमाकर्षण का तत्त्व निहित रहता है । यही प्रेमाकर्षण यहाँ इश्क़े मुहम्मदी का रूप धारण करके न केवल प्रेम-भाव को गौरवान्वित करता है अपितु एक सच्चे भक्त के हृदय में आनन्द को स्रोतस्विनी को प्रवाहित भी करता है । ऐसे आनन्दमय वातावरण में प्रिय के लिये 'मा'लि महराज़ि' (मनमोहक सुशील) का सम्बोधन वस्तुतः भक्त-हृदय की बेचैनी (आतुरता) को ही दरसाता है :-

--'या नबी ! आग़ाज़ किया है तुम्हारी ना'त से
वनवुन गीत गायें ताज़ा ताज़ा
अनन्त भेजें दुरूद और सलाम

1- 'मकि किस टा'ठिस मदनी लालस सोज़िब्व इस्तकबालस जान
दियि ना दरशुन यियी ना सालस सोज़ि ब्व इस्तकबालस जान
क्या गोसि गोमुत माहतिमसालस ज़ाँह छुनि गटि मंज़ गाह हावान
नूरि निश दूरयर कोताह ग़ालस सोज़ि ब्व इस्तकबालस जान
नाकिस अशिक़ यलि वाति कमालस तेलि गछ़ि माशोक़ मेहरबान
ना'दिम छु मुशताक़ अथ जमालस सोज़ि ब्व इस्तकबालस जान ।'

- "कुल्लियात नादिम" - पृ0- 179-180.

मदनी -(अ०) मदीना के निवासी
मदनी -(स०) खोशयुवन [illegible]
मूल सं० मदन - कामदेव

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

वनवुन गीत गायें ताज़ा ताज़ा
अप्सरायें निकली सज-धज के स्वागत हेतु
गाती हैं वनवुन गीत निरन्तर
सैर कर ले मनमोहक सुशील !
वनवुन गीत गायें ताज़ा ताज़ा
प्रेम सागर में आकर्षक जल-पोत
मन होगा तब शान्त जब पहुँचे गे उस ठौर
खोल दे द्वार हम उन्मत्त प्रेमाकुल हैं
वनवुन गीत गायें ताज़ा ताज़ा ।'[1]

नादिम ने मुनाजात भी लिखे हैं । मुनाजात में ईश-प्रार्थना काव्य का प्रतिपाद्य विषय रहता है । यह एक ऐसा स्तुतिगात है जिसमें साधक ईश कृपा की प्राप्ति हेतु साधना-रत रहता है ।[2] यहाँ कवि सर्वप्रथम अपने इष्ट के सम्मुख नत-मस्तक हो जाता है, वह मुक्त कंठ से इष्ट देव के प्रभुत्व का महिमा-गान करता है और स्तुति-गायन के साथ-साथ दैन्य भाव से प्रेरित कृतज्ञता भी व्यक्त करता है । अन्त में ईश-कृपा एवं अनुग्रह का पात्र बन कर वह अपने प्रिय के विराट् अस्तित्व में लय हो जाता है । उस अलौकिक शक्ति के सहारे भक्त अपनी जीवन-नौका को इस भव-सागर के भँवर से बाहर निकाल कर उस पार लगाना चाहता है ।

पेशवाज़ = स्वागत करने वाला इस्तिक़बाल करने वाला

1- ' या नबी नांत चोन कोर आगाज़े ताज़े ताज़े वन-अ-वोय
सलवात सोज़ वय बे अन्दाज़े, ताज़े ताज़े वन-अ-वोय
दूरि द्रायि पांरिथ नूरि पेशवाज़े, वनवान आये चैय हरसू
सांल कर अज़ छुक मांलि महराज़े, ताज़े ताज़े वन-अ-वोय ।
लोलिकिस सोदरस लूबि जहाज़े, होल चलि तेलि यलि तोर वातोय
लोल आव असि त्राव वांथ दरवाज़े, ताज़े ताज़े वन-अ-वोय ।'
-- "कुल्लियात नादिम" पृ0- 194-196.

पेशवाज़ = फा० स्वागत करने वाला

सलवात -(अ) नमाज़ें रसूल पर दुरूद
दुरूद | दुरूद
दुआ और सलाम विशेषतः रसूल पर

2- "उर्दू हिन्दी शब्द-कोश" - प्रकाशक : उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान (हिन्दी समिति प्रयोग) - संकलन कर्त्ता : मुहम्मद मुस्तफा खाँ, 'मद्दाह' तृतीय संस्करण - सन् 1977 ई0 पृ0-523.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

वस्तुत: मुनाजात में कवि याचक बन कर भगवत् कृपा का प्रसाद पाने का अभिलाषी रहता है । नादिम भी अपने इष्ट के सम्मुख नत-मस्तक होकर नूरे इलाही को अद्भुत ज्योति से अपने हृदय के तमसान्धकार को मिटाना चाहता है । एक बार फिर वह अपने आप को पहचानने का प्रयास करता हुआ साधनारत दिखाई देता है तथा ईश के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए भगवद्-दया के हेतु विनीत शब्दों में इस प्रकार प्रार्थना करता है :-

---'ईश मेरे ! तेरी रहमत है मुझ पर अपार
दुरदशा मिटा दो मेरी, कृपा करो मुझ पर
ईश मेरे ! मैं दास तुम्हारा दुष्कर्मी
तुम्हारा हूँ केवल दया करो मुझ पर
ईश मेरे ! तनिक सुन लीजिए फ़रियाद मेरी
पूजा रत हूँ और प्रवाहित अश्रु निरन्तर
दीन हीन है दशा मेरी, बदहाली से पीड़ित
भयाक्रान्त हूँ, थाम लीजिये हाथ मेरा ।'[1]

जीवन के बसन्त में अकस्मात् पौष के आगमन से वस्तुत: भौतिक जीवन की क्षणभंगुरता का ही आभास होता है । जीव इस जीवन को क्षणों में जीने के लिये विवश है । पराश्रित जीवन का प्रत्येक पल कटु-मधुर

1- ' इलाही चान्य रहमत बे निहायत
मय ज़हमत कास्तम करतम अनायत
इलाही छुस छव योनुई बन्दि बदकार
छव योनुई छुस च्य म्योनुई योतनय आर
इलाही बोज़तम फरियाद ज़ारी
करन पूज़िश हरन छुम अश्क जारी
बतर गोमुत पथर च्योमुत बख़ारी
मय थर छम चान्य करतम दस्तयारी ।'
- "कल्लियात नादिम" पृ0- 125-126.

दस्तगीरी - (फा10) सहायता, मदद

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अनुभवों की भेंट चढ़ जाता है और ↑पड़ाव पर जब उसे अपनी वास्तविकता का एहसास सताने लगता है तो वह अज्ञात की खोज अथवा उस नियंता की तलाश के हेतु साधना-पथ को अपनाता है जहाँ कुछ पाने की क्षीण सम्भावना उसके मानस को अधीर कर देती है। धीरे धीरे उसे विश्वास हो जाता है कि मात्र ईश-कृपा से ही जीवन के वीराने में शुभ्र ज्योति का प्रकाश खिल उठता है अतः नत-मस्तक स्तुति-वन्दना का अर्घ्य समर्पित करता हुआ भक्त जीवन सिद्धि का प्रसाद पाने हेतु प्रतीक्षा रत दिखाई देता है :-

--'पौष आ रहा है निकट जीवन के बसन्त में
कोह-श्रृंग पर अस्त होने की बेला आई है
पुकार रही है क़बर - 'चल ग़ाफिल, चल'
सर पर लटक रही है मृत्यु - असि निस्सन्देह
ईश मेरे ! भक्त तुम्हारा हूँ निस्सहाय निराश्रित
पापाचारी हूँ मैं और आप हैं मेरे मोक्ष विधाता।'

आज भक्त को अपने विगत कालीन कुकर्ममय जीवन पर घोर पश्चाताप हो रहा है। दहक रही है यह अग्नि मानस के भीतर और उसी की लपटों में वह पोर-पोर और अंगुल अंगुल जल रहा है। आज उसे अपने वासना-दग्ध जीवन की क्षुद्र कामेच्छाओं पर पश्चाताप हो रहा है।

1-' बहारस आम हारस पोह नज़दीक
कोहस प्यठ लोसनस छुम दोह नज़दीक
क़बर छम नाद लायान ग़ाफिलो पख
तबर छम तालि प्यठ मोतिन बिला शक
इलाही बन्दि छुस दरमन्दि चोनुई हीन, निःसहाय.
ब्व आसी छुस चि छुख बखशन्दि म्योनुई।' बहुत बूढ़ा, वृद्ध पापी, पापाचारी

- "कुल्लियात नादिम" पृ0- 124.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

↑जीव स्वयं अपनी पहचान खो देता है। ज़िन्दगी के किसी

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सम्भव है इसी अग्नि में जल कर वह कुन्दन हो जाये । स्वत: अपने किये पर पशेमान होकर वह साधना-पथ पर किसी मार्ग-दर्शक की तलाश में भटक रहा है । यह भी सम्भव है कि 'मरा - मरा' से 'राम - राम' की अनुगूँज उसके मानस में झंकृत हो उठे और जीवन के अनुत्तरित प्रश्नों के समाधान पा कर वह तलाशे हक़ में सफल हो जाये । यही कारण है कि आज बिना किसी झिझक के वह अपने कलुषित जीवन पर पश्चाताप व्यक्त करते हुए कहता है :-

--' नहीं ज्ञात है कब किस का मज़ाक़ उड़ाया ठठोली की
परिहास किया था जाने किस का, भुगत रहा हूँ अंजाम -
- उसी का
पर के छिद्र अन्वेषण में बहुत समय गंवाया
आज उसी के कारण लज्जित होना पड़ता है
बुह्तान[1] कहे, पर निन्दा की, वही भूल थी मेरी
बुरा चाहा पर-जन का भुगत रहा हूँ फल उसका
तबाह किया है भोगेच्छाओं ने मुझ को
डस कर छोड़ दिया है सर्प राज ने
भौतिक इच्छाओं के अहरमान[2] ने दबोच लिया है
आज नहीं चलता कुछ भी वश मेरा ।'[3]

- -

1- "बुह्तान" - असत्य कथाएँ, शबरंग (कश्मीरी)
2- "अहरमान"- ईरान के आतश परस्तों के मतानुसार 'बदी' का ख़ुदा ।
3- ' ख़बर रूज़िम न कर कस्ताम गेल्योम
परस गेल्योम गरस तो ताम मेल्योम
कॉ्रिम लूकन स्यठाह क्या आंबजूई
तमी आंबन कॅ्रिम बे आंबिरोई ।
वोनुम बोहतान करयम गॅबिव़ फोरूम तो
यि बद कोंछुम बेयिस पानस सोरूम तो

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

फ़ारसी भाषा में काव्य की एक विधा शहर आशोब कहलाती है जिसमें कवि अपने समकालीन जीवन की विकृतियों का स्पष्ट अथवा व्यंग्यात्मक चित्रण करता है । इस प्रकार की कविता में कुशासन के कुचक्रों से त्रस्त जनता की दीन-हीन दशा का उल्लेख सांकेतिक रूप में किया जाता है । सामाजिक और राजनीतिक शोषण से त्रस्त जनता पथ-भ्रष्ट नेताओं के कुचक्रों में फंस कर उनके हवस अर्थात् भौतिक भूख का शिकार बन जाती है । कवि जीवन के इस बीभत्स यथार्थ में कुछ क्षण जी कर त्रस्त हो उठता है और व्यंग्य का सहारा लेकर तथा मुलम्मे का आवरण चीर कर समकालीन ज़िन्दगी की कटु हक़ीक़तों से हमें परिचित कराता है । आधुनिक शब्दावली में जिसे हम युग-बोध कहते हैं उसका सही रूप हमें इन रचनाओं में देखने को मिलता है । अज्ञान, अन्धविश्वास एवं आर्थिक विपन्नता के तमसान्धकार में सामान्य जन-जीवन किस प्रकार मलिन हो जाता है - इस तथ्य का सम्यक् बोध इन रचनाओं के द्वारा होता है । देखा जाए तो शहर आशोब रचनाओं का काव्य में ऐतिहासिक महत्त्व रहता है । इस प्रकार की रचनाएँ एक युग विशेष का सम्यक् बोध कराने में, चाहे वह कितनी ही संकट ग्रस्त क्यों न हो, महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाहती है ।

नातगो नादिम के रचना संसार में इस प्रकार की व्यंग्य रचनाओं

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

ब्व कोरनस मारि यति नफ़्स अमारन
बुछित ब्व त्रोवनस अमि शाह मारन ।
रोटुस अमि नफ़्सको अहरमनन तल
यमिस च्यठ वन्य पकन म्य छुम न कांह छुल ।'

- "कुल्लियात नादिम" पृ0- 129-130.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

का अपना विशेष महत्त्व रहा है । निस्सन्देह वे अपने युग के प्रति सजग एवं सचेत थे । उन्होंने ज़िन्दगी को बहुत क़रीब से देखा और समझा था यही कारण है कि वे अपने युग-सत्य के प्रति काफ़ी ईमानदार रहे हैं । उन्होंने 'तर्के दुनिया' की बात न कह कर 'एहसास दुनिया' की बात को ज़्यादा महत्त्वपूर्ण समझा । अत: किसी अविश्वसनीय स्वर्ग की बात न कह कर वे भौतिक जीवन की विकृतियों पर निरन्तर प्रहार करते रहे ।

धन लोलुपता ने ही आज मनुष्य को स्वार्थान्ध बना दिया है । मूल्यहीन जीवन जीने की पीड़ा को भुगतता हुआ वह आज हर क़दम पर परिस्थितियों के साथ समझौता करने को विवश दिखाई देता है । इस सिद्धान्त हीन जीवन पर चोट करते हुए 'नादिम' ने लिखा है :-

'धन लोलुप हैं ये आज के आलिम
ज़ालिम हैं और रिश्वतखोर
स्वार्थान्ध हैं ये बीनादार ।
तब तो नास्तिक जन से घिन होती थी ।
ज्ञान ज्योति से दीपित हैं कुछ लोग
कुछ लोगों के लिये ज्ञान है गधे के कन्धों पर बोझा
कुछ लोगों को डस लिया है ज्ञान के घातक सर्पराज ने

1- 'बीनादार' - जिन्हें आँखों की ज्योति है ।
बीना - {फ़ारसी} - देखने वाला

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

तब तो नास्तिक जन से घिन होती थी ।'[1]

जिस प्रकार एक भूखा कुत्ता लोथ को नोचता है उसी प्रकार स्वार्थान्ध मनुष्य भोगेच्छाओं से पीड़ित अपनी क्षुधा मिटाने के हेतु निस्सहाय शोषित जनों की सड़ाँध पूर्ण लोथ को नोचता है । कहने का अभिप्राय यह है कि उस भूखे कुत्ते और आज के वासनादग्ध मानव में कोई अन्तर नहीं । उसे मानव नाम से अभिहित करना वास्तव में मानवता का अपमान है । इस सन्दर्भ में आज 'मानव' शब्द अपने मूल अर्थ से वंचित हो गया है । उसी प्रकार जैसे 'विद्वत्ता' शब्द अपने युगीन अर्थ को संकुचित सीमाओं में कैदी बन कर मूलतः अर्थ हीन हो गया है । एहसासे हक़ीक़त अर्थात् वस्तु स्थिति की यथार्थ अनुभूति से आज मनुष्य स्वयं अपने आप पर लज्जित हो रहा है । लेकिन यह सब होते हुए भी ज़िन्दगी उत्तरोतर आगे बढ़ रही है और जीव इस दुर्गन्ध पूर्ण वातावरण में रहने का अभ्यस्त हो गया है । यही कारण है कवि चुप्पी साधने में ही अपनी ख़ैर समझता है :-

—' छोटे - बड़े सभी तलाश रहे हैं दुनिया को
अपव्यय की विधियाँ खोज रहे हैं

1- ' आ॑लिम वख़्तिक ता॑लिब छि द्यारन
ज़ा॑लिम ज़न छी रुशवतखोर
तमहन वुनि वा॑ज बीनादारन
ति ज़ि ओस तेलि कुफ़ारन आर ।
कैँह क॑रि वा॑सिल अल॑मिक यारन
केंछ़न अ॑लिम खोत खरि सुन्द बार
कैँह बुछि अल॑मिक का॑लिशाह मारन
ति ज़ि ओस तेलि कुफ़ारन आर ।'

कुफ़्फ़ार (अ०)
काफिर का बहु
नास्तिक लोग
आर ... — घृणा, नफ़रत
(अ०)

- "कुल्लियात नादिम" पृ०- 204-205.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मानो भूखा कुत्ता नोच रहा है लोथ को
तब तो नास्तिक जन से घिन होती थी
और भी कुछ कहता पर घबरा जाता हूँ
आम जनों के बद किरदार
संयत हो जा नहीं तो मारे जाओगे
तब तो नास्तिक जन से घिन होती थी ।'[1]

इसमें सन्देह नहीं कि नादिम की अभिव्यक्ति पर फ़ारसी भाषा का ज़बरदस्त प्रभाव देखने को मिलता है । यहाँ स्थिति वही है जो परमानन्द के काव्य में संस्कृत गर्भित कश्मीरी भाषा के प्रयोग के कारण उत्पन्न हुई है । नादिम ने फ़ारसी के साथ-साथ अरबी भाषा का भी खुल कर प्रयोग किया है फलतः उनके काव्य का अभिव्यक्ति पक्ष लोक-भाषा से भिन्न एक विशिष्ट वर्ग एवं सम्प्रदाय तक सीमित रह गया । सम्भव है कि यह युगीन परिस्थितियों का परिणाम हो अथवा फ़ारसी के प्रभुत्व की मजबूरी हो या यह भी कहा जा सकता है कि कश्मीरी भाषा जो उस युग में एक अर्ध-विकसित बोली के रूप में प्रचलित थी, नादिम को पर्याप्तवाची शब्दावली प्रदान करने में असमर्थ रही हो । इस विषय में कई कारण गिनाये जा सकते हैं लेकिन इस

1- 'खासो आम सारी दुनिया गारन
इसराफ छान बेशुमार
बोछि होत हून ज़न पेयि मोरदारन
तिज़ि ओस तेलि कुफ़्फ़ारन आर ।
वनि हा बेयि क्यँह तथ छुस थारन
आम लूकन हिन्द बद किरदार
हदि रठ ज़्यव पानि अदि मा मारन
तिज़ि ओस तेलि कुफ़्फ़ारन आर ।'

– 'कुल्लियात नादिम' पृ०- 204-205.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

हक़ीक़त को झुठलाया नहीं जा सकता कि नादिम अपनी अधिकांश रचनाओं में फ़ारसी और अरबी के माध्यम से कश्मीरी भाषा का व्यवहार करते हैं जिसे समझने के लिये फ़ारसी और अरबी की जानकारी होना नितान्तावश्यक है । काश ! नादिम शुद्ध एवं सहज लोक-भाषा का व्यवहार कर पाते, तब आज उनकी रचनाओं का अभिव्यक्ति-पक्ष कितना सशक्त और आकर्षक होता ! आश्चर्य इस बात का है कि न केवल शब्दों को अपितु असंख्य वाक्यांशों एवं शब्द-खण्डों को भी उधार लेने के लिये वे विवश दिखाई देते हैं ।

स्पष्ट है कि बीसवीं शताब्दी के पहले दशक तक नादिम एक विशिष्ट काव्य-विधा को लेकर कश्मीरी भाषा के रचना-जगत में सक्रिय दिखाई देते हैं । कश्मीरी भक्ति-काव्य के इतिहास में विशेष कर नात एवं मुनाजात के क्षेत्र में अब्दुल अहद नादिम का योगदान चिर स्मरणीय रहेगा । दोनें-इस्लाम के सिद्धान्तों के प्रति दृढ़ता के साथ पूर्ण निष्ठा रखते हुए उन्होंने कश्मीरी काव्य-जगत में वह अमृत-धारा पूरे वेग के साथ प्रवाहित की जिसके छलकते रस-कणों से आज के कम्प्यूटर-युग का दग्ध-हृदयी मानव अपनी ज़िन्दगी के शुष्क रेगिस्तान को पुनः सिक्त करना चाहता है । आज के बौद्धिक रस्सा-कशी के युग में यही तो प्राणदायिनी शक्ति है । आज मनुष्य फिर शान्ति की तलाश में दर दर भटक रहा है । अलौकिक और अद्भुत की खोज रहा है अपने आप को एक बार फिर तलाशने का अथवा पहचानने का प्रयास कर

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

रहा है । ऐसी स्थिति में भक्ति-काव्य की भूमिका स्वयं सिद्ध है । अब्दुल अहद नादिम ने कल जो अमृत धारा प्रवाहित की वह आज के तपते जीवन को अमृत सिक्त करते हुए अक्षय कल भी प्रवाहमान दिखाई देगी, इस में कोई सन्देह नहीं । बकौले शाइर :-

" जीवन की इस गर्दिश में हम अलग थलग दूर पड़े हैं,
यह संसार किसी का साथ नहीं देता हर पल
गहन अन्धकार में हुए पथ-भ्रष्ट
दामन थाम लिया है तेरा, सुनिये आर्तनाद ।
सुध लेनी थी पीड़ित जन की
दर्शन देते, रुग्ण पड़े हैं ।
छोड़ चले हो कहाँ अपरिपक्व जनों को
दामन थाम लिया है तेरा, सुनिये आर्तनाद ।"[1]

- 0 -

1- " दूर त्रांव वाराह दौरि अयामन
पूर छुनि स्वमुत कांसि संसार
गटि मंज़ गुमराह गांमित छि शामन
रोट चोन दामन बोज़ सांनि ज़ार ।
ख़बरा हयनि गछि बे आरामन
नज़रा दिति अंसि छो बेमार
त्रांविथ ब्यूठुक कति असि खामन
रोट चोन दामन बोज़ सांनि ज़ार ।"
- "कुल्लियात नादिम" पृ०- 181

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
= =

:: खण्ड - तीन ::

आधुनिक कश्मीरी काव्य में नवयुग की अनुगूँज
बन्दगी के जीवन में ज़िन्दगी का हुस्न

अः प्रेम काव्य : मुहब्बत जाने जानाँ से

आः राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम : क्रान्ति का शंखनाद

इः प्रगतिवादी चिन्तन एवं सामाजिक यथार्थवाद

ईः विज्ञाता प्रयोग को : अन्वेषण नये आयामों का

उः नई कविता : युग बोध एवं तलाश अस्तित्व को

ऊः हास्य एवं व्यंग्य : नश्तर को तेज़ धार

एः इश्क़े इलाही : दिव्यानुभूति

= =
xxxxxxxxxxxxxx xxxxxxx xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

/1/ अ: शृंगार-वर्णन, :आ: देश-प्रेम, राष्ट्रीय भावना एवं क्रान्ति के अग्रदूत -

* पीरज़ादा ग़ुलाम अहमद 'महजूर'*
(सन् 1887 - 1952 ई0)

1- सौन्धी धरती की ख़ुशबू
2- एक योद्धा का संघर्षमय जीवन
3- निर्द्वन्द्व व्यक्तित्व : सहज विनोद प्रिय स्वभाव
4- 'महजूर' - लेखपाल के रूप में
5- बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न कलाकार
6- 'महजूर' की इश्क़िया शाइरी
7- प्रेम : विवश ज़िन्दगी का मूल्यवान उपहार
8- महबूब का तसव्वुर
9- प्रेम के प्रति महजूर का स्वस्थ भौतिक दृष्टिकोण
10- प्रेम में विरह की तड़प और जुदाई का ग़म
11- प्रेम काव्य में सखि-प्रसंग
12- प्रेम काव्य में स्थानीय रंग
13- सौन्दर्य की अद्भुत परिकल्पना : ग्रोसकूर (कृषक बाला)
14- महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष
15- 'महजूर' के काव्य में देश-प्रेम एवं राष्ट्रीय भावना
16- अपनी संस्कृति से लगाव : स्वर्णिम अतीत का गौरव गान
17- दुर्दशा ग्रस्त वर्तमान : युग सत्य की मार्मिक अभिव्यक्ति
18- एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में 'महजूर' का राष्ट्रीय काव्य
19- 'गुल' और 'बुलबुल' की शाइरी
20- आशावादी सन्देश एवं जागरण गीत
21- नया कश्मीर का सुनहला स्वप्न
22- क्रान्ति का आह्वान : विप्लव एवं विद्रोह का स्वागत
23- राष्ट्र कवि महजूर : कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अध्यात्म के भूल भुलैयों से बाहर निकल कर, स्वप्निल इश्क़ के हवामहल से नीचे उतर कर, फ़ारसी इल्म और अदब के दबदबे एवं प्रभुत्व से मुक्त होकर जब बीसवीं शताब्दी के जन-मानस ने अपनी सौन्धी धरती की ख़ुशबू से ज़िन्दगी की वीरानियों को सजाने सँवारने की दृढ़ इच्छा व्यक्त की तो सर्जनात्मक साहित्य में व्याप्त बीमार परम्पराएँ, रूढ़ियाँ एवं तथाकथित आदर्श खण्ड खण्ड बिखरने लगे । बन्दगी के जीवन में ज़िन्दगी का हुस्न शामिल हुआ और आकाश कुसुम चुनने वाला कलाकार धरती पर उतर कर जीने योग्य अथवा अयोग्य मानव जीवन के प्रति आकृष्ट हुआ । हाँ, इस जीवन में भी प्यार - इकरार है, आकर्षण है, सब कुछ है और सब कुछ नहीं है । कश्मीरी साहित्य में 20वीं शताब्दी के इस परिवर्तित युगबोध की अग्रिम सूचना देने वाले थे - पीरज़ादा ग़ुलाम अहमद 'महजूर' ।

ग़ुलाम अहमद का जन्म पुलवामा तहसील (अब पुलवामा कश्मीर का एक ज़िला है) के मित्रिगाम गाँव में स्वर्गीय अब्दुला शाह के घर में हुआ था । जन्म कब हुआ - यह विषय पर्याप्त

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

विवाद ग्रस्त है ।[1] विद्वानों ने कोई ठोस प्रमाण अथवा तर्क प्रस्तुत किये बिना महजूर की जन्म तिथि के विषय में अटकलबाज़ी की है जिस की वजह से मार्ग प्रशस्त होने के बदले संकीर्ण और अन्ध गली कूचों में विभक्त हुआ । आश्चर्य है कि स्वर्गीय अब्दुल अहद 'आज़ाद' जो 'महजूर' के समकालीन थे तथा जिन को महजूर के साथ गहरी वाबस्तगी रही है, इस विषय में हमारा उचित पथ-प्रदर्शन नहीं कर सके हैं ।

1- "कुल्लियाति महजूर" (प्रकाशन सन् 1983 ई०), 'शीराज़ा'-उर्दू (महजूर नम्बर - अगस्त 1984 ई०) तथा 'शीराज़ि' - कश्मीरी (महजूर - नम्बर - दिसम्बर 1987 ई०) के प्रकाशन के बाद यह विवाद किसी हद तक शान्त हुआ है ।

इस दिशा में "महजूर तथा बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन " विषय पर शोध-कार्य करते समय मैंने सन् 1964 ई० से 1968 ई० तक पर्याप्त खोज की । पुलवामा तहसील के दफ्तर में अथवा माल विभाग की पुरानी संचिकाओं में कोई ठोस प्रमाण नहीं मिल सका । हाँ 'महजूर' के सुयोग्य पुत्र स्वर्गीय मुहम्मद अमीन ने, जो उन दिनों जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी के श्रीनगर कार्यालय में काम करते थे, मेरी शंकाओं का समाधान किसी हद तक किया । श्री मुहम्मद अमीन से कई बार मेरी भेंट हुई । घण्टों चर्चा चलती थी और सन् 1968 ई० में शोध-कार्य को पूरा करने में उनका बहुमूल्य योगदान रहा है ।

'महजूर' के जीवन और कृतित्व पर उक्त प्रबन्ध में मैं ने विस्तार के साथ लिखा है ।

श्री मुहम्मद अमीन पर माँ सरस्वती की विशेष अनुकम्पा थी । वे स्वयं एक अनुभवी शोधार्थी थे। कश्मीर के प्राचीन इतिहास, फ़ारसी एवं कश्मीरी साहित्य तथा लोक जीवन एवं लोक संस्कृति पर उनकी गहरी नज़र थी । संस्कृत के साहित्यिक वैभव से वे बेहद प्रभावित थे । उन्होंने कई बार मेरे सामने यह इच्छा व्यक्त की कि अबदाल (उनके एक पुत्र का नाम) संस्कृत में एम० ए० कर ले । लेकिन ऐसा न हो सका । अबदाल मेरे प्रिय शिष्यों में

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

'महजूर' के पुत्र स्वर्गीय मुहम्मद अमीन (इब्न महजूर) के कथनानुसार उनके वालिद का जन्म सन् 1887 ई0 में हुआ था जिस की तस्दीक उन्हें कई प्रामाणिक स्रोतों से हुई है।[1]

महजूर अत्यन्त अल्पायु में ही अपनी माँ अख़्तर सयेदा बेगम के वात्सल्य से वंचित हो गये थे। पिता की ज़िद थी कि बेटा परम्परानुसार पीर-मुरीदी का कार्य सम्भाले और बेटा बचपन से ही स्वतन्त्र एवं निर्भीक प्रकृति के कारण किसी तरह भी परम्परा का अन्धानुकरण करने के लिए तैयार नहीं था। टकराव की स्थिति में उन्हें घर छोड़ना पड़ा।[2] पहले लाहौर पहुँचे और फिर अमृतसर। मौलाना बिसमिल और महाकवि शिबली के सम्पर्क में आये और उनसे प्रेरित होकर फ़ारसी भाषा में कविता लिखने लगे।[3] महाकवि शिबली ने ही 'महजूर' के विषय में एक उच्च कोटि का कवि होने की भविष्यवाणी की थी।[4] सन् 1907 ई0 में 'महजूर' कश्मीर लौट आए और यहाँ उनका विवाह सम्पन्न हुआ। इन्हीं दिनों चौधरी ख़ुशी मुहम्मद नाज़िर से आप का सम्पर्क स्थापित हुआ। चौधरी साहब

(पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

एक हैं। कश्मीर विश्वविद्यालय से हिन्दी और कश्मीरी साहित्य में एम0 ए0 की डिग्री प्राप्त करके आजकल वे आकाशवाणी के श्रीनगर केन्द्र में एक उच्च पद पर सेवारत हैं।

– लेखक –

1– 2 जून 1965 ई0 को 'महजूर' के पुत्र श्री मुहम्मद अमीन से प्रत्यक्ष भेंट द्वारा ज्ञात। भेंट अकादमी के लालमण्डी दफ़्तर में हुई थी।

– लेखक –

2– 'तामीर' – महजूर विशेषांक, सन् 1957 ई0 – "कश्मीरी भाषा का राष्ट्रीय कवि 'महजूर'" – श्री निवास लाहोटी, पृ0–17.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

उस समय बन्दोबस्त विभाग में एक उच्च पद पर कार्यरत थे । गुलाम अहमद ने नौकरी के लिए अपना प्रार्थना पत्र पद्य में लिख कर भेजा । चौधरी साहब प्रभावित हुए । प्रार्थना स्वीकृत हुई और गुलाम अहमद को लेखपाल नियुक्त कर लद्दाख जाने का आदेश हुआ । पीर अब्दुल फ़ाह की इच्छा के विरुद्ध गुलाम अहमद लद्दाख चले गए ।

फ़ारसी के साथ साथ अब गुलाम अहमद उर्दू भाषा में भी कविता लिखते थे और यह सिलसिला सन् 1924 ई० तक जारी रहा । इस दौरान 'महजूर' को कई दुश्वारियों का सामना करना पड़ा । लेखपाल के रूप में उन्हें घाटी के कई परगनों में रहने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ । 'आँखिन देखी' सच्चाइयों ने उन्हें युगीन जीवन के विषय में गहराई के साथ सोचने के लिए विवश किया ।[1] जीवन के विषादपूर्ण अनुभवों ने महजूर को अपने देश की माटी के साथ जोड़

॥ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग ॥

3- 'महजूर' - प्रो० पृथ्वीनाथ 'पुष्प' - पृ०-5.

4- 'प्रगतिवाद' - शिवदान सिंह चौहान - पृ०- 179.

1- 'His profession as a Patwari brought him in close touch with the village folK. Their hopes and fears their simple life and the hardships and miseries that they had to undergo in earning a meal for themselves and their children touched the chords of his sympathe--tic heart.'

"A History of Kashmir" - P.N.K. Bamzai - page 739-740.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

दिया । फ़ारसी और उर्दू के दमख़म को भुला कर उन्होंने कश्मीरी भाषा को भावाभिव्यक्ति का साधन बनाया । 'महजूर' के जीवन में यह एक ऐतिहासिक निर्णय था जिसने 'महजूर' की सृजनात्मक कला को जन मानस के साथ जोड़ दिया । 'महजूर' की प्रसिद्ध रचनाओं 'पोशी भति जानानो' (फूलों के भतवाले साजन), एवं 'ग्रीस कूर' (किसान बाला) के अंग्रेज़ी अनुवाद जब 'विश्व भारती' पत्रिका में प्रकाशित हुए तो गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने मुक्त कंठ से 'महजूर' की प्रशंसा की ।[1] इधर देश व्यापी स्वतन्त्रता आन्दोलन ने 'महजूर' की कविता को नये आयाम प्रदान किये और श्रृंगारिक कवि 'महजूर' देश-प्यार के नग़मे गाता हुआ तथा विद्रोह एवं विप्लव की चिंगारियाँ सुलगाता हुआ शोषित और अपमानित देश-वासियों को मरण-त्यौहार में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित करने लगे । फलतः कश्मीरी काव्य के मिज़ाज में इस बदलाव की प्रथम सूचना हमें 'महजूर' की रचनाओं के द्वारा प्राप्त होती है । स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् राजनीति के दाँव-पेच एवं कुचक्रों को देख कर वे खिन्न हो उठे थे । नौकरी से अवकाश ग्रहण करने के बाद अपने गाँव मिश्रिगाम में रहने लगे । जीवन के अन्तिम दो वर्षों में काफ़ी अस्वस्थ रहे । 8 अप्रेल सन् 1952 को प्रातः 'महजूर' पुलवामा अपनी पेंशन लेने गए थे । सायम् वहाँ से लौटते समय

1- अ/ "कश्मीरी भाषा और काव्य" - आज़ाद - तृतीय भाग-पृ0-208
आ/ "साहित्यानुशीलन" - शिवदान सिंह चौहान - पृ0- 114.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

वे तनिक कमज़ोरी महसूस करने लगे । कुछ मित्रों ने साथ दे कर मित्रिगाम पहुँचाया । देखते ही देखते उनकी ज़बान बन्द हो गई और 9 अप्रैल 1952 प्रातः वे स्वर्ग सिधारे । कश्मीरी काव्य का मधुर भाषी पोश्तून देखते ही देखते सदा के लिये खामोश हो गया । स्वर्गीय मास्टर ज़िन्द कौल, स्वर्गीय दीनानाथ नादिम एवं श्री अमीन कामिल ने उनके प्रति श्रद्धांजलि के सुमन अर्पित करते हुए शोकगीत लिखे जिन में महजूर के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा के ऐतिहासिक महत्त्व को भी रेखांकित किया गया है ।[1]

'महजूर' का सम्पूर्ण जीवन एक योद्धा का जीवन था । वे राजनीतिक परतन्त्रता, धार्मिक संकीर्णता, आर्थिक लूट एवं साहित्यिक रूढ़ियों के विरुद्ध निरन्तर संघर्ष रत रहे । ग्रामीण जीवन को उन्होंने बहुत क़रीब से देखा था । उस लुटते - पिटते जीवन से ही उन्हें सर्जन की प्रेरणा मिली । लाचार और विवश ग्राम वासियों के साथ वर्षों रह कर महजूर को न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म, आदर्श - यथार्थ तथा मानव जीवन के सियाह-सफ़ेद की सही पहचान प्राप्त हुई थी ।

'महजूर' बड़े ही विनोद प्रिय[2] निर्भीक एवं साहसी थे । परम्परा के प्रति अपने वैयक्तिक जीवन में उन्होंने जो विद्रोह व्यक्त

1- "तामीर" - महजूर अंक - देखिये 'महजूर के प्रति श्रद्धांजलियाँ'

2- "He was both humorous and witty in his conversation among friends. Of course, he was a man who could be called one with a sense of humour."

Excerpts of the interview with Dr. Padam Nath Ganjoo dated 28.5.1965.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

किया । वह उनके निर्भीक एवं साहसी होने का ज्वलन्त प्रमाण है । महजूर को संगीत के प्रति बेहद लगाव था । गुलाम मुहम्मद भट्ट उर्फ़ महमूद डाहरी के कंठ-माधुर्य से 'महजूर' की रचनाएँ गाँव-डाहर हर जगह लोकप्रिय हो गई । लोक संगीत एवं लोक धुनों के प्रति महजूर आकृष्ट थे । यह वह समय था जब कश्मीर में अल्प-ज्ञानी जन अपनी ही मातृ-भाषा को हेय दृष्टि से देखते थे और कश्मीरी भाषा [?] दासता की ज़ंजीरों में जकड़ी हुई अविकसित अवस्था में केवल बोलीगत-व्यवहार तक ही सीमित थी । न रेड़ियो स्टेशन था और न दैनिक समाचार-पत्रों की समुचित व्यवस्था । महजूर ने जन-जन तक अपनी बात पहुँचाने के लिये महमूद डाहरी के मधुर-कंठ की प्रत्येक स्वर तंत्री को छेड़ा फलतः काव्य और संगीत के मधुर मिश्रण से ज़िन्दगी की वीरानियों में नव-बसन्त मुसकराने लगा ।

'महजूर' अत्यन्त सरल प्रकृति के जीव थे । कृत्रिम हाव-भाव से उन्हें घृणा थी, दिखावे की दुनिया से वे कोसों दूर रहते थे और अन्याय को कदापि सहन नहीं कर पाते । स्पष्ट वक्ता थे और सच्ची बात कहने से कभी डरते न थे । निर्द्वन्द्व व्यक्तित्व की इस गरिमा के सम्मुख 'आज़ाद' जैसे उच्च कोटि के क्रान्तिकारी कवि के व्यक्तित्व को उभरने का अवसर ही नहीं मिला ।[1]

1- "तामीर" - 'महजूर' विशेषांक - 'महजूर की कविता और व्यक्तित्व' - अमीन कामिल - पृ0- 96.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

महजूर की प्रतिभा बहुमुखी थी । वे एक लोकप्रिय कवि ही नहीं थे, एक सफल गद्य लेखक भी थे । आरम्भ में उन्होंने फ़ारसी और उर्दू में कविताएँ लिखीं जो आज तक कहीं पुस्तकाकार में प्रकाशित नहीं हुई हैं । श्री निवास लाहोटी महजूर की फ़ारसी में लिखित कविताओं की संख्या सत्तर के आस-पास मानते हैं ।[1] 'महजूर' ने अपनी कश्मीरी कविताओं को तीन शीर्षकों के अन्तर्गत प्रकाशित कराया । (1) कलाम-ए-महजूर, (2) पयाम-ए-महजूर, (3) सलाम-ए-महजूर । सन् 1924 से सन् 1950-51 तक वे नियमित रूप से कश्मीरी भाषा में लिखते रहे । 'कलाम-ए-महजूर' शीर्षक के अन्तर्गत उन्होंने ग्यारह पुस्तिकाएँ प्रकाशित की जिनमें मुख्यत: श्रृंगार-परक रचनाएँ (ग़ज़लों के रूप में) देखने को मिलती हैं । 'पयाम-ए-महजूर' शीर्षक के अन्तर्गत उन्होंने छ: पुस्तिकाएँ प्रकाशित करवाईं जिनमें देश-प्रेम सम्बन्धी गीत, राष्ट्रीय गीत, क्रान्तिकारी गीत एवं गुल और बुलबुल से सम्बन्धित सांकेतिक गीत उल्लेखनीय हैं । 'सलाम-ए-महजूर' का केवल एक ही भाग सन् 1948 ई० में प्रकाशित हुआ । इसमें भक्ति-परक एवं आध्यात्मिक रचनाएँ शामिल हैं । 'महजूर' के कृतित्व का पर्याप्त अंश आज तक अप्रकाशित रहा है । कवि होने के साथ-साथ वे साहित्य के इतिहास-लेखक भी थे । 'तज़किरे-शोराए-कश्मीर' उनकी एक अप्रकाशित रचना है जिसमें उन्होंने

1- "तामीर" - 'महजूर' विशेषांक - 'कश्मीरी भाषा का राष्ट्रीय कवि' - श्रीनिवास लाहोटी - पृ०- 18.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कश्मीर के फ़ारसी कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सम्बन्धित प्रामाणिक सामग्री प्रस्तुत की है । 'महजूर' के सुपुत्र स्वर्गीय मुहम्मद अमीन के कथनानुसार यह उर्दू में लिखित अपूर्ण इतिहास ग्रन्थ लगभग तीन सौ पृष्ठों पर लिखा गया है और कश्मीरी फ़ारसी काव्य के आठ सौ वर्षों के इतिहास पर आधारित है । डॉ० सर मुहम्मद इक़बाल ने भी इसके कई अंश देखे थे ।[1] सामग्री संकलन के हेतु 'महजूर' को काफ़ी परिश्रम करना पड़ा । कई बार घाटी के विभिन्न इलाकों में जाकर वे रचनाओं की खोज-बीन करते रहे, विद्वज्जन से मिल कर और विचार विमर्श करके उन्होंने इस रचना को लिखना आरम्भ किया था ।

यह है महजूर का एक रिसर्च (अनुसंधित्सु) और साहित्य के इतिहास लेखक का व्यक्तित्व ।

'महजूर' ने 'सफ़रनामा लद्दाख' उर्दू भाषा में लिखा है । वे लेखपाल के रूप में दो वर्ष लद्दाख में रहे । यह वह समय था जब श्रीनगर से लद्दाख तक की यात्रा लगभग तीन सप्ताह में तय की जाती थी । श्रीनगर से लद्दाख की यात्रा, वहाँ दो वर्षों का वास और तत्पश्चात् वापसी की यात्रा पर आधारित 'सफ़रनामा लद्दाख' महजूर का एक उत्कृष्ट यात्रा-रपट है । 'सवानिहे हब्बाख़ातून' शीर्षक से महजूर ने एक जीवनी ग्रन्थ भी उर्दू भाषा में लिखा है ।

1- 26 मई 1965 ई० को श्री मुहम्मद अमीन से प्रत्यक्ष भेंट द्वारा ज्ञात ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

'महजूर' ने 'अज़ोज़' शीर्षक से एक उपन्यास भी लिखा है। यह रचना अपूर्ण है और सन् 1984 के 'शीराज़ा' - महजूर विशेषांक में संगृहीत है। 'महजूर' ने उर्दू भाषा में एक नाटक भी लिखा है। इस नाट्य रचना का शीर्षक है - 'आर्यिन इतिहादि कश्मीर'। नाटक का कथानक कश्मीर के इतिहास से सम्बन्धित है। पठानों के क्रूर शासन के विरुद्ध कश्मीर वासियों का संगठित विद्रोह और आक्रोश का स्वर इस रचना में पुनः गूँज उठा है। यह रचना भी अप्रकाशित है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में 'महजूर' ने ऐतिहासिक भूमिका निबाही है। सन् 1940 ई में स्वर्गीय अबुल कलाम आज़ाद की कश्मीर यात्रा के साथ ही 'महजूर' के सम्पादकत्व में साप्ताहिक पत्रिका 'शाहिद' का प्रकाशन आरम्भ हुआ।[1] तीन वर्ष तक यह पत्रिका छपती रही लेकिन द्वितीय महायुद्ध के दौरान काग़ज़ की कमी के कारण इसका प्रकाशन बन्द हो गया। कश्मीरी भाषा में प्रकाशित प्रथम पत्रिका के सम्पादक के रूप में 'महजूर' ने ऐतिहासिक भूमिका निबाही है। 'महजूर' को हस्तलिखित दस्तावेज़, अलभ्य पुस्तकें, सिक्के, कलाकृतियाँ, नायाब चित्र एवं महान साहित्यिक विभूतियों के हस्ताक्षर एकत्र करने का भी ज़बरदस्त शौक़ था। इस दृष्टि से उनके निजी पुस्तकालय

1- 26 मई 1965 ई० को श्री मुहम्मद अमीन से प्रत्यक्ष भेंट द्वारा ज्ञात।
"इस पत्रिका की कुछ प्रतियाँ जम्मू कश्मीर सरकार के 'अनुसन्धान - पुस्तकालय' श्रीनगर में सुरक्षित हैं।"
- लेखक -

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

का अपना विशेष महत्व है । उन्होंने कई रचनाओं की पाण्डुलिपियाँ भी एकत्र की थीं । संस्कृत भाषा में लिखी हुई कुछ ऐसी पुस्तकें भी उनके पास थीं जो आज अन्यत्र उपलब्ध नहीं ।[1] भोज-पत्रों पर लिखी हुई कुछ पाण्डुलिपियाँ भी उन्होंने एकत्र की थीं । तीन सौ से अधिक प्राचीन सिक्के भी उन्होंने एकत्र किये थे जो भिन्न-भिन्न युगों में कश्मीर में विधि ग्राह्य मुद्रा के रूप में प्रचलित थे । इतना ही नहीं, कुछ महान साहित्यकारों के हस्ताक्षर भी उनके पास सुरक्षित थे जिन में महमूद गामी और मकबूलशाह क्रालवारी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं । फ़ारसी भाषा में कुछ हस्तलिखित पुस्तकें भी उन्होंने एकत्र की थीं जो आज उत्तर भारत में कहीं नहीं पाई जाती हैं । 14वीं - 15वीं शताब्दी के फ़ारसी नुस्ख़े भी उनके पास मौजूद थे ।[2]

महजूर के देहान्त के पश्चात भी कुछ बहुमूल्य शोध-सामग्री उनके वारिसों के ताले में बन्द रही । स्वर्गीय मुहम्मद अमीन[3] अपने जीवनकाल

1- 9वीं शताब्दी ई0 में कश्मीर में संस्कृत के एक प्रसिद्ध विद्वान श्री उत्पल देव हुए हैं । उन्होंने स्वयं अपनी कई पुस्तकों की टीकाएँ लिखी हैं जिन में एक टीका ग्रन्थ केवल 'महजूर' के पुस्तकालय में सुरक्षित है । ऐसा श्री अमीन का कथन है । उत्पल देव ने 'ईश्वर प्रत्यभिज्ञा' नामक प्रसिद्ध शैव-ग्रन्थ की रचना की है ।
3। मई सन् 1965 ई0 को श्री मुहम्मद अमीन से प्रत्यक्ष भेंट द्वारा ज्ञात ।

2- 3। मई 1965 ई0 को श्री मुहम्मद अमीन से प्रत्यक्ष भेंट द्वारा ज्ञात ।

3- फरवरी सन् 1980 ई0 में श्री मुहम्मद अमीन का अकस्मात् देहान्त हुआ ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

में इस विषय में कोई अन्तिम निर्णय न कर सके । आशा है इस बहु-मूल्य सामग्री को विद्वानों के सम्मुख लाने में 'महजूर' के समझदार और पढ़े-लिखे पोते हठ-धर्मिता छोड़ कर पूरा सहयोग प्रदान करेंगे ।

महजूर की प्रतिभा बहुमुखी थी । वे केवल एक शाइर ही नहीं थे अपितु एक परिश्रमी अनुसंधित्सु, सजग इतिहास-लेखक, प्रयोग धर्मी सम्पादक, संग्रह-कर्ता और सशक्त गद्य लेखक भी थे । उनकी ऐतिहासिक चेतना और सूझ-बूझ अद्भुत थी । उन्होंने अपनी अधिकांश गद्य रचनाएँ उर्दू में लिखी हैं लेकिन किराये के मकान में रंग रोग़न चढ़ाने में उन्हें विशेष रुचि नहीं थी । समय के हर बदलते मोड़ पर दृढ़ संकल्प के साथ वे नवीन दिशाओं को तलाशने के हेतु अग्रसर हुए । यह सत्य है कि वे एक नहीं, बल्कि अनेक सीमाओं में बन्धे हुए थे लेकिन संकल्प की दृढ़ता और युगानुकूल जीने की चाह ने 'महजूर' को नवयुग का सन्देशवाहक बना दिया ।

स्वर्गीय गुलाम अहमद 'महजूर' के कश्मीरी काव्य का प्रथम आकर्षण है - श्रृंगार-वर्णन यानी महजूर की इश्क़िया शाइरी । रूप और सौन्दर्य ने 'महजूर' को सर्वप्रथम अपनी ओर आकर्षित किया । रसूल मीर[1] का श्रृंगारिक काव्य उनका मूल प्रेरणा-स्रोत रहा है ।[2]

1- 19वीं शताब्दी के प्रसिद्ध कश्मीरी श्रृंगारिक कवि । इनका निधन सन् 1870 ई० में हुआ है । जन्मतिथि अज्ञात है ।

2- 'Rasul Mir has inspired many a modern poets by his ideas and thoughts. Even Mahjoor the great national poet of modern Kashmir acknowledges that the inspiration of his poetry came from Rasul Mir.'

-"Struggle for Freedom in Kashmir" -P.N. Bazar, page-288.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

हाँ, आरम्भ में हब्बाख़ातून[1] के विरह दग्ध विलाप से भी उनके हृदय तार झनझना उठे थे। 'महजूर' के सम्पूर्ण श्रृंगार काव्य का अध्ययन करने के बाद कई महत्त्वपूर्ण तथ्य हमारे सामने आते हैं।

यहाँ लौकिक में अलौकिक तत्त्व का मेल नहीं, भौतिक में आध्यात्मिक का आभास नहीं अपितु विशुद्ध रूप से मानवीय धरातल पर आकर्षण के डोर दो प्यासे मतवाले प्रेमी जनों को रेशमी बन्धन में बान्ध देते हैं। यहाँ न तो नोशालब[2] के चमत्कारिक क़िस्से को कोई उपयोगिता है और न गुलदख़परी[3] को पाने हेतु किसी परीनोश[4] की ज़रूरत है। यहाँ दमयन्ती[5] को

1- हब्बाख़ातून (1553-1605 ई०) - 16वीं शताब्दी में कश्मीर में वुयन गोतों की प्रसिद्ध कवयित्री।

2- कश्मीरी कवि मक़बूल शाह क्रालकारी (1820-1875 ई०) की प्रसिद्ध इश्क़िया मस्नवी 'गुलरेज़' की नायिका।

3- लक्ष्मण जू रैणा 'बुलबुल' (1826-1898 ई०) एवं अमीर शाह क्रोरी (1838-1899 ई०) कृत रज़्मिया मस्नवी 'सामनाम्' की नायिका।

4- रज़्मिया मस्नवी 'सामनाम्' की नायिका गुलदख़परी तक साम पहलवान का प्रेम सन्देश पहुँचाने वाली सुन्दरी।

5- 'बुलबुल' की दूसरी अप्रकाशित प्रबन्ध-रचना (खण्ड काव्य) 'नल-दमयन्ती' की नायिका। यह कथा एक पौराणिक आख्यान पर आधारित है। नल के प्रेमाकर्षण का समाचार दमयन्ती तक स्वर्ण पक्षी ने ही पहुँचाया। बुलबुल ने इस पौराणिक कथा को इश्क़िया मस्नवी का रूप प्रदान किया।

- लेखक

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सोन चिरैया भी अपना महत्व खो देती है । 'महजूर' ने लोक-मानस में उतर कर प्रेमाकर्षण को जीवन की एक अपरिहार्य (indispensable) आवश्यकता के रूप में स्वीकृति प्रदान की । बस, प्रेम आम आदमी के साथ जुड़ गया इस लिये कि़स्से कहानियों के मोह-पाश से बाहर निकल कर आम आदमी की अनुभूतियों एवं संवेदनाओं को 'महजूर' ने शब्दों का परिधान पहना कर प्रस्तुत किया । इस प्यार में संयोग भी है और वियोग भी । जहाँ मिलन के क्षणों में 'महजूर' अपने काव्य नायक और नायिका को स्थानीय प्राकृतिक परिवेश के भीतर नाना स्थलों पर अभिसार के क्षणों का आनन्द भोगते दिखाता है वहाँ वियोग की दग्धावस्था का चित्रण करते समय कवि अश्रु कणों का मूल्य चुका कर ज़िन्दगी की खोयी हुई सम्पदा को पुनः प्राप्त करने के हेतु साधना रत भी दिखाई देता है । 'महजूर' के प्रेम पात्र इस धरती पर रहने वाले सर्व साधारण जीव हैं जो प्रेम को अपनी विकसा ज़िन्दगी का सब से मूल्यवान उपहार समझ कर स्वीकारते हैं ।[1]

अभिव्यक्ति की सादगी, सरलता एवं सचाई इस प्रेम काव्य की एक अन्य विशेषता है । कवि ने अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा के आधार पर अत्यन्त स्वाभाविक रूप से प्रेमी जनों की नाना मनःस्थितियों का

1.- "'महजूर' के प्रेमी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह एक मनुष्य है, वह हमारे अन्य अनेक कवियों की भाँति अज्ञात प्रेमी की कल्पना नहीं करता । उसने रसूलमीर की भाँति एक चलते फिरते इंसान की चर्चा की है ।"

"तामीर" - 'महजूर' विशेषांक - 'महजूर का तस्सवुरि महबूब' - मुज़फ्फर आरिफ़ - पृ० - 39.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

चित्रात्मक अंकन किया है । श्रृंगार वर्णन में संयोग और वियोग चित्रण के अतिरिक्त कवि ने कई अन्य पद्धतियों को भी अपनाया है जिनमें उल्लेखनीय है - सखि वर्णन, स्मृति चित्रण, व्यंग्य एवं उपालम्भ, आशा-प्रतीक्षा एवं विनति, संकेतात्मक/प्रतीकात्मक वर्णन तथा स्थानीय परिवेश के आधार पर चित्रित प्रेमाकर्षण के नाना रंगों के चित्रण की पद्धति ।

'महजूर' के श्रृंगार काव्य की एक और विशेषता यह है कि कभी इसमें नायिका आश्रय होती है और नायिका आलम्बन । अतः यहाँ आश्रिक नायक भी है और नायिका भी फलतः 'महबूब' का तसव्वुर केवल नायक तक ही सीमित नहीं रहता ।

विरह की तड़प, जुदाई का ग़म, प्रिय की निष्ठुरता, सखियों के व्यंग्य एवं उलाहने, इन्तिज़ार की निरन्तर सज़ा देने वाली स्थिति और तिस पर निर्दयी मौसम के अत्याचार - कवि इन समस्त नाज़ुक स्थितियों से परिचित थे फलतः उनकी काव्य नायिका विरह-वेदना के पारावार में हिचकोले खाते हुए दिखाई देती है । प्रवास का कवि ने विशेष रूप से विशद् वर्णन किया है क्योंकि विप्रलम्भ श्रृंगार चित्रण तो इसी पर आधृत रहता है । नायक परदेस में बैठा है और नायिका 'गुल' और 'बुलबुल' के सहारे अपने यार को पाने का सफल/निष्फल प्रयास करती है । इतना ही नहीं अपने प्रेम-पंचांग के साथ ज्योतिषी

↑ और नायक आलम्बन और कभी नायक आश्रय होता

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

के द्वारा पर फ़रियाद लेकर भी पहुँचती है :-

-'भाग्य के पंचाङ्ग में
निकलवाई शुभ तिथि
मिलन कब होगा ?
मेरा, उसके संग ।
ज्योतिषी से चूक हुई, और
खो गया गणना का क्रम ।
जाने किस ने ?
रूठ कर दिया
फूलों के मतवाले साजन को ।'[1]

'महजूर' ने प्यार को व्यवहार की वस्तु नहीं माना । उनके काव्य में व्यथा और वेदना का आधिक्य है । उन्होंने पीड़ा को जीवन की उपलब्धि के रूप में स्वीकारा है । यहाँ सन्देश भेजने के लिये पत्र-व्यवहार भी हुआ है और कभी कभी स्वाभाविक खोज में नायक को लोभी भ्रमर की उपाधि भी प्राप्त हुई है । वेदना की विवृत्ति में काव्य उक्तियाँ व्यंजना पूर्ण बन जाती हैं । लोक-कथाओं से प्रेरित प्रभावित होकर 'महजूर' अपने शृंगार काव्य में कहीं बोम्बुर - यम्बरज़ल (भौंरा-नरगिस)[2] की बात छेड़ देता है और कहीं 'हीमाल - नागराय'[3]

1- " लारिन न्यछिपतरे साथ वुछनोवुम
कर सना म्य त तस गछि मिलज़ार
बुल ग्व ज्योतिशिस हिसाब रोवुम
कांम रोशानोवुम पोशि मोत यार ।'
- -कलाम-ए-महजूर' - न0-7 - महजूर - ग़ज़ल - 38.

2- 'बोम्बुर' - (भौंरा) - कश्मीरी लोक साहित्य का एक विशेष पात्र, आशिक़ का प्रतीक ।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Koul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

को । कहीं 'आखल'[1] पुष्प में उन्हें प्रियतमा का पर्याय दिखाई देता है और कहीं पतंगे को अग्नि परीक्षा से जीवन की सार्थकता का सन्देश प्राप्त होता है । वियोगावस्था में विरहिणी आरम्भ से ले कर अन्त तक अपनी सखी के सम्मुख कभी विलाप करती है, कभी उस निर्मोही की निर्दयता का रोना रोती है और कभी अपने भाग्य को कोसती है । 'महजूर' ने विप्रलम्भ श्रृंगार-वर्णन में सखि का प्रसंग कई बार उठाया है बल्कि यह कहना उचित होगा कि बार-बार उठाया है । विरहिणी विवश हो कर अपनी सखी के सम्मुख प्रिय की निष्ठुरता का रोना रोती है और इस प्रकार उनकी हृदय स्थित वेदना मुखर हो उठती है । उसके

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

यम्बिरज़ल - §नरगिस§ - कश्मीरी लोक साहित्य का एक विशेष पात्र, माशूक :§महबूब:§ का वाचक ।

सन् 1953 ई0 में पंडित दीनानाथ कौल 'नादिम' ने 'बोम्बुर-यम्बिरज़ल' शीर्षक से कश्मीरी में प्रसिद्ध गीति-नाट्य लिखा है ।

2- नांगराय - एक कश्मीरी लोक-कथा का नायक जो हीमाल का प्रेमी था । मूल शब्द - नागराजा - §संस्कृत §

हीमाल - एक कश्मीरी लोक-कथा की नायिका ।

'हीमाल और नांगराय की प्रेम-कथा के आधार पर स्वर्गीय वली उल्लाह मत्तू §निधन 1858-60 ई0, जन्म तिथि अज्ञात§ ने 'हीमाल नांगराय' शीर्षक से प्रसिद्ध इश्क़िया मस्नवी लिखी है । इसी लोक-कथा के आधार पर पंडित दीनानाथ कौल 'नादिम' ने श्री नूर मुहम्मद रोशन के साथ मिल कर 'हीमाल नांगराय' गीति-नाट्य की रचना की है ।' - लेखक -

1- 'आखल' एक प्रकार का गुलाब है । इस फूल में पंखुड़ियाँ अधिक नहीं होती हैं पर यह फूल बहुत ही आकर्षक और सुगन्धित होता है । इस की बेल §लता§ कश्मीर के जंगलों में पाई जाती है । इसमें बड़े-बड़े नोकदार काँटे होते हैं । इस फूल की एक विशेषता यह भी है कि हर समय काँपता हुआ प्रतीत होता है ।'

- कश्मीरी ज़बान और शाइरी' -भाग-3 - आज़ाद - पृ0- 234.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

लिये तो यह अग्नि परीक्षा के क्षण हैं । 'महजूर' ने श्रृंगार-वर्णन के हेतु प्रकृति से अनेक प्रतीक ग्रहण किये हैं । बुलबुल उनके काव्य में दो रूपों में उपस्थित हुआ है - सौन्दर्य प्रेमी बुलबुल एवं क्रान्ति का सन्देश-वाहक बुलबुल[1] । पौष और माघ मास वियोगावधि के द्योतक हैं और बसन्त संयोग का सन्देश-वाहक । प्रकृति के प्रतीकों का चयन करने में 'महजूर' को सूक्ष्म पर्यवेक्षण-शक्ति पर्याप्त सहायक सिद्ध हुई है ।

'महजूर' के प्रेम-काव्य की एक और विशेषता यह है कि वह अपने काव्य-नायक और नायिका को कश्मीर के चप्पे चप्पे में घुमाता है । उनका काव्य-नायक तो सैलानी प्रिय है । प्रेम के रंग को गहराने के हेतु उन्होंने यूसमर्ग, नोलनाग, अहरबल, निशात, परीमहल, शालिमार, तेलबल, नसीमबाग, गुपकार, मानसबल, आरिगाम, अच्छबल आदि कश्मीर के दर्शनीय स्थलों के आकर्षक छवि-चित्र प्रस्तुत किये हैं । इतना ही नहीं चिनारों की घनी छाँव में बैठ कर साजन से बतियाने का संकल्प, डूँगे (डोंगा) में बैठ कर डल झील की सैर कराने का वादा[2] तथा मखमली घास की हरित क़ालीन पर बैठ कर आबशारों के रूप रंग को देखने दिखाने की तमन्ना भी विरहिणी को अधीर बना देती है ।

※

1- 'बुलबुल' - अरबी - (स्त्री०) - एक गाने वाली चिड़िया
बुलबुल - कश्मीरी - (पुं०) - कश्मीरी→बिलबिचुर - काले वाला एक मधुर भाषी पक्षी ।

2- 'वाइदा' - (अरबी)

※ यही स्थानीय रंग महजूर के श्रृंगार काव्य का असली श्रृंगार है। कश्मीर की भौगोलिक स्थिति की सही जानकारी के बिना इन रचनाओं को समझना अथवा इन से आनन्द प्राप्त करना सम्भव नहीं ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रेम-काव्य में व्यंग्योक्तियों एवं उलाहनों का महत्व निर्विवाद है। स्पष्ट न कह कर हल्का संकेत ही कभी कभी ग़ज़ब की कैफ़ीयत पैदा करता है। व्यंग्य वचन नश्तर के समान हृदय को चीर कर विह्वल कर देते हैं। नायिका सच्चे मन से साजन को प्रेम-डोर में बान्ध लेना चाहती है परन्तु यह सुन कर कि वह पर-नायिका विहार में आनन्द-मग्न है - हृदय मसोस के रह जाती है। ऐसी स्थिति में सहन शक्ति के बान्ध टूट कर रह जाते हैं और नायिका उलाहना देते हुए कहती है कि :-

-'मेरा घर बरबाद हुआ, आबाद रहे घर तेरा।'[1]

बस इस उक्ति में ही सब कुछ समाहित है और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। कभी-कभी नायक का उपेक्षामय व्यवहार नायिका के गर्व को चूर चूर कर देता है, फलतः सहज, सरल रसमय अनुभूति में क्रोध एवं आक्रोश का उबाल आ जाता है। 'महजूर' का स्वर मूलतः आशावादी रहा है। आशा के बल पर ही उनकी काव्य नायिका का प्रतीक्षा करती है और प्रतीक्षा की लम्बी अवधि में ही विनति करने का अवसर आ जाता है। विनति के प्रसंग में कवि का भावुक हृदय वियोगिनी का साथ दे रहा है। उसके पास यह अन्तिम साधन है जिस के सहारे वह रुष्ट बालम को मनाने का जतन करती है। कई मौलिक उद्भावनाओं के द्वारा कवि ने इस प्रसंग को विरहिणी के हृदय की मर्मान्तक पीड़ा

1- 'खा्नि म्योन बरबाद ग्व आबाद आ्सिन खा्नि चोन।'
"कलाम-ए-महजूर"-9 - 'महजूर' - ग़ज़ल - 61

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

का रस (विष) घोल कर प्रस्तुत किया है ।

'महजूर' ने प्रेम-प्रसंग को अपनी रचनात्मक प्रतिभा एवं उर्वर कल्पना शक्ति के द्वारा मानव मन की सहज संवेदनाओं के साथ जोड़ कर कहीं मधु-मिश्रित रूप में प्रस्तुत किया है और कहीं बहते अश्रुकणों के पीड़ामय माहौल में उबारा है । 'महजूर' के काव्यनायक की सब से बड़ी विशेषता यह है कि वह मनुष्य है सर्वसाधारण मनुष्य जो इसी धरती पर रहता है । 'महजूर' ने इश्क़ को राजमहलों तथा परी अप्सराओं के स्वर्ण पाश से मुक्त करके सामान्य मनुष्य तथा उसके सुख-दुःख मिश्रित जीवन के साथ जोड़ दिया ।

'ग्रीस कूर' (किसान बाला) 'महजूर' की एक उल्लेखनीय रचना है जिस में सामान्य कृषक बाला के स्वेदकणों में उसे जीवन की सार्थकता प्रतिबिम्बित दिखाई देती है । प्रकृति के स्वछन्द वातावरण में पलने वाली किसान-कन्या के अंग-अंग में उन्हें सहज स्वाभाविक सौन्दर्य के दर्शन होते हैं । श्रम-साध्य जीवन की गति ने उसके रूप लावण्य में अद्भुत आकर्षण उत्पन्न किया है ।[1] इस सौन्दर्य में पहाड़ी झरने की रवानी है, किसी पोखर या तालाब का ठहराव नहीं । प्रकृति सुन्दरी के रूप में कृषक - बाला कवि को मोह लेती है और

1- "'ग्रीस कूर' (किसान बाला) में उसने रोमांस के रस से ओत-प्रोत शैली में कर्मठ किसान कन्या की सहज मधुरता के गतिचित्र प्रस्तुत किए हैं ।"
-"कश्मीरी भाषा और साहित्य" - पृथ्वीनाथ 'पुष्प'
बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना-3 - पृ0- 20.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अनायास स्वप्न लोक की परी का भ्रम उसके सम्मुख खण्ड-खण्ड हो कर बिखर जाता है । जीवन जीने में ही सौन्दर्य है । इसी लिए ग्रामीण वातावरण में पलने वाली छुई मुई का अकृत्रिम सौन्दर्य मोह लेता है । वस्तुत: यही कृषक बाला 'महजूर' की काव्य नायिका है ।[1]

'महजूर' ने जहाँ खुल कर श्रृंगार का चित्रण किया है वहाँ बकौले आदर्श-प्रेमियों के वे सीमा का उल्लंघन कर गये । देखना यह है कि आदर्शवादियों के ज़िहन की सीमा कहाँ है, क्या है और किस के लिए है । वे जिस सामाजिक स्वास्थ्य की बात करते हैं वह दरअसल उनके निजी अस्वस्थ मानस का चीत्कार है । 'महजूर' का प्रेम वासना की कोचड़ से लथपथ नहीं यद्यपि वासना भी अपने स्वस्थ रूप में जीवन की एक अपरिहार्य आवश्यकता है । वस्तुत: जहाँ साहस का अभाव होता है वहीं शालीनता का ढोल पिटता है । शुक्र है कि 'महजूर' के श्रृंगार काव्य के सन्दर्भ में यह ढम-ढमी ढोल ज़्यादा नहीं पिटा है । प्रेम के प्रति 'महजूर' का दृष्टिकोण स्वस्थ, परिमार्जित एवं लौकिक है । यहाँ जीवन की मधुर लय है, अनुभूति की गहराई है, विह्वल हृदय की तड़प है और सब से बड़ कर है - सर्वत्र व्याप्त पीड़ा का साम्राज्य ।

1.- ' यह गीत लिख कर वास्तव में 'महजूर' ने कश्मीरी साहित्य में एक नवीन सुर अलापा था । श्रृंगार रस से ओत प्रेत इस रचना में उन्होंने गाँव के स्वच्छन्द वातावरण में पलने वाली परिश्रमी ग्रामीण बालिका के अकृत्रिम सौन्दर्य का जो सजीव चित्र खींचा है वह बहुत ही हृदयाकर्षक है ।'
- "महजूर" - पृथ्वीनाथ 'पुष्प' - कल्चरल अकादमी प्रकाशन-पृ०-15.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जीवित रहने से अधिक अपने को मिटा देने का आदर्श उन्हें प्रिय है ।

इसमें सन्देह नहीं कि 'महजूर' के श्रृंगार-वर्णन की अपनी सीमाएँ हैं । यहाँ न तो हब्बाख़ातून का अद्भुत जीवन सत्य व्यथा को मद्धम/मद्धिम आँच से पिघल उठा है और न अरणिमाल[1] का निजी विरह दग्ध जीवन समय के फेर में पड़ कर हिचकोले खाता हुआ दिखाई देता है । यहाँ रसूल मीर के श्रृंगार का गहरा शोख़ रंग भी नहीं है और न वह तस्वीर कशी जो कुंगी[2] की जुदाई में आशिक़ के हृदय पटल पर परत-दर-परत उत्कीर्ण होती है । 20वीं शताब्दी तक कश्मीरी काव्य जगत में श्रृंगार को देशी-विदेशी चित्र फलक पर नाना रूप से अंकित किया गया । प्रबन्ध रचनाओं में वर्णित प्रेम कथाओं में श्रृंगार ने आकाश-कुसुम का रूप धारण किया था लेकिन मुक्तक रचनाओं में विशेष कर ग़ज़ल के माध्यम से फ़ारसी का पर्याप्त प्रभाव ग्रहण करते हुए भी श्रृंगारिक कवियों ने सुन्दर मौलिक उद्भावनाएँ की हैं । 'महजूर' ने 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में

1- 'अरणिमाल' - (निधन 1800 ई०) - 18वीं शताब्दी ई० के उत्तरार्द्ध में विरह प्रधान प्रेम-गीतों की प्रसिद्ध कश्मीरी कवयित्री । निश्चित जन्म तिथि एवं निधन काल के विषय में मत-भेद है ।'
- लेखक -

2- 'कुंगी' - श्रृंगारिक कवि रसूलमीर की काव्य नायिका । कहा जाता है कि रसूल मीर अपने गाँव (शाहाबाद - डूरू में सिंहपोरा गाँव) में एक सुन्दरी कोंग/कुंगी से बेहद प्यार करते थे । लेकिन उसे पाने में उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हुई । फलत: घायल हृदय की समस्त वेदना उनके ग़ज़लों में मुखर हो उठी । रसूल मीर अधिक समय तक इस वियोग को सहन नहीं कर पाये ।
- लेखक -

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

रसूल मीर की परम्परा को कहाँ तक परिपुष्ट किया - यह एक विचारणीय प्रश्न है लेकिन इस में सन्देह नहीं कि प्रेमानुभूति को सामान्य जन-मानस के साथ जोड़ने में तथा श्रृंगार को लोकाधार प्रदान करने में 'महजूर' ने ऐतिहासिक भूमिका निबाही है ।

'महजूर' के समस्त श्रृंगार काव्य से उद्धृत चन्द छवि-चित्र :-

1: प्रेम के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कवि के निजी विश्वास की अभिव्यक्ति :

-' भीषण अंधड़ के कारण
नैया विवश रुकी पड़ी है
भवसागर के इस पार,
इन तूफ़ानी लहरों में
नैया को पार उतारे गा
विश्वस्त मुहब्बत ।
आज प्रेम-दीप्ति से
प्रज्वलित है
सम्पूर्ण सृष्टि,
बिजली से
कहीं अधिक तीव्र है
मुहब्बत की रफ़्तार ।'[1]

1- ' यपारि भवसरि तारि गामिव वाव वुछित नाव
तूफ़ानि भंज़ अथ नावि अपोर तारि मुहब्बत
प्रज़लोव लोलन सोर आलम पनिनी परतव सूत्थि
वुज़मलि हन्दि खोति तेज़ छुई रफ़्तार मुहब्बत ।'
- "कलाम-ए-महजूर" न0-8 - महजूर - ग़ज़ल - 51.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

यही कारण है कि मुहब्बत के प्रति अपना दृढ़ विश्वास व्यक्त करते हुए कवि कहता है :-

-'बहुत बड़ा देखा मैं ने
उन्नत, गौरवमय
दरबार, मुहब्बत का ।'[1]

2: निष्ठुर मदन (कामदेव, प्रिय) के सम्मुख विवश प्रियतमा का नम्र निवेदन :-

-'कामदेव ! ठहर तनिक
सुन मेरे वचन विनीत
प्रेम रोग से ग्रस्त हूँ
प्रेम पुजारन, कामदेव !
सहर[2] को चन्द्र प्रभा को
नष्ट किया
संकट में डाला
ढूँढा मैं ने गाँव- शहर
कामदेव !
क्रूर बड़ा है विरह सजन का
बालपन यों नष्ट हुआ
गँवा दिया सारा बचपन

1- 'बड़ि खोति वाराह बोड़ वुठुम दरबार मुहब्बत'
- कलाम-ए-महजूर - न0-8, ग़ज़ल - 51.

2- सहर - (अरबी) - प्रातःकाल, प्रभात

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

तेरे पीछे, कामदेव !'[1]

3: काश ! रसिया बालम लौट आते, हृदय तार उनके स्वागत हेतु स्वत: बज उठते और रुदन-संगीत से पाषाण-हृदयी को वस्तु-स्थिति का अनुमान होता :-

-'प्रेम संगीत श्रवण हेतु
यदि स्वयं चले आते
तो सुन लेते, मेरा
अश्रु-सिक्त रुदन-गायन
बड़े शौक़ से कस लेती मैं
हृदय रबाब में
तार प्रेम के ।
अश्रु पात से यदि द्रवित हो उठता
निर्मोही निष्ठुर-हृदयी
दिवस रात्रि में ख़ून बहाती
इन दोनों अखियों से ।'[2]

1- 'रोज़ रोज़ बोज़ म्यानि ज़ार मदनो
लालि चानि छसया बेमार मदनो
काचि ज़ून गाज़थस सफरस लाजथस
छोरमखा गाम शहरि मदनो
यारि दोद कूठ पयोम शुरि पान ज़ायि गोम
येथि पथ रोवुम लोकयार मदनो ।'
- "कलाम-ए-महजूर" न0-2, ग़ज़ल - 8.

2- 'सोज़ बोजनो पानि योहा बोज़ि हाम्यानो वदाक
शोक सान दिलकिस रबाबस तारि लोलिय चारहा
वदनि सूत्यि तोलोर गछिहा योद तमिस संगोनदिलस
रात दोह पनिन्यव अछव किन्य ख़ूनि बारान हारहा ।'
- -कलाम-ए-महजूर" न0-4, ग़ज़ल- 23.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

4: एक तो प्रिय विरह और तिस पर लोगों के उलाहने, विरहिणी के लिये जीना दूभर हो गया है :-

-'इश्क़ ने किया बदनाम बहुत
चर्चित शहर - गाँव रही
सौतिन - बेध रही है हृदय
व्यंग्य बणों से
फूलों के मतवाले साजन !'[1]

5: सखी के सम्मुख विरहिणी का आत्म विलाप :

-'सखि क्या यही है प्रीत की रीत
व्यसन प्रियतम का
कभी न वचन निबाहना ?
वध करना नाज़ुक चन्द्रमुखी
सजनी का,
काम यही है उनका ?
चन्द्र बदन, मधु-भाषी, ~~लुटेरे~~ स्वाभिमानी
प्रियतम ने --
स्वर्ग-वधू को लक्ष्य बना कर
तीर चलाया तनिक दूर से
क्या सम्भव है इसे छिपाना ?'[2]

1- 'आंशकन क्रिस बदनामो
क्रयख गई शहर तं गामो
पितरय्नि छम दिवान पामो
पोशो मति जानानो ।'
- "कलाम-ए-महजूर" न0-1 - ग़ज़ल न0-3.

2- 'वन्ति हाय व्यसि बे वफाई शेव-ए-दिलदार छा عادت
नाज़नीनन माहजबीनन क़तल गारत कार छा ।

Very [illegible]

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

6: नायक के प्रति प्रतीकात्मक रूप में गुलाब के फूल का सम्बोधन करुण रस के पोड़ा जनक प्रभाव को गहराने में कितना समर्थ है यह देखते ही बनता है :-

-'जाने प्यार के किस अन्दाज़ में
कार्तिक-चन्द्र-सदृश, मैं
सजधज के निकली थी,
पर व्यर्थ हुआ यौवन
प्रतीक्षा रत थक कर चूर हुई
गुलाब !
उन्मत्त तेरे आकर्षण में
नरगिस आ पहुँची
मधु - कलश लिए,
तुझे देख रही है छिप छिप के
करुण निगाहों से
गुलाब !
तेरी चाहत की अकुलाहट में
शृंगार ग्रन्थों के हर पन्ने को
देख लिया मैं ने,
और भर - भर के रख दी

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

दिलबरन लबश्शकरन मयपेकरन गारथ गरन
दूरि लोयुन हूरि तोरा चूरि थवनत वार छा ।'

- "कुल्लियाति महजूर' - सम्पादक - मुहम्मद यूसुफ टेंग -1983 ई0 पृ0-91.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अलमारियाँ वक्ष की

॥ उन ग्रन्थों से ॥

गुलाब ।'[1]

7: 'महजूर' की प्रसिद्ध कविता 'ग्रीस कूरि' में कृषक बाला के सहज स्वाभाविक रूप लावण्य का मन-मोहक चित्र जिसके सम्मुख लक्षण-ग्रन्थों में वर्णित नायिका भेद प्रकरण अपनी अर्थवत्ता एवं प्रासंगिकता खो देता है :-

-'मन्द गति से पग धरती जब उपवन में आई
कहीं फूलों ने कान तो नहीं भरे हैं ?
बुल-बुल हुए अवाक् और बहरे
कृषक बाला सुन्दरी सुकुमारी
शोभित हैं काया पर पुष्पाभूषण
जाने किस सुनार ने गढ़े हैं ?
निछावर उसकी कारीगरी पर
कृषक बाला सुन्दरी सुकुमारी
आस्तीन चढ़ाये देखा मैंने तुझे 'दांज'[2] पर
गुन-गुना रही 'लो - लो'[3] की तान लोलरी[4]

1- 'कमि लोलि द्रायस शोलि मारान कारतिकिव जून
थावुन हा कोरथम ज़ारिय ख़म ग़ाम कारि गुलाबो,
मस खांस ह्यरिय ह्यरिय मारिय याने आरिय पम्बरज़ल
बेमार चश्मो छय वुछान तांलटारि गुलाबो,
अमारि याने फिरम्य वरक़ लोलि किताबन
बार बार म्य थावव्यम सीनिये अल्मारि गुलाबो ।'
- "कलाम-ए-महजूर" - न0-6 - ग़ज़ल- 35.

2- 'दांज' - वह ज़मीन का टुकड़ा जिसमें सिंचाई की कोई व्यवस्था नहीं होती है । इसे खुश्क ज़मीन या 'दांज' कहते हैं ।
- लेखक -

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

॥ शेष अगले पृष्ठ पर ॥

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

थक न गई हो तेरी भुजाएँ गोड़ो करते
कृषक बाला, सुन्दरो सुकुमारो ।'

8: तेलानो प्रिय को मनवाने के हेतु प्रेयसी हर सम्भव उपाय पर विचार करती है यहाँ तक कि साजन को कश्मीर के दर्शनीय स्थलों की सैर कराने का आयोजन भी करती है । स्थानीय रंग की छटा अनुपम है :-

-'तेलानी प्रिय के हेतु सजाऊँ डोंगा
और ले चलूँ अच्छाबल× मेला दिखाने
रख दूँ भर-भर के मधु-कलस, और
सर निछावर कर दूँ चरणों पर
दिवा दूँ उन्हें 'यूसमर्ग×' का सब्ज़ाज़ार
और बिछा दूँ साजन के हेतु मख़मली फ़र्श
'नीलनाग×' को 'गिल'2 से कह दूँ

(पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

3- कश्मीरी लोक गीतों की एक विधा - 'लो-लो' गीत ।
4- कश्मीरी लोक-साहित्य में महबूब के लिये प्रयुक्त नामवाचक शब्द ।

1- 'रोश्नि रोश्नि द्रायक बारि अन्दरिये पोशो कन च्य मा बरिये
बुलबुल कारथक कॉल तय ज़रिये ग्रीस कूरि नाज़नीन सोन्दरिये
गाहिनि कनि पोशा छो तनि जार जॉरिये गरिमुत कॉमि ज़रगरिये
पॉरो लॉगज़ि अथ कॉरोगरिये ग्रीस कूरि नाज़नीन सोन्दरिये
दजि च्यठ वुछमख थोद तुलिथ नरिये लो-लो करान लोलरिये
नरि मा लोसय वूर कॉरि करिये ग्रीस कूरि नाज़नीन सोन्दरिये ।'
- "कलाम-ए-महजूर" - न0-3 - ग़ज़ल न0- 20.

× 'अच्छाबल' 'यूसमर्ग' 'नीलनाग' 'आरिगाम' - कश्मीर घाटी के दर्शनीय स्थल ।

2- 'गिल' - (कश्मीरी) - एक जल पक्षी का नाम (सांकेतिक अर्थ में सुन्दरी)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

चहक उठे, और
सर निछावर कर दूँ चरणों पर ।
''आरिगाम[x] में बहती नदिया की
शीतल मन्द बयार में
'महजूर के चिनारों' के नीचे
साजन आये, तो बिछा दूँ
'हो'[1] पुष्पों की सेज, और
सर निछावर कर दूँ चरणों पर ।'[2]

अत: यह कहना अनुचित न होगा कि 'महजूर' ने प्रेम के जिस अंग को छुआ है वह उनकी सृजनात्मक प्रतिभा से निखर उठा है । यह सच है कि इस क्षेत्र में 'महजूर' को परम्परा से बहुत कुछ प्राप्त हुआ है । स्वयं 'महजूर' ने इस तथ्य को स्वीकारा है लेकिन प्रेम को लोक जीवन के धरातल पर एक प्राण दायिनी शक्ति के रूप में स्वीकारते हुए 'महजूर' ने अत्यन्त सरल, सहज और स्वाभाविक रूप में प्रेमाकर्षण के रेशमी डोर में बन्ध कर ज़िन्दगी को सजाने-सँवारने

× 'आरिगाम' – कश्मीर घाटी में एक दर्शनीय स्थल ।

1– 'हो' – (कश्मीरी) – सफ़ेद या ज़र्द रंग का एक फूल ।

2– 'सोलिमोत सुई डूँगि पारावस मोलि वुछने निमल अछबल
लोलि मस खोस बोर बोर थावस सर त्रावस पादन तल ।
पूस मरगिहुन्द सबज़ार हावस वथरावस फ़र्श मख़मल
नोलि नाग्च गिल बोल नावस सर त्रावस पादन तल ।
आरिगाम किस आरि हवावस 'महजूर' न्यन बोन्यन तल
यिथो दिलबर 'हो' ब्व वथरावस सर त्रावस पादन तल ।'

– "कलाम-ए-महजूर" – नू0-9 – ग़ज़ल – 58.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

के साथ साथ महकदार बनाने का प्रयास किया है । यहाँ नाजुक प्रेमानुभूति ज़िन्दगी के उजड़े गुलिस्ताँ में नव-बसन्त के आगमन की सूचना देती है । यहाँ सौन्दर्य जड़ और चेतन प्रकृति का श्रृंगार करते हुए परस्पर आकर्षण के शाक्ति-कणों को समेटता है । यहाँ लोक संगीत ने प्यार को जन-जन का कंठहार बना दिया है । मेरे कहने का कदापि यह अभिप्राय नहीं है कि श्रृंगार के क्षेत्र में आधुनिक कश्मीरी काव्य में 'महजूर' ही हर्फे आखिर है । यह सिद्ध करना मेरा उद्देश्य नहीं है । महजूरोत्तर युग में नयी कविता के कवियों ने अन्तर्बाह्य जीवन की गहनतम जटिलताओं के साथ जूझते हुए श्रृंगार को नये आयाम प्रदान किये । कहीं यह नग्न यथार्थ के साथ जुड़ कर रुग्ण वासना की कीचड़ से लथ-पथ हो गया और कहीं बौद्धिक जटिलताओं ने इसे तर्क की फाँसी पर चढ़ा कर विदेशी फन्दों में लटका दिया । कहीं प्रयोगों की दुनिया में इसे अजायब-घर/निष्प्राण शिला-मूर्त्ति का रूप धारण करने के लिये विवश होना पड़ा और कहीं नवीन प्रयोगों के आधार पर जीवन को एक प्रेरणादायिनी शाक्ति के रूप में श्रृंगार का अत्यन्त स्वस्थ, स्वाभाविक और आकर्षक चित्रण भी हुआ है । बदलते युग के परिप्रेक्ष्य में अतिशय बौद्धिकता एवं जटिल मानसिकता के कारण नवीन प्रतीक एवं बिम्ब योजना के सहारे आज का श्रृंगारिक कवि नये सुर अलाप रहा है । प्रेम प्रेरित करता है - सृजन के हेतु ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

'महजूर' ने इसी प्रेरणा स्रोत से शक्ति भर रस-कण जुटा कर अपनी लेखनी का श्रृंगार किया है। उन्हीं के शब्दों में :-

-'गुप्त रखते हुए भी मेरी हृदय दशा, बाहर फूट पड़ी
जैसे वक्ष चीर कर कुसुम का, फूट पड़ती है पुष्प सुगन्ध ।'[1]

'महजूर' के कश्मीरी काव्य का दूसरा आकर्षण है - देशप्रेम पर आधारित राष्ट्रीय तथा क्रान्तिकारी काव्य । शताब्दियों की दासता से मुक्ति पाने के हेतु कश्मीर वासियों ने सर्वप्रथम 20वीं शताब्दी में एकजुट (यकजा) होकर शाहसी राज्य के विरुद्ध आवाज़ उठाई और साम्राज्यवादी शक्तियों का डटकर विरोध किया । यह वह समय है जब सम्पूर्ण भारत में गोरी चमड़ी वालों के काले करतूतों के विरुद्ध विद्रोह उग्र से उग्रतर रूप धारण कर रहा था और जम्मू-कश्मीर की सुषुप्त जनता भी जाग कर अपने खोये हुए स्वत्व को पुनः प्राप्ति के हेतु सक्रिय रूप से स्वतन्त्रता-समर में सम्मिलित होने लगी । यथार्थ के भीषण प्रहारों से रूढ़ि ग्रस्त परम्परागत मान्यताएँ खण्ड खण्ड बिखर गई, दृष्टिकोण बदल गये और युग-सत्य ने समकालीन-साहित्यकार की चिन्तन पद्धति एवं सर्जनात्मक प्रतिभा पर अपने अमिट निशान अंकित किये । 'महजूर' इस युग-सत्य को जन-जन तक पहुँचाने के हेतु सन्देश-वाहक बने, फलतः

1- 'पूशीदि थांवि थांवि द्राव फटिथ म्योन अन्दरिम हाल
यिथि पांठ पोशल सीनि ग़टिथ मुश्क न्यबर द्राव ।'
- "कलाम-ए-महजूर" न0-6, ग़ज़ल-40.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मातृभूमि के प्रति उनका अनन्य अनुराग देश-प्रेम पर आधारित रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त होने लगा । देश की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक विसंगतियों के विरुद्ध जन-मानस के आक्रोश ने जन-आन्दोलन का रूप धारण किया और साहित्यिक मंच पर इसका प्रतिनिधित्व सर्व प्रथम स्वर्गीय गुलाम अहमद 'महजूर' ने किया ।[1] इस दृष्टि से 'महजूर' ने युग-प्रतिनिधि कलाकार की भूमिका निबाही है । महजूर के कई सहयोगियों तथा परवर्ती युग के अनेक कवियों ने भूमि, भूमि-वासी जन एवं जन संस्कृति अर्थात् राष्ट्र के सामूहिक जीवन को एक नई गति प्रदान करने के उद्देश्य से रचनायें लिखीं । इनमें स्वर्गीय अब्दुल अहद आज़ाद, स्वर्गीय दीनानाथ कौल 'नादिम', नूर मुहम्मद रोशन (1919 ई०), गुलाम हसन बेग 'आरिफ़', रहमान राही तथा मुहम्मद अमीन कामिल (1924 ई०) उल्लेखनीय हैं । इस नये काव्य आन्दोलन से प्रेरित देशभक्त कवियों ने जंगनामों से उधार लिया हुआ चोला उतार कर दूर फेंक दिया । कविताओं में समसामयिक जीवन प्रति-बिम्बित हो उठा और यथार्थ अपनी समस्त विभीषिकाओं के साथ कहीं

1- 'Perhaps the first to introduce into Kashmiri Literature the ideas of Patriotism, human freedom, love of mankind, unity of Hindus and Muslims, dignity of work, respect of human labour..'
-"KASHMIR" - May 1958 - publication Division, Ministry of Information & Broadcasting, New Delhi;
-'Singer of Kashmir's freedom' - Farooq A. Qureshi- page-139.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

स्पष्ट रूप में और कहीं सांकेतिक रूप में अभिव्यक्त होने लगा । 'महजूर' ने अपने राष्ट्रीय काव्य में स्वर्णिम अतीत का सोद्देश्य गौरव-गान किया है । वे देश-वासियों को अपनी भव्य परम्परा और सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराकर अपना वर्तमान संवारने के लिये प्रेरित करना चाहते थे । उन्हें अपने अतीत पर गर्व है । कश्मीर-वासियों की धार्मिक सहिष्णुता, न्याय-परता, सच्चरित्रता एवं बौद्धिक सम्पन्नता इतिहास प्रसिद्ध है । यहाँ के शूरवीरों ने अनेक बार अपने बाहुबल की परीक्षा दी है । 'महजूर' उन वीरों को स्मृति दिला कर परतन्त्र देश को विषाक्त परिस्थितियों में परिवर्तन लाने के उद्देश्य से देशवासियों को सोत्साह निरन्तर संघर्षरत रहने की सलाह देते हैं । प्राचीन काल से ही कश्मीर हिन्दू-मुस्लिम एकता एवं पारस्परिक सद्भाव तथा बन्धुत्व के लिये प्रसिद्ध रहा है । गान्धी जी को 'रोशनी की किरण' यहाँ पर दिखाई दी थी ।[1] 'महजूर' अतीत के इन समस्त स्वर्ण कणों को सावधानी के साथ कविता की लड़ियों में पिरो देता है । उन्हें अपने भूत से अनन्य अनुराग है ।[2] भूत की प्राणदायिनी शक्ति से ही

1- आज अपनी भव्य सांस्कृतिक विरासत पर विचार करते समय मैं मन ही मन खून के आँसू रोता हूँ । - लेखक -

2- 'In Mahjoor's poems there is a burning love for his country's past as well as a sense of pride for its ancient greatness.'
-"Kashmir - its cultural Heritage" - Kaumudi, M.A - Literary Heritage - page 87.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

वह वर्तमान के गहनान्धकार को मिटाने का साहस जुटाते हैं ।[1]
स्वर्णिम अतीत के गौरवगान के साथ साथ 'महजूर' ने वर्तमान (स्वतन्त्रता से पूर्व युग को) दुर्दशा के प्रति भी अपनी सजगता व्यक्त की है । वस्तुत: 'महजूर' का राष्ट्रीय काव्य अपने युग का प्रतिबिम्ब है । उन्होंने युगीन परिस्थितियों का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है । सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक प्रतिबन्धों में जकड़ी हुई जनता का विवशता पूर्ण अश्रुसिक्त जीवन उन्हें वेदना विह्वल कर देता है । सत्ताधारियों के शोषण चक्र में लुटती-पिसती जनता का असहाय करूण क्रन्दन 'महजूर' की लेखनी के द्वारा मूर्त रूप में साकार हो उठा है । मानव जीवन का सब से बड़ा अभिशाप है - दरिद्रता जिसने 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में कश्मीर-वासियों को ग्रस लिया था । सम्पूर्ण समाज मेहनतकशों और लुटेरों के मध्य बट चुका था । यहाँ एक ओर बरबादी का गम और मातम छाया हुआ था तो दूसरी ओर इन्सानी दरिन्दों के काले करतूतों से सम्बन्धित हृदय विदारक कथाएँ इन्सानी अस्तित्व के आगे एक के बाद एक नया प्रश्न चिह्न अंकित करती थी । आर्थिक शोषण के परिणाम स्वरूप देश अकाल और दुर्भिक्ष से

1- 'महजूर प्राचीन इतिहास, संस्कृति और काव्य परम्परा के ज्ञान के साथ अपनी कविता में नई चेतना, नये दृष्टिकोण का समावेश करते हैं और इससे उनकी कविता में जो क्लासिकल व्यापकत्व, सरलता और माधुर्य आ जाता है, वह 'आज़ाद' अथवा मिर्ज़ा बेग की कविता में दुर्लभ है ।'
- "प्रगतिवाद" - शिवदान सिंह चौहन - पृ०-18.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पीड़ित था। अभाव (दरिद्रता वश) और अज्ञान के कारण सम्पूर्ण देश चेतना शून्य होकर दम तोड़ रहा था।[1] 'महजूर' को इस कारुणिक स्थिति का एहसास शिद्दत से हुआ था फलतः उनके राष्ट्रीय काव्य में युग-सत्य पूरे वेग के साथ मुखर हो उठा।

'महजूर' के राष्ट्रीय काव्य में देश-भक्ति से प्रेरित सुन्दर देश-प्रेम के गीत भी मिलते हैं। उन्हें अपने देश से असीम प्यार था और यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति अथाह अनुराग।[2] 'गुलशन वतन छु सोनुई' (पुष्प वाटिका है देश हमारा) इस

1- 'शताब्दियों की गुलामी ने कश्मीरी जनता को निकम्मा कर रखा था, आर्थिक लूट-खसूट की चिक्की में पिसते हुए भी उनके मुँह से आह तक न निकलती थी। अभाव और अज्ञान के धुप अन्धेरे में ठोकरें खाते हुए वे देर तक किसी प्रगतिशील नेतृत्व से वंचित हो रही, जिस से उसकी धँसी हुई निस्तेज़ आँखें चमक उठतीं।'
- "हिन्दी गद्य-प्रवेशिका" - 'महजूर की कविता में 'नया कश्मीर' - पृथ्वीनाथ पुष्प - पृ0- 149.

2- ' Of the more recent times, mention may be made of Abdul Ahad Azad and Ghulam Ahmed Mehjur, whose songs and verses have been characterised by deep love for the motherland as well as joy in nature's colourful phenomena.'
-"KASHMIR - Its Cultural Heritage" -Kaumudi - page-50.

Phenomenon n. (Pl. Phenomena) अद्भुत प्राकृतिक दृश्य चित्र

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

दृष्टि से उनकी उल्लेखनीय रचना है ।[1] उनके देश-प्रेम की सब से बड़ी विशेषता यह है कि वे अपने देश के प्राकृति सौन्दर्य के साथ साथ देश वासियों के क्षत-विक्षत जीवन के प्रति भी जागरूक थे । देश-प्रेम उनकी नज़र में केवल प्राकृतिक सौन्दर्य तक ही सीमित नहीं रहा अपितु देश वासियों के दीन-हीन जीवन में भी उन्होंने सौन्दर्य-कणों को तलाशने का भरसक यत्न किया है । वे उनके दुःख से दुखी और सुख से सुखी दिखाई देते हैं । उनकी समस्याएँ स्वयं 'महजूर' की निजी समस्याएं है । वे उन्हें राजनीतिक एवं आर्थिक शोषण से मुक्त कराना चाहते थे ।

साम्प्रदायिक सद्भाव एवं धार्मिक सहिष्णुता को महजूर ने अपनी देश-प्रेम सम्बन्धी रचनाओं में पर्याप्त महत्त्व दिया है । सत्ताधारियों के विरुद्ध संघर्ष के हेतु एकजुट होकर तथा संकीर्ण भेद-भाव भुला कर ही लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव है । 'महजूर' कश्मीर के मुसलमान और हिन्दू को दूध और शक्कर की तरह मिल कर एक हो जाने की सलाह देते हैं तभी खोये हुए अधिकारों की पुनः प्राप्ति सम्भव है और

1- 'Mahjur's 'Gulshan watan chu sonny' (our land is flower garden), inspite of its apparent innocence of any politics is mildly resonant with a new urge to prove worthy of the love and lovliness of Kashmir!

-"KASHMIR" - February 1959 - 'Freedom in KashmiriVerse' - P. N. Pushp - page29.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

भग्न आशाओं के पुनः प्रस्फोभूत होने की सम्भावना है । 'नया कश्मीर' का भावी स्वप्न उन्हें संघर्ष के लिये प्रेरित करता है, बलिदान के लिये उत्तेजित करता है एवं जन क्रान्ति के लिये शक्ति प्रदान करता है । 'शीरवानी का सन्देश' शीर्षक कविता में बन्दी शीरवानी[1] के स्वप्नों में सम्पूर्ण राष्ट्र की भावी आशाओं का उज्जवल प्रतिबिम्ब देखने को मिलता है ।

'महजूर' ने अपने राष्ट्रीय काव्य में शोषित श्रमिकों एवं पीड़ित कृषकों का यथार्थ पर आधारित बड़ा ही हृदय विदारक चित्रण किया है । दोष पूर्ण सामन्ती व्यवस्था के परिणाम स्वरूप पीड़ित एवं शोषित जन समाज के प्रति कवि की सहानुभूति विशेष रूप से रही है । तत्कालीन गाँव दरिद्रता, जड़ता, भूख, बीमारी एवं दुर्भिक्ष के केन्द्र थे । किसान उत्पादक है परन्तु भोक्ता कोई और । शोषक

1- "अक्तूबर सन् 1947 ई० में पाकिस्तान की ओर से कश्मीर पर आक्रमण हुआ । घाटी को उनकी बर्बरता से बचाने के हेतु बारहमूला में मुहम्मद मक़बूल शीरवानी नामक एक युवक ने परम साहस एवं मानसिक एकाग्रता का परिचय दिया । अंत में नृशंस शत्रुओं ने उन्हें पकड़ लिया और बड़ी निर्ममता से उनकी हत्या कर दी । शीरवानी की स्मृति में बारहमूला में 'शीरवानी स्मारक' बनाया गया है ।" - लेखक -

2- 'I shuddered when I heard the condition of the people living in the Jagris. The depredating of the Jagirdars is monstrous. There is no law but the will of the Jagirdars in these parts of the state. I was told that people may not marry even their daughters against the wishes of the Jagirdars.'

-"Inside Kashmir" - P. N. Bazaz - page 231.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

§ जागीरदार, सामंन्त, राज कर्मचारी § सदा अपने घातक पंजे उस पर डाले रहता है । यहाँ तक कि उसका अपमान करना एक सर्वसाधारण बात बन गई थी । साम्राज्यवादी शक्तियों ने मानव जीवन में विष घोल दिया था । मानव मूल्यों का कोई महत्त्व नहीं था और धर्म केवल अत्याचार का एक साधन बन कर मानव जीवन को कुंठित कर रहा था । ज़मींदारी प्रथा के फलस्वरूप अनेक कुरीतियाँ प्रचलित थीं । किसानों से बेगार लेना तो सामान्य बात थी । बेकारी और भुखमरी – बस यही तो उसके भाग्य में बदा था । महजूर स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिये श्रमिकों और कृषकों के संगठित संघर्ष को पर्याप्त महत्त्व देते हैं । वे केवल आँसू बहा कर असहायावस्था का रोना ही नहीं रोते रहे बल्कि नये उत्साह के साथ आत्म-बलिदान की प्रेरणा भी देते रहे । लूट-खसूट करने वाली समस्त दानवी शक्तियों को छल कपटमय लीलाओं का 'महजूर' ने अपनी रचनाओं में यत्र-तत्र प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्त अथवा सांकेतिक भाषा में चित्रण किया है । उन्हें विश्वास है कि किसानों और श्रमिकों की टूटी फूटी झोंपड़ियों में ही मानवता का विकास स्वच्छन्द और निर्भय रूप से होता है ।

'महजूर' ने अपने राष्ट्रीय काव्य में 'गुल' और 'बुलबुल' की शाइरी को एक नये रंग में प्रस्तुत किया है । उन्होंने बुलबुल को

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

स्वतन्त्रता का सन्देशवाहक माना और उसके माध्यम से 'गुलों' में व्याप्त शताब्दियों की अज्ञान-निद्रा को भंग करने का सशक्त प्रयास किया ।[1] परम्परागत प्रतीक नये सन्दर्भों के साथ जुड़ गये और अर्थ विस्तार के साथ-साथ अर्थोत्कर्ष की सीमाओं को छूने लगे । राज-कर्मचारी होने के नाते 'महजूर' ने कहीं कहीं सावधानी से काम लेकर संकेतों और प्रतीकों के माध्यम से विकट परिस्थितियों को बदल डालने की बात कही है । यह उस की निजी विवशता थी[2] लेकिन इसमें सन्देह नहीं कि काव्योत्कर्ष अथवा रचना-सौन्दर्य की दृष्टि से प्रस्तुत रचनाएँ अधिक मार्मिक एवं सजीव बन पड़ी हैं । गुल, बुलबुल, वारिल[3] (हिंसक पक्षी), अबाबील[4], कस्तूर[5], बसन्त, ग्रीष्म, पतझड़, शिशिर,

---

1- "उनके यहाँ 'बुलबुल' आज़ादी का गायक और 'बागबान' अर्थात् जन-नेता भी है । उनकी ग़ज़लों को कश्मीरी धुनों में गाने वाले असंख्य गायक और श्रोताओं के लिए यह लाक्षणिक पदावली पूरी तरह बोध गम्य है । कश्मीर में 'बुलबुल' किसान मज़दूर की झोंपड़ियों में घोंसला बनाकर बारहों मास निवास करते हैं, उनके दुख-दर्द, हंसी-खुशी, आशा-निराशा, प्रेम-उल्लास के सहभागी हैं ।"
- "साहित्यानुशीलन" - शिवदान सिंह चौहन - 'नई कश्मीरी कविता' - पृ0- 124.

2- "'महजूर' ने प्रतिकूल परिस्थितियों से विवश होकर प्रतीकों एवं संकेतों का सहारा लिया और 'गुल' व 'बुलबुल' को प्राचीन परम्परागत उपमाओं द्वारा नवीन संकेत किए और इस प्रकार कश्मीरी काव्य में राष्ट्रीय भावनाओं को अभिव्यक्ति होने लगी ।"
- "महजूर" - प्रो0 पृथ्वीनाथ 'पुष्प' - पृ0-17.

3- वारयुल/वारिल - (कश्मीरी) - एक हिंसक पक्षी जो छोटे छोटे पक्षियों का शिकार करता है ।

4- अबाबील - (अरबी) - एक प्रसिद्ध श्याम वर्ण की छोटी चिड़िया ।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

गुल्ले लाला, श्रावण ऋतु, बाग़बान, बर्फ़, मुरझाई कलियाँ एवं खिले हुए फूल नये सन्दर्भों के साथ जुड़ कर अर्थ विस्तार को नवीन दिशाओं की सूचना देने लगे ।

'महजूर' ने जागरण गीत भी लिखे हैं जिनके माध्यम से शाहसो-राज्य के विरुद्ध जन-सामान्य का सामूहिक आक्रोश अभिव्यक्त हुआ है । इन गीतों में जहाँ एक ओर राज-अधिकारियों पर कठोर व्यंग्य किए गए हैं वहाँ दूसरी ओर उनकी छल-कपटमय लीलाओं का भी पर्दा फ़ाश हुआ है । सामन्तशाहों के घृणास्पद कुकर्मों के परिणाम स्वरूप जन-जीवन कलंकित हो गया था और 'महजूर' इस कलंक को मिटाने के हेतु देशवासियों के पुरुषत्व को ललकार रहे हैं । 'महजूर' के विचारानुसार जीवन का महान लक्ष्य मनुष्यत्व के उच्चादर्श को प्राप्त करना है । शोषक की सत्ता जब तक समाप्त नहीं होगी तब तक इस आदर्श अथवा लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव नहीं है । दग्ध-उपवन के लिए बसन्त की बयार जो सन्देश लेकर पहुँचती है वही सन्देश 'महजूर' के जागरण गीत गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ी हुई जनता तक पहुँचाते हैं जिसे सुन कर लोह-शृंखलाएँ बरबस झनझना उठती हैं और अपमानित जन समूह के डाँवा डोल इरादे दृढ़ संकल्पों में बदल जाते हैं । 'स्वराज्य मानव का जन्म सिद्ध अधिकार है' - जिसे पाने के हेतु 'महजूर' अपने

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

5- कस्तूर - §कश्मीरी§ - एक मधुर भाषी पक्षी जो कोयल से मिलता जुलता है ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जागरण गीतों के द्वारा देशवासियों को 'मधुर हलाहल पान' के लिये निमन्त्रण देते हैं । स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेने वाले राष्ट्र-वीरों को अभ्यर्थना भी 'महजूर' ने अपने काव्य में यत्र-तत्र की है । शहीदों के प्रति अपनी श्रद्धा के सुमन अर्पित करते हुए 'महजूर' ने अनेक राष्ट्रीय गीत लिखे हैं । 'महजूर' की वीर प्रशस्तियों में कृतज्ञता की भावना प्रधान है । स्वर्गीय मुहम्मद मक़बूल शीरवानी के आत्म बलिदान ने 'महजूर' को विशेष रूप से प्रभावित किया । कश्मीरी जनता के जीवन में कालरात्रि का अन्त निकट भविष्य में अवश्य होगा - यह सोच कर 'महजूर' मातृभूमि के वीर सपूतों के प्रति नत-मस्तक होकर उनके त्याग बलिदानमय जीवन का मुक्त कंठ से प्रशस्ति-गान करते हैं ।

'महजूर' को आने वाले कल पर पूर्ण विश्वास था यही कारण है कि उनके राष्ट्रीय काव्य में स्वस्थ आशावादी सन्देश दृढ़ संकल्प के साथ अभिव्यक्त हुआ है ।[1] उन्होंने देशवासियों को हंसते हंसते बलिवेदी पर चढ़ने का निमन्त्रण दिया क्योंकि उन्हें विश्वास था कि आज के बलिदान से ही देश और देश-वासियों का आने वाला कल

1- 'He was quite optimistic about the future of his land; he, therefore, assured the struggling victims : 'winter will flee and snow will melt away, and will come the spring'.'
-"KASHMIR" - February 1959 - 'Freedom in Kashmiri Verse' - P. N. Pushp - page 29.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

स्वर्णिम आभा से जगमगा उठेगा। हताश जन समुदाय को किं-कर्तव्य विमूढ़ता देख कर कवि उन्हें उत्साहित करते हैं - सोस नवाने के लिए नहीं अपितु सोस कटाने के लिए। मरण त्योहार में सहर्ष सम्मिलित होने के लिए। उन्हें विश्वास है कि कर्म पर क्योंकि कर्म ही जीवन को अंधियारी सूनी गलियों में हर्षोल्लास के प्रकाश-कण बिखेर देता है।[1] 'महजूर' को इन रचनाओं का वही महत्त्व है जो मरुस्थल में जल-स्रोत का है। वे अपने वर्तमान को आने वाले कल के हेतु निछावर करने के लिए तत्पर हैं। अनाचार और अत्याचार के इस घटाटोप में आशा का टिमटिमाता दीप लिए जोत से जोत जलाने का दृढ़ निश्चय अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त कर रहे हैं। अपने देश के सुनहले भविष्य के प्रति वे पूर्ण आशावान थे।[2]

'महजूर' के राष्ट्रीय काव्य में क्रान्तिकारी रचनाओं का अपना विशिष्ट महत्त्व है। राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक

---

1. 'There is a hidden message for the future in his poetry. His is not poetry of love or romance alone nor even of roses and rivers inviting lovers into their midst, but a song of the changing times.'
-"Kashmir" - Its Cultural Heritage" - Kaumudi-page 88

2. 'Mahjoor believed that a day would come when his motherland would be free and the people would live happy, contented and prosperous lives.'
-"Struggle for freedom in Kashmir" -P.N. Bazar, page 29.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अत्याचारों के विरुद्ध आरम्भ में कवि ने जन-मानस को जाग्रत और सक्रिय बनाने के हेतु देश-प्रेम के नग़्मे गाये लेकिन जब वस्तु स्थिति में कोई परिवर्तन होते नहीं दिखाई दिया तो उन्होंने क्रान्ति का आह्वान किया। वे सामन्तशाहो के विरुद्ध स्पष्ट शब्दों में अपना आक्रोश व्यक्त करने लगे। उन्होंने देशवासियों को विद्रोह के लिये उत्तेजित किया क्योंकि उन्हें पूर्ण विश्वास हो गया था कि दूषित शासन-व्यवस्था का अन्त किये बिना स्थायी शान्ति सम्भव नहीं। देश प्रेम के नग़्मों ने रक्तिम क्रान्ति का चोला पहना और दिशाएँ इस गगन भेदी क्रान्ति सन्देश से गूँज उठी।[1] राष्ट्रीय नव-जागरण के साथ-साथ सांस्कृतिक नव-जागरण का सूत्रपात भी यही से होता है। अपने खोये हुए कल यानी टूटी हुई सांस्कृतिक विरासत पर बहुत मातम हो चुका था अब इन बिखरे हुए मौक्तिक कणों को पुनः समेट कर भविष्य को संवारने के हेतु वर्तमान से जूझना होगा।[2]

1- 'Patriotic blood coursed through the veins of the poet.'
"Kashmir"-Feb. 1959 'A patriotic song by Mahjoor'
- O.N. KAK - Page 48

2- "यह भी एक सत्य है कि गुलाम देशों में जनता के साम्राज्यवाद-सामन्तवाद - विरोधी राष्ट्रीय संघर्ष के साथ ही साथ सांस्कृतिक नव-जागरण का भी सूत्रपात होता है। जो धीरे-धीरे इस निविड़ अन्धकार को चीर कर जन-जन तक नवचेतना की जीवनदायी किरणें ले जाता है, - - -यह सांस्कृतिक जन-जागरण भी दुर्दमनीय होता है क्योंकि उसके मूल में न्याय और सत्य की सजग मानववादी भावना होती है।"
-"साहित्यानुशीलन" - शिवदान सिंह चौहान -'नयी कश्मीरी कविता' - पृ०- 121

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्र-हितैषियों के पौरुष को ललकारते हुए कवि महानाश को धधकती भट्ठी में आहुति देने के हेतु उत्तेजित करते हैं । इस प्रकार समूल परिवर्तन के लिए वे कटिबद्ध दिखाई देते हैं । सन् 1942 के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' से यहाँ की जनता को एक नवीन शक्ति प्राप्त हुई ।[1] सन् 1946 के 'कश्मीर छोड़ दो' आन्दोलन को सशक्त आधार भूमि के निर्माण में 'महजूर' की क्रान्तिकारी रचनाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । 'वलो हा बाग़बानो' (अरे ओ बाग़बान) इस दृष्टि से 'महजूर' की एक उल्लेखनीय विद्रोह - प्रधान रचना है । तत्कालीन सामाजिक और आर्थिक दुर्दशा ने भी महजूर की क्रान्तिभावना को पुष्ट किया ।[2] इन रचनाओं में कवि किसी भी प्रकार के सुधार या समझौते के लिये तैयार नहीं अपितु विद्रोह की प्रचण्ड अग्नि में आहुति देना ही उनका एक मात्र लक्ष्य रहा है । यहाँ इस बात को स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि 'महजूर' नाशा का आह्वान नव-निर्माण के हेतु

---

1. 'The Quit India movement launched by the Indian National Congress in 1942, which resulted in the arrest of the leaders of the Congress and the consequent turmoil deeply moved the politically awakened people of the state.'
   -"A History of Kashmir" - P.N.K.Bamzai - page 665

2. 'To understand the main principle underlying the emergence of Mahjoor as a revolutionary poet as one must know about the socio-political system prevalent at that time. The spirit of the age which the poet tries to express, itself dictates the form of poetic embodiment and exercises a high effective control over the quality and acceptability of that form.'
   -"Kashmir" - May 1958 - 'Singer of Kashmir's Freedom' - Farooq A- Qureshi - page 139.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

करते हैं । 'नया कश्मीर' के स्वप्न को साकार बनाने के हेतु वे विप्लव और विद्रोह का स्वागत करते हैं । नव-सृष्टि के विकास हेतु वे वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करना चाहते हैं । उनका क्रान्ति सन्देश विनाशात्मक होते हुए भी सृजनात्मक है । वैचारिक धरातल पर परिपुष्ट क्रान्ति का जो स्वस्थ दृष्टिकोण हमें स्वर्गीय 'आज़ाद' और अन्य परवर्ती कश्मीरी कवियों में देखने को मिलता है उसका केवल प्रयोगात्मक रूप ही महजूर की रचनाओं में उपलब्ध है । 'महजूर' ने क्रान्ति दूत के रूप में प्रयोग अवश्य किये, यही युग की माँग थी लेकिन चिन्तन की परिपक्वता और गहराई तथा क्रान्ति दर्शन का प्रौढ़ नज़रोय:[1] हमें 'महजूर' की इन रचनाओं में उतनी प्रतिबद्धता के साथ देखने को नहीं मिलता है जितना 'आज़ाद' और अन्य परवर्ती कवियों की रचनाओं में दिखाई देता है । इस दिशा में 'महजूर' आरम्भिक प्रयोगकर्ता थे और 'आज़ाद' क्रान्ति के जीवन दर्शन से पूर्णत: प्रभावित एक समर्पित सन्देश वाहक ।

'महजूर' के राष्ट्रीय काव्य से उद्धृत चन्द ऐतिहासिक साक्ष्य :-

1: खोये हुए आत्म सम्मान की पुन: प्राप्ति के हेतु कवि का आग्रह एवं शोषक पूंजीपति के प्रति उबलता आक्रोश :-

-'वजूद एक चिर स्थायी मस्ती है, बेखुदी ख़राबी और पस्ती
खुदी की तोप से बेखुदी के दुर्ग पर विजय पानी है

1- 'नज़रोय:' - (अरबी) - नुक्तए नज़र, दृष्टिकोण ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

धनवान को है उपलब्ध हर्षोल्लासमय भोग विलास
पर, घर बरबादी में कराह रहा है ग़रीब,
अस्तित्व मिटाना है मुझ को
इस अहंकारी धनपति का ।'[1]

2: साम्प्रदायिक सद्भाव एवं बन्धुत्व की भावना - कश्मीर की सांस्कृतिक विरासत :-

- 'दुग्ध है मुस्लिम तो पण्डित
है शकर की इक डली
साफ़ साफ़,
मिला दे दूध और शकर को
बाहम, आज तुम ।
पण्डित के हेतु
निछावर कर दिये प्राण
कुद गोजवारी[2] ने
याद रखो लो आज
वही महत् बातें परस्पर, आज तुम ।
पुत्रवत पालन किया

1- 'छि हस्ती पोशिवुनि मस्ती ख़रांबी बेखुदी पस्ती
खुदी हिंज़ तोप लांयिथ बेखुदी हुन्द किलि पावुन छुम
अमीरस आंश तय शादी गरीबस खानि बरबादी
यिथिस मग़रूर आसन वांलि सुन्द नावुई मिटावुन छुम ।'

- "पयाम-ए-महजूर" - न0-2, गीत-9.

2- 'ख़्वाजा अब्दुल कुदूस गोजवारी को सन् 1819 में जबार खाँ नाम के अन्तिम अफ़ग़ान गवर्नर ने क़त्ल करवाया क्योंकि उन्होंने अपने घर में पण्डित बीरबल धर की पत्नी और बच्चों को आश्रय दिया था ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सिरिज काक[1] ने, मुसलमान का
उसी अन्दाज़ में एक होकर
मिला लो दिल परस्पर, आज तुम ।[2]

3: वर्तमान दुर्दशा का हृदय विदारक चित्रण :-

-'सुन, इस उपवन में आँखों से
मैं ने क्या क्या देखा है
सुख सुविधाएँ कम, ग़म ज़्यादा, मुश्किले बेशुमार
बुलबुलों पर को निरत बाणों को वर्षा
उन पाषाण हृदयी ज़ालिमों ने
मार दिये बेज़बान इतने
कि रक्त-रंजित हो उठा सारा उपवन ।'[3]

1- पण्डित सूरज काक ने हन्दवारा तहसील के अनाथ मुसलमान बच्चों को पाला पोसा, संरक्षक बन कर उन्हें आवश्यक शिक्षा दी और उनके पारिवारिक जीवन को सुखद बनाने का हर सम्भव प्रयास किया ।

2- 'दोद छु मुस्लिम ह्यून्द छु शाकर साफ़ साफ़
दोद ते बेयि शाकर रलावि पानवान्य
कोर बटस च्यठ जू फिदा कुदि गोजवारो
अज़ ति मे कथि याद पावि पानवान्य
रछि सिरिजकाकन मुसलमान गोबरि ग्रन्ज़
दिल तिये पाठ मिलि नावि पानवान्य ।'
- "पयाम-ए-महजूर" - न0-2, गीत-6.

3- 'बोज़ यथ बागस अन्दर क्या क्या म्य वुछ पानिन्यव अछव
ऐश आरत कम मगर ग़म ज़्यादि तख़्ती जान जान
तोरि बारां बुलबुलन च्यठ कोर तिमो संगीन दिलो
ख़ूनि सूत्य ग्व बाग रंगीन तीति मारिख बेज़बान ।'

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

4: देश प्रेम का उद्दाम प्रवाह :

-'फूलों से कहता बुलबुल
गुलशान है देश हमारा
देश हमारा है गुलशान
गुलशान है देश हमारा ।
चारों ओर हिमाच्छादित पर्वत श्रृंग
संगेमर्मर की दीवारें हैं
मध्य स्थित है शस्य श्यामला घाटी
द्युतिमान सब्ज़ गौहर[1]
गुलशान है देश हमारा ।
कोह[2] श्रृंखलाओं के मध्य
नव बसन्त ने ग्रहण किया आसन
खिल उठे हैं गुलिलाल:, शालिमार में
गुलशान है देश हमारा ।'[3]

5: पीड़ित कृषकों के शोषित और अपमानित जीवन की ट्रेजिडी:-

-'उपजाते थे अन्न
घर के दसों जने

1- 'गौहर' - {फ़ारसी} - मोती
2- 'कोह' - {फ़ारसी} - पर्वत
3- 'बुलबुल वनान छु पोशान गुलशान वतन छु सोनुई
सोनुई वतन छु गुलशान गुलशान वतन छु सोनुई ।
अंदि अंदि सफेद संगर देवारि संगि मरमर
मंज़ बाग सब्ज़ गौहर गुलशान वतन छु सोनुई ।
मंज़ बाग कोहसारन रांट जाय नव-बहारन
फांलि लालि शालमारन गुलशान वतन छु सोनुई ।'

-"पयाम-ए-महजूर" - न0-2 - गीत-5

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जो तोड़ परिश्रम करके
इस भूमि पर
फिर भी दाने दारे को रहते थे मुहताज
बहुत समय के बाद देखेंगे हम
आज़ादी -
ज़ालिम, जाबिर और चकदार[1]
शरत्-ऋतु[2] में ताकत के बल
हम से छीन रहे थे दाना दाना,
इस बरबादी को देखा किस ने !
बहुत समय के बाद देखेंगे हम
आज़ादी - ।[3]

6: जागरण-गीत - शोषित श्रमिक के प्रति उत्साह पूर्ण सम्बोधन :

-'निराहार सोये हुए श्रमिक !
ग़फ़लत छोड़ कर जाग्रत हो जा
ज़ुल्म सहते हो गये हो पंगु

1- 'चकदार' - {कश्मीरी} - भूमिपति
2- [संस्कृत - शरत्/शरद
[कश्मीरी→ हरूद - फ़सल कटाई का मौसिम
3- ' आस असि यि ज़मीन कमनावान
दाहवय बा'च़ आ'स च़टान ज़ू जान
त्रेशि च'यि च'यि करान आबा'दी
असि वुछुव जल्दी आज़ा'दी ।
हरदि आ'स फलि फलि निवान ज़ोरदार
ज़ा'लिम त' जा'बिर बयथि चकदार
का'सि कर वुछ सा'नि बरबा'दी
असि वुछव जल्दी आज़ा'दी ।'
- "पयाम-ए-महजूर " - न0-6 - गीत-33.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

खड़े हो जाओ अपने बलबूते पर
दारिद्र्य ने ग्रस लिया है तुझ को
होश में आ, सम्भाल ले दम
अब कितने समय तक रहो गे
जुल्मो-सख़्तो का शिकार बनकर ?'[1]

7: सांकेतिक अभिव्यक्ति - शब्दों में निहित दोहरा अर्थ :-

-'बाग़बान ! आ और नव बसन्त को शान पैदा कर
खिल उठे फूल और मुक्त उड़ान भर लें बुलबुल
वही सामान पैदा कर,
वीरान है चमन, रो रही शबनम, परेशान हैं गुल
गुलों और बुलबुलों में जीवन स्फूर्ति पैदा कर ।
न रख उपवन में बिच्छू बूटो गुलों के वास्ते घातक वह होगी
निरन्तर खिल रहे सुम्बुल तू हँसते फूल पैदा कर ।'[2]

8: आशावादी सन्देश - जीवन जीने की उत्कट इच्छा :-

-'तार सर और मारसर
बन जायें गे अमृतसर

1- 'फ़ाकफ़रि शोंगमति मजूरो त्राव ग़फ़लत गछ़ हुशियार
वोथ सपन इत्तादि जुलमन छुक छि कोरमुत नाबकार
वोथ ग़रीबी मोरमुत छुख होश कर सम्भाल दम
वोथ वोन्य कोताह काल रोज़ख जुल्म सख़्तो हुन्द शिकार ।'
- "पयाम-ए-महजूर" - न0-5, गीत-24.

2- 'चलो हा बाग़बानो नव-बहारस शान पैदा कर
फोलन गुल गथ करन बुलबुल तिथुई सामान पैदा कर ।
ओ चमन वीरान रिवान शबनम ग्रटिथ जामे परेशान गुल
गुलन तय बुलबुलन अन्दर दुबारा जान पैदा कर ।
मो थव गुलज़ारस अन्दर तोय गुलन छि सोई ख़राबो छय
पियाम सोम्बुल छि पय-दर-पय गुलि यन्दान पैदा कर ।'
- "पयाम-ए-महजूर" - न0-1 - गीत-1

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

महत्वकाक्षी होगा तोसमादान
सूरत बन्दरगाह जैसा
और, कौंग्वटन में
बस जायेगी औद्योगिक नगरी
ध्यान धर, मेरे सज्जन प्रिय !
प्यार का कह दूँ मैं अफ़साना तुझे ।
समता स्थापित होगी परस्पर
छोटे-बड़े, कमज़ोर और
शक्तिवालों में
आदमी बन जायेगा इन्सान
ध्यान धर, मेरे सजन प्रिय !
प्यार का कह दूँ मैं अफ़साना तुझे ।'[1]

9: क्रान्ति का आह्वान :

अ/ -'पिंजर बद्ध बुलबुल ! कौन करेगा मुक्त तुझे तू नाला है
तू स्वयं अपनी मुश्किलों का बदल आसान पैदा कर ।
जगाना है अगर बस्ती-ए-गुल छोड़ ज़ोरो बम
मचा अन्धड़, कड़क बन जा, भूकम्प ला, तूफ़ान पैदा कर ।
काव्य-भूमि में 'महजूर' ने पैदा किये हैं गुल कितने

1- 'तार सर मारसर बनि अमरतसर तोसमादान बनि सूरत बन्दर
कौंगवटन लगि कारखाना
थाव तो कन हा मति लालो
लोलुक वनय अफ़साना ।
लोकिट बांड तं कमज़ोर बेधि ज़ोरावर रोज़नि कांह गछन सांरो-
- बराबर

आदमी बनि इन्साना
थाव तो कन हा मति लालो
लोलुक वनय अफ़साना ।'
- 'पयाम-ए-महजूर' - न0-3, गीत न0-13.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अब इस रंगीन उपवन में क्रुद्ध बुलबुल पैदा कर ।'[1]

आ/ 'शेर दिल आयेंगे सम्मुख
ऐसा कर प्रहार उन पर
कि धराशायी हो जायें,
झपट कर फाड़ जिगर उनका
ताकि वे सितम न ढायें
अपना बहादुरी का जल्वा दिखा ।'[2]

इ/ 'नवयुग का आगमन हुआ
याचना, जी-हुज़ूरी का युग हुआ समाप्त
जिस की बाहू में हो शक्ति
वही रहेगा कामयाब ।
आवेगमय उमंग-उत्साह, चाहत - बेताबी
और अद्भुत साहस
जब पैदा होगा जन-मानस में
तो वही कहलाता - इंक़िलाब ।'[3]

1- ' करी कुस बुलबुला आज़ाद पिंजरस मंज़ चि नालान छुक
चि पनिने दस्ति पनन्यन मुश्किलन आसान पैदा कर
अगर वुज़नावहन बस्ती गुलन हिंज़ त्राव ज़ेरो बम
बुन्युल कर वाव कर गगराय कर तूफ़ान पैदा कर ।
ज़मीनस शायरी हिन्दिस करिथ महजूर गुल पैदा
वन्य अथ रंगीन बागस बुलबुले नालान पैदा कर ।'
- "पयाम-ए-महजूर" - न0-1 - गीत न0-1.

2- 'ब्रोंठ यिनय चे शेरिनर हमलि करुख चि प्यन पथर
लारि रटुख चटुख जिगर युथ न करन सितमगरो
डाव पनिन बहादुरी ।'
- "पयाम-ए-महजूर" न0-7 - गीत न0-35.

3- 'मंगनुक तं ज़ारपारुक वख़त ग्व नोव दोर आव

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

इस प्रकार यह बात स्पष्ट होती है कि 'महजूर' सच्चे अर्थों में कश्मीर के प्रथम राष्ट्र-कवि, जन हितैषी और सच्चे देश-भक्त थे। उन्हें इस देश के कण-कण से प्यार है। आकर्षण के ड़ोर में बन्धे एक सच्चे देश-भक्त के रूप में उन्होंने देश-प्रेम के गीत लिखे और कश्मीरी जन-मानस में सम्मान पूर्वक जीवन जीने की उमंग पैदा की। वे शान्ति चाहते थे, पर मरघट की शान्ति नहीं। उनकी वाणी में जनता के धड़कते हुए हृदयों का संयोग है। कई बार उन्हें शासनाधिकारियों का कोपभाजन बनना पड़ा लेकिन वे कभी अपने पथ से विमुख नहीं हुए। कश्मीरी कविता के मिज़ाज में एक स्वस्थ परिवर्तन लाने में उनका योगदान महत्वपूर्ण है। उन्होंने कश्मीरी कविता को युगीन जीवन के साथ जोड़ दिया और जन-मानस में जागृति का स्वर फूँक कर उसे एक नई दिशा प्रदान की। उनके सम्पूर्ण राष्ट्रीय काव्य आ अध्ययन विभिन्न दृष्टि-बिन्दुओं से किया जा सकता है। एक युग-नेता के रूप में उन्होंने कश्मीरी कविता को विचार की गरिमा और जीवन की उष्णता प्रदान की। उनका राष्ट्रीय काव्य 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध की एक ऐतिहासिक

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

यस मछ़न मंज़ ज़ोर आसन रोज़ि सुई वोन्य कामयाब
वलवला, जोशा, हुबाबा इज़तिराबा हिमत्ताह
पांदि गछ़ि यामत दिलन अन्दर त सुई ग्व इंकलाब।'
– "पयाम-ए-महजूर" – न0-5 – गीत- 26.

वल्वल := उत्साह (अ) उमंग
हुबाब - (अ) मित्रता, दोस्ती
इज़्तिराब - (अ) व्याकुलता, बेचैनी

حباب - (کشمیری) - دلک جوش - ارمان - منبر کامن

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

दस्तावेज़ है जिस के द्वारा कश्मीरी जन जीवन में व्याप्त शताब्दियों पुरानी जड़ता भंग हो गई और ज़िन्दगी नई उम्मीदों के साथ नये उफ़ुक़ (क्षितिज) की तलाश में अग्रसर हुई। उनका राष्ट्रीय काव्य युग की एक महान उपलब्धि है। स्वयं उन्हीं के शब्दों में :-

- 'उपवन में पुष्प-कली सूख गई है
चश्मे में जल की कमी हुई है
बादल बन आकाश में उड़ कर
बरसानी जलधार है मुझ को।'

- 0 -

1- 'छि होछिमुय पोशि थार बागत कमी आवस गमिच नागस
खसुन छुम ओबुर लोगिय आसमान बारान त्रासुन छुम।'
- "पयाम-ए-महजूर" - नं0-2, गीत-9.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

/2/ अ: प्रेम काव्य, :आ: राष्ट्रीय काव्य एवं क्रान्तिकारी काव्य के रचयिता तथा इ: प्रगतिवादी चिन्तन एवं सामाजिक यथार्थ से अनुप्राणित -

" अब्दुल अहद डार 'आज़ाद' "

(सन् 1903 - 1948 ई0)

1- एक स्कूल मास्टर अब्दुल अहद डार
2- 'आज़ाद' की बहुमुखी प्रतिभा
3- एक कर्मवीर के रूप में 'आज़ाद'
4- आरम्भिक युग में विशुद्ध श्रृंगारिक रचनाएँ
5- परम्परा के प्रति आत्म समर्पण
6- मिलन की अतुराई, बतियाने की उत्कट इच्छा एवं मधु पान की चाहत
7- रिसते घावों की मर्मान्तिक पीड़ा
8- सखि-वर्णन
9- श्रृंगार काव्य : कुछ अन्य आकर्षण एवं महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ
10- समाजवादी चिन्तन का प्रभाव : वैचारिक गरिमा
11- स्वस्थ मानव के जीवन व्यवहार में दृढ़ आस्था
12- मानवतावादी जीवन दृष्टि
13- आत्म सम्मान के साथ जीवन जीने की बलवती इच्छा
14- ज़मींदारी प्रथा तथा पूंजीपति व्यवस्था के प्रति आक्रोश
15- विश्वव्यापी जन आन्दोलन का गहरा प्रभाव
16- व्यवस्था में बदलाव की आवश्यकता
17- क्रान्ति का आह्वान : तपते शोलों को बाहों में समेटने का सामर्थ्य
18- इंक़िलाब में अटूट विश्वास
19- व्यवस्था में बदलाव की आवश्यकता
20- नाश और निर्माण का समान रूप से स्वागत
21- 'दरियाव' :आज़ाद की एक बहुचर्चित प्रतीकात्मक नज़्म
22- 'नाल-ए-इबलीस' से प्रेरित 'शिकव-ए-इबलीस'
23- अपनी संस्कृति के प्रति आकर्षित, नास्तिक नहीं
24- विचार प्रधान लम्बी कविताएँ
25- कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

स्वर्गीय अब्दुल अहद 'आज़ाद' आधुनिक कश्मीरी साहित्य के उन प्रतिष्ठित साहित्यकारों में से एक हैं जिन्होंने 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में युग-चेतना को काव्य-वाणी प्रदान करते हुए सामान्य जन के संवेदकणों में सौन्दर्य को तलाशने का सफल प्रयास किया है। कश्मीर घाटी के अन्तर्गत ज़िला बड़गाम में स्थित तहसील वाडूरा के रंगिर गाँव में अब्दुल अहद डार का जन्म सन् 1903 ई० में हुआ।[1] अपने पिता ख़्वाजा सुलतान डार से अरबी और फ़ारसी की प्रारम्भिक जानकारी प्राप्त करके वे अपने बड़े भाई गुलाम अली डार के मकतब में विधिवत् पढ़ने लगे। कई वर्षों तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने दुकानदारी का धन्धा शुरू किया लेकिन शीघ्र ही 16 वर्ष की अल्पायु में पास के एक गाँव ज़ूहामा में अरबी पढ़ाने के हेतु अध्यापक नियुक्त हुए और जीवन पर्यन्त यही उत्तरदायित्व निबाहते रहे। राजनीतिक आन्दोलन के दौरान उन्हें सरकार का कोपभाजन

1- 'सन् 1974 ई० में प्रकाशित 'गाशिर' पुस्तक में श्री मोतीलाल 'साक़ी' ने उनकी जन्मतिथि 13 जून सन् 1903 दी है। आज़ाद के पिता ने पुत्र-जन्म के अवसर पर फ़ारसी भाषा में जन्मतिथि को कलमबन्द किया था जिसका अर्द्धप्रामाणिक उल्लेख 'साक़ी' ने अपनी पुस्तक के 15वें पृष्ठ पर किया है।'

-"गाशिर" -मोतीलाल साक़ी - प्रकाशक - आज़ाद कल्चरल फोर्म - चेडुर - सन् 1974 ई०।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

बनना पड़ा और सन् 1931 ई० में उनका स्थानान्तरण तहसील वाडूरा से इलाक़ा त्राल (ज़िला पुलवामा) में किया गया। वे घर से दूर रहने लगे और उनकी अनुपस्थिति में उनका एक मात्र पुत्र चार वर्ष की आयु में कालकवलित हुआ। पुत्र शोक से वे विह्वल हो उठे। इससे पूर्व वे 'अहद' और तत्पश्चात् 'जानबाज़' उपनाम से शृंगार परक रचनाएँ लिखते थे लेकिन बेटे की मौत ने उसे हर बन्धन से आज़ाद किया और वे 'आज़ाद' कवि नाम से अपनी रचनाओं का सृजन करने लगे। अन्त तक वे इसी नाम से लिखते रहे।[1]

विकट परिस्थितियों से जूझना ही आज़ाद के भाग्य में बदा था। वे अक्सर बीमार रहते थे।[2] युवावस्था में ही काल उनके द्वार पर दस्तक देने लगा और वे बराबर उसकी उपेक्षा करते रहे। सन् 1948 ई० में वे सुरसयार गाँव (तहसील वाडूरा - ज़िला बड़गाम) के सरकारी स्कूल में अध्यापक थे और यहीं बुख़ार और पेट की सख़्त बीमारी से शैय्या ग्रस्त हुए। श्रीनगर पहुँचा कर उन्हें अस्पताल में दाखिल किया गया। एपिनडिसाइटिस (Appendicitis)

श्री मोतीलाल 'साक़ी' आज़ाद को शिष्य-परम्परा में आते हैं। -लेखक-

1- "कुल्लियात आज़ाद" - सम्पादक: डॉ० पद्मनाथ गंजू - जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - सन् 1967 ई०- पृ -38.

2- 'सेहत कामिल की नेमत से हमेशा महरूम (वंचित) रहे।' -कश्मीरी भाषा और शायरी' - भाग-I - आज़ाद जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - सन् 1959 ई० -आज़ाद (परिचय) - डॉ० पद्मनाथ गंजू - पृ०-10.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

के लिये सफल आपरेशन भी हुआ लेकिन काल बराबर उनको राह देख रहा था और 4 अप्रैल सन् 1948 ई० सायं साढ़े सात बजे अस्पताल में ही उनका देहान्त होग गया।[1,2] उनके पार्थिव शरीर को श्रीनगर पहुँचा कर उनके आबाई क़बरिस्तान में दफ़न किया गया और इस प्रकार केवल 45 वर्ष की अल्पायु में ही आज़ाद जवानमर्ग हो गये। जो कल तक क्रान्ति और विद्रोह के नग़मे गा रहा था उसी के अचानक खामोश हो जाने पर कविवर 'महजूर' ने शोक व्यक्त करते हुए लिखा :-

-'आह ! आज़ाद अज़ जहान रोपोश शुद
याकि अज़ जामे बका मदहोश शुद
बहर साल रहलतस महजूर गुफ्त
बुलबुल शीरीन बयान खामोश शुद।'[3]

आज़ाद ने एक महान कर्मवीर के रूप में संकटपूर्ण स्थितियों का सामना किया और निरन्तर कर्म-साधना में लीन रह कर उन्होंने कर्म को ही वस्तुत: धर्म का भव्य रूप समझा। उनके चिन्तन पर कई समकालीन विचारधाराओं और प्रतिभा सम्पन्न विद्वज्जनों का अवश्य प्रभाव पड़ा

1- 'डॉ० शशि शेखर तोषखानी ने यह तिथि 4 अप्रैल सन् 1948 के बदले 14 अप्रैल सन् 1949 ई० दी है जो वास्तव में ग़लत और दुर्भाग्यपूर्ण है।'
-"कश्मीरी साहित्य का इतिहास" -डॉ० शशिशेखर तोषखानी, जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - सन् 1985ई०, पृ०-257

2- श्री पृथ्वीनाथ 'पुष्प' ने अपनी पुस्तक 'आज़ाद' में यह तिथि 14 अप्रैल 1948 दी है जो सही नहीं है।'
- "आज़ाद" - प्रो० पृथ्वीनाथ 'पुष्प' - कल्चरल अकादमी प्रकाशन सन् 1959 ई० - पृ०- 9.

3- " कुलियात आज़ाद" - डॉ० पद्मनाथ गंजू - पृ०- 40.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

है । वे जहाँ कार्ल मार्क्स के समादजवादी चिन्तन से प्रभावित हुए वहाँ महाकवि इक़बाल के व्यक्तित्व एवं सर्जनात्मक प्रतिभा की छाप भी उनपर पड़ी । लेकिन ये प्रभाव उन्होंने एक विशेष सीमा तक ही ग्रहण किये हैं । उनकी रचनाओं का गहन अध्ययन करने के पश्चात् यह बात स्पष्ट होती है कि सर्वाधिक एवं महत्त्वपूर्ण प्रभाव उन्होंने युगीन जीवन से ग्रहण किया है । परतन्त्रता, पूंजीवादी व्यवस्था में शोषण का दमन चक्र, सर्वत्र व्याप्त भुखमरी, धर्मान्धता एवं अज्ञान तथा ज़मींदारी प्रथा के हाहाकार ने आज़ाद को हुस्न-इश्क़ के रंगमहल से नीचे उतर कर तथा ठोस धरती पर पैर जमा कर जीवन के वीभत्स यथार्थ को देखने और अनुभव करने के लिये विवश किया । वे मानव को उसके विशुद्ध मानवीय रूप में देखने के लिये व्यग्र हो उठे और अन्त में जब सहन शक्ति के बान्ध टूटने लगे तो उन्होंने क्रान्ति का आह्वान पूरे साहस और वेग के साथ किया । लगभग पच्चीस वर्षों तक 'आज़ाद' निरन्तर काव्य साधना में लीन रहे ।[1] काव्य-लेखन के प्रयोग काल में उन्होंने विशुद्ध श्रृंगार-परक

1- अ/ "कश्मीरी भाषा में लिखित आज़ाद की कुछ कविताएँ 'संगरमाल' शीर्षक से सात पुस्तिकाओं में प्रकाशित हुई हैं ।

आ/ सन् 1959 ई० में प्रो० पृथ्वीनाथ 'पुष्प' ने इनकी प्रतिनिधि रचनाओं का उर्दू अनुवाद सहित एक संग्रह तैयार किया जो जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी की ओर कवि तथा काव्य-परिचय के साथ उसी वर्ष प्रकाशित हुआ ।

इ/ सन् 1967 ई० में जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी की ओर से "कुल्लियाति आज़ाद" का प्रकाशन हुआ जिसका सम्पादन आज़ाद के एक अन्तरंग मित्र एवं शुभ चिन्तक डॉ० पद्मनाथ गंजू ने किया । माहिर चिकित्सक होने के साथ-साथ डॉ० गंजू एक अनुभवी आलोचक और साहित्य प्रेमी भी हैं । डॉ० गंजू ने प्रस्तुत कुल्लियात में कवि द्वारा लिखित 244 रचनाओं का पाठालोचन के सिद्धान्तों के

{ शेष अगले पृष्ठ पर }

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

रचनाएँ लिखीं । विकास काल में एक नये सोच और चिन्तन से प्रभावित होकर देश प्रेम की अग्नि उनके हृदय में दहक उठी और एक मानवतावादी कवि के रूप में वे जन-मानस को अपनी ओर आकृष्ट करने लगे । जीवन की सार्थकता का रंग उनकी रचनाओं में गहराने लगा । उत्कर्षकाल में उनकी कविताओं में क्रान्ति का स्वर मुखर हो उठा । आमूल परिवर्तन लाने के हेतु वे नाश और निर्माण का समान रूप से स्वागत करने लगे । यह वह समय है जब कश्मीर में डोगरा राज (एक तन्त्र) के विरुद्ध जन संघर्ष पूरे वेग के साथ तीव्रतम रूप में (लक्ष्य प्राप्ति के हेतु) सक्रिय था । यह सही है कि आज़ाद पर प्रगतिवादी चिन्तन का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है । लेकिन साम्यवादी विचार-धारा से कहीं अधिक आज़ाद अपने देश की माटी से जुड़ा था । तत्कालीन युगीन-जीवन से अलग हट कर आज़ाद की काव्य-प्रतिभा का मूल्यांकन करना न्याय संगत नहीं होगा ।

आज़ाद न केवल एक कवि थे अपितु कश्मीरी भाषा के साहित्य के

(पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

आधार पर पाठ-शुद्धि पर विचार करते हुए संग्रह किया है, इनमें मुख्य रूप से ग़ज़लें, नज़्में, रुबायात, क़तात और लम्बी कविताएँ शामिल हैं । पुस्तक के आरम्भ में उन्होंने कवि के जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सम्बन्धित 140 पृष्ठों की विस्तृत भूमिका लिखी है जो वर्णनात्मक अधिक और आलोचनात्मक कम है । संगृहीत रचनाएँ विभिन्न उपशीर्षकों में विभक्त हैं । 637 पृष्ठों का यह संग्रह ग्रन्थ शोध की दृष्टि से पर्याप्त महत्त्वपूर्ण है । आज़ाद की कई ऐसी रचनाएँ भी प्रस्तुत ग्रन्थ में संगृहीत हैं जो सन् 1967 ई० तक कभी प्रकाशित नहीं हुई थी ।

— लेखक —

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रथम इतिहास लेखक एवं शोधकर्त्ता भी थे। कश्मीरी साहित्य का इतिहास लिखने के हेतु उन्होंने जो शोध-कार्य विशेष कर क्षेत्र-कार्य किया है वह उनकी विद्वत्ता, विश्लेषण शक्ति, अपार सहनशीलता, लगन एवं सन्तुलित निर्णय-शक्ति का परिचायक है। अपने शोध निष्कर्षों के आधार पर उन्होंने उर्दू भाषा में कश्मीरी साहित्य का इतिहास लिखा जो उनकी मृत्यु के पश्चात् 'कश्मीरी ज़बान और शायरी' शीर्षक से तीन भागों में राज्य की कल्चरल अकादमी द्वारा क्रमशः सन् 1959, सन् 1962 और सन् 1963 ई० में प्रकाशित हुआ है। इस इतिहास को लिखने में उन्हें 13 वर्ष (सन् 1935 - सन् 1948) लगे हैं। अन्तिम समय रोग शैय्या पर आज़ाद की यह सबसे मूल्यवान पूंजी थी। अनुसन्धान के प्रति आज़ाद की विशेष रूचि थी यद्यपि वे अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे।[1] लेकिन उनका अध्ययन बहुत गहरा था और उनकी नज़र काफ़ी बालिग़ थी। 'कश्मीरी ज़बान और शायरी' इसका सर्वोत्कृष्ट प्रमाण है।

काव्य साधना के आरम्भिक युग में आज़ाद शृंगार परक रचनाओं के सृजन में लीन रहे। परम्परा के प्रति यह उनका आत्म समर्पण था।

1- "सन् 1925-26 ई० में आज़ाद ने पंजाब यूनिवर्सिटी से 'मुंशी आलिम' की परीक्षा पास की। कुछ समय के बाद 'मुंशी फाज़िल' की परीक्षा देने के लिये तैयार हुए लेकिन बीमारी की वजह से परीक्षा में बैठने से रह गये।"
-"कश्मीरी भाषा और शायरी" भाग-I - आज़ाद - (परिचय)
डा० पद्मनरथ गंजू - पृ०- 10

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पर बहुत समय तक वे अपने समकालीन युग की उपेक्षा न कर सके फलत: विकासयुग में ही आज़ाद जन-जीवन के साथ जुड़ गए और महबूब के बदले देश और देशवासियों की पीड़ा से अभिभूत हो उठे । यहाँ इस बात को स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि अन्तिम समय तक वे बराबर शृंगार परक रचनाएँ भी लिखते रहे लेकिन इस दृष्टि से उनके काव्य का आरम्भिक युग ही महत्त्वपूर्ण है । इन शृंगारिक रचनाओं में कहीं प्रेम के अफ़सानों का ज़िक्र है[1] तो कहीं आशिक़ी के कारोबार की बात है,[2] कहीं प्रेमवाटिका में नव बसन्त के पुन: खिल उठने की सूचना है[3] तो कहीं प्रेमोद्यान के बुलबुल[4] की निष्ठुरता पर आँसू बहाये गए हैं[5]। कहीं पूर्ण

1- 'ओ निर्मोही ! क्या कहूँ मैं तुझ से प्रेम के अफ़साने'
ʃहा लोलि रस्त्यो लोलिको अफ़्सानि वनै क्या ʃ
- "ग़ज़ल - कुल्लियात" पृ0- 367

2- 'आशिक़ी का कारोबार है या फ़ित्नए बाज़ार है'
ʃआशिक़ी हुन्द कारोबार छा फ़ित्नये बाज़ार छा ʃ
- ग़ज़ल " कुल्लियात" पृ0-405.

3- 'सखि ! प्रेम वाटिका में आया है नव बसन्त'
ʃलोलि बागस आवे नव बहार व्यसिये ʃ
- 'वनुवुन' - कुल्लियात पृ0-424.

4- बुलबुल - कश्मीरी → बिलबियुर ʃपुंलिंगʃ
अरबी - फ़ारसी भाषाओं में बुलबुल स्त्रीलिंग है । कश्मीरी काव्य में बुलबुल कई प्रतीकात्मक अर्थों में व्यवहृत हुआ है । शृंगार काव्य में बुलबुल प्रेमी का प्रतीक है । — लेखक —

5- 'प्रेम वाटिका का वाचाल बुलबुल निश्चिन्त हो कर छोड़ चला'
ʃ लोलि बागुक बोलवुन बुलबुल ग्योलुम अवड़ालिये ʃ
- ग़ज़ल - कुल्लियात पृ0-429.

- पेरवाह - नगमए कश्मीर - मुसन्नफ़ी ज़ानी - उड़ालिये

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

समर्पण की बात है है तो कहीं रूठे हुए सजन प्रिय को पुनः आकर्षण-पाश में बान्धने की भरसक चेष्टा की गई है ।[1] इस प्रकार प्रेम अपने नाना रंगों में व्यक्त होकर आज़ाद के श्रृंगार काव्य में सौन्दर्य कण बिखेर देता है । आज़ाद की रचनाओं में वर्णित 'लोल' (प्रेम) बड़ा नाजुक है । एक बार जब पाश में बान्ध देता है तो मस्ती छा जाती है । जब चुभता है तो नश्तर के समान हृदय को चीर डालता है । इसकी स्मृति मधुर भी है, तड़पाने वाली भी है, रुलाने वाली भी है और क्षणों में जीवित रहने के लिये विवश कर देने वाली भी है । स्वयं आज़ाद, ग्रामवासी थे अतः ग्रामीण जीवन में व्याप्त सचाई और सादगी ही इन लोल-गीतों का प्रमुख आकर्षण है । यहाँ आज़ाद नहीं बल्कि उसका नादान हृदय बोल रहा है ।[2] यहाँ राष्ट्रीय-काव्य की वैचारिक गरिमा अथवा क्रान्तिकारी काव्य का घन-गर्जन

1- 'निछावर प्राण सजन प्रिय तुझ पर, सुन प्रेम-सदा'
(जानानि करै जान फिदा लोलि सदा बोज़)
" सदा " - (अरबी) - आवाज़
- ग़ज़ल - कुल्लियात पृ0-450.

2- 'प्रेम व्यथा की करुण कथा में कह देती, अहलेदिल यदि होते
हृदय के घाव दिखाती, खुद घायल यदि होते ।
यदि ये सितम ज़ियादः या कम हुए होते उन पर
बार बार सदा मेरा यों शून्य में खो जाता !
प्रेमाग्नि में बदन जल रहा मेरा, जा बैठे परायों के संग
काश ! ऐसे ज़ालिमों को ख़ौफ़े खुदा होता ।'

(लोलि व्यदाख बावहस अहलिदिला आसिहे
ज़ख़्मि जिगर हावहस दोदि लदा आसिहे
तस ति गोमित यिम सितम आसह नै ज़्यादि कम
ज़ायि गछान दम-ब-दम म्योन सदा आसिहे
नारि म्य ज़ोलनम बदन ब्यूठ गछित परज़नन
काशा यिथ्यन ज़ोलमन खोफि खोदा आसिहे ।'
-" कुल्लियात " - ग़ज़ल पृ0- 434

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

या उद्घोष नहीं है बल्कि 'भरे भौन मैं करत हैं नैननु हीँ सब बात'[1] वाली स्थिति की नज़ाकत है या पलकों का थरथरा कर ऊपर उठना अथवा नीचे गिरना ही पर्याप्त है।

आज़ाद ने इश्क़-इलाही की बात नहीं की। बहुत समय बीत चुका था ये बातें सुनते और सुनाते। लकीर पीटने में उन्हें रुचि नहीं थी। इस धरती पर रहने वाले एक दूसरे के प्रति आकर्षित दो धड़कते हृदयों के हृदय-तार निरन्तर छेड़ने में ही उन्हें आनन्द की प्राप्ति होती है। निस्सन्देह उनमें अद्भुत सर्जनात्मक शक्ति थी। संयोग और वियोग की विशिष्ट स्थितियों को अत्यन्त बारीकी के साथ शब्दों का परिधान पहना कर मूर्त्त रूप में प्रस्तुत किया है।[2] यहाँ संयोग-सुख के आनन्द के साथ-साथ वियोग की तड़प, छटपटाहट एवं टीस काव्य-पंक्तियों में मुखर हो उठी हैं।[3] निस्सन्देह प्रेम जीवन की एक

1- '' कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं नैननु हीँ सब बात ।।'
- "बिहारी - रत्नाकर" सम्पादक : जगन्नाथ दास रत्नाकर
प्रकाशक - ग्रन्थकार, शिवाला-बनारस, तृतीय संस्करण -1960ई0
- पृ0- 19.

2- 'आज हृदय खुशहाल है मेरा, कह दो उनसे - सैलानी ही आ जाते
सखि ! कुसुम काया निछावर उनपर, कह दो उनसे - सैलानी ही आ जाते
§ अज़ छम दिलस खोश हा'लिये वा'नितोस यियो ना सा'लिये
ही पान ब्व वथरस बा'लिये वा'नितोस यियो ना सा'लिये। §
- "कुल्लियात" - ग़ज़ल पृ0-517.

3- 'सखि ! कह देती दिलबर से प्रतिज्ञा पूरी कर लेते
रंजिश छोड़ दर्शन देते क़दम ठहराते बतियाते।'
§बा'लि च़ि वनतय दिलबरस वा'दि पनुन वफा करे
त्रावि मला'लि हावि रोय थावि कदम कथा करे।§
-"कुल्लियात" ग़ज़ल पृ0- 569.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अनिवार्यता है । प्रेम ही जीवन्त होने का लक्षण है और अपने अस्तित्व को पहचानने का सशक्त साधन । भौतिक जीवन की अन्य आवश्यकताओं के साथ-साथ प्रेमानुभूति जीवन को एक नया आयाम प्रदान करती है । आज़ाद को जीवन जीने में अटूट विश्वास है । भला जीवन को हसीनतरीन (सुन्दरतम्) बनाने की उत्कट इच्छा उन्हें प्रेम के अस्तित्व को कहाँ नकारने देती । आवश्यक नहीं कि इस पर आध्यात्मिक रंग चढ़ाया जाये । विशुद्ध सोने पर सोने का मुलम्मा चढ़ाने की क्या आवश्यकता । आज़ाद के प्रेम काव्य में स्थानीय रंग पूरी शोख़ी के साथ निखर उठा है । वे कश्मीर के गोशे गोशे से परिचित थे अत: प्रेम वर्णन में स्थानीय रंग छटा के समावेश से उन्होंने अत्यन्त आकर्षक मौलिक उद्भावनाएँ की हैं । कश्मीर के प्राकृतिक सौन्दर्य से उन्होंने अपनी काव्य-नायिका के हेतु प्रसादन (Pleasing - प्रसन्न करने वाला) की सामग्री एकत्र की है । वस्तुस्थिति के प्रभाव को गहराने के हेतु प्रकृति ने कुशल रंग कर्मी की भूमिका भी निबाही है । आशिक़ अपने माशूक की तलाश में जाने कहाँ कहाँ पहुँच जाता है । चितचोर पिया की निगाहें भी तो ग़ज़ब ढा रही हैं :-

- "टोह लगाई जगह जगह, पर हुई न भेंट धोखे में आई
त्राल में है या गुलमर्ग में ! हन्दवारा में है या ऐशमुक़ाम ।
अंजन लगा कर मृग नयनों से हृदय चुराया ताक में रह कर
नरगिस है या सौन्दर्य कलश ! मधु प्याले हैं या बादाम ।

1- " नेब ह्योतुमस जायि जाये वुछनुक थोवनम फ़रेब
त्राल छा, गुलमर्ग छा, हन्दिवारि छा मुकाम छा

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

विरह दग्ध नायिका को लोकलाज का भय नहीं । उसने तो प्रेम-मदिरा का पान किया है । कभी कभी उसे ऐसा प्रतीत होता है कि कोई अज्ञात शक्ति उसका दिशा निर्देश कर रही है । हृदय चूँकि परवश है अतः बुद्धि और तर्क बेमानी हो गये है । वह अपने रूठे हुए बालम को मनाने का हर सम्भव प्रयास करती है । न लोकलाज का भय है और न लोकापवाद की चिन्ता । वह तो प्रेम-पथ पर सब कुछ दाँव पर लगाने के लिये बेचैन है । कभी कभी तो वह हृदय मसोस कर रह जाती है[1] । धीरे-धीरे उसे विश्वास होता है कि हठ से ज़्यादा मनुहार का महत्व है । अतः रिसते हुए घावों की मर्मान्तिक पीड़ा को स्मृति दिलाते हुए विनीत शब्दों में सजनप्रिय को मनाने की चेष्टा करती है और इस प्रकार विरहाकुल हृदय की समस्त वेदना उसके विलापमय निवेदन के द्वारा मुखर हो उठती है :-

-'निछावर शीश तेरे चरणों पर, साजन ! उचित उपाय तो ढूँढ

तोड़ के बन्धन छोड़ चले हो बाला को, शेष रह गये बहते घाव

मन ही मन तो गल गई मैं प्रेमाग्नि में दग्ध हो उठा हृदय मेरा

छोड़ दे अब बचकानापन मज़ाक़ की बातें, साजन मेरे !

[पूर्व पृष्ठ का शेष भाग]

हरनि चमव सोरमि लांगिथ न्यून ज़ांगिथ म्योन दिल
यम्बरज़ल छा, खांसि छा मस प्यालि छा बादाम छा ।'

- "कुल्लियात आज़ाद" - ग़ज़ल पृ०- 489.

1- 'किसे कहूँ यह अफ़साने, चुपके से खिसक गये सजनप्रिय
मन मसोस के रह गई अप्सरा, चुपके से खिसक गए सजन प्रिय ।'
[कस बावि यिम अफ़सानि तय चूरे ग़ोलुम जानानि तय
हूरे थोवुन अरमानि तय चूरे ग़ोलुम जानानि तय ।]

-"कुल्लियात आज़ाद" ग़ज़ल - पृ०-618.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

लोग करें कितनी बातें मनमीत हो तुम केवल मेरे
हम दोनों को याद हैं अब तक वे वादे और कसमें
सह ली निन्दा कितनी मैं ने, होना पड़ा लज्जित कितना
वह घड़ियाँ ताक़ियामत बिसर न पाऊँगी साजन ।'[1]

आज़ाद के श्रृंगार काव्य विशेष कर वियोग श्रृंगार में सखि-वर्णन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है । विरहिणी के लिये तो सखी ही एकमात्र सहारा है । सखी के सम्मुख वह अपनी बात आत्मीयता के साथ कह देती है । उसे विश्वास है कि सखी के सान्निध्य से ही दुख बंट सकता है क्योंकि इस संकटकालीन स्थिति में जीने का एकमात्र सहारा तो वही है । प्रेम उपवन में जब नव बसन्त खिल उठता है तो प्रेमिका को उसकी सूचना सखी निमन्त्रण-पत्र के द्वारा इस प्रकार देती है :-

-'सखि ! प्रेम उपवन में खिल उठा नव बसन्त
उपवन के जोबन का आनन्द उठा, री सखी !
खिल उठे हैं पुष्पोद्यान टिकने वाले
लाखों अप्सरायें निकली निरखने उनको
सखि ! महक उठा प्रत्येक स्थल खुशबू से,
छोड़ दे पुरातन क़िस्से और कथायें
उतार फेंक बेडियों के बन्धन

1- " सर आलवय ब्व पादन पायस प्यतो निगारो
त्रांविथ म्य बालि ग़ोलुहम थांविथ सितम निगारो । निगार - (फ़ा०)
अन्दरी गजिस ब्व होले दिल छुम दज़ान लोले महबूब - माशूक़
शुरि बाशि तय मखोले क्या त्रावतम निगारो
कांरतन कथे वते लुख माशूक़ म्योन चुई छुक
असि दोन छु वादि अज़लुक दुई तय क़सम निगारो ।
कांच़ाह हेच़िम मलामत कांछ़ाह तुजिम नदामत
तिमसात ताक़यामत कर मशनम निगारो ।'
- "कुल्लियात आज़ाद" - 'ग़ज़ल' - पृ०- 509.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सखि ! लुत्फ़ उठा जोबन के आषाढ़ और श्रावण का
उपवन के जोबन का आनन्द उठा, री सखी !'[1]

विरह दग्ध प्रेमिका अपने आँसुओं को मसि से पत्र लिख कर भीतर की व्यथा को मुखर कर देना चाहती है । सम्भवत: उसे दूसरों पर विश्वास नहीं । जाने वे उसके प्रिय तक सन्देश पहुँचाते भी हैं या नहीं । वह इन्हीं पत्रों को अपनी दग्ध-अवस्था का दस्तावेज़ बनाना चाहती है । मात्र सजन प्रिय के नाम स्मरण से ही वेदना गल कर अश्रुकणों के रूप में प्रवाहित हो उठती है । चित चोर पिया की निर्दयता तो देखते ही बनती है :-

-'क्यों न लिखूँ मैं प्रेम-पत्र, कामदेव ने चुरा लिया, हृदय मेरा
उतर गया है रंग, अरूणाभ वस्त्राभूषण का
भौंहों के खंजर सम्मुख कस के बेवफा, कहाँ गये वध करके ?
नहीं लगाया घाव पर मरहम, कामदेव ने चुरा लिया,
हृदय मेरा ।'[2]

प्रिय मिलन तो विरहिणी को तपस्या का वरदान है, जीवन की सिद्धि है और है - हृदय का सन्तोष धन । इस पर सौ-सौ जीवन-

---

1- " लोलि बागस आवय नव बहार व्यसिये
नेरि छावुनि गुल त गुलज़ार व्यसिये
आयि फोलि फोलि पोशि वुनि पोशिवारे
द्राय छावान लछि बज़ि अछि दारे
जायि जायि फोर मुश्किन दार व्यसिये
नेरि छावान गुल त गुलज़ार व्यसिये
त्रावि प्रान्य किसि तय अफ्सानय
त्रावि ज़ोल ज़ोल पंजरि त ज़ोलानय
छावि यावनुक श्रावुन त हार व्यसिये
नेरि छावुनि गुल त गुलज़ार व्यसिये ।'
-"कुल्लियाति आज़ाद" -वनवुन - पृ0-424.

(शेष अगलेग पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सुख निछावर । संयोग की अनमोल घड़ियों में अकस्मात् उसके जीवन में बसन्त खिल उठता है, सपने साकार हो जाते हैं और ज़िन्दगी का हर पल सार्थक प्रतीत होता है । विरह दग्ध विलाप नग़्मों में बदल जाते हैं और ज़िन्दगी की वीरानियों में चहकता बुलबुल रस घोल देता है । जोबन निखर उठता है, रस सिक्त हृदय बतियाने के लिये मचलता है और उमड़ता आनन्द स्रोत भीतर से बाहर प्रवाहित हो उठता है :-

- 'ईद है मेरे लिये क्यों न मनाऊँ मैं खुशियाँ
मैं ने उन्हें देखा जो, कुछ क्षण पहले
सुना दी मैं ने आप बीती निज व्यथ-कथा
मैं ने उन्हें देखा जो, कुछ क्षण पहले
आकर्षक है क़द उनका, सरो जैसा
चश्मे बद दूर, जाने किस माहिर
कारीगर ने गढ़ लिया है उनको
मैं ने उन्हें देखा जो, कुछ क्षण पहले ।'[1]

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

2- " ल्यख स ना लोलको नामे म्य न्यूनम कामदोवन दिल
कज़िल सपनिम वोज़िल जामे म्य न्यूनम कामदोवन दिल
खंजर भुमि रो-ब-रो चारिथ चोलुम कोत बेवफ़ा मारिथ
छोकस कोरनम न महलामे म्य न्यूनम कामदोवन दिल

- "कुल्लियात आज़ाद " - 'ग़ज़ल' - पृ0- 492.

1- " ईद छम तं करना शादिये दोदव वुछुम आंदि आंदिये
बंवमस बनेमित दांदिये दोदव वुछुम आंदि आंदिये
सरताज़ि तांमसुन्द सखक़द तथ दूर आंसिन चश्मिबद
गोरमुत छु कांमि वोस्तांदिये दोदव वुछुम आंदि आंदिये ।"

- कुल्लियात आज़ाद - 'ग़ज़ल' पृ0-541.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आज़ाद की श्रृंगारिक रचनाओं में केवल नायिका ही विरहाकुल नहीं है नायक के दीवानापन ने भी उन्हें सृजन के लिये प्रेरित किया है। यहाँ आशिक़ माशूक़ की हर अदा पर मोहित है। प्रकृति के नाना छवि-चित्रों के साथ प्रियतमा के रूप-सौन्दर्य की तुलना करके वह क्षणिक को स्थायित्व प्रदान करने की चेष्टा करता है। उसका अनुभूतिशील हृदय अभिव्यक्ति के हेतु उसी प्रकार मचलता है जैसे कोई पहाड़ी झरना अपनी मस्तानी चाल में झर-झर झर कर (झर झराते हुए) अपने प्रवाह मार्ग को पाने के हेतु मचलता है। आकाश के पक्षी गण भी उसकी महबूब के प्रति आकर्षित है। जिस के दीपित मुख मण्डल से आकाश में काँधने वाली बिजलियाँ काँप उठती हैं और अप्सराओं का रूप सौन्दर्य भी फीका पड़ जाता है।[1]

अत: यह कहना अनुचित न होगा कि आज़ाद का रस-छलकता कवि-हृदय इन्हीं ग़ज़लों के द्वारा लोक मानस को हसीन अनुभूतियों में रंग भरने के हेतु मचल उठता है। मिलन की अतुराई, बतियाने की उत्कट इच्छा तथा मधु-पान की चाहत से विह्वल साजन-सजनी को किसी बाह्य बन्धन अथवा लोक लाज की चिन्ता नहीं।[2]

1- "कुल्लियात आज़ाद" - ग़ज़ल पृ0-503.

2- ' तमन्ना थी बाहु पाश में जकड़ जाने की
तब कहीं चैन मिलता हृदय को।
जान लेवा सज्जन रोष युक्त यदि आँखें अमर उठाता
उपवन सदृश हृदय खिल उठता
मिट जाती प्रेम तपिश भीतर की
तब कहीं चैन मिलता हृदय को।
बालपन का साथी यदि प्रतिज्ञा भंग न करता
रोग मुक्त हो गया होता हृदय कब का

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आज़ाद का शेष काव्य तर्कमय बुद्धि से प्रेरित प्रभावित है । इन रचनाओं में विचार और चिन्तन की प्रधानता है और उन कविताओं में मासूमियत (भोलापन) का आकर्षण है ।[1] यहाँ चिन्तन की तपिश है और वहाँ वेदना की विवृत्ति, यहाँ हर बात में सारी दुनिया शरीक है और वहाँ केवल 'वह' और 'मैं' तक बात सीमित है । यहाँ विस्तार है और वहाँ घनत्व । अतः 'लोल' का व्यवहार आज़ाद ने पूरे लोल के साथ किया है । डा० पद्मनाथ गंजू के कथनानुसार ' इसे तसव्वुफ़ की जंजीरों से आज़ाद करके एक स्वस्थ भौतिक आधार प्रदान किया है । संगीत के स्वर से सुरीला बना दिया है । भाषा और मुहावरों के समुचित प्रयोग से अत्यन्त नाज़ुक अनुभूतियों को अश्आर में समो दिया है और 'लोल' को माधुर्य से भी सिक्त कर दिया ।'[2]

(पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

शत्रु बर्फ सदृश गल जाते ईर्ष्या वश
तब कहीं चैन मिलता हृदय को ।'

(तमन्ना ओसुम तनि तन रलिहे अदि सम्बलिहे म्योनुई दिल
खशाम होत मारमोत चश्मि थोद तुलिहे बाग ज़न फोलिहे
म्योनुई दिल
जिगरस म्यानिस लोल शार च़लिहे अदि सम्बलिहे म्योनुई दिल
आदुनुक यार म्योन वादि नय डलिहे साति अकि बलिहे
म्योनुई दिल)
रश्क स्वत्यि दुश्मन शीन ज़न गलिहे अदि सम्बलिहे म्योनुई दिल ।'
- "कुल्लियात आज़ाद "- 'गज़ल' पृ०-438.

1- 'कामदेव मुँह पर से उठा नक़ाब, बडी लगन से चढा दूँगी मैं श्वेत
- और गुलाबी फूल
बेवफ़ा न बन जाना बिलकुल, बडी लगन से चढ़ा दूँगी मैं श्वेत और
-गुलाबी फूल
(मर्दानो परदि रोयस तुल ब्व लागे दरदि ही तय गुल
मर्सा लाग बेवफ़ा बिलकुल ब्व लागे दरदि ही तय गुल)
-"कुल्लियाति आज़ाद " - गज़ल - पृ०-627.

2- "कुल्लियाति आज़ाद " - प्रस्तावना - पृ०-54.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सौन्दर्योपासक रस सिक्त श्रृंगारिक कवि आज़ाद के काव्य व्यक्तित्व का दूसरा पहलू है - मानवतावादी जीवन-दृष्टि से प्रेरित प्रगतिशील कवि का व्यक्तित्व । विशिष्ट चिन्तन एवं दर्शन से प्रभावित आज़ाद एक युग-द्रष्टा कलाकार के रूप में नवीन विचारधारा को प्रस्तुत करने में सक्रिय रहे । श्रृंगार के स्वप्न-लोक से नीचे उतर कर इन्सान और उसकी इन्सानियत के खण्ड़ित रूप ने कवि को मनुष्य के भौतिक अस्तित्व पर कुछ गहराई के साथ सोचने के लिये विवश किया । फलतः रसमय अनुभूति का स्थान तर्कमय विचार ने ले लिया और मानवतावादी चिन्तन उनकी रचनाओं में प्रबल रूप से व्यक्त होने लगा । आज़ाद युगीन जन-जीवन से बेहद प्रभावित हुए । स्वयं उन्हें जीवन जीने में अटूट विश्वास है । वे मानव के स्वस्थ भौतिक जीवन के प्रति आकृष्ट हैं । नरक स्वरूप परतन्त्र देश में पलने वाले असहाय जन-समूह की दीन हीन दशा को देख कर वे व्यथ-वेदना से विह्वल हो उठे थे । अज्ञात दैवी-शक्ति के प्रति उनमें उतनी रुचि नहीं है जितनी कि एक मानव के सरल जीवन-व्यहार के प्रति रही है । तमाम मानवीय गुणों से युक्त प्राणी के सामान्य जीवन में ही वे अद्भुत और अलौकिक को तलाशते हैं । जीवन के यथार्थ से परिचित होकर अब मानव ही उनके आकर्षण का मूल केन्द्र बन जाता है ।[1] विशुद्ध मानवीय गुणों से सम्पन्न मनुष्य के कर्म-क्षेत्र में ही उन्हें सौन्दर्य की झलक देखने को मिलती

1- " आज़ाद की शायरी का उज्जवलतम पहलू उनकी इन्सान दोस्ती है । "
- 'आज़ाद' - श्री पृथ्वीनाथ पुष्प - पृ०- 10.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

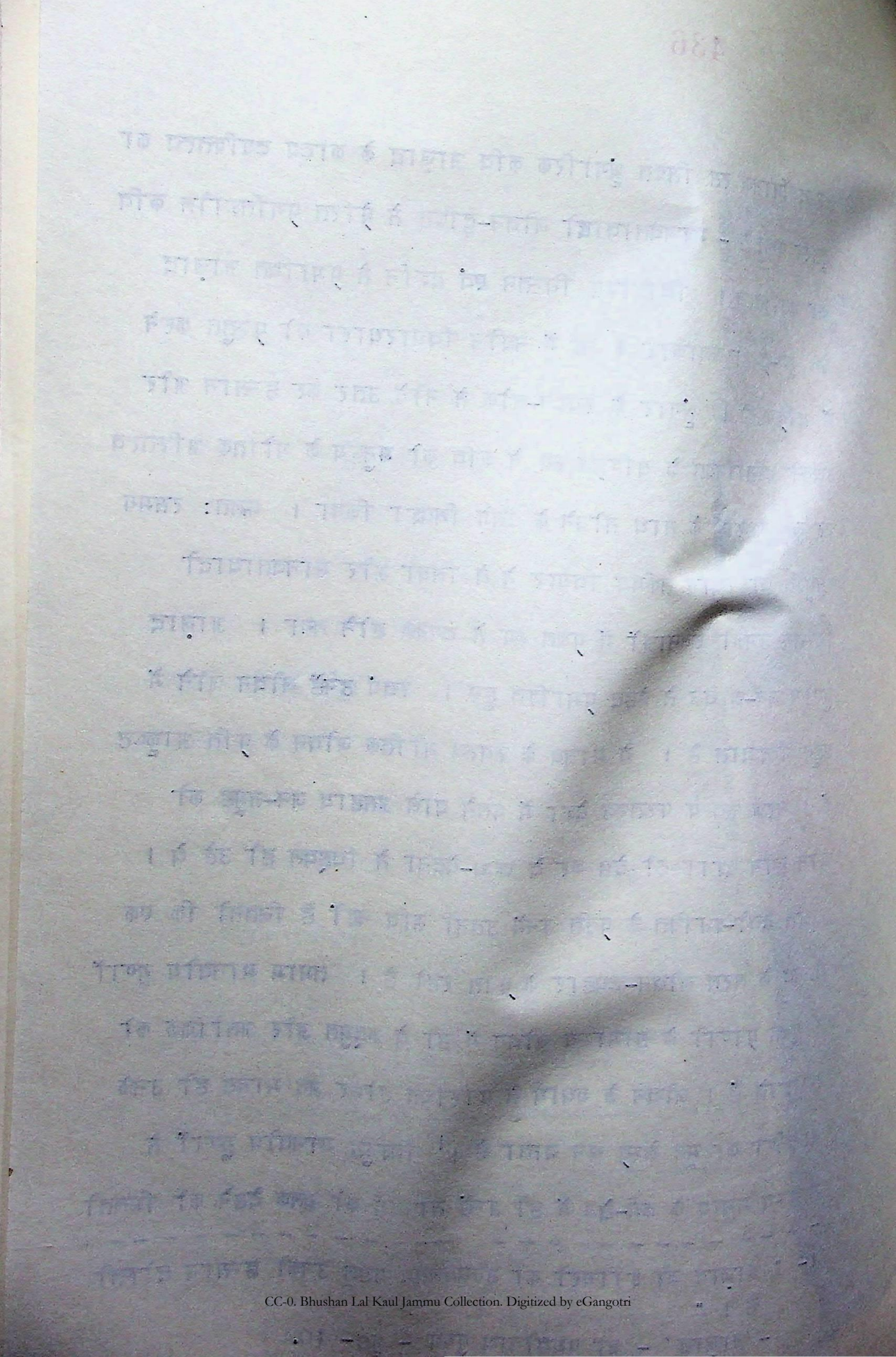

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

है । यही मानव धर्म, सम्प्रदाय, वर्ग, कुल, रंग भेद आदि कारणों से टुकड़ों में बट जाता है । मानव के इस टुकड़ों में बटे हुए व्यक्तित्व को देख कर कवि क्रुद्ध हो उठता है । इससे बड़ कर दुर्भाग्य और क्या हो सकता है कि आज मानव स्वयं अपने अहंकार की तुष्टि के हेतु विनाश के साधन जुटाने में तत्पर दिखाई देता है । आज का तथाकथित मानव ही मानव रक्त की पिपासा से अशान्त हो उठा है । मानव के इस दानवीय व्यवहार को देख कर आकाश के सितारे भी उसके अमानवीय चिन्तन पर अश्[अश्रा[1] करके रह जाते हैं :-

– 'रे मानव ! थे बुद्धिमता के ज्योतिपुंज, बन गये हो दाहक
– अग्नि
बदनाम किया है मानवता को, निर्दयी रे मानव ।
प्यार बाँटने हेतु तुझे जन्म दिया था स्रष्टा ने
तुम ने शुरू किया व्यापार दीन और ईमान का
अपने ही उपवन में मूल उखाड़ कर सींच रहे हो पत्ते{नादान}
अपने हाथों अपना ही घर उजाड़ रहे हो, रे मानव !'[2]

दीन – {अरबी} – धर्म ,
ईमान– {अरबी} – धार्मिक विश्वास

1– अश्[अश्रा – {अरबी} – आश्चर्य, तअज्जुब

2– ' यि ओसुख गाट जास्क नूर यि लोगुथ नार इंसानो
करिथ इंसानियत बदनाम हा बेआर इंसानो
मुहब्बत बांगरावुन कियुत करयोनख कोदरतन पैदा
ये लोगुथ दोनो-ई-मानस करून बापार इंसानो
दिवान छुख पननिसुई वागस यि मूलन द्रोत पातरन सग
गरस पननिस यि छुख पानथ करान तुरपार इंसानो ।'
– "कुल्लियाति आज़द" – नज़्म – पृ0– 374.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मानवतावादी आज़ाद एक स्वस्थ मानव के जीवन व्यवहार में ही अपने ईश्वर के दर्शन पाकर सन्तुष्ट हो जाता है । जीवन के प्रति उनका निजी दृष्टिकोण है जिस पर किसी वर्गगत विश्वास का गहरा या हल्का रंग नहीं चढ़ा है । वे एक सच्चे इन्सान के प्रति समर्पित हैं । मानव प्रेम की मदिरा पी कर वह मस्त है, बदमस्त नहीं । उनका मानव प्रेम विश्व-बन्धुत्व की सीमाओं को छूता हुआ मूलत: उनके स्वस्थ एवं परिपक्व चिन्तन का आभास देता है । यह वह अवस्था है जहाँ पहुँच कर अपने और पराये की भावना शेष नहीं रहती । बद्ध-हृदय की मोह श्रृंखलाएँ टूट टूट कर बिखर जाती हैं और निर्द्वन्द्व होकर कवि-हृदय पुकार उठता है :-

> -'अलग ही है अफ़साना मेरा और अलग सामान मेरा
> अलग ही है मधुशाला मेरी और अलग मधु-कलस/चषक
> दोन वाले ! है दोन तुम्हारा अपना और मेरा अपना
> ईश्वर है ईमान तुम्हारा मुद्दआ मेरा इन्सान ।
> मन्दिर, मस्जिद और धर्मशालाओं में मन मुदित है -
> ईश तुम्हारा
> प्रेमाकर्षित एकान्त, व्यथित हृदय में सन्तुष्ट है ईश मेरा ।'[1]

इस प्रकार मानवतावादी आज़ाद एक स्वस्थ मानव के विकासोन्मुख

1- 'अफ़साने जुदा साज़ तय सामाने जुदा म्योन
भोय खाने जुदा शीशि तय पैमाने जुदा म्योन
दोनदारि च्य छुई दोन पनुन छुम म्य पनुन दोन
ईमान खोदा चोन तं इन्सान मुदा म्योन
मन्दरन मश्रीदन धर्म सालन चोन खोदा खोश
लोलस तं कुनिरस दरदं दिलस राज़ खोदा म्योन ।'

- "कुल्लियाति आज़ाद" - ग़ज़ल - पृ0- 410-411.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

चिन्तन एवं प्रेम-व्यापार में अपने ईश्वर के दर्शन पाकर सन्तुष्ट हो जाता है। दिखावे की दुनिया में स्वार्थ प्रेरित व्यवहार के प्रति उन्हें कोई रुचि नहीं। यही कारण है कि सच्चाई के पथ पर वे इन्सान को संगठित होकर न केवल संघर्ष के हेतु निमन्त्रण देते हैं[1] अपितु सचेत भी करते हैं।[2] मानव प्रेम को मदिरा पी कर वे मस्त हैं, जीवन के प्रति उन का अपना निजी दृष्टिकोण है - अत्यन्त स्वस्थ, भौतिक एवं व्यावहारिक इन्सान ही उनका लक्ष्य रहा है और इन्सान ही आदर्श।[3] आज़ाद के काव्य व्यक्तित्व का तीसरा महत्त्वपूर्ण पहलू है - देश प्रेम की ज्वाला से प्रज्वलित क्रान्तिकारी कवि का व्यक्तित्व। परतन्त्र देश में रहने वाले देश वासियों के विपत्ति-ग्रस्त जीवन को न केवल उन्होंने क़रीब से देखा था बल्कि स्वयं ऐसा जीवन जीने के लिये विवश

1- 'सच्चाई की डोर खींच ले, एकमत होकर
खेल सच्चाई की शमशीर से
रिन्द मस्तानों में नव जीवन का होगा संचार
खेल सच्चाई की शमशीर से।'

॥ पज़ि ये रज़िलम कुनरचि वेरे पज़ि शमशीरे गिन्दुना कर
रिन्द मस्तानन ज़िन्दगी फेरे पज़ि शमशीरे गिन्दुना कर ॥

- "कुल्लियात आज़ाद" - ग़ज़ल - पृ0- 372.

2- 'इन्सान! होश में आ, बेपरवाह मत हो जा
मस्तानी आँखों में सुरमे के बदले 'हाए'× न लगा।'

× 'हाए' - ॥कश्मीरी॥ - धुआँसा, धुएँ की कालिख, धुएँ के कारण वस्तुओं पर चढ़ी हुई काली परत

॥ पायस च्यतो इंसानि बेपरवाय चि मो लाग
मस्तानि चश्मन सोरम कने हाए चि मो लाग ॥

- "कुल्लियाति आज़ाद" ग़ज़ल पृ0-400

3- 'आज़ाद' ने हर प्रकार के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक शोषण के विरुद्ध अपनी सशक्त आवाज़ उठाई। इन्सान को

॥ शेष अगले पृष्ठ पर ॥

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

हुए थे । उन्हें दृढ़ विश्वास है कि अभिशाप से केवल क्रान्ति द्वारा ही मुक्ति मिल सकती है । क्रान्ति का सम्बन्ध केवल बाह्य जीवन से ही नहीं है अपितु इस का एक व्यापक वैचारिक धरातल भी है । हमारी सोच में, विश्वासों में, व्यवहार में, कर्तव्य कर्म में, रूढ़ि ग्रस्त रुग्ण मान्यताओं और अन्ध विश्वासों में - अर्थात् ज़िन्दगी के हर क्षेत्र में क्रान्ति की आवश्यकता है । बाह्य जीवन के साथ-साथ चिन्तन के धरातल पर भी क्रान्ति का स्वागत होना आवश्यक है । वस्तुत: सम्पूर्ण जीवन दृष्टि के आमूल परिवर्तन में ही 'क्रान्ति' शब्द की सार्थकता निहित है और इसके पीछे एक स्वस्थ वैचारिक धरातल का होना नितान्तावश्यक है । क्रान्ति ख़ालिस नारे बाज़ी नहीं अपितु तपते शोलों को बाहु-पाश में समेटने का सामर्थ्य दर्शाती है ।[1]

राजनीतिक परतन्त्रता के परिणाम स्वरूप देश की अर्थ-व्यवस्था छिन्न भिन्न हो चुकी थी । भूख, जड़ता एवं अज्ञान का तमसान्धकार सर्वत्र व्याप्त था । राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं मानसिक पराभव के युग में ग़ुलामी अभिशाप बन कर इन्सानी ज़िन्दगी को ज़हर आलूदा

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेषांश भाग §

उनका लक्ष्य रहा है और इन्सान ही आदर्श । इन्सान के बड़प्पन और महत्त्व के हृदयाकर्षक नग़मे आज़ाद ने गाये हैं - - - - मानव चेतना को जागृत करने का सशक्त साधन उन्होंने काव्य को माना ।'
- "आज़ाद " - प्रो० पृथ्वीनाथ पुष्प - पृ०- 16-17.

1- "आज़ाद के क्रान्ति दर्शन में केवल नारे बाज़ी नहीं, मानवीय स्थिति को बदलने के लिए एक सच्ची तड़प है ।'
-"कश्मीरी साहित्य का इतिहास" - डा० शशिशेखर तोषख़ानी- पृ०-254.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

बना रहा था । आश्चर्य इस बात का है कि सब कुछ देखते और निरन्तर सहते रहने के बावजूद जनता ने चुप्पी साध ली थी । आज़ाद गुलामी के सम्मुख इस कायरता पूर्ण आत्म समर्पण पर चोट करते हुए लिखते हैं :-

- 'नष्ट कर देती हृदय-उत्साह को गुलामी
कर देती निष्प्राण बुद्धि को
कितने ही ज़िन्दा दिल चतुर बुद्धिमानों को
मृत्यु की गिर निद्रा में तुला देती है गुलामी ।
चरणों के पास मिलनी थी जगह जिन को
सर पर सवार कर देती है गुलामी उनको
जाने किन अयोग्य जनों के घर दहलीज पर
सज्दे दिलवाती है गुलामी योग्य जनों को ।'[1]

आज़ाद की नज़र में इन्सान का महत्त्व है हिन्दू अथवा मुसलमान का नहीं । और यदि मानव हिन्दू और मुसलमान की संकुचित सीमाओं में बट जाता है फिर वह इन्सान कहाँ रह पाता ? इन्सानियत मनुष्य जीवन की महानतम उपलब्धि है जिसे किसी मत, सम्प्रदाय अथवा वर्ग के बन्धन में बन्दी नहीं बनाया जा सकता । हिन्दू और मुसलमान

1- 'दिलुक वलवलाह रावरावान गोलामी
दयमागस पनुन दम न थावान गोलामी ।
कमन दिल हुशारन त बेदार मग़ज़न
ज़िन्दे मोतबे न्यन्दरि सावान गोलामी ।
थिमन शूभि हे जाय त्रावुन्य खोरन तल
कलस प्यठ तिमन थारिनावान गोलामी ।
कमन नाबकारन हिन्दयन ब्रांदिनुई कुन
कमन गाढलयन मज़दि दयावान गोलामी ।'

- 'कुल्लियाति आज़ाद' - गोलामी पृ०- 412.

CC-0. Bhushan Lal Gupta Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

बनने से पहले एक सच्चा इन्सान बनना अत्यन्तावश्यक है । इन्सान की सोच में इसी बदलाव का नाम तो क्रान्ति है :-

- 'नाम तुम्हारा है इन्सान, फिर हिन्दू क्या और -
- मुसलमान क्या ?
जो हिन्दू और मुसलमान है, फिर नाम तुम्हारा
- इन्सान क्या ?
अे रिन्द ! क्यों डाल दिया है निज जीवन को संकट में
यही कहता है इंक़िलाब, इसे कहते हैं इंक़िलाब ।'[1]

ज़मींदारी प्रथा और पूंजीपति व्यवस्था ने क्रमशः किसान और मज़दूर को अपना ख़ूने-जिगर पीने के लिये विवश किया था । आज़ाद धनपतियों की कुत्सित लीलाओं का नग्न-नृत्य अपनी आँखों से देख चुके थे । इस पूंजीवादी समाज-व्यवस्था में यंत्रणाएँ झेलने को विवश आदमी के प्रति उनके हृदय में गहरी सहानुभूति है और सम्पूर्ण शोषण चक्र के प्रति गहरा आक्रोश ।[2] यही उबलता क्रोध क्रान्ति का सन्देश वाहक बन कर जन मानस में उथल-पुथल मचा देता है । शोषण पर आधारित समाज व्यवस्था के विरुद्ध विश्वव्यापी जन आन्दोलन

1- 'नाव ये इंसान छुई हयोन्द तं मुसलमान क्या
हयोन्द तं मुसलमान पोद नाव ये इंसान क्या
रिन्द पनिन ज़िन्दगी क्या ज़ि थावुत दर अज़ाब
यो छु वनान इंक़िलाब आंथ छी वनान इंक़िलाब ।'
- "कुल्लियाति आज़ाद " ' प्याम इंक़िलाब' पृ0- 300.

2- 'आज़ाद ने अपनी शाइरी के अन्तिम दौर में पूंजीवाद के भयानक चेहरे, भूख के विकराल रूप, मानव-गरिमा को खण्डित करने वाली विचार धाराओं की घिनौनी असलियत को अनावृत्त करने की कोशिश करके शोषण से मुक्त समाज-व्यवस्था का सपना प्रस्तुत किया है । इन कविताओं में आर्थिक और सामाजिक

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

{ शेष अगले पृष्ठ पर }

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

के साथ अपना स्वर मिला कर आज़ाद अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस दूषित व्यवस्था को बदल डालने के पक्ष में हैं। लक्ष्य-प्राप्ति के हेतु आमूल परिवर्तन अपेक्षित है। पूंजीपति - वर्ग की दानवी लीलाओं से पीड़ित आज़ाद का कवि-हृदय आक्रोश के लहजे में पुकार उठता है :-

-' पिता-पुत्र में परस्पर दूरी का कारण बन जाती
अलग कर देती भाई को भाई से
मीत हो जाते शत्रु परस्पर
शेष ने रखती उल्फ़त और मुहब्बत
सरमाय:दारी सरमाय:दारी।
बाज़ बन कर सागर के उस पार
वध करती बुलबुल, दय्दिर[1] और मैना का
धर्म निष्ठ बन कर सागर के इस पार
प्रेम वाटिका की जड़े उखाड़ती
सरमाय:दारी सरमाय:दारी।'[2]

{ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग }

विषमता के प्रति तिलमिलाहट और अन्याय पूर्ण परिस्थितियों के बीच यंत्रणाएँ झेलने को विवश आदमी के प्रति एक गहरी सहानुभूति मिलती है।'

- "कश्मीरी साहित्य का इतिहास" - डा० शशिशेखर तोषख़ानी, पृ०- 254.

1- दय्दिर - {कश्मीरी} - एक मधु भाषी पक्षी। इसके नर-पक्षी को कश्मीरी में 'जल' कहते हैं।

2- ' मा॑लिस त॑ गोबरस दूरयर छिपावान
बा॑यिस त॑ बा॑यिस निश रावरावान
यारस त॑ यारस दुश्मन बनावान
उल्फ़त मुहब्बत बिल्कुल न थावान
सरमायिदा॑री सरमायिदा॑री।

{ शेष अगले पृष्ठ पर }

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

इस सरमायिदाराना निज़ाम (पूंजीपति व्यवस्था) को बदलने के हेतु भी आज़ाद क्रान्ति का आह्वान करते हैं। उन्हें दृढ़ विश्वास है कि क्रान्ति पाठ इन परिस्थितियों में बेमानी है। सुधार अथवा पैवन्द से काम नहीं चल सकता। उस भुजा को काट कर नीचे फेंक देना होगा जो आज मानव संहार में सक्रिय है। जीवन के अन्तर-बाह्य स्वरूप को पूर्णतः बदल डालने की आवश्यकता है ताकि एक नये समाज की स्थापना हो जिस में शोषक और शोषित, अमीर और ग़रीब तथा साधन सम्पन्न एवं साधन हीन का भेद सदा सर्वदा के लिये मिट जाये। आज़ाद जन-मानस की चिन्तन पद्धति में भी एक स्वस्थ वैचारिक क्रान्ति लाना चाहते हैं। वे एक नये विश्वास के साथ नव-निर्माण के हेतु रुग्ण व्यवस्थाओं पर कुठाराघात करते हैं। इस दृष्टि से उनकी उल्लेखनीय रचनाएँ हैं - 'पयाम इंक़लाब (सन्देश क्रान्ति का), 'इंक़लाब, 'इंक़लाबो इंक़लाबो इंक़लाब' 'इंक़लाब अन इंक़लाब (ला इंकलाब ला इंक़लाब) आदि। आज़ाद अपने स्वप्नों को साकार रूप प्रदान करने के हेतु अंगारों पर पैर रख कर आगे बढ़ता है। केवल बाह्य जीवन अथवा राजनीतिक-सामाजिक व्यवस्थओं में ही क्रान्ति की आवश्यकता नहीं अपितु मानव सोच में, मानव विश्वासों - मान्यताओं एवं जीवन मूल्यों में क्रान्ति अपेक्षित है। अभिशाप ग्रस्त

(पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

शाह पांज़ लांगिथ सोदरि अपारे
मारान बुलबुल दयदरि तं हारे
दोनदार लांगिथ सोदरि थपारे
प्राटान मूलन अथ लोलि वारे
सरमायिदारो सरमायिदारो।'

- 'कुल्लियाति आज़ाद' 'सरमायिदारो' पृ0-291.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जीवन में व्याप्त जड़ता को भंग करने के लिये तथा देशवासियों के आत्माभिमान को जगाने के हेतु क्रान्ति आवश्यक है । परम्परागत रूढ़ एवं रुग्ण मान्यताएँ टूट टूट कर बिखर जायें, अन्ध-विश्वासों की बेड़ियाँ झनझना उठें, व्यवस्थाओं के बाह्यावरण छिन्न भिन्न हो जायें, लोकाचार की आधार शिला खिसक जाये - आज़ाद इस प्रकार के परिवर्तन के लिये क्रान्ति और विद्रोह का शंखनाद करते हैं ।

उन्हें विश्वास है कि इस उपवन में जब इंक़लाब[1] की तेज़ आन्धी पूरे वेग के साथ प्रवाहित होगी तो बुलबुल नये समवेत स्वर में स्वागत गीत गायें गे । तृण-तृण में नव-प्राणों का संचार होगा, प्रकृति खिल उठेगी और उसके असंख्य सौन्दर्य कण मानव जीवन का शृंगार करेंगे । जीवन का अर्थ है - जीना । वे हर क्षण जीने के लिये लालायित हैं लेकिन आत्म सम्मान के साथ जीवन जीने के हेतु विष घूँट पीने में जो आनन्द है वह पराधीनता के मधुपान में कहाँ ? कवि एक नये विश्वास के साथ व्यवस्था के विरुद्ध तथा नव निर्माण के हेतु क्रान्ति की चिनगारियाँ सुलगाते हुए लिखते हैं :-

-'किसे कहते हैं इंक़िलाब ? क्या कहता है इंक़िलाब ?
कोइ अमीर है कोई ग़रीब, कौन कहता और किस
- ने माना ?
क्या है अनादि और भाग्य क्या ? किसे कहते हैं
- तक़दीर ?

1- इंक़िलाब/इनक़लाब - दोनों शब्द शुद्ध हैं ।
'इंक़िलाब - {अरबी} - क्रान्ति ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

हज़ारों वर्षों का क़िस्सा पुराना केवल कल्पना और
– एक स्वप्न
यही कहता है इंक़िलाब, और इसे कहते हैं इंक़िलाब ।
हिन्द, अरब, रोम, चीन उपद्रवियों के हैं षड्यन्त्र
दीन और ईमान क्या ? प्रेम, समता और सहमति
दुई अभिशाप है जीवन का समता है वरदान
यही कारण है इंक़िलाब, और इसे कहते हैं इंक़िलाब ।'[1]

'दरियाव' (दरिया) आज़ाद की एक बहुचर्चित नज़्म है जिसमें मानवीकरण के द्वारा दरिया अपने प्रवाहमय जीवन को एक नये उत्साह-वर्धक सन्देश एवं अर्थ के साथ व्यक्त करता है । सुषुप्त जन-मानस को जाग्रत करने के लिये तथा दरिया के समान सक्रिय बनाने के हेतु आज़ाद दरिया की रवानी में स्वस्थ जीवन का संघर्षमय स्वर मिला देता है । यही क्या कम है कि दरिया आज एक नये जीवन संगीत को मुखर कर रहा है । जीवन का अर्थ है – सवेग प्रवाह जिस में ठहराव के लिये कोई गुन्जाइश नहीं है । दरिया के समान पीछे मुड़ कर कभी न देखने में ही जीवन की सार्थकता है । यहाँ ठहराव का कोई महत्त्व नहीं क्योंकि

1– 'कथ छि वनान इंक़िलाब ? क्या छु वनान इंक़िलाब ?
काँह छु अमोर काँह गुरोब कुस छु वनान कामि यि मोन
क्या छु अज़ल क्या नसीब कथ छि वनान कर्म लोन
सास वुहुर किसि प्रोन महज़ ख़याल ऐन ख़वाब
यो छु वनान इंक़िलाब, अथि छि वनान इंक़िलाब ।
हिन्द, अरब, रोम, चीन फिरतन गरन हुन्द निफ़ाक़
दीन तय ईमान क्या ? लोल कुन्यर इतिफ़ाक़
ज़ान दुई बोड गोनाह मान कुन्यर बोड़ सवाब
यो छु वनान इंक़िलाब, अथि छि वनान इंक़िलाब ।'
– 'कुल्लियाति आज़ाद' 'प्यामे इंक़िलाब' पृ0– 299.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ठहराव मृत्यु का लक्षण है । चट्टानों के साथ टकरा टकरा कर जीने में ही आनन्द है । दरिया और मानव जीवन के इस आपसी रिश्ते पर सर्वप्रथम आज़ाद ने कश्मीरी भाषा में प्रतीकात्मक शैली में यह रचना लिखी है । दरिया प्रतीक है - वेगवान मानव जीवन का । उन्हें विश्वास है कि आन्धियों और तूफ़ानों का सामना करने में सुख है, भाग जाने में नहीं । पसीने की बूँदों में सौन्दर्य है, प्राप्ति की तड़प में आनन्द है और जागृति में ही मंगल निहित है । संघर्ष प्रधान 'आज' में ही सुखद 'कल' के बीज निहित हैं इसलिये दरिया अपने प्रवाह को मस्तानी चाल में मनुष्य से कहता है :-

- 'मेरी आदत नहीं है पीछे मुड़ना, मैं तो केवल आगे
- बढ़ता हूँ

फूल नहीं मैं बेमानी है मेरे हेतु सजावट
नहीं हूँ बुलबुल जो नीड़ बनाने की चिन्ता होती
अधीर अवस्था, इंक़िलाब और भूकम्प, सुखद है मेरे हेतु
निरत यात्रा रत रहने में जीवन रस मिलता मुझ को ।
ढलान, सीमा रेखाओं, ऊँचाइयों और गहराइयों को
अपने बहाव में, मैं मदहोन कर देता हूँ
कठोर, दुर्दमनीय बाधाओं के सर के ऊपर
बह कर उनके अहं को कर देता हूँ चूर ।
निरत यात्रा रत रहने में जीवन रस मिलता मुझ को ।
ऊँचाइयाँ और गहराइयाँ, ढलान और सीमा रेखायें
देख के मैं उन्मत्त हो उठता हूँ

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

समता और अभिन्नता ढूँढ रहा हूँ केवल
जभी तो रवाँ दवाँ हूँ भागम भाग में खपा रहा हूँ जान
जल होते भी तड़प रहा हूँ
शहतूत की लकड़ी के सुलगते अंगारों पर
निरत यात्रा रत रहने में जीवन-रस मिलता मुझ को ।'[1]

आज़ाद को अपनी सांस्कृतिक परम्परा पर गर्व है । धर्म, दर्शन इतिहास, साहित्य, शास्त्र एवं कला के क्षेत्र में कश्मीर के प्रतिभाशाली विद्वज्जनों का अभूतपूर्व योगदान रहा है । शताब्दियों से कश्मीर अध्ययन-अध्यापन का केन्द्र रहा है जिस की पुष्टि ऐतिहासिक स्रोतों से निश्चित रूप में होती है । यहाँ के प्राचीन गौरव पूर्ण इतिहास की प्रसिद्ध घटनाएँ उन्हें वर्तमान को बदलने के हेतु निरन्तर प्रेरित करती हैं । यह सत्य है कि नवीन चिन्तन के प्रति उनकी रचनाओं

1- 'म्य आदत छुई न पथ फेरून म्य निशा ग्व ब्रोंह कुनुई नेरून
न छुस गुल पान छुम शेरून न बुलबुल ओल छुम येरून
ब्व छुस खोश पेचताबन, इंक़िलाबन ज़लज़लन अन्दर ।
यिवान छुम ज़िन्दगी हुन्द सोज़ सफरन मंज़िलन अन्दर
बठ्यन, बेरन, सन्यन वोग्न्यन च़टिथ वालान छुस बोशे
दरय्न, तकरय्न, ठरय्न सारिप्यठि गछ़िथ डालान छुस होशे
न छम थारन न दिल हारन म्य न्यायन गांगलन अन्दर
यिवान छुम ज़िन्दगी हुन्द सोज़ सफरन मंज़िलन अन्दर ।
सन्यर वोग्न्यार बाठि तय बेरि डोशिथ जेरि छुम यीवान
कुन्यर, यकसान छुस छ़ारान लारान यूत मारान पान
तवय छुस आब आंसिथ वारह तुलवुन्य त्योंगलन अन्दर
यिवान छुम ज़िन्दगी हुन्द साज़ सफरन मंज़िलन अन्दर ।'
- "कुल्लियाति आज़ाद " 'दरियाव' - पृ0- 218-222

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

में ज़बरदस्त आग्रह दिखाई देता है लेकिन यह बात भी उल्लेखनीय है कि उन्होंने नव-निर्माण के हेतु स्वस्थ परम्परा को अवहेलना नहीं की । वे रूढ़ि के कट्टर विरोधी थे, परम्परा के नहीं । उन्हें विश्वास है कि शून्य में नव-निर्माण की बात नहीं की जा सकती उसके लिये ठोस आधार भूमि चाहिए, रचनाकार के लिये भव्य सांस्कृतिक परम्परा हो तो उर्वर आधार भूमि है । जागरूक कवि-हृदय युवा-पीढ़ी को विगत वैभव की स्मृति दिलाते हुए दुर्दशाग्रस्त वर्तमान से जूझने के हेतु इस प्रकार प्रेरित करते हैं :-

- 'गोद में पाला जिस धरती ने निज सपूत बड़शा[1] को
आज उसी के बन्धु-बान्धव क्षुधा पीड़ित हैं सड़कों पर
जिस अमृत जल से सिक्त हो उठे कल्हण[2] ग़नी[3] और -
- सरफ़ी[4]
आज वहीं जल हमरे हेतु बन गया है ज़हरे हलाहिल[5]

घायल हृदयो तड़प तड़प कर बहा रहे हैं, ख़ून के आँसू
उसी रक्त से वह क़ातिल रंग रहा दुशाले अपने
इतर जनों में जाग उठता स्वाभिमान कांप उठता आलम-
- सारा

1- बड़शाह - सुलतान ज़ैन-उल-आबिदीन (बड़शाह)
असली नाम - शाहो ख़ान । शाहमीर वंशीय
कश्मीर के एक लोकप्रिय बादशाह ।
राज्यकाल - सन् 1420 से सन् 1470 ई० तक

2- कल्हण - कल्हण पण्डित - 12वीं शताब्दी ई० के प्रसिद्ध कश्मीरी इतिहासज्ञ । 'राजतरंगिणी' के लेखक ।

3- ग़नी - मुल्ला मुहम्मद ताहिर ग़नी (- 1668 ई०)
17 वीं शताब्दी ई० के प्रसिद्ध कश्मीरी फ़ारसी कवि ।

4- सरफ़ी - शेख़ याकूब सरफ़ी (1521 ई० - 1594 ई०)
16वीं शताब्दी के प्रसिद्ध कश्मीरी विद्वान, फ़ारसी कवि और सूफ़ी सन्त । (शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अफ़सोस ! कि गीदड़ शेरों पर ढा रहा है ज़ुल्म -
निरन्तर ।'[1]

महाकवि इकबाल के 'जावेद नामा' में संगृहीत नज़्म 'नाल-ए-इबलीस' से प्रेरित होकर आज़ाद ने एक लम्बी नज़्म 'शिकव-ए-इबलीस' लिखी है जिसमें बदनाम इबलीस सर्वशक्तिमान दैव के सम्मुख अपना इस्तिगासा (नालिश, आर्तनाद, दावा) पेश करते हुए कहता है कि इस रहस्यमय सृष्टि में एक नहीं, सौ-सौ राक्षस देख कर तथा उनकी हिंसा-वृत्ति से भयभीत हो कर स्वयं इबलीस भी कांप उठा है । वह अपनी शिकायत लेकर ईश के सम्मुख खड़ा होता है और उस की सृष्टि पर कठोर व्यंग्य कसते हुए युगीन जीवन के ज़हर भरे सत्य को मुखर कर देता है । वस्तुतः कवि ने अपनी मौलिक प्रतिभा के आधार पर युगीन जन-जीवन में व्याप्त विकृतियों को इबलीस के मुँह से कहलवा कर दैव गति के प्रति अपना भय-मिश्रित आश्चर्य व्यक्त किया है ।[2] वर्तमान युगीन मानव जीवन की हृदय-विदारक दयनीय स्थितियों की ओर संकेत

(पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

5- हलाहिल - (अरबी) - हलाहल (संस्कृत)

1- 'अवलाद बड़शाहस ह्यूव रोछुमुत छु यमि कोछे मंज़
बोछि सूत्यि मरान वतन प्यठ तिहन्दुई अयाल आस्या
कल्हण, ग़नी त सरफ़ी सांराब करि यमि आबन
सुई आब सानि बापत ज़हरे हिलाल आस्या
आंसि छोकि लद जिगर ह्यथ वांदि वांदि छि ख़ून हारान
तमि ख़ूनि सोन क़ांतिल रांगि रांगि दुशाल आस्या
गारथ यिवान छु गारन इबरत ख़्यवान छु आलम
सख़्ती करान सिहन प्यठ हय हय यि शाल आस्या ।'
- "कुल्लियाति आज़ाद" 'सवाल'-पृ0- 187.

2- "स्टडीज़ इन कश्मीरी" - प्रो0 जे0 एल0 कौल - प्रकाशक : कपूर ब्रदर्स, श्रीनगर - सन् 1968 ई0 - पृ0- 85.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

करते हुए इबलीस कहता है :-

-'रत्न जड़ित सिंहासन आरूढ है कोई शान के साथ
भर लो जिस ने जी भर कर तिजोरियाँ अपनी
दर दर भटक रहा है दूजा
नहीं प्राप्य है भिक्षा पात्र भी जिस को
जिगर भूनते देखा पूंजीपति को अकिंचन और असहाय -
- जनों का
सौगन्ध तुम्हारी अज़मत की माँग रहा हूँ पनाह वहाँ
अमीरों के हो अमीर, पर कहने में होता संकोच
धनवान को देखा है निर्धन के मांस पर सदा पकवान -
- बनाते
सोच रहा हूँ कहाँ गये हैं वीर ? गीदड़ रह गए शेष
कहाँ गए हैं शेर ?
नये युगानुरूप रच रहे थे जो नया संसार ।'[1]

वर्तमान कालीन मानव सोच में मिलावट इस सीमा तक हुई है कि विशुद्ध रूप में अलौकिक सत्ता के अस्तित्व को पहचानना अथवा अनुभव करना बहुत मुश्किल हो रहा है । स्वार्थ सिद्धि के लिये धार्मिक विश्वासों के बल पर मानव समूह का शोषण किया जाता है ।

1- 'अखाह छु तख़्तस बिहित शहाना जरिथ जवाहिर बरिथ खज़ाना ।
छु ब्याख फेरान वानि वानय बनान बेछुन सोम तमिस न बाना
बुज़ान यि सरमायिदार ड्यूठुम जिगर गरीबन त बेकसन हुन्द
म्य चानि अमि अज़मतुक क़सम छुम तते मंगान छुस ब्व ते अमाना
चि ते अमीरन हुन्दुई अमीरा हया गछ़ान छुम वनिथ ह्यके क्या
अमीर ड्यूठुम ग़रीब माज़स दोहे बनावान वाज़वाना
दपान छुस तिम दिलेर कोत गई मोचेय पोछि लांव शेर कोत गई
नविस ज़मानस थवान यिम आस तैयार कांरि कांरि नोवुई जहान ।'
- "कुल्लियाति आज़ाद" 'शिकव-ए-इबलीस' पृ0-265-66

प्रतिष्ठा, इज़्ज़त आदर

गीदड़ Jackal

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

धर्म के इस व्यवहारी और विकृत रूप के प्रति आज़ाद के हृदय में बेहद घृणा है । स्वर्ग-लोभ तथा नरक-भय के सहारे शोषण चक्र गतिमान है । मूल तथ्य घने कुहासे में छिप गया है केवल बाह्याचार के प्रदर्शन तक ही धर्म सीमित रह गया है ।

यहाँ इस बात को स्पष्ट करना आवश्यक है कि आज़ाद नास्तिक नहीं थे । उन्हें ईश्वरीय सत्ता पर पूर्ण विश्वास था लेकिन जिस रूप में आज ईश्वर बेचा और ख़रीदा जाता है वह रूप उन्हें कदापि ग्राह्य नहीं । यही कारण है कि व्यंग्य की हल्की गहरी चोटों के द्वारा वह हमारी धर्मान्धता को जड़े हिला देते हैं । वर्ग-विभाजित समाज में धर्म धनवान का जीवन श्रृंगार है और निर्धन के लिये जीवन अभिशाप । कुफ्र का इल्ज़ाम लगा कर शोषित मानवता का अपमान किया जाता है । धर्म - ध्वजा धारण किये हमारे तथाकथित पथ-प्रदर्शक वस्तुतः शोषित मानवता का अपमान करते हैं । 'आज़ाद' अन्ध-विश्वासों एवं रूढ़ि-ग्रस्त परपराओं के बन्धन से पूर्ण आज़ाद थे । वे एक सच्चे मुसलमान थे - मानव प्रेम एवं बन्धुत्व के ध्वज-वाहक । उन्होंने कभी भी भीतर के कलाकार के साथ विश्वासघात करके समझौता नहीं किया है । यही कारण है कि जीवन में उन्हें बहुत कुछ भुगतना पड़ा और बहुत कुछ अपनी आँखों से देखना भी पड़ा है ।

संकीर्ण-हृदयी धर्म प्रवर्तकों द्वारा चलाये गये विभिन्न सम्प्रदायों के घटाटोप में कभी कभी आज़ाद का आर्तनाद खो जाता है । धर्म उनको

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नज़र में मानसिक ग़ुलामी नहीं, संकुचित जीवन दृष्टि नहीं और न रक्त पिपासा को शान्त करने का साधन है :-

'दीनदार ! मत समझ दीन और मज़हब को दासत्व
- अथवा भिक्षावृत्ति,
बन महान इतना कि मालिक खुद पूछे 'तेरी इच्छा -
- क्या है ?'
लोभ विनाशक स्वार्थ अपकारक शत्रु हैं दोनों, तुम -
- मीत समझते
पिला रहे हो खूने जिगर इनको भुगतना होगा अंजाम -
- खुद ही

मैं ने बन्दों के बीच इक इक बन्दे में देखे हैं कई भगवान
नहीं मालूम कैसे समझायें ये जन, ईश तत्त्व भगवत् भक्ति -
- को ।'[1]

आज़ाद के काव्य में प्रकृति चित्रण का अपना विशिष्ट महत्व है । कहीं उन्होंने स्वतन्त्र रूप से (आलम्बन रूप में) प्रकृति के आकर्षक सौन्दर्य बिम्बों को शब्द-चित्रों के माध्यम से अंकित करने की चेष्टा की है और कहीं प्रकृति के साथ अपने चिन्तन के आधार पर नवीन अर्थ एवं सन्दर्भ जोड़ दिये हैं । बहु-आयामी दृश्य जगत में उस अर्थ को तलाशने का प्रयास करते हैं जो शाश्वत होते हुए भी युगीन सन्दर्भों को व्यक्त करने में सहायक हो । स्वतन्त्र प्रकृति चित्रण की दृष्टि

1- 'यि दीनति मज़हब यि दीनदारो मोज़ान ग़ुलामो नति गदाई
यि बन तिथुई बन्दि पुथ तु मालिक पनुन वनो पान वन -
- गछ़ो क्या
तमाह छु तावन गरज़ छु नोक़सान यिमेज़ि दुश्मन रफ़ीक़ ते ज़ानिथ
दिवान छुहक खयोन यि ख़ूनि जिगर यि वुछ़ति हासिल पतवयियी-
- क्या
म्य बन्दिनुई मंज़ अकिस अकिस बन्दसुई वुछिम वारयाह खोदावन्द
यि छुम न बोज़ुन तगान तिमे लख वनन खोदा क्या त बन्दगो क्या ।
- 'कुल्लियात आज़ाद ' 'नज़्में' पृ0- 288-289

CC-0. Bhushan Lal Koul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0, Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

से उनकी उल्लेखनीय रचनाएँ हैं - 'पाँज़ादर' (झरना), 'शीन मांन्य' (हिमनद), 'बहार' तथा 'सोन्य आव' (बसन्त आया) और नवीन अर्थ प्रयोग अथवा प्रतीकात्मक अर्थ सन्दर्भों की दृष्टि से 'व्यथ' (वितस्ता) 'दरियाव' (दरिया), 'आरिवल' (हल्के पीले रंग के गुलाब का नाम), तथा 'वनिय यार' (जंगल का चीड़) उल्लेखनीय रचनाएँ हैं।

आज़ाद ने विचार-प्रधान लम्बी कविताएँ भी लिखी हैं जिन में मार्मिक अनुभूति-चित्रण के बदले तार्किक तथ्य-कथन के प्रति अधिक आग्रह है। उन्होंने स्वस्थ सांस्कृतिक परम्परा की कभी अवहेलना नहीं की बल्कि नव-निर्माण के हेतु उसे आधार भूत शक्ति के रूप में ग्रहण किया है।[1] मानव के स्वस्थ भौतिक विकास में उन्हें पूर्ण निष्ठा है। अन्याय पर आधृत व्यवस्था के साथ वह किसी भी तरह समझौता नहीं कर सकते। अन्ध विश्वासों की खिल्ली उड़ाते हुए स्वस्थ चिन्तन के प्रति जन-मानस को आकृष्ट करने के हेतु सतत प्रयत्नशील रहे हैं। उनकी विचार प्रधान कविताओं में उल्लेखनीय हैं - 'दरियाव' (दरिया), 'लोल त गाटजार' (प्रेम और बुद्धिमत्ता), 'शिकवा-ए-इबलीस' 'शिकवा-ए-कश्मीर' 'मंज़िला अख लामकान' (मंज़िल एक लामकान) आदि। पूंजीपति व्यवस्था के विरुद्ध विश्व व्यापी आन्दोलन के

1-"कश्मीरी काव्य में आज़ाद एक नवीन चिन्तन पद्धति के समर्थक रहे हैं। उनका काव्य नये युग के नव-चिन्तन की आधार शिला है। उन के काव्य में कश्मीरियों की शताब्दियों पुरानी परम्पराएँ जीवन्त रूप में नवीन-चिन्तन के साथ मूर्त्त हो उठी हैं। बन्धुत्व के जो नग़मे इस महान कवि ने गाये हैं उनका मूल वस्तुतः कश्मीर के गौरवपूर्ण प्राचीन इतिहास एवं कश्मीरियों की प्राचीन परम्परा में निहित है।"

- 'गाशिर' - मोतीलाल साक़ी - पृ0-6.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

साथ अपना स्वर मिला कर आज़ाद अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सम्पूर्ण विश्व में इस व्यवस्था को बदल डालने के पक्ष में हैं। इस विद्रोह के लिये चाहे उन्हें मार्क्स के दर्शन से प्रेरणा मिली हो अथवा स्वतः अनुभूत जीवन स्थितियों से - लेकिन लक्ष्य प्राप्ति के हेतु आमूल परिवर्तन को वे नितान्तावश्यक मानते हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आज़ाद ने पूंजीपतियों की कुत्सित लीलाओं का नग्न-नृत्य अपनी आँखों से देख लिया था। उन की ऐतिहासिक चेतना पर्याप्त सजग थी। ईश्वर को सोने और चांदी की ज़ंजीरों में जकड़ कर व्यवसाय हेतु किस प्रकार साधन रूप में प्रयोग में लाया जाता था - आज़ाद इस तथ्य से भी भली भाँति परिचित थे। फलतः उनकी रचनाओं में युगीन जन-जीवन के अनेक अश्रु सिक्त बिम्ब उभर कर सामने आये। विचार एवं चिन्तन ने श्रृंगार का स्थान ग्रहण किया।

इस तरह यह बात स्पष्ट होती है कि आज़ाद कश्मीरी साहित्य में 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं जिन्होंने कश्मीरी काव्य को श्रृंगार के माधुर्य के साथ-साथ विचार की गरिमा भी प्रदान की। जीवन और काव्य में घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करते हुए तथा समाजवादी चिन्तन से प्रेरित - प्रभावित होते हुए उन्होंने कश्मीरी काव्य को क्रान्ति और विद्रोह युक्त घन-गर्जनात्मक स्वर प्रदान किया। कश्मीरी काव्य के अन्तर बाह्य स्वरूप में परिवर्तन

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

लाकर आज़ाद ने युग को धड़कनों को शब्द-बद्ध करने का सफल और सशक्त प्रयास किया है । इस प्रकार एक युग प्रतिनिधि कलाकार की भूमिका निबाहते हुए आधुनिक मिज़ाज के अनुरूप आज़ाद ने कश्मीरी कविता को नवीन सन्दर्भों के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया । निस्सन्देह कलात्मक महत्त्व के साथ-साथ आज़ाद के रचना संसार का अपना ऐतिहासिक महत्त्व भी है । एक साधारण स्कूल मास्टर को असाधारण सर्जनात्मक प्रतिभा विश्व स्तर पर अपनी सार्थकता को तलाशने में सक्रिय दिखाई देती है । उन्हें पूर्ण विश्वास है कि :-

- आलम याद करेगा - आज़ाद - आज़ाद
मनमीत ! दिलाऊँ याद तुझे कभी उसको ।'[1]

- 0 -

1- " आलम हा करि याद आज़ाद आज़ाद
कुनि सारि वुछि याद पावय मदानो ।'
-'कुल्लियात आज़ाद' पृ0- 550

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

/3/ अः शृंगार, :आः देश-प्रेम, राष्ट्रीय भावना, विद्रोह एवं क्रान्ति, :इः प्रगतिवादी चिन्तन, :ऊः हास्य एवं व्यंग्य तथा :एः तलाशे हक़ के कवि

" मिर्ज़ा गुलाम हसन बेग 'आरिफ़' "

(सन् 1910 ई0 ————)

1- मेधावी छात्र साईंस के : विशेषज्ञ जन्तु-विज्ञान के
2- कश्मीर कल्चरल कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता
3- आरिफ़ की बहुमुखी प्रतिभा
4- देश-प्रेम की उत्कट भावना
5- व्यवस्था को बदलने का दृढ़ संकल्प
6- प्रेरणा तरक़्क़ी पसन्द तहरीक से : स्वागत विद्रोह और क्रान्ति का
7- स्वातंत्र्योत्तर युग में मोह-भंग की भीषण स्थिति
8- नवीन काव्य प्रयोग - रुबाई : 'मिनी कविता'
9- द्वन्द्वात्मक एवं तनाव पूर्ण स्थितियों का कटु अनुभव
10- यथार्थ बोध : मूल्यों का अवमूल्यन
11- समकालीन यथार्थ से जुड़ा मर्म भेदी व्यंग्य
12- जीवन के प्रति एक स्वस्थ स्वीकारात्मक दृष्टि
13- विरह प्रधान इश्क़िया शाइरी और ग़ज़ल
14- अध्यात्म चिन्तन : आरिफ़ का तलाशे हक़
15- भाषा-प्रयोग : कुछ अहम मुद्दे
16- आरिफ़ के 'वाख' (वाक्)
17- निष्कर्ष ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में 'महजूर' और 'आज़ाद' के साथ-साथ उस युग के तरुण कवियों में गुलाम हसन बेग 'आरिफ़' का नाम पर्याप्त वर्णित रहा है। 'आरिफ़' साहब के बहुमुखी व्यक्तित्व एवं कृतित्व में कश्मीर-घाटी के पिछले छः दशकों का इतिहास प्रतिबिम्बित है। कश्मीरी भाषा और साहित्य के सामूहिक विकास में उनका योगदान अभूतपूर्व रहा है।

मिर्ज़ा गुलाम हसन बेग 'आरिफ़' 13 सितम्बर सन् 1910 ई० के दिन अनन्तनाग के कांडिपूर मुहल्ले में जन्मे।[1] स्कूली शिक्षा का बाद लाहोर से बी० एससी० की परीक्षा पास की और श्रीप्रताप कालिज, श्रीनगर में कुछ समय के लिये डिमॉन्स्ट्रेटर (प्रदर्शक) के पद पर कार्य करते रहे। तत्पश्चात् सन् 1939 ई० में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से ज़ूलोजी (प्राणि शास्त्र) में एम० एससी० की परीक्षा पास की। कुछ वर्ष श्रीनगर में अध्यापन कार्य करते रहे और फिर रेशम-उत्पादन विभाग में उप-निदेशक के पद पर नियुक्त हुए। सन् 1948 ई० में कुछ समय के

1- प्रोफ़ेसर रशीद नाज़की ने 26 जून 1987 ई० को मुझे आरिफ़ की जन्म तिथि के विषय में जानकारी दी। कश्मीरी साहित्य के अधिकांश लेखकों ने इस विषय में चुप्पी साध ली है। वर्ष के विषय में कोई मतभेद नहीं है लेकिन मास और दिन के विषय में लेखक महोदय ख़ामोश रहे हैं। प्रोफ़ेसर नाज़की के साथ इस विषय में मेरी काफ़ी चर्चा हुई। अपनी निजी जानकारी के आधार पर उन्होंने सन् 1910 के सितम्बर महीने की 13वीं तिथि को आरिफ़ की जन्मतिथि माना। -- लेखक

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

लिये रेडियो कश्मीर श्रीनगर से भी सम्बन्धित रहे और सन् 1950 ई० में रेशम-उत्पादन विभाग के निदेशक के पद पर उनकी नियुक्ति हुई। सरकारी नौकरी से सेवा-निवृत्त होकर अब वे पिछले दो दशकों से सक्रिय साहित्यिक जीवन जी रहे हैं। सन् 1974 ई० में जम्मू कश्मीर राज्य की कल्चरल अकादमी के द्वारा जिन साहित्यकारों का विशेष सम्मान किया गया उनमें आरिफ़ साहब भी एक हैं।

साईंस का एक मेधावी छात्र साहित्य सृजन की ओर प्रवृत्त हुआ, इसके कई कारण थे। लाहौर में डॉ० सर मुहम्मद इक़बाल की शख़्सीयत ने उन्हें न केवल प्रभावित किया अपितु सर्जन के लिये प्रेरित भी किया फलतः देश प्रेम की चिनगारी उनके हृदय में सुलग उठी। बी०एससी० पास करने के बाद जब वे लाहौर से लौट आए तो परतन्त्र देशवासियों की दीन-हीन स्थिति से चिन्तनशील युवा आरिफ़ वेदना-विह्वल हो उठे। चौथे दशक के आरम्भ में ही उन्होंने कश्मीर में एक साहित्यिक संस्था 'बज़्मे अदब' की स्थापना की। आज़ादी के संघर्षमय आन्दोलन ने भी उन्हें अपने भूत एवं वर्तमान के विषय में सोचने के लिए विवश किया था। 'महजूर' और 'आज़ाद' के सम्पर्क में आकर वे उनके प्रगतिशील व्यक्तित्व से भी प्रभावित हो उठे और देश-प्रेम के साथ-साथ विद्रोह

1- 'वाइल इन लाहौर लिवुड न्यक्स्ट डोर टु इकबाल हू इन्फ्लुर्यस्ड हिम स्ट्रांगली एण्ड फास्टर्ड इन हिम ए लव फार दि कश्मीरी लैंग्वेज' - "एन एन्थालोजी आफ मॉडरन कश्मीरी वर्स" - त्रिलोकीनाथ रैना संगम प्रेस लिमिटेड, पूना-29, सन् 1972 ई० प्रकाशन- पृ०-111.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

एवं विप्लव की लपटों से उसका मानस प्रज्वलित हो उठा ।[1] उन्होंने 'कौमी कल्चरल महाज़' तथा 'कश्मीर कल्चरल कांग्रेस' के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में नव जागृति के सन्देश को आम जनता तक पहुँचाने में अपना सहयोग प्रदान किया । वे 'कल्चरल कांग्रेस' के महा सचिव एवं उप-सभापति भी रहे हैं ।[2] 'कौंग पोश' (प्रगतिशील लेखकों की मुख्य पत्रिका) के सम्पादक मण्डल के एक सदस्य के रूप में उन्होंने कई वर्ष पत्रिका सम्पादन की ज़िम्मेदारी को सम्भाला और 'गुलरेज़' पत्रिका के मूल प्रेरणा स्रोत तो 'आरिफ' ही थे । इस पत्रिका का सम्बन्ध 'बज़्मे अदब' साहित्यिक संस्था के साथ रहा है । प्रदेश सरकार की ओर से सन् 1948 ई० में कश्मीरी भाषा के लिये जो 'लिपि सुधार समिति' बनायी गयी थी आरिफ़ उसके भी एक सदस्य थे ।[3]

कश्मीरी भाषा के लिये शब्द कोश तैयार करने की जो योजना बनायी गयी उसके अन्तर्गत आरिफ़ को 'काशिर डिक्शनरी' सम्पादक मण्डल का एक सदस्य मनोनीत किया गया । कोश निर्माण में उनकी भूमिका पर्याप्त महत्वपूर्ण रही है । यह शब्द-कोश राज्य की कल्चरल अकादमी के द्वारा सात भागों में प्रकाशित हुआ । इसका सातवाँ

1- 'आरिफ़' उस क्रान्ति के पहरेदार के रूप में सामने आये जिसका स्वप्न महजूर ने देखा था और जो सामंती शासन को उलट कर किसान और मज़दूर राज की स्थापना के लिये संघर्ष की प्रेरणा दे रही थी ।
"कश्मीरी साहित्य का इतिहास" -डा० शशिशेखर तोषखानी, जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - पृ०- 262.

2- 'गाशिर' - मोतीलाल साक़ी - पृ०- 146.

3- 'स्टडीज़ इन कश्मीरी' - प्रो० जे० एल० कौल, प्रकाशक - कपूर ब्रदर्स, श्रीनगर - कश्मीर सन् 1968 ई०, पृ०-23.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

और अन्तिम भाग सन् 1979 ई० में छपा है।

जन्तु-विज्ञान के विशेषज्ञ तथा रेशम-उत्पादन विभाग के भूतपूर्व निदेशक मिर्ज़ा गुलाम हसन बेग 'आरिफ़' के व्यक्तित्व का सर्वाधिक आकर्षक और महत्त्वपूर्ण पहलू है - सृजनात्मक कलाकार कवि 'आरिफ़' के प्रभावशाली व्यक्तित्व का पहलू। आधुनिक कश्मीरी साहित्य के इतिहास में ऐसे कई अन्य प्रतिष्ठित साहित्यकारों के नाम मिलते हैं जो ज्ञान-विज्ञान के अन्य क्षेत्रों में विशेषज्ञ होते हुए भी साहित्य-साधना में लीन रहे। इनमें स्वर्गीय डॉ० शंकर रैणा, डॉ० पद्मनाथ गंजू, न्यायाधीश श्री गुलाम नबी गौहर एवं श्रीनज़ीर फ़िदा तथा वकील श्री गुलाम अहमद गाश उल्लेखनीय हैं। आरिफ़ के काव्य लेखन की शुरुआत देश में चल रहे राजनीतिक आन्दोलन अर्थात् संघर्ष के दिनों में हुई। यह वह समय था जब युवा आरिफ़ देश-प्रेम की उत्कट भावना तथा आत्म-आहुति के दृढ़-संकल्प से प्रेरित होकर जीर्ण-शीर्ण व्यवस्था को बदलने के हेतु सक्रिय रहे। यही वह समय है जब आरिफ़ पर प्रगतिवादी विचारधारा का प्रभाव पड़ा और सर्वश्री दीनानाथ नादिम, नूर मुहम्मद रोशन, रहमान राही, अमीन कामिल तथा अब्दुल सत्तार रंजूर के साथ साथ आरिफ़ भी विप्लव और विद्रोह के द्वारा व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करके नव-निर्माण का आह्वान करने लगा। उन्होंने सुषुप्त देशवासियों को स्वत्व प्राप्ति के हेतु संघर्ष रत रहने के लिये प्रेरित किया। श्रमिकों और किसानों को

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

दयनीय दशा देख कर वे विह्वल हो उठे थे, फलतः परिवर्तन, एवं समता-स्थापना की बलवती इच्छा के साथ साथ अन्याय के विरुद्ध ज़बरदस्त आक्रोश उनकी रचनाओं के द्वारा व्यक्त होने लगा। 'तरक़्क़ी पसन्द तहरीक' के एक सशक्त लेखक के रूप में आरिफ़ ने कला को जीवन के साथ जोड़ दिया और युग की पहचान अथवा युग-सत्य की सर्जन की आधार भूमि के रूप में स्वीकृति प्रदान की। स्वतन्त्रता प्राप्ति के तुरन्त बाद कश्मीर पर हुए विदेशी आक्रमण के समय आरिफ़ अपने अन्य समकालीन कवियों के साथ साथ देश-प्रेम एवं राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत रचनाएँ लिखते रहे और इसके तुरन्त बाद प्रगतिवादी चिन्तन से प्रभावित होकर एक विशिष्ट विचारधारा के साथ जुड़े गए। इस युग में कश्मीर के 'तरक़्क़ी पसन्द' कवियों का एक काव्य-संकलन "गाये जा कश्मीर" (सन् 1948 ई०, सम्पादक - पीर अब्दुल अहद शाहीन) प्रकाशित हुआ जिस में विद्रोह एवं विप्लव का स्वर प्रमुख था और 'आरिफ़' की एक बहुचर्चित रचना 'सोन कारवाँ' ने बुद्धिजीवियों का ध्यान विशेष रूप से अपनी ओर आकर्षित किया। सम्पूर्ण रचना में शोषित मानव समाज की करुणा-जनक स्थितियों का मार्मिक चित्रण किया गया है आर्थिक शोषण से पीड़ित जन-समूह का आक्रोशमय क्रन्दन कविता के माध्यम से मुखर हो उठा है। निस्सन्देह इस रचना का अपना विशेष महत्व है और इसके प्रत्येक बन्द[1] में परतन्त्र

1- बन्द — पाँच या छः मिसरों का उर्दू - फ़ारसी पद्य का टुकड़ा

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

देश की आर्थिक अवनति, दुर्दशाग्रस्त मानव समाज के असहाय जीवन की विवशताओं एवं मुक्ति संघर्ष के इतिहास से जुड़ी अनेक दुखद घटनाओं का काव्यमय चित्रण किया गया है। शख़्सी राज्य में सामान्य जनता पर जो ज़ुल्म ढाये जा रहे थे उनसे हलाकू[1] और चंगेज़ खाँ[2] की याद ताज़ा हो जाती। वास्तव में कवि अपने युगीन सत्य की उपेक्षा न कर सका यही कारण है कि जन-मानस की समस्त पीड़ा उनकी रचनाओं के द्वारा साकार हो उठी है :-

-'महाराजा यदि कहीं कुछ भूल गये थे
असहाय जनों के शोषण में कुछ कमी रही थी
सौ वर्षों के लेन देन में कुछ छूट गया था
सितम तोड़ कर निकाल रहा था कसर उस की
पर आगे ही बढ़ता गया कारवाँ हमारा।
ज़ालिम फूट पड़े हैं धरती से छत्रक जैसे
ये सितमगर हलाकू ये चंगेज़ सारे
कुछ हाकिम और आलिम भी इनसे मिल बैठे हैं
शोषण में वृद्धि हुई उत्तरोत्तर
शिराओं में रक्त लगा उबलने
पर आगे ही बढ़ता गया कारवाँ हमारा।'[3]

1- चंगेज़ खाँ का पौत्र जो उसी के समान निर्दयी और हत्यारा था।
2- चंगेज़ खाँ - मध्य ऐशिया में स्थित मंगोलिया का निवासी मंगोल जाति का एक खूँख़्वार लड़ाकू मुखिया जिस ने शमस-उद्दीन अलतमश (1211-1236 ई0) के राज्यकाल में सन् 1221 ई0 को भारत के उत्तर पश्चिमी सीमा-प्रदेश में घुस कर नरसंहार करके उसे रौंद डाला।
3- 'यि कैंछ़ाह मशित कुनि राज़स गोमुत ओस
अगर कम तिमव खूनि नाहक चोमुत ओस

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

इसमें कोई सन्देह नहीं कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के संघर्ष काल में देशवासियों पर हो रहे अत्याचारों से कवि विक्षिप्त हो उठे थे। तत्कालीन जीवन के बीभत्स यथार्थ से उन्होंने मुँह नहीं मोड़ा अपितु 'आँखिन देखो' घटनाओं को काव्य-बन्धों में जोड़ कर उन्हें ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में सुरक्षा प्रदान की। मुल्लाओं, धर्म उपदेशकों और पूंजीपतियों ने मिल कर समाज को भीतर ही भीतर शक्तिहीन कर दिया था। कोई इसे धर्म के नाम पर लूट रहा था तो कोई विश्वास के आधार कोई मर्यादा के नाम पर तो कोई परम्परा के आधार पर। गाँव में लम्बरदार और ज़ैलदार तो सम्पूर्ण ग्राम को अपनी जायदाद समझ कर लूट रहे थे। ग़रज़ सर्वत्र लूट का बाज़ार गरम था। लूटेरों के इस लुटेरेपन पर चोट करते हुए कवि कहते हैं :-

- 'धर्म उपदेशक, मुल्ला और ज़ैलदार
धन के स्वामी पूंजीपति और लम्बरदार (नंबरदार)

(पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

हतस वरियतो कथेंह हिसाबस प्योमुत ओस
कसर ज़ुल्मुचो तुई बराबर कड़ान ग्व
मगर कारवाँ सोन ब्रोंह ब्रोंह पकान ग्व।
हंडर ज़न ज़मीनस फ़टिथ द्रायि ज़ालिम
सितमगर हलाकू त चंगेज़ सालिम
रलिथ कथेंह यिमन सूत्थि हाकिम त आलिम
सितम ग्व हुरान रथ रगन मंज़ ग्रकान ग्व
मगर कारवाँ सोन ब्रोंह ब्रोंह पकान ग्व।'

- "गाये जा कश्मीर" - सम्पादक - पीर अब्दुल अहद शाहीन, प्रकाशन वर्ष सन् 1948 ई० - "सोन कारवाँ" -आरिफ़, पृ०-41-42

"गाये जा कश्मीर" काव्य संग्रह आज घाटी में कहीं उपलब्ध नहीं। काफ़ी पापड़ बेलने के बाद मैं एक साहित्यकार बन्धु से इसकी एक प्रति प्राप्त करने में सफल हुआ और उसी दिन उसकी फोटोस्टेट

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मिल कर ज़ुल्म किये हैं इन दुष्टों ने
पड़ती रही चोट पर चोट बराबर
ज़ख़्म का फूल लगा खिलने
तिस पर भी आगे ही बढ़ता गया कारवाँ हमारा ।'[1]

इस युग में आरिफ़ द्वारा लिखित 'दुसि' एवं 'बान हांज्य बाल त ग्रयूस' शीर्षक रचनाएँ भी पर्याप्त चर्चित रही हैं । पूंजीपति वर्ग की दानवी लीलाओं का पर्दाफ़ाश करते हुए कवि शोषित मानव के अश्रुसिक्त जीवन के प्रति अपनी समस्त सहानुभूति व्यक्त करते हैं । भीतरी आक्रोश को अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए वह मूलतः सुषुप्त जनता की अज्ञान निद्रा को भंग करने की भरसक चेष्टा करते हैं । देखिये पैसे वालों की दुनिया से निर्धन - कंगाल की दुनिया कितनी भिन्न है । 'दुसि' (दुशाला) वस्तुतः प्रतीक है शोषण चक्र पर आधारित विलासमय जीवन के संचित वैभव का :-

-'ख़्वाजा[x] चले हो दुशाला ओढ़े कन्धों पर
नहीं दिखाये दाग़ मेरे

(पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

कापी तैयार करवा कर मूल प्रति लौटा दी । इसी शर्त पर काव्य संग्रह की प्रति उपलब्ध हुई थी । फोटोस्टेट कापी आज भी मेरे पास सुरक्षित है । " - लेखक -

1- 'मलव वांइज़व मोकदमी ज़ालदारी
शरारत पसन्दी त सरमायिदारी
समिथ ज़ुल्म करि सारिवुई ज़ुल्मगाख
ज़र्ब ग्व लगान ज़ख्मुकुई गुल फोलान ग्व
मगर कारवाँ सोन ब्रोंह ब्रोंह पकान ग्व'
- "गाए जा कश्मीर" - सोन कारवाँ पृ0- 41.

वह कर्मचारी जिस के जिम्मे कई गाँव की तहसील (मालगुज़ारी) वसूल करने की क्रिया -
मालगुज़ारी - [illegible] महसूल (अ0) हासिल किया हुआ

x 'ख़्वाजा' - (तुर्की - पुं0) - स्वामी, मालिक

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आज़्मा के चला हूँ इक दुनिया को
नहीं दिखाये दाग़ मेरे
सुला के भूखे बच्चों और परिवार जनों को
रूई के रेशे चुनना भूखे पेट
ख़ूनों जिगर दीपक में डाला
नहीं दिखाये दाग़ मेरे ।'[1]

यही वह समय है जब आरिफ़ की कविताओं के द्वारा विद्रोह एवं क्रान्ति का शंखनाद दिशाओं में गूँज उठा :-

-'आज तक बहुत मद्धिम रहा क़दम मेरा
हर समय हरम[2] समझा मुझ को
सौगन्ध है कश्मीर की मुझ को
सितारों तक फेंक दूँगा तनाब
इन्क़िलाब ज़िन्दाबाद
इन्क़िलाब इन्क़िलाब ।'[2]

आज के नये कवि और आलोचक इसे नाराबाज़ी कह कर तथा प्रचारात्मक साहित्य का नाम देकर तिरस्कृत करते हैं लेकिन इतिहास गवाह है कि देश व्यापी आन्दोलन ने विद्रोहात्मक स्थिति उत्पन्न

---

1 -'खोजि पोकहम फ़्यकि बोन त्रांविथ दाग़ म्यांन हाविथमा
अख़ दुनिया आस आज़मांविथ दाग़ म्यांन हांविथमा
फाकि शुरि बाच़ लरि लरि सांविथ फंब च़ारान थांविथकाह
खून जिगरूक च़ांगिस त्रांविथ दाग़ म्यांन हांविथमा ।'
- "अज़िच कांशिर शांयिरी" - सम्पादक: रहमान राही, शफ़ी शौक़ - 'दुसि' - मिर्ज़ा आरिफ़ - पृ0- 50

2 -'स्यहाठ म्य रूद सोतकदम दोहे बि ज़ांनिहस हरम
म्य छुम कशीरि हुन्द कसम ब्व लायि तारकन तनाब
इन्क़लाब ज़िन्दाबाद - इन्क़लाब इन्क़लाब ।'
- "गाशिर" मोतीलाल साक़ी पृ0- 150.

2. हरम - अन्तःपुर जनाना खाना -(अ0) बुढ़ापा, जरा
[रखेल बनायी गई बाँदी, भोग्य]

तम्बू में लगने वाली रस्सी जिस के सहारे वह खड़े होते हैं।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

को थी और युगोन बुद्धिजीवो कवि उस स्थिति से सर्वाधिक प्रभावित हो उठा था । इसे आज कोई नाराबाज़ी कहे या प्रचारात्मक साहित्य, दोष हमारी समझ का है युगोन कवि का नहीं ।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद 'महजूर' के समान डी आरिफ़ को भी मोह-भंग की भीषण स्थिति से गुज़रना पड़ा ।[1] संघर्ष के दिनों में उन्होंने अपने मानस में जो सपने संजोये थे वे स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् खण्ड खण्ड होकर बिखर गए । आशाओं पर पानी फिर गया फलत: कवि ने तीक्ष्ण व्यंग्योक्तियों के द्वारा व्यवस्था के विरुद्ध अपने भीतरी आक्रोश को अभिव्यक्ति प्रदान की । गज़ल और गीत के साथ साथ आरिफ़ ने कश्मीरी भाषा में रुबाई लेखन[2,3] की विधा को अपनाया जो बाद में श्री गुलाम रसूल नाज़की की असाधारण प्रतिभा से पर्याप्त समृद्ध हुई । 'रुबाइयाति-आरिफ़' शीर्षक से उनकी रुबाइयों का एक संग्रह प्रकाशित हुआ जिसमें

1- 'इस मोह-भंग ने आरिफ़ की कविता को व्यंग्य की ओर मोड़ा जिसके माध्यम से उन्होंने आज़ादी के बाद की परिस्थिति के प्रति आशंका, असन्तोष और अस्वीकृति को व्यक्त किया । व्यंग्य का यह स्वरूप आरिफ़ की रुबाइयों में कभी कभी बहुत तीखा हो उठता है, विशेष कर अपने आप को वे कभी जिसका पहरुआ मानते थे ।' पहरेदार
-"कश्मीरी साहित्य का इतिहास" - डॉ० शशिशेखर तोषखानी, पृ०- 262.

2- 'रुबाई' - फारसी और उर्दू में व्यवहृत चार पंक्तियों का मुक्तक - विशेष जिस की पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति में क़ाफ़िया समान होता है । कभी कभी चारों ही सानुप्रास होते हैं, परन्तु अच्छा यही है कि चौथा सानुप्रास न हो । रुबाई को आधुनिक युगोन 'संक्षिप्त कविता' अथवा 'मिनी कविता' का पूर्व रूप कहा जा सकता है ।
आधार - 'उर्दू हिन्दी शब्द कोश' -संकलनकर्ता - मुहम्मद मुस्तफ़ा खाँ - उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान - तृतीय संस्करण-1977 ई०
पृ०- 581 . §शेष अगले पृष्ट पर §

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रगतिवादी विचारधारा के आधार पर लिखी गई रुबाइयों के अतिरिक्त सामान्य जीवनानुभव एवं चिन्तन के आधार पर भी रचनात्मक प्रयोग किये गए हैं। आरिफ़ के काव्य विकास का यह तीसरा सोपान है जब उन्होंने वैचारिक धरातल पर समसामयिक आन्दोलनों से तनिक अलग हट कर तथा काव्य को मानव जीवन एवं मानव चिन्तन का एक अविभाज्य अंग मान कर मानव मन की गहन अनुभूतियों को रुबाइयों के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की। चार पंक्तियों की इस काव्य-विधा में प्रायः एक बिम्ब अथवा विचार तत्व अथवा अनुभूत सत्य लघु शब्द-चित्र के रूप में साकार हो उठता है। 'मयख़ाना - ख़याम' शीर्षक से उमर ख़याम की 86 रुबाइयों का कश्मीरी भाषा-अनुवाद [काव्य में] उन्होंने प्रकाशित किया है।[1]

आरिफ़ की रुबाइयों में एक सूक्ष्म भाव-तत्व अभिव्यक्ति के हेतु मचलता हुआ दिखाई देता है। संक्षिप्त आकार की सीमाओं में एक अमूर्त भाव-खण्ड अथवा विचार तत्व को मूर्त्त रूप प्रदान करने में कवि पर्याप्त सफल हुए हैं। संक्षिप्त आकार के आधार पर हम इसे मुक्तक काव्य के

[पूर्व पृष्ठ का शेष भाग]

3- 'टेकनिकली ए फोर लाइन इंडिप्यंडंट लिटल पोयम विद ए स्ट्रिक्ट राइम सिकोम, आलमोस्ट अवेज़ ए ए बो ए, इट नोइस सिकिल टु पुट ए होल आइडिया, मूड आर परस्यपशन इन टु ए सिंगल कांटेरेन।'

- "स्टडीज़ इन कश्मीरी" - प्रो० जे० एल० कौल, पृ०- 329.

1- 'मयख़ाना ख़याम' [उमर ख़याम की रुबाइयों का कश्मीरी पद्यानुवाद] - मिर्ज़ा आरिफ़ - कुलफ्टन प्रेस, श्रीनगर - कश्मीर - मार्च सन् 1966 ई०.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अन्तर्गत ले सकते हैं । कहीं कहीं इन रुबाइयों में कवि ने व्यंग्य के तेज़ नश्तर से स्वार्थमय अज्ञान के दुर्भेद्य आवरण को चीर कर सामाजिक वस्तु-स्थिति के प्रति अपनी सजगता का प्रमाण दिया है । प्रायः जीवन में वह सब प्रत्यक्ष रूप में घटित होता है जिस की हम कभी आशा तक नहीं रखते हैं । जीवन कभी कभी अत्यन्त विकराल दानव के समान अपनी दानवी लीलाओं से हमें त्रस्त एवं भयभीत कर देता है । कवि हृदय ऐसी द्वन्द्वात्मक और तनाव पूर्ण स्थितियों से प्रेरित हो कर व्यंग्य की सृष्टि करता है ।[1] कभी यह व्यंग्य इतना तेज़ होता है कि वक्ष को सीधा चीर कर मर्म को भेद लेता है और कभी कभी हमारी चेतना को कुरेद कर हास्य की सृष्टि करता है । उनकी रुबाइयों में हास्य एवं व्यंग्य का प्रयोग सदा सोद्देश्य हुआ है । आरिफ़ विशिष्ट भावानुभूति कराने के हेतु अभिव्यक्ति के इस साधन को व्यवहार में लाता है । आरिफ़ की सफलता इस बात में निहित है कि उन्होंने संक्षिप्त आकार के काव्य रूप रुबाई में व्यंग्य विनोद की सोद्देश्य सृष्टि की है । कश्मीरी काव्य तब तक रुबाई के मिज़ाज से पूर्ण परिचित नहीं था । आरिफ़ ने इस विधा को कश्मीरी भाषा में अपना कर तथा

1- ' अवरुद्ध हुए मार्ग जंगियों के दमख़म ने पकड़ा ज़ोर
यहाँ आ रहा आज जनता का चुना हुआ प्रतिनिधि
विह्वल पुकार उठा भूखा देशवासी चाबुक की मार खा कर
हे ईश्वर ! क्या आज भी मैं ही चितला × कौआ हूँ ?'

× 'चितला' - चितकबरा कौआ - जो सब की नज़रों में रहता है ।

- "नॉवि शारि सोम्बरन" - तरतीबकार - ग़ुलाम नबी फिराक़ - प्रकाशक : कश्मीरी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर, सन् 1981 ई० - पृ०-103

मूल कश्मीरी ﴿ वॅति बन्द गई जंगियन हुन्द ज़ोर ग्व
ज़्युठ अवामुक मुन्तख़िब अज़ चोर आव
﴿शेष अगले पृष्ठ पर ﴾

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अभिव्यक्ति के क्षेत्र में नवीन प्रयोग करके जीवन और काव्य के मध्य परस्पर गहरा सम्बन्ध स्थापित किया है । आज जीवन क्षणों में जिया जा रहा है और इस तेज़ भागते युग में मुड़ कर पीछे देखने की फ़ुर्सत किसी के पास नहीं है । अतः लम्बे वर्णनात्मक कथा प्रधान काव्य के बदले संक्षिप्त आकार की रचना आज वस्तु-सत्य के प्रभाव को गहराने में अधिक समर्थ एवं सफल दिखाई देती है । कवि की प्रतिभा इस बात में निहित रहती है कि वह एक विशिष्ट बन्धन के अन्तर्गत अमूर्त के मूर्तिकरण में कहाँ तक अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा को सोद्देश्य व्यवहार में ला सकता है । आरिफ़ इस दृष्टि से पर्याप्त सफल हुए है । अपने समसामयिक युग से आरिफ़ न केवल प्रभावित होते हैं अपितु सर्जन के हेतु प्रेरित भी हो उठते हैं । आज मानव स्वभाव के बदलाव पर आदमी दंग रह जाता है । राम राज्य ही दानव राज्य का पर्याय होगा यह किसी ने भी तो नहीं सोचा था । एक स्वप्न टूट कर बिखर गया है और अविश्वसनीय यथार्थ ने 'आदर्श' और 'विश्वास' के आगे प्रश्न चिह्न लगा दिये हैं । मोह भंग की भीषण स्थिति :-

-'इन्क़िलाब से जनता को प्राप्य हुआ जो कुछ भी
अजब विधि से लाजवाब[1] ने बांटा उसको
जनता को मिली गोलियाँ विशिष्ट जनों को धन-वैभव

- -

{ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग }

लोरि च़ण्ड़ ख्ययि फाकि हत्य अख बाख छ़ुटि
हो खोदायो अज़ति बुई छुस होर काव । }

1- 'लाजवाब' - अद्वितीय {ईश्वर के अर्थ में अथवा धूर्त नेता के अर्थ में }

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ये व्याकुल हैं व्यथा वेदना से वे भोग विलास में
लिप्त पड़े ।'1

कवि को विश्वास है कि काठ को हांडो चूल्हे पर दूजो बार नहीं चढेगी । सत्य के प्रखर ताप से झूठ के हिम खण्ड अवश्य गल जायेंगे, इसमें सन्देह नहीं । लेकिन आज को ज़िन्दगी को तल्ख हक़ीक़त (कटु सत्य) यह है कि सर्वत्र झूठ का बोल बाला है । उसको तो जय जयकार हो रही है । नक़ली जवाहिर तो आज सर्वत्र असली जवाहिर के बदले बड़ी कुशलता से व्यवहार में लाये जा रहे हैं । कवि सच्चाई को इस सीमा तक या तो ग्रहण करने के पक्ष में नहीं अथवा ग्रहण करने का उनमें सामर्थ्य नहीं । दिखावे की दुनिया का अंजाम निराशा और अफ़सोस↑ के आगे और कुछ कहने का सामर्थ्य कवि में नहीं अथवा सामर्थ्य होते हुए भी वह खुल कर बात कहना नहीं चाहते :-

– 'सर पर आसीन हुआ ताम्बा तब उतर गया मुलम्मा
लगा दिखने खोट स्पष्ट सभी के सम्मुख
लज्जा वश तर हुआ पसीने से माथा हंसने लगा सीमंत
झूठे धूम धाम का अंजाम है निराशा और अफ़सोस ।'2

1– 'यि कैंह द्युत अवामस इंकलाबन
अजब तकसीम कोर तथ लाजवाबन
हिसस खयि गोलि लूकन ठेलि खासन
यिमन दगदोद, हुमन आशान शराबन ।'
– "एन एनथॉलिजो आफ माडर्न कश्मीरी वर्स" –टी० एन० रैणा, पृ० – 118.

2– 'कलस प्यठ वोत, वोथ मुलमायि त्रामस
खोचर आव लबनि अदि टाकारि आमस,
इयकस आव शररमि हुन्द गुमि असनि लाज सुम

(शेष अगले पृष्ठ पर)

↑ तो है लेकिन निराशा और अफ़सोस

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आरिफ़ की रूबाइयों में व्यंग्य समकालीन यथार्थ से जुड़ा हुआ है । रूबाइयों में व्यंग्य का सहारा लेकर कवि सामाजिक जीवन की विभीषिकाओं पर कहीं हल्की चोट करता है तो कहीं भीषण प्रहार । परिणाम स्वरूप पाठक कहीं तिलमिला उठता है और कहीं भीतरी कसक (टीस) से विह्वल :-

- ' मैं ने जश्न मनाते देखा है इबलीस[1] को
उस के यहाँ भीड़ लगी है फ़ोस भी देनी पड़ती है
बुद्धि से उतर चुकी है अब धर्म निष्ठा की ज़ंग
अपना मज़हब पाला मैंने ठग कर दूजे जन को । '[2]

उन्हें विश्वास है कि यह भूखा नंगा शोषित देशवासी एक दिन जीने का अधिकार अवश्य प्राप्त कर लेगा और उसी के हाथों पूंजीपति का अस्तित्व लीला समाप्त हो जायेगी । शोषक को अपने कुकर्मों का दण्ड मिलेगा और स्वत्व प्राप्ति के उपरान्त जनतन्त्र की स्थापना के साथ सुख शान्ति का स्वर्णिम युग आरम्भ हो जायेगा । जीवन के प्रति इस स्वस्थ स्वीकारात्मक दृष्टिकोण का निस्सन्देह अपना विशेष महत्व है । सहानुभूति प्रधान आशावादी सन्देश की अनुगूंज हमें इन

(पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

पतव हसरत छु अपज़िस धूम धामस ।'
- " काश्मिर शायरी " - प्रो० मुही-उद्दीन हाजिनी - साहित्य इकादमी - नई दिल्ली प्रकाशन - मार्च 1960, पृ०-211.

1- 'इब्लीस' - शैतान, दैत्य ।
2- 'मनावान जश्न शादी वुछ म्य इबलीस
स्यठाह बिरि बार अचनस लोगमुत फोस
दपान चुंज अकलि वन्य ईमानची खय

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

रुबाइयों में सुनाई देती है :-

-'मौत से बच जाये यदि निर्धन, बाढ़ उसे कर देगी नष्ट
शिशिर ऋतु में बच जाये यदि, गरमी उसे जला देगी
पृथ्वी और आकाश को मानो वैर है उसके साथ
इक दिन ऐसा भी आयेगा अमर नीचे वही दीपमाला -
सजाए गा ।'

समकालीन नेताओं पर चोट करते हुए कवि लिखते हैं कि 'सियासी दोस्ती तो काग़ज़ी नाव' है । राजनीति में कोई किसी का मित्र नहीं और स्थायी रूप से कोई किसी का शत्रु नहीं । राजनीतिज्ञों की बातों में दोहरा अर्थ निहित रहता है । कवि समकालीन सत्ता-लोलुप नेताओं की इस हक़ीक़त से परिचित है इसी लिये 'सियासी दोस्ती' को मूलत: आयाराम्गयाराम का गठबन्धन समझते हैं । आज के सन्दर्भ में इस कथन की सार्थकता स्वयं सिद्ध है । राजनीति के क्षेत्र में अनुभवी शूरवीर एवं महारथी आज अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये अथवा स्वार्थ सिद्धि के लिये गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं । मानव

- - - -

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मूल्यों का अवमूल्यन हो चुका है, विश्वास को फाँसी पर लटकाया गया है और धर्म तो मानो देश निष्कासित हो चुका है फिर भी तुर्रा यह है कि जन प्रतिनिधि होने के नाते जन-सेवक के रूप में जनहित के लिये आज के नेता आवश्यकता से अधिक व्यस्त दिखाई दे रहे हैं। आखिर क्यों न हो :-

- 'सियासी दोस्ती है काग़ज़ी नाव
अधर समान तुला न देना इस पर अपने आप को
आगे बढ़ना है तुझ को बचने का ढूँढ उपाय
स्वार्थ की आँधी से तरंगित हैं समय की लहरें।'[1]

आरिफ़ वस्तुतः आधुनिक कश्मीरी काव्य की वह महत्त्वपूर्ण कड़ी है जो 'महजूर' और 'आज़ाद' के युग को स्वातन्त्र्योत्तर युग के साथ जोड़ देती है और साठोत्तरी युग की लम्बी काव्य यात्रा में भी अपने अस्तित्व का आभास दिलाती है। पिछले 60 वर्षों के घटना-प्रधान युग का अनुभूत सत्य कहीं विषमिश्रित और कहीं मधु-मिश्रित उनकी रचनाओं के द्वारा साकार हो उठा है। डॉ० हबीब उल्लाह हामिदी ने आरिफ़ के मुक्तक काव्य का मूल्यांजन करते हुए लिखा है कि:- "कवि के मुक्तक पढ़ कर यह बात स्पष्ट होती है कि आरिफ़ को जीवन के उतार चढ़ाव, सामाजिक उलझनों, समस्याओं और विकट स्थितियों

1- ' तियासी दोस्ती छय काग़ज़ी नाव
चि हरफिक पाठ अथ च्यठ पान मो साव
पकुन छुई ब्रोंठ बचनिच थाव सूरत
छु वखितचि लहरि दोरान गरजुकुई वाव।'
- एन एनथालजी आफ माडर्न कश्मीरी वर्स" - टी० एन० रैणा, पृ०-112.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

को पूरी जानकारी प्राप्त है । उनकी नज़र वास्तव में आरिफ़ाना §तथ्य को पहचानने की क्षमता रखने वाली नज़र § है और वे सात पर्दे चाक करके जीवन की विकृतियों को स्पष्ट रूप में व्यक्त करते हैं । वे धर्म, राजनीति, नैतिक बन्धनों, मानव-सम्बन्धों एवं समाज के पोक भरे फोड़ों को अपने क़लम रूपी नश्तर से चीर डालते हैं । इसके अतिरिक्त वे मानव प्रकृति एवं मानव मनोविज्ञान के भी विश्लेषज्ञ हैं ।"[1]

रुबाइयों के अतिरिक्त आरिफ़ ने ग़ज़लें एवं नज़्में भी लिखी हैं । ग़ज़ल में उनका श्रृंगारिक कवि-हृदय अभिव्यक्ति के हेतु मचलता-तड़पता दिखाई देता है । अपने पूर्ववर्तों और समकालीन कवियों से प्रेरणा ग्रहण कर आरिफ़ ने प्रेम के मीठे और दर्द भरे स्वप्नों को ग़ज़ल के मुख़्तलिफ अश्आर में टीस भरे शब्दों का परिधान पहना कर साकार रूप प्रदान किया है । इस परम्परागत श्रृंगार-वर्णन में प्रकृति का विशेष योगदान रहा है । आरिफ़ ने प्रकृति के अनेक सौन्दर्य चित्रों के सहारे प्रतीकात्मक रूप में विरहिणी की मनो-व्यथा को चित्रित करने का प्रयास किया है । घायल हिरणी के समान प्रतीक्षारत प्रेमिका साजन के प्रति आत्म समर्पण के हेतु आकुल-व्याकुल दिखाई दे रही है :-

- 'उपवन के भीतर नज़र जमा कर रहती,

1- "जदीद कश्मीर शायरी" - डा० हबीब उल्लाह हामिदी,
प्रकाशक - कश्मीरी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर-कश्मीर
सन् 1982 ई० - पृ०- 189-190.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

विरह व्यथा को पोड़ा बन कर रहती प्रतीक्षारत
बसन्त पूर्व हो नरगिस को आँखों में घुस अश्रु बहाती
बर्फ़ के नीचे से हो वोरिकयूम[1] और टेंकभटनी[2] के -
संग मिल जाती
शेष रहित साजन के हेतु बर्फ़ से कहीं अधिक उज्जवल
मैं अपना वक्ष भेंट बढ़ाती ।'[3]

निरन्तर प्रतीक्षारत रहने के कारण कभी-कभी विरहिणी के हृदय में संशय का कांटा चुभ जाता है । मानव-मनोविज्ञान के आधार पर यदि देखा जाये तो यह स्वाभाविक भी है । साजन के पर-नायिका-गमन की आशंका मात्र से वह मन ही मन कोसों यात्रा करने के पश्चात् थक कर टूट जाती है । यही टूटन उसकी मानसिक अशान्ति का मूल कारण बन जाती है । संशय की अवस्था में उसको आँखों के सामने अन्धकार छा जाता है और मानस आत्म-ग्लानि से भर उठता है । उसे लग रहा है कि 'खंडित हो गई प्रेम साधना, व्यर्थ हुआ जीवन' :-

---

1- 'वोरिकयूम' (कश्मीरी) - वसन्त के आते ही स्वत: खिलने वाला एक फूल । संस्कृत - वीर + कुसुम
- "कॉशिर डिक्शनरी" - भाग-7, पृ०- 89.

2- 'टेंक बटिन' - पीले रंग का एक चितला फूल ।
संस्कृत - तिलक + भटिटनी ।
- "कॉशिर डिक्शनरी" - भाग-3, पृ०- 42.

3- 'ज़ाग हयथ बागस अन्दर छव दाग़ लोंगिथ प्रारिहा
सोन्त सुलि यम्बरज़लन अंछ मंज़ अज़ित ओशा हारहा
वोरिकयम्यन तय टेंकिबटन्यन सूत्यि रलहा शीनि तोलि
कोनि रास्तिस शोनि खोत प्रोन सोनि पनुनूई दार हा ।'
- "कॉशिर शॉयिरी" - प्रो० मुही उद्दीन हाजिनी - पृ०- 212

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

' बाल पड़ गया शीशे में बिगर गई ध्वनि बरतन की
साकी ! क्या प्रियतम बजा बजा के स्वीकारे गा इसको
कच्चे मधु-कलसों में मैंने मदिरा भर कर रख दी
काँप उठो जिह्वा तब जब साँस लगी उखड़ने
मैं अनुरक्त हूँ उस पर, वह दीवाना है किसी पर ?'[1]

यह जुदाई तो इश्क़ का वह नुकीला तीर है जो एक बार चुभ कर आजीवन पीड़ा का एहसास दिलाता रहता है । विरहिणी अपने दुख को बाँटती नहीं क्योंकि उन्हें विश्वास है कि सुन कर सब हंस लेंगे, कोई बाँटने वाला नहीं होगा । अत: इस व्यथा को मानस की अनमोल पूंजी समझ कर इसे भीतर ही भीतर सँजो कर रखती है । हर तरह से वह अपने आत्माभिमान की रक्षा करना चाहती है पर प्यार के पथ पर बहुधा ऐसा सम्भव नहीं होगा । प्रेम रोग पाल कर अपार सहनशीलता का परिचय देती है । पर क्या करें, कभी-कभी अपने आपको वश में नहीं रख पाती, परवश हो जाती है :-

-'क़ज़ा[2] के तीर सहन किये निज वक्ष पर स्वेच्छा से
आह भी न भर ली सहन किया सब कुछ
ग़ैरत ने समझाया कि राज़ न कहना पराये जन को

1- 'ख्म ज्यम शीशास ब्यगुर ग्व बान्नि म्योन
साकया वांथिथ रटया जानान्नि म्योन
आमि नुई खास्यन थट्योमस मस बंरिथ
ज्यव कलेयम अंछ पुतिन करि नम् शहन
मंज़ ब्व तस पति कस पते देवान्नि म्योन ।'

-"आगर वोन्य" - (ग़ज़ल और गीतों का संग्रह) - ज़िर्फ़ आरिफ़ ब्रोका प्रेस, श्रीनगर - कश्मीर (पुस्तक पर प्रकाशन वर्ष नहीं दिया गया, अन्तिम नज़्म सन् 1971 ई० में लिखी गई है ।) -पृ०-23.

2- 'क़ज़ा' - मौत, मृत्यु ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पीड़ा को पर्दे में रख कर घाव छिपाये भीतर के
प्रेम व्यथा को मानस की पूंजी मान के पाला
पर आलम[1] ने देखा काँप उठा जियरा मेरा
प्यार के पर्दे जला दिये तब मुखर हो उठी पीड़ा ।'[2]

प्रिय प्रतीक्षा कभी जानलेवा बन जाती है । विरहिणी अपने साजन के हेतु सब कुछ दाँव पर चढ़ा देती है । उसे अपनी प्रेम साधना पर विश्वास हो जाता है । मन मौजी अवश्य दर्शन सुख से कृतार्थ करेंगे अतः प्रतीक्षा की घड़ियों में ध्यान-मग्न सजनी केवल प्रियागमन के विषय में ही निरन्तर सोचती रहती है । विरह-वर्णन की यह परम्परागत शैली है लेकिन अभिव्यक्ति इतनी सरल, सशक्त एवं व्यंग्यात्मक है कि साजन की सजनी के साथ-साथ प्रत्येक सहृदय भी द्रवित हो उठता है । निरन्तर प्रतीक्षारत रहते रहते वह सोचती है कि :-

-'आहों का असर होगा न होगा, नहीं मालूम
ये आँखें अश्रु सिक्त होंगी, नहीं मालूम
बुझे दीपक को इच्छा है पतंगा देखने की
गुज़र उस की कहीं होगी, नहीं मालूम

1- 'आलम' - दुनिया, जहान ।
2- ' तीर कज़हिक रज़्हिकिस सीनस र॑टिम
आह ति मा कोरमस म्य, सबरिक व॑ठ वा॑टिम
गा॑रतन दीपनम म॑ गा॑रस बाव राज़
दरद थोवुम परदस अन्दर छोख खा॑टिम
लोलि ज़र थाव्योम जिगरस मंज़ रछित
आलमन वुछ तीरिकाँड शानन फटिम
ज़ा॑ल लोलिक पर्दि दरदन द्राव नोन ।'

- "शीराज़ा" -(कश्मीरी) - ग़ज़ल नम्बर - वर्ष-9, अंक-2-3-4, सम्पादक - टाक जैनगीरी - जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी, प्रकाशन, मई-अगस्त 1972 ई0 -ग़ज़ल-आरिफ़ पृ0-118

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

इलाही ! विरह की यह रात लम्बी और कितनी है,
मिलेंगे प्रिय सुबह होगी, नहीं मालूम ।'[1]

विरह ही तो प्रेम की कसौटी है, इसमें सन्देह नहीं लेकिन वास्तविक जीवन में तड़पा देने वाला वियोग एक सीमा पर पहुँच कर असहनीय हो जाता है और वियोगी इस अवस्था में परवश होकर दीवानागी के आलम में पुकार उठता है :-

-'थकी आँखें प्रतीक्षा में, नहीं आये
छोड़ दिया सब को तेरे हेतु, नहीं आये
सो न सकी मैं रात भर बेकल होकर
बिना चटकनी के द्वार भेड़ लिये, नहीं आये
प्रतीक्षारत रही दिन भर केवल ध्यान तुम्हारा
आँख उठा कर देखा न किसी को, नहीं आये ।'[2]

'आरिफ़ के रचना संसार के विषय में इस तथ्य को स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि प्रगतिवादी चिन्तन से प्रभावि होते हुए भी आरिफ मूलतः धर्म निष्ठ प्राणी हैं । उन्हें प्रारम्भ से ही अज्ञात शक्ति के प्रति अटूट विश्वास रहा है और यही विश्वास उनकी

1- ' ख़बर आहन असर स्पद्या न स्पद्या
ख़बर बेयि चश्म तर स्पद्या न स्पद्या
छ़ेविथ शामहस तमह परवान्नि वुछहन
ख़बर तोमसुन्द गुज़र स्पद्या न स्पद्या
इलाही रात हिजरिच ज़ीठ काचाह !
दिया दर शुन सहर स्पद्या न स्पद्या ।'

- "आगर वोन्य' - मिर्ज़ा आरिफ़ - पृ0- 45

2- ' लियि लोसम, प्रार प्रारी आख मा
चानि मोखि त्राविम म्य सारी आख मा
(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

काव्य रचनाओं का प्रमुख आधार बन कर प्रगतिवादी आरिफ़ को भक्त कवि आरिफ़ का रूप प्रदान करता है । विश्वास से अविश्वास की ओर नहीं अपितु अविश्वास से विश्वास की ओर बढ़ने का यह विकासक्रम है । आज कल तसव्वुफ़ एवं आध्यात्म चिन्तन ने आरिफ़ के कवि-हृदय को प्रभावित किया है और जीवन के इस अन्तिम चरण में वे मानव अस्तित्व के मूल-स्रोत, सृष्टि-विकास के रहस्य तथा जीव और ब्रह्म के पारस्परिक सम्बन्ध पर विचार प्रधान रचनाएं लिखने की ओर प्रवृत्त हुए हैं । सम्भवतः जीवन की इस लम्बी यात्रा का अन्तिम चरण उन्हें लय-अवस्था का आभास दिला रहा हो । आरिफ़ के नातिया कलाम (नातें एवं भक्ति परक रचनाएँ) से इस तथ्य की पुष्टि होती है । यह उनके काव्य विकास का चौथा सोपान है ।

ईश - पथ पर अहंभाव घातक सिद्ध होता है । 'अपने आप को मारना' अथवा इन्द्रिय-निग्रह तो जीवन को सार्थक बनाने अथवा उसे अद्भुत सौन्दर्य प्रदान करने के हेतु नितान्तावश्यक है । दास्य-भाव की भक्ति में हम अपना सर्वस्व अपने इष्ट के सम्मुख समर्पित करके मात्र उनके अनुग्रह का प्रसाद पाने को लालायित रहते हैं । एक सच्चे भक्त के जीवन में आत्म अभिमान अथवा अहंभाव का कोई महत्त्व नहीं । वह अपने

(पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

दारि बांर रातस कोरूम आयम न ज़ोल
वांथ थांविम बरन्यन म्य तांर आख मा
दई दोहस प्रार्‌योस थोवुम चोन ज़ोन
कांसो कुन नो तुलि म्य टांर आख मा ।'

- "आगर वोन्य" - मिर्ज़ा आरिफ़ - पृ० - 56.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आपको अत्यन्त तुच्छ सेवक के रूप में स्वामी के चरणों में निछावर कर देता है । सच्चे अर्थों में तन मन से अपने आपको निछावर करना भक्ति के क्षेत्र में आत्म निवेदन कहलाता है । विरले भक्त जनों का मानस ही निरन्तर साधना-रत रहने के पश्चात् दिव्य-ज्योति से प्रज्वलित हो उठता है । अत्यन्त अल्पकालीन जीवन में जीव जब तक दुई के मैल को जला कर हृदय को पारदर्शी नहीं बना देगा तब तक दिव्य-ज्योति से साक्षात्कार सम्भव नहीं :-

-'मन के मैल को जला डाला जब धीरे धीरे
तब पहचाना नूरे रहमान [1] को
जो जान से पालन किया कुर्आन के निर्देशों का
अहंभाव पर मार दी लात ।'[2]

भौतिक जीवन की उत्तरोत्तर प्रगति के कारण आज हम कई परम्परागत मूल्यों से वंचित हो चुके हैं । प्रकृति के रहस्यमय शान्त वातावरण में भी मानव - हस्तक्षेप की अनधिकार चेष्टा निरन्तर बढ़ती जा रही है परिणाम स्वरूप व्यवस्था में बिखराव आ रहा है और यही बिखराव जीवन को कान्ति-हीन बना देता है । ज़माने के बदलते रंग और इन्सान के बदलते सोच ने जीवन जीने के मापदण्ड ही बदल डाले हैं । समय की सब से बड़ी विशेषता यह

---

1 - परमतत्व की दिव्य - ज्योति ।

2- 'हनि हनि यलि मनि मन ज़ोलुम
वन्यि अदि आम नूरि रहमान
जानि सूत्यि फ़ुर्क़ानि पोलुम
मदि वोलुम पननुई पान ।'
- 'गाशिर' - मोतीलाल साकी पृ0- 151

फ़ुर्क़ान (अ०) - कुर्आन

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

है कि यह निरन्तर गतिशील होकर आगे बढ़ता है कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखता । आरिफ़ की एक बहुचर्चित रचना है 'पहलगाम वनिय यार' (पहलगाम जंगल) जो जीवन की लम्बी यात्रा तय करने के बाद परिवर्तन शील समय को गवाही देते हुए कवि से कहती है कि एक ज़माने में यह जंगल एक तपोभूमि थी जब :-

-'वह समय कहाँ अब ! जब आता था कोई जोगी
पहने लंगोटी हाथ लिये कमंडल डंडा
कभी आता था कोई सन्यासी कुछ पाने के हेतु
तलाशी हक़ में, ढूँढता हक़ को और
त्याग देता विश्व हक़ पाने के हेतु
गुप्त रहता इस गहन जंगल में
निरत ढूँढता उस नाथ को जो हैं अमरनाथ
कितना कह दूँ अब, मत कहने पर विवश करो ।'[1]

भाषा-प्रयोग की दृष्टि से आरिफ़ की रचनाओं का अपना विशिष्ट महत्त्व है । यहाँ अभिधा से अधिक लक्षणा और व्यंजना का महत्त्व है । कवि शब्दों की अन्तरात्मा से पूर्ण परिचित है । कहीं फारसी मिश्रित कश्मीरी भाषा का प्रयोग उनकी रचनाओं में हुआ है

1- 'सु वक़ कति यलि यिवान योत ओस ज़ून्या
लंगूट्या, त्रेशिबाना द्यथ त अंसा !
यिवान गाह ओस सन्यास्था दिवान वान्य
हक़स गारान, हक़स छ़ारान, हक़स पथ
दिवान लथ दुन्याहस थावान गुपिथ पान
तमिस नाथस दिवान वान्य युस अमरनाथ !
वन्य कोताह म वनि नावुम ।'
- "शोराज़ा" (कश्मीरी) -नज़्म नम्बर-2 - सम्पादक : चमनलाल 'चमन' - सन् 1985 ई० - अंक-5, पृ०- 47.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

और कहीं ठेठ बोली-गत प्रयोग । यहाँ इस तथ्य को भी स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि कवि होने के साथ-साथ आरिफ़ एक सशक्त गद्य लेखक और एक अच्छे अनुवादक भी हैं । महाकवि टैगोर के 'साइकिल ऑफ स्प्रिंग' नाटक का कश्मीरी भाषानुवाद उन्होंने 'सोन्तुक अतंगत' शीर्षक से किया जो राज्य की कल्चरल अकादमी की ओर से सन् 1962 ई० में प्रकाशित हुआ । चीन-यात्रा (सन् 1957 ई०) के आधार पर उनका एक यात्रा वृतान्त 'चोनुक सफ़र' भी प्रकाशित हुआ है । 'कश्मीर कल्चरल लोग' की ओर से सन् 1973 ई० में आरिफ़ द्वारा गद्य में लिखित पुस्तक 'आदम मोर' (ह्यूमन अनाटमी) प्रकाशित हुई । भारतीय संविधान का कश्मीरी भाषानुवाद उन्होंने प्रोफ़ेसर पृथ्वीनाथ 'पुष्प' के साथ मिल कर किया है । कोश-निर्माण कार्य में भी उनकी भूमिका पर्याप्त महत्त्वपूर्ण रही है । वस्तुत: कश्मीरी भाषा पर आरिफ़ को असाधारण अधिकार प्राप्त है यही वजह है कि शब्द-चित्रों के चित्रांकन में, अलंकार योजना में, व्यंग्योक्तियों को प्रभावशाली रूप प्रदान करने में, ध्वनि-चित्रों को उभारने में, गहन आध्यात्मिक तथ्यों की अभिव्यक्ति में, शोषण-मूलक व्यवस्था पर चोट करने में तथा प्रेम के मधु-मिश्रित स्वप्नों को संजोने में उन्हें पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है । भाषा-प्रयोग की दृष्टि से उनकी रचनाओं का अपना विशेष

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

महत्व है । कश्मीरी भाषा को साहित्यिक गरिमा प्रदान करने में उनके अथक प्रयास स्तुत्य हैं । इस दृष्टि से यहाँ केवल तीन उदाहरण प्रस्तुत जा रहे हैं :-

अ) लोक' प्रचलित भाषा का व्यवहार :-

-' पूंजीपति ने जिस को कहा अभागा
राजनीति के बाज़ीगर ने उसे कहा हाकिम
उसने तो खाने को तो भी दिया तनिक अन्न
इसके कारण चिथड़ों तक के लाले पड़ गये
धूर्त जनों को रंग बदलते देख लिया ग़रीब ने ।'[1]

आ) फ़ारसी शब्द-बहुत भाषा का व्यवहार :-

-' झुक कर कलसा मांग रहा सरोवर से पानी
कामना वश नत मस्तक होकर उत्कंठित हैं तृषित - होंठ
(हुबाबस चोंठ दिथ लब तशनये बेताब)
मेरे विचार से बेहतर है समुद्र से समावार[2]

1- 'शिकस लद वोन यमिस सरमायिदारन
वोनुस हाकिम सियासी बाज़गारन
दिचिस हुम्य म्यट करिस यमि ज़ट ति कामिन
गरीबन रंग बदलान वुछ अयारन ।'
- "काशिर शायिरी" - प्रो० मुही उद्दीन हाजिनी - पृ०- 211.

2- 'समावार' - (रूसी भाषा - समोवार) - कहवा/चाय बनाने के हेतु एक विशेष आकार का बरतन जिस के अन्दर कोयले जलाने के हेतु भी विशेष व्यवस्था रहती है । जलते कोयलों के ताप से पानी में उबाल आता है ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

एक उबाल से तालिब[1] का प्याला होता है सेराब[2]। [3]

इ§ प्रतीकात्मक भाषा का व्यवहार :-

–'कितने चाव से माँड़ रहे हो मिट्टी
कुम्भकार ! काश मुझे भी माँड़ लेते
कहाँ से लाये हो तुम मिट्टी
कुम्भकार ! काश मुझे भी माँड़ लेते।'[5]

ग़ज़ल, गीत और रुबाई के साथ-साथ आरिफ़ ने 'वाख' §वाक् § भी कहे हैं। कई आधुनिक कश्मीरी कवियों ने चौदहवीं शताब्दी में लल्लेश्वरी द्वारा अपनाई गई इस काव्य-शैली के प्रति अपना आकर्षण व्यक्त किया है। इनमें आरिफ़ के साथ साथ पण्डित दीनाथनाथ कौल 'नादिम' एवं गुलाम रसूल 'सन्तोष' के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। 'वाक' वस्तुत: एक चतुष्पदी है जिसमें किसी रहस्यानुभूति या अलौकिक दिव्यानुभूति, किसी चिन्तन धारा से सम्बन्धित सैद्धान्तिक तथ्य कथन

1– 'तालिब' – §अरबी – पुं0§ – इच्छुक, याचक, अभिलाषी।
2– 'सेराब' – §फ़ारसी § – तृप्त, सन्तुष्ट।
3– 'नटिस प्यव तजदि दिथ सोदरस मंगुन आब
हुबाबस चोंठ दिथ लब तशानये बे ताब
प्य निशा बेहतर समन्दर खोति समावार
दिचिन गरयुख तालिबस ग्व प्यालि साराब।'
–'नौवि शारि सोम्बरन' –तरतोबकार – गुलाम नबी 'फ़िराक़'
रुबाई – आरिफ़ – पृ0– 102.
4– 'माँड़ना' – गूँथना, यह शब्द कश्मीरी में ठीक इसी अर्थ में व्यवहार में लाया जाता है।
5– ' कमि लोलि छुक मांडान म्यये
हा क्रालि मांडख ना म्य ते
सोम्बरावमिव छथ म्यय कते
§ शेष अगले पृष्ठ पर §

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

या कवि द्वारा अर्जित ज्ञानमय अनुभूत सत्य की अभिव्यक्ति होती है ।[1]

विकास ग्रस्त भौतिक जीवन के प्रति अपना मानसिक क्षोभ व्यक्त करते हुए आरिफ़ लिखते हैं :-

- 'दुर्दशा ग्रस्त छिन्न-भिन्न हुआ जीवन
काया में पड़ गया ख़म, कैसे हो पाऊँ सीधा !
कुकथन से वाचन में आई हकलाहट
सुकथन में हो गई मिलावट, कैसे हो पाऊँ सीधा ।'[2]

इस प्रकार आरिफ़ की काव्य-यात्रा राष्ट्रीय आन्दोलन के युग में एक नये क्रान्तिकारी सोच एवं चिन्तन के साथ आरम्भ होती है । अन्य प्रगतिवादी कवियों के साथ आरिफ़ परिवर्तन, क्रान्ति एवं नव-निर्माण की बात सुनता-सुनाता चला आता है । आन्दोलन के शान्त हो जाने पर विशेष कर स्वतन्त्रता प्राप्ति के कुछ वर्ष बाद स्वप्न भंग की अवस्था में वह लीक से अलग हट कर एक नवीन काव्य रूप (रुबाई) को प्रयोगात्मक स्तर पर व्यवहार में लाता है । जीवन और काव्य में घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करने के बाद आज आरिफ़ का कवि-हृदय

(पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

हा क्रालि मॉडख म्य ते ।'
- "आगर वोन्य" - मिर्जा आरिफ - पृ0- 17.

1- ए वाक् इज़ मोस्टली ए फोर लाइन स्टंज़ा, कम्पलीट एण्ड 'इण्डीप्यंडंट इन इटस्यलफ, ए स्यंट्यनशास ग्नोमिक वर्स, मिस्टिकल ऑर डाइडॉक्टिक' intended to teach Full of meaning → customary conventional
- "स्टडीज़ इन कश्मीरी" - प्रो0 जे0 एल0 कौल - पृ0-28
संस्कृत - वाक् , कश्मीरी - वाख

2- ' यिर वुनि नाव तय चिरवुन्य दोल गोम
(शेष भाग अगले पृष्ठ पर)

gnomic (embodying some moral sentiment or percept.) Greek — gnōmē an opinion

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

दैव गति को जानने और पहचानने में तथा जीवन की सार्थकता को तलाशने में व्यस्त एवं मस्त दिखाई देता है :-

-' नफ़रत अथवा प्रेमाकर्षण ज़िन्दगी
वक्ष के घावों की गणना बस ज़िन्दगी
सुरमई आँखों का ख़ुमार यह ज़िन्दगी
शम्अरूख ⁑ का इक नज़ारा ज़िन्दगी
बुद्धिवंत के लिये है क्रूर नाहमवार पथ
मूढ मूर्ख के लिये मोतियों की लड़ी ज़िन्दगी

- -

(पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

देह काड़ Ø होल गोम स्यदि किथि कांनि
कोकथी सूत्यि तोतय कोलगोम
सोकथी रोल गोम स्यदि किथि कांनि ।'

- "अज़िच कांशिर शांयिरी" - सम्पादक : रहमान राही, शफ़ी शौक़ - पृ0-55 ।

Ø संदर्भ पुस्तक में प्रस्तुत 'वाक्' की द्वितीय पंक्ति में 'देह काड़' के बदले 'द्यन काड़' लिखा है जो वास्तव में सही नहीं है ।

⁑ 'शम्अरूख' - दीप्त मुख वाली सुन्दरी । (अरबी, फ़ारसी)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सौन्दर्य-जलन

वाद्य

सोज़े हुस्न ✕ अविच्छिन्न साज़ हो जिसका
'आरिफ़' के हेतु प्रेम-वाद्य है ज़िन्दगी ।'

- 0 -

सोज़ - जलानेवाला
(फा०)

✕ ‖ सोज़ - ‖फ़ारसी‖ - तपिश, जलन । ताप
‖ हुस्न - ‖अरबी‖ - सौन्दर्य विशेष जिन्हें मरसियाख़वाँ लय के साथ पढ़ते हैं सोज़ कहलाते हैं। सोज़ ख़्वानी

1-' नफ़रथा या टाठिन्यारा ज़िन्दगी
सीनि ज़ख़्मन हुन्द शुमारा ज़िन्दगी
सोरमि चश्मन हुन्द ख़ुमारा ज़िन्दगी
शमारोयुक अख़ नज़ारा ज़िन्दगी
आंकलस किच़ क्रीठ नाहमवार वथ
बेकलस किच़ मोख़्तिहारा ज़िन्दगी
सोज़ हुस्नुक यथ न साज़स ज़ाँह ति छ़यन
आंरिफ़स किच़ लोलि तारा ज़िन्दगी ।'

- "आगर वोन्य "- 'आरिफ़ ' पृ0- 63-64.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

/4/ अ:देश-प्रेम एवं राष्ट्रीयता, :इ: प्रगतिवादी चिन्तन एवं सामाजिक यथार्थवाद, :ई: परीक्षण एवं अन्वेषण तथा :उ: नई कविता के कवि -

पण्डित दीनानाथ कौल 'नादिम'
(सन् 1916 - 1988 ई०)

1- संक्षिप्त परिचय
2- एक प्रतिभा सम्पन्न अध्यापक एवं कलाकार
3- अभाव ग्रस्त जीवन के दयनीय क्षणों की कटु अनुभूति
4- मातृभूमि के प्रति अनन्य अनुराग : देश-प्रेम की कविता
5- देश भक्ति में समाजवादी चिन्तन का प्रवेश : अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक महत्त्वपूर्ण घटना
6- प्रगतिवादी काव्य : रूढ़ि जर्जरित परम्पराओं पर कठोराघात
7- क्रान्ति का आह्वान : विद्रोह एवं विप्लव
8- वर्ग संघर्ष की भावना : सम्मान मेहनतकश का
9- आने वाले कल के प्रति आस्थावान : जीवन जीने में अटूट विश्वास
10- स्वातन्त्र्योत्तर युग में स्वप्न भंग की स्थिति
11- प्रयोगवादी काव्य : नवीन सम्भावनाओं को तलाशने की प्रक्रिया
12- नई कविता : युग सन्दर्भ में मानव मन:स्थिति की पहचान
13- निजी संस्कृति के प्रति पूर्ण समर्पित
14- लोक रंग : महकता लोक संगीत
15- कुछ मौलिक प्रयोग : सानिट, गीति नाट्य, आज़ाद नज़्म, 'मिनी कविताएँ
16- कश्मीरी भाषा पर असाधारण अधिकार
17- अर्थ गाम्भीर्य एवं नाद सौन्दर्य
18- निष्कर्ष ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

20वीं शताब्दी के कश्मीरी साहित्य में अध्यापक वर्ग का अविस्मरणीय योगदान रहा है। स्वर्गीय अब्दुल अहद आज़ाद एवं मास्टर ज़िन्दा कौल जैसे प्रतिभा सम्पन्न कलाकारों ने कला साधना के साथ-साथ जीविका-निर्वाह के हेतु अध्यापन कार्य किया और इसी परम्परा की अगली कड़ी के रूप में कविवर 'नादिम' का नाम उल्लेखनीय है।

पण्डित दीनानाथ कौल 'नादिम' का जन्म एक निम्न मध्य-वर्गीय परिवार में 18 मार्च 1916 ई० को श्रीनगर में हुआ। दुधमुँहे बच्चे पर विधाता का पहला प्रहार था - इनके पिता पण्डित शंकर कौल का सन् 1922 ई० में असमय निधन। विधवा माँ सुख सुन्दरी (सोन्दर दयद) ने अपने खूने जिगर की एक एक बूँद पिला-पिला कर दीनानाथ का पालन पोषण किया। मैट्रिक की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के पश्चात् कुछ समय तक वे एस० पी० कॉलिज श्रीनगर में पढ़ते रहे लेकिन अपनी माँ के संघर्षरत जीवन से प्रभावित होकर तुरन्त रोज़गार की तलाश में निकल पड़े, कई वर्ष प्राइवेट दूकान पढ़ाते रहे और अन्त में एक प्राइवेट स्कूल

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

में अध्यापक नियुक्त हुए । अध्यापन के साथ-साथ अध्ययन का काम भी चलता रहा, पंजाब विश्वविद्यालय से बी० ए० की परीक्षा पास करने के बाद सन् 1949 ई० में बी० टी० की परीक्षा भी पास की । इन्हीं दिनों दीनानाथ का संघर्षशील मानस प्रतिकूल परिस्थितियों से टकरा टकरा कर तथा यथार्थ के विषघूँट पी-पी कर परिपक्वता की मंज़िलें पार करता हुआ अपनी भीतरी अकुलाहट को व्यक्त करने लगा । तत्कालीन राजनीतिक संघर्ष के साथ इस प्रबुद्ध युवक का सम्बन्ध जुड़ जाना स्वाभाविक था । सन् 1938 ई० में वे सक्रिय रूप से आन्दोलन में सम्मिलित हुए और इसी वर्ष सितम्बर के महीने में उन्हें कारावास मिला । कारण था - एक राजनीतिक मंच से अपनी जोशीली उर्दू रचना का कविता पाठ । आरम्भ में दीनानाथ उर्दू में रचनाएँ लिखते थे ।[1] लेकिन सन् 1946 ई० से उन्होंने विधिवत कश्मीरी भाषा में लिखना शुरू किया और कुल मिला कर लगभग चालीस वर्षों तक काव्य साधना में लीन रहे । सन् 1946 में ही मिर्ज़ा गुलाम हसन बेग 'आरिफ़' के निमन्त्रण पर वे पहली बार एक कवि सम्मेलन में शामिल हुए और अपनी सर्जनात्मक

1- 'मज़दूर का ख़्वाब', 'मज़दूर की मौत' तथा 'मेरा कश्मीर' शीर्षक (उर्दू) रचनाएँ मैंने इन्हीं जलसों में पढ़ी फलतः पुलिस मुझे पकड़ कर ले गई । घर की तलाशी हुई और मेरी समस्त रचनाएँ ज़ब्त की गई ।'
-"शिराहिल कुल" - दीनानाथ नादिम - प्रकाशन सन् 1985 ई०
'जानकारी : स्रोतकी'- नादिम - पृ०-34.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिभा से उन्होंने श्रोताओं के मानस पर अमिट छाप छोड़ दी ।[1]
पिछले चालीस पैंतालीस वर्षों में (सन् 1988 ई० तक) नादिम साहब का सम्बन्ध प्रादेशिक तथा राष्ट्रीय स्तर पर कई शैक्षणिक, साहित्यिक-सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संगठनों एवं संस्थाओं के साथ रहा है । इस प्रकार लेखक तथा अध्यापक होने के साथ-साथ नादिम एक समर्पित राजनीतिक कार्यकर्ता, कुशल प्रबन्धक एवं अनुभवी परामर्श-दाता के रूप में काफ़ी ख्याति-प्राप्त रहे हैं । प्रसिद्ध कवि[2] होने के अतिरिक्त एक कहानीकार[3], गीति-नाट्य लेखक एवं सम्पादक[4] के रूप में भी उनका अमूल्य योगदान रहा है । यद्यपि पिछले चालीस-पैंतालीस वर्षों में उनकी रचनाएँ यत्र-तत्र पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित

1- रचना का शीर्षक था - 'मुचरावि बर तय दारि व्यसो सोन्त हय साल्लि आव' (सखि ! खोल दे द्वार-खिड़कियाँ, न्योता पर बसन्त आया है ।) - लेखक -

2- " मेरी पहली नज़्म (कश्मीरी) 'भोज क्वारे' (माँ कश्मीर) है । यह नज़्म मैंने 1940 ई० में लिखी और दो किस्तों में 'प्रताप' मैगज़ीन में छपी है । - - - इस के बाद मैंने 1946 ई० तक कश्मीरी में कोई चीज़ नहीं लिखी । "
-"नोलखा" - नादिम विशेषांक - राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, श्रीनगर प्रकाशन- सन् 1983-84 ई० -'नादिम अपनी नज़रों में' - पृ०-18.

3- 'जवाबी कार्ड' शीर्षक कहानी नादिम ने सन् 1948 ई० में लिखी है । 'शीनि प्यतो प्यतो' नादिम की दूसरी कहानी है । - लेखक -

4- नादिम ने तीन पत्रिकाओं का सम्पादक किया है । 'कोंग पोश' 'उस्ताद' एवं 'गाश' । इनमें से 'कोंग पोश' तो एक विशुद्ध साहित्यिक पत्रिका थी । - लेखक -

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

होतो रहो । तथापि सन् 1985 ई0 तक उनका कोई भी काव्य संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ न किसी संस्था की ओर से और न ही कवि की ओर से । यही कारण है कि नादिम की कला का उचित मूल्यांकन आज तक न हो सका । अपने काव्य-व्यक्तित्व के प्रति इस उपेक्षित व्यवहार के लिये 'नादिम' स्वयं उत्तरदायी हैं । सन् 1985 ई0 में 'शिराहिल कुल'[1] (छँहदार वृक्ष) शीर्षक से नादिम ने अपनी प्रतिनिधि रचनाओं का संग्रह जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी को वित्तीय सहायता से प्रकाशित कराया । जिसे सन् 1986 में साहित्य अकादमी ने राष्ट्रीय स्तर पर कश्मीरी भाषा की श्रेष्ठ काव्य-कृति के रूप में पुरस्कृत किया । जो आज से तीन दशाब्दी पूर्व होना चाहिए था उसे 1986 ई0 में होते देख सन्तोष तो होता है लेकिन विशेष हर्ष नहीं । सन् 1971 ई0 में तत्कालीन सोवियत देश ने 'सोवियट लैंड' नेहरू पुरस्कार' से इन्हें सम्मानित किया और सन् 1985 ई0 में उन्हें प्रथम 'कल्हण एवार्ड' से भारत के राष्ट्रपति ने विभूषित किया । जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी ने वर्षों पहले

1- सर्व प्रथम सन् 1962 ई0 में नादिम ने 'शिराहिल कुल' (छँहदार वृक्ष) शीर्षक से एक कविता लिखी । तत्पश्चात् इसी भाव पर आधारित संगीत रूपक 'शिराहिल कुल' का मंचन सन् 1968 ई0 में पहली बार श्रीनगर में हुआ ।
अन्त में सन् 1985 ई0 में प्रकाशित एक मात्र काव्य-संग्रह का नाम भी नादिम ने 'शिराहिल कुल' रखा । शीर्षक पर्याप्त सार्थक होने के साथ-साथ ज़िन्दगी को भी सार्थक बनाने की प्रेरणा देता है । छँहदार वृक्ष की भव्यता देखते ही बनती है ।
- लेखक -

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अपने उत्तरदायित्व को समझ कर 29 मई सन् 1974 ई0 को नादिम साहब के सम्मान हेतु एक विशिष्ट 'स्वागत समारोह' का आयोजन किया।

7 अप्रैल सन् 1988 ई0 प्रात: जब नादिम साहब जम्मू से श्रीनगर आने की तैयारी कर रहे थे तो अकस्मात् हृदय गति रुक जाने से उनका देहान्त हुआ।[1] अपने साधनात्मक जीवन में नादिम अन्त तक सक्रिय रहे। अपने जीवन-लक्ष्य की ओर संकेत करते हुए उन्होंने कहा है - "मेरी ज़िन्दगी की सब से बड़ी आरज़ू यह है कि मैं हर एक को हँसता हुआ देखूँ।"[2] इन शब्दों में तो नादिम का जीवन-दर्शन निहित है।

'नादिम' ने कई संगीत रूपक अथवा गीति-नाट्य भी लिखे जिनमें 'बोम्बुर गम्बरज़ल' (भौंरा और नरगिस), 'सफर ते शोहजार' (सफर और छाँह), 'नोको बदी' (नेकी बदी), 'शिनाहिल कुल' (छतिदार वृक्ष), 'व्यथ' (वितस्ता) तथा 'मदनवार ते जुवलमाल' (दिलबर और नाज़नीं) उल्लेखनीय हैं। श्री नूर मुहम्मद रोशन के संग मिल कर उन्होंने सन् 1965 ई0 में 'होमाल नांगराय' (होमाल और नागराज) गीति-नाट्य की रचना की है।

1- " वे उसी रोज़ शाम को श्रीनगर पहुँचे लेकिन सदा के लिये खामोश। किसी के संग एक भी बात नहीं की उसने। दूसरे दिन प्रात: सजधज के तथा सब की आँखें नम कर के दीनानाथ, दीनानाथ से मिलने चले। क्या बात थी उनकी! मुझे लगा कि दीनानाथ का देहान्त हुआ पर नादिम तो अमर है।'

- लेखक -

2- "दीनानाथ नादिम अभिनन्दन ग्रन्थ" - जम्मू कश्मीर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, श्रीनगर - सन् 1985 ई0 - पृ0- 24.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नादिम वस्तुतः अपने युग की उपज है और युगीन परिस्थितियाँ तथा विभिन्न आन्दोलनों ने उनके व्यक्तित्व के गठन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाही है । आरम्भ में महाकवि इक़बाल और चकबस्त की प्रभावशाली रचनाओं ने 'नादिम' के भीतर देश-प्रेम की चिनगारी सुलगा दी थी ।[1] अभाव ग्रस्त जीवन के संकटमय क्षणों की कटु अनुभूतियों ने 'नादिम' को जहाँ अपने आपके प्रति सचेत किया वहाँ साथ ही साथ वे राष्ट्रीय स्तर पर भी जन-मानस की दीन-हीन स्थिति से अवगत होकर विचलित हो उठे । उनके मानस में देश-प्रेम की ज्वाला भड़क उठी । राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर घटित होने वाली घटनाओं ने नादिम के चिन्तन को एक नई दिशा प्रदान की । रूस की सफल जन-क्रान्ति, जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड, भगत सिंह तथा उनके दो सहयोगियों की ब्रिटिश साम्राज्यवादियों द्वारा निर्मम हत्या, द्वितीय विश्व युद्ध, 'भारत छोड़ दो आन्दोलन' (सन् 1942 ई०), 'कश्मीर छोड़ दो' आन्दोलन (सन् 1946 ई०), स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ साथ देश-विभाजन एवं कश्मीर पर विदेशी आक्रमण आदि घटनाओं के फल स्वरूप नादिम का जीवन्त कवि सक्रिय हो उठा । उत्कट देश-प्रेम को अपनी रचनाओं का मूलाधार बना कर 'नादिम'

1- "दीनाथ नाथ नादिम अभिनन्दन ग्रन्थ" - जम्मू कश्मीर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, श्रीनगर - सन् 1985 ई० - पृ०- 19.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सृजन की प्रक्रिया में प्रवृत्त हुए । मातृभूमि के प्रति अनन्य अनुराग, अभाव ग्रस्त जीवन के परिणाम स्वरूप देशवासियों की शोचनीय दशा, दारिद्रय एवं भुखमरी तथा जन आक्रोश से उत्पन्न विद्रोह को कवि ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की । इस युग की उल्लेखनीय रचनाएँ हैं - 'मातृ भक्त', 'मुच़ रावि बर तय दारि व्यसी सोन्त हय सालि आव', 'नाराए-शबाब'[1], 'नाराए-इंकलाब'[2], 'ग्राव', 'कशीरि हुन्द दावा'[3], 'सोविज़', 'सोन वतन' तथा 'यि छु म्योन वतन' आदि । 'सोन वतन' शीर्षक कविता में नादिम अपनी मातृभूमि के प्रत्येक छवि चित्र अथवा रूप-बिम्ब के प्रति मोहित दिखाई देते हैं । परम्परा से अलग हट कर उन्होंने अपनी उर्वर कल्पना शक्ति के आधार पर आश्चर्य चकित कर देने वाले अत्यन्त

1- 'नाराए-शबाब'

" म्य छुम ताज़ यावुन, म्य छुम ताज़ यावुन "
(चढ़ती जवानी है मेरी, चढ़ती जवानी है मेरी)
"शिहिल कुल" - पृ0-39.

2- 'नाराए-इंक़लाब'

"कशीरि हुन्द चि़ शान बन
चि़ मीरि कारवाँ बन "
कशीरि पासबान बन "
(कश्मीर की तू शान बन जा
मीरे × कारवाँ बन
कश्मीर का पासबान बन)
× मीर - (अरबी पुं0) - सरदार, नायक)
" शिहिल कुल " पृ0- 43.

3- 'कशीरि हुन्द दावा'

" मिलिचार सत्यि दुनिया म्य छुम यकसान बनावुन
म्य छु ह्योन्द त मुसलमान बेयि इंसान बनावुन
(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सरल एवं स्वाभाविक रूप चित्र प्रस्तुत किये हैं जिन्हें देखते ही बनता है :-

- 'देश हमारा - फूल समान
बसन्त का तपता यौवन, शालिमार का आकर्षक दृश्य
नये पोशाक को मदमाती चाल है मानो
खिलते हुए कमल समान
देश हमारा - आकर्षण बद्ध हृदयों के रहस्य का
शीतल सरपोश,
साजन को एक चुभती याद ।
देश हमारा - एक आकर्षक ग्राम समान
दान - खाई बाद श्रान्त कृषक के हेतु
चिनार को घनी छाँव में आराम,
डल के किनारे आकर्षक सायमकाल
सब्ज़ बादाम के समान,
'त्रेल'[1] फल लेकर बहुत दिनों के बाद

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

ह्योन्द मेलि सिकस तूत्थि ह्यन्दस तूत्थि मुसलमान
वोन कांमि यिमन ब्योन ब्योन छि कुनि माजि हिन्द सन्तान
कांसिथ म्य हृस्दिक कांण्डि छु गुलिस्तान बनावुन
म्य छु ह्योन्द तं मुसलमान बेथि इंसान बनावुन '

§ बन्धुत्व से दुनिया को यकसाँ बनाना है
मुझे हिन्दू और मुसलमान को इंसान बनाना है ।
हिन्दू मिले सिक्ख के संग हिन्दू के संग मुसलमान
एक माँ से जन्मे हैं, अलग अलग कहता है कौन ?
वैर के काँटे खोद खोद कर इस उपवन को सजाना है
मुझे हिन्दू और मुसलमान को इंसान बनाना है §

- "शाहिल कुल " - पृ0- 50

1- 'त्रेल ' - सेब की जाति का एक फल, आकार में खोबानी के समान होता है

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

गाँव से आ पहुँचे मामा के समान,
माँ के स्तनों से प्रवाहित अमृत धार की इक घूँट समान ।'[1]

कुछ ही समय के बाद नादिम की देश-भक्ति में समाजवादी चिन्तन का प्रवेश हुआ । प्रसिद्ध कम्यूनिस्ट कामरेड धन्वन्तरि[2] से प्रभावित होकर नादिम ने समाजवादी चिन्तन को सर्जन के हेतु मूल मन्त्र के रूप में ग्रहण किया । कश्मीर में गठित 'तरक़्क़ी पसन्द लेखक संघ' का सदस्य बनकर वे एक विशिष्ट राजनीतिक आन्दोलन के प्रवाह में प्रवाहित हुए । नादिम ने साम्यवादी चिन्तन को जीवन दर्शन के रूप में स्वीकारा और यहीं पर वे 'आज़ाद' से दो क़दम आगे निकल आते हैं । आधुनिक कश्मीरी साहित्य में प्रगतिवादी काव्य के इतिहास में आज़ाद के बाद नादिम का योगदान अभूत पूर्व रहा है । सन् 1949 से सन् 1958 तक नादिम समाजवादी चिन्तन के आधार पर रचनाएँ लिखते रहे और जन-जीवन के साथ जुड़ कर उनके पीड़ित-शोषित जीवन

1- ' सोन वतन पोशा ह्यूह
ताव होत यावुन बहारुक शालिमारुक गोशा ह्यूह
नवि पोशाकुक बोशा ह्यूह
फोलवुनुई पम्पोश' ह्यूह
सोन वतन लोल सोरन हुन्द शिहुल सरपोशा ह्यूह
यादि प्योमुत ओशा ह्यूह
असि वतन रूत गाम ह्यूह
थल रुविथ ज़न बोनि शिहेलिस ग्रीस्तिस आराम ह्यूह
डल दहिस प्यठ शाम ह्यूह
आदनुक बादाम ह्यूह
त्रेलि ह्यथ यग्रकांले वोतमुत गाम प्यठि जन माम ह्यूह
माजि हुन्द मोम दाम ह्यूह ।'
-'एन एनथालजी आफ मार्डन कश्मीरी वर्स' - त्रिलोकीनाथ रैणा - पृ0- 156.

§ शेष अगले पृष्ठ पर §

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

में आमूल परिवर्तन लाने के हेतु काव्य-साधना में लीन रहे ।[1] इस युग में नादिम ने पूर्ण वेग और उत्साह के साथ वर्ग-विभाजित समाज को रूग्ण और रूढ़ि-जर्जरित परम्पराओं की जंजीरों को तोड़ डालने की बात कही और समाजवादी व्यवस्था की स्थापना के हेतु लाल क्रान्ति का आह्वान किया । साम्राज्यवादियों की कुत्सित नीतियों पर कवि को तनिक भी विश्वास नहीं । वे जननी-जन्मभूमि के प्रति पूर्ण समर्पित हैं और उसकी रक्षा करना अपना धर्म समझते हैं । प्राण निछावर कर जन्म भूमि के प्रति ऋण होने की तीव्र इच्छा को वे रोक नहीं सकते क्योंकि आज उसकी धमनियों में उबलता लाल रक्त प्रवाहित है ।

संघर्ष रत देश-वासियों की भावनाओं के अनुकूल अथवा उनके मिज़ाज से प्रेरित होकर कवि विद्रोह एवं विप्लव का शंखनाद करके व्यवस्था को पूर्ण रूपेण बदलने का दृढ़ संकल्प लिये कर्मक्षेत्र में सक्रिय

[पूर्व पृष्ठ का शेष भाग]

2- "सन् 1949 ई० में मेरी मुलाक़ात प्रसिद्ध क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट धन्वंतरि से श्रीनगर में हुई । ——मैं सन् 1951 में कम्यूनिस्ट पार्टी का सदस्य बना ।"
- "नीलजा" 'नादिम विशेषांक - पृ०-20

1- "इन कविताओं में उत्पीड़ितों की आकांक्षाओं को वाणी देने का और मानव यातना के बिम्ब को उभारने का प्रयत्न है । वस्तुतः कश्मीरी कविता को नादिम की यह एक बड़ी देन है कि उन्होंने उसकी विषय भूमि का विस्तार किया और उसे सामाजिक यथार्थ के प्रति संवेदनशील बनाया ।"
-"कश्मीरी साहित्य का इतिहास" - डा० शशिशेखर तोषखानी, सन्-1985 ई० जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - पृ०-268.

CC-0. Bhushan Lal Raul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

दिखाई देते :-

उष्ण उष्ण, लाल लाल
लाल लाल, उष्ण उष्ण
उष्ण लाल, लाल उष्ण, है रक्त मेरा
तूफान सदृश जनून[1] मेरा, मैं जवान हूँ
कश्मीर पर निछावर हो कर प्राणों की आहुति चढ़ा दूँ
यही शौक़ है मेरा
मैं तो आँधी हूँ, मुझे भँवर का क्या डर
उचित नहीं है डल के भीतर ज्वार बन छिप जाना-
- छिप जाना
बाढ़ की तूफ़ानी चाल में शत्रु के अस्तित्व को मिटाना-
- होगा
इसी लिये उष्ण - लाल है रक्त मेरा । [2]

क्रान्तिकारी के रूप में उन्होंने विषय और अभिव्यक्ति दोनों में आमूल परिवर्तन उपस्थित किया । नादिम से पहले 'महजूर' और 'आज़ाद' ने कश्मीरी कविता में क्रान्ति का शंखनाद किया लेकिन एक विशिष्ट दर्शन एवं चिन्तन-पद्धति के आधार पर इसे वैचारिक

1- 'जनून' - (अरबी) - उन्माद ।
2- " वुशुन वुशुन, वजुल वजुल
वजुल वजुल, वुशुन वुशुन
वुशुन वजुल, वजुल वुशुन छू ख़ून म्योन
जवान छुस तूफ़ान ह्यूह जनून म्योन
म्य शोक छुम कशीरि प्यठ फ़िदा गछुन त जान दियुन
ब्व वाव छुस म्य क्या करयम यि आवुलोन यि आवुलोन
मलख बनिथ पज़याह डलस अन्दर बिहुन, खटिथ बिहुन
बनुन छु युप दुशमनस छु दियुन लहियुन, छु दियुन लहियुन
तवे तवे वुशुन वोजुल छु खून म्योन । "
- "शिहिल कुल" - 'नादिम - कविता 'यरादि' - पृ0-54

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

गरिमा प्रदान करने का श्रेय नादिम को है । यह सत्य है कि इस चिन्तन को हम ने कहीं से उधार लिया था पर यह भी सत्य है कि सम्पूर्ण साहित्य जगत इसे आन्दोलित हो उठा । कश्मीरी कवि तो बहुत बाद में प्रभावित हुआ ।

युद्ध ग्रस्त छिन्न-भिन्न अर्थ व्यवस्था को बदल डालने के हेतु नादिम नया क़लम, हथौड़ा और दात्र लेकर कर्तव्य क्षेत्र में कूद पड़ता है । आज गुल और बुलबुल अथवा सुंबुल और मसवल[1] के गीत उसके लिए बेमानी हैं । समय की पुकार कुछ और ही है :-

- ' नहीं गाऊँ गा आज
गुलो बुलबुल सुंबुल और मसवल का
उन्माद भरा
अति आकर्षक
मधु मिश्रित उनींदा
नग़मा कोई ।
मैं पहुँचूँ गा हर स्थान पर निज अन्दाज़ में
धूमकड़ बन कर
हर बला के पोठे दात्र/हंसिया लेकर
हथौड़ा, क़लम और दात्र लेकर
रोम रोम से निसृत पसीने को बूँदों से
धो डालूँ गा अपने देश को
यह अति सुन्दर

1- 'मसवल' - (कश्मीरी), मधु + वल्ली → (संस्कृत)
कश्मीरी भाषा में एक फूल का नाम, लाक्षणिक अर्थ- सुन्दरी, अप्सरा ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

बचपन का साथी,
तेरे मेरे बचपन का
चोटियाँ, खाई, गड्ढे और दरार
भर दूँ गा अद्भुत प्रकाश से ।'[1]

वर्ग संघर्ष की भावना से प्रेरित हो कर उन्होंने शोषित, अपमानित एवं दलित जन-मानस में गहरे उतर कर उसकी भीतरी उथल पुथल, आशा-निराशा, व्यथा-वेदना, जय-पराजय को काव्य-वाणी प्रदान की । इस प्रकार जन-सामान्य का स्वप्न-लोक नादिम की रचनाओं में साकार हो उठा और कश्मीरी काव्य में प्रगतिवादी आन्दोलन निश्चित उद्देश्य एवं लक्ष्य के साथ निश्चित दिशा की ओर अग्रसर हुआ ।

श्रमिक वर्ग के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हुए कवि आत्म-विश्वास के साथ आशावादी स्वर में भविष्य निर्माण के हेतु संघर्षरत रहने का आह्वान करते हैं । उन्हें दृढ़ विश्वास है कि वह घड़ी अवश्य

1- 'ब्व ग्यवनि अज
गुलन तॆ बुलबुलन तॆ सोम्बलन तॆ मसवलन
हुन्दुई खुमार होत
तॆ मारि मोत
मोदुर मोदुर तॆ न्यदरि होत
सु नग़्मा कोँह
ब्व फेरि जायि जायि शायि शायि पनॆनी आयि
प्रथ बलायि द्रोत ह्यथ
डोकुर क़लम तॆ द्रोत ह्यथ
रूमव रूमव ब्व गुमॆ कडिथ छलन यि टोठ बाग सोन
यि नुन्दि बोन
बालियार लोकचार
(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आयेगी जब पूंजीपति के अस्तित्व का विनाश होगा और श्रम जीवी का भाग्योदय । दासत्व की श्रृंखलाएँ खण्ड खण्ड होकर टूट जायेंगी और दुर्दशाग्रस्त शोषित मानव का उत्थान होगा । श्रमिक अपने भाग्य पर इठलाएँगे और ज़िन्दगी के बोराने में फिर से बसन्त खिल उठे गा । ज़ुल्म की चक्की में निरन्तर पिसते हुए देशवासी का आत्माभिमान जब जाग उठेगा तो :-

- 'वह घड़ी जब मेरा स्वाभिमान छाती तान के डट जाये
तूफ़ान के सम्मुख
दाँत खट्टे हो जायेंगे पतझड़ी[1] वायु के
काले आकाश का रंग पीला पड़ जायेगा
घन गर्जना होगी मूक, ठिठुर जायेंगे शैतान पूंजीपति
वज्र लेगा अन्तिम साँसें और गूँगा हो जायेगा मेघ फटन
किसी बोराने में अपना मुँह छिपा लेगा
वह घड़ी जब मेरा स्वाभिमान छाती तान के डट जाये
तूफ़ान के सम्मुख
वह घड़ी जब मेरी युक्ति से बिगड़े भाग्य सँवर जायेंगे
मूक जनों का गूँगापन होगा दूर, भाग्योदय होगा
गुलामों की बेड़ियाँ टूट जायेंगी, ज़ंजीरें होंगी भस्म

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

चोन म्योन
त' कोह त' थाई, खोड़ त' लिई ड्व नूर तूत्थ पूरवख ।'

- 'शाहिल कुल' - नादिम - 'ड्व ग्यव नि अज़' - पृ0-37.

1- यह मेरा मौलिक प्रयोग है । पतझड़ के वायु के लिए मैंने इस शब्द का प्रयोग किया है । - लेखक -

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

श्रमिक जन इठलाएँ गे अपने भाग्य पर
मेहनतकशों का होगा सम्मान, चमक उठेगा भाग्य
वह घड़ी जब मेरा स्वाभिमान छाती तान के डट जाये
तूफ़ान के सम्मुख ।'[1]

'कय छम आशा पगहिच' (मुझे आशा है कल की) नादिम की एक उल्लेखनीय रचना है जिस में जीवन के प्रति एक स्वस्थ स्वीकारात्मक दृष्टि-कोण को अभिव्यक्त किया गया है । उन्हें आने वाले कल पर अडिग विश्वास है । कवि का आशावादी स्वर तीन काव्य-बिम्बों के द्वारा मुखर हो उठा है । एक गर्भवती महिला, एक प्रवासी[2] विरहिणी तथा एक सध्वा सुन्दरी तीनों आने वाले कल की आशा पर जीवित हैं । गर्भवती महिला माँ बनने के हेतु, विरहिणी प्रिय मिलन के हेतु तथा सध्वा सुन्दरी अपने 'बच्चों के पिता'[3] के कल पहुँचने के हेतु प्रतीक्षारत है । यह कल कितना

1- 'सो विज़ यलि म्योन गारथ सोनि दारिथ नेरि तूफ़ानस
फुटन दन्द हर्दि वावस ज़र्द रंग गछि कालि असमानस
गड़न गगराथि दम फुटि तोर खलि ज़रदार शीतानस
त्रटन शाह लोसि नवग्रयन कोल गछिय बेहि दूरि वारानस
सो विज़ यलि म्योन गारथ सोनि दारिथ नेरि तूफ़ानस
सो विज़ यलि म्यान हयकमत शोरि फुटमुत भक्त इंसानस
कजर यलि बेज़बानन ज़्यवि हजर गछि दूर तदबीरन
गोलामन प्यन वसिथ ज़ोलानि बेपि गछि सूरज़ जोरन
मजूरन बोझ खति मेहनत कान बडि नूर तकदीरन
सो विज़ यलि म्यान हयकमत शोरि फुटमुत भक्त इंसानस
सो विज़ यलि म्योन गारथ सोनि दारिथ नेरि तूफ़ानस ।'
- 'शाहिल कुल' - 'नादिम' 'सो विज़' - पृ0- 52.

2- यहाँ 'प्रवासी' शब्द का प्रयोग 'प्रोषित पतिका' के अर्थ में हुआ है ।

3- एक सध्वा अपने पति के लिये 'बच्चों के पिता' का प्रयोग करती है । कश्मीरी पण्डितों में विवाहित स्त्री अपने पति का नाम ले नहीं

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सुहावना और लोमहर्षक (रोमांचकारी) होगा । तीनों युद्ध की आशंका से मन ही मन भयभीत हैं । कल युद्ध नहीं हो ना चाहिए । विनाश के भय की आशंका माधुर्य में विष घोल देती है परिणाम-स्वरूप सुकुमार भावानुभूतियों में स्वत: गहन चिन्तन का प्रवेश हो जाता है । लेकिन कवि तीनों काव्य बिम्बों में कल के सौन्दर्य को निरखने के हेतु आज आस लगाये बैठे हैं और यही आशावादी जीवन दृष्टि उसे जीने के लिये प्रेरित करती है :-

- मुझे आशा / आस है कल की
बच्चों के पिता आने वाले हैं ।
ज्यों ही उनका नाद सुनूँगी
स्वागत हेतु निकल आऊँगी
बाहु पाश में कस लूंगी
बलायें लूँगी
सब्ज़ घास पर सजाऊँ गी आसन
बच्चों के पिता आने वाले हैं ।
थके हुए होंगे, चरण धो लूँ गी
धीरे धीरे पैर दबा कर मीठी नींद सुलाऊँगी
रख लूँ गी गठरी, वे लाये जो
उन के आगे
बच्चों के पिता आने वाले हैं ।
कहते हैं युद्ध होने वाला है

(पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

पुकारती । देश के कई अन्य भागों में भी यह परम्परा है । यह दूसरी बात है कि आज कल शिक्षित पण्डित घरानों में हम 'मिस्टर' और 'मिसेज़' का शोर मचा रहे हैं ।

- लेखक -

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नहीं होना वाहिए कल
कल बच्चों के पिता आने वाले हैं
नहीं होना वाहिए कल ।'[1]

एक ओर प्रकृति का अत्यन्त निर्मल एवं हृदयाकर्षक सौन्दर्य बिम्ब है तो दूसरी ओर मनुष्य की दानवी-लीला - प्रकृति के इन दो घटकों में परस्पर कितना विरोध है । कवि मानव के इस दानवी स्वरूप को बदलने के हेतु तथा उसके विषदन्त तोड़ने के लिए तूफ़ान का स्वागत करते हैं क्योंकि उन्हें विश्वास है कि जन-शक्ति के सम्मुख पूंजीपति का अस्तित्व कान्ति होन होकर बिखर जायेगा और मानव प्रकृति तथा शेष प्रकृति में परस्पर समता स्थापित होगी । सन् 1949 में लिखित 'उस, उपवन को कोयल' कविता में वे मानव के अमानवीय कुकृत्यों से क्षुब्ध होकर प्रकृति के परस्पर दो विरोधी रूप-बिम्ब प्रस्तुत करके तथा

1- 'च्य छम आशा पगट्टिच
शुरयन मोल वात्यम
पुथुई बोज़ं आलव तिथुई ब्रोंठि नेरस
रटन नालि मति ज़ोरि अन्दि अन्दि छव फेरस
नविस तारि गासत प्यठुई जाय शेरस
शुरयन मोल वात्यम
थकित आसि आमुत गोडयन पाद नावस
तं मोठ दोग दिवान वोलि वोलि नेन्द्र पावस
तं नखयो गठिर ब्रोंह कनि नज़रि थावस
शुरयन मोल वात्यम
दपान जंग छु वोथिवुन
पगाह गोढ़ न स्पदुन
शुरयन मोल वात्ययम
पगाह गोढ़ न स्पदुन ।'
- 'निहिल कुल', 'नाहिम' पृ0- 65-66.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नये बसन्त को प्रजातन्त्र का सन्देश-वाहक बताते हुए अपने आशावादी (आॅपटिमिस्टिक) विश्वास को इस प्रकार वाणी प्रदान करते हैं :-

उपवन की कोयल ! उठ, कू-कू ध्वनि से
'जल'[1] और 'कुमिर'[2] को मनवाने का कर उपक्रम
देख ! बसन्त - बयार की 'हू' 'हू' ध्वनि
जगाने आई है अंधेरे को ।
प्रकाश अन्धकार के साथ
बन्ध रहा है आलिंगन में
उपवन में ओस कणों की है भरमार
मुझे लग रहा है कि बादलों की ओट में
बिजली ने बाल खुले छोड़े ।

मज़दूर के नूर[3] को हथिया कर
पूंजीपति, निज आंचल में उसे समेटता
इठला कर घूम रहा सारे बाज़ार में
आदम मांस का मूल्य तय करने ।

आओ आज शोषित-पीड़ित मानव के भीतर
तूफ़ान की चिनगारी सुलगा दें
हिल उठेगी प्रकृति, बिखर जायेगा आलम

1- 'जल' - (कश्मीरी) - भूरे रंग का एक पक्षी जिसकी आवाज़ बहुत मीठी होती है ।

2- 'कुमिर' - (कश्मीरी)
कुमरी - (अरबी) - एक बोलता सफ़ेद पक्षी ।

3- 'नूर' - (अरबी, पुं०) - शोभा, रौनक़ चमक दमक
यहाँ 'नूर' से अभिप्राय है - हक़

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कौंध उठेंगी प्रकाश में बिजलियाँ
समाचार सुनाने हेतु ।'[1]

कश्मीरी भाषा के साहित्य में भी प्रगतिवाद तूफ़ानी वेग से जन-मानस को आन्दोलित करके अल्प मसय में ही शान्त हो गया और नादिम की कविता विकास के तीसरे मोड़ की ओर अग्रसर हुई । कई विदेशी चिन्तन प्रणालियों से प्रभावित हो कर स्वातन्त्र्योत्तर स्वप्न-भंग की स्थिति ने आज के कलाकार को अपने ही भीतर सिमट कर सोचने के लिए विवश कर दिया । अपने मानस की गहराई में उतर कर कवि निजी अनुभवों का नये सांचों में डालने के हेतु नवीन प्रयोग करने लगा । कवि का निजी चिन्तन नवीनन प्रतीकों एवं बिम्बों के द्वारा अभेद्य आवरण में व्यक्त होने लगा । इस प्रकार काव्य की प्रयोगशाला में सौन्दर्य को तलाशने का नया प्रयोग आरम्भ हुआ । अपनी काव्य-यात्रा के इस नये मोड़ की सूचना देते हुए स्वयं नादिम ने कहा है — "मेरी

1- " वोथी बाग़िच कुकिली कू कू क॑रि क॑रि जल त॑ कुम्युर मनिनावने
वुछि सोन्तकि वावुक हू-हू आमुत बाग़ि बोम्बुर वुज़िनावने
गाह लोग गटि सूत्यि म॑ति करने
शबनम लोग बागस फ॑ति बरने
म्य छु बासान शायद ओबरस तल वुज़मल ल॑जि मस मुचिरावने
मज़दूरस नूरस चूर करिथ
ज़रदार पनुन दामनि बरिथ
सरि बाज़ार फेरान नाज़ करिथ आदम माज़स मोलि नावुनने
वोलि ज़ोर दिमव अज़ तूफ़ानस
मज़लूमस बेकस इन्सानस
अलि कोदरत छलि छलि गछ़ि आलम यलि वुज़मलियिन श्यच भावने ।'

- "संगलाब" - पृ0- 212-214.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

शायरी का नया मोड़ 1958 ई० से आरम्भ होता है । जब मैंने 'नाबद तं टयुठव्यन' नज़्म लिखी । इस नज़्म को मेरी शायरी और कश्मीरी शायरी में एक संगमील का दर्जा प्राप्त है । शायरी में एक तबदीली आने के बावजूद भी तरक़्क़ी-पसन्दी को किरणें आज भी उन लोगों की शायरी में फूटती हैं जो तरक़्क़ी पसन्दी से सम्बद्ध रहे हैं । इन लोगों के साथ मेरा नाम भी आता है ।"[1]

इस प्रकार नादिम की सर्जनात्मक यात्रा का तीसरा पड़ाव है - प्रयोगवाद । 'नाबद तं टयुठव्यन' (नबात और तिक्त जड़ी) नादिम की एक प्रयोगात्मक रचना है जिसमें उन्होंने विशिष्ट

1- "नोलजा" (नादिम विशेषांक) - पृ०- 20.

× नादिम के इस कथन के अन्तिम वाक्य से सम्बन्धित लेखक की टिप्पणी :-

'यही कारण है कि नादिम सन् 1961 ई० में लिखित अपनी रचना 'डल बंठि बंठि' (डल के किनारे किनारे) में लिखते हैं:-

- ये बंगले पैसे वालों के, अलग है दुनिया इन की
वे झोंपड़ियाँ ज़ख्मों पर पड़ी पपड़ियाँ, अलग है दुनिया उनकी
आये यहाँ अक़्लमंद नासमझ हैं आये, आगे बढ़, निछावर तुझ पर
कभी तो आ जायेगी तेरी बारी, शाबाश ! आगे बढ़ ,-
-निछावर तुझ पर

- "शाहिल कुल " पृ०- 92

(यिम बंगाल छि आसन वांलि यिहुन्द दुनिया छु अलग
हुम पाहरि छि ज़ख़्मन क्रांलि यि हुन्द दुनिया छु अलग
आंडि आंकिल आंडि यति चांरि चि पख हलिपारि लगे
च्यति वातो कुनिविज़ि वारि चि पय हुलि पांरि लगे ।)

- "शाहिल कुल " पृ०- 92.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

राजनीतिक मोर्चे के तंग दायरे से बाहर निकल कर विशुद्ध अनुभूति के स्तर पर सौन्दर्य बिम्बों की सृष्टि की है । यहाँ गहन चिन्तन और मार्मिक अनुभूति दोनों मिल कर बिम्ब उबारने में सक्रिय दिखाई देते हैं । 'नबात और तिक्त जड़ी' कविता में सामान्य अर्थ अपना महत्व खो देता है और सम्पूर्ण कविता को पढ़ कर तथा सामूहिक प्रभाव (टोटल इफ्यक्ट) को तलाश कर ही तथ्य को गहराई तक पहुँचा जा सकता है । बिम्ब-योजना के हेतु काव्यालंकारों का भरपूर प्रयोग किया गया है लेकिन इनमें परस्पर कोई क्रम नहीं - बिखराव[1] अधिक है । प्रयोगों की प्रचुरता के कारण पाठक कविता के इस अजायब-घर में अपने आप को एक अजनबी के समान अकेला और उपेक्षित महसूस कर रहा है । यह सत्य है कि नादिम ने नवीन काव्य प्रयोगों के माध्यम से कश्मीरी कविता को एक नई दिशा प्रदान की जिस में निजी अनुभूतियों की गहनता एवं मौलिक प्रयोगों की विविधता ने कविता को कवि के मानस के साथ जोड़ दिया लेकिन इस बात में भी कोई सन्देह नहीं कि इस प्रकार के प्रयोगों में व्याप्त अतिशय बौद्धिकता के कारण जन-मानस और काव्य का पारस्परिक सम्बन्ध न केवल टूट गया अपितु छिन्न-भिन्न भी हो गया। 'नबात और तिक्त जड़ी' कविता का एक उदाहरण यहाँ सोद्देश्य प्रस्तुत किया जा रहा है

1- 'बिखराव' शब्द का व्यवहार साहित्यिक भाषा में नहीं होता है ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ताकि नादिक के सर्जनात्मक प्रयोगों की दशा और दिशा का हम सहोद अनुमान लगा सकें :-

-'बिजली बल्ब के इर्द गिर्द दो मच्छड़
विवाह मंडल पर दूल्हा और दुल्हन
उधर पेड़ को छाँव तले टैंक बटयून
अभी अभी लोप के चौका रोशनदान से ताक रही है ।
कोई मनचली सुन्दरी पसीने से तरबतर हुई

कुछ कम्पन नीले पर्दे पर
कहीं किलोपत्रा[1] नहाने तो नहीं चली !
खनक उठी चूड़ियाँ शीशी के पीछे
लगता है कि अर्द्ध रात्रि का समय है
उस पर्दे के पीछे से बतियाने की
आ रही हल्की आवाज़
दोनों खिड़कियों से दो आँखें
ओ कितनी विशाल ! कितनी मधुमत्त
अनिमेष चितवन, मुस्कान और झूम उठना
रेशम हो रेशम, नरमी हो नरमी ।'[2]

1- 'किलोपत्रा - (cleopatra) - यूनानी सुन्दरी ।

2- ' बिजली बति अन्दि अन्दि मोहि जोराह
वोगिस प्यठ माहरयून माहराज़ा
हुथ कुल शीहलिस तल टैंकिबटयून
पुनि द्रामिय़ वोमि किन योकि लिविथ
कस ताम सील पुडनि अन्दरो गुंम डांलि
नोलिस परदस वांढ़ थथरारे
कलपत्रा मा श्राणास द्रामिय़
बुंगरयून [illegible]ग्व छोनि छोनि आंनि अन्दिर

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

इस युग की अन्य उल्लेखनीय रचनाएँ हैं 'लखचि छु लखचुन' (लक्षणिन् का लक्षण (तिल)), 'कॉठ दरवाज़ प्यठि गरि ताम' (काठी दरवाज़ा से घर तक), 'वुनल' (धुन्ध), 'कॉफ तॅ ज़ोलि' (कैफ़[1] और ऊँघ), 'हॉरसात' (आपबीती), 'शिहिल कुल' (छायादार वृक्ष), 'छ़ट' (ठण्ड़ी हवा के तेज़ झोंके) तथा 'टावाह-टावाह' (काँव काँव)। 'लक्षणी को तिल है' शीर्षक कविता से एक और उदाहरण देखने योग्य है :-

- 'लक्षणी को तिल है
मानो माथे का टीका[2]
प्रज्वलित आतप
सिंहलदीप की पद्मिनी रानी के
मस्तक को प्रकाश ने चूम लिया है
नूर जहान बेमिसाल अप्सरा हो उठी पुनर् जीवित
नहीं तो हिरन ने मानो कोलसर[3] की ओर

(पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

म्य छु बासान रॉज़ हिंज़ि बाह आसन
हुथ परदस पॉत किन कथ-कथ हिश
दोशावुई दार्यव किन आछ जोराह
कॉछ़ाह बजि कॉछ़ाह मायि बरिथ
मुदिया, वुठि कुमजाराह गिलनाह
रीशिम रीशिम नरमी नरमी।'

- "शिहिल कुल" - पृ0- 99-100.

1- 'कैफ़' - (अरबी) - मद, नशा।
2- समस्त सौन्दर्य सिमट कर एक ही केन्द्र पर केन्द्रित है।
3- कोलसर - कश्मीर में एक प्रसिद्ध पहाड़ी झील।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

छिप कर चौखड़ो भरी हो वन के आर से[1]
लक्षणों को तिल है
अनमोल अतुलनीय
लाल चमकता
अथवा गुले लाला[2] ने मानो उपेक्षित
चान्द के धायल वक्ष का
गहरा दाग उधार लिया हो ।'[3]

यहाँ रूपवती का एक तिल कवि के आकर्षण का केन्द्र बन कर विभिन्न रूप-चित्रों के माध्यम से मूर्त हो उठा है । ऐसा प्रतीत होता है मानो तिल स्वयं अपनी अभिव्यक्ति के लिये अथवा अपने अस्तित्व का बोध कराने के लिए छटपटा रहा है । बिम्ब-योजना की दृष्टि से प्रस्तुत

1- कहने का तात्पर्य यह भी हो सकता है कि केश रूपी वन के आर से कोई मृग नयन रूपी कोलतर की छाया में बैठने के हेतु लपक चला हो ।

2- 'गुलेलाला' - (फ़ारसी) - एक लाल रंग का फूल जिस के भीतर काले रंग की पुष्प रज रहती है । यह फूल उपवनों में न खिल कर खुले मैदानों में खिलता है ।

3- 'लखचि छु लखवुन
डयकि कुई टिकि ज़न
ताफ प्रज़लवुन
सिंहल दीपचि रानि पदमाने
प्रागाश्वान इयकि म्यूठ छु द्युतमुत
नर जहाना हूर मिसाल
नति ज़न हरनन कोल सरस कुन
वनि प्यठि नोमुच़ छ्यफ दिथ छाल
लखचि छु लखवुन
अथ छुनि मोलवुन
लाल प्रज़लवुन
गुलि लालस ज़न
छो किलद वछकुई

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कविता पर्याप्त समृद्ध है ।

नादिम की सर्जनात्मक प्रक्रिया का अगला मोड़ है - नई कविता । प्रयोगों के शीशा महल से बाहर निकल कर अब वह विशुद्ध अनुभूति के स्तर पर जीवन के कटु यथार्थ को भोगता - झेलता साधना रत दिखाई दे रहा है । आज मानव मूल्य न केवल बदल गये हैं अपितु खंडित भी हुए हैं । स्वप्न टूट चुके हैं और यथार्थ अपने घिनौने रूप में नग्न नृत्य करता हुआ दिखाई दे रहा है । मानव कहीं आकाश के वक्ष को चीर डालने का साहस प्रदर्शित कर रहा है और कहीं तडान्ध में पड़े कीड़े के समान रेंग रहा है । रिश्ते करवटें बदल रहे हैं और परम्परागत विश्वासों को तर्क के फन्दों में लटकाया जा रहा है । महानगरों की स्थिति कम्प्यूटर-युग को तूफ़ानी चाल का एहसास दिला रही है । आज स्वयं अपने अस्तित्व का प्रश्न मानव मन को अशान्त कर रहा है । 'नादिम' जैसे युगद्रष्टा कवि इन द्वन्द्वात्मक स्थितियों से अप्रभावित कैसे रह सकता ! उन्होंने व्यक्ति के स्तर पर अपनी भावानुभूतियों को गहन चिन्तन को सान पर चढ़ा दिया । वस्तुत: जीवन के बदलते रूप रंग उन्हें वैचारिक स्तर पर भी और सर्जना के क्षेत्र में भी अपनी ओर आकर्षित करते हैं । आधुनिकता को

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

दाग वोज़्म हयात
दकि लद जूने ।'
- "एन एनथालिजी आफ़ माडर्न कश्मीरी वर्स" - त्रिलोकीनाथ रैना,
पृ0- 168-170.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

एक नया काव्यात्मक और वैचारिक रवैय्या (चलन, प्रथा) स्वीकारते हुए उन्होंने कहा है -'(आधुनिकता) हाँ ! वैचारिक रवैय्या है और इसे होना भी चाहिए । इस की ज़रूरत भी है । क्योंकि इकहरी (एक परत की) शायरी तक हम सीमित नहीं रह सकते । ज़रूरत है कि नये वैचारिक रवैय्या और दृष्टिकोण को साथ ले कर हम चलें किन्तु इस में मानव जीवन के उद्देश्य को नज़र अन्दाज़ नहीं होना चाहिए । हम अपनी तनहाई की तलाश में तनहा न रह जाएँ ।'[1] नई-कविता के काव्योन्दोलन से प्रेरित होकर नादिम ने कई रचनाएँ लिखी हैं जिनमें उल्लेखनीय हैं :- 'सयन्दि वानि ठहर' (सिन्धु जल ठहर), 'सुति ओस दोहा' (वह भी दिन था), 'समझौति' (समझौता), 'आंनि ज़िन्दगी हुन्द' (आईना - ज़िन्दगी का), 'कथ बाथ' (बातचीत), 'जंगुल' (जंगल), 'आंकतो मुहल्लस मंज़' (एक ही मुहल्ले में), 'ज़िन्दगी योय़ वसी' (ज़िन्दगी इतनी व्यापक), 'दोद' (दरद), 'हंगि मंगि वुनि वुनि' (अकस्मात् अभी अभी), 'आवाज़न हुन्द माने' (आवाज़ों के अर्थ), 'लोकवार यावुन त बुजर' (बचपन, यौवन और बुढ़ापा) आदि ।

नादिम अब स्वतन्त्र रूप से वैचारिक धरातल पर जीवन एवं जगत की सार्थकता को परखने लगा । प्रत्येक बाह्य घटना को

1- "दीनानाथ नादिम अभिनन्दन ग्रन्थ" - सन् 1985 ई० - पृ०-22

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिक्रिया उसके मानस को अधीर बना देती है वह उसी भीतरी प्रतिक्रिया को कुशल चित्रकार के रूप में शब्द चित्रों के माध्यम से व्यक्त करता है । वस्तुत: उनका काव्य लेखन चिन्तन की प्रक्रिया से गुज़र कर स्वस्थ तार्किक दृष्टि से जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने के लिए बाध्य करता है । मानव मूल्यों का विघटन, कुंठा ग्रस्त जीवन की ट्रेजेडी, यथार्थ बोध एवं अस्तित्व की रक्षा का सवाल उसे अधीर बना कर सोचने के लिए विवश करता है :-

- 'ज़िन्दगी जितनी विस्तृत है उसे कहीं अधिक है सीमित
ढाई क़दम ।
लम्बी उतनी मानो बर्फ़ के बोरों बीच बने पद-मार्ग की -
रेखा
नाप रही हो ।
लेकिन सीमित उतनी कि मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक -
- जितनी
ज़िन्दगी कभी मिलन का क्षण मात्र है
और कभी वियोग का गहरा गम
ज़िन्दगी जब आशा ले के आती है, तो
पौष में पड़ी बर्फ़ आने वाले बसन्त की छाया बन जाती है
सक्रिय हो उठेगा जब हवा का हल्का झोंका, तो
सिहर उठेंगे पतझड़ में पेड़ों के पत्ते ।
मुदित होगी ज़िन्दगी तो लेगी बाहु पाश में
रूठ जायेगी तो दूर से ही नकारेगी

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ज़िन्दगी जितनी विस्तृत है उसे कहीं अधिक है सीमित
ढाई क़दम ।'[1]

कवि के विचारानुसार ज़िन्दगी केवल प्रश्वास-निश्वास की अविरल प्रक्रिया ही नहीं अपितु अरमानों के संग जीने की उत्कट इच्छा का नाम है । यह जब तक साथ देगी तब तक तो गतिशील जीवन का प्रत्येक पहलू सार्थक और सुन्दर दिखाई देता है लेकिन जब साथ छोड़ देती है तो शिव ही शव हो जाता है । क्षण - स्थायी जीवन में तो कुछ यादें ही शेष रह जाती हैं । ज़िन्दगी के इसी शव रूप से कवि-हृदय चिन्तित होकर गहन विचारों की दुनिया में खो जाता है :-

-'ज़िन्दगी निश्वास और प्रश्वास की प्रक्रिया ही नहीं,
ज़िन्दगी बस, हृदय धक-धक ही नहीं
इस जीवन का हर तागा नम है
जब तक तरी है इस में

1- 'ज़िन्दगी यीच़ वसी तीच़ छि छोट, डाई कदम
ज़ीठ तीच़ा ज़न त॑ बुत राथ छि म्येनान शोनि-पव
छ़ोट मगर तीचा ज़ि मस्जिद तान्य छ॑ प॑छ़ मलिसिंज़ दव
गहे छि वसलुक अख ब्रुंज़ गाह फिराकुक सोनिग़म
आशा ह्यथ यियी त॑ पोहस शीन प्योन सोन्तिच छ़ाय
वाशा क॑डि वाविरिंगा हरदि कुल्यन व॑थि थथराय
तोशि यलि लागि वछस वछ, रोशि हेयि दूर दूरि नलम
ज़िन्दगी यीच़ वसी तीच़ छ़ोट, डाई कदम ।'

- "नाव शारि सोम्बरन" - 'ज़िन्दगी यीच़ वसी' - दीनानाथ 'नादिम' - पृ0- 108-109. सम्पादक : गुलाम नबी फिराक़

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जब तक आशायें
(नित पलती - फलती हैं ।)
आगे बढ़ बढ़ कर
गतिशील बनाता है इसको
अरमान कोई ।
कब तक जुड़े रहो गे इस तंग ?
कब तक पकड़ सकोगे
गरेबान से इस को ?
साथ छोड़ कर !
यह जानो कि बीभत्स-ढीठ ज़िन्दगी
चोट करेगी, तब
कहीं दिखेगी नहीं कदापि ।'[1]

दीनानाथ 'नादिम' के सम्पूर्ण व्यक्तित्व, कला और चिन्तन के विकास में यहाँ की सांस्कृतिक सम्पदा का विशेष योगदान रहा है । रूसो साम्यवाद से प्रभावित होकर भी 'नादिम' अपनी परम्परा से कट कर कभी अलग नहीं हुए । उनके विचारानुसार नवीनता अथवा आधुनिकता

1- 'ज़िन्दगी छ'नि खसि वस वुहि नांजन
ज़िन्दगी छ'नि फ्रकियुन वा'लिंज बस
अथ ज़िन्दगी अख अख पन छु ओदुर
योत ताम ह्येह छुस तोत ताम हावस
पख पख फिरिनावुन हसरत कांह
कोत तामथ थ'विज़यस नालस थफ
तफ त्रांविथ
ज़ान ज़ो बुथि फिर ज़िन्दगी ग्वण्ड लायी
पुचि लूठ पनिन ना हावो ज़ांह ।'

- "शाहिल कुल" - दीनानाथ नादिम 'ज़िन्दगी' शीर्षक कविता पृ0- 132.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पूछ = क्रियो का विशेष शिरनाम

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

का अभिप्राय प्राचीन परम्परा का पूर्ण बहिष्कार नहीं अपितु प्राचीन संस्कृति में निहित प्राणदायक तत्वों के आधार पर जीवन की पुनर्-व्याख्या है। नादिम ने अपनी लोक संस्कृति के असीम भण्डार से ऐसे मौक्तिक ढूँढ निकाले जिन की आभा से कवि की सर्जनात्मक प्रतिभा का सौन्दर्य निखर उठा। इस सन्दर्भ में उनके लोक-नाट्यों में से 'व्यथ' का उल्लेख करना संगत होगा जहाँ वितस्ता के प्रति भावात्मक अनुराग को व्यक्त करते हुए कवि इसे शाश्वत जीवन के प्रतीक के रूप में स्वीकार करते हैं।[1]

नादिम साहब कश्मीर के लोक-जीवन से भी पर्याप्त प्रभावित हुए हैं। यहाँ की लोक-कथाओं, लोक-विश्वासों, लोक-नाट्यों एवं लोक-गीतों के प्रति उन्हें अनन्य अनुराग है। लोकगीतों की शैली पर लिखित 'डल हाँज़्न्य[2] हुन्द ग्यवुन' कविता में लोक रस को वेग-युक्त

1- 'व्यथ' (वितस्ता) अन्य गीत-नाट्यों की भाँति ही एक संगीत रूपक है। वास्तव में यह मेरे जीवन की शाश्वत कहानी है। मैं मरण में विश्वास नहीं करता। मेरी जीवन में आस्था है - शाश्वत जीवन में - और यही आस्था और विश्वास 'वितस्ता' रूपक रचना का प्रेरक बन गया।'
-दीनानाथ 'नादिम' अभिनन्दन ग्रन्थ' - तृ। 1985 ई0-पृ0-29.

2- छोटी छोटी खिड़कियों में रहने वालों को कश्मीरी भाषा में 'हाँज़' कहते हैं और अब अन्य भाषाओं में यह शब्द 'हाँजी' के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। इस 'हाँज़' (मल्लाह) की पत्नी को 'हाँज़्न' कहते हैं। ये प्राय: डोल डल में तैरते खेतों (फ्लोटिंग-गार्डन्ज़) में उत्पन्न होने वाली सब्ज़ियाँ बेचती हैं।
- लेखक -

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

धारा में सिक्त एक रूप-चित्र देखने योग्य है :-

-' लाई हूँ ताज़ा ताज़ा डल से, चली आओ, चली आओ,-
अरो ओ चली आओ ।
फूल से नन्हें बैंगन लोको गोलाकार, चली आओ, चली आओ-
अरो ओ चली आओ ।
अलग-अलग हैं मिर्चे और बैंगन
मदिरा कलश समान अलग अंगूरी बैंगन हैं
नाच में उनको लगी परस्पर ठेला-ठेली
चली आओ, चली आओ, अरी ओ चली आओ ।'[1]

अभिव्यक्ति के क्षेत्र में नादिम ने कश्मीरी कविता को बहुत कुछ दिया है ।
V.V. Imp. कश्मीरी भाषा में चतुर्दशपदी गीत (सानेट) सब से पहले नादिम ने लिखे ।
निश्चित आकार की इस रचना में नादिम ने एक विचार-बिन्दु पर
अपना ध्यान केन्द्रित कर कविता के सामूहिक प्रभाव को गहराने का सफल
प्रयास किया है । इस दृष्टि से 'लोल'[2] पर लिखे नादिम के सानेट से
कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं :-

-'लोल मेरे ! क्या याद नहीं तुझ को वे दिन
जब सब की आँख चुरा कर क्रीड़ारत था हम दोनों का यौवन

1- 'तारि तारि म्य अनिमय डलि हय, हय वले हय वले हय वले हय
फुलिये वांगन त पारिमि अलिहय हय वले हय वले हय वले हय
मरचिवांगन त वांगन छि ब्योन-ब्योन मस मलरि हो वांगन छि -
- ब्योन ब्योन
नावि मंज़ छो करान ठोलि ठोलि हय - हय वले हय वले हय वले हय ।

2- 'लोल' कश्मीरी भाषा में प्यार-मुहब्बत, हृदयाकर्षण और 'इश्क़' का वाचक शब्द है ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

हम ताक रहे थे इक दूजे को दूर दूर से
पूर्व दिवस हो सोचा करते कल को, इसी तरह दिन कटते थे
अभाव जनित विवशता में आषाढ़ पौष में बदल गया
बसन्त की कोमल ळअटहनी से जड़ गये पत्ते
पर तब भी निज-दीवट पर प्रेम - दीप हमारा
ज्योति कणों से अन्धकार का अस्तित्व मिटाता ।'[1]

'नादिम' पर यह आक्षेप लगाया जाता है कि वे अनावश्यक रूप से अपनी रचनाओं में इतने काव्य-प्रयोग तथा अनियंत्रित शब्द-प्रयोग भर देते हैं कि खरा सोना भी खोटा प्रतीता होता है ।[2] वस्तुतः 'नादिम' ने प्रत्येक काव्य-प्रयोग में अपनी असाधारण प्रतिभा का परिचय दिया है यह दूसरी बात है कि नवीन प्रयोगों के मोह पाश में बन्ध कर वे जन-मानस से कट कर बौद्धिक समाज तक ही सीमित रह गये लेकिन यह स्थिति अल्प कालिक थी ।

सॉनेट के साथ-साथ नादिम ने ब्लैंक वर्स एवं आज़ाद नज़्में[3] (अतुकान्त कविताएँ) भी लिखी हैं और इस प्रकार उन्होंने कश्मीरी

1- 'चे छो ना लोलि म्याने याद तिम दोह
गिन्दान ओस सोन यावुन चूरि चूरे
वुछान ओस अक अकिस असि, दूरि दूरे
करान ओस कालि पगहिच सोच बरान दोह

*न आसुन क्रूठ प्योम हारस कोरुन
छनिथ पन प्यव बहारस लालि
मगर वुनि ज़ोंग लोलुक सानि
छु वुज़वान गाश गटि कारस
'शिहिलकुल'- नादिम - पृ० -85

2 - *'जदीद कॉशिर शॉयिरी' - सन् 1982 ई० - डॉ० हामिद पृ० - 102

3 - 'आप इस बात से पूर्णतयः परिचित है कि मैंने कश्मीरी में पहली बार आज़ाद नज़्म, ब्लैंक वर्स, सॉनेट और ओपेरा लिखा है।'
'नीलजा' - नादिम विशेषांक - सन् 1983-84 ई० - पृ० - 19

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

भाषा में निहित अभिव्यक्ति क्षमताओं के प्रति स्थानीय साहित्य-समाज को सचेत किया। नये प्रयोगशील कवियों के अगुआ के रूप में उनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है।[1]

पण्डित दीनानाथ कौल 'नादिम' ने अत्यन्त संक्षिप्त आकार की 'मिनी' कविताएँ भी लिखी हैं जिन में किसी गहन अनुभूत सत्य अथवा विचारणीय तथ्य का सांकेतिक अंकन किया गया है। इस दृष्टि से 'गासतुल' (घास का तिनका), 'ज़िन्दगी', 'हे होश करिव' (अरे होश करो) तथा 'चूर' (चोर) शीर्षक रचनाएँ उल्लेखनीय हैं।

अपने जीवन की तुलना एक घास के तिनके के साथ करते हुए कवि वास्तव में यह कहना चाहते हैं कि प्रत्येक वस्तु निश्चित समयावधि के बन्धन में सीमित है। समय ढल जाने पर उसकी निर्जीवता एवं निरर्थकता का आभास तुरन्त हो जाता है। प्रकृति के नाना रंगों का विकासोन्मुख जीवन के साथ गहरा सम्बन्ध है। आज का हार-स्वरूप जीवन कल भार-स्वरूप बन कर सामर्थ्य हीन व्यक्ति के कन्धों

1- 'आधुनिक कश्मीरी कविता के जन्मदाता यदि 'महजूर' हैं तो नई कश्मीरी कविता के जन्म दाता दीनानाथ 'नादिम'। सन् 1947 के बाद जब प्रथम बार कश्मीरी कविता के विषय तथा शैली में नये प्रयोग हुए तो 'नादिम' इन नये प्रयोगशील कवियों के अगुआ के रूप में हमारे सामने आये - - - ।' -वेदराही-
- "दीनानाथ नादिम अभिनन्दन ग्रन्थ" - पृ0- 82.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पर लदे भारी बोझ का एहसास दिलाता है ।

'घास का तिनका' शीर्षक 'मिनी' कविता में जीवन के इन्हीं द्रुत बदलते रंगों का बोध गहराने लगता है :-

-'इस घास के तिनके की दशा
हुई मेरी जैसी
तरी थी इस में, था तब तक
नरम - मुलायम
झुक जाता था हल्के वायु झकोरों से,
लू के तपते शोलों से
शिशिर की रातों में
खो दिया तरी को इसने आज
सूख कर हुआ कड़ा
भ्रम जनित, गर्व - चूर
वेला ढल गई जिस वस्तु की
प्रकृति बदल जाती है उस की
पाँव तले, खिसक जाती है मिट्टी
तत्क्षण ।
(कड़ा तिनका)
मात्र फूँक से टूट जाता है
धक्के से हो जाता चूर चूर
अग्नि शिखा दिखाने से

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

देखो, हो जाये गा क्षार तुरन्त ।"[1]

इसमें सन्देह नहीं कि नादिम भाषा के धनी हैं । शुद्ध मौलिक तद्भव कश्मीरी-शब्द-प्रयोग स्वातन्त्र्योत्तर युग में नादिम की रचनाओं में सब से पहले देखने को मिलता है । कवि ने अत्यन्त सहज रूप में एवं स्वाभाविकता के साथ आम जन समूह में प्रचलित शब्दावली को काव्य-भाषा के रूप में व्यवहार में लाया । जीवन के हर क्षेत्र से उन्होंने शुद्ध कश्मीरी तद्भव शब्दों को चुना और जौहरी की कला से उन में अर्थ-अभिव्यक्ति का निखार उत्पन्न किया । शब्दों के परम्परागत एवं प्रचलित अर्थों के साथ-साथ उन्होंने नवीन अर्थ प्रसंगों के हेतु भी उन्हें व्यवहार में लाया । कहीं वे प्रतीकात्मक रूप में और कहीं अपने साथ जुड़े सांस्कृतिक सन्दर्भों को व्यक्त करने के हेतु सांकेतिक रूप में व्यवहृत हुए । 'नादिम' शब्दों की अन्तरात्मा से परिचित हैं । काव्य-बिम्ब उभारने में तथा प्रतीकों के व्यवहार में उन्होंने अपनी उद्भावना शक्ति

1- 'यथ गास तुलिस गयो म्यानि वनन
ह्येह ओसुस तेलि ओस पोट-पिशुल
वावस ति नमन तावस ति नमन
वन्दि रांज़न मंज़ अज़ रोवुस ह्येह
क्रेछर हयथ, यांवन अपजुई तेह
चिज़ यथ डांज तथ डांज ज़ात पनिन
खोरि तलि द्रायस बुतराथ पनिन
फोकि सूत्थि फुटि दकि सूत्थि चूर गछ्यस
रेह हांव्यस वुछ तो सूर गछ्यस ।'
- "शिहिल कुल ' 'नादिम' पृ0- 109.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

और सर्जनात्मक प्रतिभा का भरपूर प्रयोग किया है ।[1] यहाँ कल्पना तर्क के सान पर चढ़ कर निखर उठी है । नादिम की कविताओं के आकर्षण का एक कारण उनकी लोक-भाषा है जो नवीन सन्दर्भों में अपनी क्षमताओं का बोध कराते हुए व्यक्त हुई है । श्री मोतीलाल साक़ी के कथनानुसार "नादिम को कश्मीरी भाषा पर जो अधिकार प्राप्त है वह बहुत कम कश्मीरी कवियों में देखने को मिलता है ।"[2] श्री मुहम्मद यूसुफ टेंग के विचारानुसार 'नादिम ने अपनी कल्पना शक्ति और प्रतिभा के द्वारा कश्मीरी भाषा में निहित अर्थ-अभिव्यक्ति की उन महान शक्तियों को उजागर किया जो आज तक हमें ज्ञात नहीं थी ।'[3] निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में व्यवहृत मौलिक शब्द-प्रयोग देखने योग्य हैं :-

1 : 'तुलि क्याज़ि गुलन ग्यूर कारिय माठ तुलिर च्यूर'[4]

हिन्दी अनुवाद : 'क्यों मधु मक्खी भिन भिना कर फूलों से हर लेगी पुष्प रस ?'

1- 'शब्दों के आन्तरिक संगीत के प्रति वे खास तौर पर जागरूक रहे हैं और बिम्बों और प्रतीकों की सृष्टि में वे जिस क़दर मौलिक हैं, शायद हो कोई दूसरा कश्मीरी कवि होगा ।'
-"कश्मीरी साहित्य का इतिहास" - डॉ० शशिशेखर तोषखानी, पृ०- 269.

2- "गाशिर" - मोतीलाल साक़ी - प्रकाशन वर्ष सन् 1974 ई०, पृ०-249

3- "दीनानाथ नादिम अभिनन्दन ग्रन्थ" - जम्मू कश्मीर राज्य (तत्कालीन कल्चरल अकादमी के) मन्त्री (श्री मुहम्मद यूसुफ टेंग का सन्देश) -पृ०-13.

4- " शिहिल कुल" पृ०- 50.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ग्यूर करुन - लगातार चक्कर काटना, भिन भिनाना

माछ तुलिर - मधु मक्खी

व्यूर - पुष्प रस

2: ' म्य छु बासान शायद ओबरस तल वुज़मल लांज मस मुचि़रावने '[1]

हिन्दी अनुवाद :- लग रहा है मुझे कि सम्भवतः मेघ-खण्डों के पीछे बिजली लगी बाल बिखेरने ।'

ओबुर - मेघ खण्ड

वुज़मल - बिजली

मस मुचि़रावने- बाल बिखेरना

3: ' ताज़ं ताज़ं म्य अनिमय डलिहय, फुलियि वांगन तं पांरिमि अलि-हय ।'[2]

हिन्दी अनुवाद :- ताज़ा ताज़ा मैं लाइ डल से
फूल से नन्हें बैंगन, लौकी गोलाकार ।'

फलियि वांगन- नन्हें बैंगन जो हाल में पौधे पर लगे हैं ।

पांरिमि अलि- गोलाकार कद्दू

4: ' ज़्यति वाती कुनि विज़ि वांरि चि़ पख हल पांरि लगै
वांथ गछ़नय बरन्यन तांरि चि़पख हल पांरि लगै ।'[3]

हिन्दी अनुवाद :- कभी आयेगी बारी तेरी, तुम आगे बढ़
साधु साधु, निछावर तुझ पर
द्वार की चटखनियाँ खुल जायेंगी तुम आगे बढ़
साधु साधु, निछावर तुझ पर ।

1- "शिहिल कुल" 'नादिम' - पृ0- 59.
2- -वही- पृ0- 83.
3- -वही- पृ0- 91.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

वाँथि - खुले

बरन्यन - द्वार पट

तारि - चटखनियाँ

हल पारि- निछावर होना

5: 'बिजली बति अंदि अंदि माँहि जोराह
वोगिस प्यठ माहरण्य माहराज़ा
हुथ कुलि शोहलिस तल टेंकिबटन्या
पुनि द्रामिय़ वोभि किन्य चोकि लिविथ ।'[1]

हिन्दी अनुवाद :- बिजली बल्ब के इर्द गिर्द दो मच्छड़
विवाह-मंडल पर दूल्हा और दुल्हन
उधर पेड़ की छाँव तले टेंकबट्यन
अभी अभी लोप के चौका रोशनदान से ताक-
- रही है ।

माँहि - मच्छर/मच्छड़

वोब - रोशनदान

माहरण्य - दुल्हन

माहराज़ि - दूल्हा

प्यूग - विवाह मण्डल -कश्मीरी पण्डितों में विवाह के समय बारात आगमन पर सब से पहले दूल्हा का स्वागत/सम्मान विवाह-मण्डल पर होता है । इसे विभिन्न रंगों से सजाया जाता है । यहाँ पर सास वर-वधू को नबात (मिष्टान्न) खिलाती है और आरती उतारती है ।

1- 'शाहिल कुल' 'नादिम' - पृ0-99

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

टैंक बट्यन .- पीले रंग का चितला फूल
कश्मीरी पण्डित स्त्रियों का नाम विशेष

अर्थ गाम्भीर्य के साथ-साथ शब्दों के माध्यम से नाद-सौन्दर्य की सृष्टि करने में भी नादिम को अद्वितीय सफलता प्राप्त हुई है। संगीत नादिम की नस-नस में बसा है। उनके गीति-नाट्य इस तथ्य के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। लोक संगीत की मधुर लय को आत्मसात करके नादिम अपने विशिष्ट शब्द प्रयोगों के माध्यम से काव्य और संगीत के मध्य समुचित सन्तुलन स्थापित करने में पूर्ण सफल हुए हैं। 'पाँच़ादर' (जल प्रपात) शीर्षक कविता में ध्वनि-चित्र की सृष्टि देखने योग्य है :-

-' गर-गर-गरारगर - गरर - गरर
सवेग प्रवाहित होगी जल - लहर अभी
धीरे धीरे मचल उठता है पर्वत नद
शर-शर शरारशार - शरार - शरर।'[1]

वस्तुतः नादिम ने कश्मीरी कविता को परम्परागत रूढ़ बन्धनों से मुक्ति दिलाई। छन्दोबद्धता का बन्धन तोड़ दिया और अपनी

1- ' गर - गर - गरारगर - गरर - गरर
द्रसि दिथ वसि वुनि आब मलर
गर - गर - गरारगर - गरर - गरर
रसि रसि छु करान आरि मच़र
शर - शर — शराशार - शरार - शरर।'
- "शिहिल कुल" -'नादिम' -'पाँच़ादर' - पृ०- 135.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

स्वतन्त्र काव्य-प्रकृति के अनुरूप नित नवीन प्रयोगों के द्वारा कश्मीरी कविता के अन्तर्-बाह्य स्वरूप में अभूतपूर्व परिवर्तन उपस्थित किये। स्वर्गीय प्रो० काशीनाथ दर के शब्दों में - "कविवर 'नादिम' ने बदलते ज़माने के मिज़ाज और तकाज़ों के अनुरूप हमारे 'इथास' (अन्तरात्मा) को पुनर्व्याख्या करके इसको महक और ताज़गी को सुरक्षित रखा है, यही युगधर्म 'नीलमत' से बराबर आज तक कवियों तथा मनीषियों द्वारा परवान चढ़ता आ रहा है।"[1]

इसमें कोई सन्देह नहीं कि 'नादिम' की कला का उत्तरोतर विकास होता रहा। वे किसी विशिष्ट विचार-धारा तक ही सीमित नहीं रहे और न उन्होंने परम्परा का अन्धानुकरण आवश्यक समझा। वे अन्तरमन की गहन अनुभूतियों को नित नवीन सन्दर्भों के साथ जोड़ कर प्रस्तुत करते रहे और प्रस्तुतीकरण के साधनों में भी उन्होंने रूढ़ बन्धनों को अवहेलना करके अपनी स्वच्छन्द प्रकृति का परिचय दिया है। उनकी काव्य-प्रतिभा सदा विकासोन्मुख रही - यही उनके जीवित होने का प्रमाण है। यहाँ प्रकृति के नाना रंगों की छटा है, पक्षियों की चहचहाहट है, अनुभूतियों की गहनता है,

---

1- "नीलजा" -'नादिम विशेषांक' - सन् 1983-84 ई० - पृ०-6.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

चिन्तन के प्रति तर्क प्रधान आग्रह है, श्रमिकों और कृषकों का विलाप मिश्रित विक्षोभ है, रक्त में उबाल है, सौन्दर्य के प्रति आकर्षण है और सब से बढ़ कर जीवन के प्रति एक स्वस्थ दृष्टिकोण। वस्तुत: नादिम की कविताओं में जीवन अपनी समस्त विविधताओं के साथ मुखर हो उठा है। स्वयं उन्हीं के शब्दों में :-

- "मैं मरण में विश्वास नहीं करता। मेरी जीवन में आस्था है - शाश्वत जीवन में।"[1]

अत: वे पूरी शक्ति के साथ आने वाले कल के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करते हुए लिखते हैं :-

-' मुझे आशा है कल की
कल दुनिया जगमगाये गा
दिन के प्रकाश में होगी वृद्धि
गुलो गुलज़ार दमक उठें गे
कसमसाने लगे गो पृथ्वी
खिल उठे गो हरियाली
उस के वक्ष में प्रेम के फ़व्वारे प्रवाहित होंगे

1- " दीनानाथ 'नादिम' अभिनन्दन ग्रन्थ " - इन्टरव्यू - भेंटकर्ता : प्रो० चमनलाल सप्रू - पृ०- 29.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कल दुनिया जगमगाये गा
मुझे आशा है कल की । "[1]

निस्सन्देह 'नादिम' का योगदान आधुनिक कश्मीरी साहित्य में संगेमील[2] की हैसियत[3] रखता है ।

- 0 -

1- ' म्य छम आशा पगहिच
पगाह शालि दुनिया
दोहस गाशा हुरि गुल तं गुलज़ार प्रज़लन
ज़मीनस तिसर लगि तं सब्ज़ार प्रज़लन
वछस मंज़ हुमिस लोलि फन्वार प्रज़लन
पगाह शालि दुनिया
म्य छम आशा पगहिच ।'
- "शिराहिल कुल" 'नादिम' 'म्य छम आशा पगहिच' पृ0- 62.

2- "नीलजा" - "नादिम विशेषांक" "नादिम 'सन्तोष' को नज़रों में" पृ0-15

3- 'हैसियत' - योग्यता, सामर्थ्य, दरजा ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

/5/ अ: सौन्दर्योपासना, :इ: यथार्थबोध, :ऊ: हास्य एवं व्यंग्य, :ए: इश्क़े हक़ीक़ी और तलाशे हक़ तथा रुबाई के सफल कवि

---

* मीर ग़ुलाम रसूल 'नाज़की'
(सन् 1912 ई0 ———)

1- संघर्षपूर्ण जीवन : साधना के पथ पर निरत अग्रसर
2- अध्यापक नाज़की : ज़िन्दगी के स्कूल में एक अनुसंधित्सु
3- आकाशवाणी के श्रीनगर केन्द्र से वाबस्तगी
4- इस्लाम धर्म एवं दर्शन का गहरा प्रभाव
5- सर्जनात्मक साहित्य
6- ग़ज़ल, रुबाई और क़ितआत : मुक्तक काव्य
7- रुबाइयों में इश्क़े हक़ीक़ी
8- जीवन की क्षण भंगुरता एवं मृत्यु भय का एहसास
9- व्यंग्यकार नाज़की : सहजता और ईमानदारी के साथ गहन निरीक्षण जीवन का
10- कृत्रिम हाव-भाव : बेमानी इंसानियत
11- धर्म गुरुओं की छीना-झपटी : व्यापार धर्म का
12- राजनीतिज्ञों के दाँव-पेंच : कुशल योद्धा अखाड़े के
13- सौन्दर्योपासक 'नाज़की'
14- 'नाज़की' की कविता में प्रकृति
15- लोकजीवन के खिलते-मुरझाते रंग
16- अभिव्यक्ति पर फ़ारसी और उर्दू की गहरी छाप
17- निष्कर्ष ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मीर ग़ुलाम रसूल नाज़की कश्मीरी भाषा के उन प्रतिभा सम्पन्न वयोवृद्ध साहित्यकारों में से है जिन्होंने ज़िन्दगी के गहन यथार्थ को चिन्तन की सान पर चढ़ा कर ख़ूबीते व्यंग्य के माध्यम से काव्य-भाषा में व्यक्त करने का प्रयास किया है ।

नाज़की साहब का जन्म एक प्रतिष्ठित मुस्लिम परिवार में सन् 1912 ई० में हुआ । पुत्र-जन्म के पश्चात् इनके पिता स्वर्गीय मीर ग़ुलाम मुस्तफ़ाह ने अपना स्थायी निवास बांडीपुर के माडर गाँव को बनाया और यहीं सपरिवार रहने लगे । आरम्भिक शिक्षा ग्रामीण माहौल में प्राप्त हुई और तरुणावस्था में ही स्कूल मास्टर नियुक्त हुए । इस दृष्टि से वे अब्दुल अहद 'आज़ाद', मास्टर ज़िन्दा कौल एवं दीनानाथ 'नादिम' की परम्परा से जुड़ जाते हैं । युवा नाज़की बचपन से ही बहुत ज़हीन रहे हैं यही कारण है कि उनके जीवन में अध्ययन अध्यापन का काम साथ-साथ चलता रहा । मुंशीफ़ाज़िल, मुंशी आलिम तथा अदीबफ़ाज़िल की परीक्षाएँ पास करने के पश्चात् उन्होंने बी० ए० की परीक्षा भी पास की । लेकिन मात्र परीक्षाएँ पास करना ही उनका

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

उद्देश्य नहीं रहा है । उन्होंने ज़िन्दगी के स्कूल में एक अनुसंधित्सु (Researcher) के समान परत-दर-परत जीवन-सत्य को समझने, जानने और व्यावहारिक रूप में अपनाने का प्रयास किया है । यह उनकी पूरी ज़िन्दगी की साधना रही है और इस कठोर साधना-पथ पर चल कर वे एक के बाद एक मौक्तिककण ढूँढने में सफल हुए हैं । आज नाज़की साहब की अरबी, फ़ारसी और उर्दू भाषाओं पर गहरी नज़र है । फ़ारसी और उर्दू के गलियारों से निकल कर ही वे कश्मीरी में आये और आज तक निरन्तर अपनी मातृभाषा के प्रति ऋण होने के हेतु सक्रिय रहे हैं ।

श्रीनगर में रेडियो स्टेशन की स्थापना के बाद वे सन् 1948 ई० में रेडियो स्टेशन में एक अच्छे पद पर नियुक्त हुए और सेवा-निवृत्ति के समय तक प्रसारण के विविध कार्यक्रमों के साथ स्थायी रूप से सम्बन्धित रहे । रेडियो में आने से पहले उन्होंने शिक्षा-विभाग की एक पत्रिका 'तालीम जदीद' का सम्पादन कुछ समय तक किया और रेडियो से सेवा-निवृत्त होने के बाद भी वे कुछ समय तक एक साप्ताहिक पत्रिका 'चमन' का सम्पादन करते रहे ।

नाज़की साहब का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली है । उन्हें कश्मीर के प्राचीन इतिहास, विभिन्न धार्मिक आन्दोलनों, सूफ़ी मत

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

एवं अन्य सम्प्रदाय के साथ-साथ प्राचीन काल से वर्तमान युग तक की समस्त साहित्यिक गतिविधियों की सम्यक् जानकारी है। इस्लाम धर्म एवं दर्शन का भी उन्होंने गहन अध्ययन किया। इस प्रकार उनके व्यक्तित्व-निर्माण में उनकी अध्ययनशील रुचि एवं ज्ञानार्जन की बलवती इच्छा और प्रवृत्ति का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने जीवन के स्कूल में बहुत कुछ पढ़ा है, बहुत कुछ अनुभव किया है, बहुत कुछ देखा और सहा है। यही कारण है कि उनकी प्रत्येक चतुष्पदी (व्यापक अर्थ में रुबाई) में अनुभूति की ताज़गी के साथ-साथ चिन्तन और विचार की गरिमा भी पाई जाती है। उनके सरल और अकलुषित जीवन में उच्च चिन्तन का वास है। फलदार वृक्ष की हर डाली नत-मस्तक हो दिखाई देती है। जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण अत्यन्त स्वस्थ एवं तार्किक है। उन्हें हम किसी विशेष काव्योन्दोलन के साथ बाँध नहीं सकते। न उन्होंने परम्परा का अन्धानुकरण किया और न ही वे अपनी आँखें मूँद कर नवीन काव्य-आन्दोलनों के प्रवाह में प्रवाहित हुए हैं। स्थिर चित्त एवं दृढ़ निश्चय के साथ वे एक विशिष्ट पथ पर चलते रहे और आज भी बराबर चल रहे हैं।

नाज़की साहब के कृतित्व को प्रमुख रूप से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। उर्दू भाषा में लिखी नाज़की की रचनाएँ तथा

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कश्मीरी भाषा में लिखी रचनाएँ । इन्हें आगे पुनः दो भागों में विभक्त किया जा सकता है क्योंकि नाज़की गद्य एवं पद्य में समान रूप से लिखते रहे । 'रूह-ए-ग़नी' नाज़की की एक उल्लेखनीय सम्पादित रचना है जिस में ग़नी कश्मीरी के काव्य के कुछ अंशों का सम्पादन उर्दू अनुवाद सहित प्रस्तुत किया गया है । कवि अब्दुल अहद आज़ाद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित इनकी दूसरी सम्पादित रचना जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी द्वारा सन् 1959 ई० में प्रकाशित हुई । आधुनिक युग के कई अन्य कश्मीरी कवियों के समान आरम्भ में नाज़की साहब भी कश्मीरी में नहीं लिखते थे । रेडियो में आने के बाद वे इस ओर प्रवृत्त हुए और कश्मीरी में ग़ज़ल, रुबाइयाँ, और क़त्आत लिखने लगे । काव्य-अभिव्यक्ति की इन प्रमुख शैलियों को अपनाते हुए भी उन्होंने मुक्तक काव्य के क्षेत्र में रुबाई की ओर अधिक ध्यान दिया और कश्मीरी साहित्य में इस काव्य-विधा को एक सुनिश्चित दिशा प्रदान की । उस समय नाज़की साहब इस तथ्य से भली भाँति परिचित थे कि ग़ज़ल के द्वारा हुस्नो-इश्क की दास्ताँ कहते, सुनते-सुनाते और दोहराते बहुत समय व्यर्थ नष्ट हुआ है अब कुछ नये अन्दाज़ में ज़िन्दगी को नये सन्दर्भों के परिप्रेक्ष्य में नवीन अर्थ प्रदान करने की आवश्यकता है । 'देखन में छोटे लगे घाव करे गम्भीर' इस उद्देश्य से उन्होंने चतुष्पदी अर्थात् रुबाई को अपनी अभिव्यक्ति का

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मुख्य साधन बनाया । यह वही समय है जब दीनानाथ नादिम ने चतुर्दशी पदी अर्थात् Sonnet और आज़ाद नज़्म को कश्मीरी भाषा में अभिव्यक्ति के नवीन साधन के रूप में ग्रहण किया था ।

सन् 1964 ई० में उन्होंने कश्मीरी में 'नमरूदनामि' प्रकाशित किया जिस में कुल मिलाकर 200 रुबाइयाँ-कत्आत संग्रहीत हैं । इसके अतिरिक्त कई पत्र-पत्रिकाओं विशेषकर 'शीराज़ा' (कश्मीरी एवं उर्दू) में उनकी कई रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं । विषय-विस्तार की दृष्टि से इन्हें कई वर्गों में विभाजित किया जा सकता है । इन मुक्तक रचनाओं में कहीं उनके सरल और स्वच्छन्द हृदयोद्गार अभिव्यक्त हुए हैं तो कहीं युगीन जीवन - सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक - अपनी समस्त विकृतियों के साथ प्रतिबिम्बित हो उठा है । कहीं इन में विचारों की गरिमा है तो कहीं ईश्वर वन्दना में दैन्यभाव एवं पूर्ण समर्पण का महात्म्य अंकित है । कहीं वैयक्तिक जीवन की गहन चिन्तन-प्रधान अनुभूति मुखर हो उठी है तो कहीं एक सरस, मनोरम-लौकिक-प्रेमानुभूति प्रणयाकुल हृदय की तारों को झंकृत कर देती है । कहीं तीखा-चुभता व्यंग्य नश्तर के समान हृदय को धीरता हुआ पार चला जाता है । नाज़की साहब का हास्य-व्यंग्य अप्रत्यक्ष रूप में मुक्तक के सामूहिक प्रभाव को गहराने में भी सहायक सिद्ध होता है ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

इश्क़े हक़ीक़ी अथवा इश्क़े इलाही से प्रेरित होकर नाज़की साहब ने कई रूबाइयाँ लिखी हैं जिन में अपने इष्ट के प्रति अर्चना के पुष्प समर्पित करते हुए कवि अलौकिक प्रेमानुभूति में अपनी सुधबुध खोकर उस परमसत्ता के अस्तित्व में लय होने का प्रयास करते हैं। अद्वैतभाव से प्रेरित कवि एकाग्र चित्त होकर तथा अपनी समस्त शक्तियों को समेट कर उस विराट सत्ता के सम्मुख नतमस्तक हो जाते हैं। इन मुक्तकों में भक्त हृदय की निश्छल भावना पूरे आत्मविश्वास के साथ अभिव्यक्त हुई है। दो उदाहरण द्रष्टव्य हैं :-

-'वियोग रात्रि बढ़ती गई, काश ! आ जाते
घर कर गई चिन्ताएँ हृदय में, काश ! आ जाते
ग़म का घटाटोप मिट जायेगा आँखों को नव ज्योति मिलेगी
बरौनियों ने दीप-माला सजाई, काश ! आ जाते।'[1]

-'सांज़[x] पुष्पों की मालाएँ गूँथूगी स्वागत हेतु, काश ! आ जाते
चाहत के मधु-कलस भरूँगी, काश ! आ जाते
निछावर करती नेत्र ज्योति, प्रिय ! आ जाते
मदीने के लाल ! कभी आतिथ्य करते स्वीकार।'[2]

1- 'जुदाई हिन्द शबन रोट तूल यिखना
ग़मव दितिहम दिलस मंज़ मूल यिखना
ग़मुक गटिज़ोल च़ल्यम चश्मन यियम गाश
आछर वालव छु कोरमुत जूल यिखना।'
-' नाव शारि सोम्बरन" सम्पादक - गुलाम नबी फ़िराक़ 'रूबाई'
- गुलाम रसूल नाज़की - पृ0- 99.

x सांज़/सानि - कश्मीरी - सांज़ पोश - पीले रँग के फूलों का एक भेद

2- 'ब्व सानि पोशान च़्य करिहै मालि यिखना
ब्व बरिहे शोकि की मस प्यालि यिखना

{ शेष अगले पृष्ठ पर }

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जीवन की क्षण-भंगुरता भी कहीं-कहीं कवि को अधीर एवं हताश कर देती है ।

मृत्यु जीवन का एक शाश्वत सत्य है - इस की उपेक्षा नहीं की जा सकती । लेकिन इस का रहस्य क्या है ? कवि इसे जानने के लिए ज्ञान और चिन्तन के पथ पर अग्रसर हो कर अपनी अनुभूति को तर्क की कसौटी पर कसता है । बन्धु-बान्धव, सखा-साथी, परिवार-कुटुम्ब - सब कुछ अपना होते हुए भी कुछ भी अपना नहीं है - रहेगी केवल एक कटु-मधुर स्मृति । अतः आवश्यकता है निरन्तर साधना की ताकि मृत्यु और जीवन की क्षणभंगुरता का एहसास हमें निष्क्रिय न बना दे । काव्य अथवा सर्जनात्मक साहित्य लेखन भी अपने आप को पहचानने के हेतु एक कठोर साधन ही तो है । जीवन की क्षण-भंगुरता तथा मृत्यु-भय का एहसास इन रुबाइयों में गहराने लगता है :-

-'मकान का, बिना बाम[x] मंज़िल, है यह दुनिया
नित दीवारों का गीला पलस्तर, है यह दुनिया
यदि जीवित रह सकोगे सौ साल तक
पर अन्त में बिराना ही तो, है यह दुनिया ।'[1]

{ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग }

अछन हुन्द गाश वन्दि है लालि यिखना
मदीनिकि टाठि साथा सालि यिखना ।'
- "जदीद कॉशिर शॉयिरी" - डॉ० हामिदी - पृ०-197

x- बाम { फ़ारसी } - छत, बाम {कश्मीरी} - छत की कैंची

1- 'मकानुक बामि रोस्तुई पोर दुनिया
दोहे ओदरुई लबन हुन्द बोर दुनिया
हतस वरियस ति हरगाह ज़िन्दि रोज़ख
पतव लाकन छु वांगिज वोर दुनिया ।'
-"अज़िच कॉशिर शॉयिरी" -सं०: रहमान राही, शफ़ी शौक़, पृ०-59

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

-' दाना[x] हो तुम बोना[xx] हो और हो प्रकाश
गहरे - उथले पर पड़ जाती है तेरी छवि
यह सत्य और उचित है लेकिन सुन लीजिये इक बात
जीवन जीना जानते हो पर मृत्यु-बोध से हो अपरिचित ।'

नाज़की की परम्परागत काव्य प्रयोगों के प्रति कोई आकर्षण नहीं है । ये काव्य-प्रयोग काफ़ी घिसे-पिटे हैं और आवश्यकता इस बात की थी कि बदलते सन्दर्भों के अनुरूप जीवन के हर नये प्रयोग के साथ-साथ काव्याभिव्यक्ति में भी नवीन प्रयोग किये जायें । आज मानव-सोच में परिवर्तन हुआ है । तर्क ने अन्ध विश्वास की जगह ली और मण्डित परम्परा खण्ड-खण्ड बिखर गई । काव्यात्मा के भीतर आज प्रयोगों का अजायबघर सज रहा है । अतः बदलाव के इस दौर में अन्तर् बाह्य स्वरूप में परिवर्तन अपेक्षित है । इस दृष्टि से कवि का यह मुक्तक देखने योग्य है :-

-' तार तार हो गये वस्त्र माँग के लाये थे जो
क्या कहूँ, गिरेबान[xxx] पहुँच गया दामन तक

× दाना - {फ़ारसी} - बुद्धिमान
×× बोना - {फ़ारसी} - देखने वाला
1- 'च़ि छुख दाना च़ि छुख बोना च़ि छुख गाश
मनिस वोगनिस च्यवान योनुई छु परतव
यि गव बरहक तं पोज़ लेकिन कथा बोज़
लसुन ज़ानक मरून ज़ानक न क्या गव ।'
- "कोशिर शायिरो" - सं0- प्रो0 मुहोउद्दीन हाजिनी,
साहित्य अकादमी, दिल्ली प्रकाशन - मार्च 1960 ई0, पृ0-210
××× गिरेबान {फ़ारसी} - कुर्ते कमीज़ आदि का गला ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

दर्ज़ी चाहिये, जो सी लेता मेरे हेतु नई पोशाक
बहुत समय हुआ तब से जब कपड़े बदले थे ।'[1]

व्यंग्यकार, नाज़की ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया है । यहाँ उनकी काव्य प्रतिभा जीवन को बहुत गहराई से देखने-समझने और अनुभव करने की दिशा में सतत् प्रयत्नशील दिखाई दे रही है । आधुनिक कश्मीरी व्यंग्य लेखकों में नाज़की अग्रिम पंक्ति के कलाकारों में माने जाते हैं । इन रचनाओं को पढ़कर यह बात स्पष्ट होती है कि नाज़की ने जीवन का मुशाहदः अर्थात् निरीक्षण बहुत निकट से ईमानदारी और सहजता के साथ किया है । जहाँ एक ओर विषम परिस्थितियों के विरुद्ध विद्रोह करने का सामर्थ्य उनमें है वहाँ दूसरी ओर विषपायी बनकर बीभत्स - यथार्थ को हास्य के पुट में नश्तर की सूक्ष्मधार का रूप प्रदान करने की प्रतिभा भी है । आज लोग अपनी व्यवहार कुशलता पर इठलाते हैं और आज की व्यवहार कुशलता इसी में है कि दूसरे के रक्त से अपने मस्तक पर विजय का तिलक लगाओ । इंसानियत आज बेमानी है । यह तथ्य न केवल मानवीय स्तर पर अपितु

1- ' रनेमिच ज़ॉट गॉमिच छम प्राणिवारन
वनय क्या दामनस तल नाल वोतुम
तिचाह गोछ युस म्य तुविहे नोव पोशाका
यलव बदलावनस यॉचकाल वोतुम ।'
- "जदीद कॉशिर शॉयिरी" - डॉ० हामिदी - पृ०- 195.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सार्थक प्रतीत होता है। कृत्रिम हाव-भाव आज का जीवन-सत्य बन गया है। दिखावे की दुनिया का एक रंग देखिये :-

- 'यदि मुँह पर झुर्रिया है तो उसे तिल कह देना
लचका नहीं सितार में तो शाल× लपेटना
बालों को रंग कर ठग लेना बुढ़ापे को
कम हो गया एक वर्ष आयु में, दावतें उड़ाओ।'[1]

मुल्लाओं की लूट और तथाकथित धर्म गुरुओं की छीना-झपटी को देख कर नाज़की क्षुब्ध हो उठते हैं। आज के इस व्यापारिक युग में धर्म का भी व्यापार हो रहा है और धर्म के ठेकेदार निजी स्वार्थ को सिद्ध करने के हेतु दिल की ख़ानक़ाहों (दरवेशों के रहने का स्थान) को वीरान बना कर मस्जिदों की दीवारों को संगे-मर्मर से सजा रहे हैं। जब इन्सान के ईमान का व्यापार हो सकता है तो धर्म के बिकाऊ होने में किस बात का आश्चर्य :-

- 'महात्माओं को देख कर होता बड़ा अफ़सोस
मुल्लाओं की लूट और धर्म गुरुओं की छीना-झपटी
उजड़ गई हैं दिल की ख़ानक़ाहें

× 'शाल' - एक ऊनी कामदार चादर।

1- ' अगर त्यस छव बुथिस च्यठ तथ वनिव खाल
मं आंसिन लचकि सेतारस वलिव शाल
बुजर थोंविव खटिथ मस्तस दिथिव रंग
वरो च्व वांसि कम यारन करिव साल।'
- "जदीद काश्मीर शायिरी" - डॉ० हामिदी - पृ० - 196.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मस्जिदों में लग रहे हैं संगे मर्मर और झाड़फ़ानूस ।'[1]

राजनीतिज्ञों के दाँव-पेंच देख कर उनका व्यंग्य और भी तीक्ष्ण रूप धारण करता है । वस्तुतः वे अपने युग के प्रति सचेत हैं । स्वतन्त्रता पूर्व हमने अपने भविष्य के विषय में जो सुनहले सपने सँजोये थे, स्वतन्त्रता के पश्चात् सपने, सपने ही रहे और आशा निराशा में बदल गई । कवि आधुनिक युगीन अवसरवादी राजनीति पर कठोर व्यंग्य करते हुए वस्तुतः इसके खोखलेपन को सत्यता को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देखते हैं । इस दृष्टि से नाज़की साहब की यह रुबाई देखने योग्य है :-

-'मैं हूँ उत्तम[x] राजनीतिज्ञ, क्या नहीं हूँ
गुण्डों का बाप शरीफ़ों का दुखदायक
ग्वालों से कहता हूँ कि प्रबन्ध व्यवस्थापक हो तुम
नहीं बान्धता हूँ क्या मैं 'छड़ी पर दस्तार' ।'[2]

नाज़की साहब ने अपनी रुबाइयों में लौकिक प्रेमानुभूति का भी अत्यन्त

1- 'वुछिथ साहिबदिलन सपदान छु अफसूस
मलन हुन्द लूठ पीरन हुन्द थ्पिलहूस
दिलन हिन्द खाँकाह वाँरान गाँमित
मशीदन संग मरमर झाड़ फ़ानूस[xx] ।'
xx झाड़फ़ानूस - शीशे का बना सजावट का सामान ।
- "जदीद काँशिर शाँयिरी" - डा० हामिदी - पृ०- 196.

2- 'ब्व छुस ऐलाँ[*] सियासतकार छुसना ?
गुण्डन हुन्द बब शरीफ आज़ार छुसना ?
ब्व छुस गोर्यन दपान तोहि गाव निज़ाँमी ?
ब्व छुस लोर्यन गंडान दस्तार[*] छुसना ।'[⊗]

* आँला - {अरबी} - सर्वश्रेष्ठ, उत्तम
* लोर्यि दस्तार - कश्मीरी भाषा का प्रसिद्ध मुहावरा {छड़ी पर पगड़ी बान्धना} अर्थात् इशारों पर नाचने वाले जी - हुज़ूर को सिंहासन पर बिठाना

⊗ - "जदीद काँशिर शाँयिरी" डा० हामिदी - पृ०-196-197

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मर्मस्पर्शी चित्रण किया है । शृंगार रस-सिक्त सौन्दर्य-चित्र उभारने में नाज़की साहब की कला निस्संदेह बेजोड़ है । आकार की संक्षिप्तता के कारण इन्हें माइक्रो-चित्र कहना अनुचित न होगा । प्रत्येक चित्र अपने आप में पूर्ण एवं प्रभविष्णु है । कुशल चित्रकार की तूलिका के हल्के आघातों से कवि ने अत्यन्त आकर्षक एवं जीवन्त शब्द चित्रों की सृष्टि की है। विरहिणी की वियोगव्यथा का एक सूक्ष्म रेखाचित्र हृदय की गुह्यतम परतों पर अंकित होता है :-

-' पर्वतों और सुनसान जंगलों को छान मारा, थक कर चूर हुई
जल स्रोत प्रवाहित हैं आँखों से रोते रोते
उस पाषाण हृदयी को कुछ समझ नहीं आया
कर देती है चूर गोल नील-पत्थरों को भी सतत जल धार ।'

एक और स्थिति इससे भी अधिक जान लेवा है । तड़पती विरहिणी का इस स्थिति से गुज़रना कितना कष्टदायक हो सकता है इसका अनुमान वही लगा सकते हैं जिन्होंने बकौल प्रेमचन्द किसी को याद में तड़प-तड़प कर और बिलख-बिलख कर रोया हो। पाषाण हृदयी प्रियतम के सम्मुख विरहिणी की बेबसी और विवशता का कोई मूल्य नहीं। यही

1- 'नयान बालन बयाबानन फलिम पंदि
अछव स्योद जोयि छम द्रामिच म्य वंदि वंदि
तमिल तंगीन दिलस वोतुम न न्होकतल
करान निलिवठ कन्यन आबिय दिगिन ज़ंदि ।'
- "नोवि शारि सोम्बरन" - सम्पादक - गुलाम नबी फ़िराक़,
पृ0- 99.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कारण है तुलती चिनगारी दहकता अंगारा बन कर विरहिणी का जीना दूभर कर देती :-

-'दिन भर रहे यहाँ और मज़ाक़ उड़ाया मेरा
दिन डूब गया ज्यों हो, अफ़सोस ! निकल गये
कहते हैं कि फिर रात के पिछले पहर में आये थे
सोते देखा मुझे, अफ़सोस ! लौट गये ।'[1]

स्पष्ट है कि नाज़की साहब सौन्दर्य के उपासक रहे हैं और रूप-लावण्य ने उन्हें मुखर तथा उनकी लेखनी को सक्रिय होने के लिए विवश किया है । सम्भव है कि कला के प्रति यह उनका विशिष्ट आकर्षण रहा हो जो आज के युग में यदाकदा बेमानी बन जाता है । लेकिन मानव-जीवन के इस instinct अर्थात् सहज प्रवृत्ति को झुठलाया नहीं जा सकता है और न हो बहुत समय तक इसकी उपेक्षा की जा सकती है । हाँ, इसे युगीन संदर्भ में प्रस्तुत करना आवश्यक है और यहाँ नाज़की साहब केवल परम्परा का राग अलापते रह गये ।

नाज़की के काव्य-सृजन में प्रकृति का अपना विशिष्ट योगदान रहा है। कहीं प्रकृति पृष्ठभूमि में और कहीं उद्दीपन रूप में रस छलकाती

1- ' दोहत स्तुम यतो कोरनम मज़ाख़ा
युथुई दोह लूस नोरिथ गोम क्या गोम
दयान पति ओस आमुत पतिमि पोहरे
शोंगिथ वुछनस तं फोरिथ गोम क्या गोम ।'
- जदीद कोंशिर शोंयिरी' डा० हामिदी - पृ०- 198.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

दिखाई देती है । कश्मीर के अद्भुत प्राकृतिक दृश्य बिम्ब-प्रतिबिम्बों के साथ उनकी रुबाइयों में साकार हो उठे हैं । इस तरह का मूर्त्त प्रकृति चित्रण केवल वही कवि प्रस्तुत कर सकता है जिसे प्रकृति के बदलते रंग निकट से देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो । नाज़की प्रकृति की नज़ाकत से बख़ूबी परिचित थे यही कारण है कि अप्सरा सदृश सुन्दरी जब वन-विचरण के हेतु अपने डग भरती है, तो :-

-'सुन्दरी घूम रही थी पर्वतोद्भूत जल धारा के पास
सब्ज़ः ज़ारों में गूँज उठा अप्सराओं का गायन
भागमभाग में मुँह धोया आबशारों ने
कहते, झुकी निगाहों से कुसुमाकर ने निहार लिया ।'[1]

नाज़की साहब की रुबाइयों में लोक-जीवन के मनमोहक रंग भी देखने को मिलते हैं । उनका बाल्य जीवन प्रकृति के स्वच्छन्द वातावरण में व्यतीत हुआ है, प्रकृति के नाना रूप एवं रंग उन्होंने निकट से देखे और अलौकिक सौन्दर्य से भरपूर प्राकृतिक छटा उन्हें निरन्तर अपनी ओर आकर्षित करती रही है । कश्मीर की प्रत्येक ऋतु यहाँ के लोक-जीवन को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में प्रभावित करती है । ऋतु-विशेष का

1-'स्व सोन्दरमाल फेरान ओसि आरन
कनन ग्व विगनि वनवुन सब्ज़ ज़ारन
चलान थपि थारि बुथ छोल आबशारन
दपान तोलि टारि नज़रा कोर बहारन ।'

-"एन एनथालजी आफ माडर्न कश्मीरी वर्स" - त्रिलोकीनाथ रैणा - पृ०-108.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अद्भुत-सौन्दर्य लोक-सौन्दर्य के साथ एकाकार होकर जीव और जगत के पारस्परिक सम्बन्ध को व्यक्त करने में अथवा समझने में सहायक सिद्ध हुआ है। नव बसन्त के आगमन की सूचना प्रकृति अपना रूप-परिधान बदल कर दे रही है। बहती नदियों का कल-कल निनाद और फलदार वृक्षों पर खिला-यौवन अर्थात् प्रस्फुटित बहुरंगी फूल, प्रियतमा को मधुर स्मृति और मिलन की उत्कंठा और इस पर बादामवारी का मेला यही तो लोकरंग की अपनी ख़ूबी है :-

-' कठ कोश[x] हुआ समाप्त बर्फ़ के पहाड़ लगे घबराने
शातकाल के अलकों में उलझाव आ गया
आड़ू के फूलों ने ग्रहण किया मनमीत का रंग
इसी लिये बादामवारी[xx] में ग़ज़ब की रौनक़ छाई है।'[1]

इस प्रकार यह बात स्पष्ट होती है कि मुक्तक काव्य के क्षेत्र में नाज़की साहब के प्रयोग पर्याप्त महत्त्वपूर्ण हैं। इन मुक्तकों में भावों की विविधता है, अनुभूति की गहराई है, विचार एवं चिन्तन की गरिमा है और है कल्पना की मधु मिश्रित उड़ानें। इस काव्य विधा को एक

ज़मिस्ताँ
फा० - जाड़े की ऋतु शीतकाल

1- ' कोठिश च़ोल शीनिबालन च़ायि नठ हिश
ज़मिस्तानस गमिच़ ज़ुल्फ़न छि ज़ठ हिश
च़्निन पोशव छु रोटमुत या्रि सुन्द रंग
तवै लाजमुच़ छि बादमवा'र त्रठ हिश।'

- "अज़िच का'शिर शा'यिरी" - सं०: रहमान राही, शफ़ी शौक़, पृ०-58

x 'कठ कोश' - कोठिश - कश्मीरी
शीतकाल में बहुत अधिक सर्दी के कारण जब तरल पदार्थ जम जाते हैं और शीत लहर से वातावरण यखबस्तः हो जाता है उसे कश्मीरी में 'कठकोश' कहते हैं। अनुमान किया जाता है कि इस शब्द की व्युत्पति संस्कृत 'कर्कश' शब्द से हुई है।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

xx { अगले पृष्ठ पर }

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सुनिश्चित दिशा प्रदान करने में नाज़की साहब का योगदान अभूतपूर्व है । ग़ज़ल का शायिर कहने से ज़्यादा उचित यह होगा कि नाज़की को मुक्तक का शायिर कहा जाये । उनमें हमें प्राचीन और नवीन का अद्भुत संगम दिखाई देता है । यह सत्य है कि फ़ारसी और उर्दू का गहरा प्रभाव उनकी भाषा और अभिव्यक्ति में देखने को मिलता है । सम्भवत: नाज़की अपने संस्कारों से पिक्षा है । लेकिन भीतर का शायिर जब बरजस्त:गोई में बाहर फूट पड़ता है तो ज़िन्दगी अपने हसीन हादिसातों के साथ खॅंदवॅं मस्तानी चाल में लक्ष्य की ओर अग्रसर होती हुई दिखाई देती है । नाज़की को ज़िन्दगी से प्यार है लेकिन साथ ही इस ज़िन्दगी के रहस्य को जानने, समझने और बयान करने की उत्कंठा भी है । इस ज़िन्दगी से आगे भी कुछ और अद्भुत एवं रहस्यमय है जिसे जानना ही सही अर्थों में ज़िन्दगी को पहचानना है । स्वयं उन्हीं के शब्दों में :-

-'देख हमारी सजी यह महफ़िल - कहा सितारों ने चाँद से
क्या हुआ तुझे ? क्यों अवाक् खड़ी हो तनहा

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

×× 'बादामवारी' - श्रीनगर में बसन्त ऋतु के आगमन पर और बादाम के बाग़ों में फूल खिलने पर लगने वाला एक लोक-मेला । बादाम वाटिका - लेखक -

बरजस्त:गोई = हाज़िरजवाबी, तुरन्त किसी विषय पर बोलना
खॅंदवॅं - ज़ोर से बहती हुआ, तेज़ी से चलता हुआ

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आह भर कर नज़र मिलाती और लगी कहने
चाहिये कोई राज़दार जिसे कह देती अपना राज़ ।'[1]

- 0 -

1- 'सितारव ज़ूनि[x] वोन वुछ सांनि महफिल
च़्य क्या गोई क्याज़ि छक रुज़िथ च़ि तन्हा
वोशा त्रांविथ कर्रिन नज़रा ति वोननख
गोछुम अख महरमा यस राज़ वनिहा ।'

x कश्मीरी भाषा में 'ज़ून' (चान्द) स्त्री लिंग है ।

- "नांवि शार्रि सोम्बरन" - सम्पादक: ग़ुलाम नबी फ़िराक़ - पृ0-100

हिंदी चाँद - चँदमा (सं०) - (पुँ०) (पुँ०)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

/6/ अ: मांसल प्रेमानुभूति, :आ: सांस्कृतिक चेतना एवं देश-प्रेम, :इ: प्रगतिवादी चिन्तन एवं सामाजिक यथार्थवाद, :ई: प्रयोगवाद, :उ: नई कविता, इबहाम, अतिशय-बौद्धिकता एवं संक्षिप्त नज़्म के कवि

" अब्दुल रहमान 'राही'
(सन् 1925 ई0——)

1- जीवन चरित : कई संघर्षमय घुमावदार पड़ाव
2- अध्यापन कार्य : फ़ारसी भाषा और साहित्य से कश्मीरी भाषा और साहित्य तक
3- राही : स्वातन्त्र्योत्तर युग के बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न कलाकार
4- राही का तरक़्क़ी पसन्द काव्य : अंगूठी में नगीने के समान आकर्षक
5- राही के ग़ज़लों में प्रेमानुभूति : मांसल, स्वप्निल एवं परवश कर देने वाली
6- राही की कविता की प्रयोगात्मक प्रकृति : नये आयामों का अन्वेषण
7- आत्मबोध की कविता : तलाश अस्तित्व की
8- राही : नई कविता के शाइर
9- इब्हाम : बूढ़े भैल के कन्धों पर जुआ
10- बौद्धिकता का घटाटोप : तपते रेत के ज़र्रों में रस-कणों की तलाश
11- संक्षिप्त नज़्म : मिनी कविता
12- राही की सांस्कृतिक चेतना : आकर्षण मातृभूमि के प्रति
13- राही मूलत: ग़ज़ल के शाइर
14- राही की काव्य-भाषा ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पण्डित दीनानाथ 'नादिम' के साथ साथ आधुनिक कश्मीरी साहित्य के इतिहास में प्रो० अब्दुल रहमान 'राही' का योगदान पर्याप्त महत्त्वपूर्ण रहा है। रहमान 'राही' का जन्म सन् 1925 ई० में वाज़िपोरा -श्रीनगर में हुआ, बाल्यकाल पर्याप्त संघर्षमय रहा और अल्प आयु में ही इन्हें रोज़ी-रोटी की तलाश में निकलना पड़ा। जीवन के कई संघर्षमय - घुमावदार पड़ाव तय करने के पश्चात् कश्मीर विश्वविद्यालय के कश्मीरी-विभाग के अध्यक्ष - पद से वे सन् 1985 ई० में सेवा निवृत्त हुए। आरम्भ में कई वर्षों तक जम्मू-कश्मीर राज्य के विभिन्न सरकारी कालिजों में फ़ारसी भाषा एवं साहित्य पढ़ाते रहे, तत्पश्चात् कश्मीर विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर फ़ारसी-विभाग में अध्यापन कार्य किया और अन्त में लगभग 15 वर्षों तक विश्वविद्यालय के कश्मीरी-विभाग से सम्बन्धित रहे।

स्वातन्त्र्योत्तर युग में 'राही' कश्मीर के उन लेखकों और कवियों में से हैं जो पर्याप्त शिक्षित हैं। शैक्षणिक-योग्यता के साथ-साथ राही ने जीवन के स्कूल से भी पर्याप्त शिक्षा ग्रहण की है। भारतीय साहित्य के

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अतिरिक्त विदेशी साहित्य पर भी उनकी नज़र बहुत गहरी है। 'कहवट'[1] में संगृहीत निबन्धों को पढ़ कर यह बात सिद्ध होती है। गद्य-लेखन 'राही' के व्यक्तित्व का एक ऐसा भव्य रूप है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती और जिस को समझे बिना राही के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को समझना सम्भव नहीं होगा। यह दूसरी बात है कि पाठक उनके विचारों से सहमत हैं अथवा नहीं और हर स्थिति में सहमत होना आवश्यक भी नहीं क्योंकि इस प्रकार की सहमति कभी-कभी बौद्धिक अथवा वैचारिक दारिद्र्य का प्रमुख लक्षण बन जाती है।

राही को सबसे अधिक ख्याति एक कवि के रूप में प्राप्त हुई है। आरम्भ में वे उर्दू भाषा में कविता लिखते थे - विधि की विडम्बना! लेकिन तुरन्त जीवन के उषा काल में ही उन्होंने कश्मीरी भाषा को अपनी भावाभिव्यक्ति का साधन बनाया और आज तक बराबर इसी भाषा में लिख रहे हैं।

राही के काव्य-लेखन की शुरुआत कश्मीरी-काव्य के प्रगतिवादी

1- रहमान राही द्वारा लिखित आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह 'कहवट' शारीक से सन् 1979 में प्रकाशित हुआ। इन निबन्धों में 'कदीम कोशिर शायरी' (प्राचीन कश्मीरी काव्य), 'शाशिरंग' 'कोशिर शायरी' (मौजूदि दौर), कश्मीरी काव्य : आधुनिक काल 'जदीदयत' (आधुनिकता), शेख-उल-आलम सिंफ़ शायिरानि हसियत' (शेख-उल-आलम का काव्य व्यक्तित्व) तथा 'हम काल शायरी' (समकालीन कविता) उल्लेखनीय हैं।

— लेखक —

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

युग में हुई । सन् 1950 के बाद 'नादिम' के साथ-साथ रहमान राही ने कश्मीरी कविता को एक नई दिशा की ओर ले जाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाही है । वे शोषक की हिंसक-नीति से क्रुद्ध होकर अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध अपना मानसिक-रोष व्यक्त करने लगे ।[1] देश-वासियों की दीन-हीन दशा, आर्थिक पराभव, देश-विभाजन से पूर्व

1- " यह देख लीजिये पहले, कि
दुर्भेद्य चट्टानों के वक्ष फोड़ डाले किन्हों ने
किस ने मोड़ ली दिशा जल धारा की
फिर बात कीजिये शालिमार × और लालज़ारों की ।
मधुशाला से विमुख होकर जो चमकाते धार खड्ग की
उन मन मौजी बलिदानी मित्र जनों की चर्चा कीजिये
दिया न बुझने दीप साहस का ग़म के तूफ़ानों में
उन प्रबुद्ध जनों और माहपारों ×× की बात तो कीजिये । "

- "नवरोज़ि सबा" - रहमान राही - शाहीन बुक स्टाल, श्रीनगर मार्च - 1958, पृ0- 29.

× श्रीनगर से 9 मील दूर इस झील के किनारे स्थित प्रसिद्ध मुग़ल बाग़ ।

×× माहपार: - [फ़ारसी] - चान्द का टुकड़ा

'गोडन्य वुछ तो कमी संगलाथ ह्रेटि कोंमि आन सुदूर जोयन
पती अदि शालमारन लालिज़ारन हिंज़ कथा कोरतो
छि यिम मयवानि च्यठि फोरिथ हलिथ श्यशेर बुलबुलाथान
तिमन मस्तानि यारन जानिसारन हिंज़ कथा कोरतो
यिमी ग़मकिस तुफ़ानस मंज़ ति ज़्यादुक ह्योंन जद्दुन थोंन
तिमन रोशन ज़मीरन, माहपारन हिंज़ कथा कोरतो ।'

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

शासकों के दमन चक्र से पीड़ित जन-मानस का करुण-क्रन्दन, द्वितीय विश्वमहायुद्ध का नर-संहार तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् कश्मीर पर आक्रमण एवं लूटमार आदि युगीन समस्याओं ने निस्सन्देह राही के चिन्तन को बहुत समय तक उलझा कर रखा। परिणाम स्वरूप राही तरक्की पसन्द आन्दोलन एवं क्रान्तिकारी विचारधारा से प्रभावित हो कर अपने अन्य समकालीन कश्मीरी कवियों के साथ भीतरी आक्रोश को बाह्याभिव्यक्ति प्रदान करने लगे।[1] इस दृष्टि से 'मगर व्यथ मा छि शोंगिथ' (लेकिन वितस्ता निद्रामग्न नहीं), 'अज़िचकथ' (आज की बात), 'जेलि बोजिस कुन' (जेल के सहपंथी के प्रति), 'सम्बालि होश अगर' (अगर होश सम्भाले), 'यथ समयस मंज़' (इस समय के भीतर), 'ज़िन्दगी' तथा 'वाशाखि त रफ़गर' (वैशाखी और रफ़ूगर/रफ़गर) उनकी उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। सन् 1950 ई० से सन् 1958-60ई०

1- " रात के तमसान्धार को देख कर
कहा पर्वत श्रृंगों से ज़माने ने
यह तो उचित नहीं, इस अन्याय को (मिटाने हेतु)
चाहिए एक आफ़्ताब ×
निश्चित हुआ तभी कि बदलना है जीवन का रंग
हुआ शुभारम्भ अब, जिस के हेतु आवश्यक है क्रान्ति। "

× दिनकर, सूर्य

- "नवरोज़ि सबा' - रहमान राही - शाहीन बुक स्टाल, श्रीनगर मार्च 1958, पृ0- 43.

'ज़मानन रांच़ हुन्द गटिकार डीशिथ वोन संगरमालन
यि मा गव जान यथ अन्यरस ति गोछ़ कोंह आफ़्ताब आसुन
छु गोमुत तेलि मुकरर ज़िन्दगी हुन्द रंग बदलावुन
वन्य गव दसलाबि, दसलाबस छु लांज़िम इंकलाब आसुन।'

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

तक वे प्रगतिवादी विचारधारा के प्रभाव में रहे और इस के बाद पिछले 30 वर्षों की सतत साधना के परिणाम स्वरूप आज हमें राही के काव्य-व्यक्तित्व का चरमोत्कर्ष देखने को मिलता है। लेकिन इस का तात्पर्य कदापि यह नहीं लिया जाना चाहिए कि सन् 1960 तक राही केवल नारा बाज़ी[1] करते रहे। इस युग में राही ने ग़ज़ल को एक नया सौन्दर्य प्रदान किया। यह कहना उचित होगा कि उन्होंने अपने मानसिक सौन्दर्य से ग़ज़ल का श्रृंगार किया।[2] इस पथ पर राही को लग रहा है

1- "साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित होकर राही ने जो नज़्में लिखीं हैं डॉ० हामिदी ने उन्हें 'प्रोपगण्डा नज़्में' कह कर तिरस्कृत किया है।"
- 'जदीद कॉशिर शॉयिरी' - डॉ० हामिदी कश्मीरी - कॉशुर डिपार्टमेंट, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर - 1982 ई० पृ०-112.

2- " उस गुलाब मुखी को देखा, पुनः आनन्द लेते गुलाबों का
अब तो खो जाता है दृष्टान्तों में मेरा आकर्षक ख़याल।
गुलेलालः पर ओस गिरी या हुआ तरंगित समीर
अथवा उपवन में आया कोई मदमाती चाल लिये।
पड़ जाती है नज़र तुम्हारी भूल से मुझ पर कभी कभी
अपने ही दिल से शिकवा करती होश गँवा देती हूँ मैं
संयमी × और रसिया ×× में दिखता नहीं मुझे कोई अन्तर
वह इक इक बून्द के हेतु तड़पता यह मटके भर भर पिला रहा है।"

× ज़ाहिद - जितेन्द्रिय (संयमी)

×× रिन्द - रसिया, मद्यप

- 'नवरोज़ि सबा' - रहमान राही - पृ०- 21-22.

'सु गुलाब रोय ड्यूठुम बेयि अज़ गुलाब छावान
म्य छु वोन्य मिसालनी मंज़ रम्बविनि ख्याल रावान
लवि छा प्यवान गुलालस किनि लहर वांचह वावस

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कि सफ़र पूरा करने पर भी सफ़र शेष बचा है । इश्क़ के ग़म को ग़नीमत जान कर राही जब ग़ज़ल कहता है तो सुषुप्त प्रेम में खलबली मच जाती है ।[1]

मेरा विचार है कि राही की काव्य-साधना के ये प्रथम दस वर्ष (सन् 1950 ई0 से सन् 1960 ई0 तक) उनके सम्पूर्ण काव्य व्यक्तित्व में अंगूठी

(पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

नृति च़ाव बाग कुसतानि मदमांत पूरि त्रावान
च्य़ प्यवान म्य कुन ति बाज़े अलगांब दूरि नज़रा
ब्व करान दिलस शकायत चि छुहम न होश थावान
छ्नि ज़ांहिदस त रिन्दस बेयि काँह फरक म्य बासान
हु छु कत्रि दादि क्रेशान यि छु मलरि मलरि चावान ।'

1- 'खो मत देना असर इर्फ़ान[x] का
दर्दे जिगर[xx] को ग़नीमत जान
इच्छा आकांक्षाओं ने समुचित पथ प्रदर्शन किया है मेरा
सफ़र[xxx] पूरा करने पर भी सफ़र बचा है शेष
ख़ूब सजाया आकाश गंगा को सितारों ने
पर ज्ञात नहीं कहाँ पहुँचने की तैयारी में है मानव
'राही' ने गाना शुरू किया सुषुप्त प्रेम उठा खलबल
तेज़ हवा ने सागर में लहरों को जन्म दिया ।'⊗

x इर्फ़ान - ब्रह्मज्ञान, ज्ञान
xx दर्दे जिगर - मन की व्यथा, इश्क़ का ग़म
xxx सफ़र (अरबी) - यात्रा
सफ़र (कश्मीरी) - (श्लेषालंकार) - यात्रा, मुसीबत (हादिसा)

⊗ - "नवरोज़ि सबा' - रहमान राही - पृ0- 56-58.

'मतो रावरति इरफानुक असर हो
ग़नीमत ज़ानतो दर्दे जिगर हो
स्यठाह रिच़ रहबरी कांर हावसो म्ये
सफ़र कांड़ कांड़ ति छुम बाक़ी सफ़र हो
सितारौ कांर सजावट कहकशानस
ख़बर कोत प्यठ करान आदम सखर हो
ग्यवुन ह्योत रांहियन लोलस खलुव लोग
हवाबन हेति तुलिन सोदरस मलर हो ।'

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

में नगीने के समान आकर्षक, मूल्यवान एवं महत्त्वपूर्ण हैं ।

यद्यपि ग़ज़ल का मूल वर्ण्य-विषय प्रेमाकर्षण के नाज़ुक, सुन्दर और स्वपनिल संसार तक ही सीमित रहता है, राही ने परम्परा को तोड़ कर तथा अपनी स्वतन्त्र प्रकृति का परिचय देते हुए ग़ज़ल के अश्आरों में विद्रोह का शंखनाद फूंक दिया है । 'नवरोज़ सबा' में संगृहीत इस युग की रचनाओं का ध्यान पूर्वक अध्ययन करने के पश्चात् यह बात सिद्ध होती है कि विशिष्ट जीवन-दृष्टि एवं विचारधारा से प्रभावित होते हुए भी राही मूलतः एक जन्मजात कवि हैं जो भौतिक जीवन के कठोर यथार्थ को भी कला का परिधान पहना कर हृदय ग्राह्य बना देते हैं । उस विशिष्ट जीवन-दर्शन ने राही के कवि को पगला दिया था और कवि जब उन्मत्त हो उठता है तो अमूर्त्त मूर्त रूप धारण करता है, भावानुभूति कल्पना के पंख ग्रहण करके उड़ान भरती है और वही उड़ान सरस कविता का रूप धारण करती है ।[1] राही को दृढ़ विश्वास है कि हर शाम में सुबह का

1- " यदि सूख जाये कोई जल स्रोत
तो किसी को इस पर सागर के प्रति क्या होना चाहिये निराश ?
ऊर्ध्व-धरा पर जो रात बितानी हो, तो क्या ?
कल कारवाँ को खिले उपवन का यौवन मोह लेगा
वनस्थली में बना रहेगा बसन्तोल्लास प्रतिदिन
यदि गुले-लालः सफल होंगे, दीप प्रज्वलित करने में ।'
- "नवरोज़ि सबा' - रहमान राही - पृ०-130.

' अकिस नागिरादस अगर आब मोकल्याव
तवे काँसि सोदरिच पज़्या आश त्राविनि
वुडुर प्यठ अगर रात लाँज तोति क्या गव
दोहे मरगि मंज़ रोज़ि जशना बहारूक
प्रगाह कारवानस छि गुलज़ार छाविनि
गुलालन अगर च़ाँग ताँग शालिनाविनि ।'

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सन्देश निहित रहता है। रात का अन्धेरा जितना गहन दिखता है सुबह की कल्पना उतनी ही आकर्षक प्रतीत होती है। 'राही' प्रातः काल की प्रतीक्षा में है ताकि नये जीवन का स्वागत नयी उमंग और विश्वास के साथ किया जा सके। तभी तो आशाओं के उपवन खिल उठेंगे और सत्ताधारियों के भोग विलासमय जीवन का अन्त होगा।[1] राही उस युग में भी अपने उत्तरदायित्व के प्रति सचेत थे। 'नवरोज़ि-सबा' की भूमिका को पढ़ कर यह तथ्य भलीभाँति स्पष्ट होता है।[2]

1- ' सायंकाल सूर्यास्त के बाद क्यों आहें भरने लगती हो तुम ?
कई बार कह चुका हूँ कि प्रातः काल अवश्य होगा नये जीवन के साथ
चेत मास में भी ठण्डे माघ के दाग़ तुझे भयाक्रान्त कर रहे हैं
बसन्त की कल्पना से ही खिल उठते हैं मेरी आशाओं के उपवन।
जाने कितने बन्दी आज बन साहसी तोड़ रहे हैं बेडियाँ
कल के असहाय, गिरा देते हैं सत्ताधारियों को आज यकजा होकर
जो कल पिया है हमने, उस ज़ुल्म के विष को नहीं पिला सकता -
- कोई अब
नहीं हिला सकते हैं हर दिन हमारे संकल्पों को ये जल-प्लावन।'
- "नवरोज़ि सबा' - रहमान राही - 'मगर व्यथ मा छि शोंगिथ'
- पृ0- 53-54.

"चि क्वि छक शाम्मि लटि अखताब लूसिथ वोश ह्यवान त्राविन्य
म्य वोनमय बारहा सुबहस छु थ्नि प्योन ज़िन्दगी प्राविन्य
ये छी वुन्य च़िथ्र डीशिथ सर्द माग़िक दाग़ भय पावान
म्य छुम सोन्तुक ख्यालाई हावसन हिन्द बाग़ फ़ोलिरावान।
छि कांत्याह कींद ह्यमतस कांम ह्यथ अज़ भ्रेडि फुटरावान
ब्यकस रात्तिक छी अज़ याशा करान शाहन पत्थर पावान
यि असि यवि चव वन्य माह्यकि काँह सु ज़ुल्मुक ज़हर असि चांविथ
दोहे मा युपि ह्यकन सान्यन यरादन मूल अलिरांविथ।'

2- "नवरोज़ि सबा" - रहमान राही - भूमिका - पृ0- 7—10

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

दूसरी विशेष ध्यान देने वाली बात यह है कि 'राही' मूलतः ग़ज़ल के शायर हैं। जीवन की यथार्थ स्थितियों की पृष्ठभूमि पर तथा गहन अनुभूतियों को बेचैन कर देने वाली तड़प के आधार पर राही ने कश्मीरी ग़ज़ल को आकाश के हवामहल से नीचे उतार कर ठोस आधार-भूमि प्रदान की। इस युग में राही ने जो ग़ज़लें लिखी हैं उनके कलात्मक सौन्दर्य, सृजनात्मक गहराई और शब्द-प्रयोगों को देख कर कवि की मौलिक प्रतिभा एवं रचनात्मक कौशल का अनुमान स्वतः हो जाता है।[1]

1.- 'बसन्त ने तेरे आगमन का जब से सन्देशा सुनाया
मेरा संसार लगा मुसकाने, प्रिय
तुममें उपवन हो उठे पुष्पित, महकने लगी आशा-आकांक्षाएँ, प्रिय
अविस्मरणीय है तुम्हारे आकर्षण की ममता
नहीं पड़े गी मन्द तुम्हारे सौन्दर्य की उन्मत्तता
प्रतिक्षण तेज़ हो उठती है यह चिनगारी।

यह तो आग है, सुलगती आग, प्रिय
ध्यान न देना मेरी सहनशीलता पर, चुप्पी पर
तूफ़ान से पहले सागर भी साध लेता है चुप्पी, प्रिय
विश्वास मुझे है, आज नहीं तो कल
प्रभान्वित होगा प्रेम का मंगलमय अभिप्राय
निवारण होगा तेरी शंकाओं का, और
मुझे मिल जाये गा अवसर बतियाने का, प्रिय।'

- "नवरोज़ सबा" - रहमान 'राही' - ग़ज़ल - पृ0-94-95.

"यंनि यानि यिनिय श्यख आंनि सोन्तन तनि शोलनि लोग -
- संसार मत्यो
तंनि नज़रन फांलि गुलज़ार मत्यो तंनि हवसन मुश्किन दार मत्यो
छनि यानि अमारिय लय मुशिवुन्य, छनि यानि खुमारिय तेह -
- नशिवुन्य
यि छि त्य-बरा रज़ि खोति रज़ि तेज़ान, यि छु नार अख ज़लवुन
- नार मत्यो।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

इस लिये वे लोग जो राही के विकास-युग के कृतित्व को नाराबाज़ी कहते हैं वस्तुत: राही की काव्य-प्रतिभा के साथ अन्याय कर रहे हैं। राही ने कश्मीरी ग़ज़ल को स्वस्थ बौद्धिक अथवा वैचारिक आधार भूमि प्रदान की।[1] वे सदा नवीन सम्भावनाओं की तलाश में रहते हैं और प्रयोगों की प्राथमिकता देकर यथार्थ जीवन की ठोस धरातल पर अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का सम्बन्ध ग़ज़ल के साथ जोड़ देते हैं। श्री मोतीलाल साक़ी के विचारानुसार 'राही कश्मीरी ग़ज़ल के इमाम (नेता, अग्रसर, नमाज़ पढ़ाने वाला) हैं। इनकी ग़ज़लों में जीवन के उन सारे रंगों की छटा देखने को मिलती है जो मानव आत्मा को तृप्त करने के साथ-साथ माधुर्य भी प्रदान करते हैं।'[2]

सन् 1958 के बाद राही की लेखनी एक नयी दिशा की खोज में अग्रसर हुई। अब तक सम्पूर्ण जगत की चेतना उसे उद्वेलित कर रही थी अब स्वयं उस का निजी अस्तित्व एक पहेली बन कर अनुभूति के साथ-साथ उसकी चिन्तना को भी अशान्त करने लगा। यह वह युग है जब कश्मीरी कविता सौभाग्यवश सूफ़ी सन्तों, भक्त कवियों, मसनवी लेखकों और वास्तवी इश्क़ के स्वप्न द्रष्टा शायरों के बाहुपाश से मुक्त

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

'यिनि म्यानिस सबरस कुन ज़ि गछ्य, यिनि म्यानि खमोशी कुन -
-ज़ि वुछ्य
तोदरस ति छु मांज़ि तूफान यिनि ब्रोंह, छोपि हुन्द आसान -
-अनहार मत्यो
म्य छु पूरि बिहित अज़ न तं पगाह गछि तांबित लोलुक नेक मुदा
ये ति ख़लनय तारो शाक तं शुबाह, म्यति कथ करनस यियो -
- वार मत्यो।'

1- 'जदीद कश्मीर शायरी' - डा० हबीब उल्लाह 'हामिदी' - पृ०-117

§ शेष अगले पृष्ठ पर §

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

होकर बुद्धि-जीवी वर्ग के संरक्षण में आई थी। वे जिस जीवन को जी रहे थे, जिन परिस्थितियों से गुज़र रहे थे तथा अपने अस्तित्व की रक्षा के हेतु जिन द्वन्द्वात्मक स्थितियों का सामना कर रहे थे उन सब की प्रतिक्रिया साठोत्तरी कश्मीरी कविता में शब्द-बद्ध होकर व्यक्त होने लगी।

कश्मीरी काव्य के इतिहास में 'नादिम' के पश्चात् 'राही' इस नई चेतना के अग्रदूत के रूप में उपस्थित हुए और अपने नये काव्य-प्रयोगों के द्वारा उन्होंने कश्मीरी - काव्य को विचार और चिन्तन की गरिमा प्रदान की।[1]

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

१- "गाशिर" - मोतीलाल साक़ी - आज़ाद कल्चरल फ्रोंट - ज़ोड़ुर - सन् 1974 ई० - पृ०- 60.

1- 'परस्पर गहन मतभेद ही स्वभाव है इस आत्म का
चिरकाल से हिमाछादित पर्वत और सदैव घड़ी भर धूप को उष्णता
बबरशेर का गर्जन यथार्थ है जंगल में
मदमाती चाल हिरण की मस्ती में भरता चौकड़ी
हृदय ! दामन को यों ही संकुचित सीमाओं में नहीं बन्धवाना
उपवन में फूलों की रंगारंग है किस्में
समय को सुबह और शाम की सीमा रेखाओं में मत बान्ध
किसी समय होगा सूर्यास्त और किसी समय शुभ्र ज्योत्स्ना चमक उठेगी।
अनमोल रत्न छिपे रहते हैं पत्थरों के ढेरों में
कब प्रकट हुआ आकाश में चमकेगा इन्द्रधनुष ?
जिस शाख पर कौआ सोने का करता उपक्रम
वहीं से बुलबुल पुष्प वाटिकाओं का जगाने का करता आयोजन।'

- ' एन इन्थोलिजी आफ माडर्न कश्मीरी वर्स' - त्रिलोकीनाथ रैणा - संगम प्रेस, पूना - सन् 1972 ई० 'सहलाब ते साहिल' - पृ०-244-246.

"छय पथ आलमस अंडरन इख़्तिलाफ़ फ़ज़
अजल शोरिन बाला अबद तार्य कालाह
वनस मंज़ छि पादर सुहिन ग़ज़ हक़ीक़त

§ शेष अगले पृष्ठ पर §

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

यहो राहो के काव्य-व्यक्तित्व का चरमोत्कर्ष काल है और यहाँ वे विशिष्ट सिद्धान्त अथवा विचारधारा के प्रति आकर्षित नहीं अपितु एक सशक्त अनुभूति-प्रवण कलाकार के रूप में काव्यानुभूतियों को प्रयोगशाला में व्यस्त दिखाई देते हैं ।[1] राहो को यह साधना उनके जीवन की साथ बन गई और साधना को ही उन्होंने सिद्धावस्था का परमोपहार समझ कर

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

पनुन मद छु हरनस दिवुन शोख डालाह
दिलो पुथ नं बांलि दामनस लाद ह्यावख
ठि बागस अन्दर रंग बरंगी ज़ाच़ पोशान
मं कर वान्नि बन्दो तुवह शाम वख़तस
गहे लोलि अखताब गहे जून रोशान ।
कन्यन गंज़ ठि छ्यफ़ ह्यथ मोलिल लाल आसान
कुने रंगि कर वंठि लोंज़ल आस मानस
छु यथ लंजि च्यठ काव शांगनुक करान तंज़
तंतो न्यन्दरि बुलबुल तुलान बोल तानस ।'

1- 'आत्म विस्मृति में, उसी नदी के घाट पर पहुँचा मैं
दस वर्ष पूर्व भी यह नदी इतनी ही गहरी दिखती थी
चिनार की टहनियों से कलरव ध्वनि चहक उठती थी कभी-कभी
मानो शान्त सरोवर में उछल रही हो मछली
वही पुष्पित कोकर के पास से प्रवाहित समीर
चिरकालिक मदिरा की मादकता के साथ
नील गगन - वन-ताल सदृश
जल-परी समान है चान्द
आत्म विस्मृति में उसी नदी के घाट पर पहुँचा मैं ।
पुकार उठता हूँ कब्र पर, नहीं सुन पायेगा वह मेरी आवाज़
नहीं प्रवाहित किसी के हेतु क़ब्र में
पुष्पित कोकर के पास से बहने वाली सुगन्धित हवा
क़ब्र का स्मृति पत्थर हो जाता पुराना और खिल उठते नये सोसनें ।'

× सोसन § फारसी § - फूल , सोसन §कश्मीरी§ -कब्रिस्तान में खिलने वाला फूल

⊗ -"नाविचारि सोम्बरन" -सं०-गुलामनबी फ़िराक़ - 'दहि बुहिर'
§ शीर्षक कविता § रहमान राही - पृ०- 129-130.
§कश्मीरी मूल पाठ अगले पृष्ठ पर §

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

स्वीकार किया है । स्वयं 'राही' के शब्दों में - "आधुनिक युग की कश्मीरी कविता की एक प्रमुख विशेषता है - इसकी प्रयोगात्मक प्रकृति । इस प्रयोगात्मक स्वभाव के कारण ही कश्मीरी कविता के इतिहास में यह युग सदा महत्त्वपूर्ण माना जायेगा ।[1]

प्रकृति और मानव के अस्तित्व पर आज जो प्रश्न चिह्न लग गये हैं राही का कवि-हृदय उनकी गहराइयों में उतर कर जीवन की सार्थकता को तलाशने का प्रयास करता है । राही अपने युग बोध के प्रति ईमानदार है । स्वप्न जालों में न उलझ कर वह ठोस तार्किकक सत्य की पृष्ठभूमि पर अपने जीवनानुभवों को सृजनात्मक सांचों में डाल कर काव्य रूप प्रदान करता है ।[2]

(पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

' बे ख्यॉली मंज़ ब्व तॉथि यारबलस प्यठ वोतुस
दह वरी ब्रोंह ति यि कोल ऑस यिढ़ी सॉनि बासान
बोनि प्यठ ऑस यिथै पॉठि गढ़ान मॉंज़ि बूल्याह
ज़नतॅ खामोश सरस मंज़ छि तुलान वोठ गाडाह
सोई किकर फुलय हवा प्रानि शराबिच तेह ह्यथ
नब योहे नाग वनुक, ज़ून यहे ज़ल परियाह
बे ख्याली मंज़ ब्व तॉथि यारबलस प्यठ वोतुस ।
कब्रि प्यठ क्रयख ब्व दिमिहस तॅ सोमा क्रयख बोज़यम
कब्रि मंज़ मा छु डलान कॉसि किकर फुलियि हवा
कब्रि प्यठ प्यूर छु प्राणान त फोलान नॉवि सोसन ।'

1- "कहवट" -राही - 'कॉशिर शॉयरी (मोजू दिदोर) -पृ0-177
2- "काव्य तभी जन्म लेता है जब कवि किसी अमूल्य तजरूबे को भाषा के द्वारा ढूँढने में सफल होता है ।"
-"कहवट" -राही - 'जदीद कॉशिर शॉयरी तॅ वातिनाविरूक मसलि' - पृ0- 200-201.

CC-0. Shushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

अभिव्यक्ति के क्षेत्र में राही ने छन्दहीन कविता के साथ-साथ गद्य-काव्य लेखन का प्रयोग भी कश्मीरी कविता में किया। यहाँ कवि किसी व्यर्थ के बाह्य बन्धन को स्वीकार करने के लिये बाध्य नहीं होता। सब कुछ निर्भर करता है उसके शब्द-चयन की कला पर। डॉ० शफ़ी शौक़ के शब्दों में - " उन की इस प्रकार की रचनाओं को पढ़ कर यह स्पष्ट होता है कि कश्मीरी भाषा के शब्दों की अन्तरात्मा में अपना निजी संगीत निहित है जिसे एक कुशल कलाकार ही प्रकट कर सकता है।[1]

राही के उत्कर्ष काल की उल्लेखनीय रचनाएँ हैं — 'पय छु ज़ुलमा्ति वुज़ान' (गहनान्धकार से फूटता राज़), सहलाब तॅ सॉहिल' (सैलाब और साहिल), 'दहि वॅ्हिरि' (दस वर्षोपरान्त), 'ओश तॅ असुन' (आँसू और मुसकान), 'अख खाब' (एक स्वप्न), 'तख़्लीक़' (सृजन), 'आॅनि वुछिथ' (आईना देखने पर), 'याद प्यमै ठरि थावक क्या' (याद मेरी जब आयेगी, छिपा लोगे क्या!), 'अ्दि नसॅ रूदुम पानस ताम' (फिर अपने आप पर वश न रहा), 'ही मोज कशी्रि' (हे माँ - कश्मीर), 'अछ्युन न्गिम' (अनन्त गान) आदि।

1- "कॉशिरि अदबुक तवॉरीख" - नाज़ी मुन्नवर, शफ़ी शौक़ - कॉशुर डिपार्टमेंट, कश्मीर यूनिवर्सिटी - श्रीनगर प्रकाशन - सन् 1978 ई०, पृ०- 194.

गद्य-काव्य - गद्य में की गयी काव्य के गुणों से युक्त रचना

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

राही के विकास युग की रचनाओं पर निस्सन्देह एक आक्षेप यह लगाया जा सकता है कि आकार की दृष्टि से इनमें आवश्यकता से अधिक फैलाव है।[1] उत्कर्षकाल की रचनाओं में यह अनावश्यक विस्तार नहीं मिलता यहाँ कवि आकार की संक्षिप्तता के प्रति विशेष रूप से सचेत रहे हैं। स्वयं उन्होंने लिखा है कि 'आधुनिक कश्मीरी काव्य की एक महत्वपूर्ण बल्कि सर्व-व्याप्त विधा है - संक्षिप्त नज़्म और संक्षिप्त नज़्म लिखने का क्रम भी विधिवत रूप से महजूर के युग से ही आरम्भ होता है।'[2] इब्हाम[3] और संक्षिप्त आकार की दृष्टि से 'पय छु जुलमाति वुज़ान' राही की एक बहुचर्चित रचना है। इसमें ये दोनों विशेषताएँ हैं। यहाँ इस बात को स्पष्ट करना आवश्यक है कि इब्हाम हार-स्वरूप शृंगार का साधन भी हो सकता है और भार-स्वरूप बूढ़े बैल के कन्धों पर जुआ। प्रयोगवाद और नई कविता का इब्हाम के कारण पर्याप्त अहित हुआ और कविता ड्राईंग-रूम की सजावट के हेतु गुलदान में रखे अत्यन्त आकर्षक कागज़ी फूल का रूप धारण करने

1- "'पय समयस मंज़' (इस समय में), 'हुसने लाज़वाल' (सौन्दर्य - अनश्वर), 'ज़िन्दगी', 'अज़िच कथ' (आज की बात), 'सोनि लांकि प्यठ' (स्वर्ण लंक द्वीप पर), 'फ़न बराए फ़न' तथा 'अख सवाल' (एक प्रश्न) रचनाओं में 'राही' बाह्याकार की दृष्टि से अपने आप पर नियन्त्रण नहीं रख पाये हैं।"
- लेखक -

2- "कहवट" - राही - 'कांशिर शायरी (मोजूदि दौर) पृ0-180.

3- इब्हाम -(अरबी) → निगूढ़ता, क्लिष्टता
इब्लाक़ -(अरबी) → अतिगुप्त, रहस्यपूर्ण

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

लगी । इसी लिये कभी-कभी इब्हाम को काव्य गुण कहते हुए तनिक संकोच होता है । राही की रचना 'पय छु जुलमाति वुज़ान' एक साथ अपने संक्षिप्त कलेवर में कई अर्थ तत्व समेट कर बुद्धिजीवी के मानस को आन्दोलित करती है । आज मनुष्य जिन बाहरी और भीतरी संघर्ष की स्थितियों से गुज़र रहा है उन्होंने उसे अपने अस्तित्व बोध के प्रति सचेत कर दिया है । राही इस आत्म-बोध की स्थिति से गुज़र कर परम्परागत मान्यताओं के आधार पर नहीं अपितु स्वयं जीवन की विभीषिकाओं का सामना करते हुए विष के घूँट पीने तक को भी तैयार हो जाता है । ऐसी स्थिति में राही का कवि कभी-कभी भटक भी जाता है और रस-कणों को ढूँढने के बदले तपते रेत के ज़र्रों की तलाश में खो जाता है । जदीदयत के अनन्त रेगिस्तान में जल स्रोत केवल एक दृष्टि-भ्रम है और इसके सिवा कुछ नहीं । कभी-कभी बौद्धिकता के घटाटोप में राही का कवि घायल होकर राही के अहं की रक्षा तो अवश्य करता है लेकिन स्वयं अतृप्तावस्था में दम तोड़ देता है ।[1] 'हो मोज कशीरि' राही की

1- 'तड़प उठती इच्छा कोई ! मोह लेती व्यथा कोई !
काश ! इस रेतीले समय में दृष्टिभ्रम ही चमक उठता
जीवन निर्वाह करना, वह भी उस पूछ पाछी आत्मा के साथ
किसी तरह गुज़र हुई, वरना कोई हिसाब ही न था ।
हम भी आयोजन करते सभा का, किसी की ग़ज़ल पढ़ लेते
पर नहीं रखा हिसाब कोई, ज़माने के उतावलेपन ने ।'
- "नांव शारि सोम्बरन" - सं0: ग़ुलाम नबी फ़िराक़ - ग़ज़ल -
रहमान राही - पृ0- 132-133.
"क्रेशि हे अमारि काँह टोठिहे अज़ाबुई काँह
काश यथ स्यकिल वख़तस प्रज़लिहे सराबुई काँह । दृगनृपता
ज़िन्दगी गुज़ारिन सोई तस प्रिछिल ज़मीरस सूत्रिय

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

{ शेष अगले पृष्ठ पर }

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

देश प्रेम सम्बन्धी एक सृजनात्मक विभूति है जिस में कश्मीर का प्राचीन काल से आधुनिक-युग तक का सम्पूर्ण इतिहास मुखर हो उठा है । यह रचना हमारी सांस्कृतिक वरासत की एक जीती जागती तस्वीर है । ऐतिहासिक सन्दर्भों की पृष्ठभूमि पर राही ने 'ही मोज कशीरी' रचना में कश्मीर के प्राकृतिक वैभव का चित्रांकन करने के साथ-साथ यहाँ के सद्भावपूर्ण परम्परागत जन-जीवन के अनेक सुन्दर एवं मोहक छवि-चित्र भी अंकित किये हैं ।[1]

{ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग }

ल्योब थोबुई कोरुस नति ज़न ओसनु हिसाबई काँह
आंस ती मजलिसा करहो कांसि हुन्द ग़ज़ल परहो
लारिलद ज़मानन मा थोव त्युथ हिसाबई काँह ।'

1- 'हे माँ - कश्मीर ! पूर्व काल से ही तेरे अधीन हैं
ज्ञान स्रोत सारे
हमारे वक्षस्थल में प्रवाहित हो वितस्ता
स्रोतस्विनी अध्यात्म ज्ञान की
हे माँ - कश्मीर !
तेजस्वी क्षेमेन्द्र × की प्रबल अभिव्यक्ति यहाँ है
बिल्हण ×× की आकर्षक स्मरण शक्ति यहाँ है ।
यहाँ वितस्ता कल्हण××× की है मस्त प्रवाहित
यहाँ है संचित ज्ञान कोश अभिनवगुप्त×××× का
उष्ण रखती ललवाखों ××××× की अग्निशिखा यहाँ पर
शेख×××××× के श्लोकों की शक्तिमत्ता यहाँ है ।
हे माँ - कश्मीर ।'

{प्रस्तुत कविता को कश्मीर विश्वविद्यालय के तराने {गान} के रूप में स्वीकार किया गया है । }

× क्षेमेन्द्र - 11 वीं शताब्दी के प्रसिद्ध संस्कृत कवि 'वृहत्कथा मञ्जरी' एवं 'दशावतार चरित' के रचयिता ।

×× बिल्हण - 11 वीं शताब्दी के प्रसिद्ध संस्कृत कवि 'विक्रमाङ्क-देव चरित' ऐतिहासिक महाकाव्य के रचयिता ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

{ शेष अगले पृष्ठ पर }

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

निस्सन्देह राही अपने आप में एक संस्था हैं । चिन्तना के गूढ़ तहों को चीर कर युग-सत्य के साथ सामंजस्य स्थापित कराने वाले विचारक के साथ-साथ 'राही' सौन्दर्य के नाजुक क्षणों की अनुभूति कराने वाला

(पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

xxx कल्हण - कल्हण पण्डित -
12वीं शताब्दी के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ
'राजतरंगिणी' के रचयिता ।

xxxx अभिनवगुप्त- दसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में शैव-दर्शन के
आचार्य, विद्वान एवं टीकाकार,
'अभिनव भारती' के रचयिता ।

xxxxx लल्लेश्वरी - - 14वीं शताब्दी की प्रसिद्ध रहस्यवादी
कवयित्री ।

xxxxx शेख नुरुद्दीन- 14वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कश्मीर के प्रमुख
सन्त कवि ।

" ही मोज कशीरी छी आयित पतिवथ अलिमिक आगर सारी
व्यथ वुज़ी ! चि सान्यन सीनन मंज़ छख इरफानुक दरिया जांरी
यति शोख़ शमिन्द्रिन त्रोश बावथ यति बिल्हण सुन्द मोत -
- यादि वोतुर
यति कल्हण सिंज़ व्यथ काड़ कडान यति अभिनवगुप्तुन ज्ञान सोदुर
यति ललवाखन हिंज़ ज़लवुन्य रेह यति शेख श्रुक्यन हिंज़ दमदांरी ।"
ही मोज कशीरी ।
" इस गीत की एक प्रति आज भी मेरे पास सुरक्षित है । "

- लेखक -

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सहृदय कवि भी है :-

-'बज उठा जब 'श्रोण्य' के साथ घुँघरूदार आँचल
रख न सका फिर अपने आप को वश में ।
सरो वृक्ष की छाया जब बहते पानी पर लगी थिरकने
रख न सका फिर अपने आप को वश में ।
बात मुँह तक आई कि उस सुमुखी से पूछूँ
क्यों दाहक है आकर्षण तेरा
लौट आई आवाज़ कि परवाने[x] से पूछो
रख न सका फिर अपने आप को वश में ।' ।

- 0 -

---

x पतंगा / फतिंगा

1- 'श्रोण्य यलि कोर तमि रोनि दामानस
अदि नसा रूदुम नि पानसताम
सर्व शुहुल प्यव आबिरवानस
अदि नसा रूदुम नि पानस ताम ।
योत योत आम प्रछि तस मोख प्रेन्य ब्व
मारि मोत चोन क्याज़ि नारि ज़ालान
ओरि गोम आलव प्रिछ परवानस
अदि नसा रूदुम नि पानसताम ।'

- "संगलाब" - सम्पादक - रहमान राही, शफ़ी शौक़,
कांशुर डिपार्टमेंट, कश्मीर यूनिवर्सिटी - श्रीनगर
प्रकाशन - सन् 1983 - पृ0- 223-224.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

/1/ अ: श्रृंगार वर्णन, विरह गीतों, प्रकृति चित्रण, :आ: देश-प्रेम, सांस्कृतिक चेतना, :उ: युगबोध, 'मिनी' कविताओं, रूबाइयों, :ऊ: व्यंग्योक्तियों एवं :ए: आध्यात्मिक चिन्तन के कवि -

" मोती लाल राज़दान 'साक़ी' "

§ सन् 1936 ई0 ——— §20-5-1999

1- संघर्षमय जीवन : ग्रामसेवक से शोध सहायक तक
2- प्रकृति के स्वच्छन्द वातावरण में जीवन यापन
3- साक्षात्कार कटु यथार्थ से
4- बहुमुखी व्यक्तित्व : गद्य लेखक, पाठालोचक, शोधकर्ता, सम्पादक एवं कवि
5- किसान कवि का साधना प्रधान जीवन : फक्कड़ व्यक्तित्व
6- मस्तमौला साक़ी के काव्य में श्रृंगार-वर्णन
7- विरहगीतों में कराहती वेदना
8- साक़ी के काव्य में प्रकृति के विविध रूप : निरीक्षण की असाधारण क्षमता
9- देश-प्रेम की कविता एवं सांस्कृतिक चेतना
10- नई कविता : मोह भंग की स्थिति
11- 'साक़ी' की कविता में युगबोध
12- जीवन जीने में अटूट विश्वास
13- 'मिनी' कविताएँ और रूबाइयाँ
14- व्यंग्योक्तियाँ
15- परम्परा के प्रति ईमानदार लेकिन क्रीतदास नहीं
16- परवर्ती युग में आध्यात्मिक चिन्तन के प्रति प्रबल आकर्षण : रहस्यवाद
17- साक़ी : कश्मीरी काव्य के भविष्य की आशा
18- कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

20वीं शताब्दी के पाँचवे दशक के बाद युवा-पीढ़ी के कश्मीरी कवियों में श्री मोती लाल राज़दान 'साक़ी' अपने रचनात्मक कौशल से साहित्य प्रेमियों को निरन्तर अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। 'साक़ी' केवल एक कवि ही नहीं हैं अपितु एक सशक्त गद्य लेखक, सम्पादक, पाठालोचक एवं परिश्रमी शोधार्थी (Researcher) भी हैं। जहाँ सर्जनात्मक कलाकार का अनुभूतिशील हृदय और तत्त्व-निरीक्षक का विवेकशील मस्तिष्क एक साथ सक्रिय दिखाई देते हैं।

मोतीलाल साक़ी का जन्म बांडियार - श्रीनगर में 5 सितम्बर सन् 1936 ई० में हुआ। अत्यन्त अल्पायु में इनके पिता पण्डित मधुसूदन राज़दान का देहान्त हुआ। असहाय विधवा माँ ने माहनूर गाँव में रह-कर विकट परिस्थितियों में अपने दो बच्चों को पाला। बहन का विवाह हुआ लेकिन कुछ ही वर्षों के बाद मृत्यु ने एक बार फिर द्वार पर दस्तक दी और मेहन्दी लगे हाथ चिता को सौंप दिये गये। 'साक़ी' जीवन की इस दुर्घटना से बेहद प्रभावित हुआ। रिसते घाव की पीड़ा वह बराबर आज तक सहता चला आ रहा है। वस्तुतः इसी दुर्घटना ने

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मोतीलाल राज़दान को मोतीलाल 'साक़ी' बना दिया ।[1] सुमित्रानन्दन पन्त के इस कथन को सत्यता का प्रमाण साक़ी के वैयक्तिक जीवन एवं रचना संसार में देखने को मिलता है :-

विरोगी होगा पहला कवि,
आह से उपजा होगा गान,
उमड़ कर आँखों से चुपचाप
बही होगी कविता अनजान ।[2]

बक़ौल 'साकी':-

-' सर के ऊपर से जब बहने लगा ग़म का सैलाब, तो पिया
बसन्त-ऋतु में जब रोना पड़ा, तो पिया
तार तार हुआ प्रतीक्षारत जब सहनशीलता का आवरण
भँवर में पड़ कर जब जी घबराया, तो पिया ।[3]

अथवा

-' सुख के दिन कैसे होते हैं - तुम्हें मालूम था

1- "गाशिर" - मोतीलाल 'साक़ी' -आज़ाद कल्चरल फोर्म, चोड़र- कश्मीर, सन् 1974 ई० - पृ०- 113.

2- "आधुनिक कवि"-12 - सुमित्रानन्द पन्त - हिन्दीसाहित्य सम्मेलन, प्रयाग - सन् 1964 ई० - पृ०- 10.

3- ' ग़मुक संदलाब सोरि प्यांठि गोम अदियोम
वदुन यलि सोन्त कालस प्योम अदि योम
चंटिम यलि इन्तिज़ारन जामि सबरिक
पनुन पान आवलिनि व्यसिरयोम अदियोम ।'
-"मनसर" - मोतीलाल साक़ी - शारदा प्रेस, श्रीनगर - सन् 1970 ई० कल्चरल अकादमी, श्रीनगर की वित्तीय सहायता से प्रकाशित । पृ०- 52.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मैंने देखा ग़म ही ग़म को भस्म हुई काया
राह भूल कर भी कभी न आये हमरे आँगनमें कुसुमाकर
कभी न फूटे नव-कोंपल अन्त न हुआ कृष्ण - पोष का ।'[1]

'साक़ी' का बाल्य काल प्रकृति के उन्मुक्त वातावरण में व्यतीत हुआ । मूक शिक्षक के समान प्रकृति सुन्दरी ने 'साक़ी' को रंगारंग रूप चित्रों एवं मनमोहक दृश्यों से परिचित कराया । शहर के कोलाहल प्रधान कृत्रिम एवं छल-कपटमय वातावरण से दूर गाँव के सरल और स्वच्छन्द जन-जीवन के सम्पर्क में रह कर 'साक़ी' ने जीवन को कई रहस्यमय गुत्थियों को सुलझाने का प्रयास किया । ग्राम्य प्रकृति का वही माधुर्य एवं सारल्य साक़ी के व्यक्तित्व का प्रमुख आकर्षण है । निश्छल प्रकृति का यही आकर्षण हमें 'महजूर' और 'आज़ाद' की रचनाओं में भी देखने को मिलता है । 'साक़ी' अब्दुल अहद 'आज़ाद' के शिष्य थे । 'आज़ाद' ने उन्हें पढ़ाया है ।[2] गुरु के व्यक्तित्व की अमिट छाप आज उनके शिष्य में देखने को मिलती है ।

बाल्य काल से ही उन्हें अपने अस्तित्व की रक्षा के हेतु संघर्ष करना

1- 'च्य आंसी पय छि किथि आसान सोखिक दोह
ग़मी ग़म आम बुथि थोवुहम कांरिथ तोह
वथुई ज़ांह लांज न सोन्तस सान्य आंगिन
न फटि बामन न ज़ांह सोरयाव-क्रुन पोह ।'
- "मनसर" - मोतीलाल साक़ी - पृ०- 48.

2- "गाशिर" - मोतीलाल साक़ी - पृ०-112.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पड़ा और आज भी वे जीवन के संघर्ष-क्षेत्र में सक्रिय हैं। इसी संघर्ष ने साक़ी को जीवन के उस कटु-यथार्थ से परिचित कराया जो अविश्वसनीय और अकल्पनीय रूप में घटित होकर आत्म विश्वास की जड़ों को हिला देता है।[1] इस संघर्ष-क्षेत्र में लगातार सत्य झुठलाया जाता है, प्रतिभा ठोकरें खाती नज़र आती हैं और परम्परागत मूल्य काँच के टुकड़ों के समान बिखर जाते हैं। स्वयं कवि के शब्दों में :-

—' तहज़ीब को इस बस्ती में
अकाल पड़ा है मानव मूल्यों का
व्यापारियों ने खरीद लिये बाज़ार
चलो भाई लौट चलें रस्ता है दुश्वार।
जाने कितने यूसुफ़[×] दाँव पर लग गये
झूठे मक्कारों ने लाखों और हज़ारों ऐंठे
नहीं लगाना मुझ पर लाँछन सच्चाई का
वर्तमान को झूठ ही रास आया है।'[2]

सन् 1962 ई० में साक़ी ने दसवीं की परीक्षा पास की और सन् 1954 ई० में

1— "दैव मेरे लिये कठोर था और ज़माना ज़ालिम। पर्याप्त संघर्ष और दौड़-धूप के बाद जिस सीमा पर मैं पहुँचा वह मेरा ही साहस है।"
— "गाशिर" — 'साक़ी' — पृ०—111

2— 'तहज़ीबचि यथ बस्तो मंज़
इन्सान कदरन हुन्द केहिकास
बाज़ार मोलि हयति बापारायो
वलते पथ फेरव वथ नमनास
कम कम युसुफ़[×] दावस लांग
अपिज़्यारयव वाट लछ तय तास
यिनि सां लांग्युम पज़रिच हाँ
यथ समयस आव अपज़ुई रास।'

× एक देवदूत जो अत्यन्त सुन्दर थे।
—"मनसर" — 'साक़ी' — ग़ज़ल — पृ०— 113.

CC-0. Dr. Ram Manohar Lohia Avadh University Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

देहात-सुधार महकमे में ग्राम-सेवक नियुक्त हुए । इस नौकरी को कटु-स्मृतियों से साक़ी आज भी पीड़ित है । ग्राम-सेवक की नौकरी छोड़ कर 'साक़ी' रेडियो कश्मीर के श्रीनगर केन्द्र में कुछ समय तक कार्यरत रहे और तत्पश्चात् जम्मू-कश्मीर कल्चरल अकादमी में उनकी नियुक्ति शोध-सहायक के पद पर हुई और आज भी वे इसी संस्था के साथ जुड़े हैं । सन् 1966 ई० में साक़ी ने बी० ए० की परीक्षा पास की । अध्ययन के प्रति रुचि साक़ी में आरम्भ से ही थी और यही रुचि बढ़ते बढ़ते अनुसन्धान एवं पाठालोचन की ओर प्रवृत्त हुई । आज 'साक़ी' कश्मीरी लोक-साहित्य के एक सफल शोध-कर्त्ता माने जाते हैं । ज्ञानार्जन साक़ी के जीवन का प्रमुख उद्देश्य रहा है और इस दिशा में कुछ प्राप्त करने के हेतु वे आज भी साधनारत दिखाई देते हैं ।

इस में कोई सन्देह नहीं कि कवि होने के साथ-साथ 'साक़ी' उच्च कोटि के गद्य लेखक एवं शोधकर्त्ता हैं । उन्होंने कश्मीरी लोकगीतों के संग्रह एवं सम्पादन-कार्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाही है । अपनी व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर उन्होंने असंख्य कश्मीरी लोकगीतों को एकत्र किया और बिखरे हुए मौक्तिक कणों को समेट कर आकर्षक मालाओं में पिरो दिया । जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी के तत्त्वावधान में कश्मीरी लोकगीतों के प्रकाशन की जो योजना बनी थी उसके अन्तर्गत 'साक़ी' द्वारा सम्पादित कश्मीरी लोकगीतों के पाँच संग्रह प्रकाशित हुए ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

।9वीं शताब्दी के प्रसिद्ध कश्मीरी कृष्ण भक्त कवि स्वामी परमानन्द की समस्त रचनाओं के सम्पादन कार्य में भी 'साक़ी' ने महत्त्व-पूर्ण भूमिका निबाही है। परमानन्द की समस्त रचनाएँ अकादमी की ओर से दो भागों में सन् 1972 ई0 और सन् 1974 ई0 में क्रमशः प्रकाशित हुई। प्रथम खण्ड में स्वर्गीय मिया लाल कौल के साथ तथा द्वितीय खण्ड में स्वर्गीय श्रीकंठ तोषख़ानी के साथ उन्होंने सम्पादन कार्य को पूरा किया और द्वितीय खण्ड के अन्त में जो कुछ स्वर्गीय पण्डित श्रीकंठ तोषख़ानी ने लिखा है उससे साक़ी की योग्यता का अनुमान लगाया जा सकता है।[1]

'साक़ी' ने शेख़ नूरउद्दीन नूरानी 'नुन्दऋष' के कलाम का संग्रह-कार्य भी बड़ी लगन के साथ सम्पन्न किया, परिणामस्वरूप 'साक़ी' के सम्पादकत्व में 'कुल्लियाति शेख-उल-आलम' अकादमी की ओर से दो भागों में प्रकाशित हुआ।

'साक़ी' का नवीनतम सम्पादित ग्रन्थ है - "कांशिर सूफ़ी शायिरी" भाग-। तथा भाग 2। दोनों भाग सन् 1985 ई0 में जम्मू-कश्मीर कल्चरल अकादमी की ओर से प्रकाशित हुए हैं। मेरे विचार से 'साक़ी' के सम्पादित ग्रन्थों में यह सब से अधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रथम भाग

1- "इस बात को स्पष्ट करना मेरे लिये आवश्यक होगा कि इस पुस्तक को तैयार करने में विशेष रूप से साक़ी साहब का हाथ रहा है। मेरा काम केवल यहाँ वहाँ काँट छाँट करना तथा काव्य-चयन ही रहा है।"
-"परमानन्द" भाग-2 - सम्पादक : प्रोफ़ेसर एस0 के0 तोषख़ानी एवं मोतीलाल 'साक़ी' - जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - सन् 1974 ई0 - पृ0-304.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

में दस एवं द्वितीय भाग में नौ कश्मीरी सूफ़ी कवियों की रचनाओं का सम्पादित रूप पाठालोचन सहित प्रस्तुत किया गया है। कश्मीरी सूफ़ी-काव्य पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए साक़ी ने प्रत्येक कवि के रचनात्मक कौशल पर एक समर्थ आलोचक की दृष्टि से विचार किया है, साथ ही यथा सम्भव उनका प्रामाणिक जीवन इतिहास भी प्रस्तुत किया है।

सन् 1971 से लेकर सन् 1973 ई0 तक साक़ी ने कल्चरल अकादमी द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'सोन अदब' का सम्पादन भी किया है।

बीसवीं शताब्दी के प्रसिद्ध कश्मीरी सूफ़ी कवि समदमीर की "कुल्लियात" के सम्पादक भी 'साक़ी' हैं। यह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ कल्चरल अकादमी की ओर से सन् 1973 ई0 में प्रकाशित हुआ। इसका द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण सन् 1982ई0 में प्रकाशित हुआ।

अपने गहन अध्ययन के आधार पर उन्होंने पाठालोचन के साथ-साथ कश्मीर के कई प्रसिद्ध कवियों — ललद्यद, शेख़ नूरउद्दीन 'नुन्दऋषि', परमानन्द, 'महजूर', 'आज़ाद', समदमीर, कृष्ण जू राज़दान आदि की काव्य प्रतिभा पर पूर्ण अधिकार के साथ आलोचनात्मक रचनाएँ लिखी हैं। कश्मीरी काव्य की विभिन्न प्रवृत्तियों पर भी 'साक़ी' ने अपने विचार व्यक्त किये हैं। इन रचनाओं में 'साक़ी'

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

की सन्तुलित विवेक-दृष्टि, विचारों को क्रमबद्ध सप्रमाण अभिव्यक्त करने की क्षमता एवं तार्किक रूप से तथ्य-विश्लेषण की अद्भुत शक्ति का परिचय मिलता है। यह सत्य है कि कवि होने के नाते उनकी विश्लेषण-पद्धति कहीं-कहीं वर्णनात्मक हो जाती है। यहाँ वे अपनी कल्पना पर नियन्त्रण नहीं रख पाते लेकिन खोज करके तथ्य को ढूँढ निकालने की क्षमता उनमें अद्भुत है और इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। 'साक़ी' का व्यक्तित्व भी अत्यन्त आकर्षक है। उसके अकृत्रिम व्यक्तित्व में पन्त जी के "मानव" की स्पष्ट झलक दिखाई देती है और सुमित्रानन्दन की निम्नलिखित काव्य-पंक्तियाँ बरबस मानस-पटल पर अंकित हो जाती हैं :-

'यौवन ज्वाला से वेष्ठित तन,
मृदु त्वच, सौन्दर्य प्ररोह अंग
× × × ×
आशाभिलाष, उच्चाकांक्षा
उद्यम, अजस्र, विघ्नों पर जय,
विश्वास, असद-सद का विवेक,
दृढ़ श्रद्धा, सत्य प्रेम अक्षय।'[1]

'साक़ी' अत्यन्त सरल हृदयी और मधुभाषी है लेकिन अपने पक्ष में तर्क देते समय उनकी घन-गर्जना विपक्षी के निर्बल हृदय पर अट्टहास

1- "आधुनिक कवि" - भाग2, सुमित्रानन्दन पन्त - 'मानव' -पृ0- 69-70

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

करती हुई सुनाई पड़ती है । रगों में जवानी का खून अक्षय उबलता है लेकिन ज्ञान की गरिमा यौवन के तेज़ भागते अश्व को लगाम बन जाती है । उनका मस्त एवं फक्कड़ व्यक्तित्व स्वर्गीय बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन' की याद ताज़ा करता है । कश्मीरी के प्राचीन इतिहास, साहित्य, धर्म एवं साहित्यिक प्रवृत्तियों पर उनकी गहरी नज़र है । 'साक़ी' को इस बात का गर्व है कि वे एक किसान हैं और जीवन को उसके कृत्रिम रूप में नहीं अपितु प्राकृतिक रूप में जी रहे हैं । यही कारण है कि कटु-मधुर अनुभव, सफलताएँ एवं विफलताएँ, अन्धकार और प्रकाश अर्थात् जीवन का "कु" और "सु" उन्हें समान रूप से प्रिय है । रोज़ गाँव से शहर नौकरी के हेतु आना और कभी-कभी मीलों पैदल चलकर घर पहुँचना, गाँव के भोले भाले किसानों के स्वार्थ-युक्त एवं स्वार्थ-मुक्त जीवन को निकट से देखना, प्रकृति सुन्दरी के बदलते रंगों को पहचान हासिल करना और गुदड़ी में लाल ढूँढना तो उनकी दिनचर्या है । जीवन उनके लिये साधना है - बहुत दिलकश और हसीन । स्वयं उन्हीं के शब्दों में :-

-' मैं भी हूँ एक उड़ने वाला पक्षी
वायु, जल और अग्नि के संग
बचपन से है मैत्री मेरी
वायु के संग मैं भी भरूँ उड़ान

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(फा०) अलाव = तापने के लिये जलाई हुई आग

(सं०) ✓ अंगारा, जलती हुई लकड़ी

और आग के संग बन जाऊँ आलात
सर्दी गरमी को नहीं मुझे है कोई चिन्ता ।'[1]

'साक़ी' ने काव्य-साधना उस समय आरम्भ की जब कश्मीर में प्रगतिवादी विचारधारा से प्रेरित होकर 'नादिम', 'राही', 'आरिफ़' 'ख़याल' एवं 'फ़िराक' का भीतरी जोश पूरे वेग के साथ कविताओं के माध्यम से व्यक्त हो रहा था । प्रगतिवादी विचारधारा उस समय काव्य-मानस को विशेष रूप से आन्दोलित कर रही थी । सदियों की राजनीतिक परतन्त्रता और आर्थिक पराभव के भीषण परिणामों को प्रत्यक्ष देखकर कवि क्रान्ति और विद्रोह की भावना से भर उठा था । 'साक़ी' कुछ समय तक इस विचारधारा से प्रभावित रहे लेकिन बहुत जल्द उनकी कविताओं का अपना विशिष्ट रंग निखर उठा - मस्त 'साक़ी' प्रेमाकर्षण के डोर में बन्ध गया । प्रगतिवादी लेखन के विषय में साक़ी ने स्वयं लिखा है - "मैं स्पष्ट रूप से काव्य को उपादेयता के पक्ष में हूँ लेकिन क्रान्ति-ज्वर और नारा बाज़ी साहित्य नहीं है । मेरे विचार से मनुष्य के लिये सौजन्य, शीतलता, ताज़गी, आनन्द और शिष्टता के गुण प्रदान करने की क्षमता

1- ' ब्वति छुस वुडवुन जानावारा
वावस आबस नारस सोत्यन्
यारिज़ म्य छुना आदन कालिय
वावस सोत्यन ब्वति निम्मि छाला
नारस सोत्यन स्यद अलावा
तोरि त वुशानेस्क्यन परवा ।'
- "मनसर" - मोतीलाल साक़ी - 'मेहमान' कविता से - पृ०-101.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कला में होनी चाहिए ।"[1]

गत 30 वर्षों की साहित्य-साधना में साक़ी की सर्जनात्मक प्रतिभा के कई रंग निखर उठे हैं । "मोदिर ख़्वाब" और "मनसर" साक़ी के बहुचर्चित प्रकाशित काव्य-संग्रह हैं । "मोदिर ख़्वाब" सन् 1968 ई० में और "मनसर" सन् 1979 ई० में प्रकाशित हुए । "मनसर" रचना पर जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी का पुरस्कार उन्हें सन् 1980 ई० में प्राप्त हुआ और सन् 1981 ई० में इसी रचना पर उन्हें साहित्य अकादमी ने पुरस्कृत किया ।

सन् 1974 ई० में 'आज़ाद कल्चरल फोर्म' ग्वोडुर की ओर से 'साक़ी' की गद्य रचना "गाश्शिर" प्रकाशित हुई । इस पुस्तक में आधुनिक कश्मीरी काव्य के साठ कवियों का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनके कृतित्व पर भी प्रकाश डाला गया है । 'साक़ी' के ग्यारह साहित्यिक निबन्धों का संग्रह "आँकिवन" शीर्षक से सन् 1975 ई० में प्रकाशित हुआ है । "स्वच्छकाल" "शाहकलन्दर", "बुलबुल नागामी", "ललवाख ति कैंयह क़लमी नोत्थि" तथा "लछिकाक" शीर्षक शोध निबन्ध इसी संग्रह में संगृहीत हैं ।

शृंगार-वर्णन में 'साक़ी' का रस सिक्त हृदय अभिव्यक्ति के हेतु मचलता, उफनता, हठ करता दिखाई दे रहा है । 'साक़ी' ने परम्परागत शृंगार-वर्णन में नये चिन्तन की सम्भावनाओं को तलाशा । उन्होंने अनेक जानलेवा

1- "गाश्शिर" - 'मोतीलाल साक़ी' - पृ०- 114.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

मौलिक और नूतन स्थितियों की कल्पना करके श्रृंगार-वर्णन में नवीन प्राण फूँक दिये। इन प्रेम-गीतों में 'साक़ी' का मतवाला साजन नये अन्दाज़ में अपनी सजनी के साथ लय होने के लिये व्याकुल हैं। यही व्याकुलता उन के विरह गीतों का प्रमुख आकर्षण है। निस्सन्देह 'साक़ी' ने खुले दिल से अपनी सर्जनात्मक शक्ति के द्वारा जाम पर जाम पिलाये हैं और उनके रिन्द (रसिया) इस अमृतपान के हेतु हृदय कलस लिये आँखें लगाये प्रतीक्षारत हैं। यहाँ इस तथ्य को स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि साक़ी को शुद्ध कश्मीरी लोक भाषा पर असाधारण अधिकार है अतः सौन्दर्य बिम्बों के प्रस्तुतीकरण में उन्हें विशेष सफलता प्राप्त हुई है। प्रेम से सम्बन्धित 'साक़ी' की मौलिक उद्भावनाएँ अप्रतिम हैं। यहाँ कहीं भी कृत्रिमता नहीं, दिखावा या हावभाव नहीं, आकाश कुसुम चुनने की इच्छा नहीं बल्कि एक घायल हृदय की कराहती वेदनामय तड़पन शब्दों के माध्यम से मुखर हो उठी है। चन्द उदाहरण द्रष्टव्य हैं :-

(अ) 'सौगन्ध है मेरी, तनिक दिल खोल कर बतिया ले
जो मंज़ूर तुझे वही इज़हार कर
ग़म तो है यौवन का शत्रु, रक्षक बन यौवन का
मेरी तो कोई बात नहीं, अपना तो कोई चारा कर।'[1]

1- 'म्यानि द्रुई छय द्रिहि मुच़र कथि तारि कर
पी च़्य छुई मंज़ूर तो इज़हार कर
ग़म छु दुश्मन यावनुक यावुन चि़रछ
म्यानि छनि कथ पनिनि पानुक चारिकर।'
- "मनसर" - साक़ी - 'रुबाई' न0-113 - पृ0- 62.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आ) ' मदमाती मस छलकाती ! खोल दे बन्धन अलकों के
मत गिन ले आज गुनाहों को ।
'क्षमाशील' - यह भी तो है उसका इक नाम
द्वार खोल दे मधु शाला के
मधु-कलस लिये आया है साक़ी ।'[1]

इ) ' जाने उसके जुल्फों[x] में यह ख़म[x̿] रहे न रहे
ग़नीमत है ग़म की शाम रहे न रहे ।'[2]

ई) ' ज्यों ही कहा मैं ने, घड़ी भर के लिये ठहर मेरे पास
व्यर्थ न खो देना ये क्षण, तनिक बतिया ले ।
सान्त्वना-प्रद शब्द बहुत कहे मुख से
पर मीत ! इनकार किया आँखों से ।'[3]

1- ' यावन मांचि चि मस मुचिराव
मति सां ह्येतव गोनहन ग़न्द !
बख़्शन हार यिति छुस अखनाव
बर वांथि त्रांविव मय ख़ानस
मलर्यन मस हयथ साक़ी आव ।'
- "मनसर" - 'साक़ी' - ग़ज़ल - पृ0- 114.

x 'जुल्फ' - (फ़ारसी) छल्लेदार केश, बालों की लट

x̿ 'ख़म' - (फ़ारसी) टेढ़ापन, झुकाव ।

2- ' तमिस जुल्फन यि ख़म रोज़्या न रोज़्या
ग़नीमत शामि ग़म रोज़्या न रोज़्या ।'
- "जदीद कांशिर शांयिरी" - डॉ0 हामिदी काश्मीरी- कश्मीर विश्वविद्यालय, प्रकाशन - सन् 1982ई0 पृ0- 169.

3- ' युथुई म्य वोनमय म्यनिश दमा बर पनिन कथा कर, यि वख़ मं रावर ज़बांनि कोरथम दिलासि वाराह अंछव च्य़ कोरथम नकार यारै ।'
- वही - - वही -

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

उ) ' बालम की मधुमाती आँखें छलकते मधु कलस सदृश
तड़पा रहा है साक़ी बेसब्र कर देता यौवन का शबाब ।'[1]
(फा०) तारुण्य, जवानी

ऊ) ' विस्मृतावस्था में हाथ से जाम उलट गया
मुहब्बत पर लग गया इक नया इलज़ाम
पीछे गहरी ढलान और आगे ऊँचा पर्वत
बड़ी बात है यदि इस पथ पर पालेंगे अंजाम
जाँच के हेतु समय नहीं है
या हाथ में ले तस्बीह× अथवा ले जाम ।'[2]

'साक़ी' के काव्य का दूसरा आकर्षण है - प्रकृति । आज विरले ही कश्मीरी कवि 'साक़ी' के समान प्रकृति के रूप लावण्य पर मुग्ध हुए दिखाई देते हैं । उन्होंनें कहीं शुद्ध आलम्बन रूप में प्रकृति के सौन्दर्य बिम्बों को शब्द-चित्रों के माध्यम से व्यक्त किया है और कहीं प्रकृति उनके काव्य में उद्दीपन रूप में श्रृंगार के रंग और प्रभाव को गहराने में सहायक दिखाई देती है । 'साक़ी' की इन रचनाओं में उनका कवि हृदय निश्छल भाव से व्यक्त हुआ है । प्रकृति सुन्दरी के बदलते रंग 'साक़ी'

1- ' मस टा'रि बालियारस मस टूरिज़न छि बा'रि बा'रि
साक़ी छु क्रेशिनावान यावुन छु बा'बिरावान ।'
- "जदीद का'शिर शा'यिरी" - डॉ० हामिदी - पृ०-169

× 'तस्बी' - जपमाला ।

2- 'अ्थि मंज़ि व्यसस्योव लूसुम जाम
लोलस अज़ खोत नोव इलज़ाम
प'ति छुई लम्ब तय बुथि बोड़ बाल
बा'ड़ कथ यमि वति युन अंजाम
सरगी करनस छनि फुरसत
या रठ तस्बी× न'ति रठ जाम ।'
- "मनसर"- ' साक़ी' - ग़ज़ल - पृ०- 118.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

को उन्मत्त बना देते हैं। सौन्दर्य मदिरा के जाम पी कर प्रकृति के रूप-लावण्य से कवि-हृदय सिक्त हो उठा है। 'साक़ी' में प्रकृति निरीक्षण की असाधारण क्षमता है। प्रकृति के स्वच्छन्द मनमोहक सौन्दर्य-चित्र तो 'साक़ी' को पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त हुए हैं। उनकी तेज़ निगाहें प्रकृति के वक्ष में निहित सौन्दर्य-कणों को ढूँढ़ने में पूर्ण सफल हुई है। 'साक़ी' के श्रृंगार-काव्य का श्रृंगार वस्तुतः प्रकृति के उपादानों से ही सम्भव हो सका है। प्रकृति के सौन्दर्य कणों से सुसज्जित 'साक़ी' के काव्य में से चन्द उदाहरण देखने योग्य है :-

अ) आलम्बन रूप में प्रकृति चित्रण (बसन्तागमन का एक दृश्य)

-' यह आया फूलों के उपहार लेकर
गुलाब, स्ट्राबरी[x], गिलास और मधुर खोबानी की गिरी-
- लेकर
और अपने संग कोयल, अबाबील और पोशिनूल को -
-निमन्त्रण देकर

यौवन की मशाल लेकर
वर्षा की जलधार लिये
आश्वस्थ हुआ शाख साज़ कि यह आया बेंत की डाली -
- लेकर
मीठा मट्ठा (छाछ), मलाई-मक्खन और शुद्ध घी की ढेरी-
- लेकर
मक्की, मोठ और अनाज के दाने लेकर - यह आया - वर्षा
- की जलधार लिये।'[1]

1- ' यि आव पोशि डाल ह्यथ
गोलाब इश्टबर[x] गिलास ति मीठि चेरि खाल ह्यथ
ति पनिनि पानि कुकलि कतिजि पोशिनूल साल ह्यथ

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आ) उद्दीपन रूप में प्रकृति-चित्रण :

-' बसन्त ऋतु हो, उपलब्ध हो जाम (चषक)
शाम हो शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी की
यौवन के मधुर गीतों की लय
घट-वादकों की लय के साथ गूंज रही हो
और मेरे सम्मुख हों, मेरे माशूक़ (प्रेम पात्र) ।'[1]

इ) प्रभातकालीन प्रकृति का एक दृश्य-चित्र :

-' मोतियों के डल[x] पर जब नज़र पड़ी मेरी
खिल उठा हृदय, चमक उठा आशा का प्रकाश
प्रातः काल के रंग रूप को देख कर भ्रम हुआ मुझ को
रसूल मीर को दिया वचन निबाहने हेतु
कहीं 'जुवलमाल'[x] रूप बदल कर तो नहीं आई है !'[2]

(पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)
ति यावनिच मशाल ह्यथ
यि आव रूदि श्राणि ह्यथ
ति कान्यलिस ति सथ सपिन यि आव पाशि कानि ह्यथ
मोदुर गुरूस मलाय थानि ति साफ ग्यवचि मानि ह्यथ ।
मकाय मुठ ति दानि ह्यथ
यि आव रूदि श्राण्य ह्यथ ।'

x (अंग्रेज़ी) - Strawberry
- "गाशिर" - 'साक़ी' " बहार " कविता से - पृ0- 116.

1- 'बहारूक वक़ ति बेयि गोछ़ जाम आसुन
च़ोदाहिमो ज़ूनि हुन्द गोछ़ शाम आसुन
शबाबिक नग़मि गोछ़ आसिन नटयन प्यठ
म्य गोछ़ बेयि ब्रोंठि कनि गुलफ़ाम आसुन ।'
- " मनसर" - मोतीलाल साक़ी = पृ0- 7.

गुलफ़ाम (फा0) or गुलअंदाम : पुष्पांगी = फूल जैसे कोमल, मृदुल, सुकुमार और सुगन्धित शरीर वाला

2- ' नज़र यामत पेयम मोख्तय डलनकुन[x]
फोलुम दिल आशिहोत प्रागाश त्रोवुन

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

'साक़ी' ने कुछ देश-प्रेम सम्बन्धी रचनाएँ भी लिखी हैं। वे अपने देश की सांस्कृतिक गरिमा से पर्याप्त प्रभावित दिखाई देते हैं। इस देश का वैभवशाली अतीत उन्हें नव-निर्माण के हेतु प्रेरणा प्रदान कर रहा है। विद्वज्जनों की इस साधना भूमि के प्रति उन्हें अनन्य अनुराग है, सांस्कृतिक विरासत एवं ऐतिहासिक उपलब्धियों पर गर्व है और भू-खण्ड में प्रचलित दृढ़ बन्धुत्व की भावना के प्रति आकर्षण है। अतः राष्ट्र-प्रेम की ज्वाला को प्रज्वलित करने में 'साक़ी' ने अपना रचनात्मक सहयोग प्रदान किया है। इस दृष्टि से 'हिमालिक गबर रांछदर बेशुमार' साकी की उल्लेखनीय रचना है जिस में देश-प्रेम का उत्कट प्रवाह संकीर्ण सीमाओं के बन्धनों को तोड़ता हुआ तथा हृदय-प्रदेश को सिक्त करता हुआ प्रवाहित होता है :-

-' हंसती खेलती है पुष्पवाटिका हमारी
अनमोल मोतियों की डल-झील है इस में
ग्रीवा ऊँची रही है उसकी
पराजित कर देगी शत्रु को हमारी संगठित शक्ति
हिमालय के वीर पुत्र, हम रक्षक हैं इसके।
गा रहे हैं 'पोशिनूल' मुखरित है प्रकृति
अबाबील के कलकंठ से
मद्धम ध्वनि में बज रहे हैं समय की बाँसुरी में ग़ज़ल

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

वुछिथ सुबहुक यि रंग ग्व म्य ख्याला
यि मा द्रामिच़ जुवलमाल ×̄ छ़ल कांरिथ अज़
रसूलमीरस तमिस ओस वादि थावुन।'⊗

×̄ डल - श्रीनगर का झील डल, 'मोतियों का डल'-असंख्य ओसकण

× 'ज़ुवलमाल' - अतीव सुन्दर स्त्री, प्रसिद्ध कश्मीरी शृंगारिक कवि रसूलमीर की काव्य-नायिका।

⊗ - "एन एतथॉलजी आर्फ माडर्न कश्मीरी वर्स" -त्रिलोकीनाथ रैणा, पृ0-274

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जोवन को सींच रहे हैं खेतिहर एवं श्रम जोवी
हिमालय के वीर पुत्र, हम रक्षक हैं इसके ।'[1]

श्रृंगार को मस्त मदिरा पी कर 'साक़ी' युगोन जीवन से विमुख नहीं हुए । वस्तुतः उनकी कला निरन्तर विकासोन्मुख रही । बाल्य काल से ही निजी जीवन में वे बहुत कुछ सहते चले आये हैं अतः युगोन सत्य से अनभिज्ञ कैसे रहते । 'साक़ी' पर धीरे धीरे नई-कविता के काव्यान्दोलन का प्रभाव पड़ा और प्रयोगवादी दौर से गुज़र कर तथा आधुनिक जीवन की विभीषिकाओं से त्रस्त और भयभीत होकर वे परम्परागत जीवन-मूल्यों की सार्थकता पर सन्देह व्यक्त करने लगे । नये युग का सचेत कवि एक नई सोच के साथ चिन्तना के बल पर काव्य सर्जन करने लगा और सांकेतिक लघु शब्द-चित्रों के द्वारा नये युग-बोध के तीखे प्रभाव से उत्पन्न विह्वलतापूर्ण अनुभूति छन्द के बन्धन तोड़ कर मुखर हो उठी । आज का मानव-जीवन अपनी समस्त

1- ' छि असिवुनि तं गिन्दवुन्य यि सांन्य पोशिवार
मोलुल मोखित डल अथ वोगिन रूज़ कार
समुत सोन करि दुश्मनन लारि तार
हिमालिक गबर रांछदर बेशुमार
ग्यवान पोशानूल कांतजि चिरग्गुरा करान
ग़ज़ल वखित नयि मंज़ छि मदहम वज़ान
दिवान सग हयातस कुमिल कामगार
हिमालिक गबर रांछदर बेशुमार ।'

- "स्वर्ग म्योनुई वतन" - सम्पादक: मुहम्मद अहमद अन्दराबी -
- जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - सन् 1972 ई० -पृ०-3

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

विसंगतियों के साथ 'साक़ी' के मन-मस्तिष्क को अधोर करने लगा। पुराने स्वप्न टूट गए, अस्तित्व का बिखराव सताने लगा। तकनीकी रस्साकशी के परिणाम स्वरूप कवि के हृदय में भय-मिश्रित आश्चर्य को सृष्टि होने लगी। विश्वासों की धुरी टूट गई, बिखराव जीवन का यथार्थ बन गया और टूटन सत्य। सौन्दर्य के मूल्य बदल गए। क्षणों में जीवन जीने की क्षुधा बढ़ती गई। विश्व के मानचित्र पर घटित होने वाली विभिन्न घटनाओं के कारण आज के अनुभूतिशील साहित्यकार की मान्यताओं एवं विश्वासों में भारी उलट-फेर हुआ है। आज संसार के भिन्न-भिन्न देश और देशवासी एक दूसरे के बहुत निकट आये हैं, इसमें सन्देह नहीं, लेकिन एक दूसरे से जुदा भी हो चुके हैं। आज मानव के भीतर का दानव उसे बहुत सता रहा है यही कारण है कि व्यक्ति अपने अस्तित्व तक ही सिमट कर रह गया है। युगीन जीवन की इन महत्वपूर्ण घटनाओं से 'साक़ी' के कवि हृदय का प्रभावित होना स्वाभाविक था। फलतः प्रेमोन्मत्त साक़ी की काव्य-लेखनी के द्वारा नई कविता नये लक्ष्य एवं उद्देश्य के साथ मुखर होने लगी। तर्क और बुद्धि ने अनुभूति और कल्पना के योग से गढ़े सौन्दर्य चित्रों पर प्रश्न चिन्ह लगा दिये - इस दृष्टि से "भ्रम", "नोव सहराव", "अख मंज़र", "सफ़र", "एहसास", "मेहमान" आदि

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

'साक़ी' की उल्लेखनीय रचनाएँ हैं जिन में युग से प्रेरित चिन्तन-प्रधान सत्य की व्यंजना सांकेतिक शब्द-चित्रों के माध्यम से हुई है। 'साक़ी' ने आधुनिक युग बोध से प्रेरित ग़ज़ल भी लिखे हैं और अत्यन्त संक्षिप्त आकार की "मिनी" कविताओं की सृष्टि भी की है। इस तरह की रचनाओं से चन्द उदाहरण देखने योग्य है :-

अ) -' गरम जलते तपते अंगारों जैसी
कोलतार से पक्की बनायी सड़क
शून्य से लंबायमान है सागर तक
दूध वाले गाँव का सुख छीन लिया
बलात्।'[1]

आ) -' पृथ्वी सिमट गई
(अखरोट के) खोल सदृश
पग पग पर बिछे हुए हैं 'मिच़िर'[x] काँटे
अवाक् खड़े हैं बसन्त के वादक
परेशान हो गया मानुष
बदबख़्त
हटे गा पीछे
अथवा क़दम बढ़ाये गा आगे।'[2]

1- ' तच़ दज़वुनि वुहवुनि
तीलि सड़क
शिन्हा प्यठि सांदरस काड़ दियतुन
दोदि गामुक सोख न्यून
गुलि मूरिथ
तच़ दज़वुनि वुहवनि तीलि सड़क।'
- "मनसर" -'साक़ी' - नज़्म - पृ0-78.

2- ' बुतराथ श्रोकेमिच़
गोलरस सोम्ब (शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

इ) -' रेत समा गई आँखों में जो पीड़ित हैं
इस शरीर में क्या कभी आ जायेगी गरमी
क्या कहें, पहले तो हम विचित्र सपने पाल रहे हैं
जीवन है हमारे हेतु नाज़ुक महीन कच्चा दागा
कहीं यदि उलझ कर पड़ जाती सिकुड़न
तो बस टूट कर बिखर जाता है ।'[1]

ई) -' कहते हैं
जो ऊँची आवाज़ से बोलेगा
घोंट लेंगे गला उसका
वेग से जो लेगा साँस
श्वास-नालिका उसकी कुचल देंगे
अच्छा ही हुआ -

) पूर्व पृष्ठ का शेष भाग)

पदि पदि वथ राविथ मीच़िर कांडि ×
हय बुंगि छो सोन्तिक साज़न्दर
अलि त्रोजि ग्व इन्सान
तावन ज़द
पथ नेरया
किनि तुलि ब्रोंठ कदम ।'

× 'मिच़िर कांड' - (कश्मीरी) - एक प्रकार के कांटे
- "मनसर" - 'साक़ी' - नज़्म - पृ0- 82.

1- 'स्यख गांमिच़ चशमन अन्दर तेलान छम
यथ जुवस ज़ोंह कांल गछ़ि वुशनेर त्या
क्या वनो गोडि आंस छि बदलि खाब हयथ
सानि बापत ज़िन्दगी ओछ़ ओम पन
ग्यनि ग्यस या वर लोगुस मोक्ल्योव च़्योन ।'

- "नांविशारि सोम्बरन" -सम्पादक : गुलाम नबी 'फ़िराक़' - कश्मीर विश्वविद्यालय प्रकाशन - सन् 1981 ई0 "अखमंज़र" - 'साक़ी' पृ0- 160.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पाँव पसार कर सब भोग लेंगे सुख ।'[1]

'साक़ी' के काव्य में व्यंग्योक्तियों का अपना महत्व है । यह व्यंग्य परत-दर-परत हृदय को चीरता हुआ हमें कुछ सोचने विचारने के लिये विवश करता है । इन व्यंग्योक्तियों के द्वारा विषाक्त जीवन के कटु अनुभव मूर्त्त हो उठे हैं । तलख़ हक़ीक़त हमारे अस्तित्व पर ठोकर मारती हुई दिखाई देती है । 'साक़ी' ने ज़िन्दगी को उसके वास्तविक रूप में जिया है और आज भी जीने के हेतु संघर्षरत हैं । ज़िन्दगी अविश्वसनीय रूप में रंग बदलती हुई तथा 'साक़ी' के व्यक्तित्व पर अट्टहास करती हुई दिखाई देती है । 'साक़ी' स्वयं अपने अनुभूत सत्य को तड़पा देने वाली व्यंग्योक्तियों के माध्यम से वाणी प्रदान करते हुए दिखाई देते हैं । यहाँ व्यंग्य की सृष्टि सोद्देश्य हुई है और प्रत्येक व्यंग्योक्ति नश्तर के समान हृदय को चीरती हुई तथा व्यवस्था पर चोट करती हुई हमें स्वयं अपने आप से परिचित कराती है । आज के ज़माने में खुद अपने आप को पहचानना भी एक विकट समस्या है । लोग सब कुछ जान कर भी सभ्यता की उजली चादर ओढ़ कर अनजान होने का नाटक करते हैं । दुर्भाग्य यह है कि

1- 'दपान
युस बंडि कथ करि
तस चीरन होट
हिकि शाह हयथि
शाह रगि दाम दिनस
जानई ग्व
खोर वाहरिथ बरन सारी लोख ।'
- 'मनसर' - 'साक़ी' - नज़्म - पृ0- 75.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आज हर आदमी अभिनेता बन कर स्वयं अपने आप को ठगने का व्यर्थ प्रयत्न करता है । इस दृष्टि से चन्द व्यंग्योक्तियाँ देखने योग्य हैं :-

अ॥ –' सच्चाई के दावेदार ! तनिक सुन
झूठ को हुई दस्तारबन्दी स्वर्ण-पगा से ।'[1]

आ॥ –' जिसे पसन्द नहीं वह पोटले छाती अपनी
यह फ़न है हम में बटोर ली दौलत असीम ।'[2]

इ॥ –' आनन्द भोगने गये लोग 'बादामवारी' का
भूल हुई हम से कि हमने कविता लिख ली ।'[3]

ई॥ –' तहज़ीब की इस बस्ती में
कमी है मानव मूल्यों की ।'[4]

उ॥ –' छल कपट सीख, छल-कपट कर, छल- कपटी बन ।'[5]

1– 'पज़रिकि दावादारो बोज़ अपज़िल गोंडहय सोनिदस्तार ।'
– "जदीद कोशिर शायिरो" डा० हामिदी – पृ०– 172.

2– ' ना खोश यस पियो चोटतन वछ
असि तोग असि डुवि लसज्यव दयार ।'
– "मनसर" –'साक़ी' – ग़ज़ल – पृ०– 112.

3– ' लुख गई छावुनि बादम वार
असि फ़ेरि पानस असि वानि शार ।'
– "मनसर" – 'साक़ी' – ग़ज़ल – पृ०– 112

4– ' तहज़ीबिचि यथ बस्तो मंज़
इनसान कदरन हुन्द कोहकास ।'
– "मनसर" –' साक़ी' ग़ज़ल – पृ०– 113

5– ' छल हयेछ छल कर छलगोर बन ।'
– "शीराज़ा" ॥कश्मीरी॥ जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन
ग़ज़ल नम्बर – मई-अगस्त 1972 ई० ग़ज़ल –'साक़ी' – पृ०-81.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

ऊः — 'अरे कबूतर बाज़ !
कैंच न देना पर मेरे उड़ने से पहले
अभी न पिंजर बद्ध कर देना ।'[1]

"मनसर" काव्य-संग्रह में संगृहीत रुबाइयों का अध्ययन करने के पश्चात् यह बात स्पष्ट होती है कि 'साक़ी' में आध्यात्मिक चिन्तन के प्रति झुकाव दिनोंदिन बढ़ रहा है । आधुनिक युग के कई कश्मीरी कवियों को मैंने विकास-यात्रा के इस मंज़िल से गुज़रते देखा है जिन में सर्वश्री गुलाम हसन बेग 'आरिफ', गुलाम रसूल 'नाज़की', दीनाथनाथ 'नादिम', गुलाम रसूल 'सन्तोष' एवं मोतीलाल 'साक़ी' उल्लेखनीय हैं । 'साक़ी' द्वारा लिखित रुबाइयों में चिन्तन के चन्द घनीभूत क्षण 'माइक्रो' शब्द-चित्रों के माध्यम से मूर्त्त हो उठे हैं । वस्तुतः 'साक़ी' अपनी भव्य सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परम्परा के प्रति न केवल सचेत हैं अपितु ईमानदार भी हैं । विभिन्न दार्शनिक सिद्धान्तों एवं रहस्यवादी प्रवृत्तियों के प्रति उनके मानस का झुकाव इस तथ्य की ओर संकेत कर रहा है कि 'साक़ी' जीव, जगत, माया और ब्रह्म के मूल रहस्य एवं पारस्परिक सम्बन्ध से अवगत होना चाहते हैं । वे दिव्य ज्योति के प्रति आकृष्ट दिखाई देते हैं । उन्हें विश्व नियन्ता की अलौम शक्ति का

1— 'हे कोतर बाज़ा
मंति करतम वुड़नय त्राश पखन
मति थवतम वुनि ठिपि गाड कोरिय ।'
— "मनसर" — 'साक़ी' — नज़्म — पृ०— 76.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आभास होने के साथ-साथ जीव के क्षुद्र क्षणिक अस्तित्व का बोध व्याकुल कर रहा है । वे मानस की गहराइयों में अनमोल मौक्तिक कणों को तलाशने का प्रयास करते हुए दिखाई देते हैं । आश्चर्य इस बात का है कि प्रेम गीतों का स्रष्टा 'साक़ी' अब रहस्यात्मक तथ्यों की उलझी हुई गुत्थियों को सुलझाने में लगा है । यही तो उनकी विकासोन्मुख काव्य-प्रतिभा का प्रमाण है । अध्यात्म की गहराइयों में 'साक़ी' मूल "तत्त" को तलाशने के हेतु साधना के पथ पर आगे बढ़ते हुए दिखाई दे रहे हैं । इस सन्दर्भ में चन्द उदाहरण द्रष्टव्य हैं :-

अ॥ -' वे हैं निष्कल, नित्यानन्द, निराकार
गुणातीत, दोष रहित यद्यपि हैं साक्षात्कार
ध्यान-धारणा में हैं परमेश्वर
मोह-लंका के हर गोशे में वे आग लगा देंगे ।'[1]

आ॥ -' अग्नि समर्पित जो होता है अग्नि रूप बन जाता वह
द्वैत होने पर भी अद्वैत के संग एक रूप हो जाता
मन-मन्दिर में कर ले निवेदन अपने प्रिय से
मार अहं को सोऽहम् में लय होना है ।'[2]

1- ' सु छु न्यम्नाकल नित्यन्द न्यराकार
गोनि दूष मा छुस योद छु साक्षातकार
दयानि दारना यि मंज़ छु सुई परमोश्वर
मुह लंकायि सुई गंडि हनि हनि नार ।'
- "मनसर" - साक़ी' - स्वाई न0-53 - पृ0- 32

2- ' यि प्यव नारस अन्दर तथ नार सांपुन
बिदून आंसिथ कुनिस सूत्यन सपुन कुन
वोन्दिकि अस्तानि मंगि मंग करति यारस
अहम् गांलिथ छु सोऽहं पान पुशारून ।'
- "मनसर" - साक़ी' स्वाई न0-76 पृ0- 44.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

इ) –' आत्म रूप विद्यमान हो परमेश्वर जीवों में
किस नाम से हो प्रतिष्ठित हर नाम में निहित रहस्य-
– तुम्हीं हो
पढ़ना छोड़ कर लगा आत्म-विचरण में
क्या होगी कमी यदि त्रयावस्था का वर देते ।'[1]

ई) –' मीत ! भीतर प्रवेश करके ढूँढ ले अपने आप को
यों ही है पाना और खोना कौन पूछता है इसे ?
आत्मबोध होगा जब तो चित्त भानु सदृश प्रज्वलित –
– होगा
दिव्य ज्योति जब पाओगे तो इरफान[ं] मिलेगा ।'[2]

इस प्रकार यह बात स्पष्ट होती है कि मोतीलाल 'साक़ी' का जदीद कश्मीरी साहित्य के इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान है । उनकी प्रतिभा बहुमुखी है । कवि होने के साथ-साथ वे एक सशक्त गद्य लेखक और समर्थ शोधकर्त्ता हैं । उन्होंने सम्पादक की भूमिका

1– ' स्व-आत्म रोपि छुख ज़ीवन अन्दर दय
बसिथ कमि नावु प्रथ नावस यि छुख पय
परून त्रोवुम सरून लोगुम पनुन पान
गछ़ी क्या कम अग र ज़न बख़्यिदम लय ।'
– "मनसर"–' साक़ी' – स्वाई न0–67 पृ0–39.

2– ' अन्दर अछ़ यारि च़िई छ़ारून पनुन पान
लबुन रावुन छु बा'लि अथ क्या छु पुरसान
बुज़ी शाशकल ति च़्यति हन्द सिरयि प्रज़्वली
बनी नूरिच नज़र स्पदी च़्य इरफान ।'
– "मनसर" – 'साक़ी' स्वाई न0–8, – पृ0– 9.

इरफान–(अ०) – विवेक, ज्ञान, ब्रह्मज्ञान, मारिफ़त
मारिफ़त – अध्यात्म, तसव्वुफ़, ब्रह्म-पहचान

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

को बड़े आत्म विश्वास के साथ निबाहया है । प्राचीन कश्मीरी इतिहास और साहित्य पर उनको नज़र बहुत गहरी है । कश्मीरी 'विश्वकोश प्रकाशन योजना' के साथ 'साक़ी' मुख्य रूप से जुड़े हुए हैं । जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी की इस महत्वपूर्ण प्रकाशन - योजना के अन्तर्गत विश्व-कोश का प्रथम भाग सन् 1986 ई० में प्रकाशित हुआ और अब इसका द्वितीय भाग प्रकाशित हो रहा है ।

भारत सरकार ने गणतन्त्र-दिवस पर (26 जनवरी 1989 ई०) 'साक़ी' को 'पद्म श्री' के सम्मान से अलंकृत करके वस्तुतः समस्त कश्मीरी बुद्धिजीवी वर्ग का सम्मान किया है । मस्त मौला 'साक़ी' कश्मीरी काव्य के भविष्य की आशा है । उन्हें उस भविष्य का स्वयं अपने हाथों श्रृंगार करना होगा । आज उनकी काव्य-प्रतिभा का निखरा हुआ रूप सुनहले भविष्य का पूर्वाभास है । 30 वर्षों की काव्य-साधना विकास के विभिन्न पड़ाव पीछे छोड़ कर आज अपनी परिपक्वता का प्रमाण दे रही है । यह भी सत्य है कि 'साक़ी' की सर्जनात्मक प्रतिभा की अपनी सीमाएँ हैं । यह नहीं कहा जा सकता कि 'साक़ी' ने आज तक जो कुछ लिखा है बस वही सर्वश्रेष्ठ है । 'साक़ी' को विकासोन्मुख काव्य-कला का अन्तिम लक्ष्य अभी भी दूर है लेकिन आशा के सहारे कौन

मौला - स्वामी, ईश्वर, मालिक

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जीना नहीं चाहता, वही तो जीवन के प्रति एक स्वस्थ स्वीकारात्मक दृष्टि है।

-' छींटल[x] फर्तिंगे
थोड़ी ही देर पहले खोल से बाहर निकला है
इस आग के चारों ओर
लगा मत चक्कर।'[1]

- 0 -

1- ' छि्टि पौँपिरि
आंदी गोचि़ मंज़ दराब
यथ नारस मति दिति
अ्न्दि अ्न्दि गथ।'
- "मनसर" -'साक़ी' - नज़्म पृ0- 81.

x: यह शब्द मैं ने स्वयं गढ़ लिया है रंग बिरंगी शब्द के पर्याय के रूप में।
-लेखक-

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

/8/ ऊः हास्य एवं व्यंग्य, :ए: भगवत् भक्ति, लीला एवं स्तुति-परक काव्य तथा भक्ति पर आधारित कथा-प्रधान वर्णनात्मक रचनाओं के प्रणेता -

" पण्डित लांखमन जू राज़दान / लालि लांखमन "
{ सन् 1892 - 1962 ई० }

1- जीवन-यात्रा की कटु-मधुर स्मृतियाँ
2- माल-विभाग में नियुक्ति : मराज़ से कमराज़
3- लांखमन जू राज़दान से लालि लांखमन : शाखदर से चिद्ठो रसां
4- व्यक्तित्व के कुछ शोख़ रंग
5- हास्य व्यंग्य प्रधान काव्य
6- व्यवस्था के प्रति क्रुद्ध : घोर असन्तोष
7- कहीं हल्का प्रहार सांकेतिक रूप में : कहीं हथौड़े की चोट
8- व्यंग्य के आधार भूत तत्त्वों का निर्वाह
9- व्यंग्य का पूरक : हास्य
10- भौतिक जीवनी की त्रासदी पर व्यंग्य : अपने परिवेश के प्रति सजग
11- उपहास : दिल खोल कर मज़ाक़ उड़ाना
12- रूढ़ सामाजिक परम्पराओं एवं रीति रिवाजों पर चोट
13- हास्य व्यंग्य प्रधान रचनाओं का अभिव्यक्ति पक्ष
14- लालि लांखमन के काव्य में भगवद् भक्ति
15- लीलामय जगत : सृजनहार की महानतम विभूति
16- दास्य भाव की भक्ति : भगवद् कृपा एवं अनुग्रह को पाने की सतत अभिलाषा
17- लालि लांखमन का लीला काव्य : शैव और वैष्णव का समन्वय
18- स्तुतिपरक रचनाएँ : ईशवन्दना
19- कथा-प्रधान वर्णनात्मक भक्ति काव्य : भक्ति में लोकरंग
20- महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

आधुनिक कश्मीरी काव्य की नाना प्रवृत्तियों पर विचार करते समय यह बात स्पष्ट होती है कि व्यंग्य काव्य-प्रवृत्ति (Satirical Poetic Trend) की अविरत क्षीण धारा कश्मीरी काव्य में कभी अशक्त और कभी सशक्त वेग के साथ प्रवाहयुक्त रही है। लेकिन अन्य काव्य प्रवृत्तियों विशेष कर अध्यात्म एवं दार्शनिक काव्य, श्रृंगार-काव्य, मस्नवी काव्य, लीला एवं भक्ति काव्य, चरित काव्य तथा राष्ट्रीय काव्य की तुलना में व्यंग्य काव्य-प्रवृत्ति का प्रवाह/विकास सन्तोषजनक नहीं रहा है। विभिन्न आधुनिक कवियों ने व्यंग्यात्मक रचनाएँ लिखी हैं लेकिन 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में बहुत कम ऐसे कवि हुए हैं जिन्होंने व्यंग्य को प्रमुख प्रेरणादायक प्रवृत्ति के रूप में ग्रहण किया है। स्वर्गीय पण्डित लक्ष्मन राज़दान उर्फ़ लालि लक्ष्मन इन्हीं चन्द व्यंग्य कवियों में से एक हैं जिन्होंने ज़िन्दगी के गहन एहसासात (अनुभवों) को नश्तर की धार के समान तीखे चुभते हुए व्यंग्य के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की। हालाँकि व्यंग्य लेखन उनके

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

काव्य-व्यक्तित्व का ज़ोर-दार पहलू रहा है लेकिन वह प्रमुख पहलू नहीं है । लोला एवं भक्त कवि लालि लांखमन व्यंग्य कवि लालि लांखमन से कहीं अधिक प्रभावशाली एवं विचारोत्तेजक दिखाई देते हैं । यहाँ वे स्वामी परमानन्द, कृष्ण जू राज़दान एवं लक्ष्मण जू रैना 'बुलबुल' की परम्परा में आते हैं ।

'कुलगाम'[1] के निकट हान्द ग्रवल गाम में पण्डित दिव जू राज़दान के घर लांखमन[2] राज़दान का जन्म 14 अप्रैल 1892 ई० में हुआ । यह वह समय है जब कश्मीर-वासी शाहंशाही राज्य के अधीन ज़ालिम नौकर-शाही, ज़मींदारी प्रथा एवं चकदारी[3] व्यवस्था में पिंजर बद्ध असहाय जीवन जीने के लिए विवश थे । सामान्य ग्रामीण जीवन में सर्वत्र दारिद्र्य, भूख, जड़ता, अन्ध-विश्वास एवं अज्ञान का तमसान्धकार व्याप्त था । राजकर्मचारियों के अत्याचार, ज़मींदार का दबदबा (आतंक) एवं चकदारी निज़ाम के काले क़ानून इन्सान को जानवर का जीवन जीने के लिये विवश कर रहे थे । अल्पायु में ही लांखमन राज़दान को जीविकोपार्जन के हेतु घर छोड़ कर शाकदर[4] की नौकरी

1- कश्मीर घाटी के ज़िला अनन्तनाग का एक तहसील ।
2- संस्कृत - लक्ष्मण
कश्मीरी-> लांखमन ।
3- चक/चख - बड़े बड़े ज़मींदारों को वह ज़मीन जो काश्तकारों के द्वारा जोती जाती है ।
'चकदार' - भूमि के स्वामी ।
4- माल-विभाग का एक कर्मचारी जो किसानों से ज़मीन का जिंस मालिया वसूल करता था ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पर कमराज़ (कश्मीर घाटी का पूर्वी भाग) जाना पड़ा। यहाँ वे कई वर्ष रहे। शाखदर की नौकरी का दायित्व निबाहते हुए उन्हें ज़िन्दगी के कई तल्ख़ तजरबे हुए। ज़िन्दगी जितनी हसीन है उतनी ही भयावह भी है, जितनी आकर्षक है उतनी ही नीरस भी है तथा जितनी मधुर दिखती है उतनी ही ज़हर आलूदः (विषाक्त) भी है।

लांखमन राज़दान को ज़िन्दगी के ये नाना रंग अल्पायु में ही एक के बाद एक देखने पड़े। कमराज़ में ही लांखमन का एक साथी शाखदर था – लाल्लि जू। लाल्लि जू के साथ लांखमन राज़दान की घनिष्ठता ने मैत्री का रूप धारण किया और इसी दोस्ती को अमरत्व का वरदान प्रदान करने के हेतु लांखमन राज़दान ने अपना कविनाम 'लाल्लि लांखमन' रखा और धीरे धीरे इसी नाम से लोग उन्हें जानने लगे। बात यही है कि धनपतराय ने जब प्रेमचन्द नाम से लिखना शुरू किया तो धनपतराय को भूल गये और प्रेमचन्द ने एक हक़ीक़त का रूप धारण किया।

लाल्लि लांखमन विवाहित थे – पत्नी का नाम था पोशि कुज। लेकिन विधि की विडम्बना देखिये – नाम था पोशि कुज (फूलों की कली) लेकिन एक ऐसी पुष्प कली जो कभी खिल न सकी। वह बांझ थी। लाल्लि लाखमन निःसन्तान रहे और ज़िन्दगी की इस कमी ने

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

भी उसे कभी-कभी स्वयं अपना मज़ाक़ उड़ाने के लिये प्रेरित किया। शाखदारी की नौकरी छोड़ कर लांखमन राज़दान डाक ख़ाने में चिट्ठी रसां (डाकिया) नियुक्त हुए और काफ़ी समय तक डाक ख़ाने में नौकरी करते रहे। लेकिन कमराज़ से लौट आये थे और शेष जीवन अपने ही इलाक़े में घूमते भटकते रहे। डाक-विभाग के इस चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी ने आधुनिक कश्मीरी काव्य की श्रीवृद्धि में महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाही है। आश्चर्य है कि डाक-विभाग ने इस तथ्य को आज तक नहीं स्वीकारा और डाकिया लांखमन राज़दान के रचना-कौशल के प्रति उनकी दुर्भाग्य-पूर्ण उदासीनता भंग न हुई। सेवा निवृत्त होने के बाद लालि लांखमन अपने गाँव में रहने लगे और जीवन के सन्ध्याकाल में भगवद् भक्ति की ओर विशेष रूप से प्रवृत्त हुए। 5 दिसम्बर सन् 1962 ई० को लालि लांखमन का जब देहान्त हुआ तो कश्मीर के साहित्य प्रेमियों को एहसास होने लगा कि आज तक जिसे वे कांच समझते रहे वह वास्तव में कंचन था।

लालि लांखमन अत्यन्त तरल प्रकृति के जीव थे। आजीवन ग्रामीण माहौल में रहे और प्रकृति के स्वच्छन्द वातावरण में ही उनकी काव्य-प्रतिभा का विकास हुआ। पण्डित लाखमन जू रैणा 'बुलबुल' के समान ही लालि लांखमन को भी ज़री कहवे की बड़ी तलब रहती थी। वे मांसाहारी थे और स्वादिष्ट भोजन खाने की उन्हें बड़ी इच्छा रहती

ज़री - कहवा - सोने की बनावटी सुनहरी

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

थी । पण्डित इक़बाल नाथ वनपोह के शब्दों में- 'वे अन्तिम समय तक ज़िन्दादिल रहे, हँसमुख और हँसोड़ ------ आम लोग उनसे डरते थे लेकिन उनका बहुत सम्मान करते थे ।'[1]

यह कहा जाता है कि लालि लाखमन पढ़े लिखे नहीं थे, हाँ, बाल्य-काल में गाँव के मकतब में उन्होंने कुछ समय तक मौलवी साहब के पास फ़ारसी भाषा का अध्ययन किया था ।'[2] लेकिन जब हम लालि लाँखमन की भक्ति-परक रचनाओं का अध्ययन करते हैं तो यह बात स्पष्ट होती है कि कवि महोदय को हिन्दू शास्त्रों, पौराणिक कथा तत्त्वों, भक्ति के विभिन्न सोपानों, धार्मिक विश्वासों यहाँ तक कि शास्त्रों से सम्बंधित पारिभाषिक शब्दों की सम्यक् जानकारी थी । ऐसा प्रतीत होता है कि वे किसी पहुँचे हुए पण्डित अथवा शास्त्र-ज्ञाता से कम नहीं थे । सम्भव है कि जीवन के उषाकाल में लालि लाँखमन किसी दिव्य-दृष्टि-सम्पन्न सन्त अथवा भक्त के सम्पर्क में रहे हूँ ।

लालि लाँखमन अपनी रचनाओं को स्वयं नहीं लिखते थे अपितु जान पहचान के लोगों से लिखवाते थे । श्री इक़बाल नाथ वनपोह के सम्मुख स्वयं

1- "शीराज़ा" - नवम्बर 1971 ई० - (जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी की मासिक पत्रिका) - लालि लाँखमन - इक़बाल नाथ वनपोह -पृ०-20.

2- "कुलयाति लालि लाँखमन" - सम्पादक - अर्जुनदेव मजबूर - पृ०- 10.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कवि ने इस तथ्य की पुष्टि की है ।[1] अपनी रचनाओं को सुरक्षित रखने के प्रति वे सचेष्ट नहीं रहे हैं यही कारण है कि आज उनकी रचनाओं में से प्रक्षिप्त अंशों को अलग करना तनिक मुश्किल हो रहा है, इतना ही नहीं रचनाओं का मूल पाठ भी कहीं कहीं खण्डित हो चुका है ।

लालि लांखमन की लगभग समस्त रचनाओं का संकलन जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी की ओर से श्री अर्जुन देव मजबूर के सम्पादकत्व में सन् 1982 ई0 में प्रकाशित हो चुका है । निस्सन्देह श्री अर्जुन देव मजबूर का यह प्रयास प्रशसनीय है और आज अकादमी का यह प्रकाशन ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में एक गुमनाम शाइर के वजूद की गवाही दे रहा है । हम इस तथ्य को नकार नहीं सकते कि लालि लांखमन अपने जीवन काल में पूर्णतः उपेक्षित रहे । उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा की ओर हमारा ध्यान आकर्षित नहीं हुआ फिर भी हमें इस बात पर गर्व है कि हम बड़े अदब नवाज़ हैं । साहित्यकारों का गुणग्राही, साहित्य का क़द्रदान

लालि लांखमन की समस्त रचनाओं को हम मुख्यतः दो भागों में विभक्त कर सकते हैं :-

हास्य-व्यंग्य प्रधान काव्य एवं भक्ति काव्य

आम तौर पर लोग लालि लांखमन को हास्य एवं व्यंग्य का कवि मानते हैं । इसमें कोई सन्देह नहीं कि हास्य एवं व्यंग्य के क्षेत्र

1- "शीराज़ा" - नवम्बर 1971 ई0 - पृ0-19.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

में लालि लांखमन को देन अनुपम है और 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में इस काव्य-प्रवृत्ति को परिपुष्ट करने में अनजाने ही उनका योगदान पर्याप्त महत्त्वपूर्ण रहा है। वस्तुत: संघर्षमय जीवन की तल्ख़ हक़ीक़तों का ज़हर पीते पीते, मात्र जीवित रहने के लिये जो तोड़ परिश्रम करते-करते और झाड़ली राज्य के दाँव पेंच सहते सहते लालि लांखमन व्यवस्था के प्रति क्षुब्ध हो उठे थे। क्रोध का यह उबाल केवल राजनीतिक व्यवस्था के ही विरुद्ध नहीं था अपितु सामाजिक व्यवस्था, ज़मींदारी प्रथा, आर्थिक पराभव, ग़रज़ शोषण के उस सम्पूर्ण निज़ाम (व्यवस्था) के विरुद्ध था जिसने 20वीं शताब्दी के आरम्भिक दशकों में कश्मीर-वासियों के जीवन में विष घोल दिया। अनुभूतिशील कवि अपनी असहायावस्था पर क्षुब्ध होकर व्यंग्य का सहारा लेता है। कहीं हल्का प्रहार करके सांकेतिक रूप में और कहीं हथौड़े की चोट मार कर प्रत्यक्ष रूप में ज़िन्दगी की गुप्त विकृतियों का परदा-फ़ाश करता है। इस व्यंग्य को पढ़ कर अथवा सुन कर ज़ख़्म बह उठते हैं, घाव हरे हो जाते हैं और पाठक मन-मसोस कर अपने भूत और वर्तमान के विषय में सोचने के लिये विवश हो जाता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि इस व्यंग्य से सहृदय पाठक तिलमिला उठता है।

व्यंग्य-काव्य की अपनी निजी विशेषताएँ होती हैं। यह बात सर्व विदित है कि व्यंग्य कभी निरुद्देश्य नहीं होता। निरुद्देश्य

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

व्यंग्यकार और पागलखाने के रोगी में कोई अन्तर नहीं है। कवि एक निश्चित भावानुभूति, विचार अथवा प्रेरणादायक परिस्थिति-विशेष से प्रेरित होकर व्यंग्य को सृष्टि करता है। व्यंग्य कभी मीठी चुभन के साथ मानस को अशान्त कर देता है और कभी खंजर की धार के समान अन्तरात्मा को चीर डालता है। यह सब व्यंग्य लेखक की कुशाग्र बुद्धि एवं सृजन-प्रक्रिया पर निर्भर रहता है। व्यंग्य के प्रमुख तत्त्वों में Irony यानी ताना, कटाक्ष,, Sarcasm यानी उपहास, मज़ाक, आक्षेप,, Invective यानी फटकार, Wit यानी बुद्धि चातुर्य, वचन चातुर्य, हाज़िर-जवाबी तथा Humour यानी हास्य उल्लेखनीय हैं। वस्तुतः इन्हीं तत्त्वों के समुचित संयोग से व्यंग्य की सृष्टि होती है। हास्य, व्यंग्य का पूरक है। यही व्यंग्य को सह्य बना देता है। यही व्यंग्य का सौन्दर्य है। क़हवे में दालचीनी, बादाम और इलायची का जो महत्व है वही व्यंग्य में हास्य का है। ज़ोरदार व्यंग्य रुला देने से पहले अवश्य हंसा देता है। हँसना और रोना यही ज़िन्दगी के दो पहलू हैं और यही व्यंग्य का बाह्य और भीतर है।

लालित्य लक्ष्मण के व्यंग्य काव्य में हमें ये सब तत्त्व देखने को मिलते हैं। उन्होंने भौतिक जीवन की त्रासदी पर व्यंग्य लिखे हैं यहाँ तक कि स्वयं अपने आप को भी नहीं छोड़ा है। उनकी प्रथम व्यंग्य-कविता स्वयं उनकी विवशता, ग़रीबी और असहायता (लाचारी) को मुँह-

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

बोलती तसवीर है ।[1] शखदर [2]की नौकरी के हेतु जब उन्हें अल्पायु में ही घर छोड़ कर कमराज़ जाना पड़ा तो अपनी विवशता का रोना रोते हुए वे लिखते हैं :-

-'भरणी नक्षत्र, द्वादशी, शनिवार के दिन
लालिलांखमन चले शखदारी पर
थाली और बहुगुना लटका के कन्धे पर
लालिलांखमन चले शखदारी पर ।
मेल हुआ ग्रह के संग ग्रह-पीड़ा का
यकफ़र्दी दरी को लहराते चले
मरियल घोड़ी पर सवार हो कर
लालिलांखमन चले शखदारी पर ।'[3]

अपनी बंध्या पत्नी पर व्यंग्य करते हुए उन्होंने लिखा है :-

-'देखिये पाशिकुज[x] को मानो पतझड़ की मूली है ।'[4]

व्यंग्य का एक ज़ोरदार पहलू है उपहास जहाँ व्यंग्य लेखक पात्र-विशेष अथवा स्थिति विशेष की विकृतियों का दिल खोल कर मज़ाक़ उड़ाता है ।

1- इस प्रतिभा सम्पन्न कवि की पहली रचना है - 'शखदारी' ।
"शीराज़ि" (कश्मीरी) - दिसम्बर 1973 ई0 - 'लालिलांखमन' - अर्जुन देव मजबूर - पृ0-89.

2- कश्मीरी मूल शब्द - शखदर
प्राकृत → 'चक धर'
(वह सरकारी कर्मचारी जो किसानों से ज़मीन का जिन्स मालिया इकट्ठा करता था। शखदारी — शखदर का काम
" कांशिर डिक्शनरी" - भाग-4 - पृ0- 275.

3- 'बांश दोह बरनि प्यठ बांयि बटवारे
लालि लांखमन शखदारे द्राव
थाल तय बोहगुन तुलुन अटबारे
लालि लांखमन शखदारे द्राव ।
(शेष अगले पृष्ठ पर)

बहुगुना - (हि0) - खुले मुँह वाला पीतल का बरतन

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

कुलगाम के निकट 'गुदर' गाँव में तोताराम के घर जब डाकिया लालि-लांखमन चिट्ठी लेकर पहुँचा तो किसी ने शिष्टाचार के नाते भी उन्हें चाय पीने के लिए नहीं रोका हालांकि उस समय तोताराम के घर लाल पगड़ी वाले अर्थात् पुलिस के आदमी, जो किसी काम से आये थे, चाय नोश फ़रमा रहे थे। लालि लाखमन से यह अपमान न सहा गया, फलतः 'तोति गुदरिन चाय' शीर्षक से एक प्रसिद्ध व्यंग्य रचना लिखी जिसका मुख्य उद्देश्य था तोताराम के अशिष्ट व्यवहार का मज़ाक़ उड़ाना :-

-' समाचार में बाधा हुई उपस्थित
देखा मैंने कपाट डाल रही है
गत वर्ष की रसहीन पत्तियाँ
मलाई के बदले इसमें है धुआँसा
देख, तोत गुदर की चाय !

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

ग्रिहदिस तं ग्रहद्वारस गयि मिलवन
ततरंजि फरदाह गिलवान द्राव
होछमुच गुरि ग्रांट आसिस तवारे
लालि लांखमन शाखदारे द्राव !'

- "कुल्लियाति लालिलांखमन" - सम्पादक - अर्जुन देव 'मजबूर' जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - सन् 1982 ई० -कविता- 'शाखदारो' - पृ०-17.

× 'पोशिकुज' - §कश्मीरी§ - पोश → पुष्प
कुज → पोधा
कश्मीरी पण्डित स्त्रियों में नामवाचक शब्द के रूप में 'पोशि कुज' शब्द का प्रयोग होता है।

4- 'पुछतोन यि पोशिकुज ज़न छि हरदिय मुज।'
- "सोन अदब" सन् 1965 ई० - जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन सम्पादक - अली मुहम्मद लोन - 'लालिलांखमन' - प्रो० बलजी नाथ पण्डित - पृ०- 43.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

हँड़िया ताव से है तापित
तेल का नाम तक कभी नहीं लिया है इसने
और न देखा रती भर निमक भी
देख, तोत गुदर की चाय !'[1]

इतनी ही नहीं तोताराम की कृपणता का मज़ाक़ उड़ाते हुए और उसके दारिद्रय पर व्यंग्य कसते हुए कवि लिखते हैं :-

-'मात्र एक दरी का टुकड़ा
अठगुणा बिछा है पण्डित के हेतु
और किसी के लिए नहीं है तनिक बिछावन
देख तोत गुदर की चाय !'[2]

कश्मीर के कुछ इलाके अतिथि-अनादर के लिये चर्चित रहे हैं। सम्भव है इस के पीछे आर्थिक विवशताएँ भी रही हूँ। शखदारी की नौकरी करते समय जब रैन बसेरे के लिये एक गृहस्थ घर में पहुँचे तो घर के मालिक ने यह कह कर टालना चाहा कि यहाँ ख़तरनाक चूहे हैं, विशेष कर

1- ' समावारस बिहिथ दोश
तथ वुछ म्य परसुक कोश
मलायि कनि छस हाय
वुछ तोत गुद्रिन चाय।
द्यगलिस छु आमुत ताव
ज़ाँह स्रि्नि तोलुक नाव
नूनिच न अख सर साय
वुछ तोत गुदरिन चाय।'
- "कुलियाति ला्लि लाखमन" - 'तोत गुद्रिन चाय' - पृ0-19.

2-' सतरंजि पहलवाह कुन,
पंडितस छिनिथ आठगोन
वोपरस न अख सिरसाय
वुछ तोत गुद्रिन चाय।'
- वही - - - वही - पृ0-19.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पराये जन के साथ उनका व्यवहार बड़ा ज़ालिमाना रहता है :-

-' एहाते पर अधिकार है उत्पाती चूहों का
कष्टप्रद बना देते हैं सारी रात को
पराये जन को देख और भी उग्र हो उठते हैं
तार तार कर देते हैं उनके कपड़ों को । '[1]

आश्चर्य इस बात का है कि उस विशेष गृहस्थ-घर में उसी दिन महकदार चावल और मछलियाँ पकाई गई थी लेकिन अतिथि को खिलाने की उन्हें हरगिज़ इच्छा न थी और जब रात के अन्धेरे में अतिथि पके हुए चावल और मछलियाँ लेकर नौ दो ग्यारह हो गये तो गृह-स्वामी का विलाप देखिये :-

-' चीख उठा वह - राहज़न ! तुम बेपरवाह हो
धर्म रखा/जो रात के लिये शरण दे दी अतिथि को
देख तो लो भाई इन्हें कहाँ कब होगी पूर्ति ?
हे भगवान ! मछलियों की देग चुरा के ले गये । '[2]

'सर्वमज़कूरि'[3] शीर्षक से लालि लाखमन ने एक प्रसिद्ध हास्य व्यंग्य

1- ' गगर ज़ाथाह नवेमिच यथ एहातस
स्यठाह सख़्ती अनन तिम रात रातस
वोपर डीशिथ गछ़न गगरन सो तीज़ी
वोपर पलवस करन तिम रेज़ि रेज़ै । '
- "कुलियाति लालि लाखमन" 'गाडि द्यगुल' - पृ0-23.

2- ' दिच़िन क्रख राह ज़नो तोहि छिव बेपरवाह
धर्म ज़्यूनम पछ़्यन रातस दिच़िम जाय
वुछिव बा हे यिमन कर ज़ाँह ति पूरे
खोदाया गाडि द्यगुलई न्यूख चूरे । '
- "कुलियाति लालि लाखमन" - 'गाडि द्यगुल' - पृ0-27.

राहते में लूटने वाला बदमाश

3- 'मज़कूरी' - (अरबी) - चपरासी - सम्मन आदि का तामील कराने वाले चपरासी ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

प्रधान रचना लिखी है जिस में कश्मीरी पण्डितों के वैवाहिक रस्मो-रिवाजों पर व्यंग्य करते हुए लड़के वालों की ख़बर ली है । सर्वानन्द नाम के इक पण्डित महाशय का विवाह निश्चित हुआ । सर्वानन्द कुलगाम तहसील के दफ़्तर में चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी थे । बरात के साथ काफ़ी लोग (बाराती) ले कर वे ससुराल पहुँचे । लड़के वाले इतनी बड़ी संख्या में बाराती देख कर घबरा गए क्योंकि इतने अधिक बारातियों का यथोचित आदर सत्कार करना शायद उनकी पहुँच के बाहर था । किसी कारण-वश रात को लड़की वालों और बारातियों में तू-तू मैं-मैं हुई और देखते ही देखते आपस में हाथापाई होने लगी । लड़की वालों की ओर से सारे गाँव वाले इकट्ठे हुए और बारातियों का ख़ूब आदर सत्कार किया । सत्कार-सम्बन्धी दो उदाहरण द्रष्टव्य हैं :-

- ' तब तक तो रहे क़रार से
जब खाया गाँठ गोभी
एक टुकड़े पर तीन प्रहार
और फिर लात मार सखी !
जाने किस ने पहचाना दोना[1] को
एक प्रहार किया उस पर
कल के दूल्हा लुढ़के भूमि पर
और खिलायी दावत उस को, सखी !
शम्भु[2] को पगड़ी उतारी

1- दोनानाथ शब्द का संक्षिप्त कश्मीरी रूप
2- [सं०→शम्भु - शिव - कश्मीरी पण्डितों में नामवाचक शब्द ।
कश्म०- शोम्ब

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नीचे गिरा कर किया क़ाबू में
घसीट के लाया निचली मंज़िल के गलियारे में
और कर रहे थे पिटाई बराबर, सखी ।'[1]

दूसरा – 'गना[x] को नाभि को किया क्षतिग्रस्त
मानो सूखी चटाई-फूर्द को फाड़ डाला
याद आया उसे बटरा गूँदा[xx]
और लगा पुकारने उसे, सखी ।'[2]

यह वह ज़माना था जब कश्मीरी पण्डित स्त्रियों में धोती बाँधने/धारण करने का रिवाज बिल्कुल नया-नया था । गाँव में एक आध स्त्री ही धोती पहने दिखाई देती थी । एक मास्टर साहब की पत्नी ने गाँव में धोती पहन ली और सवनिन्द के विवाह उत्सव में सम्मिलित हुई । लालि – लाखमन ने उसकी हसीन अदाओं को भी कविता को पोशाक पहना दी :-

– 'ज़रीदार वस्त्रों को लहराती
सर पर ढाई पल[xxx] की धोती
यही है अध्यापिका जी

1– 'तोतामथ आंस डंजे
खेयख थलि हाकि मोंजे
अकिस खंजे त्रे ग़ुंजे
प्यठय पांज़ार लतिये
खबर कांम दोनि होवुख
तमिस अख टास त्रोवुख
यवुक महराज़ि पोवुख
सुखयोवुख साल लतिये ।
शोम्बस दस्तार वोलुख
पत्थर पांवित सम्बोलुख
वुज़स मंज़ खबरि वोलुख
दिवान प्यठि मार लतिये ।'

–'कलियाति लालि लाखमन' – सर्वानन्द कौरि' – पृ०– 49.

{शेष सदर्भ अगले पृष्ठ पर }

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

परी रूख़सार ×̿, सखी ![1]

अनमेल विवाह, वृद्ध विवाह एवं पैसे देकर लड़की को खरीदने का बुरा रिवाज भी उस समय घाटी में व्याप्त था। आर्थिक पराभव और लाचारी के उस दौर में मानवता पग-पग पर अपमानित हो रही थी। पराधीनता के उस युग में हमारी मातृ-शक्ति का पर्याप्त तिरस्कार हो चुका था। बेटियाँ बेची जाती थीं और अनमेल विवाह के परिणाम-स्वरूप नारी जीवन ज़हर आलूदा हो चुका था। इससे बड़ कर अब हमारा

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

× §संस्कृत - गणेश
§कश्मीरी- गनॅ §कश्मीरी पण्डितों में नामवाचक शब्द §

×× §संस्कृत - गोविन्द
§कश्मीरी- गूँदॅ § कश्मीरी पण्डितों में नामवाचक शब्द §

2- ' गनस तूनिस हेच़िख लाद
चो़टुख ज़न होख वगिवराद
तमिस प्यव गून्दि ज़ोर याद
दिवन छुस नाद लतिये।'
-"कुलियाति लाल्लि लॉखमन" -'सर्वमज़कूरि' - पृ0- 50

××× पल - चार तोले का एक प्राचीन तौल

×̿ §रूख़सार - §फ़ारसी§ - कपोल, गाल
§परी - §फ़ारसी§ - अप्सरा

1-' ज़री जामन दिवन ग्राय
कलस प्यठ दोति पल डाय
यहे गयि माशटर बाय
परी रोख़सार लतिये।'
-"कुलियाति लाल्लि लॉखमन" -'सर्वमज़कूरि' -पृ0- 48.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

पतन और क्या हो सकता है कि :-

-' लड़को वाला माँग रहा है पैसे
बारह सौ पर मैं ने किया इकरार
तो भी, इंकार किया लगन धरने से
यह तो है अन्धेरे, तनिक सुन लेते ।'[1]

लगन धरना (पु०) विवाह का मुहूर्त ठहराना

लगन-मण्डप ने लेन-देन की बैठक का रूप धारण किया । मोल-भाव होने लगा और धार्मिक अनुष्ठान व्यापारिक कलह में बदल गया, फलत: :-

-' दिख रहे हैं पगड़ियों के अम्बार
बिना दस्तार के सर
भाग बड़े हुए पाँव, शेष रह गये जूते
इन आर्त-नादों को, तनिक सुन लेते ।
पलड़ा भारी रहा, लड़को वालों का
लड़की के बदले दिये धूँसे
लड़के वाले खाली निकले
इस टंटेबाज़ी को, तनिक सुन लेते ।'[2]

टंटा - झगड़ा, कलह
टंटेबाज़ी - झगड़ालू, Altercation

1- ' कोरिवोल छांडन द्यार
बाहरात न्य छुम यकरार
लगनस कोरून इंकार
गट्टिकार बोज़ख ना ।'
-"कुलियाति लाल्लि लांखमन' - 'अफ़साने बोज़खना' - पृ०-64.

2- ' साफ़्न खेति अम्बार
कलि रोस्तुई छि दस्तार
खोर ज़ांलि तं रूदि पांज़ार
यिमदाद बोज़ख ना
कोरि वांल ज़ोरि वांल
कोरि कनि द्यथ मुखोल
गोबर वांल दराय खांल
टंटुवांल बोज़ख ना ।'
-"कुलियाति लाल्लि लांखमन"- 'अफ़साने बोज़खना' पृ०-70.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

जुकाम ज़ोरों पर नाक हिमलंब बनी है icicle
कफ़ (बलग़म) और बहती नाक की अविरल धारा
वही खटास है खमीर में
जाना मत, टिक्कि नानबाई की दुकान पर ।
रोटियों पर कितनी मैल जमी है
ढक लेता उन्हें पुराने चिथड़ों से
जिन पर जुँए (ढोलें) मचा रही तूफ़ान
जाना मत, टिक्कि नानबाई की दुकान पर ।'[1]

लालि लांखमन के व्यंग्य-काव्य में व्यंग्य के समस्त तत्त्वों अथवा अंगों का सम्यक् निर्वाह हुआ है । कहीं-कहीं कवि शालीनता की सीमाएँ तोड़ता हुआ अथवा शिष्टाचार के बन्धन लाँघता हुआ भी दिखाई देता है । यद्यपि गाली भी व्यंग्य का शस्त्र हो सकती है तथापि यदि गाली फटकार तक ही सीमित रहे तो सामाजिक स्वास्थ्य की दृष्टि से श्रेयस्कर माना जाता है । लेकिन लालि लांखमन हर समय शालीनता के बन्धन में नहीं रह सका है । इसे कवि के रचनात्मक कौशल की एक कमज़ोरी ही माना जायेगा ।

1- 'होंगन्य खांज चोंट छुस होल
बराबर शूप वातुल
व्यखित अंग तथ व्यखित तान
मं गछ़ टिक कान्दुरयुन वान ।
दयमागस छस शिशार गांठ
कफ़स पोंछिस कुनी टांठ
खमीरस सुई ग्योक्यर ज़ान
मं गछ़ टिक कान्दुरयुन वान ।
बिहित कोताह ग्योचन मल
थवन प्रान्यन जन्दन तल
ग्योचन हुन्द तथ छ तूफ़ान,

(शेष अगले पृष्ठ पर)

CC-0. Kashmir Treasures Digital Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

लाॅलि लॉखमन के व्यंग्य-काव्य में कश्मीरी भाषा के मुहावरों का अत्यन्त सुन्दर प्रयोग हुआ है। कई ऐसे मुहावरे भी प्रयोग में लाये गये हैं जिन्हें प्रयोग में लाने की क्षमता आज हम खो चुके हैं। इतना ही नहीं, लाॅलि लॉखमन ने ग़ज़ब की उपमाओं/उत्प्रेक्षाओं का प्रयोग किया है। पढ़ने वाला ऐसी काव्य पंक्तियों को पढ़ कर दंग रह जाता है। अभिव्यक्ति की दृष्टि से लाॅलि लॉखमन की रचनात्मक प्रतिभा निःसन्देह महान थी। यह उन में एक दैवी गुण था, ईश्वरीय देन। सम्भव है निरन्तर अभ्यास से यह प्रतिभा निखर उठी हो। भाषा-सौन्दर्य के चन्द उदाहरण देखने योग्य हैं जिनमें मुहावरों, अलंकारों एवं विशिष्ट शब्द प्रयोगों की छटा अनुपम है :-

(l) -' बुड़ाह अख आॅस आमिच तॅ गॉमिच़
मरॅनि दादि आॅसुई दोदरेमिच़
क्रोछ़ ह्यथ आयम चोकि मंज़ि लारे
लाॅलि लॉखमन शखदारे द्राव।'[1]

§ इक प्राणहीन बुढ़िया आवा-जाही में
सड़ रही थी मृत्यु की चिर प्रतीक्षा में
चौके से दौड़ के आई लौह कलछा लेकर
चले लाॅलि लॉखमन शखदारी पर।' §

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

मॅगछ़ टिक कान्दर्युन वान।'

- "कुलियाति लाॅलि लॉखमन" - 'काॅन्दिरवान' - पृ०-95, 96, 97.

1- "कुलियाति लाॅलि लॉखमन" - 'शखदॉरी' - पृ०- 18.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(II) –' यहै कथ पास गई म्यंगन दितुन चार
हेचि़न लेफा वुरूनि तमि लोग बेमार ।'1

§यही हुआ तय, यही कस के बान्धी माथे पर
लिहाफ़ ओड़ के होला किया बीमारी का ।§

(III) –' वन ओबजि आमूत बोश्र
गुरि सोच़लि× रोगन जोश्र ।'2

§ जंगली खट्टे साग का बोल बोला
वन्य सोच़ल× साग का रोग़न-जोश्र ।§

(IV) –' ग़ुर्ख़ई आंगन अन्दर ग़ाव
प्यठै कावन कोस्स टाव ।'3

§ ज्यों ही प्रवेश किया आँगन में
टाव टाव किया कौए ने । §

(V) –' गण्स तनिस हेचि़क लाद
च़ोटुस ज़न होख वारिव राद ।'4

§ गना को नाभि को किया क्षति ग्रस्त
मानो सूखी घटाई – फ़र्द को फाड़ डाला ।§

1– "कुलियाति लारि लांखमन" – 'गाडिद्यगुल' – पृ0– 22.
× 'सोच़ल' – एक विशेष प्रकार का साग जिस को तरकारी मिर्च मसाला डाल कर बनाई जाती है ।
2– "कुलियाति लारि लांखमन " –' तोत गुदरिन वाय' – पृ0– 20
3– – वही – – 'सर्वमज़कूरि' – पृ – 42.
4– – वही – वही – पृ0–50.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(VI) –' वुछिव तांजिब कथा अ्लि आंल छि खति मुति
पखर पोरिक[x] हखर ज़न नेरि वथिमा्ति ।'[1]

§ बात है आश्चर्य की, देख, कितने हट्टे कट्टे हैं
मानो पखरपोरा[x] के बछवे लौट आए हैं मर्ग़ज़ार से ।§

(VII) –' लचन चोरूख कुनुई वाठ
ग़लन ज़न किस्[x] बतख राठ ।'[2]

§ परस्पर मिल कर एक हुए, सवेग भाग उठे
मानो 'किस्[x] पंछी बतख़ को चाल ।§

(VIII) –' क्रोव् ह्यथ आयि चोकि मंज़ि लारे
लाल लांखमन शाखदारे द्राव ।'[3]

§ दौड़ कर आई चौके से हाथ में लोटा लिये
लाल लांखमन चले शाखदारो पर । §

(IX) –' तुजिन मलराह तें पांनिस द्रायि लारान
वनस मंज़ रूसि कंट ज़न छ्रालि मारान ।'[4]

§ मटका लेकर वेग से दौड़ी पानी भरने
जंगल में मानो हरिणी भरती चौकड़ियां ।§

1– "कुलियाति लाल्लिलांखमन' – 'गाड्डि द्यगुल' – पृ०– 23.
x 'पखरपोरा – कश्मीर में एक गाँव ।
2– "कुलियाति लाल्लिलांखमन" – 'सर्वमज़ कूरि' – पृ०–42.
x 'किस्' –§कश्म०§ एक उड़ने वाला जल पक्षी जो सर्दियों में झीलों के आस–पास रहने आते हैं और जिन का शिकार किया जाता है ।
3– "कुलियाति लाल्लिलांखमन " – 'शाखदारो' – पृ०– 18.
'गाड्डि द्यगुल' –पृ०–25.
4– –वही –

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(x) –' सोन्दराह सूराह मांलिथ
जन्दपलवाह अख वलिथ
ज़न छु वोटमुत पतजिनाल
अज़ वने मिरहांम साल ।'[1]

§ सुन्दरी भस्म स्नात
एक चिथड़ा लपेटे
मानो घास की चटाई को चीर कर बनाया हो–
गरीबन
आज मिरहामा[x] दावत की कथा कहूँगा । §

अपने व्यंग्य काव्य में लालि लांखमन ने शुद्ध कश्मीरी भाषा को अपनाया है जो संस्कृत और फ़ारसी को क़ैद से पूर्णतः मुक्त है । यह वस्तुतः कश्मीरी भाषा का बोलीगत रूप है जो कुलगाम इलाक़े में आज भी प्रचलित है और विशेष लहजे के साथ वे इस बोली का व्यवहार अपने दैनिक जीवन में करते हैं । तद्भव एवं देशज शब्द बहुल भाषा–प्रयोग के दो उदाहरण देखने योग्य हैं :–

(i) –' बीठ गोरस ज़ोरि चंड,
आयि नीरिथ तारि खांण्ड
बन्द निशा डंज दुन्दिमाल
अज़ वनय मिरहांम साल ।'[2]

§ कस कर हुआ प्रहार पुरोहित पर

1– 'कुलियाति लालि लांखमन' –'मिरहांम साल' – पृ०– 30.

x 'मिरहामा' – कश्मीर में स्थित एक गाँव का नाम ।

2– 'कुलियाति लालि लांखमन' –'' मिरहांम साल' – पृ०–32.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

क्षत-विक्षत हुआ चेहरा उस का
बन्धन से जुदा हुई दन्तमाल
आज मिरहामा दावत की कथा कहूँगा । ॥

(11) – ' सोनिस पानस गॉमिच़ दूनि
सोन्यन द्रायस शिहिज बूनि
च़लन ज़न कारतिक हूनि
'कहाँ दिलदार' लतिये । '[1]

॥ समधी बिखर गये
समधिन जो बनी शीतल चिनार
मानो कार्तिक में कुत्ते सरपट भाग रहे हैं
कहाँ दिलदार ? सखी । ॥

कहीं-कहीं उन्होंने उर्दू-पंजाबी मिश्रित खिचड़ी भाषा का भी प्रयोग किया है । ऐसा या तो हास्य-व्यंग्य के प्रभाव को गहराने के हेतु अथवा सम-सामयिक सन्दर्भों से प्रेरित होकर एक नई पहचान का एहसास दिलाने हेतु किया गया है । दुर्भाग्यवश एक समय पराधीन देश में ऐसा भी रहा जब कश्मीरी भाषा-भाषी इतर भाषाओं का क्रीत दास बनकर गर्व का अनुभव कर रहे थे । खिचड़ी भाषा-प्रयोग

1- "कुलियाति लालि लॉखमन" - 'सर्वमज़कूरि' - पृ0-50.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सम्बन्धी दो उदाहरण देखने योग्य हैं :-

(I) -' जान बच के तुम चले जाओ
मार खा के मंडल बनाओ
केड़ो माई कौन है फादर
आव जोशास कोलगाम बाज़र । '1

{ जान बचा कर तुम चले जाओ
मार खा कर मंडल {व्यापार मंडल} बनाओ
कौन माई और कौन है पापा
जोशा में है बाज़ार कुलगाम का । }

(II) -' बेशरमस छा गछ़न गाल
शरम 'तेरे लिये' काल
'दफ़ा जाओ मत रलो नाल'
'चलो चंडाल' लतिये । '2

{ निर्लज्ज के लिये नहीं है कुछ अपमान जनक
लज्जा तो काल है 'तेरे वास्ते'
दफ़ा हो जाओ, मत मिलो साथ
'चले जाओ चांडाल' - सखो । }

हास्य और व्यंग्य रचनाओं के साथ-साथ लालि लखिमन ने भगवद्भक्ति पर आधारित भक्ति-काव्य का सृजन भी किया है और यही उनके समस्त रचना संसार का ज़ोरदार पहलू है जो दुर्भाग्यवश पर्याप्त

1- "कुलियाति लालि लखिमन" -'बापार मंडल' - पृ0- 91.
2- - वही - 'सर्व मज़कूरि' - पृ0- 54.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

समय तक उपेक्षित रहा । हास्य-व्यंग्य का निस्सन्देह अपना महत्व है लेकिन केवल हास्य-व्यंग्य ही जीवन नहीं । मनुष्य जन्म के सही अर्थ और कारण को समझने के हेतु उन्होंने शास्त्रों को शरण ली और बड़ी गहराई के साथ स्रष्टा के इस रहस्यमय जगत को परत-दर-परत समझने का प्रयास किया । लालि लांखमन एक आस्तिक पण्डित थे । ब्रह्म के इस लीलामय जगत को उन्होंने सृजनहार की महानतम विभूति के रूप में स्वीकारा है । उन्होंने निर्गुण और सगुण को इष्ट के अव्यक्त और व्यक्त रूप में ग्रहण किया । वे महागणेश के परमभक्त थे और शिव-पार्वती के इच्छा पुत्र के रूप में उन्होंने गणेश की वन्दना निरन्तर की । वे स्वयं अपने आपको इष्ट-चरणों में निरन्तर समर्पित भक्त के रूप में देखने के अभिलाषी थे । भक्ति के क्षेत्र में उन्होंने दास्य भाव को भक्ति को प्रमुख रूप से ग्रहण किया और नित अत्यन्त दीन भाव से इष्ट के प्रति श्रद्धा के सुमन अर्पित किये । उनके समस्त भक्ति-काव्य को प्रमुखत: दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है - लीला काव्य तथा मस्नवी शैली में लिखित कथा प्रधान वर्णनात्मक काव्य । लीला काव्य के क्षेत्र में वे परमानन्द एवं कृष्ण जू राज़दान की परम्परा में आते हैं । उन्होंने अपने इष्ट की वन्दना करते हुए बहुत ही सुन्दर और कलात्मक लीलाएँ लिखी हैं जिन्हें पढ़ कर हमें यह अनुभव होने लगता है कि जिस कवि ने हास्य

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

एवं व्यंग्य लिख कर जन-मानस को मोह लिया उस कवि के निजी मानस में भक्ति की अमृत धारा कितने वेग के साथ निरन्तर प्रवाहित थी। सगुण और निर्गुण का भेद भुला कर उन्होंने शिव, पार्वती, गणेश, राम और बाल कृष्ण के प्रति अत्यन्ताकर्षक लीलाएँ लिखी हैं।

कथा प्रधान वर्णनात्मक रचनाओं में इन लीलाओं का अपना विशेष महत्व रहा है। यहाँ इष्ट के प्रति दृढ़-विश्वास और अनन्य प्रेम है, मनसा वाचा और कर्मणा समर्पण का भाव है, दिव्य-ज्योति को पाने और पहचानने की उत्कण्ठ इच्छा है, दुई के भेद को मिटाने का संकल्प है, दास्य भाव से प्रेरित भक्त-हृदय के निश्छल उद्गार हैं और भगवत् कृपा और अनुग्रह को पाने की उत्कट लालसा है। बालकृष्ण के प्रति कही गई लीलाओं में माधुर्य रस की प्रधानता है। शैव और वैष्णव का समन्वय इन लीलाओं का प्रधान आकर्षण रहा है। यह समन्वय की भावना हमें समान रूप से परमानन्द, कृष्ण जू राज़दान और अन्य लीला कवियों में देखने को मिलती हैं और यही लालि लाखमन की लीलाओं का भी मुख्याकर्षण रहा है। यहाँ काव्य के साथ लोक-संगीत का स्वाभाविक मिश्रण हुआ है और वचन-शैली[1] (वाक्-शैली) में कवि ने इन लीलाओं का प्रणयन किया है।

1- 'वचन शैली' - कश्मीरी काव्य की एक शैली जिस में कविता का प्रत्येक चरण चार पंक्तियों का होता है और प्रत्येक चतुष्पदी की अन्तिम पंक्ति दोहराई जाती है।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

बालकृष्ण के प्रति लिखी गई लोलाओं में से चन्द उदाहरण ध्यान देने योग्य हैं :-

(I) –' बालचन्द्र[x]! बालावस्था से ही तेरी कृपा है मुझ पर
निछावर प्राण तव चरणों पर
मन उदास है आर्तनाद पर धर ले ध्यान
निछावर प्राण तव चरणों पर ।
तुझ बिन किस के सम्मुख मन की रंजिश करूँ अभिव्यक्त
दिल खोल के व्यथा-कथा सुनाऊँ
विघ्न निवारक ! हर ले संकट कर ले पोड़ा मुक्त
निछावर प्राण तव चरणों पर ।'[1]

(II) –' समय की सख़्ती से पीड़ित हैं ढूँढ रहे हैं मुक्ति
भक्ति के झरोखे खोलने आये भुला नहीं सकते तव प्रीत
मृत्यु भय से मुक्ति देंगे कृष्ण, लाखमन ! क्यों बोल नहीं पाते
जन्म के झंझट से मुक्ति देंगे कृष्ण भुला नहीं सकते तव प्रीत ।'[2]

1– ' बालिचन्दरो बाल पान छम चान्य लादन
पादन वन्दयो ज़ू तय जान
मन छुम वदांसि कन थाव नादन
पादन वन्दयो ज़ू तय जान
ग़ैयि रोस वोन्दुको ग़ोसि कस बावय
सोनि मुग़रांविथ हा वय पान
व्यगनि राज़ि कास्तम व्यगनन तं व्यादन
पादने वन्दयो ज़ू तय जान ।'
– "कुल्लियाति लालि लांखमन" – ' लोला' – पृ०–111

x 'बालचन्द्र' – बालकृष्ण के सन्दर्भ में ।

2– ' सख़्तो आयि समयिच हाय
मुक्ति आंस छि झारांनो
भक्ति दारि मुग़रनि आय

§ शेष अगले पृष्ठ पर §

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

-' धीरे धीरे इकट्ठी हो जाओ, सखियो
भाव - पुष्प करेंगे अर्पित उन पर
नाम पड़ा है नन्द लाल जिनका
प्रिय स्मृति में 'रोव'× करेंगे ।
प्रेम-पुष्प उन के शीश चढ़ायें गे
प्रिय-स्मृति में 'रोव' करें गे ।'[1]

दशरथ सुत राम के प्रति अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए कवि उनकी वन्दना इस प्रकार करते हैं :-

-' दशरथ राजा के श्री रामचन्द्र
सौन्दर्य मूर्ति ! मन मन्दिर में वास तेरा
भक्त जनों के हृदयस्थल में निवास तेरा
आप स्वयं हैं गृहस्वामी, यह जान लिया है ।'[2]

कवि ने शिव और महागणेश के माहात्म्य से प्रेरित होकर भी अनेक

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

छख नो माय मशांनी
कृष्णुई कासी कालिन छ़ाय
लांखमनि छुई न फोरांनी
कृष्णुई कासी ज़न्मिक न्याय
छख नो माय मशांनी ।'
- "कुलयाति लालिलांखमन" -' लीला' - पृ0-143.

×- 'रोव' - कश्मीरी नृत्य प्रधान लोकगीत जो प्रायः स्त्रियाँ आमने-सामने पंक्ति बद्ध होकर एक विशिष्ट लय पर गाती हैं ।

1- ' समिवी सखियो अस्ति अस्तय
तस हाय लागो भाव पोश
यस हाय नन्द लाल नाव प्यवुये
वेरि करवय रोवुये
प्रेम पोश लाग शेरे तेहुंज़े
वेरि करवय रोवुये ।'
- "कुलयाति लालिलांखमन" -'शिवाय अवतार' - पृ0-201.

§ शेष अगले पृष्ठ पर §

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

लोलाएँ लिखी हैं जिन में एक भक्त-हृदय दृढ़ निष्ठा के साथ दैव्य भाव से इष्ट के प्रति समर्पित दिखाई देता है। उन्हें पूर्ण विश्वास है कि इस भवसागर से तब तक पार उतरना मुश्किल है जब तक इष्टदेव की कृपा और अनुग्रह का पुनीत वरदान प्राप्त न हो। यही कारण है कि वे अपने लोला काव्य में उपास्य देव के प्रति नानाविध रूप से दृढ़ विश्वास व्यक्त करते हुए साधनारत दिखाई देते हैं। इस प्रकार की लोलाओं में से चन्द उदाहरण विशिष्ट उप-शीर्षकों के अन्तर्गत यहाँ प्रस्तुत किये जाते हैं :-

§1§ सद्गुरु की वन्दना

-' तन, मन, ध्यान-प्राण से पढ़ ले लोला
सद्गुरु के चरणों पर शीश झुका ले।
किस आशा से प्रेरित हो कर जाऊँ किस घर में
मन्द बुद्धि थी कुछ देख न पाया
ध्यानावस्था में दर्शन करा दे ज्ञान भास्कर के
सद्गुरु के चरणों पर शीश झुका ले।

ज्योतिहीन हूँ तेरे आश्रय का आकांक्षी
हुआ संकट ग्रस्त, घटा छाई सुखद जीवन पर

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष §

2- 'दशरथ राज़ ने श्री रामचन्दरो
सोन्दरो छुख थि मन मन्दरस मंज़
हृदयस सॉनिस मंज़ छु चोन थाने
पाने म्य ज़ीनमख खानयदार।'
- "कुलयाति लालिलांखमन" - 'शिवायावतार' - पृ०- 187.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

भक्ति-वत्सल ! वर-प्राप्ति हेतु प्रतीक्षा रत हूँ
सद्गुरु के चरणों पर शीश झुका ले ।'[1]

§2§ भक्ति के प्रति दृढ़ आस्था और सत्संग की महिमा

-'क्षण-क्षण भक्ति में लय होता
ईश्वर ! तेरी पूजा करता
कर्ण बालियाँ गढ़ता भाव स्वर्ण की
प्रेम नगरी में मोल तेरा
भक्ति-भाव के मोती जड़ता
ईश्वर ! तेरी पूजा करता
हृदय कक्ष को रंग लेता
प्रेमान्मत्त दुलार भरता
सत्संग का तख़्त सजाता
ईश्वर ! तेरी पूजा करता ।'[2]

1- ' तनि मनि ध्यानि प्राणि लीला परसुई
कर सतगोरसुई पादि परणाम ।
नेरि कथ आशाथि फेरि कथ गरसुई
फाँठि बोद आंसिम द्रींठि कर आम
ध्यान मंज़ हावतम ग्यान भास्कर सुई
कर सतगोरसुई पादि परणाम।।
ओन छुस लारि चांनिस आसरसुई
अन्धकार प्योम गोम मन्दन्यन शाम
भक्ति-वत्सल प्रारि चांनिस वरसुई
कर सतगोरसुई पादि परणाम ।'
- "कुलयाति लालि लांखमन" -'लीला' - पृ0-130.

2- ' खयनि-खयनि भक्ति भाव बरिहय
पूज़ करिहय ईशारो
भवि सोनि कनि दूर गरहय
लोनि शहरत भाव पुई

§ शेष अगले पृष्ठ पर §

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

§3§ महागणेश की स्तुति

-' मूषक वाहन ! समर्पित है मेरा प्रेम और विश्वास
मन के हिंडोले में सजा लूँ तेरा निवास
सुबह शाम बस तेरी चाह है
दामन थाम लूँ मैं अनुरागी तेरा ।'[1]

§4§ भक्त का अपने इष्ट के प्रति अनन्य विश्वास

-' बाल चन्द्र ! मुझे चाह है तेरी
नेत्र-कक्ष में वास सजा लूँ
तेरी मुख छवि से पीड़ा का हो जाता अन्त
और पुष्पित हो उठता मन ताल सदृश
जन्म का झंझट मिट जाता
नेत्र-कक्ष में वास सजा लूँ ।
हे गणेश ! नैया पार लगा दे
बुलर झील में आया तूफ़ान
कहीं डूबने की स्थिति न आ जाये
नेत्र-कक्ष में वास सजा लूँ ।'[2]

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

भक्ति भावुक मोक्ति जरहय
पूज़ करिहय ईशारो
मनि कुठसुई रंग करहय
लोलि खोनि लालिनावहथ
सत्संग कुई प्रंग जरहय - पूज़ करिहय ईशारो ।'
- "कुलयाति लालि लाखमन" -' लोला' - पृ0- 124-125.

1-' मूषक वाहन यछ त लोल बरयो
मन मंज़िलिस मंज़ करयो जाय
कामना चान्य छम सुबहन त शामन
रटयो दामन त छम चान्य माय ।'
- "कुलयाति लालि लाखमन" - ' लोला' - पृ0- 164.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

§ उपरोक्त '2' को पाद टिप्पणि अगले पृष्ठ पर §

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

§5§ इष्ट का महिमा गान और नम्र निवेदन

–' एकदन्त वक्र तुण्ड त्रिजगत् पालक
कमल-पुष्प की मालाएँ जँचे गी तुझ पर
देवी देवता एकत्र हुए हैं
नत-मस्तक हैं तव- चरणों पर
सन्तुष्ट हो, मुक्त कर मोह बन्धन से
कमल-पुष्प की मालाएँ जँचे गी तुझ पर ।'[1]

§6§ भवसागर के पार उतारने के हेतु नम्र निवेदन

–' आदि देव और श्याम सुन्दर के हेतु
गणेशबल[x] के द्वार पर रहूँ प्रतीक्षारत
राजरानी के साहिबज़ादे
विनायक बल पर तुझे पुकारूँ
भवसागर के पार उतार दे
गणेश बल के द्वार पर रहूँ प्रतीक्षारत ।'[2]

---

§ पूर्व पृष्ठ की '2' की पाद टिप्पणी §

2– ' बाल च़न्दरो छुम चांन्य माय
नेत्रन मंज़ करै जाय
चानि मोखं दोख बलिहम
सरि ज़न मन फोलिह्यम
च़लिह्यम जन्मुक न्याय
नेत्रन मंज़ करै जाय ।
हो गणेश बोठ खार नाव वोलरस मंज़ कोरून वाव
युथ न आसि डूबनिच त्राय नेत्रन मंज़ करै जाय ।'
– "कुलयाति लालिलाखमन" – 'लीला' – पृ0– 183.

1– ' ईक दन्त वक्र टुण्ड त्रि ज़गत पालै
शूभनय च़े पम्पोश मालै नांल
दीवो तं दिवता आमित सांमथुई शामिथुई छि चान्यन पादन तल

§ शेष अगले पृष्ठ पर §

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

§7§ भक्ति में लोक रंग

– ' बने वैकुंठ हमारा घर
लम्बोदर को है 'द्वार पूजा' ××
वन्य मैना आई भीतर पिछवाड़े को झरोखे से
तोता गया सारिका संग
जब यही इच्छा थी जगद्-ईश्वर की
लम्बोदर की है ' द्वार पूजा' ।'

---

§ पूर्व पृष्ठ का शेष भाग §

सन्तोष्ट आस कास मुहनिई मालय शूभनय ये पम्पोश माले नाल ।'
– "कुलयाति लालिलांखमन" – ' लोला' – पृ0– 172.

× 'गणेश बल'– 'बल' कश्मीरी भाषा में एक स्थान-वाचक प्रत्यय है जिसके योग से स्थान/जगह का बोध होता है ।

2– ' आदि दीवस तं बेयि श्यामि सोन्दरि तुई
प्रारस गणाशिबल बरसुई तल
राज़ियनि माजि हुन्द साहब ज़ादे
व्यनायक बलि लायम नाद
खारतम बोठ तय तारतम भव सरसुई
प्रारस गणाशिबल बरसुई तल ।'
– "कुलयाति लालिलांखमन " – ' लोला' – पृ0– 156.

×× 'द्वार पूजा' – कश्मीरी पण्डितों में विवाह की एक रस्म ।

1– ' वैकुंठ सांपिन सानिस गरसुई
लम्बूदर सुई छं दारय पूज़
वन हांरि यायि पतिमे दारे तोति गव तस वनहारे सूत्यि
यलि यो खोश गव ज़गत ईशारसुई लम्बूदरसुई छं दारय पूज़ ।'
– "कुलयाति लालि लांखमन " – ' गणेश अवतार' – पृ0–176

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

नवधा-भक्ति के अन्तर्गत लालि लांखमन ने स्मरण, अर्चन, वन्दन, दास्य, सखि एवं आत्म-निवेदन को भक्ति को प्रमुख रूप से अपनाया और तत्-सम्बन्धी पर्याप्त उदाहरण हमें उनके भक्ति काव्य में देखने को मिलते हैं ।

'लालि लांखमन' ने फ़ारसी की मस्नवी-शैली में लम्बी वर्णनात्मक कथा-प्रधान रचनाओं का प्रणयन भी किया है । इनमें 'गणेश अवतार' 'शिवाय अवतार' तथा 'तांमोर' उल्लेखनीय हैं । 'तांमोर' का सम्बन्ध गाँव के मन्दिर निर्माण से हैं और 'गणेश अवतार' तथा 'शिवाय अवतार' कश्मीरी पण्डितों के लोक-विश्वास पर आधारित वर्णनात्मक कथा-प्रधान रचनाएँ हैं । इन रचनाओं में भी पर्याप्त लोलाएँ जोड़ दी गई हैं जो भक्त जनों को अलौकिक आनन्दानुभूति प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुई हैं और साथ ही कथा की निरंतरता में बिना विघ्न डाले कथा-श्रवण के औत्सुक्य में वृद्धि कर देती है । गणेश अवतार की कथा और विशेष कर विश्वकर्मा की पुत्री के साथ उनके विवाह का वर्णन विस्तार के साथ पहली बार लालिलांखमन ने कश्मीरी कविता में प्रस्तुत किया । कश्मीरी भक्ति काव्य के इतिहास में यह उनकी मौलिक देन है । कश्मीरी पण्डितों के विवाह सम्बन्धी सभी रस्म इस विवाह उत्सव के अवसर पर पूरे किये जाते हैं । इस प्रकार गणेश जी के विवाह प्रसंग को आंचलिक धरातल पर प्रस्तुत करने का श्रेय लालिलांखमन को है । विवाह के समय सर्वप्रथम 'द्वार पूजा' एवं लगन मंडप पर

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

'मनन माल' बाँधने की रस्म को विशेष चाव के साथ पूरा किया जाता है । भक्त हृदय कवि अनुभूति के इन दिव्य क्षणों को शब्द बद्ध करते हुए लिखते हैं :-

-' बड़ी अदा से घूम रही है दुल्हन की माता
लाल ! बान्ध लूँ मनन माल×
गणेशबल के पास नाद लगा दूँ
लाल मेरे ! निछावर है दृग ज्योति
शौक से फूलों की मालाएँ पिरो लूँ गी
लाल ! बान्ध लूँ मनन माल ।'[1]

'शिवाय अवतार' की मूल कथा भी लोक विश्वास पर आधारित है यद्यपि हिन्दू देव-माला में इस का भी उल्लेख मिलता है । आजीवन लालि लांखमन स्वयं सन्तान-सुख से वंचित रहे, मूक रूप से उन्होंने इस पीड़ा को सह लिया और अप्रत्यक्ष रूप से इसी पीड़ा की मुखर अभिव्यक्ति 'शिवायावतार' में हुई है । एक राजा का शिव-प्रिया पार्वती से वरदान मांगने की कथा वास्तव में कवि के निजी जीवन के सूनेपन की ओर

× 'मनन माल' - कश्मीरी पण्डितों में विवाह की एक रस्म ।

1- 'हश मांज छस दिवान डाले
लाले गण्डयो मनन माल
गणेशबल तल दिमय नाले
म्यानि लाले वन्दयो लाल
लोलि पोशान करे माले
लाले गण्डयो मनन माल ।'
- "कुलयाति लालि लांखमन " - 'गणेशावतार' - पृ०-177-178.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

संकेत करती है । राजा को देवी का वरदान प्राप्त होता है लेकिन वह असलियत को न समझ सका । नवजात पुत्री को जंगल में छोड़ देता है । विधाता का चमत्कार देखिये - वन्य प्राणियों द्वारा पार्वती की न केवल रक्षा होती है अपितु लालन पालन भी होता है और शिव-पार्वती के विवाह पर कथा अपनी चरम परिणति को पहुँचती है । आरम्भ में राजा पार्वती से यही तो वरदान मांगता है :-

-' ऐसी दे सन्तान मुझे जो नैया पार लगा दे
जीवन को सार्थक बना कर कभी न निष्फल कर दे
माँ ! धन सम्पत्ति नहीं टिकाऊ है
स्वयं ही हो गृह स्वामी, यह जाना मैं ने ।'[1]

इस प्रकार यह बात स्पष्ट होती है कि 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में कश्मीरी काव्य के इतिहास में लालि लांखमन का अपना विशिष्ट स्थान है । आम लोग उन्हें एक हास्य-व्यंग्य कवि के रूप में जानने पहचानने लगे हैं लेकिन यह उनके काव्य का एक जानदार पहलू है सब से महत्त्वपूर्ण पहलू नहीं । उनकी काव्य-प्रतिभा का सब से सशक्त, कलात्मक

1- ' सन्तान दिम तिथुय पुथ म्य बोठ खारयम
ज़ुन्म ज़ुन्म तारयम त माथम न ज़ांह
मोजय धनि सोर छुनि रोज़ानय
पानय म्य ज़ोन्मुख खानयदार ।'
- "कुलयाति लालि लांखमन"- ' शिवाय अवतार' -पृ0-190.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

एवं गरिमामय रूप हमें उनके भक्ति-काव्य में देखने को मिलता है। वस्तुतः भक्ति एवं हास्य-व्यंग्य उनके व्यक्तित्व के दो पार्श्व हैं और एक की सम्यक् जानकारी के बिना उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा के विषय में कोई निर्णय करना अथवा रचनात्मक कौशल का मूल्यांकन करना सम्भव नहीं। इसमें सन्देह नहीं कि हास्य और व्यंग्य की सृष्टि में तथा इसे कश्मीरी-काव्य के क्षेत्र में एक प्रवृत्ति के रूप में परिपुष्ट करने में उनका योगदान अविस्मरणीय रहेगा। जहाँ उन्होंने हास्य और व्यंग्य की सृष्टि करके भौतिक जीवन को जीने का प्रयास किया है वहाँ साथ ही मानस की गहराई में उतर कर सृष्टि के रहस्य को जानने और पहचानने के लिये उन्होंने साधना-पथ को अपनाया और भक्ति का अवलम्ब लेकर तमस में प्रकाश की ज्योति प्रज्वलित की। निस्सन्देह वे एक देवी प्रतिभा सम्पन्न कलाकार के साथ-साथ एक सच्चे भक्त थे। यही कारण है कि सृष्टि के मूल रहस्य से परिचित होकर उन्हें यह प्रतीत होता है कि अद्भुत शक्ति पुंज ही नियंत्रक है, हम तो केवल जीवन के रंगमंच पर अकुशल अभिनेता हैं :-

-' भगवान ! यह सब कुछ एक बहाना है
यह जाना मैं ने गृहस्वामी हैं आप।
वासुदेव राजा के बाल गोपाल
तुलसी मालाएँ जचें गी तुझ पर
योगियों के योगी, पुराणों के पुराण

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

यह जाना मैं ने गृहस्वामी हैं आप ।
कैलास पर्वत के नाँगा सरदार ।
तुझे रखूँ गा नाम - काल संहार
कामदेव सेवक हैं तेरे
यह जाना मैं ने गृह स्वामी हैं आप ।
दशरथ राजा के श्री रामचन्द्र, सौन्दर्य गण
मन-मन्दिर में मैं ने देखा
हृदय-स्थल में वास तेरा
यह जाना मैं ने गृहस्वामी हैं आप ।'[1]

- 0 -

1- ' भगवान ज़ोनमय सोरई बहानय, पानय म्य ज़ोनमख खानयदार
वासदेव राज़ने बाल गूपालय, शूबनय तोलसो मालय नाल
यूगियन हिन्दि यूगि पुराणान हिन्दि पुराणय, पानय म्य ज़ोनमख-
-ख़ानयदार

कैलास वनके नँगि सरदारय, थावहे काल संहारय नाव
कामदोव छो तवै सीवानय, पानय म्य ज़ोनमख खानयदार
दशरथ राज़ने श्री रामचन्दरो, सोन्दरो छुक चि मन मन्दरस मंज़
हृदयस सांनिस मंज़ छु चोन थानय, पानय म्य ज़ोनमख ख़ानयदार ।'

- "कुलयाति लालि लांखमन" - 'शिवायावतार' - पृ0- 187.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

परिशिष्ट

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

= = = =

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(अ) उर्दू, कश्मीरी और हिन्दी पुस्तकों की सूची

1. "अकनन्दुन" (कश्मीरी) सम्पादक : गुलाम नबी ख़याल, जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन, सन् 1974 ई0 ।

2. "अज़िच कांशिर शायिरी" (काव्य संकलन - कश्मीरी), सम्पादक : रहमान राही, शफ़ी शौक़, कश्मीरी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय प्रकाशन, सन् 1978 ई0

3. "अहवाल नामि" (कश्मीरी) -भाग-1, सम्पादक: चमनलाल 'चमन' बशीर अख़्तर, कश्मीरी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय प्रकाशन- सन् 1979 ई0 ।

4. "आँकवन" (कश्मीरी) - मोतीलाल 'साक़ी', हल्का अदब सोनवारी, हाजिन, कश्मीर - सन् 1975 ई0 ।

5. "आगर वोन्य" (कश्मीरी) - मिर्ज़ा आरिफ़, ब्रोका प्रेस, श्रीनगर - कश्मीर (पुस्तक का प्रकाशन वर्ष नहीं दिया गया । अन्तिम नज़्म सन् 1971 में लिखी गई है)

6. "आज़ाद" (उर्दू - कश्मीरी) - प्रोफ़ेसर पृथ्वीनाथ 'पुष्प' कल्चरल अकादमी प्रकाशन - सन् 1959 ई0 ।

7. "आधुनिक कवि" भाग-2 (हिन्दी) - सुमित्रानन्दन पन्त, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, सन् 1941 ई0 - नौवाँ संस्करण- सन् 1962 ई0 ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

8. "कलाम-ए-महजूर" (कश्मीरी) - भाग I-II - 'महजूर'
अली मुहम्मद एण्ड संस, पुस्तक विक्रेता एवं प्रकाशक, हब्बाकदल, श्रीनगर - (सन् 1930-1951 ई0)

9. "कश्मीर और उसके लोग" (हिन्दी) - ओमप्रकाश 'मंत्री'
लालास्य प्रकाशन श्रीनगर - कश्मीर, फरवरी 1956 ई0 I

10. "कश्मीरी ज़बान और शाइरी" (उर्दू) भाग-I -अब्दुल अहद 'आज़ाद'
जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी श्रीनगर, प्रकाशन - सन् 1959 ई0 I

11. "कश्मीरी अ़ज़बान और शाइरी" (उर्दू) भाग-2 -अब्दुल अहद 'आज़ाद'
जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी, श्रीनगर, प्रकाशन सन् 1962 ई0 I

12. "कश्मीरी ज़बान और शाइरी" (उर्दू) भाग-3 -अब्दुल अहद 'आज़ाद'
जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी, श्रीनगर, प्रकाशन सन् 1963 ई0 I

13. "कश्मीरी भाषा और साहित्य" (हिन्दी) - डॉ0 शिबन कृष्ण रैणा
-सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली-7 - सन् 1972 ई0 I

14. "कश्मीरी साहित्य का इतिहास" (हिन्दी) - डॉ0 शशिशेखर तोखखानी, जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - सन् 1985 ई0

15. "कश्मीरी और हिन्दी राम कथा" (हिन्दी) -डॉ0 ओंकार कौल
काव्य का तुलनात्मक अध्ययन "
-बाहरी पब्लिकेशनज़ (प्राइवेट) लिमिटेड, दिल्ली - सन् 1974 ई0

16. "कहवट" (आलोचनात्मक निबन्ध संग्रह - कश्मीरी) -रहमान राही,
-जे0 के0 आफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली - सन् 1979 ई0 I

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

17. "कॉशिर अदबुक तवॉरोख़" (कश्मीरी) – नाज़ो मुन्नवर, शफ़ी शौक़,
कश्मीरी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय प्रकाशन – सन् 1978 ई0

18. " कॉशिर शॉयिरी" (काव्य संकलन – कश्मीरी) – सम्पादक :
प्रो0 मुहोउद्दीन हाजिनी –
साहित्य अकादमी, दिल्ली प्रकाशन – मार्च 1960 ई0

19. "कॉशिर शॉयिरी" – गुलाम नबी नॉज़िर –
कॉशिर महफ़िल, यारीपोरा, अनन्तनाग, कश्मीर – सन् 1974 ई0

20. "कॉशिर सूफ़ी शॉयिरी" भाग–1 (संकलन ग्रन्थ – कश्मीरी)
सम्पादक : मोतीलाल 'साक़ी'
जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन – सन् 1985 ई0

21. "कॉशिर सूफ़ी शॉयिरी" भाग–2 – मोतीलाल 'साक़ी'
जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन – सन् 1985 ई0

22. "कॉशुर रामायण" = (कश्मीरी – प्रकाश राम कुरिगॉम)
सम्पादक : डॉ0 बलजिन्नाथ पण्डित – सन् 1965 ई0

23. "कुल्लियाति अहद ज़रगर" (कश्मीरी) – सम्पादक: खुर्शीद अहमद
ज़रगर, शाह नवाज़ ज़रगर

24. "कुल्लियाति आज़ाद (उर्दू – कश्मीरी) – सम्पादक: डॉ0 पद्मनाथ गंजू
जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन – सन् 1967 ई0

25. "कुल्लियाति कृष्ण जू राज़दान" (कश्मीरी) – सम्पादक: सोमनाथ धीर
जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन – सन् 1984 ई0

26. "कुल्लियाति नादिम" (कश्मीरी) सम्पादक : रशीद नाज़की,
जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, सन् 1985ई0

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

27. "कुल्लियाति 'महजूर'" (कश्मीरी) सम्पादक: मुहम्मद यूसुफ टैंग, जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन सन् 1983 ई0

28. "कुल्लियाति लालि लांखमन" (कश्मीरी) सम्पादक: अर्जुन देव मजबूर, जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - सन् 1982 ई0

29. "कुल्लियाति समदमीर" (कश्मीरी) सम्पादक : मोतीलाल साक़ी जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - द्वितीय संस्करण -1982ई0

30. " गाये जा कश्मीर" - सम्पादक : पीर अब्दुल अहद शाहीन, अध्यक्ष क़ौमी कल्चरल महाज़, कश्मीर - अप्रैल 1948 ई0
न्यू कश्मीर प्रेस (मुजाहिद मंज़िल) श्रीनगर में हकीम गुलाम मुही-उद्दीन मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा क़ौमी कल्चरल महाज़ के लिए प्रकाशित ।

31. " गाशिर " (कश्मीरी) - मोतीलाल 'साक़ी' आज़ाद कल्चरल फ़ोर्म, ज़ोडुर, बड़गाम, कश्मीर - सन् 1974 ई0

32. "जदीद कांशिर शायिरी" (कश्मीरी) - डा0 हामिदी कश्मीरी, कांशिर डिपार्टमेंट, कश्मीर यूनिवर्सिटी, श्रीनगर - सन् 1982 ई0

33. "दीनानाथ 'नादिम' अभिनन्दन ग्रन्थ" -(हिन्दी) जम्मू कश्मीर राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, श्रीनगर - सन् 1985 ई0

34. "नवरोज़ सबा" (कश्मीरी) - रहमान राही , शाहीन बुक स्टाल, श्रीनगर - मार्च 1958 ई0 द्वितीय संस्करण जुलाई 1958 ई0

35. "नांव शारि सोम्बरन" -(काव्य संकलन - कश्मीरी) सम्पादक :- गुलाम नबी फ़िराक़ , कश्मीरी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर प्रकाशन सन् 1981ई0

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

36. "परमानन्द" (कश्मीरी) भाग-1, सम्पादक : प्रो० जे० एल० कौल एवं मोतीलाल 'साक़ी',
जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - सन् 1972 ई०

37. "परमानन्द" (कश्मीरी) भाग-2, सम्पादक : प्रो० एस० के० तोषखानी एवं मोतीलाल 'साक़ी'
जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - सन् 1974 ई०

38. "पयाम-ए-महजूर" (कश्मीरी) - भाग-1-6 - 'महजूर'
अली मुहम्मद एण्ड संस, पुस्तक विक्रेता एवं प्रकाशक, हब्बाकदल, श्रीनगर, कश्मीर। (सन् 1939 - 1951 ई०)

39. "बिहारी रत्नाकर" (हिन्दी) - सम्पादक : जगन्नाथदास 'रत्नाकर' ग्रन्थकार, शिवाला, बनारस, तृतीय संस्करण - सन् 1960 ई०

40. "भारतीय कविता" (हिन्दी) - सन् 1953 (प्रकाशन - सन् 1956 ई०)
साहित्य अकादमी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली-1

41. "भारतीय कविता (हिन्दी) - सन् 1954-55 (प्रकाशन - सन् 1961ई०)
साहित्य अकादमी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली-1.

42. "भारतीय कविता" (हिन्दी) - सन् 1956-57 (प्रकाशन सन् 1967 ई०)
साहित्य अकादमी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली-1.

43. "भारतीय भाषाओं के साहित्य का संक्षिप्त इतिहास" (हिन्दी)
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली - सन् 1974 ई०

44. "भारतीय साहित्य की झलक" (हिन्दी) - डा० कृष्णलाल हंस -
ग्रन्थम, रामबाग, कानपुर - 12, सन् 1973 ई०

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

45. "मनसर" ‡ कश्मीरी‡ - मोतीलाल 'साक़ी'
शालीमार प्रेस, लाल चौक, श्रीनगर - सन् 1979 ई0

46. "मयख़ाना ख़याम" ‡कश्मीरी‡ - मिर्ज़ा आरिफ़ -
कुल्फटन प्रेस, श्रीनगर - मार्च 1966 ई0
‡ उमर ख़याम की रुबाइयों का कश्मीरी पद्यानुवाद ‡

47. "महजूर" ‡ उर्दू ‡ - प्रोफ़ेसर पृथ्वीनाथ 'पुष्प' -
जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - सन् 1960 ई0

48. "रामावतार चरित" ‡कश्मीरी‡ - प्रकाशराम -
अली मुहम्मद एण्ड सन्ज़, पुस्तक विक्रेता, हब्बा कदल, श्रीनगर, कश्मीर
तृतीय संस्करण
‡ पुस्तक पर प्रकाशन वर्ष नहीं दिया गया है। ‡

49. "ललद्यद" ‡कश्मीरी‡ सम्पादक : प्रोफ़ेसर जे0 एल0 कौल,
जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन, तृतीय संस्करण - सन् 1984ई0

50. "वितस्ता के वातायन" ‡हिन्दी‡ सम्पादक : डॉ0 रमेशकुमार शर्मा
प्रेम प्रिंटिंग प्रेस, आगरा - सन् 1981 ई0

51. "शाहिल कुल" ‡कश्मीरी‡ - दीनानाथ 'नादिम'
फोटो लिथो वर्क्स, दिल्ली - सन् 1985 ई0

52. "श्रीमद्भगवद्गीता" - गीताप्रेस, गोरखपुर ‡अध्याय - 3, 4 एवं 8‡

53. "संगलाब" ‡ काव्य संकलन - कश्मीरी ‡ सम्पादक: रहमान राही,
शफी शौक़, कांशुर डिपार्टमेंट, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर,
सन् 1983 ई0

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

54. " सलाम-ए-महजूर " (कश्मीरी) भाग-I - 'महजूर' - सन् 1948 ई0

55. " सुमरन " (कश्मीरी - अंग्रेज़ी) - मास्टर ज़िन्द कौल - लालारूख प्रकाशन, श्रीनगर - जुलाई सन् 1955 ई0

56. " सूफ़ी शायिर " (कश्मीरी) - भाग-3, सम्पादक: अमीन कामिल जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - सन् 1965 ई0

57. " स्वर्ग म्योनुई वतन " (कश्मीरी) सम्पादक: मुहम्मद अहमद अन्दराबी जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन - सन् 1972 ई0

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(ग) अंग्रेज़ी भाषा में लिखित पुस्तकों की सूची :

1. "An Anthology of Modern Kashmiri Verse" -(selected and translated by) Triloki Nath Raina (1930-1960), Sangam Press Limited, Poona-29; 1972 A.D.

2. "Ancient Monuments of Kashmir" - Ram Chandra Kak - The Indian Society, 3 Victoria street,London - 1933.

3. "Contemporary Indian Literature" Chapter : 'Kashmiri Literature' (a symposium) - P.N. Pushp; published on behalf of Sahitya Akademi by the Director, The Publication Division, Ministry of Information and Broadcasting, Delhi-8; January 1957 - second edition April 1959.

4. "The Cultural Heritage of India" volume-V (Language & Literature) edited by Suniti Kumar Chatterji, Rama Krishna Mission, Institute of Culture, Calcutta-700029-1978 A.D.

5. "Daughters of Vitasta" - Prem Nath Bazaz; Pamposh Publications, New Delhi; 1959 A.D.

6. "A Dictionary of Kashmiri Proverbs & Sayings" - Rev.J. Hinton Knowles, Trubners, London - 1884 A.D.

7. "The Discovery of India" - Pt.Jawahar Lal Nehru, Meridian Books Ltd., 8 Garrick Street, London, W.C.-2, edition 1960 A.D.

8. "Early History and Culture of Kashmir" - S.C. Ray; Munshi Ram Manoharlal, New Delhi-55, 2nd revised edition 1970.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

9. "Glimpses of Kashmiri Culture" -
Series I - Author Professor K. N. Dhar - 1975
" II- " " " - 1976
" III- Editor " " - 1977
- Shri Parmanand Research Institute, Raughnath Mandir, Srinagar.

10. "History of Kashmir" - P. N. K. Bamzai; Metropolitan Book Company (Pvt)Ltd., Delhi-6; First edition-1962AD; second edition 1973 A.D.

11. "The History of struggle for Freedom in Kashmir"(cultural and political) - P.N. Bazaz ; Pamposh Publications, E-38 Hauz Khas, New Delhi-16; First dition 1954.

12. "Inside Kashmir" - P. N. Bazaz ; Kashmiri Publications, 122 Kotla Mubarak Pur, New Delhi - 1941 A.D.

13. "Jammu & Kashmir - Triumph and Tragedy of Indian Federalisation" - Balraj Puri; Sterling Publishers (Pvt) Ltd., New Delhi-29, 1981 A.D.

14. "Kashmir" - Sir Francis Younghusband; Adam & Charles Black, London - 1910 A.D.

15. "Kashmir - In Sun Light & Shade" - C.E.Tyndale Biscoe (Seeley, London -1922) reprinted by Sagar Publications, Ved Mansion, Janpath, New Delhi-1; 1971 A.D.

16. " Kashmir : Its Cultural Heritage" - Kaumadi

17. "Kashmir in Crucible" - Prem Nath Bazaz; Pamposh Publications, New Delhi-16; May 1967.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

18. "Kashir" - Vol.I-II - Dr. G.M.D. Sufi, - Punjab University, Lahore Publication of 1949 Reprinted by Light Life Publishers, New Delhi. - 1974 A.D.

19. "The Kashmiri Pandit" - Pandit Anand Koul, - Thacker, Spink and Company, Calcutta - 1924 A.D. Latest edition 1991 - M/s Utpal Publications, 131 C Pocket H, Dilshad Garden, Delhi-110095.

20. "The Kashmiri Ramayan" - Diwakar Prakash Bhatt., English Edition & Translation - Sir George A Grierson, - Asiatic Society, Bengal - 1930 A.D.

21. "Keys to Kashmir" - A Lalla Rukh Publication, Srinagar, Kashmir, printed at the Bal a Press, Delhi . April 1957 A.D.

22. "Literatures in Modern Indian Languages" (A series of Broadcast from All India Radio) Edited by V. G. Gokak, The Publication Division Ministry of Information & Broadcasting, Govt.of India, Delhi, - April 1957.

23. "Studies in Kashmiri" - Prof. Jaya Lal Koul, -Kapoor Brothers, Srinagar Publication 1968 A.D.

24. "The Valley of Kashmir" - Walter Roper Lawrence,- Henery Frowd, Oxford University Press, London-1895. Reprinted by Kesar Publishers, Srinagar., 1967 A.D.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(इ) सहायक शब्द कोशों की सूची :

1. " अंग्रेज़ी – हिन्दी कोश " – फ़ादर कामिल बुल्के ,
कैथलिक प्रेस, राँची, बिहार, 1968 ई०

2. " उर्दू–हिन्दी शब्दकोश " (देवनागरी लिपि में) – मुहम्मद मुस्तफ़ा खाँ 'मद्दाह' , उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ – तृतीय संस्करण – सन् 1977 ई०

3. " कॉशिर डिक्शनरी " – मुख्य सम्पादक: प्रो० एस० के० तोषख़ानी
जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी, श्रीनगर, प्रकाशन :
– भाग – 1 : सन् 1972 ई०
भाग – 2 : सन् 1973 ई०
भाग – 3 : सन् 1974 ई०
भाग – 4 : सन् 1976 ई०
भाग – 5 : सन् 1977 ई०
भाग – 6 : सन् 1978 ई०
भाग – 7 : सन् 1979 ई०

4. " चरित्र कोश " सम्पादक : श्रीनारायण चतुर्वेदी ,
नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली–2, प्रथम संस्करण 1983

5. " पारिभाषिक शब्द-संग्रह " (अंग्रेज़ी – हिन्दी)
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार,
दिल्ली–8.

6. " बृहत् अंग्रेज़ी – हिन्दी कोश " डा० हरदेव बाहरी ,
ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी – 1, 1969 ई०
प्रथम भाग
द्वितीय भाग

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

7. " बृहत् हिन्दी कोश "-सम्पादक : कालिका प्रसाद, राजवल्लभ सहाय, मुकुन्दी लाल श्रीवास्तव - ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी-1 प्रथम संस्करण संवत् 2001, तृतीय संस्करण 2020संवत्

8. " भारतीय साहित्य कोश " - सम्पादक : डॉ0 नगेन्द्र , नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली-110 002, प्रथम संस्करण 1981 ई0

9. " मानक हिन्दी कोश " - प्रधान सम्पादक: रामचन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग - प्रथम संस्करण

पहला खण्ड : 1962 ई0
दूसरा खण्ड : x
तीसरा खण्ड : x
चौथा खण्ड : 1965 ई0
पाँचवाँ खण्ड : 1966 ई0

10. " व्यावहारिक उर्दू-हिन्दी शब्द कोश" -सम्पादक: डॉ0 सैयद असद अली , लिपि प्रकाशन, दिल्ली- 51, प्रथम संस्करण 1977 ई0

11. " व्यवहारिक हिन्दी-अंग्रेज़ी कोश" - सम्पादक: महेन्द्र चतुर्वेदी, डॉ0 बी0 एन0 तिवारी , नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली-2, चतुर्थ संस्करण 1978.

12. "हिन्दी कथा-कोष" - {पुस्तक में सम्पादक का नाम नहीं दिया गया है } , हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, प्रथम संस्करण सन् 1954 ई0

13. " हिन्दी मुहावरा कोश " - सम्पादक: भोलानाथ तिवारी, किताब महल, प्राइवेट लिमिटेड, ज़ीरो रोड, इलाहाबाद, दूसरा संस्करण सन् 1964 ई0

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

14. "हिन्दी साहित्य कोश" (पारिभाषिक शब्दावली) भाग-1
(नामवाची) भाग-2

मुख्य सम्पादक : धीरेन्द्र वर्मा, तृतीय संस्करण सन् 1985 ई0
ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी, सन्त कबीर रोड, वाराणसी-1

15. " Chambers 20th Century Dictionary" -
Edited by E. M. Kirkpatrick - W & R Chambers Ltd.,
Edinburg 1983, - First published in India by
Allied Publishers Pvt.,Ltd., New Delhi-2 - 1984 A.D.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(ई) पाण्डुलिपि :

1. " विष्णु प्रताप रामायण " (फ़ारसी लिपि) - दो भाग - पण्डित विष्णु कौल 'व्यास'

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

§ उ § अप्रकाशित स्वीकृत शोध-प्रबन्ध :

§ जम्मू-कश्मीर विश्वविद्यालय / कश्मीर विश्वविद्यालय द्वारा पीएच० डी० उपाधि हेतु §

1. "'महजूर' तथा बालकृष्ण 'नवीन' के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन" - भूषणलाल कौल, कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर की इक़बाल लाइब्रेरी में सुरक्षित - सन् 1968 ई०

2. "'आज़ाद' तथा 'दिनकर' के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन" - अमरनाथ प्रशान्त, कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर की इक़बाल लाइब्रेरी में सुरक्षित - सन् 1970 ई०

3. "कश्मीरी तथा हिन्दी कृष्ण काव्य का तुलनात्मक अध्ययन" - कु० फूला राज़दान, कश्मीर विश्वविद्यालय की इक़बाल लाइब्रेरी में सुरक्षित - सन् 1975 ई०

4. "विष्णु प्रताप रामायण का आलोचनात्मक अध्ययन" - कु० विजय मोहिनी कौल, कश्मीर विश्वविद्यालय की इक़बाल लाइब्रेरी में सुरक्षित, सन् 1975 ई०

5. "साठोत्तरी हिन्दी तथा कश्मीरी कविता में आधुनिक संवेदना" - उपेन्द्र रैणा, कश्मीर विश्वविद्यालय की इक़बाल लाइब्रेरी में सुरक्षित, - सन् 1982 ई०

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(ऊ) उर्दू, कश्मीरी और हिन्दी में प्रकाशित सहायक पत्र-पत्रिकाओं की सूची :

1. "अनहार" (कश्मीरी) - कश्मीर विश्वविद्यालय शोध-पत्रिका, कला संकाय, कश्मीरी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर, सन् 1981 ई0

2. "काश्मीर समाचार" - कश्मीरी समिति, दिल्ली - प्रकाशन - मई 1989 (अंग्रेज़ी - हिन्दी - कश्मीरी)

3. " तामीर " (उर्दू) - लालास्त्र पब्लिकेशंस, श्रीनगर - 'महजूर' विशेषांक - अप्रैल-मई 1957.

4. " तामीर " - वही - 'आज़ाद' विशेषांक - अप्रैल-मई 1958.

5. " नीलजा " (हिन्दी) - जम्मू कश्मीर राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, श्रीनगर - 1976-77 ई0

6. " नीलजा " (हिन्दी) - वही - 'नादिम' विशेषांक - 1983-84 ई0

7. " नीलजा " सीरीज़-13 (हिन्दी) 'चिनार के पत्ते' - जम्मू कश्मीर राष्ट्र भाषा समिति, श्रीनगर - 1987-88 ई0

8. " योजना " (हिन्दी) - सूचना विभाग, जम्मू कश्मीर सरकार, सम्पादक : वेद राही - 'संस्कृति विशेषांक - जनवरी 1960 ई0

9. " वितस्ता " (हिन्दी) हिन्दी परिषद्, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय की वार्षिक पत्रिका -
   - सितम्बर 1969 ई0
   दिसम्बर 1970 ई0
   मार्च 1976 ई0

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

10. " वितस्ता " (हिन्दी) - कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग की शोध पत्रिका - 1989 ई०

11. " शीराज़ा " (उर्दू) - जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी श्रीनगर, 'सक़ाफ़त नम्बर' - जुलाई 1966 ई०

12. " शीराज़ा " (उर्दू) - 'महजूर नम्बर' - वही - अगस्त-नवम्बर 1984

13. " शीराज़ा " (कश्मीरी) -जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी, श्रीनगर, प्रकाशन :

- फरवरी 1968 ई० - 'अज़िज़ कांशिर नज़्म'
- नवम्बर 1971 ई० -
- मई-अगस्त 1972 ई० - 'ग़ज़ल नम्बर'
- दिसम्बर 1973 ई०
- अंक-13, नम्बर-1, सन् 1976 ई०
- अंक-14, नम्बर-4, 'काशिर ज़ुगनाभि'
- सन् 1984 ई० - 'अहद ज़रगर नम्बर'
- सन् 1985 ई० - 'नज़्म नम्बर-2'
- सितम्बर-दिसम्बर 1987 ई० - 'महजूर नम्बर'
- दिसम्बर 1989-जनवरी 1990 ई० - 'नादिम नम्बर'

14. " शीराज़ा " (हिन्दी) - वही -

- अक्तूबर-दिसम्बर 1976 ई०
- अप्रैल-जून 1978 ई०
- अगस्त - नवम्बर 1982 ई०
- अप्रैल-मई 1985 ई०

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

15. " सोन अदब " (कश्मीरी) - जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी की वार्षिक/विशेष प्रकाशन - सन् 1965 ई०

16. " सोन अदब " (कश्मीरी) - वही - सन् 1972 ई०

17. " सोन अदब " (कश्मीरी) - वही - 'काश्मिर ज़बान त अदब ' - सन् 1976 ई०

18. " सोन अदब " (कश्मीरी) - वही - ' कश्मीर ' - सन् 1977 ई० - सन् 1978 ई० में प्रकाशित ।

19. " हमारा अदब " (उर्दू) - जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी का वार्षिक प्रकाशन - (1960 - 62 ई०) प्रकाशन वर्ष - 1974 ई०

20. "हमारा अदब" (उर्दू) - वही - 'मशाहीर नम्बर, अंक-1 , सन् 1976-77 ई०

21. " हमारा अदब " (उर्दू) - वही - 'मशाहीर नम्बर, अंक-2 , 1977-78 ई०

22. "हमारा साहित्य" (हिन्दी) - सम्पादक : नरेन्द्र खजूरिया - ललित कला, संस्कृति व साहित्य अकादमी जम्मू कश्मीर, जम्मू, वार्षिक/विशेष प्रकाशन, - 1964 ई०

23. " हमारा साहित्य " (हिन्दी) - सम्पादक रमेश मेहता - - वही - 1982 ई० ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

(ए) अंग्रेज़ी भाषा में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं की सूची :

1. "The Jammu & Kashmir University Review" -
   A Journal of the University of Jammu & Kashmir,
   Vol.II, No.1 - May 1959.
   ('Kashmir Saivism & Vedanta) - B. N. Pandit
2. "The Jammu & Kashmir University Review" - Vol.III,
   No.1 - June 1960.,
   (Kashmiri Poetry : Some forms and themes) -
   J. L. Kaul.,

3. " The Times of India" - Friday, Octoer 18, 1985,
   Page No.21, Col. 3,4,5
   (Nadim - Votary of the muse - T. N. Kaul)
   Music & lyric Poetry

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

परिशिष्ट

1- उर्दू, कश्मीरी, संस्कृत और हिन्दी पुस्तकों की सूची

2- अंग्रेज़ी भाषा में लिखित पुस्तकों की सूची

3- सहायक शब्द कोशों की सूची

4- पाण्डुलिपि

5- अप्रकाशित स्वीकृत शोध-प्रबन्ध

6- उर्दू, कश्मीरी और हिन्दी में प्रकाशित सहायक पत्र-पत्रिकाओं की सूची

7- अंग्रेज़ी भाषा में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं की सूची

8- कुछ अहम दस्तावेज़ों की फोटोस्टेट प्रतियाँ ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

660

The University of Kashmir

Order

On having taken over the charge of the office of the Registrar, University of Kashmir, Mr. G. N. Siddiqui, is relieved of the duties of the office of the Dean Students' Welfare.

The duties and functions of the Dean, Students' Welfare will hence-forth and until further orders be performed by Dr. B. L.Koul, Reader, Post-graduate Department of Hindi.

By order,

Hassan

(Peerzada Ghulam Hassan)
Deputy Registrar(Admn.)

No.F.10(App-Adm.)KU/80
University Campus,
Hazratbal,
Srinagar-190006
July 22, 1980.

Copy of the above forwarded to :-

1. Director, Iqbal Institute;/Librarian, Iqbal Library;
2. Director, Centre of Central Asian Studies;/ICC/USIC/CORD.
3. Head of the Post-graduate Department of Hindi.
4. Heads of other teaching Departments of the University;
5. Dr. B. L. Koul, Reader, P.G.Department of Hindi.
6. Director, Physical Education/Development Officer
7. Assistant Registrar(Accounts)/ Warden, Boys' Hostel.
8. P.S. to Vice-Chancellor;
9. P.A. to Registrar;
10. P.A. to Controller of Examinations.

-.-

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

संख्या-2

THE UNIVERSITY OF KASHMIR, SRINAGAR.

ORDER

Dr. B.L. Koul, Reader, Post-graduate Department of Hindi and Sanskrit is relieved of the duties of Dean Students' Welfare at his own request with immediate effect. He will however, continue to function as Programme Co-ordinator, N.S.S.

Consequent upon the above Dr. Mohd Ishaq Khan, Reader, Post-graduate Department of History will function as Dean Students' Welfare for a period of two years. He will however, continue teaching six periods per week in the Department of History.

Orders with regard to the terms and conditions of the appointment of Dr. Khan as Dean Students' Welfare will be issued separately.

(Mohd Shafi Khan)
Deputy Registrar(Admn.)

NO: F.4(RH-5)Adm
University Campus,
Hazratbal, Srinagar-6
Dated: 21-7-84

Copy to the:-

1. Heads of all the teaching Departments of the University;
2. Director, Iqbal Institute/Institute of Home Science/CCAS/CORD/ICC/USIC/Cont. Education;
3. Dean College Development Council;
4. Librarian, Iqbal Library;
5. Proctor / Chief Security Officer ;
6. Dr. B.L. Kaul, Reader, Department of Hindi;
7. Dr. Mohd Ishaq Khan /Reader, Department of History;
8. Manager, J&K Bank, Hazratbal Branch, University Campus, Srinagar;
9. Deputy Registrar(Accounts) / Development Officer;
10. Manager, City Passenger Service, R.T.C., Srinagar;
11. Private Secretary to the Vice-Chancellor;
12. All other Officers of the Registry;
13. P.A. to the Registrar / P.A. to Controller of Examinations;
14. DSW's Office.

-.-

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

संख्या-3

662

THE UNIVERSITY OF JAMMU AND KASHMIR
(CENTRAL UNIT)

Notification No.1/Ph.D. of 1968

Pursuant to the resolutions passed by the Central Council of the University at its meeting held on October 4, 1968 the following candidates who presented a thesis each on the subject noted against their names for the Degree of Doctor of Philosophy in the Faculty shown below, are declared to have qualified themselves for the award of the Degree of the Doctor of Philosophy (Ph.D) of the University of Jammu and Kashmir:-

Name of the candidate	Faculty	Subject of the thesis
Shri Nizam-ud-Din, Lecturer, Islamia College, Srinagar	Arts (Hindi)	"SWATANTRAOTTAR HINDI MAHAKAVYA"
Shri Bushan Lal Kaul, Lecturer, Post-graduate Department of Hindi, J&K University, Kashmir Division, Srinagar	Arts (Hindi)	"MAHJOOR PATHA NAVEEN KE KAVYA KA TULNATMAK ADHYAN."
Shri Assadullah Kamil, Lecturer, Post-graduate Department of Urdu, J&K University, Kashmir Division, Srinagar.	Arts (Urdu)	"SIRAT-E-NAAVI - A HISTORICAL AND CRITICAL SURVEY."

(Abdul Aziz)
REGISTRAR

No. F-I-3(Ph.D)68/CU/
The University Campus,
Amarsingh Bagh, Srinagar-6
Dated: October 23 ,1968.

Copy forwarded to :-

1) Registrars of all Indian Universities;
2) Secretary, University Grants Commission, New Delhi;
3) Secretary, Inter-University Board of India, New Delhi;
4) Secretary, Union Public Service Commission, New Delhi;
5) Chairman, Public Service Commission, Srinagar;
6) Additional Secretary to Government, Higher & Technical Education, Srinagar;
7) Heads of all Post-graduate Departments, J&K University, Kashmir/Jammu Div.
8) Principals of all affiliated Colleges;
9) Station Director, Radio Kashmir, Srinagar;
10) All the Officers of the University for information;
11) Candidates concerned.

231068

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

663

Dr. Bhushan Lal Koul
POST GRADUATE DEPARTMENT OF HINDI
UNIVERSITY OF JAMMU & KASHMIR.

SATHU, NAQASHPORA
SRINAGAR (KASHMIR)

कश्मीरी काव्य में राष्ट्रीय भावना

भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ साथ कश्मीर में भी निरन्तर कई वर्षों तक स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष चलता रहा जिसने यहाँ की तत्कालीन परिस्थितियों पर गहरा प्रभाव डाला है। यहाँ के साहित्यकार एवं कवि उस राष्ट्रीय आन्दोलन में पीछे नहीं रहे अपितु अपनी ओजमयी वाणी द्वारा उन्होंने देशवासियों को प्रेरित किया, बलिदान देने के लिए ललकारा और इस प्रकार मातृभूमि के प्रति उऋण होने का प्रयास किया। लगभग ५० वर्षों तक इस प्रकार के राष्ट्रीय साहित्य का निर्माण देश में हुआ। दुर्भाग्य यह है कि यह राष्ट्रीय काव्य बिखरा पड़ा है और आज तक इस पर कोई भी गवेषणात्मक कार्य नहीं हुआ है। इस समस्त विशाल साहित्य पर शोध-कार्य करने का निश्चय मैं ने किया है, जिस में कश्मीरी भाषा के उन कवियों के काव्य का पूर्ण विवेचन, अनुशीलन एवं अध्ययन किया जाए गा जिन्होंने राष्ट्रीय काव्य लिखा है।

यह शोध कार्य एक आलोचनात्मक ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित होगा और इस पर कार्य करने के लिए मुझे दो वर्ष का समय लग जाए गा। इस शोध कार्य की रूप रेखा इस प्रकार होगी :-

प्रथम अध्याय :-
१. कश्मीर में राष्ट्रीय-काव्य की पूर्व पीठिका।
२. २०वीं० शताब्दी में कश्मीर की समसामयिक परिस्थितियाँ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

Dr. Bhushan Lal Koul
POST GRADUATE DEPARTMENT OF HINDI
UNIVERSITY OF JAMMU & KASHMIR.

SATHU, NAQASHPORA
SRINAGAR (KASHMIR)

द्वितीय अध्याय :-

१. कश्मीर के प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि एवं देश-भक्त ।

तृतीय अध्याय :- कश्मीर के राष्ट्रीय-काव्य की मुख्य प्रवृत्तियों का अध्ययन ।

१. स्वर्णिम अतीत का गौरव गान ।

२. वर्तमान दुर्दशा ।

३. देश भक्ति की कविता बलिदान की भावना ।

चतुर्थ अध्याय :- कश्मीर के राष्ट्रीय-काव्य की मुख्य प्रवृत्तियों का अध्ययन ।

१. पीड़ित कृषकों एवं श्रमिकों का चित्रण ।

२. राष्ट्रीय काव्य में प्रतीक योजना ।

३. शस्त्री राज्य पर आक्रोश जागरण गीत ।

पंचम अध्याय :- कश्मीर के राष्ट्रीय-काव्य की मुख्य प्रवृत्तियों का अध्ययन ।

१. वीर पूजा ।

२. राष्ट्रीय-काव्य में आशावादी सन्देश ।

३. क्रान्तिकारी काव्य ।

४. भविष्य निर्माण एवं समाज सुधार ।

षष्ठ अध्याय :-

१. कश्मीरी भाषा के राष्ट्रीय - काव्य की कलात्मक उपलब्धियाँ ।

२. कश्मीरी एवं हिन्दी राष्ट्रीय काव्य का संक्षिप्त तुलनात्मक अध्ययन ।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

Dr. Bhushan Lal Koul
POST GRADUATE DEPARTMENT OF HINDI
UNIVERSITY OF JAMMU & KASHMIR.

SATHU, NAQASHPORA
SRINAGAR (KASHMIR)

उपसंहार

१. प्रत्येक कवि की एक एक रचना - देवनागरी लिपि में अनुवाद सहित ।

---- o ----

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

तार : यूनीग्रान्टस
Grams : UNIGRANTS

666

संख्या-4(ii)

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
UNIVERSITY GRANTS COMMISSION

बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग
BAHADUR SHAH ZAFAR MARG

संख्या
No. 13-4(1141)/6 (ch).

नई दिल्ली-१, तिथि
New Delhi-1, Dated 15 Dec. 1969.

To

The Registrar/Principal,
//////.

Kas[illegible] University,

Srinagar.(J&K).

~~ACCOUNTS SECTION~~

Sub : Financial assistance to teachers in the universities and colleges for undertaking research or learned work in Humanities, Social Sciences and Sciences.
//////// ////////

Sir,

I am directed to say that the University Grants Commission has approved a grant of Rs. 750/= (Rupees Seven hundred fifty only.) for the purchase of Books & P.E. needed by Dr. B.L.Kaul, Lecturer. in connection with his/her research project entitled //
////

2. The grant is subject to the rules and regulations governing the scheme as per enclosure I. already intimated.

3. I am also to convey sanction of the University Grants Commission to the payment of the first instalment of Rs. 375/- (Rupees Three hundred seventy five only.) to your college/university out of the grant sanctioned above. A T.R. bill for this amount along with a certificate from the awardee that the terms and conditions of the grant are acceptable to him may kindly be submitted to this office for arranging remittance. If no reply is received within a month, it will be presumed that the awardee is not interested in the offer and the same will be withdrawn.

The receipt of this letter may please be acknowledged.

An abstract in about 500 words indicating the results obtained by the awardee on the approved project may kindly be sent after the utilisation of the grant.

The above grant is debitable to the head of account, 3-7(1)(a).

Yours faithfully,

(A. B. Gupta)
For Secretary

Copy forwarded to :

1. Sri Dr. B.L.Kaul, Lecturer, Department of Hindi, Kashmir University, Srinagar.(J&K).
2. The Examiner, Local Fund Accounts
3. The Secretary to the Govt. of India, Ministry of Education (U. 2 Section), New Delhi.
4. The Registrar
5. The Assistant Secretary, U.G.C., New Delhi.

M/S. Sharma & Co., Chartered Accountants, Srinagar, (J&K).

(C. R. Sharma).
For Secretary

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

667

तार : यूनीग्रान्ट्स
Grams : UNIGRANTS

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
UNIVERSITY GRANTS COMMISSION

बहादुर शाह जफ़र मार्ग
BAHADUR SHAH ZAFAR MARG

संख्या
No. F.7-4(114)/72(SP-I)

नई दिल्ली-१, तिथि
NEW DELHI-1, Dated 28 APR 1972

To

The Registrar/Principal,

Kashmir University,
Srinagar.

Subject : Financial assistance to teachers for research/learned work in Sciences and Humanities including Social Sciences — Payment of Second instalment of grant.

With reference to your letter No. F1(PA/71-72/Adm/KU dated 3.4.1972 on the subject mentioned above, I am directed to convey the sanction of the University Grants Commission to the payment of the SECOND AND FINAL instalment of Rs. 715/- (Rupees Three hundred and seventy-five only) out of the grant of Rs. 750/- approved for the research project of Dr. B.L. Kaul under the above scheme.

2. The terms and conditions of the above grant have already been sent to the university/college along with the award letter.

3. It is requested that the T.R. 42 bill duly signed for the above amount may kindly be submitted early for remittance of grant.

4. The above grant is debitable to the Head of Account Section II Plan Project. E-7(v)(a)

Yours faithfully,

(S.C. GUPTA)
for Secretary

Copy to :—

1. The Accounts Officer, University Grants Commission, New Delhi.
2. S.O. (Meetings)
3. .....
4. M/s. Sharma & Co., Chartered Accounts, Srinagar, Kashmir.
5. Dr. B.L. Kaul, Lecturer, Deptt. of Hindi, Kashmir University, Srinagar.
6. .....

for Secretary

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सख्या-5

668

The UNIVERSITY OF KASHMIR

NOTIFICATION

It is hereby notified that the thesis entitled "VISHNU PRATAP RAMAYAN KA ALOCHANATMAK ADHYAYAN" submitted by Mis Vijay Mohani Koul has been accepted by this University for the Ph.D. degree in the Faculty of Arts (Hindi).

Accordingly, Miss Vijay Mohani Koul has been declared eligible for the award of the said degree. She submitted her thesis under the guidance of Dr. B. L. Koul, Lecturer Post-graduate department of Hindi, University of Kashmir, Srinagar.

Sd/-

R. N. Kaul
CONTROLLER OF EXAMINATIONS

No:-F.11-2 Ph.D/Sec
The University Campus,
Hazratbal, Srinagar-6.

Dt:- 1-1-1976.

Copy to the:-

1. Registrars of all Indian Universities;
2. Secretary, University Grants commission, New Delhi;
3. Secretary, Association of Indian Universities, New Delhi;
4. Chairman, Public Service commission, Jammu;
5. Education Commissioner, Jammu;
6. Heads of all Post-graduate departments;
7. Principals of all affiliated Colleges;
8. Station Director, T.V. Centre, Srinagar.
9. Station Director, All ~~xxxxxxxxxx~~ India Radio, Srinagar.
10. All Officers of the University.
11. Sections concerned.
12. Candidate concerned.
13. The Editor, Daily_____ with a request to publish the notification as a news item;
14. Receptionist, University of Kashmir, Srinagar.

(Attested true copy)

[signature] 2/6/78

[illegible]
[illegible], Ph.D., D.Litt.
Prof. & Head, Hindi Dept.
Kashmir University, SRINAGAR (J. K.)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

संख्या-6

669

Post graduate Department of Hindi
University of Kashmir, Srinagar.

No:- PGD/H/ 52 /85-86.

May 10, 1985.

The Deputy Registrar
(Administration),
University of Kashmir,
Srinagar.

Subject : Study leave in favour of Dr. Bhushan Lal Kaul.

Refer : Your letter No:-F.4(RHD-5)Adm dated 9.5.1985.

Dear Sir,

This is to inform you that Dr. Bhushan Lal Kaul Reader in my department has been relieved today in the after-noon to avail of the two years' Study leave granted in his favour per order No:-F.4(RHD-5)Adm/ 1198 dated 23.4.1985.

yours faithfully,

(Ramesh K. Sharma)

Copy to Dr. Bhushan Lal Kaul, Reader in Hindi

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

सख्या-7

670

THE UNIVERSITY OF KASHMIR, SRINAGAR.

AMENDMENT TO ORDER NO: F(Ut 3) Adm DATED 3.5.1987.

Please read 1.5.1987 as date of joining of Dr. B.L.Koul, Reader, Department of Hindi, after availing of the study leave for two years.

No: F.5(T/Hindi 1(a), Adm
University Campus,
Hazratbal, Srinagar-6.
Dated: July 1, 1987.

(Abdul Ghani Zargar)
Deputy Registrar,
Administration.

Copy to the:-

1. Head of the Department of Hindi;
2. Deputy Registrar(Accounts);
3. Concerned;
4. File.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

संख्या – 8

JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY 671

Telegram : JAYENU
Telephones : [redacted]
650005 [redacted]
New Delhi-110 067

J.F.JNU/Lib/RS/87/

March 20, 1987

To whom it may concern

This is to certify that Dr. Bhushan Lal Koul, Reader, Department of Hindi, Kashmir University, Sri Nagar, has used this Library from February 12, 1987 to March 20, 1987. He was allotted a temporary membership No.12287(671).

(V.B. NANDA)
Librarian

20/3/87

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

संख्या-9

672

UNIVERSITY OF JAMMU LIBRARY,
BAHU WALI RAKH, NEW CAMPUS, JAMMU.

NO:ULJ/86/87/2694.

Dated : 10-2-87.

C E R T I F I C A T E

It is to certify that Sh/Smt/Miss Dr. Buchan Lal Kaul Reader Deptt of Hindi student/~~Reader~~/~~Scholar of~~ _____ was allowed consultation facility of this library for 11 days/months. He attended this library from 31st Jan to 10th Feb 87 regularly.

(JAGDISH S. SHARMA)
PROF. HEAD CUM LIBRARIAN

Dr. Jagdish S. Sharma
Professor-Head-cum-Librarian,
University of Jammu
Jammu (Tawi) J&K

J.S.W.L.
29.7.86.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

संख्या-10

673

Jammu and Kashmir
Academy of Art, Culture and Languages
Srinagar.

.....

No:- 4447-48
Dated; 4th August, 1987.

Shri. Om Goswami,
Editor Hindi,
J & K Cultural Academy,
Jammu.

It has come to my notice that 3 articles on Kashmiri poets by Dr. Bhushan Lal Koul are awaiting their turn for publication in Sheeraza Hindi since early 1986. I have myself seen the work of Dr. Koul and I feel that he deserves encouragement.

You are, therefore, advised to serialise them in Sheeraza from the very next issue. You are furhter advised to invite remaining articles in the series from the scholar and publish them accordingly.

Sd/-
(M. Y. Taing)
Secretary.

Copy to Dr. Bhushan Lal Koul, Senior Research Scholar, 8- Old Readers Quarters, University Campus, Hazratbal, Srinagar-190006.

(Ramesh Mehta)
Dy. Secretary (C).

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

JAMMU & KASHMIR
ACADEMY OF ART, CULTURE AND LANGUAGES
SRINAGAR / JAMMU.

PHONES
Srinagar : 73425/76196
Jammu : 5040/42656/5845

श्रीराज हिन्दी

क्रमांक 2547
दिनांक 24-10-87

प्रिय भाई कौल,

सस्नेह नमस्कार।

आपकी रचनाएं यथासमय मिल गई थीं। इनमें से दो को फिलहाल सम्पादित करके शीराज़ा में प्रकाशनार्थ भिजवा रहा हूँ। इससे पूर्व शीराज़ा का प्रकाशन किन्हीं कारणों से रुका पड़ा था। अब यह पुनः रूप से छपना शुरू हो गया है तो विश्वास रखें इसके अंक निर्धारित रूप से निकलते लगेंगे। आपके लेखनों वाले अंकों की प्रतियां यथासमय भिजवाऊंगा। 'नादिम' और 'राही' वाले लेख पहले छपेंगे।

बहरहाल, आपका उत्साहवर्धक रचनात्मक सहयोग इसी प्रकार मिलता रहेगा। — इस आशा के साथ —

भवदीय,

24/8/87

Dr. BHUSHAN LAL KAUL
Reader — P.G. Deptt. — HINDI
University of Kashmir
— SRINAGAR (J&K)

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

675

संख्या-12

(RP/HR)-13

University Grants Commission

BAHADUR SHAH ZAFAR MARG
NEW DELHI - 110002

No. F. 20-19/86 .....(HR-I) Dated March, 1986

To

2 AP

The Registra~~xxxxxx~~al,
University of Kashmir
Srinagar 190006.

Sub : Financial Assistance to teachers working in the Universities/Colleges for undertaking research or learned works in Humanities and Social Sciences—Payment of first instalment of grant,

Sir,

I am directed to refer to your letter No F.32(RS-4)Gen/KU/85 dated 16.10.85 forwarding the application of Dr. Bhushan Lal Kaul, Reader. Department of Hindi of your University/College for financial assistance under the above scheme and to say that the University Grants Commission has approved a grant of Rs. 11,000/ (Rupee Eleven thousand only) for him/her (for undertaking the research project entitled : A comparative study of various Trends in Modern Hindi and Kashmiri Poetry (1850 AM to 1970 AMD)

for items listed below :-

			Rs.
1.	Books & Jonrnals	:	2,000/-
2.	Field work/travel/visits	:	6,500/-
3.	Computation/Compilation work	:	
4.	Typing/stationery/printing	:	2,000/-
5.	Data Collection/Processing	:	
6.	Preparation of Questionnaire	:	500/-
7.	Equipments	:	
8.	Collection of Materials	:	
9.	Contingency	:	
	Total :	:	11,000/-

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

1. The grant is subject to the terms and conditions as contained in the annexture (attached),

2. The research project has to be completed within a period of two years from the date of the receipt of this letter.

3. I am further to convey the sanction of the University Grants Commission to the payment of an 'on account' grant of Rs 5500/- (Rupees five thousand five hundred only) to your university/college as first instalment of grant approved above.

4. In case the terms and conditions as contained in the annexture are acceptable to the university/ college and the awardee, the enclosed T.R. 42 bill for the amount indicated in para 3 above may be sent to the UGC at an early date to enable remittance of the grant.

5. The above grant is debitable to the Head of Account Section II Plan Project 026 (3) (i)/(ii) and the sanction to the payment of this amount is valid for the financial year or for a period of 3 months from the date of issue of this letter whichever is earlier.

6., "The Organisation shall fully implement the "Official Language Policy of the Union Govt." i.e. The Organisation shall fully comply with the "Official Language Act, 1963" and "Official Language (Use for the Official purposes of the Union) Rules 1976" etc.

Yours faithfully,

(Sem Topno)
Education Officer

Encl : As above.
Copy to : Accounts (G) Section, UGC, New Delhi-110002

(Sem Topno)
Education Officer

Copy to : 1. Meeting Cell, UGC, New Delhi.
2. Guard file.
3. The Director of Audit Central Revenues, New Delhi-2
4. ~~Xxxxxxx~~ Dr. Bhushan Lal Kaul, Reader, Deptt. of Hindi, University of Kashmir, Srinagar.
5. .....

C.P. Arora

(C.P. Arora)
Section Officer

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

संख्या-13

677

THE UNIVERSITY OF KASHMIR, SRINAGAR.

No: F.3(PH-Adm,)/
University Campus,
Hazratbal, Srinagar-6.
Dated: Feb. 25, 1968.

183

Dr. B. L. Kaul,
Professor,
Department of Hindi,
Kashmir University,
S R I N A G A R.

Ref:- No: F.PGL/H/67/342 dated 26.10.1967 representing for release of periodical increments.

- - -

Sir,

1657

I am to request you to kindly intimate the approximate date by which you will be able to submit your thesis leading to the award of D.Litt. Degree.

Yours faithfully,

(Abdul Ghani Zargar)
Deputy Registrar,
Administration.

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

संख्या - 14

678

The University of Kashmir, Srinagar.

O_R_D_E_R

On completion of the term of headship by Prof. M. Ayub Khan on 9.6.1989, Prof. B.L. Koul of the Post-Graduate Department of Hindi will function as the Head of the Department of Hindi with effect from 10.6.1989 for a period of three years.

C L Razdan

NO: F(Rt.-Hdship) Adm/89
University Campus,
Hazratbal, Srinagar-6.
Dated: June 8 ,1989.

(C. L. Razdan)
Deputy Registrar,
(Administration).

Copy to the:-

1. Deans of all faculties;
2. Heads of all teaching Departments;
3. Directors of various Research Centres/Institutes/Units;
4. Dean, College Development Council/Dean Students' Welfare;
5. Chairman, Department of Distance Education;
6. Librarian, Iqbal Library;
7. Prof. M. Ayub Khan/Prof. B. L. Koul, Deptt. of Hindi;
8. Chief Proctor/Chief Warden/Chief Security Officer;
9. Deputy Registrar (Accounts);
10. All other Officers of the Registry;
11. P.A. to Registrar/Controller of Examinations;
12. Manager, Jammu and Kashmir Bank Ltd. Nandpora Branch, Hazratbal, Srinagar;
13. All Sections of the Registry;
14. Reception Cell;
15. File.

/*J/B/*

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

संख्या-15

679

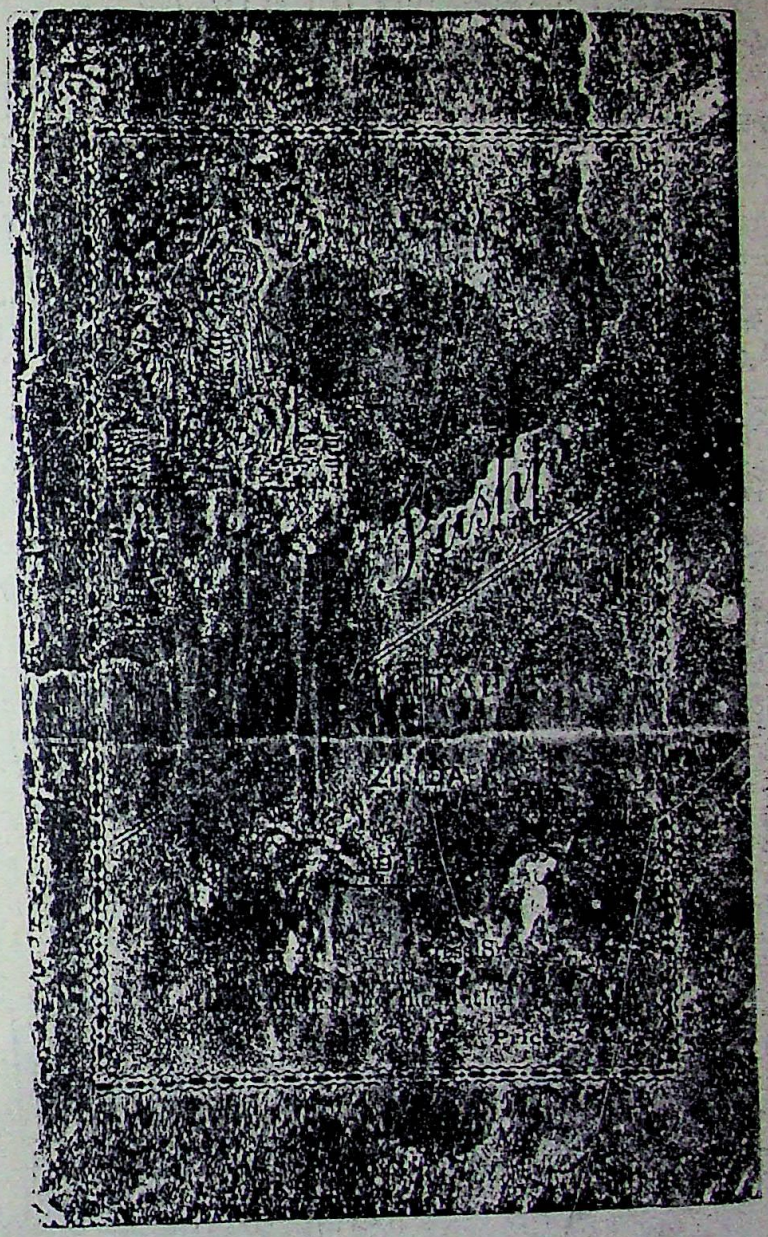

सन् १९५१ ई० में प्रकाशित मास्टर ज़िन्दकौल की रचना 'पत्र-पुष्प'

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

संख्या - 16

680

گائے جا کشمیر

انقلابی گیتوں اور ترانوں کا پہلا مجموعہ

مرتبہ

قومی کلچرل محاذ کشمیر

اپریل ۱۹۴۸ء

गाये जा कश्मीर

सन् १९५४ ई० में प्रकाशित
प्रगतिवादी चिन्तन एवं देशप्रेम
पर आधारित कविताओं का
संग्रह।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

संख्या - 16
581

نیو کشمیر پریس (مجاہد منزل) سرینگر
میں
حکیم غلام محی الدین پرنٹر و پبلشر
نے
قومی کلچرل محاذ کیلئے شایع کیا

بار اول ڈیڑھ ہزار قیمت ۱۲ آنے کتبہ: کاشی ناتھ رازدان کاتب

کسانوں، مزدوروں، اور محنت کشوں کے نام

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

کشمیر یونیورسٹی ہند ترانہ

682

ہی موج کشیری چھی آیتی، پتہ وتھ علی مکی آگر ساری
ویتھ وزی! ژ سانین سینن منز چھکھ عزی فانک ڈری یا جاری

[illegible] منز تامیر [illegible]
[illegible] تفسیر [illegible]
[illegible] بیناداری

ہی موج کشیری چھی آیتی، پتہ وتھ علی مکی آگر ساری
ویتھ وزی! ژ سانین سینن منز چھکھ عزی فانک ڈری یا جاری

[illegible] شوخ [illegible] ترو [illegible] سند موت یاد [illegible]
[illegible] سوز [illegible]
[illegible] شرکین ہنز [illegible]

ہی موج کشیری چھی آیتی، پتہ وتھ علی مکی آگر ساری
ویتھ وزی! ژ سانین سینن منز چھکھ عزی فانک ڈری یا جاری

[illegible] شارچ فرحتھ زون تہ ڈل
[illegible]
[illegible] عشق تہ اقبالس پاری

ہی موج کشیری چھی آیتی، پتہ وتھ علی مکی آگر ساری
ویتھ وزی! ژ سانین سینن منز چھکھ عزی فانک ڈری یا جاری

بیدار ضمیرن ہنز [illegible] گریبان چاکھ غنی
انہار [illegible] خیالن ہنز [illegible] سنز گمہ شری کو ہکنی
[illegible] گریشمس ہر [illegible] منز [illegible]

ہی موج کشیری چھی آیتی، پتہ وتھ علی مکی آگر ساری
ویتھ وزی! ژ سانین سینن منز چھکھ عزی فانک ڈری یا جاری

[illegible] آفتابہ [illegible]
[illegible] حسنک ظون لولک خاب [illegible]
[illegible] پاردی [illegible]

ہی موج کشیری چھی آیتی، پتہ وتھ علی مکی آگر ساری
ویتھ وزی! ژ سانین سینن منز چھکھ عزی فانک ڈری یا جاری

رحمان راہی

रहमान राही की प्रसिद्ध रचना 'हे माँ — कश्मीर'।

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Bhushan Lal Kaul Jammu Collection. Digitized by eGangotri